Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ५४२६ - घ

Title श्री भक्तिरत्नाकर: शालिग्राम माहात्म्यम् भाषा टीका

Author

Extent ३८३ Age १९३८

Subject साहित्यम् . संपूर्णम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

२२३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं० ५४२६ – घ
श्री भक्तिरत्नाकरः सहितम्
(शालिग्राममाहात्म्यम् – भाषाटीका)
पत्राणि ३८३ (संपूर्णम्) (पुराणेतिहासः)
संवत् १९३८ नं० ५४२६ भा

शालिग्राम माहात्म्य भाषा टीका
३८३ पत्राणि
सं: १९३८

पु रा ण पुराणेतिहास

5421

F. = 383.

Complete

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीगणेशाय नमः श्रीरघुनाथाय नमः
ॐ सञ्जयति रघुवंशो यत्र मुक्तामयास्युः
समजनि रणवीरः श्रीमहाराजवर्यः ॥
यत्र भूपतिसभौजाजम्बुकश्मीरमुख्या
नयनयजयशालीशालिदेशाननुजिता
त्मा १ निःशेषविद्याविदुषीमनीषास
द्धर्मवृद्धौ सततं प्रतिष्ठ स्थितिःसदारा
मपदारविंदे यस्य त्रिलोक्यां विशदा समा
ज्ञा २ हृदये करुणा सरस्वती वदने दान
जलं करे सदा बुधसंहतिरग्रगास्य भूर्भ
जनिष्ठा वसतीन्दिरालये ३ ॥

सो रघुमहाराजका वंश सर्वोत्कृष्ट जासे वर्त्तै जिसमे श्री
रणवीरसिंह राजाधिराज मुक्तामणि इंद्रतुल्यपराक्रमी
श्रय नयजय करकै शोभायमान जितेंद्रिय जम्बूका
श्मीरादि देशाधीश उत्पन्न भये १ जिस महाराजकी
मनीषा सभाविद्याके ग्रहण करनेमें निपुण है जि
सका धैर्य्य निरंतर समीचीन धर्म्मोंकी वृद्धिमें है
जिसका चित्त सदैव श्रीरामचंद्रके चरणारविंदो
मे है त्रिलोकीमें जिसकी आज्ञा विशद है २ जिसके हृ
दयमें करुणा है और वदनमें सरस्वती है और जि
सका हस्त दान जलसें सदा क्लिन्न है और जिसकी
सभामें विद्वानोंकी मंडली प्रसन्न है और पृथ्वी जिस
की भुजदंडके आश्रित है और लक्ष्मी जिसके घरमे निवास क
रती है

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यस्यसौराज्यरम्येषुविषयेषुनिरंतरम् इष्टा
पूर्तंप्रतिपदंराजतेभूतमत्तया ४ यत्रात्तोद
न्तभागाख्यषट्वर्गकलिकाधिकाः सिद्ध
लिप्ताधिकैकांशः प्रत्यग्देशांतरंस्फुटम् ५
मध्यरेखाप्रदेशाच्चतज्जम्बुनगरंमहत् प्रा
सादैःसर्वतोभासंनन्दनादपिशोभते ६
तत्रश्रीरणवीरसिंहनृपतिर्वेदाग्निरंध्रैः २१
३४ मितेवर्षे विक्रमजे परेतत्रण १मितेरा
ज्याभिषेकान्निजान् ॥

जिसकेसुंदरराजकरणोसें अच्छेदेशांमें वडुनस
मृद्धिककें इष्टापूर्तकर्मप्रकाशितहोरहाहै ४ ज
हां ३९ कलाजिसमेंअधिकऐसे ३२ वत्तीं अन्तांश
सें । औरसिद्धजो २४ उसककें प्रसिद्ध पश्चिमदेश
तहास्फुटहै ५ औरमध्यदेशजो कुरुक्षेत्र तिसते
पश्चिमदिशामें वडाभारी महलांककें शोभाय
मान नंदनवनतेंभी अत्यंतसुंदर जम्बुनगरहै ६
जिसनगरमें श्रीरणवीरसिंहनृपतिवेदचार ४
और अग्नि ३ तीनरंध्र ९ नौ और अब्ज १ एक
मिलकर उन्नीसौ चौती १९ ३४ वर्षमें विक्रमके
पराजो १ एक ईक्षणजो दो २ अर्थात् २१कों
ष में अभिषेकको प्राप्त होय कर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्राम·
२

2

सालिग्रामशिलाः खखाभ्रजलधीन्दुः १४४·
०० सम्मिताः स्थापिताः कृताएजयतिप्रभू
तमहिमार्यावर्तराजाग्रणीः १ नाड्यौंयाः
पुरुषायुषाश्रयतमीयस्त्रप्रमाणाः प्रभु
स्नातग्राणारथ्यापिरोहरुचिरःऊर्वन्नाति
चागतिंप्रवंनद्दहिगणस्वरूपमदजस्त्र
मध्यभूमिश्रयन्सत्याहविधिमिनात्वयज्ञ
भिरश्येष्टोनेकधाभूतये ८ ॥

खंशून्य· फेरशून्य· पुनःशून्य· जलधि ४ और
इंदु १४ कुल १४ १·· एकलक्ष चौतालीसहजा
र श्रीसालिग्रामजीकी प्रतिमाका स्थापनकर्के पू
जनकरते हैं वडीमहिमाकरके युक्त और आर्या
वर्तके राजयोंमे अग्रणय १ पुरुषको आयुका
सौवर्षप्रमाणाहै उसमेएकवर्षके दिन ३६· ती
नसौसठभये औररातभी ३६· तीनसौसठभ
ये दोनोका योग ७२· सातसौवीसभया इस
सातसौवसिकोनवसौसेगुणानी ७२···वह
त्तरहजारभया यहवहत्तरहजारपुरुषके देह
मेमध्यमनाडीहैं इननाडीयोंके प्राणश्वासका
जोगमागमसोएकलक्ष चौतालीहजारभया इ
तनोहिस्वरूपपरमेश्वरके भये इनस्वरूपोंका
अर्चन भक्त पुरुष चारोंसंध्यामकरतेहैं ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवं स विश्ववन्द्यरूपधारी भक्तेष्टका
रीपरिपूजनीयः अन्तर्वहिश्चेति विवि
च्य धीमांस्तमवैति श्रीरणवीरसिंहः ।
मतमेतत्समादिष्टं तंत्रे स्वच्छंदभैरवे
तथा नन्दिशिखायां च यामलेषु वहुष्वपि तं
त्रालोकादिषु तथा तदेतत्संप्रकाश्यते
१० तद्यथाऽहोरात्रे पुरुषस्य प्राणारो
हावरोहाक्रमेण श्वासाः षट्शताधि
कैकविंशतिसहस्रसंख्या उक्ता इति
तथा चोक्तं योगशास्त्रे षट्शतानि दि
वारात्रौ सहस्राण्येकविंशतिम् ॥

ऐसे सो विश्ववन्दनरूपधारी और भक्तजनके
इष्टकारी पूजा करणेके योग्य है श्रीरणवीरसिंह
महाराज अंदर वाहर परमात्माका निश्चय करि
पूजन करते हैं १ यह मत स्वच्छंदभैरवतंत्र
मे नंदिशिखामे और वहुते यामलोंमे विस्तारपू
र्वक कहा है और तंत्रालोक प्रभृति ग्रंथमे भी क
हा है सो इहां प्रकाश करते हैं १० सोई कहते है प्रा
णोंके आरोह और अवरोह करके दिनरात पुरुष
के श्वास इक्कीस हजार छे सौ संख्यावाले संचार क
रते हैं तैसाहि प्रमाण योगशास्त्रमे कहा है दिन-
रातमे एकविंशतिसहस्र और छे सौ प्राण पुरुषके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्वा·
ग्राम·
२

३

हंसोहंस इतिमंत्रंजीवोजपतिनित्यश इति तस्य
प्राणस्य वहनमार्गाः प्रधानत्वेन दशनाड्यो भव
न्ति तदुक्तं स्वच्छंदभैरवतंत्रे इडाचपिंगलाचैव
सुषुम्णाचतृतीयका गान्धारीहस्तिजिह्वाच
पूषाचैवयशस्तथा १ अलंबुसाकुहूश्चैवशं
खिनीदशमीस्मृता एताः प्राणवहाः प्रोक्ताः
प्रधानादशनाड्य इति २ दशानामपिमध्या
दिडादिनाडीत्रयस्यमुख्यत्वमुक्तंतत्रैव दशा
नांतुपरेदेवि नाडीत्रयमुदाहृतम् बिंदुनादा
त्मकेद्वेवै मध्येशक्त्यात्मिकास्मृता १ हृच्चक्रे
तुसमाख्याताः साधकानांहिताबहाः प्राणो
वैचरतेतासु अहोरात्रविभागतः २ ॥ ॰

संचारकरतेहै ॥ अर्थात् इक्कीसहजार छसैसो प्राणकाग
मनहै सोजीवहंसो हंसइस मंत्रका नित्यजपकरता
है तिसप्राणदेसंचारकाउमुख्यदशनाडीयांहै ॥
सोकहाहै स्वच्छंदभैरवनामक तंत्रमें इडा और पिं
गला और तीसरी सुषुम्णा और गांधारी और ह॰
स्तिजिह्वा और पूषा और यशा १ और अलंबुसाकु
हूशंखिनीयह दशनाडीयां मुख्यप्राणकेसंचारका
द्वारकहीहैं दशकेमध्यतें इडातें आदि लेकरजो
तीन नाडीहै वोमुख्यकहीहै उसीतंत्रमे हेदेवि
तिनां दशनाडीयांके मध्यमे तीनजोनाडीहै सोमु
ख्यहै । उनमेदोजोनाडीहै सोबिन्दुर और नादरूप॰
हैं और मध्यमें जोसुषुम्णानाडीहै सोशक्तिरूपहै १
हृदयरूपजोचक्रहै तिसमें तीननाडीयांउपास
कांके सुखवास्तेहै तिनमेदिनरात्रके विभागक
कैं प्राणसंचारकरताहै ॥ २ ॥ ॰ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तथाचोक्तं तंत्रालोके एवं समानेपिविधिः स
हिहार्दीषुनाडिषु संचरन्सर्वतोदिक्कं दश-
धैवविभाव्यते १ दशमुख्यामहानाडीः स्प
न्दयन्नेवतद्गतः नाड्यन्तराणितानाडीः का
मन्देहेसमास्थितः २ सएवनाडीत्रितये
वामदक्षिणमध्यगे इंदुर्काग्निमयेमरुधि
चरंस्तिष्ठत्यहर्निशमिति ३ नाडीत्रयस्य
स्पष्टतयास्थानमप्युक्तं स्वच्छंदतंत्रे ॥
दक्षनासापुटेचैवनाडीवैपिंगलास्मृता

सोईकहाहै तंत्रालोकमें ऐसे समानमेंभीविधिहै
सोजोहै समान वायुहृदयकी नाडीयोंमें विचरता
हुया चारोंदिशामें दशप्रकारकाविभावनाकरोदा
है १ दशजो वडी २ नाडीहैं तिनको स्पर्श करता
हुया और तिनामें स्थित हुयानाडीके अंतर्गतजो
नाडी तिनमेंगमनकरकें देहमेंभीस्थितहै २ सोई
वामदक्षिणके मध्यमें स्थितजो इंदु और सूर्य औ
र अग्नि रूप तीन नाडी तिनमें गमनकरताहु
या दिनरातस्थितहोताहै ३ स्वच्छंदतंत्रमेंभीतीन
नाडीकास्थानस्पष्टता करके कहाहै दहिनो
जोनासिका तिसमें पिंगलानामकरकें नाडी
रहताहै

इडाचैवतुवामेनसुषुमणामध्यतःस्थिताइति
आसुतिसृषुनाडीषु प्रत्येकं नवप्राणशती
संख्यया सार्द्धनाडीद्वयरूपकालपर्य्यन्तं सं
चरन्प्राणहंसोऽहोरात्रे चतुर्विंशतिसंक्रा
न्तीर्विधत्ते तदुक्तं तन्त्रे च चतुर्विंशतिसंक्रा-
न्तः समधातोः स्वभावतः शतानि नव वै-
हंस एकामेकां वहेत्सदेति तथा चोक्तं तन्त्रा
लोके सार्द्धनाडीद्वये प्राणशतानि नवय
न्त्रितम् तावद्धंसोऽहोरात्रे च चतुर्विंशति-
धा चरेदिति

और वामनासिकामे इडानाम ना
डीहै इनदोनोंके मध्यमे सुषुमणानाम नाडीहै एउ
नोतीननाडीहै तिनमें एकएकनाडीमेतीनसौप्रा
ण अढाई घटीमें प्राणरूपी हंस अहोरात्रमें चौ
बीसआवर्त करताहै सोई कहाहै उसीतंत्रमें
चौवी संक्रांतियां तत्व धातुके स्वभावतें हंस-
जोहै नौसौवार एक एक नाडीमे सदावर्ततांहै
औरतंत्रालोकमेभी यहकहाहै अढाई घटीयां
नौ सौ प्राणजो स्थितहै सो अहोरात्रमें सुषुमणा
नाडीमे वारवार वारविचरदाहोया चौवी संक्रां
तिनामक कालकों विधानकरदाहै यह तात्प
र्य्यहै प्राणरूपीहंस इडासेंपिंगलामे और पिंगला
सें इडामे जाता होया पांच घरवत जाके छ-
वीं वार सुषुमणामे जाताहै ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रभासेयत्फलंप्रोक्तंराहुग्रस्तेनिशाकरे तत्
तेदानेभवेत्पुण्यंशालग्रामशिलाग्रतः ३९
सालिग्रामशिलास्पर्शःकोटियज्ञफलप्रदः
मरणात्समीपेतु काशीतुल्यफलंभवेत् ४०
पाद्मे हरिविकुंडलसंवादे ॥ अथवासर्व
थामुमोवासुदेवोमुमुक्षुभिः सालिग्राम
शिलाचक्रेवज्रकीटविनिर्मिते ४१ अपि
स्थानंचतद्विष्णोःसर्वपापप्रणाशनं सर्वपु
ण्यप्रदंवैश्यसर्वेषामपिमुक्तिदम् ४२

चंद्रग्रहणमे प्रभास तीर्थमे जोदान करणेका
फल प्राप्त होताहै सो फलसालिग्राम शिलाके
समीप थोडेकदान करणेसेहोताहै ॥३९ और सा
लिग्राम शिलाके स्पर्श करणेसें क्रोडयज्ञके क
रणेका फल प्राप्त होताहै और जिस मनुष्य काशा
लिग्राम शिलाके समीप मरण होताहै तिसको
काशीमेमरणेका फल प्राप्त होताहै अर्थात उस
की मुक्तिहोतीहै ४०· पद्मपुराणमे लिखाहै
मुक्तिकी इच्छा वाले पुरुषोंमे वज्रकोटने र
चा जोसालिग्राम शिलाचक्र तिसमे वासुदेव
भगवानकी पूजाकरणी चाहिये ॥ ४१ ॥ औ
रसोई चक्रपापोंके नाश करणेवाला और स
बको मुक्तिके देने वाला और संपूर्ण पुण्यके
देनेवाला विष्णु महाराजका निवास स्थान·
है ४२ ॥ ~ ॥

यः पूजयति हरिं चक्रे शालग्रामसमुद्भवे
राजसूयसहस्रेण तेनेष्टं प्रतिवासरं ५३
यदामनंति वेदांता ब्रह्म निर्गुणमच्युतं
तत्प्रसादो भवेन्नॄणां शालिग्रामशिला
र्चनात् ५४ कोटिद्वादशलिंगैस्तु पू
जितैः स्वर्णपंकजैः यत्स्याद्द्वादशवा
र्षैश्च दिनेनैकेन तद्भवेत् ५५ ॥ ॥

जो पुरुष शालिग्राम शिला चक्र मे विस्नुका
पूजन करता है तिसको प्रतिदिन राजसूय
यज्ञ का फल प्राप्त होता है ॥ ५३ जिसको वे
दांती सत्य निर्गुण अच्युत मानते है सो मनु
ष्यों मर शालिग्राम शिला के पूजन करणे
से प्रसन्न होते है ॥ ५४ ॥ ओर बारां क्रोड रु
द्रो का १२ बारां वर्ष तक स्वर्ण पुष्पों कर
के पूजन करने से जो फल होता है सो शा
लिग्राम शिलाके पूजन करने से एक
दिनमे होता है ॥ ५५ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्रा·म·
८

6

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैखानससंहितायां [illegible]

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैखानससंहितायां चतुर्मूर्तिप्रमाणस्तिर
ष्टोदशाचसंख्यकाः आदित्यसंख्यकास्तद्व
थैवमनिसंख्यकाः ५३ तथाषोडशसंख्याका
स्तथाविंशतिरीरिताः द्वात्रिंशच्चतुःसंख्या·
काश्चत्वारिंशद्विशेषतः ५४ चारुवर्णाश्चशो
भाढ्याचतुष्षष्टिस्तथापराः अष्टाशीतिर्म·
हामूर्तीः शतमष्टोत्तरंतथा ५५ प्रयत्नेनैव
संगृह्य पूजनीया विचक्षणैः पुनः स्कंदेच
तस्य पूजिता येन द्वादशात्माभवेत्तु सः ५६
पाद्मे द्वादशेह शिलायो वै सालिग्रामसमुद्भ
वाः अर्चयेद्दैमवेनित्यं येतत्पुण्यंनिबोधमे ५७

यहि वैखानस संहितामे लिखोहै शालग्रामकी
यां चारमूर्तीयां ४ छे ६ अष्ट ८ दश १० द्वादश १२
चौदा १४ सोलां १६ वीस २० बतीस ३२ चालीस
४० चतुष्षष्टि ६४ अष्टाशीति ८८ सउ १०० ए
कसउनेअष्ट १०८ यहिसंख्यामूर्तियांकीयां पूजा
करणीयां ५५ यहि स्कंदपुराणमे कहाहै जो
पुरुषचारमूर्तियांकी नित्य पूजाकरताहै सो
सूर्यरूप होजाताहै ॥ ५६ पद्मपुराणमेका·
हाहै शालग्रामशिला बारांका १२ जोनि·
त्य पूजनकर्ताहै तिसको पुण्यकोजपो ५७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोटिलिंगसहस्रेस्तु पूजितैर्जान्हवीतटे का
श्यांवसेयुगान्येकं दिनेनैकेन तद्भवेत् ५८
स्कांदे मूर्त्तीनांषोडशानांतु कृत्वा पूजाविः
धानतः सर्वसिद्धिर्भवेत्सत्र कार्याविचा
रणा ५६ गायत्रीवर्णसंख्यायाः विंशतेश्च
तथाऋषे पूजनाच्च नरोनित्यमश्वमेधफलं
लभेत् ६० द्वात्रिंशत्पूजयित्वातुशिवसन्नि
धमाप्नुयात् चत्वारिंशत्पूजयित्वाविष्णो
सालोक्यतां व्रजेत् ६१ चतुष्षष्टिस्तुयाम
र्त्तीस्तद्वार्धाणिनिसंख्यकाः फलंस्मृत्वाध
मेतासांपूजांकृत्वाविधानतः सर्वपापवि
निर्मुक्तो विष्णोःसायुज्यमाप्नुयात् ६२ ॥

गंगाकेकिनारे हजारक्रोड शिवलिंगपूजा करणेका
फल और श्रष्टयुग काशी वसनेका फल शालिग्रामो
की एकदिनकी पूजासेहोताहैं ५८ स्कंदपुराणमेकहा
है जो पुरुष सोलां १६ शालिग्रामोंकीनित्य पूजाक
र्तेहै सोसभसिद्धिको प्राप्तहोताहै ५६ गायत्रीनि वी
स २० शालिग्रामोंका चवीस २४ शालग्रामोकाजो
नित्यपूजनकर्त्ताहै सोनित्यअश्वमेध यज्ञके फलकोल
भताहै ६० द्वात्रिंशादीति वत्तीस ३२ मूर्त्तियां नित्यपूज
नकरनेते पुरुष शिवलोकको प्राप्तहोताहै और चा
लीस ४० शालग्रामपूजाकरनेसें विष्णुलोककोप्राप्त
होताहै ६१ चतुष्षष्टिरितिजो चौहसठ ६४ शालिग्रामो
का और शालग्रामोका नित्य पूजनकर्त्ताहै सोपुरुषस
भपापोतेरहितहोकर विष्णुलोकमेप्राप्तहो ६२ ॥

सा· ग्राम· ८

8

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ पङ्क्तिर्वहेद्यस्मात्सर्वनाडीः प्रवाहयन् ८ वृ
त्तिसंज्ञाप्रभेदेन वर्णरूपाण्यनेकधा हास्म
त्तिसहस्रभ्योनाड्यंनेदशवैप्रिये कोटिभागो
वरारोहे सपकःसमवस्थितः ९ अत्रनाडीवृ
न्दस्यत्रयोभागाः आन्तरोनाडीदशकरूपो
मध्यमोद्वासप्ततिसहस्रसम्मितः बाह्योरो
मरूपसम्मितस्तत्र मध्यमनाडीवृन्दाश्रय
प्राणस्य वैशिष्ट्यमुक्तं तंत्रालोके अत्रमध्य
मसंचारिप्राणोदयलयांतरे विश्वे स्थित
यास्तेनचित्रावाय्वंतरक्रमादिति ॥

जिसते हेह उपरसंस्पर्श नाडीयान् प्रवाहोतेंहे ८॥
वृत्तिसंज्ञाके प्रभेद कर्के अनेक प्रकार वर्णरूपा
कोंप्रवाहकीन्याई प्रवृत्तकरनाहोया वहत्तर हजा
रजो नाडीयां तिनते दशनाडीयां हे प्रियाजो होम
नीयांहे हेवरारोहे इनतें कोउप्रकार कर्के सोपक
अच्छी प्रकार स्थितहे ९ इहां नाडीसमुदायके तीनभागहें
अंदरकानाडीदशकरूपहे और मध्यमवहत्तर हजार
परिमितहे और बाह्यरोम रूपसम्मितहे तिसमेम
ध्यमजो नाडीवृन्द सोहे आश्रय जिसका असाजो
प्राण तिसकी उत्कृष्टता कहीहै तंत्रालोकमें उ
नमें मध्यमनाडी वृन्दमे संचारीजो प्राण तिस
के उदय औरलयके मध्यमें संस्पर्श जोस्थिति औ
रलयहैं सोवायुके अंदरगमन करणोतें चित्र
स्वरूपहे ॥ — ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
६

9

अस्मिन्नपि प्राणोदयपदावस्थमपानतत्त्यको
टिगम् अपानप्राणयोर्मध्ये स्वमात्मानमुपा
स्महे इति अनेन मध्यमसंचारिप्राणस्य प्रवेश
निर्गमवशेन चतुश्चत्वारिंशत्सहस्राधिकल
क्षसंख्यावत्वात्प्रभोरपि तावत्त्वसिद्धे तद्वशेन
तावत्संख्यकाविष्णुप्रतिमाः श्रीमद्भिः प्रति
ष्ठापितास्तत्पूजयापि सकृत्पूर्वोक्तप्रभुस
माधानफलसिद्धिः सुलभेति शिवम् इति पू
जारहस्यप्रकारस्समाप्तः ॥

और स्थलमें भी प्राणका जो उदयस्थान तिसमें है अ
र्थात् जिसको और अपान का जो निवासस्थान तिस
में है कोटिशरीर जिसका अपान और प्राणके मध्यमें
अपना स्वरूपभूत जो आत्मा तिसकी हम उपासना
करते हैं इससे मध्यम संचारी जो प्राण उसके प्रवेश
और निर्गम वश करके चौवाली हजार संख्याधिक
लक्ष संख्या वाला होनेसे श्रीप्रभुजो अंतर्यामी श्रीभ
गवान् उसको भी तादृश संख्यावत्व सिद्ध भया
इसवासते उतनी संख्या वालीं श्रीविष्णुमहाराज
जीकीयां श्रीसालिग्राम प्रतिमा श्रीमन्महाराजाधि
राज श्रीरणवीरसिंह भूपतिजीने स्थापित कीतियां
है तिनकी पूजा करके भी एक वखत पूर्वोक्त प्रभु
समाराधफलकी सिद्धि सुख करके प्राप्त होनेकों
शक्यहै यह पूजा रहस्य विधि समाप्त भई ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तथादावश्रुतविशेषशास्त्राणां विश्वश्रद्धावि
शेषजननाय शालिग्रामप्रशंसा लिंगपुराणे
कामासक्तोऽपि यो नित्यं भक्तिभावविवर्जितः
शालिग्रामशिलां पूजयेत्सोऽच्युतो भवेत् १
कामासक्तोऽपि क्रुद्धोऽपि शालिग्रामशिलार्चने
भक्त्या वा यदि वाऽभक्त्या हकनामुक्तिमवाप्नुया
त् २ लिंगकोटिसहस्रैस्तु पूजितैर्यत्फलं भ
वेत् तत्फलं कोटिगुणितं शालिग्रामशि
लार्चनात् ३ शालिग्रामशिलाग्रे तु ये कुर्वन्ति
सुरार्चनं तत्र दानं च होमं च सर्वं कोटिगुणं भवे
त् ४

प्रथम जिनोने शास्त्र नहि श्रवण किया उनको
विश्वके पूजनमे श्रद्धा विशेषके उत्पन्न करणे वास्ते लिं
गपुराणमे कही जो शालिग्राम प्रशंसा सो कहते हैं
महादेव स्वामी कार्तिक को कहते हैं हे पुत्र भक्ति श्रद्धा
ते रहित कामासक्त भी पुरुष शालिग्रामकी नित्य पू
जा करे सो साक्षात् विष्णु का रूप हो जाता है १ कामास
क्त इति कामी होवे क्रोधी होवे लोभी होवे वा भक्ति
करके और भक्तिके विना जो पुरुष शालिग्रामकी पूजा
करते है सो मुक्तिको प्राप्त होते है २ लिंगकोटीति जो पु
रुषको शिवलिंग क्रोड हजारके पूजा करणेसें फल
होता है सो फल क्रोड गुणा एकदिन शालिग्राम पू
जा करणेते प्राप्त होता है ३ शालिग्रामशिलाके आगे
जो पुरुष देवताका पूजन और दान होम यज्ञादि क
रते है सो पुरुष कोटि गुणा फलको लभता है ॥ ४ ॥

सालिग्रामसमीपेतु क्रोशमात्रंसमंततः कीट
कोपिमृतायातिवैकुंठभुवनंगृह ५ मात्स्ये ॥
सालिग्रामसमुद्भूताः शिलाश्चक्रांकमण्डिताः
यत्रतिष्ठंतिवसुधेतत्क्षेत्रंयोजनत्रयम् ६ शा
लिग्रामशिलाचक्रंयोदद्याद्दानमुत्तमं भूचक्रं
तेनदत्तंस्यात्सशैलवनकाननं ७ शालिग्रा
मशिलाग्रेतुयः श्राद्धंकुरुतेनरः भवंतिपित
रस्तस्यः कालसंस्थानतैनेवहि ८ पाद्मे अपि
पापसमाचाराः कर्मणानाधिकारिणः शालि
ग्रामार्चकावैष्णवनेवयांतियमालयम् ९ ॥

शालिग्रामशिलाकेचारो तरफ कोशमात्रमेजो कीडाभी
मृतहोवे सोभी वैकुंठलोकमे प्राप्तहोताहै ५ मत्स्यपु
राणमे कहाहै वाराह भगवानने पृथिवीके प्रति है
वसुधे चक्रके चिह्नवाला शालिग्रामकी शिला जिस
स्थानेमे स्थितहै सोस्थान त्रय योजन प्रमाण तीर्थक
हाहै ६ शालग्रामशिलाका दान करताहै जोपुरुष ।
तिसपुरुषने सहित वनोंके और पर्वतोंके संपूर्ण पृ
थिवीका दानकीनाहै ७ जोपुरुष शालग्राम शिला
के आगे श्राद्ध कर्ताहै तिसके पितरोंकी तृप्तिके का
लका नियम नहिहै ८ पद्मपुराणमेभीकहाहै वै
ष्णवकेप्रतियमदूतोंने हेवैष्णव शालग्राम शिलाकी
पूजाकरणवाला पुरुषपापीभीहोवे कर्मकांड
मे अधिकारीनहोवेसोभीमृतहोयाहुया यम
लोकमे नहीजाताहै ९ ॥

~ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सालिग्रामशिलायां तु सदा श्रीकृष्णपूजनं
नित्यं सन्निहितस्तत्र शालग्रामे जगद्गुरुः ९
बृहन्नारदीये शालिग्रामशिलारूपी यत्र तिष्ठति केशवः न बाधंते ग्रहास्तत्र भूतवेतालकादयः ॥ शालिग्रामशिला यत्र तत्तीर्थं तपोवनं यतः सन्निहितस्तत्र भगवान्मधुसूदनः १२ यद्गृहीनास्ति तुलसी शालिग्रामशिलार्चनाम् श्मशानसदृशं विद्यात् तद्गृहं शुभवर्जितं १३ ॥ ॥

हे वैश्य शालिग्रामशिलामे श्रीकृष्णका पूजन करणा उचित है जिस शालिग्रामशिलामे सदा नारायण रहते है ९ बृहन्नारदीय पुराणमे भी कहा है जिस घरमे शालिग्रामशिलारूपी केशव है उस घरमे ग्रह और भूतवेतालादिं पीडन हि कर सकते हैं ॥ शालिग्रामशिला जिस स्थानमें है उसी स्थानमे सभ तीर्थ रहते है और पवित्र तपोवनादि रहते है जिस कारणतें शालिग्रामशिलामें नारायण सदा वास करते है १२ यदिति जिस घरमे शालिग्रामकी पूजा नहीं है और तुलसी का पूजा न नाहि है सो घर श्मशानके सदृश और शुभकर्मते रहित है ॥ १३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मे यः पूजयेद्दीविके शालग्रामशिलोद्भवे राजसूयसहस्रेणा तेनेष्टं प्रतिवासरं ४ यदा मनंति वेदांता ब्रह्म निर्गुणमच्युतं तत्प्रसादाभवेन्नृणां शालग्रामशिलार्चनात् ५ यथा काष्ठस्थितो वह्निर्मथ्यमानः प्रकाशते तथैवात्मस्थितं ज्ञानं पूजनाद्धि प्रकाशते ६ न तथा रमते लक्ष्म्या न तथा स्वपुरे हरिः शालिग्रामशिलाचक्रे यथा स रमते सदा ७ ॥

पद्मपुराणमेभी कहाहै यइति जोपुरुष शालिग्रामशिलाचक्रमे नित्यनारायणका पूजन करताहै सोपुरुष प्रतिदिन राजसूय हजार यज्ञके फलकों प्राप्त होताहै ४ यदेति जिस परमेश्वरकों वेदांती ब्रह्म और निर्गुण अच्युत कहतेहै सो परमात्मा शालिग्रामकी पूजा करणेवाले मनुष्योंपर प्रसन्न होताहै ५ यथेति जिसतरां काष्ठके बीच अग्निहै और उसकाप्रकाश नहि परंतु काष्ठोके परस्पर संघर्षण करणेसे प्रकाश उस अग्निका होताहै इसीतरां पुरुषोंके आत्मामे ज्ञानहै और ज्ञान प्रकाशित नहिहै सो शालिग्रामकी पूजा करणे करके प्रकाशमान होताहै ६ नेति जिस तरह करकें नारायण शालिग्राम शिलामे क्रीडा करताहै तिसतरा लक्ष्मीके साथ नहि क्रीडा करताहै और वैकुंठ भवनमे भी नही क्रीडाकर्ताहै ॥ ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अग्निहोत्रं कृतं तेन दत्ता पृथ्वी ससागरा येः
नार्चितो हरिश्चक्रे शालग्रामसमुद्भवे १८ का
मैः क्रोधैर्मदैर्लोभैर्व्याप्तो योत्र नराधिप सो
पियांति हरेर्लोकं शालिग्रामशिलार्चनात्
१९ यः पूजयति गोविंदं शालग्रामे सदा नरः
आभूतसंप्लवं यावन्न स प्रच्यवते दिवः २०
विना तीर्थैर्विना दानैर्विना होमैर्विना मखैः
मुक्तिं यांति नरा वैश्य शालिग्रामशिलार्चनात्
२१

अग्निहोत्र मिति शालग्रामकी शिलामे जिसपुरु
षने नारायणकी पूजा कीनी है उसपुरुषने अग्नि
होत्र कीया और सहित समुद्रों के पृथ्वीका दानकी
ता है १८ कामैरिति काम क्रोध लोभ मोह करके
दंभ करके युक्त जो पुरुष शालिग्रामकी पूजा कर्ता
है सो वैकुंठलोकमे जाता है ॥ १९ जो पुरुष सदा
शालग्रामकी पूजा कर्ता है सो पुरुष कल्पपर्यंत
स्वर्ग ते नहि गिरता २० विनेति तीर्थ दान होम यज्ञ
करणे ते विना मुक्तिको प्राप्त होते हैं जो पुरु
ष नित्य शालग्रामका पूजन कर्ता है २१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैवेद्यैर्विविधैः धूपैर्दीपैर्धूपैर्विलेपनैः गीता
दिस्तोत्रपाठाद्यैः शालग्रामशिलार्चनम् २२
कुरुते मानवो यस्तु कलौ भक्तिपरायणः क
ल्पकोटिसहस्राणि रमते सन्निधौ हरेः २३ स
कृदभ्यर्चितं लिंगं शालिग्रामशिलोद्भवं लभ
ते मनुजो मुक्तिं नित्यं सांख्येन वर्जितः २४
शालिग्रामशिलारूपी यत्र तिष्ठति केशवः
तत्र देवासुरास्सर्वे भुवनानि चतुर्दश २५ शा
लिग्रामशिलाग्रे तु यः श्राद्धं कुरुते नरः पिता
रस्तस्य तिष्ठंति तृप्ताः कल्पशतं दिवि २६

नैवेद्येति जो पुरुष कलिकालमे भक्तिके गंध धूप दी
प अनेक तरहके नैवेद्य करके शालग्रामकी पूजा कर्ता
है गीत गाता है स्तोत्र पढता है २२ सो पुरुष हजार क्रो
ड कल्प वैकुंठ लोकमे रहता है २३ सकृदिति शालग्रा
मशिलाको लिंगको जो मनुष्य एकवार भक्ति करके
पूजा कर्ता है और ज्ञान ते रहित है सो मुक्तिको लभता है
२४ शालग्रामेति जिस स्थानमे शालग्रामकी शिला
नित्य स्थित रहती है उसी स्थानमे सभ देवता अस्र
यक्ष गंधर्व चौदां भुवन रहते है २५ शालग्रामेति जो
पुरुष शालग्रामशिलाके पास श्राद्ध कर्ता है तिस
के पितरेसो १०० कल्पपर्यंत तृप्त हुये हुये स्व
र्गमै वास कर्ते हैं ॥ २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कंदे कार्तिकमाहात्म्ये शिवस्कंदसंवादे ॥

शालग्रामशिलायां तु त्रैलोक्यं सचराचरं
मया सह महासेन लीनं तिष्ठति सर्वदा २७
शालिग्रामशिलाबिंबं हत्याकोटिविनाशनं
स्मृतं संकीर्तितं ध्यातं पूजितं च नमस्कृतम्
२८ शालग्रामशिलां दृष्ट्वा यांति पापान्यने-
कशः सिंहं दृष्ट्वा यथा यांति वने मृगगणा
भयात् २९ पुनश्चैव शालग्रामशिलायां तु
सदा पुत्र वसाम्यहं दत्तं देवेन तुष्टेन स्वस्थानं
मम भक्तितः ३० ॥

स्कंदपुराणके कार्तिकमाहात्म्यमे शिवस्कंदके संवाद
मे कहाहै शालग्रामशिलायामिति महादेव कहतेहै हे
स्कंद शालग्रामशिलामे सभत्रिलोकी मेरेसाथ ली-
न होयकर्के सदा रहतीहै २७ शालग्रामेति शाल
ग्रामशिलाके बिंबका जो पुरुष नित्य स्मरन करतेहै
पूजन ओर ध्यान ओर नमस्कार करतेहै तिना पुरुषां
कीयां कोटजन्म कीयां हत्या दूर होतीयांहै २८ ॥
शालग्रामशिलामिति शालग्रामकी शिलाका द
र्शन कर्के अनेक जन्मोके पाप नष्ट होजातेहै जिस
तरां वनमे सिंहको देखकर अनेक मृग ओर गज न
ष्ट होजातेहै २९ ओर स्कंदपुराणमे शिव जो कहतेहै
हे स्कंद हे पुत्र मेरी भक्तिकर्के प्रसन्न हुये हुया प
रमात्माने अपना स्थान जोहै शालग्रामशिलामे
य सोमेरेको निवास वास्ते दिनाहै ३० ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

13

कल्पकोटिसहस्रैस्तु पूजिते मयि यत्फलं । त
त्फलं कोटिगुणितं शालग्रामशिलार्चने २१
पूजितोहं न तैर्मर्त्यै नमितोहं न तैर्नरैः । ना
कृतं मर्त्यलोके यैः शालग्रामशिलार्चनम्
२२ प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने किं दानैः किमुपोष
णैः चांद्रायणैश्च तीर्थैश्च पीत्वा पादोदकं
शुचिः २३ प्रमाणमस्ति सर्वस्य सुकृतस्य हि
पुत्रक फलप्रमाणहीनं तु शालग्रामशिला
र्चने २४ ॥

कल्पांते हे पुत्र हजारां क्रोड कल्प मेरी पूजा करणे
का जो फल है उस फल का क्रोड गुणां फल शाल
ग्रामशिला की पूजा करणे सें होता है २१ पूजित
इति हे पुत्र जो मनुष्य शालग्राम की पूजा नहि करते
सो मनुष्य भी मेरी पूजा नही करते और मेरे को न
मस्कार नही करते है २२ प्रायश्चित इति हे स्कंद
मनुष्यां को प्रायश्चित के करणे वास्ते उपवास
व्रत और दान और चांद्रायण व्रत और तीर्थ का
स्नान करने से उन पुरुषों को क्या है केवल चा
रणोदक पीणे सें वी शुद्ध हो जाते हैं २३ प्रमाण
मिति सभ पुण्य दान व्रत के फल का प्रमाण है
शालग्राम की पूजा के फल का प्रमाण नहि
है ॥ २४ ॥ ॰ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

योददातिशिलांविष्णोः शालग्रामसमुद्भवां
विप्रायविप्रमुख्यायतेनेष्टंवहुभिर्मखैः २५
सधन्यःपुरुषोलोकेसफलंतस्यजीवितं शा
लग्राममशिलायस्यगृहेयस्यचपूजिता २६ ॥
सनित्यसेंद्रियग्रामंशालग्रामशिलार्चनं यः
कुर्यान्मानवोभक्त्यासयातिपरमंपदम् २७
पुनस्तत्रैव कुरुक्षेत्रेणकिंतत्रसंग्रामेग्रह
णेरवेः शालग्रामशिलायत्रहदृश्यतेचक्र
लांछिता २८ ॥

यइति जो पुरुष शालग्रामशिलाका दान कर ब्रा
ह्मणकोदेताहैं सोवहुतयज्ञोंके फलको प्राप्तहोत
ाहै २५ सइतिजिसके घरमेंशालग्राम शिलाभु
ह और पूजितहैसो मनुष्य धन्यहै औरउसका जी
वनासफलहै २६ सनिति जो पुरुष यतेंद्रियहो
के भक्तिके साथ शालग्रामका पूजनकर्ताहै सो
वैकुंठको प्राप्तहोताहै २७ औरभी स्कंदपुराणमेक
हाहै किति जहां चक्रके चिह्नवली शालग्रामकी
शिलाहै तदसूर्य ग्रहणके प्राप्तहुएकुरुक्षेत्र का
क्याहै अर्थात वोहि स्थान पवित्रहै उसी स्थान
मे दानादिका अनंत फल होताहै २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रभासे यत्फलं प्रोक्तं राहुग्रस्ते निशाकरे कृतेदा
नेभवेत्पुण्यं शालग्रामशिलाग्रतः ४९ शाल
ग्रामशिलास्पर्शः कोटियज्ञफलप्रदः मरण
णात्तत्समीपेन काशीतुल्यफलं भवेत् ५०
पाद्मे हेमविकुंडलसंवादे अर्चनीयः सर्वपाप
घ्नो वासुदेवो मुमुक्षुभिः शालिग्रामशिलाचक्रो
वज्रकीटविनिर्मिते ५१ अधिष्ठानं च तद्वि
ष्णोः सर्वपापप्रणाशनं सर्वपुण्यप्रदं वै
तत्सर्वेषामपि मुक्तिदम् ५२

चंद्रग्रहण प्रभास तीर्थमे जो दान करणे का फल
प्राप्त होता है सो फल शालिग्राम शिलाके समीप
थोडेक दान करणेसे होता है ४९ और शालिग्राम
शिलाके स्पर्श करणेसे क्रोडयज्ञके करणेकाफ
ल प्राप्त होता है और जिस मनुष्यका शालिग्राम
शिलाके समीप मरण होता है जिसको काशीमेम
रणेका फल प्राप्त होता है अर्थात् उसकी मुक्ति हो
ती है ५० पद्मपुराणमे लिखा है मुक्तिकी इच्छा
वाले पुरुषोंने वज्रकीटने रचा जो शालिग्रामशिला
काचक्र तिसमे वासुदेव भगवानकी पूजा करणी
चाहिए ५१ और सोई चक्र पापों के नाश करणेवा
ला और सबको मुक्तिके देने वाला और संपूर्णपु
ण्यके देने वाला विष्णु महाराजका निवासस्थान है

५२ ॥

यः पूजयति हरिं चक्रे शालग्रामसमुद्भवे रा
जसूयसहस्रेण तेनेष्टं प्रतिवासरं ४२ यदा
मनन्ति वेदान्ता ब्रह्म निर्गुणमच्युतं तत्प्र
सादे भवेन्नृणां शालग्रामशिलार्चनात्
४४ कोटिद्वादशलिंगैस्तु पूजितैः स्वर्ण
पंकजैः यत्स्याद्द्वादशवर्षेषु दिनेनै
केन तद्भवेत् ४५ ॥ ८ ॥

जो पुरुष शालिग्राम शिला चक्रमें विष्णुका पू
जन करताहै जिसको प्रतिदिन राजसूय यज्ञ
का फल प्राप्त होताहै ॥ ४२ जिसको वेदान्ती
सत्य निर्गुण अच्युत मानतेहैं सो मनुष्यों पर
शाल ग्राम शिलाके पूजन करणेसें प्रसन्न
होतेहैं ४४ और बारां क्रोड़ रुद्रोंका १२ बारां
वर्षतक स्वर्ण पुष्पों करके पूजन करनेसें
एक दिनमें होताहै ॥ ४५ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

15

सालिग्रामसमीपेतुक्रोशमात्रंसमंततः कीट
कोपिमृतोयातिवैकुंठभवनंगुहः ५६ स्कंदे
चक्रांकितशिलायत्रशालिग्रामशिलातथा
तिष्ठतेमुनिशार्दूलवर्धतेतत्रसंपदः ५७
कोटिलिंगैस्तुमानुष्यः पूजितैर्जाह्नवीतटे
काशिवासेयुगान्यष्टौदिनेनैकेनतल्लभेत्
५८ स्कंदे शालग्रामाः समाः पूज्या विषमा
नकदाचन विषमेष्वेकएवस्यात्समेद्वौन
कदाचन ५९ ॥

सालिग्रामेति शालग्रामचारोतरफ क्रोशभरमेको
ई कीडाभीमृतहोवे ओभीवैकुंठभवनमेप्राप्तहोता
है ५६ स्कंदपुराणमेभीकहाहै द्वारकाकाचक्रशा
लग्रामकीशिला जिसस्थानमे रहतीयांहै उसीस्था
नमे समसंपदा रहतीयांहै ५७ कोटिलिंगरीति
मनुष्यको गंगाजीके कनारेपर क्रोडलिंग महा
देवके पूजनका ओर युगकाशीमे वासकरणेका
जोफलहोताहै सोफलमनुष्यकोएकदिन शा
लग्रामकी पूजाकरणेसें प्राप्तहोताहै ५८ अब
शालग्रामकी पूजाकेप्रसंगते पूजाकेयोग्यकितनी
नीयां मूर्तियां पूजनीयां कितनीयां नहीपूजनीयां
इसवातकोकहाहै स्कंदपुराणमे शालेति शाल
ग्राम समांदी पूजाकरणी विषमादीनही करणी
विषमामेएककीपूजा करणी ओर समशालग्रामोमे
दोईकदे नहि पूजने ५९ ॥

पाद्मे गृहेलिंगद्वयंनार्च्यंगणेशत्रयमेवच द्वौ
शंखौनार्चयेन्नित्यंनशक्तित्रयमेवच द्वेचक्रे
द्वारकायास्तुनार्च्येसूर्यद्वयंतथा ५० शाल
ग्रामस्समापूज्या नद्वयंतुकदाचन विषमा
नचपूज्यास्तेविषमेचैकएवहि ५१ नाक्षतैः
पूजयेद्विष्णुंनकेतक्यासदाशिवं नारक्तैर्ना
र्चयेच्छंभुंकरवीरांबुजैर्विना ५२ ॥

पद्मपुराणमे विशेषकहतेहै घरमे पुरुष दो शिव
लिंगोकी और गणेशशोणभद्रके तीनोकोपूजा न
करे गृहस्थी घरमे दो शंख न पूजे और दुर्गाकी
यां मूर्तियां तीन न पूजे और द्वारकाके गोम
तीचक्र दो न पूजे और दो २ सूर्योंकी पूजा नकरे
५० शालिग्रामेति और शालग्राम समक्या दो वा
रक्षे आठ इत्यादि पूजनकरे परदोहूकी कदीन
करे और विषम शालग्रामोंकी क्या तीन ३ पांच
सात ७ नंव ९ इनकी पूजा कदे नकरे तो एक शाल
ग्रामकीकरे ५१ नाक्षतैरितिअक्षतजोंके साथ विष्णुकी
पूजान करे केतकीके पुष्प शिवजी पर नचढावे
और रक्तपुष्पों करके शिवजीका पूजन न करे औ
र करवीर क्याकनेरके और कमलोके पुष्प ला
लभीहैं पर महादेव और विष्णुपर चढावे ५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैखानससंहितायां चतुर्मूर्तिप्रभृतिमूर्तिरष्टोद
शत्वसंख्यकाः आदित्यसंख्यकास्तद्वत्तथैव मनु
निसंख्यकाः ५२ तथाषोडशसंख्याकास्तथा वि
शतिशिरिताः द्वात्रिंशत्कुण्डसंख्याकाचत्वारिंश
द्विशेषतः ५४ चारुवर्णाश्च शोभाढ्यास्तत्चतुष्षष्टि
स्तथापराः अष्टाशीतिर्महामूर्तीः शतमष्टोत्तरं
तथा ५५ प्रयत्नेनैव संगृह्य पूजनीया विचक्ष
णैः पुनः स्कंदे चतस्रः पूजिता येन द्वादशात्मा
भवेच्च सः ५६ पाद्मे द्वादशभिः शिलाभिर्वै शालि
ग्रामसमुद्भवाः अर्चयेद्धि सदैव नित्यं येन तत्पुण्यं निबो
धमे ५७

यहि वैखानस संहितामे लिखाहै शालग्राम
कीयां चारमूर्तियां ४ छे ६ अष्ट ८ दश १० द्वादश १२
चौदां १४ सोलां १६ वीस २० बतीस ३२ चालीस ४०
चतुष्षष्टि ६४ अष्टाशीति ८८ सउ १०० एकसउते
अष्ट १०८ इह संख्यामूर्तियांकीयां पूजाकरणीयां
५५ यहि स्कंदपुराणमे कहाहै जो पुरुष चारमूर्तियां
कौ नित्य पूजा करताहै सो स्वयं रूप होजाताहै ५६
पद्मपुराणमे कहाहै शालग्राम शिलावारां
का १२ जो नित्य पूजन करीहै तिसको पुण्य
कोजाण ५७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोटिलिंगसहस्रैस्तु पूजितैर्जाह्नवीतटे काश्यां
वसेद्युगान्यष्टौ दिने नैकेन तद्भवेत् ५८ स्कंदे मू
र्त्तीनां षोडशीनां च कृत्वा पूजाविधानतः सर्वा
सिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ५९ गाय
त्रीवर्णसंख्याया विंशतेश्च तथाऽनघ पूजनाच्च
नरो नित्यमश्वमेधफलं लभेत् ६० द्वात्रिंशन्मू
र्त्तीनर्चयित्वा तु शिवसान्निध्यमाप्नुयात् चत्वारिंश
न्मूर्त्तीः पूजयित्वा विष्णोः सालोक्यतां व्रजेत् ६१ चतु
ष्षष्टिसंख्यामूर्त्तीस्तु ह्यशीतिसंख्यकाः फ
लंप्राप्य धर्मेणासां पूजां कृत्वा विधानतः सर्व
पापविनिर्मुक्तो विष्णोः सायुज्यमाप्नुयात् ६२

गंगाके किनारे हजारक्रोड शिवलिंगपूजा करणेका
फल और अष्टयुग काशी वसनेका फल शालग्रामो
की इकदिनकी पूजासैं होताहै ५८ स्कंदपुराणमें
कहाहै जो पुरुष सोलां १६ शालिग्रामोंकी नित्य पू
जा कर्त्ताहै सो सभ सिद्धिको प्राप्त होताहै ५९ गायत्
रीति वीस २० शालग्रामोंका चवीस २४ शालग्रामोंका
जो नित्य पूजन कर्त्ताहै सो नित्य अश्वमेध यज्ञके फ
लको लभताहै ६० द्वात्रिंशदिति बतीस ३२ मूर्त्तीयां
नित्य पूजन करणेते पुरुष शिवलोकको प्राप्त होता
है और चालीस ४० शालग्रामपूजा करणेसें विष्णु
लोकको प्राप्त होताहै ६१ चतुष्षष्टिरिति जो चौहस
ठ ६४ शालग्रामोका और शालग्रामोका नित्य पू
जन कर्त्ताहै सो पुरुष सभ पापोंते रहित होकर
विष्णुलोकमें प्राप्त हो ६२ ॥ ७० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शा॰
ग्राम॰
१०

17

मूर्त्तयः शतसंख्याकानानावर्णाविभूषणाः
गृहेयस्यप्रपूज्यंतेलक्ष्मीस्तस्यस्थिराभवेत् ९२
पाद्मे ततोवज्रीरवंयनिशालिग्रामशिलास्तयः
नहिब्रह्मादयोदेवाः संख्यांजानंतियत्फलं ९४
यः पुनः पूजतेभक्त्याशालग्रामशिलाशतं
उषित्वासहरेर्लोकेचक्रवर्तीहजायते ९५ प
द्मपुराणे गंडकीसरितांपुण्याचक्रतीर्थंचतत्
त्रहि शालिग्रामाभिधंक्षेत्रंतत्रविस्मसमुद्भवः ९६

मूर्तय इति नाना वर्णों कीयां शत १०० शालग्रा
म कीयांमूर्तियां जिसके घरमे नित्यपूजीतीहैं
जिसके घरमे लक्ष्मी सदारहतीहै ९२ पद्मपुरा
णमेकहाहै जोपुरुष शत १०० संख्याके आगे
लक्ष पर्यंतबहुत शालग्रामकी पूजा करतेहै
तिनकेफलकी गिणती ब्रह्मादिदेवता नहिजा
नतेहै ९४ यइति जोनित्य भक्ती करके शालग्रा
म सउका पूजनकरताहै सो वैकुंठमे निवास॰
कर भारतखंडमे चक्रवर्ती राजाहोताहै ९५
पद्मपुराणमेकहाहै नदीयांमे पवित्र गंडकी
नदीके चक्रवतीर्थशालग्राम क्षेत्रमे साक्षा॰
द्विष्णु उत्पन्नहोतेहै इसवास्ते वोक्षेत्रनामक
के शालग्राम होताभया ९६ ० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मूत्राबोवाह्हवंतीमसिनिह्यासंपुरातनं धूम्रके
शउवाच लोकपालेश धर्मान्मन्धर्मराजमहा
प्रभो संशयंछिंदिमेदेवसर्वज्ञोसिहरिप्रिय १
गंगाद्याः सरितोहित्वायास्याःकासोमर्वगोहरिः
गेहुक्यांमेवसंभूतस्तत्रकारणमुच्यतां २
यमउवाच आसीदत्रीनकल्पेवैमुनिर्वेद
शिरोमहान् गंगातीरेतपस्तीव्रंकुर्वन्लो
कसंस्थावहम् ३ तदाश्रमंमहत्पुण्यंरम्यं
नानाद्रुमाकुलं सर्वर्तुफलपुष्पाढ्यंनिर्वैरिप्र
णिसंकुलं ४

इसमे पद्मपुराणके कार्तिक माहात्म्य
मे यम और धूम्र केशके संवाद करके इति हास कह
तेहै धूम्रकेश कहताहै हे धर्मराज सर्वज्ञ और नाराय
णका भक्त तूहै इसते मेरे संशयनू हरकर १ गंगा
याइति गंगादिपवित्र नदीयांको त्यागकर परमेश्व
र गेडुकीनदीमे किस कारणते उत्पन होतेभये
इहकारणकहो २ यमजोकहतेहै हे धूम्रकेश
प्रथमकल्पमे गंगाजीके किनारे लोक सुखवास्ते
वडे उग्रतपको वेदशिरा नाममुनिकर्त्ताभया ३
तदोते तिसका वडापवित्र रमणीय फल पुष्पो
वाले वृक्षोंके साथ भरयाहोया और विना वैरसे
जीवो वाला आश्रम होताभया ४ प्रजापत्यमिति २
सालवृक्षोंके साथ सुभायमान प्रजावाली सु
खवती वेद शिराकी होनेभई ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पूजार्थं पुष्पवाटीचरमालैः समलंकृता ततो
भीता चितेन महेंद्रेणात् तपोमज्ज ऋषिना मंजु
वाग्देवी देवकन्या मनोहरा ५ सा तत्र कन्या
वनमल्लसंगी निसर्गसौरभ्यजितप्रसूना कौ
मल्यतक्लीकृतपल्लवाग्र विक्रीडवालाकर॰
कंदुकेन ६ सव्रीडहासोल्लसंतंसुवंतीवक्त्रं
सुगंधसुगंधेन विभ्रती स्तनौ वरां नदृष्टि
गोचरालसत्सुवर्णकुंभस्तन स्तनमध्यमा॰ ७
तां वेदमूर्धा पितपोतरायां दृष्ट्वा च वितेप
कटाक्षदृष्टिम् गतं तत्तोत्रच कांतसांत॰
तः प्रीत्या मुनेः पादयुगं दधौ मिषात् ८॥

हे मुद्रकेश जिसमुनिके तीव्रतपसे भयभीतहुये इंद्र
ने मंजुवाक् अप्सरा वडी सुंदर स्वर्गते वेदशिराके आ
श्रमपर भेजाभयोसेति वेदशिरा मुनिके आश्रमके॰
पास ओर मंजुवाक् वनको प्रकाशकर्तीहोई आपने
सुगंधकर्के पुष्पोंकोसुगंधवाले कर्तीहोई ओर आपनी
कोमलता कर्के हरकीतीहे पुष्पोंकी कोमलताजिस
ने अयसी मंजुवाक् कंदुक कर्के क्रीडा कर्तीभई ८
सेतिकैसीहे मंजुवाक् मंदहास लज्जासंयुक्त सुंदर औ
र चंचल सुगंधवाला मुख जिसका सुक्ष्म वस्त्रके बी॰
चते दृष्टिगोचरहोतेहैं सुवर्ण कुंभकी न्याई स्तन जिस
के ओर सुक्ष्महे लंक जिसका ७ अयसी जो मंजुवाक्
अप्सरा तिसको वेदशिरा ऋषि तपमे विघ्नकरणेवाली
देषिकर कटाक्षदृष्टिकोछोडताभया ओरसोतिसस्था
नते ओरजगा जानेकी इच्छाकर्तीहुई प्रीतिके वहाने
कर्के ऋषिके पादयुग्म रूपी कमलोंको धारणा कर्तीभई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तत्स्पर्शरोमांचितदेहमेनं ज्ञात्वा स्ववश्यं निज
बाहुपाशं तत्कंठपार्श्वे निदधेनदा सोनुबोध
चात्मानमनंगविद्धम् ९ ततस्तु क्रोधतत्त्वा
नोमुनिर्वेदशिरोमहान् अवशृंगात्मनात्मा
नेशशापैनां महातपाः ॰ वेदशिरउवाच त
रंगशीतिलतरां श्रमवस्त्रसमन्विता शृंगार
रूपिनीभूत्वा वित्तंपत्नीममोपरि ॥ कामं
देमत्त्रयंतोलेमुकामाभवां वुधौ यन्नदीव
समाहृष्टतमद्यामतभामिनी १२ ॥ ॰

तदिनि मंजवाक अप्सरा वेदशिरा मुनिके शरीर
को अपने अधीनजानकर्के वेदशिराके कंठमें
अपनी बाहुरूपीपाशको पातीभई और तिससम
य वेदशिरा मुनि अपने आत्माको कामदेव
कर्के सिद्ध जानता भया ९ ॥ ततइति वेदशिरा
मुनि आत्माने कामदेव सिद्ध जान कर आत्मा
को ज्ञानके साथ रोक कर और क्रोधसे मंजवा
क अप्सराको शाप देताभया ॰ वेदशिरा मुनि
कहताहै जिसने तरंगोकी तरां बहुत शीतल
वस्त्रके साथ और सुंदर शृंगार वाली हुयी हुयी
मेरेको संसार समुद्रत गेरती होयी और कामदे
वका रूप होकर नदीकी न्याई मेरे पर गिरती
भई इसीति नदीरूप तूं हो १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१९

एवं शप्तास्तसा देवीं मंजुवाक् खिन्नमानसा
प्रत्युवाच मुनीं दीना प्रसादायापतन्मुदा: १३
पराधीनास्मि भो ब्रह्मन् प्रतिवेशं प्रकुर्वती वि
नयावनता वापि न शापार्हा प्रसीद मे १४ न
दोवाच मुनिः शांतो नदीभूत्वा जनार्दनं स्वोद
रे धारयंती च कृतकृत्यं जनं कुरु १५ शालग्रा
मशिलारूपी विष्णुस्त्वयि जनिष्यति त्वय
शो विस्तरो लोके मुक्तिदाता नारायणमिह १६

एवमिति इस तरां शापवाली मंजुवाक् अप्सरा खि
न्नमन होकर बडी दीन ऋषिको कहणेलगी और
प्रसन्न करणे वास्ते मुनिको पादांको ग्रहण करतेभई
१३ पराधीनेति हे ब्रह्मन् हे मुने मैं पराधीन होक
र क्रीडा कर्तीहोईहां और नम्र हां स्त्रीहांहे ऋषे स्त्री
शापके योग्यनही होती मेरे पर प्रसन्न हो १४ न
देति इह बात सुन वेदशिरा मुनि क्रोधको शांत
कर कहणे लगा हे मञ्जुवाक् तूं नदी होकर परमे
श्वर अपने प्रवाह मे उत्पन्न करती होयी जनां
को कृतार्थ करेंगी १५ शालग्रामेति हे मंजुवाक्
तेरे मे शालग्राम स्वरूप विष्णु उत्पन्न होकर मु
क्ति देवेंगे और तेरे यश का विस्तार लोकों मे
होगा १६ ॥

19

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नववहत्यंखलुजन्मशोभने यत्रास्तिगोविंदसमागमोत्सवः शापोप्ययंनेवरनोपिकोमयादत्तोस्तियद्देभक्तिस्सुदुर्लभा ८ यम उवाच सैवेषामंजवागदेवीगंडकीसरितांवरा तस्यांविस्तुः शिलारूपीहंदाशापाद्बभूवह १८ इत्येवंसर्वमाख्यातंतद्भक्तहरिसन्निधौ १९ इतिखलुकथितस्त्वराजपुत्रोयमेनसमधिगतविमानं दिव्यरूपोपिकृत्वा सकलकलुषमुक्तःकार्तिकेकृत्सपूजा स्वमलपदमितोन्यकेवलंविस्मुमाया २० ॥

नवेति हेशोभने तेरा जन्म सफलहै जिसतेरेमेंगोविंद नारायणकाजन्म शालग्रामरूपीहोवेगा और यह शाप तेरेको मेरादेताहोया वरते अधिक होता भया जिसते विस्नुकी भक्ति दुर्लभहै ८ यमकहताहै हेवैश्य ओह मंजवाक अर्थात श्रेष्ठनदीयोंमें श्रेष्ठगंडकी नामनदीहोतीभई तिसगंडकी नदीमे हंदाके शापते विस्नु शालग्राम शिलारूपी होतेभये १८ इतीति हेवैश्य यह सभ तेरेको कहा है अवनारायणके समीपजहाज १९ इतीति यम करके कहाहोया राजाकापुत्र वडासुंदर कार्तिकमे प्रसंगते विस्नु पूजा करके सभनांपापोते रहितहोकर विमान सुंदरमें वेहकर विस्नुलोकनूं प्राप्तहोनाभया इससे और परमेस्वरकोमाया है २० ॥

शालग्राममाहात्म्ये सेतिहासमाह अथाय
योः अवस्थासिकन्ययोर्भक्तिचेष्टितं यदाक
र्ण्य नरो भक्तिं लभते नात्र संशयः १ एका
ग्रामेशकन्यासीदपरा राजकन्यका उभ
योः परमा प्रीतिर्नृपजासेवनीपरा २
एकदा तत्र कोप्यासीद्वैष्णवोतीव भक्ति
मान् तं द्रष्टुं राजमाता न कन्याभ्यां सहि
तायया ३ तत्र गत्वाथ संपूज्य वैष्णवं भ
क्तितत्परा अग्राम्य चलिता गेहं राजाका
माद्वयं तथा ॥ ४ ॥

इतिहास पूर्वक शालग्राममाहात्म्यकोकहतेहै
अबदोकंन्याकेभक्तिवाले चरित्रकोकहतेहैं जि
को श्रवणकरपुरुषभक्तिकलोभताहै इसमेसंश
यनहीहै १ एकेति इकनगरमे एकराजाकीकं
न्याएक और किसीकीकन्यादोवेथीयां दोनोकी
परमप्रीतिहोतीभई २ एकसमयकोई वैस्नव
साधुवडाभक्तिवाला नगरकेसमीप आवताभ
या औरतिस वैस्नवके दर्शन करणे वास्ते राज
कन्याकोमाताअपनीकन्याको और दूसरी कं
न्याकोंसाथलयकेजातेभई ३ ॥ तत्रेति ति
सवैस्नवकेपासजाकरभक्तिसेवैस्नवकीपू
जाकरनमस्कार करकें राणीघरनं चलती
भई ॥ ४ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैस्नवं तं तु विज्ञाय प्रार्थयामास भूरिशः पूजा
र्थं देहि मे देवं गुरो साधो नमोस्तु ते ५ इति श्रु
त्वा तयो वाक्यं स प्रवैस्नवोत्तमः शिला खंड
द्वयं ताभ्यां कन्याभ्यां प्रददौ हसन् ६ आहता
म तयोः साधु शिलहरि पिहेति हासतः ते उभे
भक्ति तस्तौ द्वौ शिलाखंडे प्रगृह्य च ७ प्रण
म्य तं गुरुं साधुं समागत्य निजालयं पूजया
मासतु स्तेद्वे कन्या भक्त्या शिलाद्वयम् ८ त
त्कृत्यां भगवांस्तत्र सर्वव्यापी निरंतरं प्रति
जग्राह पूजां तां ताभ्यां निःकामतः कृताम्
९

वैस्नवमिति वैस्नवको जानकर कन्या दोनो कहते
भयी हे साधु हे गुरो हमारे को पूजा के वास्ते नारा
यण की शिला देहु ५ इतीति ऐसा वाक्य दोनो
कन्या का सुणाकर वैस्नव हासकर्के शिला के
दो टुकडे दोनो कन्या को देता भया ६ आहेति
और एक शिला का नाम शिलहरि का पिला
हा ससे कहता भया और दोनो कन्या भक्ति कर्के दोनो
शिला का ग्रहणा करती यां भईयां ७ प्रणम्येति दो
नो कन्या साधु को नमस्कार कर्के घर मै आय क
र दोनो शिला की भक्ति से पूजन कर्तीयां भईयां
८ तदिति जिना की भक्ति से परमेस्वर तिनां शि
ला की निष्कामता से कीती होई पूजा को नि
त्य ग्रहणा कर्ता भया ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

21

अत्रेतिहासमुभयोः अन्येकं कथयामहे ग्रा
माधीशस्य कन्याया राजपुत्र्यास्तथैव च ।१
ग्रामाधीशस्य दायाद एकशत्रुर्भूतस्त्वैकदा
बलेन महता युक्तः समागत्यापतद्गृहे ॥
सर्वं लुंठितवांस्तत्र कन्यायाश्चापि या शिला
मंजूषायां स्थिता यत्र सापि तेनैव लुंठिता
१२ ग्रामाधीशादयः सर्वे धनशोकेन दुःखि
ताः राजद्वारेयपुत्कुस्तस्मै निवेदयन्मातराः
१३ सा कन्या गृहमध्ये तन्नामारहुनवाति
जां शिलाम् शोकार्ता अययौ तस्मै निवेदयन
मातरा १४ ॥

अत्रेति इसमै कथाप्रसंग दोनो कन्याका भिन्नभि
न्न राजकन्याका और ग्रामाधीशकी कन्याका क
हता हूं ११ ग्रामेति एक समय ग्रामाधीशका
घर वैर करकै दायाद अर्थात् हमरे ग्रामकासा
मी बल करकै युक्त आन करकै लूटलेजाता भया
और उसी लूटमै कन्याकी ओह पिटारी जिसमै
पूजावाली शिलाथी सोभी लूटके लेजाताभया
१२ ग्रामेति धनदे शोक करकै दुःखीहोया ग्रामा
धीश और तिसके सभ संबंधी राजद्वारमै कर
पुकार करतै भये १३ सेति और सोकन्या घरमै
पूजा वाली शिलाको न देखकर शोकार्त क्या
दुःखीहोकर कहनेको चलतीभई ॥ १४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पित्रामात्रावंधुवर्गैर्वोधितापिहठव्रता नसी
वकारपीतियमापिवान्यस्याकाकथा ५ तत
स्तेवांधवाःसर्वेतामूचुःकन्यकांपुनःगच्छ
तस्यगृहेतंततामानयनिजांशिलां ६ नो
चेदन्योनास्तियत्नःकश्चित्तवशिलांप्रति इ
तिश्रुत्वावचस्तेषांसाकन्यातीवहर्षिता ७
मृद्वींकाचित्समादाययमौदायादमंदिरं दा
यादश्चापितांद्वारिन्यवारयनयत्नतः ८
किमर्थमागतात्रवदमागच्छमंदिरं इ
तिश्रुत्वावचस्तस्यदायादस्यापिनिष्ठुरम ९

पित्रेंने और पिता माता और संबंधियों करके समझा
ई होई कन्या नतो कहा मानती भई न पानी पीवती
भई न किसीकी वार्तासुनती भई ५ तत इति तद
सब संबंधी एकत्र होकर तिस कन्याको कहने लगे
हे कंन्ये तूं दायदके घरमेजा अपणी देवको लयआ
६ नो इति हे कन्ये नजावें उसके घरमे ततद और
उपाय कोईनहिहै इह वाक्य सुणकर संबंधीयों
का सो कंन्या परम आनंद होय एक औरदहल
ग्रान्नू साथलय के दायादके घरमे जाती भई दा
याद भी तिस कन्याको देख कर द्वारते हटादेता
भया ८ किमिति और कहणे लगा हे कन्ये कि
स वास्ते तूं आई है कहो मतजा घरमे इह वाक्य
दायादका सुणकर कहणे लगी ९ ८ ॥
॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्राम·
२२

उवाच वचनं कन्या देवं मे नीतवानसि तं देहि
मे तद्दर्शनं ते द्वारे हं समुपागता २० इति श्रु
त्वा वचस्तस्या दायादः पुनरब्रवीत् मिथ्या
पाखंडमेतत्ते गच्छ मूढे स्वकं गृहम् २१ नो
चेद्देवोस्ति सत्यस्ते तं समाह्वाययेति कं
आगमिष्यति ते नीतवा गमिष्यसि निजमं
दिरम् २२ इति श्रुत्वा वचस्तस्य कन्या ना
नाहारतः कृशा रुरोदार्तस्वरेणोवबाजहार
पुनः पुनः २३ ॥

22

उवाचेति हे दायद नारायण मेरे लय आया है
सो परमेश्वर की मूर्ति देह इसवास्ते तेरे दरवाजे पर आ
रही हूं २० इतीति अयसे कन्याके वाक्यको सुणकर
दायाद तिसको कहता भया हे मूढे तूं मिथ्या
पाखंड कर्ती है हे मत पाखंड कर घर को जा २१
नोइति हे कन्ये जेकर तेरा नारायण सत्य है पा
खंड नहि तद तूं नारायणको बुला तेरे बुलाया
आजावेगा नत ले कर अपणे घर मै चली जा
वेगी २२ ॥ इतीति कन्या अयसे दायादके वा
क्यको सुणकर बहुत दीन हो रोदन कर्ती बु
लाती भई २३ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततस्तु भगवांस्तत्र मंजूषायां स्थितः प्रभुः तां
मंजूषां समुत्पाट्य कन्याग्रे समुपागतः २४
तां दृष्ट्वा वा निजमंजूषां सा मुमोद हृष्टवत्ता
गृहीत्वा चलिता गेहमथ तत्रागमत्स्वरम्
२५ दायादः प्रत्युवाचाथ किमत्रास्तीति दर्श
य तदाकर्ण्य तु सा शीघ्रं दर्शयामास तां शि
लाम् २६ दृष्ट्वा शिलां तदायादो निवृत्तः
स्वगृहं गतः सा कन्यापि शिलां नीत्वा समाया
ता पितृगृहे २७ संपूज्य शिलापिलं तु निवे
द्यान्नं ततः स्वयं उपोषिता हि सा कन्या बुभु
जे प्रीतमानसा २८

तत इति और तिस कंन्याके बुलाने पीछे नारायण
पटारीके साथही अकस्मा कंन्याके पास आजाते भ
ये २४ तामिति तब कंन्या अपनी पटारीको देख
कर परम आनंद होती भई कैसे है कंन्या सत्य है प्रति
ज्ञा जिसकी और लयकर पटारी अपनी घरको चल
ते लगी २५ तब दायाद कहणे लागा हे कन्ये इस
मे क्या वस्त है सो दिखला इसवास्ते कोसुनकर
सो कंन्या जलदी तिस शिलाको दिखलाती भई २६
दृष्ट्वेति दायाद शिलाको देखकर अपने घरको ग
या तब सो कन्या शिलाको लयकर पिताके घरको
आवती भई २७ संपूज्य इति आनकर शिलापिंड
की पूजा कर नैवेद्य लगाय प्रसन्न मन होकर
सो कन्या उपवास व्रतको धारण करती भई २८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवंप्रभावासाकन्यावत्सेराजसुताकथां
राजकन्यापितांयत्नाच्छिलांस्नपयतीस्मह:
२९ तस्योपितृगृहेकालेविवाहसमयेपिता
कारयामासनृपतेःपुत्रेणपरमादरात् ३०
विवाहानंतरंपत्नींसमादायगृहंययौनि
न्येतत्रापिसाकन्याशिलापिंडंनवैजहौ ३१
मंजूषायांतुसंस्थाप्यरत्नास्वशिविकोपरि
आगतापतिगेहेपिराजपुत्र्यातिभक्तितः ३२

एवमिति सो ग्रामस्वामीकी कन्या ऐसेप्रता
प गाली भयी अवराज कन्याकी कथा कह
ताहूं राजकन्याभीतिस शिलाकी एकांतमे
पूजाकरतीभई २९ तस्याविति सो राजकन्या
पिताकेघरमे रहतीथी औरविवाहके योग्य
जद राजकन्याहोई तदराजा उसकन्याका वि
वाह किसी राजपुत्रके साथ करदेताभया ३०
विवाहानंतरमिति सोराजाकापुत्र विवाह
पीछे स्त्रीको साथ लयकर घर कोआताभ
या उस समय राज कन्या नारायणकी मूर्ति
साथ लयआवती भई उस मूर्ति को न त्या
गते भई ३१ मंजूषायामिति राजकन्या भ
क्ति करकें पिटारीवीचधरकें शिलाको पा
लकीमे साथ लयकर्कै पतिकेघर आवा
तीभई ३२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शिलापिष्टेति नाम्ना वै पूजयंती सदा हरिं १३
एवं गतेषु कालेषु कदाचिद्दैवयोगतः प्र
जयंतीं शिलापिष्टं पातिरेनां ददर्श ह १४ प
प्रच्छ किमिदं कांते करोषि कथयस्व नः स्मि
तेन त्याह तं स्मिता देवपूजां करोम्यहम् १५
अनेनैव तु सर्वेषां मैहिकामुष्मिकं सुखं
इति श्रुत्वा वचस्तस्याः सुकोपसन्नृपात्मजः १६
अज्ञातपूजनामाहात्मो द्वितीय इव नास्तिकः
पादेन पूजासामग्रीं चिक्षेप सशिलां तदा १७

शिलापिष्ट शिलापिष्ट नाम लय करकै सदा नाराय
णका पूजन करतीभई इसी तरां बहुत काल व्यती
त होगया दैवयोगते एक दिन राजकन्याके पूज
नको पति देखताभया १४ पप्रच्छेति देखकर
पूजाकरती स्त्रीको पूछने लगा हे कंत्ये क्या है प
हु क्या करतीहै तुं हमारेको कहो इह बात पतिकी
सुनकर राजकन्या कहणे लगी हस करकै हे
नाथ परमेश्वरकी पूजा करतीहां १५ अनेनेति
हे देव इस परमेश्वरकी कृपासे इस लोकका औ
र परलोकका सब सुखहै १६ बात सुनकर्कै
राजपुत्र क्रोधको करतीभया १६ अज्ञातेति सो
राजपुत्र पूजाका माहात्म्य जानतानहो सो
नास्तिक सरीषासी क्रोधकरके पादके साथ स
भ पूजाकी सामग्रीको और नारायणकी मू
र्तिको हर फैंक देताभया १७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततःसराजतनयाहाहाकृत्वाकरोदह ता·
तोपिकतरःक्रुद्धोराजपुत्रोतिमंदधीः ३८
स्वयमुत्थायतांसर्वांसामग्रींसशिलांतदा
गृहद्वारिसरिन्मध्येजलेविक्षेपकोपनः ३९
सादृष्ट्वातज्जलागाधेंतिमंदेवंनृपात्मजा
उद्यंपनदिनामर्तुमुपचक्रेदृढव्रता ४०
ततोनिवारयामासुर्वांधवामरणात्सुखिं
तांराजकंन्यांचप्रोचुर्दास्यामस्तेशिलांततो ४१

ततइति और उसेसमय राजकन्या हाहा का
कें रोदनकर्तीभई और महामूर्ख राजाका पुत्र
वहुतक्रोधकर्ताभया ३८ स्वयमिति राजपु
त्र सभसामग्रीको एकत्रकर्के और मूर्ति ना
रायणकी साथलयके घरके नजीक अगाध
जलवाली नदीके वीचफेंक देताभया ३९
सेति सोराजकंन्या दृढव्रतवाली राजपुत्र
कर्के अगाधजलमे पडीहोई मूर्तिकोदे
खकर फाहलयके मरणेका प्रारंभ कर्ती
भई ४० ततइति मरणलगी राजकन्याका
हठ सभसंवंधी देखकर मरणेते हटाते
भये और कहणेलगे हे राजकन्ये तेरे को
ओहि शिला असी देवेंगे ४१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततोनिहृतमरणान्याचमानस्वकांशिलां
आगापेपतिनांतांतत्तात्तासर्वेपराङ्मुखाः
५२ यत्रतत्रगतास्सर्वेसाकन्यैकारुरोदह
एवंदिनद्वयंजातंतस्याआदिकंविना ५३
मरणोकृतसंकल्पाशिलाखंडंविनासती
तृतीयेदिवसेप्राप्तेपतिस्तस्यास्समागतः
५४ निष्कास्यखंडंमूढात्मात्रासयामा
सनिष्ठुरम् किमिदंविद्यसेमूढेप्रपयन
करिष्यसि ५५ यद्वाक्यमेवखंडंहन्मि
त्वांनात्रसंशयः इतिभर्तृवचःश्रुत्वासा
प्रहस्याब्रवीद्वचः ५६ ॥

ततइति अयसे संबंधीयांका वाक्य सुनकर सो
कन्या मरणेनें हटजातेभई और मांगणेलगी
मेरीशिलादेओ तब संबंधी अणायजलमे पडी
होई मूर्तिको देखकर सभ संबंधी इधर उधर
चलेगये ५२ सोकन्या एकली रोदन करने ल
गी दोदिन पर्यंत निराहार कर्तीभई ५३ मरणा
इति सो राजकन्या मूर्तिथी विना मरणमै
कीनाहै निश्चय जिसने इसतरांतीनदिनमें
पतिउसका आवताभया ५४ निष्कास्येति और
खडू काढ करकें त्रासदेताभया कहनेलगा हे
मूढे क्यों दुःखपाती हैं मेरावचन न करेंगी
५५ यदिति हे मूढे देख मेरे खड्गको मेंतेरेकोमा
रांगा ऐसे भर्ताका वाक्यसुनकर्के औरहसकर्केकह
णेलगी ५६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अहोस्माकं न कर्तव्यं यत्तदार्य्यं कृतं त्वया म
त्वमेव न देवं विना नास्त्यत्र संशयः ४७ तद्व
द्भिर्विनायत्नेमम संपादितं स्वयं इति श्रु
त्वा वचस्तस्याः पत्न्यास्तस्या राजपुत्रकः ४८
चिंतयामास मनसा किं करोमि ततः परं
मरणे कृतसंकल्पा शिलायं तु विना कृ
थीः ४९ कथमेव शिलाप्राप्तिर्भविष्यति
करोमि किं इति निश्चित्य तां स्त्रेहास्तु ना
राहनृपात्मजः ५० ॥

अहो इति हे स्वामिन् हमारे को जो आपने विवा
ह सा करणा चाहिए मेरे को नारायण वि
ना मरणा ही है ४७ तदीति सो विनायत्न
से तयने सभ करणा चाहिये अयसे राजा
कन्या का वाक्य सुनकर के सो राजपुत्र वि
चारणे लगा इसने पर क्या करां इसने मू
र्ति ने विना मरणा निश्चय कीता है ४८ ॥
कथमिति कयसे शिला मिले और मै
क्या करां अयसे विचार के मन मे करने
लगा ५० ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शिलागाधेजलेतिष्ठत्कथंप्राप्यासितांशुभे
गृहाणत्वंशिलांमनःप्रसादंकुरुमत्कृते ५१
इतिभर्तुर्वचःश्रुत्वासाराजतनयाब्रवीत्
निर्भयागतशोकाचैवमरणेकृतनिश्चया ५२
स्वामिन्प्रसीदमेयत्वंयद्ब्रवीमिकुरुष्वतत्
स्वयंचानयमांत्वंवानयनत्वजलाशये ५३
निमज्याहंकरिष्यामिप्राणत्यागंशिलाविना
नाकथंचिदपितेगेहेनाथस्थास्येमममाधुना
५४ ॥

शिलेति शिला आगाधजलकेवीचहै सोकैसे
प्राप्तहोवै मैतेरेको औरशिला ल्यादेनाहूं तूमे
रेवास्तेप्रसन्नहो और कृपाकर ५१ इतीति सो
राजकन्या ऐसे अपने पतिका वाक्यसुन
कर निर्भयहोईहोई कहणेलगी कैसीहै मर
णमेकीनाहै निश्चय जिसने ५२ स्वामिन्नि-
ति हे स्वामिन् अब प्रसन्नहो मेरे पर जोमै
कहतीहूं सो करो चाहै तो आपमारो और
नहिंतो उसजलाशय परमेरेको लयचलो
५३ निमज्येति मैं उस जलके बीचडूबक
र मर जावांगी मै तो शिलाविनाकदेभी न
जीवांगी और तेरे घर कदेभी स्थित न रहूं
गी ५४ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्राम·
२९

इत्येतद्वचनंसोपितामुवाचव्रजायुना ना-
हंत्वाज्ञातयिष्यामिकुरुतत्त्वययारुचि ५५
ततःसाराजकन्यावैजनैःकतिपयैर्वृता
स्नानव्याजेनवव्राजनदीतीरेनिगोपिना ५६
वाहनान्निर्गतासद्योजगामामार्गयवारिणि
स्मरंतीतंनिदेदेशिलापिलहरिंमुदा ५७
अथांतरेणभगवान्ज्ञात्वातत्सांहृदयमति
मंजूषांशिलापिलस्यपादलग्नांचकारहं ५८

26

इत्येत राजकन्याके वाक्यकों सुनकर सोराजा
जाका पुत्र कहनेलगा कि अब तूं घरमें मेरेकों
मारता नहींमेरामिरजीहै सोकर ५५ ततइति
इतनी बात भर्ताकी सुनकर सो राजकंन्याकि
तनेक आदमी साथ लयके स्नानकरणेका
वहाना कर्कें नदीके कनारे पर जातीभई ५६
वहानादिति सो राजकन्या पालकीते निकस
कर्कें अपने मनमें शिलापिल नारायणका
स्मरन करतीहोई ५७ अथेति इसतें पीछे
भगवान् नारायण तिसराजकन्या कीहृद
वुद्धि जाण कर्कें शिला वाली पटारी उसरा
जकन्याके पादकों लगाते भई ५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततःपादेनसंलग्नेकिमिदंकिमिदंतिरि गृ
हीत्वापाणिनातोयान्निष्कास्येततस्ततदा
५१ ददर्शतांतमंजूषांजहर्षसाश्रुलोचना
संस्थाप्यशिविकायांतांमंजूषांसाप्रतर्द्रुतं
९० स्नात्वाहर्षाश्रुनयनासमायाताजस्समंदि
रं मन्जेवारिप्रविष्टाहंनदामेमिलितोहरिः
पश्यनाथकृतार्थास्मिशिलपिल्लप्रसाद
तः स्वयंसोपिदुराचारान्निवृत्तोहरिकी
र्तने ९२ ॥

ततइति नदराजकन्याका पाद पटारीकोलगा
उसी समय राजकन्या क्याहै क्याहै ऐसे कह
ती कहती हाथके साथ जलकेमध्यसे निका
लकेदेखती भई ५१ ददर्शेति देखकर मंजूषा
की बहुत प्रसन्न होकर्के पालकीके बीच शी
घ्रहि रखकर तिस पटारीको ॥ ९० स्नात्वेति
स्नान कर्के आपने घरको आवती भई और
कहिनेलगी मरणी वाले मै जलमे गई मेरे
को नारायण मिले ९१ पश्येति और कहणे
लगी हेस्वामीन् देख अब मैं शिलपिल जी
दी कृपासे कृतार्थहां इतनी कथा सुनकर
राजपुत्रभी दुष्कर्म्मते हटजाताभया और
नारायणका कीर्तन कर्ताभया ९२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्राम·
२०

27

कृत्वा मतिं राजपुत्रः पुत्रपौत्रैर्मुमोद ह एवं
तद्भक्तिसंसर्गाद्राष्ट्रे भक्तियुताभवन् वि
ष्णुभक्तिप्रभावेण जग्मुर्लोकं भवनं हरेः ९३
मम स्याद्यथा तथा चित्तमेकाग्रं चेद्धरौ भ
वेत् स न शोचेत कुत्रापि सत्यमेतन्न संश
यः ९४ इति शालग्रामप्रशंसा अथ हरि
मंदिरगमनमहिमावर्णनं श्रीमद्भागव
ते पादौ नृणां तौ द्रुमजन्मभाजौ क्षेत्रा
णि नानुव्रजतो हरेर्यौ ॥ १ ॥ ॥

इसप्रकार राजाकापुत्र हरिके पूजन करने
में दृढनिश्चय वाली बुद्धि कर्के पूजाके प्रभाव
से पुत्र पौत्रादियोंके सहित उसके सर्व भोग
ता भया इसप्रकार तिस राज कन्याकी भक्ति
के संसर्गसे उसके राज्य भर मे हरिकी भक्ति
युक्त लोक होतेभये सो सारे हि विष्णु भक्तिके
प्रभाव कर्के हरिविष्णुके भवनमे क्या वैकुंठ
लोकमें चलेजातेभये ९३ और राजकुमार कथन
करता है जिसप्रकार मेरा चित्त एकाग्र हरीमें ल
गा है इसीप्रकार और किसीका भी लगे तब सो
भी किसी स्थानमे भी शोक न करेगा इसमे कछु सं
शय नहि है ९४ अब हरिके मंदिरमें जानेकी महि
मा कहते हैं और श्रीमद्भागवतमें कहा है पुरुषों
के सो पैर वृक्ष योनिके भागी है जो हरिके मंदिरमें न
होजाते हैं ॥ १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मे यावत्पादान्द्विजश्रेष्ठ गच्छेत्पुरुषो हरिमंदि
रे तावद्वर्षसहस्राणि मोदंते विष्णुसन्निधौ २
पद्मपुराणोत्तरखंडे हरिमंदिरमालक्ष्य यावद्गच्छेच्छनैः शनैः पदे पदेऽश्वमेधस्य फलमाप्नो
ति मानवः ३ भविष्योत्तरपुराणे विष्णोः प्रसादं यः गच्छेत्स कृतेन प्रणमने अश्वमे
धफलं प्राप्य चांते हरिपुरं व्रजेदिति ४
वाराहे नानुव्रजति यो मोहाद्गेहे हरिमहोत्सवे ज्ञानाग्निदग्धकर्माणोऽपि वसते नरके
ध्रुवं ५ ॥

पद्मवाक्य पद्मपुराणमे कहा है हे द्विजश्रेष्ठ पुरुष जो है सो जितने पाद हरिके मंदिरमे जाते है उतने हे हजार वर्ष विष्णुके समीप क्या वैकुंठमे सुखभोगकों प्राप्त होते है २ पद्मपुराणके उत्तरखंडमे और भी कहा है क्या हरिके मंदिरको देखकर जितना पाद धरे २ जाते है उसकों उहां जानेमे पाद २ रखनेमे एक २ अश्वमेधका फल प्राप्त होता है ३ भविष्योत्तरपुराणमे कहा है कि विष्णुके मंदिरमे जो जाकर एकवार प्रणाम कर्ता है सो अश्वमेधयज्ञकरनेके फलको प्राप्त हो कर अंतमे हरिविष्णुके पुरमे क्या वैकुंठमे जाता है ४ ॥ वाराहपुराणमे कहा है हे देवि जो पुरुष मोह क्या अज्ञानसे हरिके महोत्सव क्या मेलेमें नहि जाता है सो ज्ञानरूपी अग्निकर्के दग्ध हो गये हैं क्लेश जिसके ऐसा भी है तदभी शोकरूपी नरकमें चिरकाल निवास कर्ता है ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैश्वानरक्रियाधिकारे उत्सवे वासुदेवस्य
नयाति स्पर्शशंकया स्वर्गस्थाः पितरस्त
त्र पतंतिनरके त्वगणान् ६ स्कंदे दर्शने
माधवस्यापि भस्मीभवति पातकं आज
न्मसंचितात्पापान्मोचयिष्यति नान्यथा
पदे पदेऽश्वमेधस्य फलमाप्नोति निश्चितं
म् ७ बृहन्नारदीये तौ पादौ सफलौ पुं
सां विष्ण्वायतनगामिनौ ८ ॥

वैश्वानर क्रियाधिकारमें कहा है वासुदेव भ
गवानजी कि उत्सव क्या मेलेमे स्पर्शशंका
क्या कि जो इतर जाति छोहनेसें होती है इस
वास्ते जो नहि जाते है तिनके स्वर्गमे स्थित जो
पितर सो तत्क्षणमें नरकमें पडते है ६ स्कंदपुरा
णमे और कहा है माधवलक्ष्मीके स्वामी भग
वानजी कि दर्शनमे पापभस्म होजाते है और
हे मन्ने पुरुष नारायण दर्शन सें जन्मसें लेक
र इकट्ठे करे होए पापोंको हर करदेता है
और तदहोजानेमे पुरुष एक २ पैरमे अश्वमे
धके फलकों प्राप्त होता है ७ बृहन्नारदी
ये पुराणमे कहा है पुरुषोंके सोई पैर सफ
ल है जौनसे विष्णुके मंदिरमे जानेवाले
है ८ ॥ ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भक्तमालायां अथापरं प्रवक्ष्यामि भक्तिमा-
हात्म्यमुत्तमं परमाश्चर्यजननं हरिभक्तिप्र-
दायकम् १ द्वारकायास्तु पूर्वस्यां जाकोरइति
विश्रुतः महाग्रामोस्ति तत्रासीद्ब्राह्मणो भ-
क्तिसंयुतः २ रामदास इति ख्यातः कुटुंबी हरि-
पूजकः प्रतिमासं द्विजः सोथ गत्वा द्वारावतीं
मुदा ३ उपोष्यैकादशीं तत्र कृत्वा जागरणं
निशि समायाति निजं गेहमिति तस्य दृढं व्र-
तम् ४ ॥

भक्तिमाला नामक ग्रंथमे हरिके मंदिरमें जाने-
की महिमा का प्रभाव वर्णनमें रामदास नामक
ब्राह्मणका इतिहास कहा है सो इहां लिखते हैं अ-
ब और उत्तम भक्तिका माहात्म्य कथन करता हूं
कैसा है परम आश्चर्य का विस्मय को करने वाला
और हरिकी भक्ति देनेवाला १ द्वारिका पुरीमें पू-
र्व दिशामें जाकोर नामक करकें प्रसिद्ध बडा एक ग्राम
है तिस ग्राममें भक्ति करकें संयुक्त ब्राह्मण निवास
करता था २ रामदास जिसका नाम बडे कुटुंब वा-
ला नारायणकी पूजा करणेमे तत्पर सो ब्राह्मण
महीने २ प्रति बडे हर्ष करकें द्वारकामे जाकर ३
तहां एकादशीके दिन निराहार व्रत करकें रात्रिमे
जागरण करकें दूसरे दिन फिर अपने घरकों च-
ला आवता भया यह तिसका दृढ अखंडित रां-
सें व्रत था वा प्रतिज्ञा थी ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गेहेपिसाधुसेवायांनिरतःसर्वदाद्विजःभि
क्षयान्नानिचादायसाधुभ्यःप्रददौमुदा ५
एवंगतेषुकालेषुरामदासोजरागतःने
ष्यापिद्वारकायात्रांरणछोरहरेःपुरः ६
उपवासंजागरंचचक्रेकृच्छ्रेणसद्विजःए
वंगतागतंकर्तुमशक्तोब्राह्मणोत्तमः ७
नचतस्योद्वारकायांकुटुंबभरणायसः
डाकोरग्राममागत्यचक्रेपुत्रादिपालन
म् ८ ॥

और अपने घरमे भीसर्वदा काल साधुयोंकी सेवा
मे तत्पर रहताथा और भिक्षा मांगकर अन्नादि
ल्याके बडेहर्षकर युक्तसाधुयोंको भोजन कर
वाताथा ५ इसप्रकार बहुत कालके व्यती
त होते २ रामदास अवस्था करके वृद्धहोगया
क्याशिथिलहोगया तदभी द्वारकाकीयात्रानहि
त्यागताभया ६ और रणछोरभगवानजीके आ
गे जाकर बडे क्लेशकर सो रामदास ब्राह्मण
एकादशीकानिराहार व्रत और रात्रिमे जागरण
कर्ताभया ७ तदभीसो ब्राह्मणोत्तमदूसरे दि
न द्वारकामे नहि स्थित होताभया क्योंकि कुटुं
बके पालन वास्ते चला आवताभया और
डाकोरि ग्रामअपनेमें आकर पुत्रादियोंका
पालनकर्ताभया ८ ॥

29

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथैकस्मिन्दिने विप्रो रामदासो जरातुरः ए
कादश्यां गतस्तत्र रणछोरसमीपतः ९ प
थ्यश्रमाज्जरादोषादतिम्लानो बभूव सः त
थाप्युपोषितो रामदासः कृत्वाथ जागरम् १०
द्वादश्यां पारणं कृत्वा न गंतुं शक्तिमानभू
त् तत्रैव सुष्वाप रणछोरस्य सन्नि
धौ ११ अथ स्वप्ने रामदासं रणछोर उवाच तं
अहो मां नय तत्रैव यत्र त्वं वससि द्विज १२

इससें उपरंत एकदिन वृद्धावस्थाकर्के आतुर रा
मदास ब्राह्मण एकादशीकों तहां रणछोर भग
वानजीके समीप चलातोगया ९ परंतु मार्गके
खेदसें वृद्धावस्थाके दोषसें बहुमलीन क्या खे
दयुक्त होगया तदभी उपवासकर्के रात्रिमे जा
गरणकर्ताभया १० दूसरेदिन रामदास व्रतकों
पारणकर्के फिर परत कर अपने घरमें आव
नेकों समर्थ नहि होताभया तदनंतर हि रणा
छोरजीकेपास मंदिरमे कहीं सोयरहा ११ अव
इस रामदासकों स्वप्नमे रणछोरजी कहनेलगा
हे द्विज जिसग्राममें तूं निवास कर्ताहै उसी
ग्राम मे मेरेकोभी लेचल क्योंकि तेरे क्लेश पा
कर्के मेरेकोभी क्लेश होताहै १२ ॥ ९

सा॰
ग्राम॰
३॰

30

आनीय शकटं तत्र मामारोप्य महानिशि इतः
प्रयाहि मद्भक्त्या गमिष्यामि न संशयः १२
इति दृष्ट्वाथ स्वप्नं सः प्रातरुत्थाय हर्षितः
द्विजोथ गृहमागत्य नीत्वा शकटमुत्तमम्
एकादश्यां रामदासो द्वारकायां समागम
त् सतत्र रात्रौ स्थित्वा तत्र व्रती जागरणं च
रन् १५ द्वादश्यां पारणं कृत्वा निशायाम
र्धरात्रिके उत्तार्याथ लंकृतान्सर्वान्संस्थाप्य
तान्मठेष्वनः १६

इहांसे गाड़ा ल्याके मेरे को अंधेरी वडी रातमे उ
समे स्थापन कर इहांसे लेचल तेरी भक्ति प्रीति
करके मै इहांसे चलूंगा इसमें संशय नहि है १२
इस प्रकार रात्रिमें स्वप्न देखकर प्रातःकाल उठ
कर हर्षसे सो ब्राह्मण घरमे आयकर फिर ह॰
सरीवार एकादशीको गया तद गड्डेको सा
थ लेकर जाय प्राप्त हुया १४ एकादशीको रा
मदास द्वारिका मे प्राप्त और उपवास जागरण
करताभया १५ दूसरे दिन द्वादशीको पारणाक
कें तहांहि निवास करताभया तो रात्रिके अर्ध व्य
तीत होगया रामदास मंदिरमे जाकर भगवानजीके
सारे वस्त्र भूषण उतारकर तिनको तहांमे रखकर
मूर्तिको वाहर ल्याया १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रणछोरसमुत्थाप्यसंस्थाप्यशकटोपरि नि
जंगामद्वारिकायाभयादंतिजवेनसः १७
अथप्रभातेद्वादश्यांरणछोरस्यपूजकाः
अदृष्ट्वारणछोरंतच्चिंतांजग्मुरत्ययाम्
१८ केननीतोयमस्माकंरणछोरःप्रताप
वान् इतिसंचिंत्यतेसर्वेतत्रस्थान्ददृशुर्जनाः
नात् १९ कोनास्तिवारामदासमदृष्ट्वाः
तिथपूजकाः शकटंचाप्यदृष्ट्वातेःसर्वे
रैतद्धिनिश्चितम् २० ॥

रणछोरजीकी मूर्तिकों उठायकर गडुडेके उप
र स्थापन करकें भयसें द्वारकासें शीघ्र वडे वेग
कर नि ल आवताभया १७ इस वृत्तांतसें उ
परंत क्या रात वीत जानेसें उपरंत प्रभातस
मय रणछोरजीके पूजारी मंदिरमे रणछोर
जीकी मूर्तिकों न देखकर वडी दुरत्यय चिंता
को प्राप्त होतेभये १८ क्याकहतेहैं किसने ह
मारे प्रतापवाले रणछोरजी चुरायेहै ऐसा को
नहै क्याकरें कहांदेखें किसको पूछें उनके
विना हम क्या करेंगे ऐसें चिंतन कर उस नग
रीमें घर २ ढूंढने लगे १९ एककोई पुजारी
उहां रामदासकों और तिसके गडुडेकों नहि
देखकर कहने लगा भाईयो और उहांके लो
कमारे इहांहिहै एकरामदास इहां नहिहै सो
ई लेगया होगा २० ॥ ० ॥

अनेनैवनतीनो सो निशायांनात्रसंशयः अत
एवरथंनीतावैगुरिहचागतः २१ अर्द्धरा
त्रेरामदासोजग्रामशकटेनवै इतितत्रत्य
मनुजैरुक्तास्तेपूजकास्तदा २२ उत्थायद
द्रुवुःसर्वेरामदासंप्रतिद्विजाः रामदासस
मायातोयदास्वग्रामसन्निधौ २३ तदाति
पूजकालब्ददृष्ट्वातंद्विजोत्तमं रामदासो
पितान्सर्वान्ददर्शातित्वरान्वितान् २४ विज्ञा
यमूर्तिमुत्थाप्यमाप्याविक्षेपभीतिमान्
स्वयमागत्यशकटेरामदासःस्थितोभवत् २५

इह वातसभनों ने निश्चयकरिके रातके समय इसी
ने लेते हैं इसमे कुछ संशय नहि है क्योंकि इसी
वास्ते पिछले दिन रथ ल्याके इहां आया था २१ आ
धी रात के समय इहां से रामदास रथ पर चढ के
गया यह बात उहां के रहने वाले लोकों ने पूजा
री लोकों की कथनकरी २२ तदपि इतनीबात
के सुनते उसीसमय शीघ्र उठकि रामदासके पे
छे सारेहि ब्राह्मण दौडे पर रामदास इतने मैं जर
अपने ग्रामके समीप चला आया २३ तद सो दूर के
वासि पूजारी तिस द्विजोत्तमको देखने भये और राम
दास भी तिनकों दौडकर अपने पीछे लगे हुओं कों दे
खता भया २४ तद उसने मनमे विचारा कि मेरे पीछे
लगे आवते हैं अब मेरे कों पकडकर न जाने क्या दु
र्दशा करेंगे इतनी बात के भय कों जानकर मूर्ति कों
उठायकर बाउली मे सुटदेता भया और आप शकट मे
आकर बैठता भया २५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथैते निःखजकास्तत्र समायाता स्त्वरान्विताः
ददृशुः शकटं तत्र न तु पश्यन्प्रतिमां शुभां २६
ततस्तन्मध्ये कोप्युवाच वाप्यां वापीतीरे गतोप्ययं
को वेद तत्र निलिप्य पुनरागतवानसौ २७
श्रुत्वा तत्र जनास्सर्वे वापीतीरमुपागताः प
श्यन्तो जलमध्ये तां ददृशुः प्रतिमां हरेः २८
उत्थापयितुमारेभे सर्वे ते पूजकास्तदा नो
त्तस्थौ प्रतिमा तत्र सर्वे चिन्तासमाकुलाः २९
ग्रामादन्यान्बलिष्टान्वै यथाशत सहस्रशः
प्रार्थ्यानीय ततैस्सापि नोत्थिता प्रतिमा जला
न् ३०

इससें उपरंत तहां पुजारी दोडते २ पीछे चले आ
ये तो शकट को देखने लगे उसमें प्रतिमा नहि
उनोनैं देखी तद कहनेलगे प्रतिमा इहांभी नहिहैं
२६ उनके बीचमेंसें एककोई पुजारीहि बोला इ
हांसें उठके बाउलीके किनारे गयाथा न जाने उस
के बीचन सटया आया होवे फिर इहां वैठगया
होवे २७ ऐसा कहकर्के सारेहि बाउलीके कि
नारे पर चलेगए तो क्यादेखनेहैं कि जलके म
ध्यमे प्रतिमा पडीहै २८ तद सारेहि पुजारी उस
कों जलसें उठानेका आरंभ कर्तेभयेपर ओह प्रति
मा नहि उठती भई तद उनकेमनमैं चिंताभई क्या
करे ऐसे आकुलहोये तो ग्रामसे हजारों बडे बडे बल
वानोंको प्रार्थना कर्के इहां ल्याए बडे यत्नसें नि
कालने लगे तदभी प्रतिमा उहांसे नहि उठी ३०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३२

ततः सर्वे निवृत्तास्ते स्नात्वा हरिविचेष्टितं रा
मदासेन च वै केन प्रतिमेयं समन्विता ३१ सै
वास्माभिस्तु बालिभिः सह हे वेश्मनि नो स्थिताः
अतो नैव हरेरिच्छा गंतुमिच्छाति निश्चितं ३२
तथा चात्रैव वत्स्यामो वयं चैव न संशयः इ
ति निश्चित्य ते सर्वे तस्थुस्त्यक्ताशनोदकाः
३३ निशायां रणछोरस्तु तानुवाच वचो हि
तं अहो नाहमितो यामि रामदासस्य भक्ति
तः ३४ ॥

तद प्रतिमा बाउली के बीच से नहि निकली तद
सारे हि पीछे हट गये क्योंकि हरि की इच्छा हि प
सी है देखो बूढे रामदास ने इकले उठा थि के सारी
श्री इसमें पाई ३१ ओहि मूर्ति हमारे बडे २ बलवा
नों हजारों से नहि उठी इस से जानो निश्चय करके
हरि की इच्छा तहि है ३२ अच्छा यह मूर्ति उहां
नहि जाती है तद हम भी इहां हि निवास करते हैं
इसमें संशय नहि है ऐसा निश्चय करके सारे हि
ओह अन्नपाणी का त्याग कर उहां हि बैठ गए
३३ तद रात के समय रणछोर भगवान् सभ
मे तिनको हितप्यार का वचन कहते भये
क्या कि हे द्विजाः रामदास की भक्ति करके व
शीभूत मैं हो सो अब इहां मैं से नहि कदी भी
जावोंगा ३४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गृहं यात द्वारकायां स्वर्णं नीत्वा तु मत्समं त
त्रा मत्मूर्तिं कृत्वा मे स्थापयध्वं महे पुनः २५ त
त्रापि भवतां भक्त्या नित्यं स्थास्येव न संशयः त्वन्
मैवं ततो रामदासं स्वप्ने ऽवदत्प्रभुः २६ मत्तु-
ल्यं कनकं प्राप्त दत्वा तेभ्यो न भक्तितः स्वज-
के भ्यो यत्नात् भक्त्या विसृज्य मां तु नय गृहे २७
संस्थाप्य पार्श्वे प्रतिष्ठामि त्वद्गृहे नात्र संशयः
इत्युक्त्वा रामदासाय स्वप्ने तत्स्त्रियै पुनः २८
स्वप्ने प्रोवाच भगवान्भक्तानुग्रहकारकः
कर्णालंकरणं यत्तत्किं कावयमस्ति ते २९

और तुम लोक सारे हि मेरी इस मूर्तिके तुल्य सो
ना इससे लेकर द्वारकामे चले जाओ तहां जाके
उस स्वर्णकों और मेरी मूर्ति वनवाकर फिर स्था
पन करो २५ तहांमेभी तिस मूर्तिमैं तुमारी भक्ति
करके स्थित होऊंगा इसमें संशय नहिंहै तिन
कों ऐसे कथन करकै फिर रामदासकों स्वप्नमै
जाकर प्रभुजी कहते भये २६ हे द्विज मेरी मूर्तिके
वरावर तोलके स्वर्ण उनकों देकर वडी भक्तिसें
फिर तिनकों प्रीति करके विदा कर पीछे मेरेकों
अपने घरमे लाकर २७ स्थापन करके हे ठाकर (?)
करमे तेरे घरमे स्थित होऊंगा इसमें संशय नहिं है
इस प्रकार रामदासकों स्वप्नमे कथन कर फिर ति-
सकी स्त्रीकों २८ स्वप्नमें जाकर भक्तोंके ऊपर दया
करने वाले भगवान रणछोरजी कहते भये कि जो
तेरे कानमे तीन रत्ति स्वर्णका स्वर्णभूषण पडा है ३६

सा॰
ग्राम॰
३३

तदर्थयतनतांतत्तत्समोपिमवामहं इनिह
ष्ठाप्यतेस्वप्नमनस्य: प्रातरेवहि ५१ एवंक
रामदासस्यगृहद्वारिसमागता: देहितःप्र
तिमातत्वंस्वर्णंयामोग्रहेवयं ५२ इतिने
षांवचः श्रुत्वारामदासोतिविस्मितः उ
वाचसत्यमेतद्धि ममाप्याहजनार्दनः ५३
परंतुकनकंतद्दर्नतेकुत्रमेद्विजाः त
थापिपत्नीएवाहंसमागच्छामितिष्ठथ
५४ ॥

सोभूषण तुलाके पात्रमें रखदेना उसकेहिव
रावरहोजावेगा इस प्रकार सोपुजारी स्वप्नदेखक
र प्रातःकाल उठखडेहोतेभये ५१ सोपुजारीरा
मदासकेघरमे द्वारपर प्रभातसमयही आयप्रा
प्तभये और तिसको कहनेलगे प्रतिमाके तुल्य
हमारे को सुर्ण देदे हम अपने २ घरकोंचले
जावेंगे ५२ यह तिनका वाक्य श्रवण करके
रामदासवडे विस्मयको प्राप्तहोकर तिनको
कहने लगा यह वात सत्यहै क्योंकि मेरेको
भी भगवान जनार्दनजी स्वप्नमें कहगयेहै
५३ परंतु इतना सुर्णमेरे निर्धनके घरक
हांसे होनाहै हेद्विजो तदभी अपनीपत्नी
सें एछकर आताहूं तुम इहांथिर रहो
वैठो ५४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पूजकास्ते समूचुस्तं किमिदं ऊरुषे द्विज
पतावतो कथं मूर्तिर्नरैर्न लिता भवत ५२
इति तेषां वचः श्रुत्वा रामदासो ब्रवीद्वचः तो
लयंतु भवंतो त्वमा ऊरुष्वात्र संशयम् ५४
गुरुता लघुता चेति सर्वं कृष्णस्य लीलया
सहस्रैर्नोत्थितो यो सौ पश्ये केन मयोत्थितः
५५ इति श्रुत्वा वचस्तस्य रामदासस्य पूज
काः सर्वे मत्वाथ तन्मध्यादेक उत्थाय पचा
गतः ५६ ॥

पूजारी तिसकों कहनेलगे हेद्विज यह क्या कर्ता हैं
इतनी वडी मूर्ति है जो हजारों पुरुषों करकें नहीं उठाई
गई सो इतने थोड़े स्वरूप से किसतरां ऐसी होवेगी ५२
तद तिनका यह वचन सुनकि रामदास वाक्य क
हता भया तुम इसकों तोलकर लेवो इसमें कु
छ संशय नहि है वरावर करलेवो ५४ और
गुरुता और लघुता होले भारे होना सारे कृष्ण
की लीला करकें होते हैं क्योंकि हजारों करकें जो
नहि उठायगये सो मैंने इकले ने उठाये यह वा
त प्रत्यक्ष देखो ५५ यह तिस रामदास का वच
न सुनके सारेहि पुजारी स्थित होते भये सत्य
मान कर तिनके वीचसें एकला रामदास
तलाके उठानेको चला आया ५६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मल्लामुत्थापयामास तेनैव न चलितः प्रभुः
ततः सर्वे महाश्चर्यमेनिरे भक्तिसंयुतं ५७
अथ तेषां पूजकानां मध्ये वै कोऽपि मूर्खव
न् हर्तुं नेतुं ततः कृत्वा तमुत्थापयितुं ग
तः ५८ बहुप्रयासं कृतवान्नोत्तस्थौ स म
हाप्रभुः ततः सर्वे हसंतस्तं वारयामासु
रातुरम् ५९ अथ ते ब्राह्मणास्तु बहुहरी
ता कनकं मुदा भोजित्वा रामदासोन्नज
ग्मुर्द्वारावतीं पुरीम् ६०

34

और उसतुलाको उठावता भया जिसमें महाप्र
भु राविष्ठे और तिसीने अच्छीन रांतो सेती बराबर स
णांके हुये तदसारे लोक बड़ा आश्चर्य मानते भई
उसको भक्तियुक्त मानते भये ५७ इससे उपरंत
पुजारीयाके बीचसे एक होई बड़े मूर्खकी न्याई
हरीके लेजानेको मन करके क्योंकि सुवर्णा नहीं ले
नेहें मूर्तिकोही लेचलते हैं ऐसी इच्छा करके ति
सके उठानेको चला आया ५८ और तिस मूर्तिके उ
ठानेको बड़ा बल करता भया क्यों अपना सारा ही जो
र लगावता भया तदभी सो महाप्रभु नहि उठते भई
तो सारे लोक तिसको हसी होए हटा लेते भये कि
अब बसकर तेने बहुत जोर लगाया है ५९ इससे उ
परंत सो ब्राह्मण उतने मात्र सुवर्णको हर्षसंयुक्त ग्रह
णकरके रामदासके घर भोजन खाय कर द्वारका
को चले जाते भये ६०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा तानूपतः पत्नीसमीपं प्राह सादरं
अहो किमर्थं खिन्नोसि भगवान्भक्तवत्सलः
५५ मामुवाचाद्य सत्स्वप्ने यत्कर्णे स्थितिं हि रागप
कम् तेनैव तत्तुलितो भवेदेव विचाराम्य न संशयः
५६ इत्युक्ता कर्णरेशात्मा कनकं प्रददौ मु
नी हर्षयन्ती रामदासं वचनैर्भक्तिसंयुतैः
अहो स्वयं मनन्थेस्तुः सहस्रैरपि नोत्थितः
कथं सतुलये केन स्थापितः शकटे हरिः ५८

ऐसे तिनको कथनकर पत्नीके पास चला गया
पर खिन्नयुक्तमन वाले तिसको देखकर पत्नी
बोलीहै हे स्वामिन् आप क्यों देख युक्तमनवाले
होएहो क्योंकि भगवानजीको भक्त ही प्यारे हैं
५५ मेरेको स्वप्नमें आज ऐसे कहके गये हैं कि
जो तेरे कानमें तीन रतिका स्वर्ण भूषण है
तिसकरके तोल याइया बराबर होजावेंगा है
भद्रे इस बातमें मत कछु संशय जान ५६ ऐसे
स्वामिको कथन करके सो सती अपने कर्णस्थान
से स्वर्णका भूषण उतार कर देदेती भई और
भक्तिके युक्त वाक्यों करके रामदासको हर्ष
प्राप्त करतीहुई क्या तिस्म्रयकरणवतीहोई ५७
हे स्वामिन् आप इस बातका फिकर मत करो कि
स्वर्ण थोडा है मूर्ति वडी है देखो आश्चर्यकी बात
जो भगवान् वडे बलवान् हजारों मनुष्योंसे न
हि उठाये गए सोई तेने रकलेके से उठाकर गड्डे
मेंस्थापन करे तुमको उ इनो हजारोंसे बलवानथे

श्लो ५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३५

कथंवाज्वलनेन्यस्तस्तत्सर्वंहृदिचिंतय माकु
रुष्वात्रसंदेहंतुलितःस्यादनेनमः ५६ इति
तस्य वचः श्रुत्वा गृहीत्वा कनकं ततः तो॰
लामादाय महतीं रणछोरं समानयत् ५॰
श्रुत्वैतत्सर्वं हृत्तांतमागत ग्रामवासिनः
तेषामग्रे तुलायां तु रामदासो विभक्तितः
५। रणछोरं स्थापयित्वा ददौ तत्कनकं॰
स्वयं ततः प्रजहृसुः सर्वे दृष्ट्वा तत्कन॰
कं जनाः ५२ ॥

और कैसे तैने इकले ने उठायकर जलमें स्थापन
करे यह सारियां बातां हृदयमें चिंतन कर मन
इस इस बातमें संदेह करो कि इतने स्वर्णसे वा॰
एवर नहिं तुलेंगे जानो कि इसके बराबर हो॰
जावेंगे ५१ पश्चात् निश्चयकर सुन तिसका व
चन सुनके तिस स्वर्ण को लेकर और बडी जो
एक तुला है तिस को लेके रणछोरजी की मू॰
र्ति को ल्यावता भया ५॰ तब इस प्रकार के वृ॰
त्तांतको श्रवण कर उस ग्रामके निवास करने
वाले भी सारे हि चले आए तो तिनके आगे
रामदास बडी भक्ति करके रणछोरजी की मू॰
र्तिको तिसके एक पासे स्थापन करता भया
५। और दूसरे पासे ओह स्वर्ण भी पाय देता
भया तब सारे हि लोक तिसको हासी करते
भये देखो मूर्खने इतनी बडी मूर्ति के पी॰
छे कितनाक स्वर्ण पाया है ५२ ॥ ॥

35

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मेभगवद्वचनं सकृत्तोसर्वधर्माणांभ
क्त्यापश्यन्तिकेवलं सकृन्नोसर्वपापानां
योनपश्यन्तिकेशवमिति ५ स्कंदे भक्ति
भागवतेनित्यंकिंकरोषिनराधिप शा
लग्रामशिलाबिंबंकिंनपश्यस्यहर्निशं
तेचनेत्रेमहाभाग्येपश्यतोयेजनार्दनम्
५ पाद्मेपातालखंडे प्रातःकालेतुकृ
ष्णंभक्त्यापश्यंतिमानवाः नतेषांपुन
रावृत्तिःकल्पकोटिशतैरपि ९

पद्मपुराणमेंभगवजीनेऐसेकहाहै जोपुरुषनि
त्य केशवजीकादर्शनकर्ताहै सोई संपूर्णधर्मो
केकरनेवालाहै औरजोनहींनारायणजीकाद
र्शनकर्ताहै सोईसारेपापोंकेकरणेवालाहै ५
औरस्कंदपुराणका और वाक्यकहतेहैं हेनराधि
प नित्यप्रतिभागवतमें भक्तिक्योंकर्ताहै क्योंर
किन्तु शालिग्रामकी शिलाका बिंब दिनरातमें
क्योंनहिं देखताहै बडे भाग्यवान् नेत्रओहीहै
जोनसे नित्यप्रति जनार्दनभगवानजीका दर्श
नकर्तेहैं ५ पद्मपुराणकेपातालखंडमेंकहाहै
क्याजोनसे मनुष्य भक्तिकर्के प्रातःकालकेस
मय श्रीकृष्णकोदेखतेहैं तिनकीफिर पुनरा
वृत्तिक्याहै कि वे अंदरमेंगयेहोय सैकडेंकरोडों
कल्पव्यतीत होवें तदभी उहांसे नहींपडते
है ९ ॥

मा॰
ग्राम॰
३९

36

अथदंडवत्प्रणाममाहात्म्यं पद्मपुराणोक्ति
यायोगसारे प्रणम्यदंडवद्भूमौसप्तधायस्तु
केशवं पातकंतच्छरीरस्थंभस्मीभवतित
त्क्षणात् १ शिरस्यंजलिमाधायप्रणमे
द्योजनार्दनं तस्यैलक्ष्मीपतिर्विष्णुर्ददाति
परमंपदम् २ भूमौनिपात्यसर्वांगंहरिंप्र
णमतांन्नृणां पुण्यप्रभावंविप्रर्षेवदतो
मेनिशामय ३ यावद्रेणुभिर्नृणांभूषि
तंस्यात्कलेवरं तावत्कल्पसहस्राणिजि
हेतिद्धरिसन्निधौ ४ ॥

अब विष्णुकेआगे दंडवत्प्रणामकरणेकामा
हात्म्य लिखतेहैं पद्मपुराणके क्रियायोगसारमे
जोपुरुषदंडवत् भूमि मेंपडके सातप्रकारसे
केशवजीको नमस्कारकर्ताहै तिसकेशरीर
मेस्थितजो पापहैं सोतत्क्षणभस्म होजातेहैं
१ जो पुरुष शिरमे अंजलिबांधकेजनार्दन
जीकों प्रणामकर्ताहै तिसकेतांई लक्ष्मीकेप
तिविष्णुपरमपददेतेहै २ भूमिमेनिपतनकरके
क्यालेवेपायकेसारे अंगजो हरिकोंप्रणामकर्ता
है तिसके पुण्यकाप्रभाव हे विप्रर्षे कथनका
तेंहोई मेरेसें श्रवणकर ३ सोक्याफलहै किपृथी
वीमे दंडकीन्याई प्रणामकरनेकिलिये लेवते
होय जितने धूलिकी रेणयांकरके पुरुषोंके अंगभू
षितहोवे क्याधूलिकेसाथयुक्तहोवे उतनेहि हजा
रोंकल्पहरिकेसमीपविष्णुलोकमेस्थितरहतेहैं ४

रामदासोपितामूर्तिं रणछोरस्य भक्तितः
स्थापयामास भवनो सिषेवे तामहर्निशम् ९१
संपूज्य रणछोरंतु यावज्जीवं कृतार्थधीः स
नो वैकुंठभवनं ययौ कृष्णमनुस्मरन् ९२
अद्यापि सहरिस्तत्र जाकोर ग्राममध्यतः
तिष्ठते वजनाम्भक्तान्कृतार्थीकर्तुमात्म
नः ९३ धन्योयं रामदासस्तु धन्यानस्य भक्ति
रुत्तमा यद्वर्षेद्वारकांत्यक्त्वा रणछोरस
मागतः ९४ इतिहरिमंदिरगमनमाहात्म्यं

उस सें उपरंत क्यागमहोय पीछे रामदास तिसर
णछोरजी कीमूर्तिको भक्तिसें अपने घरस्थाप
नकर दिनरात तिसको सेवाकर्ताभया ९१ जि
तनाकालजी विता रहा उतनाकाल रणछोरजी
की पूजाकर कृतार्थ बुद्धिवाला मनुष्यको प्राप्त
होकर कृष्णजीकास्मरण कर्ता हुआ वैकुंठको
चलागया ९२ सोहरिकी मूर्ति अबतकभी जा
कोरग्रामके बीचमें स्थितहै अपने भक्तजनोंको
कृतार्थकरणेवास्ते ९३ तिसकीमहिमाकोंदेख
कर सारेलोक कहने लगे धन्यहै रामदास
धन्यहै तिसकोभक्ति जिसके वशीभूत हुयहु
ए अपनीप्यारी द्वारिका पुरीकों त्याग कर जा
कोर ग्रामके मध्य ब्राह्मणकेघर श्रीकृष्णजीच
लेआए ९४ इति हरिमंदिरगमनमाहात्म्यम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
३२

37

अथहरिदर्शनमहिमानिरूपणं श्रीमद्भा
गवतेवर्हायितेतेनयनेनराणांलिंगानि
विष्णोर्ननिरीक्षतोये इति । स्कंदे येप
श्यंतिचदेवेशंस्वपर्णोपरिसंस्थितं किं
करिष्यंतितेतीर्थैर्देवानांचैवदर्शनैः २
किंयज्ञैःकिंव्रतैर्वापिकिंदानैःकिंतुपो
भिरोः मूर्तिंनारायणींयत्रपश्यंतिगम
रूडोपरि १ ॥

अव हरि विस्नुभगवानजीके नित्य दर्शन क
रने की महिमा लिखनेहैं श्रीमद्भागवतमें क
हाहै पुरुषोंके सो नेत्र मयूरके चंदउयोंकी
न्याई है जोनसे नित्य विस्नुकीयां मूर्तियां
कों नहिदेखतेहै । स्कंदपुराणमे ऐसे क
हाहै किजोनसे पुरुष नित्य प्रति गरुडके
उपर चढे होए विस्नुभगवानजीकों देखते
हैं सो पुरुष तीर्थोमे अस्नानो करकें व्रतों क
कें क्याकरेगे और देवतयोंके दर्शनो करकें
क्या करेंगे २ और यज्ञों करकें क्याकरेंगे और
व्रत दान उपवास इनों करकें क्याकरेंगे जो
गरुडके उपर विराजमान नारायणकीमू
र्तिकों देखतेहैं तिनको पूर्वोक्त कर्मों क
कें क्याहै १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुरतोवसुदेवस्य दंडवत्पतितोभुवि पतंति
पातकास्सर्वे नोतिष्ठंतिपुनस्त्विह ५ तिष
त्वदंडवद्भूमौनमस्कारेणयोर्चयेत् सयांग
तिमवाप्नोतिनतांक्रतुशतैरपि ६ स्कांदे शा
लिग्रामनमस्कारेव्याजेनापीह्यैः कृतः मद्भ
क्तास्तेतिनेनवमांनमस्यंतुमानवाः ७ नम
स्कारेतिमनुजः शालग्रामशिलार्चने पा
पानिविलयंयांतितमः सूर्योदयेयथा ८ ॥

वासुदेवभगवानजीकेआगे प्रणामकरणेकेवासे
पृथिवीमे दंडकीन्याई जद कोई पुरुषपडे तद
तिसके पापउसके साथपडतेहैं परंतु उठतीवा
रपाप नहीउठतेहैं ओह उहांहीलीनहोजातेहैं ५
दंडकीन्याई पृथिवीमे भगवान् जीके आगे प
डकर्के नमस्कारके साथजोपूजन करतेहैं सो
प्राप्तहोतेहैं ६ जिसगतिकोप्राप्तहोतेहैं तिसग
तिकोसैंकडे यज्ञोंकर्के भीनहि प्राप्तहोतेहैं ६ ॥
स्कंदपुराणमेलिखाहै शालिग्रामकोशिला
मे जिनोने वहाने कर्के भीनमस्कारकरीहै
सोभीमेरेभक्तहैं इसवास्ते मानवमेरेकोअ
च्छी तरहनमस्कारकरें ७ जोमनुष्य शालग्रा
म शिलाके पूजनमें नमस्कारकर्ताहै तिसके
पापलीनहोजातेहैं जैसे अंधकार सूर्यके
उदय हुए हुए लीनहोजाताहै ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सालिग्रामे नमस्कारो भावेनापि नरैः कृतः
भयं नैव करिष्यन्ति मद्भक्ता लेन संशयः १
सालिग्रामे नमस्कारः शोकेनापि कृतो य
दि मानवा किं करिष्यन्ति मद्भक्ता लेन यामु
वि ॰ मद्भक्ताश्चैव धर्मिष्ठा मां प्रभुं न न मन्ति
ये वासुदेवं नन्ते ये मद्भक्ताः पापिनो हि
ते ॥ स्कंदे सालिग्रामे नमस्कारं ये कुर्व
ति दिने दिने तेयान्ति परमं स्थानं यत्र दे
वो जनार्दनः १२ ॥

सालिग्राममे भावनासे विनाभी जिन पुरुषों
ने नमस्कार करा है सो भय नहि करेंगे क्यों
कि सो मेरे भक्त है इसमें संशय नहीं है ॰
शालग्राममे नमस्कार जिनोंने शोकक
रैं भी करा है सो मानव पृथिवीमे क्या करे
गे अर्थात् वो कृतार्थ है और निष्पाप हैं
और मेरे भक्त है ॰ और वडे धर्मी मेरे भ॰
क्त होके मेरे प्रभु वासुदेवजीको जो नहि
नमस्कार कर्ते है सो मेरे भक्त नही जानने
और पापी है ॥ स्कंदपुराणमे लिखा है जो
पुरुष प्रतिदिन शालग्राममे नमस्कार क
र्ते है सो जहां जनार्दन भगवान् निवास क
र्ते है उस स्थानमे जाते है १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मे देवहूतविकुंडलसंवादे कृत्वापि बहु
शः पापं नरो मोहसमन्वितः नयाति नरकं
नत्वा सर्वपापहरं हरिं १२ स्कंदे प्रणामपूर्वं
दृष्ट्वा ये स्नापितं पूजितं हरिं यज्ञकोटिस
मं पुण्यं गवां कोटिफलं लभेत् १४ नम
स्कुर्वंति मनुजाः शालग्रामशिलाग्रतः
पापानि प्रशमं यांति तमः सूर्योदये यथा
१५ वासुदेव नमस्तेस्तु जगन्नाथ नमो
स्तु ते नारायण नमस्तेस्तु यः करोति स
मानवः १६ ॥

पद्मपुराणमे देवहूतविकुंडलके संवादकर्केका
हाहै जोपुरुष अस्नानकरयुक्त बहुतनरोंके पाप
कर्केभी हरिकोनमस्कार करेतो नरकोंमेनही
जाताहै १२ स्कंदपुराणमेकहाहै जोपुरुष स्ना
नपूजानकरेहोय हरिकोपहले प्रणाम कर्के
पीछेदर्शन कर्ताहै उसको क्रोडयज्ञोंकेफल
और क्रोडगोदानकेसमपुण्यफलप्राप्तहोताहै
१४ जोनसे मनुष्य शालिग्राम शिलाकेआगे न
मस्कार कर्तेहै तिनके पाप ऐसे नष्ट होजा
तेहै जैसे सूर्यके उदयहोए अंधकार दूर हो
जाताहै १५ जोपुरुष ऐसेकहताहै क्या हे वा
सुदेव हे जगन्नाथ हे नारायण तेरे कोंनमस्का
रहोवे सोई मनुष्यहै १६ ७ ॥

प्रायश्चित्तसहस्राणि ब्रह्महत्याशतानि च क
थंचन प्रणश्यंति पापानि श्रीविष्णोः शरणं विना १७
बाहुभ्यां सह जानुभ्यां शिरसा मनसा धिया पं
चात्मकः प्रणामः स्यात्प्रजासु प्रवरो विभुः १८
पाद्मे तुलसीं प्रणमेद्यस्तु नरो भक्तिसमन्वितः
आयुर्बलं यशो वित्तं संततिस्तस्य वर्धते १९ वृ
हन्नारदीये अर्चितं शंकरं दृष्ट्वा विष्णुं वा प्र
णमेन्नरः स विष्णुभवने प्राप्य वसेद्युगशतं॰
न्रय २० नृसिंहपुराणे नमस्कारः कृतो येन
भक्त्या वै माधवस्य च धर्मार्थकाममोक्षाख्यं॰
फलं तैः प्राप्तमंजसा २१

प्रायश्चित्तोंके सहस्र हजारों और ब्रह्महत्यादिसेक
रे पाप सो विष्णुभगवानजीकी शरणसें नष्ट होते हैं
१७ जानुकहिये गोडेयोंके सहित बाहुयों करकें और
मन शिर करकें पंचात्मक प्रणाम विष्णुके आगे॰
होती है उत्तमोंका प्रणाम करणेवाली प्रजामें श्रे॰
ष्ठ होते हैं १८ पद्मपुराणमें लिखा है जो मनुष्य भ
क्ति करकें युक्त तुलसीकों प्रणाम करता है तिसकी
आयु बल धन संतान यह वृद्धिकों प्राप्त होता है १९
वृहन्नारदीयपुराणमें लिखा है पूजा करे हुए महा
देवजीका दर्शन करकें और पूजित विष्णुकों देखके
जो प्रणाम करता है सो अंतमें विष्णुलोकमें प्राप्त हो॰
कर सौ वर्षां निवास करैगा २० नृसिंहपुराणमें कहा
है जिनोंने भक्ति करकें माधव क्या लक्ष्मीके स्वामी वि
ष्णुजीकों नमस्कार करी है तिनकों धर्म अर्थ काममो
क्ष यह चार पदारथ फल प्राप्त होते हैं २१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकोपिकृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधा
वभृथेन तुल्यः दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म
कृष्णप्रणामे न पुनर्भवाय २२ ॥ अथ
प्रदक्षिणामाहात्म्यं पद्मपुराणे क्रियायो
गसारे जनार्दन हृषीकेश शरणागतव
त्सल त्वद्दासदासदासानां दासत्वं देहि मे प्र
भो १ मंत्रेणानेन यः कुर्यान्नारायणप्रद
क्षिणं तस्य पुण्यफलं वाच्यं संक्षेपाच्छृणु
जैमिने २ ब्रह्महत्यादिपापानि यानि या
नि महांत्यपि तानि तानि प्रणश्यंति प्रद
क्षिणायाः पदे पदे ३ ॥

एकभी दंडवत्प्रणाम श्रीकृष्णजीकोंकरी होई दशा
श्वमेधमैं स्नानके तुल्य है परंतु इतनी श्रेष्टता इस
मे फिर अधिक है क्यौ दशाश्वमेधमें स्नानकरने वा
ला फिर जन्मको प्राप्त होता है कृष्णजीको प्रणाम
करणे वाला मोक्षको प्राप्त होजाता है २२ यह प्रद
क्षिणाका माहात्म्य पद्मपुराणकि क्रियायोगसार
मे लिखा है हे जनार्दन हे हृषीकेश हे शरणागतोंके
प्यारे हे प्रभु तुमारी दासोंके जो दास उनके जो दास
है भक्त उनकी जो दासभावना सो मेरेकों देवो १
इस मंत्र करके जो नारायणकी प्रदक्षिणा करेगा है
जैमिनि तिसके पुण्यका फल संक्षेपसें कहता हूं
तूं श्रवन कर २ ब्रह्महत्यादिक जो नसे वडे २ पाप
है सो २ पाप विष्णोकी प्रदक्षिणाकें एक २ पादमैं
विनष्ट होते हैं ३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
४॰

यावन्मात्रंद्विजश्रेष्ठगच्छेद्विस्नुंप्रदक्षिणं
तावत्कल्पसहस्राणिमोदतेविस्नुनासह ४
हरिंप्रदक्षिणंप्राज्ञोयावद्गच्छेच्छनैःशनैः
पदेपदेऽश्वमेधस्यफलंप्राप्नोतिमानवः ५
प्रदक्षिणीकृत्यसर्वंसंसारियत्फलंलभेत्
हरिंप्रदक्षिणीकृत्यतस्मात्कोटिगुणंफलं
६ भविष्यान्तरगतो हरिंकृत्वान्तहृत्स्य॰
यःकुर्यात्प्रदक्षिणाम् सप्तद्वीपवतीपुण्य
लभतेतत्पदेपदे ७ विष्णोःप्रणामंयःकुर्या
त्सकृत्कृत्वाप्रदक्षिणाम् अश्वमेधसहस्रस्य
फलमाप्नोतिमानवः ८

और हे द्विजश्रेष्ठ विस्नुकी प्रदक्षिणामें जितने पाद
पुरुष चलते है उतने हजार कल्प विस्नुके साथ
आनंद भोगते हैं ४ हरिनारायणकी प्रदक्षिणामें
जो बुद्धिमान पुरुष जितने पाद धीरे २ चलता है
तिसको पाद २ मे अश्वमेधका फल प्राप्त होता है
५ सारी पृथिवीकी प्रदक्षिणा करके संसारमे जो
फलप्राप्त होता है तिससे कोटगुणां अधिक हरि
की प्रदक्षिणा करके फल होता है ६ भविष्यपु
राणमे लिखा है पूजन करके जो श्रीकृष्णकी प्रद
क्षिणा कर्ता है सो सातद्वीप युक्त पृथिवी की प्र
दक्षिणा के पुण्यको पैर २ मे लभता है ७ और जो
पुरुष विस्नुकी एक वार प्रदक्षिणा करके प्रणाम
कर्ता है सो मानव हजार अश्वमेधके फलको लभ
ता है ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

क्रियायोगसारे प्रदक्षिणाकारनयावारैकं
योव्रजेद्धरेः जन्मजन्मानिविप्रेंद्रसार्वभौमो
भवेद्भुविः ९ यस्तुवारद्वयंकुर्यादिप्रविष्णुप्र
दक्षिणां पैंद्रंपदमवाप्नोतिदिवि देवानसंश
यः १० विष्णोप्रदक्षिणांयस्तुकुर्याद्वारत्रयं
नृपः विमुक्तैःसकलैःपापैःप्रविशेन्मानुः
षीतनुम् ॥ पाद्मेमथुरामाहात्म्ये नारदः
राजन्स्नातुरंवान्यदृष्टामितवप्रीतितः
सालिग्रामस्यदेवस्यतुलस्याश्चप्रदक्षिणाः
१२ ॥

क्रियायोगसारमेलिखाहै जोपुरुष हरिके वारेण
से इकवार प्रदक्षिणानतरां गमन कर्ताहै हेविप्रें
द्र सो जन्म २ मे पृथिवी पर सार्वभौम राजा हो
ताहै ९ हेविप्र जोपुरुषदो वार विष्णुकी प्रद
क्षिणाकर्ताहै सो स्वर्गमे इंद्रपदवीको प्राप्तहो
ताहै इसमें संशय नहीहै १० और जोबुद्धिमान्
विष्णुकीतीनवारप्रदक्षिणाकर्ताहै सो सारे पा
पोंसे मुक्तहोकर उपरा मनुष्यदेहमेप्रवेशकर्ताहै
॥ पद्मपुराणमेकहाहै मथुरामाहात्म्यमेनारदजी
कहतेहै हेराजन तेरीप्रीतिसे अन्यऔर एकमाहात्म्य
राजमें राजशालिग्रामकी शिला और तुलसीप्रद
क्षिणाकहनाहूं १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
४१

41

नतस्समाभूपतिश्रेष्ठनभूतानभविष्यति स
सद्वीपवतीभूमिस्सवनौषधिसागरा १२ न
स्याप्रदक्षिणापुण्यंशालग्रामप्रदक्षिणात
कृताप्रदक्षिणायेनशालिग्रामस्यशार्ङ्गिणः
१४ तेनकृताःपंचक्रोशाः शतशश्चप्रदक्षि
णाः गोकोटिदानंग्रहणेप्रयागेवासउत्तमः
१५ अश्वमेधायुतंपुण्यंसालिग्रामप्रदक्षि
णात् गवांचब्राह्मणानांचनयासंन्या
सिनामपि देवालयानांसर्वेषांसालिग्राः
मसमागताः १६ ॥

हेराजयोमें श्रेष्ठतिसकेसमानभयातथा नपीछें
होया नआगेहोगा सात द्वीप नव वृत्त शैल सा
गर इनके सहित जो पृथिवीतिसकीसारीप्र
दक्षिणा करणेका पुण्यसालिग्रामकीप्रद॰
क्षिणासें होताहै १२ जिसने शार्ङ्गी भगवा
न शालग्रामकी प्रदक्षिणा करीहै तिसने सै
कडे प्रदक्षिणाकाशीमे पंचकोशीकीयांका॰
रीयांहै १४ ग्रहणमे कोटिगोदानकरनेमें और
माघ महीने प्रयागमें वासकरणेमे और शा॰
लग्रामकी प्रदक्षिणासें दशहजार अश्वमेधका
पुण्यहोताहै १५ औरगौयांकी ब्राह्मणोंकी और
संन्यासियोंकी और देवतोंके मंदिरोंप्रदक्षि॰
णासालिग्रामकी प्रदक्षिणाकीसमानहै १६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शालिग्रामाधिका चैव न कस्यापि प्रदक्षिणा
क्रमतः पादविन्यासा यावंतः सर्वतोदिशम
तावंतः कुलसंभूता लोके तिष्ठंति शाश्वते १७
स्कंदे विष्णोर्विमानं यः कुर्यात्सकृद्भक्त्या
प्रदक्षिणम् अश्वमेधसहस्रस्य फलं प्राप्नो
ति मानवः १८ प्रदक्षिणां तु यः कुर्यात्कार्ति
के विष्णुमंदिरे पदे पदेश्वमेधस्य फलभा
गी भवेन्नरः १९ पाद्मे प्रदक्षिणां तु यः कुर्या
कार्तिके विष्णुसद्मनि दिने दिनेश्वमेधस्य
फलमाप्नोति मानवः २०

शालिग्रामसें अधिक माहात्म्य वाली और किसी
देवताकी प्रदक्षिणा नहीं है क्योंकि जिसके प्रदक्षि
णामें क्रमसें पादोंका न्यास परा है क्या चारों ओर
दिशाओंके जितने कदम चला है उतने कुल उसके
पवित्र हुए सर्वदा काल वैकुंठमें स्थित होते हैं
१७ स्कंदपुराणमें कहा है जो पुरुष विष्णुका वि
मान बनावता है और एक वार भक्ति करकें प्रदक्षि
णा करता है सो मनुष्य हजार अश्वमेधयज्ञके फल
को प्राप्त होता है १८ जो पुरुष कार्तिक महीने विष्णु
के मंदिरकी प्रदक्षिणा करता है सो नर एक २ पैर
में अश्वमेधयज्ञके फलका भागी होता है १९
पद्मपुराणमें कहा है कि कार्तिक माहात्म्यमें जो
विष्णुके घरमें प्रदक्षिणा करता है तिसको दिन २
मे अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है २० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बृहन्नारदीये प्रदक्षिणां तु कुर्याद्यो विष्णो
र्वै मनुजेश्वर सर्वपापविनिर्मुक्तो देवेंद्र
त्वं समश्नुते २१ अंगप्रदक्षिणां कुर्याद्यो वि
ष्णोः परमात्मनः पकस्य चाश्वमेधस्य
संपूर्णफलमश्नुते २२ पुनस्तत्रैव दा
नन्प्रदक्षिणेकेन मुच्यते ब्रह्महत्यया
द्वितीयेनाधिराजत्वं तृतीयेनेंद्रसंपदं
सर्वान्कामानवाप्नोति मनसा यद्यदिच्छ
ति २४ ॥

बृहन्नारदीयपुराणमे कहाहै हे मनुजेश्वर
जो पुरुष विष्णुकी प्रदक्षिणा कर्ताहै सो सारे
पापोंसे निर्मुक्त होआ हुया देवेंद्रपदवीको
भोगताहै २१ हे अंग जो पुरुष विष्णु परमात्मा
की प्रदक्षिणा कर्ताहै सो सार अश्वमेधय
ज्ञके फलको भोगताहै ॥ २२ फेर उसी
ग्रंथमे विशेष माहात्म्य कहाहै क्या एक प्रद
क्षिणा करके ब्रह्महत्यासे मुक्त होतेहै दो करे
तद अधिराजभावको प्राप्त होताहै तीन करा
ने करके इंद्र की संपदा तुल्य संपदा वाला
होताहै और चार करे तद मनकरके चाहि
हुईआं संपदां और संपूर्ण कामना तिन
कों प्राप्त होताहै २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बृहन्नारदीये परिक्रमामाहात्म्ये इंद्रबृह
स्पतिसंवादे चेतिहासं वर्णयामि भक्त्याकु
र्वंति ये विष्णोः प्रदक्षिणचतुष्टयं तेपियां
ति परंस्थानं सर्वलोकोत्तमोत्तमम् २५ सू
तउवाच अत्रैवनारदेनोक्तमितिहासंपु
रातनम् वदतां शृण्वतांचैव सर्वपापहरं
द्विजाः २६ वैवस्वतांतरे स्वर्वेशक्रस्य चबृह
स्पतेः संवादः समहानासीत्तंवक्ष्येप्रात
तद्विजाः २७ एकदा सर्वभोगाढ्यो विबु
धैः परिवारितः अप्सरोगणसंकीर्णो बृह
स्पतिमभाषत २८
बृहन्नारदीयपुराणमे परिक्रमाकी मात्म्यमें इं
द्र और बृहस्पतिके संवादमे इतिहास वर्णन क
र्ताहूं जो पुरुष भक्तिकर्के विष्णकी चार प्रद
क्षिणा कर्तेहैं सो सारे लोकमें उत्तम लोक जो पर
मस्थान वैकुंठ तिसमें जातेहैं २५ सूतजी कथ
न कर्तेहैं हे द्विजाः इसीमें नारदजीने प्राचीन इ
तिहास कथनकर ऱ्याहै जो कहने और सुनने
वालेयोंके सारे पाप हरणे वालाहै २६ हे द्विजाः
शौनकादिक ऋषियो पूर्व एक समय वैवस्वत
मनुष्यके अंतरमें हि इंद्रका और बृहस्पतिका ब
डा संवाद होता भया सो कहताहूं तुमसुनो २७
एकादिन सर्व भोगो करयुक्त देवतागणों कर्के
परिवारया हूया अप्सरोंके समूहों कर सहित
इंद्र बृहस्पति जीको कहता भया २८ ॥ ८

सा॰
ग्राम॰
५२

43

इंद्रउवाच बृहस्पतेमहाप्राज्ञसर्वतत्त्वार्थ
कोविद अतीतेब्राह्मणः कल्पेसर्गः की
दृग्विधः स्मृतः २६ इंद्रस्तुकीदृशः प्रोक्तो
विबुधाः कीदृशास्मृताः तेषांचकीदृशं
कर्मयथावद्वक्तुमर्हसि २० बृहस्पतिरु
वाच अहमद्यतनः शक्रनाहंजानामिकिं
चनः सर्वेषुः कृतकर्माणिप्रतिवक्तुंना
शक्यते २१ वर्तमानेदिनेचापिविधातुः
परमेष्ठिनः मनवः षट्व्यतीतास्तत्रवक्तु
मपिनोत्तमः २२ ॥

इंद्रकहनेलगाहेबृहस्पतेमहाप्राज्ञसारेतत्त्व
अर्थोंकेजाननेवाले बीतगए होए ब्रह्माके
कल्पमे किसप्रकारकीसृष्टि कथनकरीहै २६
इंद्रकिसतरांकाथा औरदेवताकैसे औरतिन
काकैसावर्तनथा सोसभयथावत् मेरेप्रति
कहनेके योगहो २० इतनावाक्य सुनके बृ
हस्पतिकहतेभये हे शक्रमें आजकाकछुन
हिंजानताहूं पिछलेदिनके किये होए कर्म
कहनेकों समर्थनहिंहो २१ औरपरमेष्टी ब्र
ह्माके वर्तमान दिनमे कापकइन दिनमें
छेमनुव्यतीत होगएहैं औहभी कहनेको
योग्यनहिं होनकताहूं पीछेकी खबर किस
तरांकहूंगा २२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुधर्म इति विख्यातः कश्चिदास्ते पुरे तव स
एवैतद्विजानाति तं एव ब्राह्मणो यथा तथम् २३
इति निश्चित्य शक्रोऽपि बृहस्पति पुरोगमः
देवतागणसंकीर्णः सुधर्म प्राप्तवांस्तदा
२४ समागतं देवपतिं बृहस्पति समन्वितं
यथार्हमर्चयामास सायनैर्वस्तुभिस्तदा
२५ सुधर्मेणार्चितः शक्रो दृष्ट्वा तत्स्त्रिय
मुत्तमाम् मनसा विस्मयाविष्टः प्रोवाच
विनयान्वितः २६ ॥

परंतु एक वार्ता है कि तेरे इस नगर में सुधर्म
नाम करके ब्राह्मण है सो इस वात कों जानता
होगा २३ इस प्रकार निश्चय करके इंद्र बृहस्प
ति कों साथ लेकर देवतागणों के साथ सुधर्म के
घर में जाय प्राप्त होता भया २४ तब बृहस्पति के
सहित देवगणों करके परिवारे होए देवपति
इंद्र को आये होए कों देखकर अनेक तरों के सा
धनों कर यथा योग्य सभनों की पूजा सत्कार
कराउंदा भया २५ तब सुधर्म करके यथा
योग्य सत्कार कराइया इंद्र तिसकी उत्तम सं
पदा को देखके मन करके विस्मय वाला हुआ
हुया विनती के युक्त तिस कों कहता भ
या ॥ २६ ॥ ~ ॥

44

इंद्र उवाच सुधर्मन्सर्वधर्मज्ञ सर्वसंपत्समन्वि
तः यशसा तेजसा कीर्त्या मतोऽसि धिकतां ग
तः १७ दानेन वा तपोभिर्वा यज्ञैर्वा तीर्थसे
वनैः साधो केन प्रकारेण हीदृशीं प्राप्तवा
न् श्रियं १८ इत्युक्तो देवराजेन सुधर्मा प्रह
सन्तदा प्रोवाच विनयाविष्टः पूर्ववृत्तं यथा
विधिः १९ सुधर्मोवाच अहमासं पुरा वि
प्र गृध्रः पापविशेषतः स्थितः श्मशानभूमिभाग
वैद्युमे प्रामिषभोजनैः २० एकदाहं विमा
नष्टे प्राकारोपरि संस्थितः पतितो व्याधबाण
ण सायं विस्रग्रहाग्रतः २१

इंद्र कहने लगा हे सुधर्म सब धर्मों के जानन वा
ले सा श्रियं संपदों कर युक्त यश तेज कीर्ति करके मे
रे भी अधिकता को प्राप्त हो आ हुया है १७ इस में मे
रे को कथन कर हे साधु तूं इस प्रकार की संपदा को
किस प्रकार करके प्राप्त हो आ है क्या कोई दान करा है
जो जप करे है वा यज्ञों करके अथवा तीर्थों की सेवा
करके जिस करके प्राप्त हो आ है सो कथन करो १८
इस प्रकार पूछा हुया देवराज करके सुधर्म हांस
करी २ नम्रता कर युक्त यथाविधि करके अपना पू
र्व वृत्तांत कहता भया १९ सुधर्म कहने लगा हे देवरा
ज पूर्व जन्म मे मे पाप विशेष से गृध्र भया और मरे हु
ए पशुयों का मांस क्या कोट पर बैठा हुया था २० एक
दिन मे विमल के नगर प्राकार ऊपर क्या कोट पर बैठा हुया
न दसायंकाल के समय व्याध ने बाण करके मेरे को मा
र के मंदिर के आगे गडाय दिया २१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मयिकंटगतप्राणोभयकोमासमोत्नुपः जग्राहमांसवक्रेणास्वभिरन्यैरनुद्रुतः ५२ वह्न्मांसमवेनैवभीतोन्यैर्भक्तकैस्तदा मतः प्रदक्षिणाकारंविष्णोस्तन्मंदिरंप्रभो ५३
तेनैवतनृष्टिमापन्नोह्यंतरात्माजगन्मयः ममचापिप्रसन्नश्चाप्यदत्तवान्परमंपदम् ५४ प्रदक्षिणाकारतयागतस्यापीदृशं फलं संप्राप्तंविबुधश्रेष्ठकिंपुनःसम्यगर्चनात् ५५ ॥

तोउससमयकंठमेंमेरेप्राणआमहोयथेतोमांसकेखानेकालोभीकुत्तामेरेकोमुखकर्केग्रहणकरलेताभया तदउसके पीछे औरकुत्तेलगे ५२ तदमेरेकोंमुखकर्के पकडेहोएहि औरनों कुत्तयोंकर्के भयभीतहुआ तिसप्रभुविस्नुकेमंदिरमेप्रदक्षिणाकारनेकीतरांहोउा ५३ उससमयमेरे प्राणनिकलगए औरअंतरात्मा जगन्मय विस्नुभगवान उसकर्केप्रसन्नहोए तदमेरेकोंभीओर उसकुत्तेकोंभी परमपददेतेभये ५४ देवोंमेरेकोंप्रदक्षिणाकीतरांप्राप्तहुएकों इसप्रकारकाफल होआहे सेरइ जेकरकोइ विधिविधान कर पूजा प्राप्तिसे एजन प्रदक्षिणा करे उसकोंतोखबरनहि क्या फल होगा ५५ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सूतउवाच इत्युक्तोदेवराजस्तु धर्मेणमहात्म
ना मनसाप्रीतिमापन्नोहरिपूजारतोभवत्
५६ अद्यापिनिर्जराः सर्वे भारतेजन्मलिप्सवः
समर्चयंतिदेवेशं नारायणमनामयम् ५७
येमानवाप्रतिदिनंपरिमुक्तसंगानाराय
णंगरुडवाहनमर्चयंति तेसर्वपापनिचयैः
परिमोचिताश्च विष्णोःपदंशुभतरंप्रतिया
ति हृष्टाः ५८ येमानवाविगतरागपरापर
ज्ञानारायणंसुरगुरुंसततंस्मरंति ध्या
नेनतेनहतकिल्बिषचेतनास्तेमातुःपयो
धररसंनपुनःपिबंति ५९

सूतजीकथनकरे हैं ऋषयो इसप्रकारमहात्मास
धर्म करके कथनकराहुया देवराज मनकरकेप्री
तिकोप्राप्तहोआ हुया हरिकी पूजामें रतहोता
भया ५६ उसदिनसेलेकर अबतक भीभारत
खंडमे सारे देवताजन्मधारनेकीइच्छाकरतेहुए
देवतयोंके ईशअनामय नारायणजीको पूज
तेहैं ५७ औरजोनरसे मनुष्यसंगत्याग करके प्रति
दिननारायणजीकोपूजतेहैं गरुडकेऊपरचढ
नेवालेको सोसारेपापोंके समूहसे मुक्तहुएपर
प प्रसन्नता पूर्वकशुभतर जोविष्णुलोकतिस
पेंजातेहैं ५८ औरजिनकेरागादि दूर होगए ऐ
सेमानव परापरकोजाननवाले देवतयोंके गुरु
नारायणजीका सर्वदाकाल स्मरणकरतेहैं सो
तिसध्यानकरके हतकिल्बिष क्यापापजिनके
दूरहोगए ऐसेमन वाले फिर गेहमाता केस्त
नोंका दूध पान नहिकरतेहैं अर्थात नहिजन्मतेहैं ५९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पूजयंतिहरिंयतेनिष्कामाःशुद्धमानसाः
तेषांविष्णुःप्रसन्नात्मासर्वान्कामान्प्रयच्छे
ति ५० यस्त्वेतच्छृणुयाद्वापिपठेद्वासुसं
माहितः सप्राप्नोत्यश्वमेधस्यफलंविप्रुप
सत्तमाः ५१ इत्येतद्वःसमाख्यातंहरिपूजा
फलंद्विजाः संकोचविस्तराभ्यांतुकिम
न्यत्कथयामिवः ५२ इतिश्रीबृहन्नारदीय
पुराणे इंद्रबृहस्पतिसंवादेपरिक्रमामा
हात्म्यवर्णनम् स्कंदे कर्तव्यंसततंभक्त्या
शालग्रामशिलार्चनं देवर्षेकिंबहूक्तेन
श्रृणुमेनिश्चितंवचः १

ओर शुद्ध मनवालेजोनरसे निष्काम हरिकापूज
न करतेहै तिनकों प्रसन्न मनवाले विष्णु भगवा
न् संपूर्ण कामना देतेहैं ५० ओर जोपुरुष इस
प्रदक्षिणाके माहात्म्यको कथाकोंसावधानम
न वाले पढते सुननेहै हे विप्रुपसत्तमान सों
अश्वमेध यज्ञके फलकोंप्राप्तहोतेहै ५१ यह
उत्तना मात्रतुमारेकों हरिकी पूजाका फल क
थन कराहै अब ओरसंकोच विस्तार करकें क्याक
थनकरां सोकहो ५२ यह बृहन्नारदीयपुराणमे
इंद्रबृहस्पतिकी संवाद करकें विष्णुकीपरिक्रमाका
माहात्म्यवर्णनहोचुकाहै स्कंदपुराणमेसालिग्राम
कापूजनलिखाहै कर्तव्यमिति पुरुषनेनिरंतरभक्ति
करकें सालग्रामकीशिलाकापूजनकरणीचाहिये हे
नारद मुनकेवचनकातुंश्रवणकरबहुतकथनक
र्णे करकें क्याहै १

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
५९

46

शालग्रामशिलासम्यक्पूजनीयासदाद्विजैः
सालिग्रामशिलांवापिचक्रांकितशिलांतथा
२ ब्राह्मणःपूजयेन्नित्यंश्रद्धाभक्तिसमन्वितः
अकरणेप्रत्यवायः सालिग्रामशिलापूजां
विनायोश्नातिमानवः सचंडालादिविष्ठाया
माकल्पंजायतेक्रिमिरिति २ हेमाद्रौदेवलः
सालग्रामेहरेश्चिह्नंप्रत्यहंपूजयेन्नरः ३ तिना
दकरणे गौतमः यदिविप्रः समुत्सृज्यशा
लग्रामशिलार्चनं सयातिनरकंघोरंयाव
दाचंद्रतारकम् ४ ॥

ब्राह्मणोने सालग्रामका नित्यपूजन करणा चा
हिए चक्रांकित जो सालिग्रामशिला तिसका
श्रद्धाभक्तिकरके युक्त हुआ हुआ जो ब्राह्मण
नित्य पूजन करता है सो मुक्तिको प्राप्त होता है
२ सालिग्रामके नहि पूजन करनेमे दोष कथ
न करा है जो पुरुष सालिग्रामके पूजनतें वि
ना अन्नको भक्षण करता है सो चंडालादेयोंका
जो विष्टा तिसमें कीडारूप होकर कल्प पर्यं
त रहिता है ३ हेमाद्रिमें देवलजी कथन कर
तें है हरिका जो चिह्न है शालग्राम तिसका
पुरुष नित्य पूजन करे शालिग्रामके नहि पूज
न करनेमें गौतम कथन करता है जो ब्राह्मण
शालग्रामके पूजनकों त्यागता है सो घोर न
रककों प्राप्त होता है जितना पर्यंत चंद्रमा और तार
है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नस्यपापविशुद्ध्यर्थंप्रायश्चित्तमुदाहृतम् ब्र
ह्मकृच्छ्रंचरेत्तत्रदिनैकस्मिन्द्विजोत्तम ५
मासमात्रेपर्णकृच्छ्रंवर्षेतौडुंवरंचरेत्
सालिग्रामोयदानास्तियत्रनैवामृतोद्भवा
श्मशानसदृशंगेहंसविप्रःपंक्तिदूषकः
तिब्रह्मांडपुराणे शालग्रामशिलायांतु
यत्रव्याप्तासर्वदेवता इति ७ लांछितैर्विवि
धाकारैर्लांछितंयच्चदृश्यते चक्रांकितं
हरेस्तापिशालग्रामस्यलक्षणं ८ यथा
योग्यंविचार्यैवगृहीतव्यंप्रयत्नतः इति

नस्येति तिसपापकी शुद्धिवास्ते प्रायश्चित्तक
थन कीया है हे ब्राह्मण सो एक दिनमें ब्रह्म
कृच्छ्रव्रतकों करे ५ जो पुरुष एक मास साल
ग्रामका पूजन नहि करता सो पर्णकृच्छ्र और
वर्षपर्यंत जो नहीकरता सो औडुंवर व्रतकों करे
और जिसके घर सालियाम और अमृतोद्भवाका
तुलसी नहीं सो गृह श्मशानके सदृश है ६ औ
र सो ब्राह्मण पंक्तिने दूषित होता है ब्रह्मांड
पुराणमें कथन कीया है क्या सालग्रामकी शि
लामें संपूर्ण देवता पूजने चाहिये ७ विविध
प्रकारके जो लांछन तिनोकरके जो चिन्ह वा सा
हेरखिये वा हरिचक्रकरके जो अंकित क्या चिन्हि
त सो सालग्रामका लक्षण है ८ जैसे योग्य है
तैसे विचार करके यत्नने ग्रहण करना चाहिये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
४७

47

अथ मुद्रातेत्रपरिमाणमासनंमूर्त्तिभेदकम्
स्थूलसूक्ष्मविभेदंचचक्रलक्षणमेवच १ स
म्यग्विचार्यमतिमान्सामान्यंलक्षणंतथा १
ज यन्मुक्तिदंनित्यंयथोक्तफलभाग्भवेन्नरः २
मुद्रान्त वैखानससंहितायां ब्रह्मोवाच भ
गवन्देवदेवेशशंखचक्रगदाधर संशयंचस
मुद्भूतंछेत्तुमर्हसिमेविभो ३ सालिग्रामस्य
यत्पुण्यंत्रैलोक्यविश्रुतं तत्रास्तिचह
रिस्थाह्नानसर्वदेवैस्समन्विताः ४ नद्रोत्पन्नाः
शिलाःविष्णोःसूक्ष्माःसूक्ष्मतरास्तथा प्रादुर्भ
भावैर्विविधैराकारैश्वसमन्विताः ५ ॥

अथेति और कथनकर्तेहैं मुद्रातेत्रमेंपरिमाण और
आसन औरमूर्त्तिभेदकोंकरे औरस्थूलसूक्ष्मभेद औ
रचक्रलक्षणइनकों १ बुद्धिमान औरसामान्यलक्षण
कोंविचारकरकें नित्यएननकरदाहुआ भक्तिकेदे
णेवाले सालग्रामका सो यथोक्तफलकों प्राप्त
होताहैं २ मुद्रावैखानससंहितामें कथनकरीहै
ब्रह्माकहताभया हेभगवान् हेदेवदेवेश हेशं
खचक्रगदाकेधारणेवाले उत्पन्नहुवाजोमेरासं
शयतिसकेछेदनेकों हेविभो तूंयोग्यहै ३ सा
लग्रामकाजोपुण्य और त्रैलोक्यमें प्रगटजोतत्र
तिसमेसंपूर्णदेवतियों करकेंयुक्त होआश्रा हू
रि स्थितहै ४ विविधप्रकारकेजोआकार और
प्रादुर्भावतिनों करकें युक्त और सूक्ष्म और स्थूल
विष्णुकेतिसमें शिला उत्पन्नहोतीहै ५ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आयुर्दाः कामदाः प्रोक्ता भोगमोक्षप्रदास्तथा श
स्ता अशस्ताश्च तथा ह्येतदाख्यातमर्हसि ९
श्रीभगवानुवाच शृणु ब्रह्मन्प्रवक्ष्यामि सालि
ग्रामगिरिं हरिः यस्माद्धरिः स्थितस्तत्र प्रादुर्भा
वैरनेकशः १ लक्षणैर्विविधाकारैर्लांछिते
श्चैव ह्युपने शैलसूक्ष्मस्थूलं वा समुद्रैव परि
कीर्तिताः २ एकपद्मांकिता या तु दक्षिणा
वर्तसंयुता चक्रलांछनसंयुक्ता भोगमोक्षफ
लप्रदा ३ पद्मे यस्यां संस्थिते द्वे नाभौ च संह
ता स्थिता केनापि लांछनयुक्ता चतुर्वर्गफल
प्रदा ४ ॥

आयुर्दा इति हे भगवन् सो शिला आयु
और काम और भोग और मोक्ष के देने वालीयां है
और शस्त्र क्या श्रेष्ठ और निंदित कथन कीया है यह
कथन करने को तुं योग्य है ९ श्रीभगवान्जी कथ
न करते हैं हे ब्रह्मन् तुं श्रवण कर सालिग्रामगि
रि जो हरि सो मैं कथन करता हूं जिस तें हरि प्रादु
र्भावों करके अनेक प्रकार का स्थित है १ विविध
प्रकार के लक्षणों करके लांछित जो शैल और सू
क्ष्म और स्थूल देखीदा है सो सुझा कथन कीता
है २ एक पद्म करके जो अंकित क्या चिह्नित और द
क्षिणावर्त करके संयुत और चक्र लांछनों करके संयु
क्त है सो भोग और मोक्ष फल के देणे वाली है ३ जि
स में दो पद्म स्थित है और दो पद्मों करके संयुक्त हुई
हुई स्थित है और किसे लांछिन करके युक्त सो चतुर्व
र्ग क्या धर्म अर्थ काम और मोक्ष के देने वाली होती है ४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चक्रेणांकंबुनाथवापद्मेनगदयांकिता तत्र
श्रीः प्रत्यहं तिष्ठेत् सदा संपत्तथा विशेत् ११
लांछनेन विना या स्यादप्रशस्ता तु सा मता
चक्रां वा केवलं पद्मं लांछनेनथवा गदा १२
लांछने वनमाला वा हरिर्लक्ष्म्या सह स्थितः
तस्मिन्गेहे न दारिद्र्यं न शोको न रणाद्भय
म् १३ नैव वाग्निभयं तत्र ग्रहैर्दुष्टैर्न वाध्य
ते अंते मोक्षो भयंतस्य पूजनादेव नित्यशः
१४ ॥

चक्रेणेति चक्रकर्के वा कंवु क्या शंख वा गदा
कर्के अंकित जोशिला जिसमें दिन दिन में श्री
स्थित रहती है और संपदा सदा प्रवेश करती
है ११ जोशिला लांछनते विना है सो निंदित
कथन कीती है चक्र वा पद्म वा गदा के चिह्न
वाली १२ वा वनमाला के चिह्न वाली जो
शिला जिसमें लक्ष्मी के साथ हरि स्थित रह
ते है तिसघर में न दरिद्र और न शोक और
न युद्धते भय होता है १३ जिसमें अग्नि का भ
य और दुष्ट जो ग्रह है सो भी नहि पीडा देते औ
र नित्य पूजन करने ते तिस पुरुष को भय न
हि होता और अंत में मोक्ष होता है १४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केवलेपद्मसंयुक्तायासावैकुंठउच्यते योग
गाकृतिर्वराहाख्याचक्रलांछनसंयुता १५
चक्रेणादृश्यते लिंगं तदा तत्र सुशोभना वरा
हमूर्तिसंयुक्ता सर्वकामफलप्रदा १६ द
यान्सामोक्षसंसिद्धिं ब्रह्मचर्येणाप्यजिता व
नमालान्वितैयस्याः सान्तसूत्रकमंडलुः १७
कपिलाख्याभवेन्मुद्रा धनैश्वर्यप्रदायि
का दर्शनात्त्रश्यते पापं ब्रह्महत्याद्यपोह
ति १८ ॥

जोकेवलपद्मकेचिह्नकर्केयुक्तहै सोवैकुंठ
नामकर्के कथनकरीहै योगाकासरूप जि
सकी व्याईहै आकृतिजिसकी और चारलांछ
नोंकर्के जोयुक्तसो वराहनामकर्के कथनक
रीहै १५ सुंदर जोचक्र तिसकाचिह्न जिस
मेंदेखिये और वराह मूर्तिकर्के युक्तसो सर्व
णकामनोंके पूर्णकरणेवालीहोतीहै १६ द
यादितिब्रह्मचर्य कर्के एजितहुई सो शिला
मोक्ष औरसिद्धिको देतीहै वनमाला और अ
क्षसूत्र और कमंडलुके हैं चिह्न जिसमें १७
सोकपिलानामकर्के मुद्राहोतीहै धन औ
र ऐश्वर्यके देणेवालाहोतीहै तिसकेदर्श
नते ब्रह्महत्याहरहोतीहै १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
५९

49

सान्निध्यान्मंत्रसर्वैर्गणैः पूजनेन फलाधिका स्थ
लचिह्नांकिता या च कुलिशेन समन्विता १९
वैनतेया भवेन्मुद्रा लत्तणाभ्यां समन्विता सा
जयाख्यापरा मुद्रा च चतुर्वर्गफलप्रदा २० मी
नादिमूर्तिसंयुक्ता सर्वकामार्थसंयुता प
द्मासनस्था सा मुद्रा सर्वकामप्रदा शुभा २१
एकैकेनैव चिह्नेन लांछिता तेन शस्यते अ
स्त्राकृतिस्तथा मुद्रा सात्तमाला सपद्मका २२

और समीप नाम से मंत्रों करकें पूजित हुई हुई अधिक
फल के देने वाली होती है जो शिला स्थल चिह्न
और कुलिश करकें युक्त १९ और लत्तणों करकें यु
क्त सो वैनतेय नाम करकें मुद्रा होती है और जो ज
या नाम करकें मुद्रा है सो चतुर्वर्ग क्या धर्म अर्थ
काम मोत्त के देने वाली होती है २० मीनादिमूर
ति करकें जाते युक्त और सर्व कामार्थ करकें युक्त
सो पद्मासनस्था मुद्रा संपूर्ण कामना के देने
वाली होती है २१ एक चिह्न करकें जो युक्त सो
प्रशस्त कथन कीती है और अस्त्र आकृति
वाली जो मुद्रा और अत्तमाला और पद्मक
कें युक्त २२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्मांकितानाभवेन्मुद्राहयग्रीवेतिविश्रुता भयदुःखांतरैर्मुक्तोनरःपापात्प्रमुच्यते २३
अक्षयंचभवेत्तस्यलक्ष्म्याद्यैश्वर्यमुत्तमम् प्रा
गुक्तालांछनाःसर्वेयस्यामेकत्रसंस्थिताः
२४ सर्वत्रसर्वदापूज्यामुच्यतेसर्वबंधनैरि
ति पुराणसंग्रहेपि मत्स्याख्याकूर्मसंयुक्ता
कूर्माख्यामत्स्यसंयुता दद्यात्सामोक्षसं
सिद्धिंब्रह्मचर्येणपूजिता २९

पद्मांकितोति औरपद्मकोचिह्नवालीजो मुद्रासो हयग्रीवनामककर्के प्रकटहै तिसके पूजनते पुरु ष भय और दुःख और विघ्नसे रहित औरपापसे रहितहोताहै २३ तिसके लक्ष्मादि जो उत्तम ऐ श्वर्य सोअक्षयहोताहै औरप्रथमकथन कीये जो चिह्नसो जिसशिलामे एकत्र स्थितहै २४ सोसर्वदाकालमे पूजने योग्यहै तिसके पूजने वाला जोपुरुष सो सम्पूर्ण बंधनानेरहितहोता है २५ पुराणसंग्रहमे औरकथनकीयाहै म त्स्यानामककर्के जोसो कूर्मकर्के युक्त और कूर्म नामककर्के जो सो मत्स्यकर्के युक्तसो ब्रह्म चर्यकर्के पूजीहोई मोक्षरूपीसिद्धिके देने वालीहोतीहै २६ ॥

स्थूलचिह्नं मुखं यस्याः कुलिशेन समायुते
वैनतेया भवेन्मुद्रा लांछनैश्च सलांछिता २७
पूजिता तु भवेन्मुद्रा भुक्तिमुक्तिफलप्रदेति
२८ प्रयोगपारिजातोपि पांचजन्यांकिता
या तु पद्मेन गदयान्विता तत्र श्रीः प्रतिहं नि
ष्ठत्सदा संपत्तु प्रविशेत् २९ जयाख्या परा
मा मुद्रा चतुर्वर्गफलप्रदा येषां चैकेन चि
ह्नेन लांछिता चैव दृश्यते ३० इति मुद्राल
क्षणाम् ॥

स्थूलेति स्थूल चिह्नवाला है मुख जिसका औ
र कुलिशाकरकें युक्त और चिह्नोंकरकें चिह्नित जो
सो वैनतेय कथन करी है २७ पूजित हुई हुई
मुद्रा भुक्ति और मुक्ति फलकों देनेवाला होती
है २८ प्रयोगपारिजातमें और कथन कीया है जो
पांचजन्य क्या शंखके चिह्नवाली और पद्म औ
र गदाकरकें जो युक्त तिसमें श्री दिनादिनमें स्थि
त रहती है और संपदा प्रवेश कर्ती है २९ और
जया नामकरकें जो परममुद्रा सो चतुर्वर्ग क्या
धर्म अर्थ काम मोक्षके देने वाली होती है
जो एक चिह्नकरकें लांछित होवे सो जया हो
ती है ३० यह संपूर्ण मुद्राके लक्षण समा
प्त भये ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथतेजोलक्षणमुच्यते ब्रह्माण्डपुराणे
नारदंप्रतिब्रह्मोक्तिः तेजस्तुद्विविधंप्रोक्तंमूर्ति
गंवर्णगंतथा मिश्रलक्षणतश्चेतिविज्ञात
व्यंविचक्षणैः १ वामनस्यतुतत्तेज स्याच्छ्रीध
राणांचवामनम् तेजोवाराहमूर्तेस्तुश्रीधरं
चाखिलप्रदम् २ हयग्रीवस्यवाराहे लक्ष्मी
तेजस्तथापिवा तेजोनारायणाज्ज्ञेयमन्येषां
क्रमतस्तथा ३ कपिलंनारसिंहंतुवामनं
तुसितप्रभं दामोदरंतुनीलाभंसानिरुद्धंत
थैवच ४ श्यामंनारायणेतेजःकृष्णवर्णंतुवै
ष्णवं चित्रवर्णमनन्तेचश्रीधरेपीतमुच्यते ५

इसके उपरांत तेजलक्षण कथनकर्तेहैं ब्रह्मांडपु
राणमें नारदकेप्रति ब्रह्मा कथनकरताहै तेजा-
मिति मूर्तिसे और वर्णसे दोप्रकार तेजकथनकी
ताहै और मिश्रलक्षणसे बुद्धिमानोंने जानने यो-
ग्यहै १ श्रीधरका जोवामन तेज सोवामननाम-
करके युतहै और औरवाराहमूर्तिका जोतेजसो
श्रीधर और संपूर्णकेदेनेवालाहै २ हयग्रीव और
वाराह लक्ष्मीका जोतेज सोनारायणका तेजजा
नना औरोंके क्रमसेजानने ३ नारसिंहकाते
ज कपिलवर्णवाला औरवामनकातेज श्पामप्र
भावालाहै दामोदर और अनिरुद्धकातेजनीलव
र्णवालाहै ४ नारायणकातेजश्याम और विष्णुका
तेजकृष्णवर्णवालाहै अनंतकातेज चित्रवर्णवा
ला और श्रीधरकातेज पीतवर्णवालाकथनकरी
ताहै ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
५१

51

नरसिंहपुराणेपि वासुदेवंसितंतेयंरक्तंसं
कर्षणंतथा दामोदरंतुलीलाभमनिरुद्धंत
थैवच ९ श्यामंनारायणंनेत्रमेवंचमुनिपुंग
वाइति पुराणसंग्रहेपि वासुदेवंसितंविद्या
द्रक्तंसंकर्षणंतथा १ अन्यत्रकपिलंनारसिं
हस्यवामनस्यासितप्रभम् वासुदेवंसितंज्ञे
यंरक्तंसंकर्षणंस्मृतं ८ दामोदरंतुनीलाभ
मनिरुद्धंतथैवच श्यामंनारायणंप्रोक्तंकु
मवर्णंविभुंस्मृतम् ९ वज्रवर्णमनंतस्यापीतं
श्रीधरमुच्यते लक्षणांतरयोगेन तन्नेत्रमु॰
दाहृतम् १० इतिनेत्राख्यलक्षणं

नारसिंहपुराणमेऔरकथनकीयाहै वासुदेवमिति
वासुदेवकानेत्र स्वेत और संकर्षणका नेत्र ला
लवर्णवालाहै दामोदरका औरअनिरुद्धकानेत्रनी
लवर्णवालाहै ९ हेमुनिश्रेष्ठो नारायणकानेत्र
श्यामवर्णवालाहै पुराणसंग्रहमे और कथनकी
याहै वासुदेवकास्वेत और संकर्षणकारक्तकथ
न कीनाहै १ औरकथनकरतेहै नारसिंहकाकपि॰
लवर्णवाला और वामनकानेत्रश्यामवर्णवाला
है वासुदेवका स्वेत औरसंकर्षणका रक्तवर्णवा
लाकथनकीनाहै ८ दामोदरका और अनिरुद्ध
का नीलेवर्णवालाहै नारायणका श्याम और
विभुका कुसुमवर्णवालाहै ९ अनंतकानेत्रवज्र॰
नवर्णवाला और श्रीधरकापीतवर्णवालाक
थनकीनाहै लक्षणांतरयोगकरके सोसो नेत्रकथ
नकीनाहै १० नेत्रोंकालक्षण समाप्त होचुका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ परिमाणाख्यं लक्षणं पुराणसंग्रहे वृत्त
सूत्राष्टमो भाग उत्तमं चक्र लक्षणं मध्यमं च
चतुर्भागं कनीयस्तु त्रिभागकमिति । पु
नः फलमपि स्कंदपुराणे उत्तमं शुभदं प्रोक्तं
जघन्यं निंदितं भवेत् मध्यमं नाम सदृशफ
लदं हि प्रकीर्तितमिति २ अथासनाख्यं ल
क्षणं स्कंदपुराणे आसनं तु चतुर्धा स्याच्चलं
वाचलमेव च विषमं पार्श्वकं चैव शालग्राम
शिलागतम् ३ ॥

इसते उपरंत परिमाणका लक्षण पुराणसंग्र
हमे कथनकीयाहै वृत्तमिति सूत्रकके वृत्तका
वेष्टित जो सालिग्राम तिससूत्रका जो अष्टवां ८
भाग तिस जितनाहै मुख जिसका ऐसा जो सालि
ग्राम सो उत्तमहै तिससूत्रका जो चौथा भाग ति
स जितनाहै मुख जिसका सो मध्यमहै और जिस
सूत्रका जो तीसरा भाग तिस जितनाहै मुख जिस
का सो अधम होताहै । इसका फल स्कंदपुराणमे क
थन कीताहै उत्तम जोहै सो शुभके देनेवाला कथ
न कीताहै और जघन्य जोहै सो निंदित है मध्यम
जोहै सो सदृशफलके देनेवाला कथन कीताहै २
इसते उपरंत आसनका लक्षण स्कंदपुराणमे
कथन कीताहै सालिग्रामकी शिलामें प्राप्त हुआ
जो आसन सो चार प्रकारकाहै सो चल और अ
चल और विषम और पार्श्वकहै ३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
५२

फलमपितत्रैवोक्तम् अचलेनस्थिरालक्ष्मी
श्चलेनस्थानभंगदं दुःखप्रदंतुविषमंपा
र्श्वंचोद्वेगदंस्मृतम् आसनंचविचार्येवंग्र
ह्यंलक्षणकोविदैरिति ५ अथमूर्तिभेद
लक्षणं ब्रह्मपुराणे मूर्तयोद्विविधा
ज्ञेयाजलजाःस्थलजास्तथा जलजाः
कोमलाःस्निग्धाःस्थलजाःपरुषाःस्मृ
ताः ५ ॥ ॥

फलभीतिसमेंकथनकीनाहै अचलजोआ
सनसो स्थिरलक्ष्मीकेदेनेवाला औरजोचलसो
स्थानभंगकेकरणेवाला औरजोविषमसोदुः
खदेनेवालाहै औरजोपार्श्वसो उद्वेगकेदेनेवा
लाकथनकीयाहै लक्षणकेजाननेवाले
जो सोविचारकर्के आसनकोग्रहणकरें ५
उससें उपरंत मूर्तिका लक्षण ब्रह्मपुरा
णमें कथनकीयाहै मूर्तयइति मूर्ति द्वैप्र
कारकीजाननी जलज और स्थलज जोज
लज मूर्ति सो कोमल और स्निग्धहै: जो
स्थलज सो परुषकथनकीनाहै ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फलमिति मूर्तयस्त्विष्टदाः स्त्रिग्धा मोक्षदाः प्र
रुषाः स्मृता ६ अथाशिलायाः स्थूलसूक्ष्मायां
लक्षणं पद्मपुराणे शालग्रामलक्षणांतरं
यथा प्रतल्लक्षणसंयुक्ता मूर्तयः फलदाः
स्मृताः ७ यास्तत्रापि सूक्ष्माः सूक्ष्माः प्रश
स्ततराः स्मृताः यथायथाशिलासूक्ष्मा मह
त्फलं तथातथा ८ तस्मात्तां पूजयेन्नित्यं
धर्मकामार्थसिद्धये तत्रापामलकीतु
ल्या सूक्ष्मा चातीव या तथा ९

तिसके फलको कथन करतेहैं मूर्तियां इष्ट
के देनेवालीयां स्त्रिग्ध और मोक्षके देनेवाली
यां परुष कथनकीतियांहै ६ इसते उपरंत
स्थूल और सूक्ष्म शिलाके लक्षणकों पद्मपुरा
णमे कथनकीयाहै शालग्रामका और लक्षण
है इस लक्षणकर्के युक्तजो मूर्तियां सो फलके
देनेवालीयां कथनकीतीयांहै ७ जो तिनोंमे
सूक्ष्महैं सो प्रशस्तकथनकीतीयांहै जैसी
सूक्ष्मशिलाहै तैसें २ अधिक फलकीं देतीहै
८ तिसकारणतैं तिसका नित्यपूजन करे
धर्म काम अर्थकी सिद्धिवास्ते तिसमें आ
मलेके सदृश और जोसूक्ष्म शिलाहै ९॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नस्मामेवसदाब्रह्मन् श्रियासहवसाम्यहम्
अतिस्थूलानयामूर्तिर्गृहस्थानांतुपूजयेत्
दिति १॰ अथशिलायाश्चक्रांचलक्षणमु॰
च्यते वैखानससंहितायाम् नारदउवाच
समाचक्षपरंरूपंचक्राणांलक्षणंतुनेस
र्वसिद्धिकरंचैवसर्वकामार्थसाधकम् १
वैखानसउवाच दिव्यंवर्षसहस्रेणहरि
राराधितोमया ततस्तुवाचभगवान्वि
स्तुस्त्रिभुवनेश्वरः २॥

नस्मामिति हेब्रह्मन् तिस सूक्ष्म शिलामे म
दामे केसाथ निवास करता हुं अतिस्थूलजो
मूर्ति तिसकाग्रहस्थी पूजनकरे १॰ इसते
उपरंत शिलाके लक्षणको वैखानस संहि
तामे नारदजी कथनकरतेहैं हेमुने चक्रों
का लक्षण और परम रूपको कथनकरके
सोहे सर्वसिद्धिकेकरणेवाला और संपूर्ण॰
कामार्थका साधक १ वैखानस कथनक
रतेहै मैनेदेवतयोंके हजारवर्षमे हरि आ
राधित करा तिसतें उपरंत भगवान्जी
त्रिभुवनेश्वर विस्नु सोकथनकरतेभ
ई २॥९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वरंवृणीष्वप्रीतोस्मितपसातवसुव्रत २
त्माकर्णमयोदेवोविज्ञसोभुवनेश्वरः ३
शालग्रामसमुद्भूतचक्राणांलक्षणंप्रभो
कथयस्वप्रसादेनयदितुष्टोसिमाधव ४
तच्छ्रुत्वावचोमह्यंस्मयमानोब्रवीदिदम्
५ विष्णुरुवाच लक्षणंयच्चचक्राणांतच्छृ
णुष्वमहामुने धर्मकामार्थमोक्षाणांपुरुषा
र्थैकहेतुकम् ६ कोविल्लांछनसंयुक्ताःशं
खाकारेणसंस्थिताः ॥

हेसुंदरव्रतवाले वरकोंतूं मंग तेरे तप करकें मै
प्रसन्नहोयाहां ऐसेश्रवणकरकें मैनेयह जाना
क्यामेरे उपर भुवनेश्वर जोदेव सोप्रसन्न हुवेहैं
२ हेमाधव जेकर मेरे उपर भुवनेश्वर तुसी प्र
सन्नहुवेहो तदशालग्रामके जोचक्र तिनांको
कथन करो ४ तदितिसमेरे वचनोंकोश्रव
ण करकें मंद मंद हसता हुआकथनकरताभया ५
विष्णुकथनकरताहै हे महा मुने चक्रों काजो
लक्षण तिसको श्रवण कर धर्म अर्थ काम
मोक्षके और पुरुषार्थ कापक हेतुरूपा कार
णहै ६ केईक लांछन करके युक्त और शं
खाकार करकें स्थित ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्राम·
५५

54

केचिल्लिंगसमायुक्ताः केचिच्चक्रेण संयुताः
७ दशयोजनविस्तीर्णो मम क्षेत्रे द्विजोत्तमः
उत्तरे चैव दिग्भागे प्रमाणं योजनं तथा ८
सानुनामा पर्वतस्तु चक्रनामांकिता नदी
विस्तनामांशकोर्णो निममरूपाणि सर्वा
तः ९ त्रिकालं शिखरीकूटं अप्सरोगण
सेवितः शैलमूर्तिरहं तत्र चक्राख्यं तच
यं विदुः षोडशोपचारैस्तत्रार्चं संवि
धायच १०

कोई कलिंगकर्के युक्त और चक्रकर्के युक्त हैं
७ हे द्विजोत्तम दशयोजन विस्तार वाला मु
जका क्षेत्र है उत्तर पासेमें योजन प्रमाणमें
सानुनामकर्के पर्वत और चक्रनामकर्के न
दी है और विस्तकेनाम और अंश संयुक्त मेरे
रूप हैं ९ तीनकालमें अप्सरों के गणों कर्के
सेवित जो शिखराकूट तिसमें शैलरूपाय
वेत मूर्तिमें हूं जिसको चक्र जानते हैं
षोडश उपचारों कर्के मुज को तिसमें पूजा
को विधान कर्के १०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गान्धर्वैर्विविधैश्चैवसंस्तूयमधुसूदनम्
भोजनंचबलिंदत्वाचक्रंग्राह्यंहरेरिति ॥
मत्स्यांकिताश्चयेचक्रायुर्दाःपुष्टिदान्
णाम् सदापूज्यागृहस्थेनस्थितस्तत्रहिके
शवः १२ कूर्मांकिताश्चयेचक्रामहासंत
तिकारकाः महार्थकारकादिव्याहरिस्त
त्रव्यवस्थितः १२ वराहमूर्तिसंयुक्तंयत्
चक्रंप्रदृश्यते पूजनाल्लभनेराज्यंपृथि
व्यामेकराजकम् १४ ॥

गंधर्वैरिति विविधप्रकारके जोगीततिनोंक
र्के मधुसूदनकीस्तुति कर्के भोजन और बलि
कों देकर्के हरिके चक्र कों ग्रहणकरे ॥ जो
मत्स्यके चिह्नवाले चक्रसोपुरुषोंको आयुके
देनेवाले औरपुष्टिके देनेवालेहैं गृहस्थीने
सदा पूजनेयोग्यहै तिसमें केशव जोनाराय
ण सोस्थितहै १२ और जो चक्रकूर्मके चिह्न
कैयुक्त सोबहुतसंतति करणेवालेहै और ब
डे अर्थके करणे वाले और दिव्यहैं तिसमेंह
रिस्थितहै १२ औरजोचक्रवाराह मूर्ति कर्के
युक्त देखीदाहै जिसके पूजनके पृथिवी
का एक राज्य प्राप्त होताहै १४ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नरसिंहांकितंचक्रंदुर्लभंभुविमानवैः शत्रू
णांनाशनंतद्धिकेशवंपरिकीर्तितं १५ स्तंभ
नंपरसैन्यस्यमहापातकहरंपरं अंकितंवाम
नेनस्याच्चक्रंपरमशोभनम् १६ नानावृद्धिक
रंचैववत्सवत्सयकरंभवेत् चक्रमध्येतुदृश्ये
तजामदग्न्यस्यरूपकम् १७ तत्तन्नामांकि
तंचक्रंजामदग्न्यंप्रकीर्तितं १८ गरुडपु
राणे गंडक्याश्चोत्तरेतीरे गिरिराजस्यदक्षि
णे क्षेत्रंतद्विश्वसान्निध्यंसर्वक्षेत्रोत्तमोत्तमम् १९

और पुरुषांको नरसिंहके चिह्न वाला जो चक्र
सो पृथिवीमे दुर्लभहै कैसाहै शत्रुयांको हरण
करणे वाला और केशव कथन करीदाहै १५
और शत्रुयांकोसेनाकों स्तंभन करणे वाला
और महामृत्युकों हरकरणेवालाहै और जो
चक्रवामन करकें शोभयमानहै १६ और ना
नावृद्धिके करणे वाला और पापांके हरकर
णेवालाहै जोचक्रकेमध्यमें जामदग्निकारूप
देखीदाहै १७ तिस २ नाम करकें चिह्नितजमद
ग्निकथन करीदाहै १८ गरुडपुराणमेकथन
कीयाहै गंडकी नदीके उत्तरपासे और गिरि
राजके दक्षिणमें संपूर्ण क्षेत्रोमें उत्तम विश्वस
न्निधि क्षेत्रहै १९॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

योजनद्वादशमितं बहुतीर्थसमाकुलं त
त्र चक्रनदीनाम तीर्थं ब्रह्मविनिर्मितं २०
तस्योत्तरे महाशृंगं मम प्रीतिकरं तथा त
च्छायाभिगतास्तत्र पाषाणाश्च खगेश्वर २१
सचिह्नैश्चिह्निताश्चैव नरश्चाथ धरातले
नराणामपि पक्षीन्द्र किं त्रिकालनिवासि
नाम् सर्वाङ्गेषु भवेच्चक्रं मस्तके पृष्ठ एव
च २२ एवं तत्र माहात्म्यं खगपते तस्य त
त्तथा चक्रनद्युत्तरे तीरे लभते पुण्यमुत्त
मम् २३ ॥

कैसा है १२ बारां योजनों करके मित और बहुत
तीर्थों करके समाकुल है तिसमें चक्रनामा न
दी और ब्रह्मा करके रचया हुया तीर्थ है २० ति
सके उत्तर पासे जो शृंग सो मुजको प्रीतिके
करणेवाला है हे गरुड तिसकी छायामें
प्राप्त हुवे जो पाषाणका पथ्थर २१ और श्रेष्ठ
चिह्नो करके जो चिह्नित पृथिवी तलमें हु-
ते हैं हे गरुड कुछक कालके निवास क
रणे वाले पुरुषांके संपूर्ण अस्थियोंमे और
मस्तकमें और पृष्ठमें चक्र होता है २२ एवमि
ति इस प्रकार तेत्रका माहात्म्य है और ख
ग पती चक्र नदीके कनारे में उत्तम पुरु
षको लभते हैं २३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शालिग्रामशिलास्तत्र नानामूर्त्तिसमन्विताः
पूजनीयाः प्रयत्नेन चतुर्वर्गफलाप्तये २४ हिर
ण्यवज्रकीटेन निर्मितं चक्रमुत्तमम् २५ मठ
पद्मादिभेदेन तत्रानेकविधं स्मृतम् धर्मसं
हितायां हि हिरण्यगर्भो भगवान्नाम्नो नारायणः
स्वयं वज्रकीटः प्रभूतत्वाच्चचार वसुधात
ले २६ सौवर्णभ्रमरं दृष्ट्वा देवास्तद्रूपधा
रिणः उपतस्थुर्महात्मानं भ्रमं तमतितेज
सं २७ षडंघ्रिभिर्जगत्सर्वं व्याप्तमेतच्चराचरं
हिरण्यगर्भभ्रमरैर्भ्रामितं भ्रान्तवत्सदा २८

तिसमें नानामूर्त्तियोंकरकें युक्त शालिग्रामकीयां
शिलाहैं सो पुरुषनें यत्नकरकें पूजनेयोग्यहै धर्म
अर्थकाममोक्षकेअर्थवास्ते २४ हिरण्यवज्रकी
टकरकें रचयाजोउत्तमचक्र सो मठ पद्मादिभेद
करकें अनेक प्रकारका कथनकीयाहै २५ ध
र्मसंहितामें कथन कीयाहै हिरण्यगर्भ जो
भगवान् स्वयं कहा आप नारायणआय वज्रकी
टरूपया हुआ प्रभूतते पृथिवीके तल मे वि
चरताभया २६ सुवर्णमयभ्रमरकों देखकर
देवतातिसरूपके धारणेवाले होयेहुवे वडे
तेज वाला भ्रमता जोमहात्मातिसको उपास
नाकरते भये २७ षडंघ्रि क्या भ्रमरयोंकरकें संपू
र्णी यह चराचरजगत व्यापितहोताभया हिर
ण्यगर्भभ्रमरियोंकरकें सदा भ्रमाईदा भया २८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दृष्ट्वा जगत्पतिर्विष्णुर्वैनतेयं सनातनः सरो-
षं शैलरूपेण जगतां हितकारकः २९ नि-
रुद्धवेगः सहसा प्रविवेश बिलं महत् तस्मि-
न्प्रविष्टे भ्रमरास्तद्बिलं विविशुः शुभं ३० चक्रुः
स्वे स्वे महद्वेश्मः कोशकारवदात्मनः नास्ति-
कानां प्रतीत्यर्थं वज्रकीटा षडङ्घ्रयः चक्राका-
रं विनिर्मायं तत्र ऊर्ध्वं हि सर्वशः जलस्थलम-
यं चैव तच्चक्रं द्विविधं स्मृतं ३२ निष्केसरं कीट-
भक्षं तच्चक्रं मठसंज्ञकं इदमेव द्विधा प्रोक्तं
तत्रापि जलजं वरम् ३३ ॥

दृष्ट्वेति जगत्का पति सनातन जो विष्णु सो वैन-
तेय को देखकर के और शैल क्या पर्वत रूप होकर के
जगत के हित के करणे वाला तिस को रोकता भ-
या २९ रोकया गिया है वेग जिसका ऐसा हुआ ब्रह्मा
हिरण्यगर्भ वडी जो बिल क्या खुड्ड तिस में प्र-
वेश करता भया तिस के प्रवेश हुयां भ्रमरे तिस
बिल में प्रवेश करते भये ३० कोशकार कीड की
न्याईं आत्मा के आपते अपने रूपां को करते भये
नास्तिकां की प्रतीति वास्ते वज्रकीट जो षडंघ्रि
क्या भ्रमरे ३१ रचया जो चक्राकार तिस को संपू-
र्ण करते भये और सो चक्र जल और स्थल और म-
ठ तीन प्रकार का कथन करीदा भया ३२ कीटयों
ने भक्षण कीया जो निष्केसर सो चक्र मठ संज्ञा
वाला होता है यह जल और स्थल भेद तें दो प्रकार
का कथन कीया है इन से जलचक्र श्रेष्ठ है ३३ ॥

क्रमादिमानि चक्राणि द्विजातीनां वेगाधिप
पूजायां सुप्रशस्तानि ग्राह्याणि वह्निजैर्नैः ३४
वाराहपुराणे वाराहउवाच शिलाया लक्षणं
सम्यक् मया प्रोक्तं सविस्तरम् वक्ष्येनाम
यो वत्स्ये चक्राणां लक्षणं शृणु ३५ मठकेस
रभेदेन चक्रन्तद् द्विविधं भवेत् स्निग्धैः सू
क्ष्मैः केसरैर्युक्ता मनत्केसरं भवेत् ३६ नद्धी
नं मठचक्रं स्यान्मूढीकाकृतिकं यचवत् ए
वोक्तं केसरं चक्रं मठचक्राद्विशिष्यते ३७

हे गरुड क्रमतें यह चक्र ब्राह्मणोंको पूजामें
प्रशस्त हैं सो ब्राह्मणोंने ग्रहने करणे योग्य हैं
३४ वराहपुराणमें वराहजी कथन करते हैं
शिलाया इति शिलाका लक्षण मैने विस्ता
रतें कथन करा है हे पृथिवि अब चक्रों का
लक्षण को कथन करेंगा तूं श्रवण कर ३५
मठ और केसर भेद करकें सो चक्र दोप्रकारा
का होता है स्निग्ध और सूक्ष्म जो केसर तिनो क
कें जो ग्राम सो केसर होता है ३६ तिसते ही
न और दाखकी आकृती वाला सो मठ च
क्र होता है मठ चक्रतें एवं कथन कीया
जो केसर चक्र सो विशेष है ३७ ॥ ॥

57

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अत्रास्मि कारणं यत्र जनै सम्प्रगीयते रसं
यस्यां शिलायां तु संभुक्तं कीटकैः शनैः ४८
प्रीत्या तस्यां प्रजायेत चक्रं तत्केसरैर्युतम् त
स्मा उत्पद्यते चक्रं मठसंज्ञं फलास्पदम् च
क्राभ्यां च शिला ज्ञेया शस्ताशस्ता वसुंदरे ४९
यत्प्रोक्तं द्विविधं चक्रं तस्य तद्विविधं भवेत्
जलजं स्थलजं चैव लक्षणं तस्य कथ्यते ५०
सुस्निग्धं दीप्तिसंयुक्तं चक्रं तज्जलजं भवेत्
प्रत्ययो जलजं शस्तं नदीपर्वतयोगतः म
ध्यमे स्थलजं प्रोक्तं पर्वतस्यैव योगतः ५२

इसमे कारण है सो मैं कथन करता हों जिस शि
लामें रसको कीडे शनै शनै प्रीति कर्के भक्षण
करे ४८ तिसतें केसरोंकर्के युक्त सो चक्र उत्पन्न
होता है तिसते मठसंज्ञा वाला चक्र होता है
सो उ फलके देनेवाला है एथिवि चक्रोंकर्कै शि
ला शस्त और निंदित है ४९ यदि जो चक्र दोप्र
कार कथन कीया है सो फेर दोप्रकारका होता है
तिसके जलज और स्थलज लक्षण कथन की
ते है ५० स्निग्ध और दीप्तिकर्कै संयुक्त जो चक्र सो
जलज होता है कर्कश क्या कठोर और रूक्षा
है तेज जिसका ऐसा जो चक्र सो स्थलज होता है ५१
इनाके मध्यमे नदी और पर्वतमें प्राप्त होआ जो
जलज सो शस्त होता है पर्वतमें प्राप्त होआ जो
स्थलज सो मध्यम कथन कीता है ५२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्माकारंक्वचिच्चक्रंशिलायांजायतेपरे सा
मासेनमयाप्रोक्तंचक्राणांलक्षणंप्रिये स
म्यग्विचार्यसुधियाग्राह्यंपूजार्थमादरादि
ति ५२ इतिचक्राख्यंलक्षणम् ॥ अथसा
लग्रामस्यसामान्यलक्षणमुच्यते वाराहे
चक्रसंख्यानयत्रास्तिवर्णोक्तिर्नास्तियः
त्रैवे छिद्रंकान्तंचविज्ञेयंनतत्रत्रवसंप
दे १ स्कंदपुराणे क्षीरेवातंडुलेवापिशा
लिग्रामंनिवेशयेत् दृष्ट्वापिकंतयोः
किंचिद्गृह्णीयाद्बुद्धिमान्नरः २ ॥ ॥

हे पृथिवि शिलाका पद्माकार चक्र कोईक उप
न्न होताहैं हे प्रिये थोडेकके मैने चक्रोंका ल
क्षणकथन कीयाहै पुरुष अपनेबुद्धिकर्के
हच्छीतरं आदरत्तें पूजाके अर्थवास्ते ग्रहण
करे ५२ यह चक्रोंका लक्षण समाप्त भया इ
सते उपरंत सालिग्राम के सामान्यलक्षणकों
कथनकरतेहैं वाराह पुराणमे लिखाहै च
क्रमिति हे पृथिवि जिसमें चक्रसंख्यानहि औ
जिसमें वर्णोक्ति नहि तिसमें छिद्र और कान्
त्ति जानना १ स्कंदपुराणमेकथनकीयाहै
क्षीरका दुग्धमे वा तंदुलामें शालग्राम निवे
शकरे तिनोकी उच्छक जो अधिकता तिस
कों देख कर्के बुद्धिमान् जो पुरुष सो ग्र
हण करे २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इतिसामान्यलक्षणम् तथाहि वर्त्तुलंस्थू
लमत्यंतंस्पष्टचक्रसमन्वितं ऊर्द्ध्वमुन्नतमु
ष्टैर्वाद्दीर्घोत्सन्नतिगह्वरं स्फुरद्रेखावलि
युक्तं नाभिलक्ष्मोन्नताभवेत् १ चक्रस्योभय
पार्श्वेतस्नुहीपुष्पाकृतिर्भवेत् केशभारे
णवैनात्र्यंदृश्यतेचक्रपार्श्वत ४ इति गरु
डोक्तनृसिंहमूर्त्तौनरसिंहोमहादेवःपृथु
वक्त्रास्तदंष्ट्रकः ब्रह्मचर्येणपूज्योसौनाम
माप्नोतिनोभवेदिति ५ अथविशेषलक्षणम्
स्थूलचक्रोभवेद्विष्णुर्मोक्षैकफलदोर्चितः
लक्ष्मीनारायणः श्रीमान्भुक्तिमुक्तिफलप्रदः

ऐसे सामान्य लक्षण कथन कीया है और तैसें कथ
न करते हैं अत्यन्त जो स्थूल वर्तुल क्या गोलाकार
और अतिगह्वर और प्रकट जो रेखाओं के पंक्ति विस
कर्के युक्त और जिसकी नाभि ऊंची होवे १ और च
क्र के दोनो पासयोंमें स्नुहिक्या उंडाथोर के पुष्पों
की आकृति होवे और गरुड चक्र के पासें नें केश
भार देखिये सो श्रेष्ठ होता है ४ नृसिंह मूर्तिमें
गरुडजी कथन करते हैं नरसिंह जो महादेव
और वडा है वक्त्र जिसकी और दांडोंवाला तिसकी
ब्रह्मचर्यते विना पूजा न करे ५ ॥ इसते उपरंत
विशेषलक्षणकों कथन करते हैं स्थूल चक्रवाला
विष्णु होता है सो पूजित कीया हुआ मोक्षफल
देता है शोभावाले जो लक्ष्मी नारायण सो भु
क्ति और मुक्ति फलकों देते हैं १ ॥ –

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दधिवामनसंज्ञस्साक्षाद्भूधान्यधनप्रदः १ सा-
न्सन्तानगोपालः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः २ ज्ञाना-
र्थैर्लक्षणान्युच्यन्ते तथैवोक्ते पुराणसंग्र-
हे अनेका मूर्तयः संति तत्र लक्षणैर्लक्षि-
ताः वैलक्षण्यविशेषेणाज्ञातुं शक्या न ता
कलौ ३ वर्णरूपाद्यवयवैः प्रमाणैर्विलं-
छनैः द्वारदेशविभेदेन भेदः कार्योविदुषा
ते ४ वर्णितो यथा पद्मपुराणे शङ्खादिव-
र्णसंयुक्तो द्विचक्रः पद्मसंभवः वासुदेवो ज-
गद्योनिः कृष्णः पीताम्बरोऽव्ययः ५॥

जोदधिवामनसंज्ञावाला है सोगौवा भैंस्या पृथि-
वि और अन्न और धनके देनेवाला होता है और जो
संतानगोपाल है पुत्रपौत्रादिकोंकी वृद्धिके देणेवा-
ला होता है २ ज्ञानके अर्थवाले लक्षणोंको क-
थन करते हैं तैसे पुराणसंग्रहमें कथन कीया
है और तिनोलक्षणोंकर्के लक्षित अनेक मूर्ती-
या हैं विशेष लक्षणोंकर्के सोकलियुगमें जान-
नेको शक्य नहि है ३ वर्णरूपादि अवयवोंकर्के
और प्रमाण विलांछनोंकर्के और द्वारदेश
विभेदकर्के कैयोंका भेद कथन कीताहै ४ प-
द्मपुराणमें और कथन कीया है शंखादिवर्णो
कर्के युक्त और दो हैं चक्र जिसके और पद्मते है
उत्पत्ति जिसको सो वासुदेव और जगतयोनि
और कृष्ण और पीतांबर और अव्यय-
है ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चक्रेद्वारस्थिते ज्ञेयः सोऽखेकफलदोऽर्चितः
चक्रेण मध्यदेशस्थे नेत्रामाख्यानकं स्मरेत् ९
परमेष्ठी जितक्रोधस्तथा नारायणोऽव्ययः अ
नंतस्त्वेव विज्ञेयो नानामूर्तिस्तथैव भवेत् ७
राज्यं मृत्युधनं चैव संतानं वाञ्छितार्थकं द
दाति पूजितो लोके तस्माद् ज्ञात्वाच येन र ८
इति पुराणसंग्रहे वासुदेवो जगद्योनिः
हंसः पीतांबरोऽव्ययः चक्रपाणिरिति मेष
द्वारचक्रासमीरिताः ९ अनिरुद्धो हरिः हं
सो जामदग्न्यस्तथैव च वामे वा दक्षिणे
वापि पार्श्वे चक्र समन्वितः २ ॥ ॥

जिसके चक्रद्वारक्या मखमें स्थितहोवे सो स्न
या इच्छा स्वरूपी फलकों देताहै मध्यदेश में
स्थितजो चक्र तिनोके नामाकों श्रवणाकर ९ पर
मेष्ठी और जितक्रोध और नारायण और अव्यय
और अनंतजानना और नानामूर्तियावालाहो
ताहै ७ सो पूजित होआहुआ लोकमें राज्य और
मृत्यु धन संतान और मनका जो संकल्प तिस
कों देताहै तिसकारणातें पुरुष जान करके पू
जनकरे ८ पुराण संग्रहमें कथन कीयाहै वा
सुदेव और जगद् योनि और हंस और पीतांबर औ
र अव्यय चक्रपाणि यह द्वारचक्रक्या मखमें हैं चक्र
जिनके ऐसे कथनहोतेहैं ९ अनिरुद्ध और हरि औ
र हंस और जमदग्नि यह वाम पासेमें और दक्षि
णपासेमें चक्र करके युक्तहै १०॥

60

लक्ष्मीनरसिंहो विष्णुर्नरसिंहस्त्वभीतिदः
बलरामो भूवराहः सयज्ञो वामचक्रवान् ॥
अथ विशेषमूर्तीनां इति नलक्षणज्ञाना-
र्थमादावेकचक्रादिमूर्तयः प्रदर्श्यन्ते पु
राणसंग्रहे पुंडरीकः प्रलंबघ्नो वैकुंठो म
धुसूदनः पीतांबरो हरिर्रामो बलरामस्सु
दर्शनो १ वीरनारायणश्चैव क्षीराब्धिशाय
नस्तथा सीरपाणिस्तथा मत्स्यः परमेष्ठी
नस्तथैव च २ मुसली विश्वरूपश्चेत्येकचक्रा
इमे मताः ३ पद्मपुराणे विष्णुरुवाच नि
वसामि सदा ब्रह्मन् शालिग्रामोद्भवाश्मनि
नत्वेव वर्णचक्रादिभेदान्नामानि मे शृणु ४

लक्ष्मीनरसिंह और विष्णु और भयके देनेवाला नर
सिंह और बलराम और भूवराह और सयज्ञ इह
वामचक्र वाले है ॥ इसते उपरंत विशेष मूर्तियां
के तिनके लक्षण ज्ञानते आदमें एकचक्र
वालेयां मूर्तियांको दिखाते हैं पुराणसंग्रहमें
पुंडरीक और प्रलंबघ्न और वैकुंठ और मधुसूद
न और पीतांबर और हरि और राम और बलराम
और सुदर्शन १ और वीरनारायण और क्षीराब्धि
शायन और सीरपाणि और मत्स्य और परमेष्ठी
और तैसे मुसली और विश्वरूप पह एकचक्रवा
ले जानने २ पद्मपुराणमें विष्णुजी कथन कर
ते हैं हे ब्रह्मन् शालग्राम पर्वतमें उत्पन्न हुआ
जो पत्थर तिसमें सदामें निवास करता है तिस
में वर्णचक्रादिभेदते मेरे नामोंको तूं श्रवन कर ४ 2

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शुक्लोरक्तस्तथाकृष्णोद्विवर्णोबहुवर्णवान्
एकचक्रस्यसंज्ञास्तुपंचज्ञेयायथाक्रमम् ४
मोक्षंमृत्युंविषादंचदारिद्र्यंमदनंतथा ददा
तिपूजितोनृणांतस्माद्ज्ञात्वाचपूजयेन्नरः ५ अ
थद्विचक्राः पुराणसंग्रहे मत्स्यकूर्मौवरा
हश्वेतवाराहवामनौ लक्ष्मीवराहगरुडौ
वराहोपृथिवीयुतः ६ नृसिंहः परशुरामश्च
वीररामश्चकेशवः लक्ष्मीनृसिंहशेषश्चोपे
न्द्रोदधिवामनः ७ ॥

शुक्ल और जैसें रक्त कृष्ण और द्विवर्ण और बहुवर्ण
वाला यथाक्रमतें एकचक्रकीयां पंचसंज्ञा जान
लीयां ४ ॥ मोक्षमिति पूजित हुआ मोक्ष और मृ
त्यु और विषाद और दरिद्र और जैसे मदन क्या
कामदेव पुरुषों को देताहै जिसकारणतें पुरु
ष जानकर्के पूजनकरे ५ इसतें उपरंत दोचक्रों
वालीयां मूर्तियांकथनकरतेहैं पुराणसंग्रहमे
मत्स्य और कूर्म और वाराह और श्वेतवाराह औ
र वामन और लक्ष्मीवाराह और गरुड और
पृथिवी वराह ६ और नृसिंह और परशुराम
और वीरराम और केशव और लक्ष्मीनृसिंह औ
र शेष और उपेंद्र और दधिवामन ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
६१

61

विस्वदीशारथ्यौ रामो बलरामो हलायुधः रा
मो विजयकोदंडो हृष्टपूर्वस्त्रिविक्रमः ८ कृ
ष्णो गोवर्धनः कल्कीपद्मनाभो हरिस्तथा
प्रद्युम्नानिरुद्धश्च गोपालो लक्ष्मिपूर्वकः ९
न्यासंतानमदनो गोपालः श्रीयुतस्तथा
बालकृष्णो हयग्रीवो गोपालो वंशपूर्वकः
१० मायानारायणश्चैव केवलो गरुडध्व
जः पुंडरीकान्तयज्ञौ च श्रीधरश्च गदाधरः
११ लक्ष्मीपतिर्वासुदेवो माधवः शेषशाय्य
पि विदारणो नृसिंहश्च नृसिंहो रत्नसांतकः १२

और विस्व और दश रथराम और बलराम हला-
युध और राम और विजयकौं देउ हृष्टपूर्व और
त्रिविक्रम ८ और कृष्ण और गोवर्द्धन और
कल्की और पद्मनाभ और हरि और प्रद्युम्न औ
र गोपाल और लक्ष्मीपूर्वक ९ और तैसे संता-
नमदन और गोपाल और श्रीयुतबाल कृ-
ष्ण बालकृष्ण और हयग्रीव औ गोपाल और वं
शपूर्वक १० औ मायानारायण और गरुडध्वज
और पुंडरीकान्त और यज्ञ और श्रीधर औ
र गदाधर ११ और लक्ष्मीपति और वासुदेव
और माधव और शेष शाय्या और विदा-
रण करणेवाला नरसिंह और रत्नसांत
कनृसिंह १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आकाशकालकपिलयोगपालनृसिंहकाः
विग्रुजिह्वोघोरऊर्त्तिविभीषणानृसिंहकाः १३
महाहरोनृसिंहौद्वौविहृताग्रस्तथैवच क
लिनाशकरामश्चदशकंठफ़लांतकः १४
नरशंकरसर्वौश्चोरूपनारायणास्तथा दा
मोदरोलक्ष्मिसर्वश्चशुद्धश्चपुरुषोत्तमः १५
संकर्षणाधोक्षजौचदत्तात्रेयचतुर्भुजौ
त्रैलोक्यामोहनंरूपसः सौभाग्यवरदस्तथा
१६ ॥

ओर आकाशकालकपिल ओर योगपाल नृसिं
हक ओर विग्रुजिह्व ओर घोरऊर्त्ति ओर विभी
षणानृसिंहक १३ ओर महाहर ओर नृसिंह ओ
र विहृताग्र ओर कलिनाशक ओर राम ओर
दशकंठफ़लांतक १४ ओर नरशंकर ओर
रूपनारायण ओर दामोदर ओर लक्ष्मी सर्व
ओर शुद्ध ओर पुरुषोत्तम १५ ओर संकर्षण
ओर अधोक्षज ओर दत्तात्रेय ओर चतुर्भुज
ओर त्रैलोक्यमोहन ओर रूप ओर सौभाग्य
वरद १६ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ ८२

रुक्मिणीविजयस्तद्वच्चूडामणिर्धनंजयो
पारिजातहरः कृष्णः सीमंतकहरस्तथा १७
कालेयमर्दनः प्रोक्तस्तद्वच्चाणूरमर्दनः कृ
ष्णः सनातनगुप्तः कृष्णो गोवर्द्धनस्तथा १८
सुदर्शनो मुरारिश्च वनमाली च योगराट् अ
मृताहरणस्तद्वद्गणेशश्च तथैव च १९ श्री
वत्सलांछनस्तद्वद्धरणीधर एव च देवदे
वो जगद्योनिः स्वयंभूः कपिलस्तथा २० धर्म
राजो हरिर्हरो हैहयस्तद्वदेव च हिरण्यग
र्भस्तद्वत्स्याद्धंसः परम एव कः २१ विघ कृष्
णेय एते तास्ता कल्पे न प्रकीर्तिताः २२ ॥

और रुक्मिणी विजय तिसकी न्याई चूडामणि और ध
नंजय और पारिजातहर और कृष्ण और तैसैं सीमंत
कहर १७ और कालियमर्दन कथन कीया है तिस
की न्याई चाणूरमर्दन और कृष्ण और सनातन
और कृष्ण गोवर्द्धन १८ और सुदर्शन और मुरा
रि वनमाली और योगराट और अमृताहरण ति
सकी न्याई गणेश १९ और श्रीवत्सलांछन ति
सकी न्याई धरणीधर और देवदेव और जगद्यो
नि और स्वयंभू और कपिल २० और धर्मराज और
हरि और हर और हैहय और हिरण्यगर्भ ति
सकी न्याई परम हंस २१ इयदो चक्रों वाली
यां मूर्तियां है सो संपूर्णता करके कथन की
या है २२ ॥ ७ ॥

ब्राह्मे दीर्घो चक्रा च वर्णा च विंदुत्रयविभूषितां
मत्स्याख्या शिला ज्ञेया भुक्तिमुक्तिफलप्रदेति
विश्वरहस्ये मत्स्यरूपं च देवस्य दीर्घाकारस्तु
भूषितं विंदुत्रयसमायुक्तं ह्रस्ववर्णासुशो
भनमिति २४ पाद्मे त्रयो मत्स्यादयः श्यामा
द्विचक्राः स्वांकसंयुताः तेषां संदर्शनादेव
सर्वान्कामानवाप्नुयादिति २५ ब्रह्मांडे दी
र्घद्वारसंयुता स्त्रिग्धा द्वारमध्ये द्विचक्रयुक्
चक्रमेकं पुच्छभागे दक्षिणे शंखसाकृतिः
२६ वामे पार्श्वे रेखा मत्स्यमूर्तिः शुभप्र
देति २७ ॥

ब्रह्मांडपुराणमें कथनकीयाहै दर्षीनेदीर्घ
और क्या चक्रके वर्णवाली और तीन विंदुकर्के
भूषन मत्स्यनाम कर्के सो शिलाजाननी भुक्ति
और मुक्तिके फलकोंदेतीहै २३ विश्वरहस्यमें
कथनकर्तीहै जोदीर्घाकार और सुभूषित औ
र तीन विंदुकर्के युक्त और ह्रस्ववर्ण और सु
शोभन सोदेवका मत्स्यरूपहै २४ पद्मपुराणमें
औरकथन कीयाहै तीनजोहैं मत्स्यादिक मूर्ति
यां और श्याम औरदोचक्रांवालीयां और अपनेचि
न्हकर्के युक्त तिनोंके दर्शनोंते संपूर्णकामोंकों
प्राप्त होजाताहै २५ ब्रह्मांडपुराणमें औरकथन
कीयाहै दीर्घद्वारकर्के युनास्त्रिग्ध औरद्वारमध्यमें दो
चक्रोंकर्के युक्त और पुच्छभागमें एकचक्र और दक्षि
णमें शंखकी आकृति २६ औरवामपार्श्वमे रेखादीखि
ये सो मत्स्यमूर्ति शुभ फलके देनेवाली होतीहै २७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
६३

त्रिचक्रास्त्रयोप्येते त्रैवमूर्तयः परिकीर्तिताः नारा
यणो हरिहरो लक्ष्मीनारायणास्तथा २८ नृ
दाशरथी रामः शान्ताख्यो वासुदेवकः हंसः
कूर्मयुतश्चैव केशवो वज्ररूपकः २९ अधोमुख
नृसिंहस्तु शिशुमारस्त्रिविक्रमः मत्स्यस्त्रिमू
र्तिः सीतेशः पुरुषोत्तम एव च ३० त्रिचक्राम्
र्तयश्चैताः समासेन निरूपिताः ३१ चतुश्च
क्रास्त्रयोप्येते त्रैव चतुश्चक्रा हरिहरसीताराम
जनार्दनाः त्रिविक्रमः कंसमर्दी लक्ष्मीनारा
यणास्तथा ३२ वटपत्रशायी रामो बुद्धस्तद्व
च्चतुर्भुजः गोवर्धनधरश्चैव चतुश्चक्रभवन्ति
हि ३३

तिसमें तीनोचक्रोंवालीमूर्तियांकथनकीनीयांहै।
नारायणऔरहरिहर और तैसेलक्ष्मीनारायण २८
क्षितकीन्याई दाशरथीराम शांतहनामजिसका औ
र वासुदेवक और हंस और कूर्मयुत और केशव
और वज्ररूपक २९ और अधोमुख नृसिंह शिशु
मार और त्रिविक्रम और मत्स्य और त्रिमूर्ति और
सीतेश और पुरुषोत्तम ३० यह तीनोंचक्रवालियां मू
र्तियां मेनेथोड़ेकथनकीनीयांहै ३१ चौंचक्रोंवा
लीयांमूर्तियां भीतिसमेंहै चौंचक्रोंवाले हरिहर
और सीताराम और जनार्दन और त्रिविक्रम औ
र कंसमर्दी और तैसेलक्ष्मीनारायण ३२ और
वटपत्रशायी और राम और बुद्ध और तिसकी
न्याई चतुर्भुज और गोवर्धनधर यह चौंचक्रों
वालीयां मूर्तियांहै ३३ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पंचचक्रमूर्त्तौपितत्रैव सीतारामहरीश्वरौ पं
चचक्राविमौ स्मृतौ २४ षट्चक्रास्तत्रैवश्री
मूर्त्तिस्तारकब्रह्मसीतारामस्त्रिमूर्त्तिकः
पुरुषोत्तमोविपश्चैव मधुसूदनएवच प
द्माभिरामः षट्चक्रामूर्त्तयः समीरिताः २५
समचक्रा अपि तत्रैव अनंतः प्रथमोस्ति
यो नृसिंहः सर्वतोमुखः समचक्राविमौ
ज्ञेयौ विज्ञेयौ सर्वसूरिभिः २६ अष्टचक्रा
स्तत्रैव महानारायणश्चैव चक्रपाणिपिता
महौ अनंतश्चेतिचत्वारोप्यष्टचक्राः समीरि
ताः २७ नवचक्रमूर्त्तयस्तत्रैव विष्वक्सेनाद्रू
पसर्वा नवचक्राः समीरिताः २८ ॥ ॥
पंचमूर्त्तियांभी तिसमें कथित हैं सीताराम इति
सीताराम और हरिहर ये दोनो पंचचक्रोंवाली
यां मूर्त्तियां कथन कीनीयां हैं २४ छेचक्रोंवाली
यांभी तिसमें हैं श्रीमूर्त्ति और तारकब्रह्म और
सीताराम और त्रिमूर्त्तिक और पुरुषोत्तम और अ
ध्यय और मधुसूदन और पद्माभिराम यह छेचक्रों
वालीयां मूर्त्तियां कथन कीनीयां हैं २५ समचक्रोंवा
लीयांभी तिसमें हैं प्रथम अनंतजानना और संपूर्ण
में है मुख जिसका सो नृसिंह यह दोनो समचक्रवा
लियां बुद्धिमानोंनेजाननेयोग्य हैं २६ और अष्टच
क्रोंवालियांभी तिसमें हैं महानारायण और चक्रपा
णि और पितामह और अनंत यह अष्टचक्रोंवाले
कथन कीया हैं २७ नवचक्रोंवालियां मूर्त्तियां तिसमें हैं
विष्वक्सेन लेकर संपूर्ण नवचक्रोंवालीयां जाननीयां २८

सा॰
ग्राम॰
६४

64

दशचक्रस्त्वनंतोथ हृषीकेशश्चगोविंद॰
स्त्वनंतोविश्वरूपकः महाविष्णुश्चपाताल॰
नृसिंहःपुरुषोत्तमः सत्यवीरश्चतेसर्वेदश
चक्राःसमीरिताः ४९ अथैकादशचक्राःसु
ज्ञानंतोहृदयचक्रोरुद्रानंतस्तथैवच ५० अ
थद्वादशचक्रमूर्तयः त्रयोद्वादशचक्राःस्त
मुकुंदःसूर्यएवच ५१ पुनस्चक्रादित्रयो
दशचक्रांतिमूर्तयः वसुचक्रश्चनंताख्य
नंतःसर्वसंज्ञकाः ५२ अथचतुर्दशचक्रादि
चतुर्विंशतिचक्रांतामूर्तयः चतुर्दशादिचक्रैः
स्वयुक्ताविश्वंभरादिकाः अनंतास्सतसंख्या
ताविज्ञेयाविबुधैःक्रमात् ५३

दशचक्रोंवालीयां मूर्तियां भीतिसमें है हृषीकेश॰
इति हृषीकेश और गोविंद और अनंत और विश्वरूप
क और महाविष्णु और पातालनृसिंह और पुरुषो
त्तम और सत्यवीर सोसंपूर्णदशचक्रोंवालीका
थनकरतेहैं ४९ इसतें उपरंत ग्यारां ॥ चक्रोंवा॰
लेकथनकरताहै सुज्ञानंत और हृदयचक्र और
तेसेरुद्रानंतहै ५० इसतें उपरंत द्वादशचक्रों॰
वालियां मूर्तियांकोंकथनकरतेहै मुकुंद और ते
सेंसूर्य्ययहदोनोंद्वादशचक्रोंवालेजानने ५१ फेर
अष्टचक्रतेंलेकर्के त्रयोदशचक्रोंनमूर्तियां है अष्ट
चक्रवालाअनंतऔर सर्वसंज्ञावालेअनंतहै ५२ इ
सतें उपरंतचतुर्दशचक्रतोंलेकर्के वीसचक्रांत
मूर्तियांहैचौदा चक्रों कर्केयुक्तविश्वंभरादिहै और
अनंतचौवीसबुद्धिवानेक्रमतेंजानने ५३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ पंचविंशतिचक्रादियावत्संभवचक्रमूर्त
यः यावत्संभवचक्रांकाल्लनोनंताविश्वदक
इति निश्चक्रा अपि मूर्तय स्तथैव निर्वाणावस्थे
नोक्ते यौ योगीशो विश्वपंजरः सद्योजातो वा
मदेव ईशानश्चंद्रशेखरः (भवस्तत्पुरुषः
शंभुर्शिवनाभिरघोरकः ॐ इत्लिन्यश्च सर्व
स्तु निश्चक्रा मूर्तयो मताः २ एवं लक्षणांस्त
मताः शिलाश्चक्रैरलंकृताः पूजनीया विशे
षेणा सर्वकामफलप्रदाः इति ३ अथ विशेष
लक्षणानि भुवनादाउद्देशनो मूर्तीरनुक्रा
मति मत्स्याद्यादशतन्नेश्वस मिताकेशवाद
यः अनंतस्तनवेदाद्यो विश्वरूपस्ततोपरः ४

अब पंजोचक्रांदिमूर्तिकहते हैं योगीश और वि
श्वपंजर सद्योजात और वामदेव और ईशान और
चंद्रशेखर (और भव और तत्पुरुषशंभु और शि
वनाभि और अघोरक और ॐ इत्लिनीयह संपूर्ण च
क्रसें रहित मूर्तीयां है २ इसप्रकारलक्षणोंकरके
युक्त और चक्रोंकरकें अलंकृत कीतीयां होयां
विशेषकरकें शिला पूजनेयोग्य है सो सर्व का
मफलदेनेवालीहैं ३ इसतें उपरंत विशेष लक्ष
णाकों कथनकरताहूं अथा पहलो उद्देशतें मूर्ती
यांका अनुक्रम करताहै दश तत्त्वोंकरकें युक्त
मत्स्यादि और केशवादिमूर्तियां है अनंत आय
है तिससेंपरे विश्वरूप है ४ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
६५

65

वैकुंठस्ततःपश्चाद्धयग्रीवचतुर्भुजौ गदा
धरःपुंडरीकाक्षःपुंडरीकसुदर्शनौ ५ योगेश्व
रस्तथाविष्णुःपंचयज्ञस्वरूपधृक् दत्तात्रेयः
शिशुमारोहंसःपरमहंसकः ६ लक्ष्मीपति
रित्याख्यातोगरुडध्वजएवच वटपत्रश
शायीचततोविश्वंभराभिधः ७ पीतांबरः
सत्यवीरःश्रीवाचामृतकारकः नरशेष
स्तुगरुडोवनमालीततःपरम् ८ मुरारि
श्चमुकुंदश्चततःश्रीवत्सलांछनः धरा
णीधरोयोगराजःश्रीमूर्तिःश्रीसहायकः ९

वैकुंठ इति वैकुंठ तिसतें पीछे हयग्रीव और च
तुर्भुज और गदाधर और पुंडरीकाक्ष और पुंड
रीक सुदर्शन ५ और योगेश्वर तिसतें उपरंत
विष्णु और यज्ञस्वरूप धृक् और दत्तात्रेय और शि
शुमार और हंस और परमहंस ६ और लक्ष्मीका
पति कथन कीया है और गरुडध्वज और वटप
त्रशायी तिसतें उपरंत विश्वंभर ७ और पीतां
बर और सत्यवीर और श्रीवाचामृत कारक और
नर शेष और गरुड और वनमाली तिसतें परे
मुरारि और मुकुंद तिसतें उपरंत श्रीवत्सलां
छन और धरणीधर और योगराज और श्री
मूर्ति और श्रीसहायक ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देवदेवश्चकपिलोव्ययः क्षीराब्धिशाय्यपि
मुसलायुधनामाचवज्रपाणिस्ततःपरम्
वज्ररूपोजगद्योनिस्त्रिमूर्तिश्चततःपरम् १०
विश्वक्सेनोहेहयश्चएतावैविश्वमूर्तयः
सद्योजातोवामदेवोघोरस्तत्पुरुषस्तथा ॥
ईशानशर्वसंज्ञौद्वौशंकरश्चंद्रशेखरः शि
वनाभिर्भवःपश्चाद्गणेशश्चैकपवहि १२
सर्वस्तथाकुंडलिनःपंचायतनमूर्तयः ह
रिहरोधर्मराजःपरमेष्टीपितामहः १३ ॥

और देवदेव और कपिल और अव्यय और क्षी
राब्धिशायी और मुसलायुध और वज्रपाणि
और तिसतें उपरंत वज्ररूप और जगत यो
नि तिसतें परे त्रिमूर्तिहै १० विश्वक्सेन इति
विश्वक्सेन और हेहय यह विश्व मूर्तियांहैं
सद्योजात और वामदेव और अघोर औरतत
पुरुष ॥ और ईशान और शर्व संज्ञावाले
दोहै और शंकर और चंद्रशेखर औरशिव-
नाभि औभव औरएकगणेश १२ और तैसें
सूर्य और कुंडलिनी यहपंच आयतन मूर्ती
यांहै हरिहर धर्मराज और पर मेष्टी और
पितामह १३ ॥ ७० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिरण्यगर्भस्स्वयंभूस्त्वनन्तोऽनन्तश्चनर्मदाः प
नाः प्रकीर्णकशिलाः शालग्रामसमुद्भवाः ॥ स्व
उद्देशक्रमतस्तासामथ्येनेलक्षणान्यथ ॥ म
त्स्यादौ मत्स्यादीनामन्वयः मत्स्यः कूर्मः सूक
रो नारसिंहस्तद्वत्स्तवो भार्गवस्त्वाथ रामः रामः
सीताप्राणनाथस्तथान्योरामः प्रोक्तो रो
हिणीयो विश्रुतः ॥ तथा कल्कीति विख्या
तो ह्येवं नारायणविभूदश नारायणस्य क्रमतः
कथ्यं ने लक्षणान्यथ २ अथ कूर्ममूर्तिलक्ष
णानि पद्मपुराणे कूर्मस्याकारवक्रांकशि
ला कूर्मः प्रकीर्तितः इति ॥ १ ॥

और हिरण्यगर्भ और स्वयंभू और तिसकी न्याई वा
नर्मद कथन कीना है यह शालग्राम ते उत्पन्न हो
इया प्रकीर्णक शिला है ॥ और शास्त्र में ते तिनो
के लक्षण कथन करते हैं तिस आदमी मत्स्या
दि मूर्तियां कथन करते हैं मत्स्य और कूर्म और
सूकर नारसिंह तिसकी न्याई तद्व और भार्गव
राम क्या परशुराम और सीताके प्राणनाथ राम औ
र रोहिणी राम कथन कीना है क्या बलदेव और बु
द्ध ॥ तथैं ते तैसे कल्की कथन कीया है २ इस तें
विभु नारायण के दश अवतार है तिनके क्रम से लक्ष
णा कों कथन करते हैं २ इसते उपरंत कूर्ममूर्ति
यां के लक्षण पद्मपुराण में कथन कीया है कूर्मसे
ति कूर्म के आकार की न्याई है वक्र जिस शिला में
सो कूर्म कथन कीना है ॥ १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आग्नेये कूर्मस्तथोन्नतः पृष्ठे वर्तुलावर्तशोभनः
हरितवर्णो मायते कौस्तुभेन च चिह्नितः ।
पुराणसंग्रहे तत्तल्लक्षणसंयुक्तो भागोर्व
लयपंचकम् कूर्मरूपं सचक्रं यद्भूतले स
र्वकामदमिति २ विश्वरहस्ये कूर्मस्तथो
न्नतः पृष्ठे वर्तुलावर्तसंयुतः हरिद्वर्णः समा
ख्यातः कौस्तुभेनैव चिह्नितः ३ पाशांकुशा
न्वितं देवं नीलवर्णं विशारदम् कूर्मदेवम
नेनाथ चलां श्रियमवाप्नुयात् ४ इंद्रनीलनि
भाः स्थूलो त्रिरेखालांछितोन्नता ॥

अग्निपुराणोंमे और कथन कीता है हे जो पृष्ठ में उ
च्चा और गोलाकार और सुंदर और हरित वर्ण
कों धारताहुवा और कौस्तुभ करके चिह्नित सो
कूर्म होता है । पुराणसंग्रह में और कथन कीया
है तिनों लक्षणों करके युक्त और लय की न्याई
गोल हैं पंच चक्र में जिसमें और कूर्मरूप सचक्र
पुरुष कौं पृथिवीमंडल में है सो सर्वों कामनों के
देनेवाला होता है २ विश्वरहस्य मे और कथन कीता
है पृष्ठ में उच्चा और वर्तुलावर्त करके युक्त और ह
रित वर्ण करके प्रकट और कौस्तुभ करके चिह्नित सो
कूर्म होता है ३ पाश और अंकुश करके चिह्नित औ
र नीलवर्ण वाला पंसा जो कूर्मदेव तिसकों जो भ
जता है सो अचल लक्ष्मी को प्राप्त होता है ४ इंद्रनील
नि इंद्रनीलमणी को न्याई है प्रकाश जिसका और
स्थूल और तीन हैं रेखा जिसकी या और तिन्हों करके उच्चा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कूर्ममूर्तिरवक्रांगो दुर्लभः सर्वकामदः ५ कूर्म
वक्रोद्भवं पृष्ठे वर्तुलावर्तसूरितं सर्वकामप्रद
लेयं स्वत्वसौभाग्यवर्द्धनम् ६ अनेनेमोत्तम
वेतस्य पूजकस्य न संशयः कूर्मः स्यादुन्नत
शिराः पृष्ठभागे सुरान्वितः ७ विख्यातं दुर्ल
भः सर्वमनोरथफलप्रद इति ८ वराहपु
राणे वर्तुलः कमठाकारो वनमालाद्विचक्र
वान् श्यामाभो हेमबिंदुश्च कूर्मस्तु भुवि दुर्लभ
इति ९ ग्रंथांतरे वर्तुलश्याममद्भुल पृष्ठभा
गेनतथोन्नतम् द्विचक्रं वल्गुरेखाढ्यं कूर्मदे
वं समानतम् १० ॥

अंग जिसका वक्र नहिं ऐसी जो कूर्ममूर्ति सो दुर्लभ है
और संपूर्ण कामके देनेवाली होता है ५ जिसके पृष्ठ
में कूर्म चक्रका उद्भव होवे और वर्तुलका गोलाक
रका आवर्त जिसके सहित सो संपूर्ण कामके दे
नेवाला है और स्वत्व सौभाग्यके देनेवाला है ६ जिस
का पूजन करनेवाला जो पुरुष सो मोक्षको प्राप्त
होता है इसमे कछु संशय नहि जो कूर्म उंचे शिरवा
ला होवे और पृष्ठभागमें सुरक करके युक्त ७ सो दुर्लभ
और संपूर्ण मनोरथ फलके देनेवाला होता है ८ वा
राहपुराणमे और कथन कीया है वर्तुलका गोला
कार और कमठका कछोपड़की न्याई है आकार जिस
का और वनमालाके चिह्नवाला और दोचक्रोंवाला
और श्याम है आभा जिसकी स्वर्णकी है बिंदु जिसमे ऐसा
जो कूर्म सो पृथिवीमें दुर्लभ है ९ वर्तुलाकार स्थूल
श्याम पीठमे ऊंचा और दोचक्रोंवाला सुंदर रेखायुक्त
ऐसा कूर्म होता है १०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चतुर्वा कूर्ममूर्त्तिः स्यात्पार्श्वभागे खुरान्विता
विख्याता दुर्लभा सर्वमनोरथफलप्रदा ॥
विंदुत्रयांकितां शंखचक्रध्वजयुतापि वा
दीर्घं दक्षिणे वामा स्याद्भानोर्वलयपंचकैः
भूषिता कूर्ममूर्त्तिः स्याद्दुर्लभा सर्वकामदा
हेमायन्ता कूर्ममूर्त्तिः कनकच्छविसंयुता १२
स्तनी मुष्कवृत्तिर्वापि चक्रस्योभयपार्श्वतः
कूर्ममूर्त्तिः खगेशान सर्वकामप्रदीनि ।४

चतुर्वेति । जो चार प्रकारकी कूर्म मूर्त्ति और एक
पासेसें ख्वरकर्के युक्त और प्रकट सो दुर्लभ है और
र संपूर्णमनोरथोंके फलकों देते हैं ॥ और
तीनविंदुकर्के चीन्हत और शंख और चक्र ध
जा इन कर्के युक्त दक्षिण और वामपासमें
दीर्घ और सूर्यके जो पंच चक्र तिनो कर्के
भूषित ।१२ ऐसी जो कूर्म मूर्त्तिसो दुर्लभ है
और संपूर्ण कामके देनेवाली होती है और जो
लाकार जो कूर्म मूर्त्ति और स्वर्णके प्रकाश
कीन्याई ।१३ और चक्रके दोनो पासेयो में स्त
नही क्या ? दूढे थोरके मुष्क कीन्याई है आकृ
ति जिसकी हेगरुड ऐसेजो कूर्म मूर्त्ति सो
संपूर्ण काम फलकों देती है ।१४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गारुडे वर्त्तलाकमठाकारदीर्घह्रास्वतयैव ख
ग नाभिचक्रयुक्तारम्या कूर्माकारान्तुपार्श्वे
नः ५ स्थिरासनाज्वलामृष्टाउन्नतानीला
लोहिता कूर्ममूर्त्तिरितिख्याता पुत्रपौत्रवि
वर्द्धिनी ९ अथ वराहमूर्त्तिलक्षणम्
चतुर्धात्रवराहस्याः तत्राद्यः शुद्धसंज्ञकः
पृथ्वीवराहस्तुपरस्ततो लक्ष्मीवराहकः
श्वेतवराहकश्चैव तेषां लक्षणमुच्यते
१०

गरुड पुराणमें और कथन कीताहै हे गरुड
वर्त्तल क्या गोलाकार और कमठ क्या कछु
एकी न्याई है आकार और दीर्घ मुखवाली
और नाभिचक्रके युक्त और रम्य क्या सुंदर गो
र पासेंने कूर्माकार ५ और स्थिरासन और प्रा
काशवाला है पृष्ठ जिसकी और उच्चा और नील
लोहित ऐसा कूर्ममूर्त्ति कथन कीताहै सो
पुत्र और पौत्रके वधाने वाली होताहै ९ इस
ते उपरंत वाराहमूर्त्तिके लक्षणकों कथन
कर्तेहैं चतुर्थंति इसमें वाराह क्या सूरका
की चार प्रकारकी मूर्त्तिहै प्रथम शुद्ध संज्ञ
क क्या शुद्ध वराह और पृथ्वी वराह और ति
सनें परे लक्ष्मीवराहक और श्वेतवराहक औ
र तिनोका लक्षण कथन करीदाहै १०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तत्रश्वेतवराहलक्षणं पद्मपुराणे वराहमूर्ति
विशेषपद्मकं यस्य सहोत्रुजे तस्य संस्मजदेही
प्राप्नोतिमनसोप्सितम् २ वराहकृतिराभुग्न
मक्रादिभिरलंकृतः वराहइतिसंप्रोक्तः स
र्वकामफलप्रदइति २ ग्रंथांतरेपि एष्टेरेखा
समायुक्तोवराहाकृतिरेववा आस्यमात्रंत्र
वैतास्यं पादलांगूलकंतथा ४ अतसीकुसु
मप्रख्योनीलोत्पलनिभातथा दीर्घाकारा
तवैदीर्घाहारयुक्तासजर्जरा ५ ॥ ~

तिसमें श्वेतवराहकालक्षण पद्मपुराणमें कथ
नकीताहै जिसको कमलकाहै चक्रसोवराह
क्या सूकर मूर्तिजाननी तिसको स्नानते पु
रुष संपूर्ण कामनाके फलको प्राप्तहोताहै २
औरवराहकीन्याईहै आकृतिजिसकी और आ
भुग्नक्या नेरे और चक्रोंककेंजो अलंकृतसोवराह
मूर्ति संपूर्णकामनाके देनेवालीकथनकीताहै ३
औरग्रंथमेकथनकीताहै एष्टमेंजोरेखातिस
करकें युक्त और वाराहकीन्याईहै आकृति जिस
की अथवा मुखमात्र हैगरुड वामसूरकीन्या
ईहै पादवापुच्छजिसकी ४ औरअलसीकेफूलकी
न्याई प्रकट और नीलाजो कमल तिसकीन्याईहै
कांतिजिसकी और दीर्घ आकार वाली और हार
करकें युक्त और जर्जरा क्या जीर्णा ५ ॥ ~

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
६६

69

पृष्ठोन्नता च दीर्घा स्याद्वामतश्चक्रयुग्मकम्
दृश्यते कौस्तुभाकारा रेखा पृष्ठे च पार्श्वतः ६
वराहमूर्तिरित्युक्ता राज्यलक्ष्मीप्रदायका
पुत्रपौत्रादिवृद्धिं च प्रज्ञाज्ञानप्रदा सदेति ७
वाराहे वराहः शक्तिलिंगं तत्र चक्रं च विषमे स्थि
ते इंद्रनीलनिभं स्थूलं त्रिरेखालांछितं शुभ
मिति ८ कूर्मांगानीव यं पश्येद् वाराहं रूपम
व्ययम् गोष्पदं यत्र दृश्येत वाराहो नात्र संशयः

पृष्ठतें उच्ची और दीर्घ और वामपासेंते चक्रयुग्म
और कौस्तुभमणिकी न्याई आकार वाली पृष्ठमें
और पासेंते और रेखा ऐसी मूर्ति जो देखिये सो व
राह मूर्ति कथन कीनी है सो राज्य लक्ष्मीको दे
तीहै और पुत्रपौत्रादियोंको वधातीहै प्रज्ञा और
ज्ञानको सदा देताहै ७ वराह पुराणमें और क
थन कीताहै शक्तिकाहै चिह्न जिसमें और विष
मचक्रों करकें स्थित और इंद्रनील मणिकी न्याईहै
कांति जिसकी और स्थूल और तीन रेखोंवालाहै
चिह्न जिसमें और शुभ सो वराह मूर्ति होताहै ८
जिस अव्ययरूपकों कूर्मके अंगोकी न्याई दे
खिये सो वराहमूर्ति होतीहै और जिसमें गौ
का पैर देखिये सो भी वराह मूर्ति होतीहै इस
में कछु संशय नहि ९ इसतें उपरंत धरणी
वराहका लक्षणहै ॥ ॥ ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वाराहे दीर्घसंश्यामलाकारेष्थगवलयवे
ष्टिनं द्वारदेशेलसच्चक्रंम्भूवराहंविदुर्बुधाः ८
पुराणसंग्रहे अथचक्रमसंदिग्धंपृष्टोन्नतम
पीनकम् वराहंधान्यफलदंसर्वैराराधनी
यं ॥ अंकुशाकारवदनम्भूवराहंशुभंविदु
रिति अथलक्ष्मीवराहलक्षणं वाराहेदक्षण
भागेनेचक्रेसमलग्नप्रदेशतः वनमालायु
तेलक्ष्मीवराहपरिकीर्तितः इति १२ ॥

वाराहपुराणमेकथनकीयाहै दीर्घहै मुखजिस
का औरश्यामहै आकार जिसका औरभिन्नचक्रों
करकेवेष्टित और द्वारदेशमें प्रकाशमानहैं चक्र
जिसमें तिसकों बुद्धिमानवराहकथनकरतेहैं ८
पुराणसंग्रहमेंकथनकीयाहै अथइति अथाहै
चक्र जिसके औरअसंदिग्ध औरपृष्टमें उच्चा औ
र अपीनकक्या नमोटा यथा जोवराहसो धान्य
फलकोदेताहै और तिसकीसंपूर्णपुरुषोंने आ
राधनाकरणी चाहिये ॥ और जिसके मुखमें अं
कुशका आकार होवे ऐसा जोभूवराह तिसकों
शुभजाननेहैं इसतें उपरंत लक्ष्मीवराहके ल
क्षणकोंकथन करतेहैं वराहपुराणमें जिसके
दहनेपासेमें प्रदेशतें समलग्नचक्रहों जैसे
दोचक्र हैं और वहा नाकर्के युक्तसो लक्ष्मीव
राहकथन करीदाहै १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
७०

अथश्वेतवराहलक्षणं वाराहे दीर्घघोणसम
शुक्लमेकदंष्ट्रस्तनिर्मलं वनमालायुतं रम्यं॰
श्वेतवाराहमुच्यते ३ नृसिंहपुराणे गोक्षीरव
र्णमतुलं वनमालांकितं तथा श्वेतवाराहकं
नामतस्यपुण्यमनंतकमिति ४ इतिवराह
मूर्तिलक्षणानि अथविदारणराक्षसांतक
नृसिंहयोर्लक्षणम् ब्रह्मांडे विदारणाभिधा
नंस्यान्नृसिंहं दीर्घकेसरम् अंतश्चक्रं बहिःद
क्षं दक्षिणोन्नतमस्तकम् विदारणमिति
ख्यातं दंष्ट्राभ्यामुपशोभितम् १

इसतें उपरंतश्वेतवराहकालक्षण कथन कीयाहै व
राहपुराणमें दीर्घहै नासा जिसकी यां एक दाढ
करकै शुक्ल और निर्मल और वनमाला करकै युत
और रम्य सो श्वेतवराह कथन कीयाहै ३ नृसिंह
पुराणमे और कथन कीयाहै गौके दूधकीन्याई
है रंग जिसका और अतुल और वनमालाका चिह्न
जिसमें तिसका श्वेतवराह नामहै तिसके स्तवका
पुण्य अनंत होताहै ४ इसतें उपरंत विदारण नृ
सिंह और राक्षसांतक नृसिंहके लक्षणकों कथन
करतेहैं ब्रह्मांडपुराणमें विदारणेति विदारण
नामकरकै जो नृसिंह केसौंह दीर्घ है बाल जिसके
और अंतरमें चक्र और बाहरमें है शंख जिसके
और दक्षिणतें ऊंचाहै मस्तक जिसका और॰
दाढा करकैं सुंदर सो विदारण कथन कीताहै १

70

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ब्रह्मचर्यविलेपन नरसिंहो र्चितो यदि वैरिशत्रुभयं न स्याद् वह्निनादह्यते गृहा मिति १ कपिलोग्रपिमाला च घोरकविंदुसमन्वितः विदारणान् सिंहो सौदीर्घकेसरशोभितः २ अथ रात्रसांतक नरसिंह लक्षणं ब्रह्मांडे बहुच्छिद्रैर्भिन्नचक्रं सुवर्णांकनकार्चिनम् नद्दानसांतकं ज्ञेयं नृसिंहं गृहदाहकं ४ अस्पष्टचक्रं मस्यास्यं केशभारमनोहरं नच्छिन्नरात्रसं ज्ञेयं नृसिंहं गृहदाहकम् ५ अथ वामनमूर्तिलक्षणं वामनाख्ये हरेर्मूर्तिर्द्विविधा परिकीर्तिता अणुरु वामनं संज्ञेकानयगदाधि वामना ६

जेकर ब्रह्मचर्य ते विना पुरुष नृसिंहको पूजना है तिसकों वैरशत्रुते भय होता है और तिसका गृह अग्निकर्के दग्ध होता है १ और कपिल वर्णवाला और ग्रंथिमालाकर्के युक्त और रक्त बिंदुकर्के युक्त और दीर्घ जो वालतिनोकर्के संदर सो विदारणा नृसिंह कथन कीया है २ इसते उपरंत रात्रसांतक के लक्षणकोकथन करते हैं ब्रह्मांड पुराणमें बहुत छिद्रोंवाला और भिन्न है चक्र जिसमें और संदर वर्णवाला और स्वर्णकी यांई रेखा जिसमें ऐसा जो नृसिंह सो गृहके दाहकरणेवाला रात्रसांतक जानना ४ और अस्पष्ट है चक्र जिसमें और मच्छकी न्याई है मुख जिसका और वडे है केश जिसके सो नृसिंह गृहके दाहकरणेवाला छिन्नरात्रस जानना ५ इसते उपरंत वामनमूर्तिका लक्षण कथन करते हैं वामन नामकर्के हरिकी मूर्ति दो प्रकारकी कथन कीती है सो अणु वामन और दधि वामन नामकर्के है ६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ वामनलक्षणं पद्मपुराणे वामनाख्योभ
वेद्देवो ह्रस्वोयः स्यान्महाद्युतिः ऊर्ध्वचक्रस्तथ
ऽधश्चक्रः सोपि स्वार्थप्रदो नृणाम् ७ ब्रह्मपुराणे
अतसीपुष्पसंकाशो विंदुनापरिशोभितः
वर्तुलश्चस्तुह्रस्वश्च वामनः परिकीर्तितः ८
पुराणसंग्रहे अतसीपुष्पसंकाशो विंदुना
परिभूषितः पारिजातध्वजाब्जो वर्तुलस्त्व
तिशोभनः ९ अन्नपानसमृद्धिः स्यात्तत्सौ
भाग्यवर्द्धनः आरोग्यसुखदश्चैव वामनः प
रिकीर्तित इति १०॥

अथ वामनका लक्षण पद्मपुराणमे कथन की-
याहै जो ह्रस्व क्या छोटा और बडे तेजवाला और ऊ
पर है चक्र जिसके और अधः चक्र वाला सो वामन
नामकर्के देव है सो पुरुषोंको स्वार्थके देनेवा
लाहोताहै ७ पद्मपुराणमे और कथन कीताहै
जो अलसीके पुष्पकीन्याई प्रकाशमान और बिंदु
कर्के शोभायमान और वर्तुल क्या गोलाकार और
छोटा जैसा सो वामन कथन कीयाहै ८ पुराण
संग्रहमे और कथन कीयाहै जो अलसीके पुष्प
कीन्याई प्रकाशमान और बिंदुकर्के भूषित औ-
र पारिजात वृक्षकी है ध्वजा जिसमे और वज्रके
चिह्नवाला और गोलाकार और सुंदर ९ सो अन्न-
पानकी वृद्धि देनेवाला होताहै और सत्व सौभा
ग्यके वधावनेवाला और आरोग्य और सुखके
देनेवाला वामन कथन कीयाहै १०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रंथांतरे कंदर्पऊरुसमाकारेरेखापंचकभूषि
तः वर्तुलस्तथातिह्रस्वः वामनः परिकीर्तितः इ
ति ॥ वाराहे इंद्रनीलनिभाभासः वनमालावृ
तोऽज्ज्वलम् ऊर्ध्वं च वर्तुलश्चैव वामनं परिकी
र्तितम् ॥२॥ ब्रह्मांडे वर्तुलातिगमत्यंतं स्पष्टच
क्रसमन्वितम् ऊर्ध्वं उन्नतमध्ये च दीर्घास्यमति
भास्करम् ॥३॥ स्फुरद्रेखावलियुतं नाभिस्तस्यो
न्नता भवेत् चक्रस्योभयपार्श्वे तु स्त्रीहीपृष्ठा
कृतिर्भवेत् ॥४॥ केशभारं तु वैनार्ष्यह्रस्पणेवक्रेण
युतः वामनो गृहिणां श्रेष्ठः सुखसौभाग्यसंपदः ॥५॥

ग्रंथांतरमें और कथन कीया है कंदर्प इति कंदर्पके ऊ
रु की न्याई है आकार जिनका ऐसी पंचरेखों करकें भू
षित और वर्तुल कहा गोलाकार और ह्रस्व कहा छोटा
सो वामन कथन कीया है ॥ वाराहपुराणमें और कथ
न कीता है जो इंद्रनीलमणिकी न्याई प्रकाशवाला
और वनमाला और कमलके प्रकाशवाला और छो
टा जैसा और गोलाकार सो वामन कथन कीता है ॥ २
ब्रह्मांडपुराणमें और कथन कीता है वर्तुल कहा
गोलाकार और अतिशय करकें थिंदा और स्पष्टच
क्र करकें युक्त और ऊर्ध्व और अतिशय करकें ऊंचा
और वडा है मुख जिसका और अतिगहर ॥३ और प्र
काशमान जो रेखोंकि पंक्ति तिस करकें युक्त तिसकी
नाभि उंची होवे और चक्रके दोनो पासेयोंमें प्योरके
पृष्ठकी आकृति होवे ॥४ केश कहुं चक्रके पासें तें के
शभार जिसके दिखियें सो वामन गृहस्थीयांको श्रेष्ठ
होता है और सुख और सौभाग्य और संपदा को देता है

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गृहपुत्रान्नवृद्धिं च भूपालं दिशति ध्रुवम् मध्य
चक्रं वामनं च नरणामभितदायकम् १६ अत
सीपुष्पसंकाशं च किंचिदुन्नतमस्तकम् नवा
मनं कामदं नाकिं विद्धे स्पष्टचक्रकम् १७ व
र्तुलं नीलमेघाभं वनमालासमन्वितं स्थूल
रंध्रं बृहत्कान्तिं वामनं भुवि दुर्लभमिति १८
अथ परशुराममूर्तिलक्षणम् जामदग्न्य
स्तु भगवान् द्विविधः परिकीर्तितः एकस्तु
उग्रतयाख्यातो द्वितीयः शान्तसंज्ञकः १९ ॥

राजाको निश्चय करकें गृह और पुत्र और अन्नकी
वृद्धि करताहै और जिसवामनकेमध्यमे चक्रहोवे
सोपुरुषोंको इच्छितफलदेताहै १६ अलसीके
पुष्पकीन्याई प्रकाशमान और ऊच्चकरउचोहै
मस्तक जिसका और ऊच्चक प्रकटहै चक्र जि
समें सोवामन कामनाके देनेवालाहोताहै १७
और वर्तुल क्या गोलाकार और नीलेमेघकी
न्याईहै आभाजिसकी और वनमालाकरकें युक्त
और स्थूलहैं छिद्र जिसमे और वडीहै कांति
जिसकी ऐसाजोवाम सोपृथिवीमेदुर्लभहै १८
इसतें उपरंत परशुरामकीमूर्तिका लक्षण
कथनकरतेहैं परशुरामकीयांदोमूर्तियांक
थनकीनियांहै एकतोउग्र दूसरी शांतसंज्ञा
वालीहै १९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुराणसंग्रहे सितकृष्णारुणोपेतं दीर्घाकारं
वृहच्छिलम् । भिन्नभागगतं चक्रं वामदक्षिण
तोपि वा चक्रभागे भवेच्छिद्रः परश्वाकृतिरेख
या २० पृष्ठे वा पार्श्वतो वापि रेखा दंष्ट्राकृतिर्भ
वेत् । जामदग्न्यस्तु भगवान्चर्चनीयो महीभृ
तामिति २१ विस्तररहस्ये बाणचापांकितो दे
वः स्वर्णवर्णः सुखासनः जमदग्निसुतो रामो
मुक्तिं भक्ताय यच्छतीति २२ पुराणांतरे
लसत्कुरस्फुरेखाढ्यो हृस्वः श्यामस्तथोन्नतः
नाभिदेशलसच्चक्रो रामोसौ जमदग्निज २३

पुराणसंग्रहमे कथन कीया है सित क्या चिट्टा और
कृस्न और अरुण क्या लाल इनों वर्णोंकरके युक्त औ
र दीर्घ आकारवाला और वड़ी है रवुड जिसमे औ
र वाम और दक्षिणते भिन्न भिन्न चक्र होवे वा चक्र
के भागमें छिद्र वा परशुकी आकृति होवे सो परशु
रामकी मूर्त्ति होती है २० पृष्ठ इति जिसकी पृष्ठमें वा
पासेंते दाढकी न्याई रेखा होवे सो जामदग्न्य क्या प
रशुराम होता है राजोंने पूजने योग्य है २१ विस्तारहस
में और कथन कीया है बाण और चापका धनुषाने
नोका है चिन्ह जिसमे सो देव और स्वर्णके वर्णवाला
और सुखवाला है आसन जिसका ऐसा जो जमदग्नि
का पुत्र राम क्या परशुराम सो भक्तोंकी मुक्तिदेता
है २२ पुराणांतरमे और कथन कीया है प्रकाशमान जो
कुहाड़ीकी रेखा तिसकरके युक्त और श्यामसकी न्याई
है श्याम और उच्चा और नाभिदेशमें प्रकाशमान हैं
चक्र जिसके सो जमदग्निका पुत्र परशुराम है २३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
७३

अथ शांतपरशुरामलक्षणं पुराणसंग्रहे केव
लेनाङ्घिनेष्टेष्टं परस्याकृतिरेखया सञ्जामदग्नि
र्भगवान्शांतनामाऽयं शांतिदोऽर्चित इति २४ दाश
रथिरामलक्षणं पुराणसंग्रहे राममूर्तिर्द्वाद
शधात्त्राद्यो रामचन्द्रहि रामबालो द्वितीयःस्या
त्सीतारामःतृतीयकः २५ तारकब्रह्मसंज्ञोव
दशकंठकुलांतक वीरोविजयकस्तथा हृ
ष्टकोदंडपूर्वकः २६ कलिनाशकरोरामःश्री
रामश्चाततःपरम् महाभिरामसंज्ञःस्याद्
द्वादशः परिकीर्तितः इति २७

इसतेउपरांत शांतपरशुरामका लक्षण पुराण
संग्रहमें कथन कीयाहै जिसकी दृष्टमें चुवा
डेकी न्याई जो रेखा तिसका चिन्हहोवे सोपर
शुराम शांत नाम करके होताहै सोहजितेन्द्रि
या शांतिकोदेताहै २४ दशरथकापुत्रजो रा
मचंद्रतिसका लक्षण पुराण संग्रमे कथन
कीयाहै राममूर्तितिनि बारां प्रकारकी रामचं
द्रकीमूर्ति कथनकीताहै तिनोमें प्रथमरामचं
द्र १ दूसरी रामबाल २ और तीसरी सीताराम
३ और तारक ४ ब्रह्म ५ और दशकंठकुलांतक ६
और वीर ७ और विजयक ८ और हृष्टकोदंड
पूर्वक ९ और कलिनाशकर १० और श्री
राम ११ और महाभिराम १२ यहबारां मूर्तियां
कथनकीतीयां है २७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राममूर्तिलक्षणं ब्रह्मपुराणे रामचंद्रस्त
थास्निग्धोदूर्वाभश्चक्रशोभनः हृद्दंडलया
पार्श्वे रेखाद्वितयसंयुतम् इति १८ पुराणसं
ग्रहे बाणेन धनुषा युक्तः पद्मरेखासमन्वितः
कोदंडी कंबुकंठोऽसौ मध्ये चक्रसमन्वितः २१
कल्पद्रुमसमायुक्तः हृदि च श्यामवर्णकः
रामो दाशरथिर्ज्ञेयो दुर्लभो भुवनत्रये इति २
ग्रंथांतरे धनुर्बाणयुतं दीप्तं स्थूलं दीर्घं सबि
दुकम् नाभिचक्रं वक्रछिद्रं श्यामं दाशर
थिं विदुः इति २। ॥

रामचंद्र की मूर्ति का लक्षण ब्रह्मपुराण मे कथन
कीया है रामचंद्र इति जो स्निग्ध और बास की न्याई
है आभा जिसकी और चक्र करके शोभायमान और
हृदमें दंड और रेखासे पार्श्वमे दो रेखाओं करके युक्त सो रा
मचंद्र की मूर्ति कथन कीती है १८ पुराणसंग्रह मे
और कथन कीया है बाण और धनुष करके युक्त और प
द्म की रेखा करके समन्वित और कोदंड नाम धनुष
है विद्यमान जिसमें और कंबु कंठ के आंडे की न्याई
है आभा जिसकी और मध्यमें है चक्र जिसके २१
और बलवृक्ष के सदृश और हृदमें श्यामवर्णवाला
सो दशरथ का पुत्र रामचंद्र जानना सो तीन भुव
नो मे दुर्लभ है २. ग्रंथांतरमे और कहा है धनुष और
बाण करके युक्त और प्रकाशमान और स्थूल और दी
र्घ और बिंदुक करके युक्त और नाभिमें है चक्र जिसके
और वक्र न छिद्रों वाला और श्याम सो दशरथ
का पुत्र राम चंद्र जानना २। ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शा॰
ग्राम॰
७४

74

गरुडपुराणे एकचक्रान्नवदने हृस्सा वर्णो
सुशोभना सा राममूर्त्तिर्विज्ञेया पूजकस्य फ
लप्रदेति २२ अथ सीताराम लक्षणं ब्रह्मपु
राणे एकस्मिन्नेव वदने चतुश्चक्रोम्बुदप्रभः
चापवाणांकुशच्छत्रध्वजचामरसंयुतः २३
वनमालाधरो देवः सीतारामः प्रकीर्त्तितः
सर्वसौभाग्यदः प्रोक्तः सर्वत्र विजयप्रदः २४
अथवा द्वारद्वये चतुश्चक्रः कमलस्थेकचा ।
क्रवान् वाणतूणीरचापाढ्यः सीतारामः ।
स्रग्विनः २५ ॥

गरुडपुराणमे और कथन कीताहै जिसके मुखमें
एक चक्र और श्याम वर्णवाली और सुंदर सो रामचं
द्र की मूर्त्ति जाननी पूजनवाले पुरुषको फला
के देनेवाली होतीहै २२ इसतें उपरंत सीतारामका
लक्षण ब्रह्मपुराणमें कथन कीताहै जिसके मु-
खमें चार चक्र और मेघ की न्याई है प्रभा जिसकी
और चाप क्या धनुष और बाण और अंकुश क्या अंकुश
और छत्र और ध्वजा और चामर इनोकरके युक्त २३
और वनमालके धारणेवालाहै जो देव सो सीतारा
म कथन कीयाहै सो संपूर्ण भाग्यके देनेवाला
और संपूर्ण स्थानमे जयको देणेवाला कथन
कीताहै २४ और कथन करतेहै दोनो द्वारकाम
लोंमे चार चक्र होणा अथवा एक मुखमें एक चक्र
होवे और बाण और भथ्था और धनुष करके यु
क्त और वनमाला करके युक्त सो सीताराम कथ
न कीयाहै २५ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मे कुक्कुटांडसमाकारअतश्चक्रेचकंडलम्
द्वारदेशे समेचक्रे कलाहृत्तश्चचिह्नितः २९
वामपार्श्वे शिरश्चक्रोरेखयाशुभलांछितः
सीताराम स विज्ञेयो भुक्तिमुक्तिफलप्रदइति
तारकब्रह्म सीतारामलक्षणपाद्मे अंतः
नेत्रेनमनुषागोखुरेणचलांछितः विलव
यसमायुक्तः खड्गदर्शनसेयुतः २८ श्यामलो
ज्ज्वलश्रश्रस्थलजंबूफलाकृतिः सीता
रामस विज्ञेयस्तारकब्रह्मसंज्ञितइति ३९
दशाकंठकुलांतकरामलक्षणम् ब्रह्मांडे

पद्मपुराणमें और कथन कीयाहै कुक्कुटेति कुक्कुट
के अंडेकीन्याईहै आकार जिसका और अपार्श्वमें च
क्र और कुंडल जिसमें और द्वारदेशक्यासमरवेमें दो
चक्र जिसके और कलाहृत्तकारे चिह्न जिसमे २९
और वामपार्श्वमें और शिरमें चक्र जिसके और रेखा
करकें सुंदर है चिह्न जिसमें सो सीतारामजानना
सो भुक्ति और मुक्तिके देनेवाला होता है १० तार
कब्रह्म जो सीताराम तिसका लक्षण पद्मपुराणमें
कथन कीयाहै अंतर जो नेत्र और मनुष और गो
खुर तिसकरकें युक्त और खड्ग और सुदर्शनचक्रक
रकें युक्त २८ और श्याम और उज्ज्वल है ११ जिसकी औ
र स्थल जो जंबूफल तिसकी न्याई है आकृति जि
सकी सो तारकब्रह्म संज्ञावाला सीतारामजान
ना ३९ दशकंठकुलांतक जो रामचंद्र तिसका
लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन कीयाहै ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा०
ग्राम०
७५

75

कोदंडीकुक्कुटाभाभः श्यामलः पद्मसंनतः रे
खाद्वयसमायेतो हारपार्श्वे धनुर्धरः ५० धनुषा
कृतिका रेखा दक्षपार्श्वे पुनर्यदा दृश्यते वा
भवेद्रामोदशांकं दक्षलांनकरइति ५१ अथ
वीररामलक्षणं ब्रह्मांडे बाणतूणीरचापा
ढ्यः कुंडली साक्षमालिनः सूक्ष्मकेसरचक्रा
ढ्यो वीररामः श्रियावहः ५२ विजयरामल
क्षणं ब्रह्मांडे दिव्यमाणेनसंयुक्तश्चापतू
णीरसंयुतः करालवदनो यस्तु विंदुयुक्तच
क्रशोभिताः समस्तु विजयरामाख्यः केसरोपा
न्तचक्रकरइति ५२ ॥

कोदंडेति कोदंडी का धनुषधारण्या हुआ है जिस
ने और कुक्कुट की न्याई है आभा जिसकी और श्याम औ
र विस्तारवाला और दोरेखों करके युक्त और सवमें
धनुषधारी का चिह्न होवे ५० और दक्षिण पासमें वा
दृष्ट में धनुष की आकृति वाली जिसमें रेखा होवे
सो दशांक दक्षलांनक राम होता है ५१ इसतेउपरंत
वीरजो रामचंद्र तिसका लक्षण ब्रह्मांड पुराण में
कथन कीया है जो बाण और भथ्था और चाप करके
युक्त कुंडली और माला करके और सूक्ष्म केसर करके
के युक्त सो श्रीके प्राप्त करणेवाला वीररामचंद्र हो
ता है ५२ विजयजो रामचंद्र तिसका लक्षण ब्रह्मां
ड पुराण में कथन कीना है जो सुंदर बाण करके यु
क्त और चाप और थ्थउ करके युक्त कराल है मुख जि
सका और विंदु करके युक्त और चक्र करके सुंदर और के
सरयुक्त चक्रवाला सो विजयराम कथन करीदा है ५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हृष्टरामलक्षणं ब्रह्मांडे मूर्ध्निमालायस्य वै
ते पार्श्वे खुरसंयुतस्तथा हृष्टराम इति प्रोक्तो
भुक्तिमुक्तिफलप्रद इति ४४ कोदंडरामल
क्षणं ब्रह्मांडे पक्षैकेन संयुक्तो वर्तुलः किं
चिदायतः कोदंडगपनामास्याच्छुद्धनीलां
बुदप्रभ इति ४५ कलिनाशकरामलक्षणं
पार्श्वे जंबूफलसमाकारः ह्रस्ववर्णसबिं
कः ष्टष्टं सुषिरमास्ये च चक्रे मकरकुंडले
ललाटे हेमवर्णेन बिंदुना पक्षयुतः क
लिनाशकरः प्रोक्तः सर्वकामफलप्रदः ४७

हृष्ट जो रामचंद्र जिसका लक्षण ब्रह्मांड पुराण में
कथन कीया है जिसके मस्तक में माला होवे और
पक्ष और बाण और नेसे खुर करके युक्त होवे सो
भुक्ति और मुक्ति फल के देने वाला हृष्टराम कथन
कीता है ४४ कोदंड जो राम जिसका लक्षण ब्र
ह्मांड पुराण में कथन करते हैं जो एक पक्ष करके
युक्त और वर्तुल क्या गोलाकार और कछुक विस्ता
र वाला और शुद्ध जो मेघ तिसकी न्याई है प्रभा जि
सकी सो कोदंड नाम करके राम होता है ४५ कलिना
शकर जो राम तिसका लक्षण कथन करते हैं पु
राण में जंबूफल की न्याई है आकार जिसका
और ह्रस्व वर्ण वाला और बिंदु वाला और ष्ट और मुख
में है छिद्र जिसके और मकर क्या मच्छ और कुंडल का है
चक्र जिसमें ४८ और मस्तक में सुवर्ण का जो वर्ण
और बिंदु और पक्ष करके जो युक्त सो संपूर्ण काम
फल के देने वाला कलिनाशक राम कथन कीता है ४७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
७९

76

अपुत्रोलभतेपुत्रंसर्वमंगलकारणमितिश्री
रामलक्षणंपद्मे वदनेष्वेकैकरदनश्चतुर्वा
क्रोत्विद्प्रभः श्रीराम इति विख्यातःपीतके
सश्चक्रयुतनरधकः ५८ वाराहे कोदंडीऊर्ध्व
टोऽप्रभः श्यामलोमनरधकः रेखाद्वयसमा
युक्तोन्हारपार्श्वेपनर्धरः श्रीरामइति विख्या
तोभुक्तिमुक्तिफलप्रदइति ५६ पद्माभिरामः
लक्षणं ब्रह्मांडे पूर्वभागेत्रिवदनःपार्श्वचक्र
णसयुतः वाणात्तूणीरचापाढ्यःकल्पवृक्षसम
न्वितः ५०

अपुत्रइति और जो अपुत्र सोपुत्रोंको प्राप्त
होताहै और सोसर्वमंगलाचार कोंकरणे वाला
होताहै श्रीरामका लक्षणपद्मपुराणमेकथनकीया
है मुखजिसके चार होवें और एक एक मुखमें एक
एक दंत हो और मेघ कीन्याईहै प्रभा जिसकी और
पीलीयां रेखावाला जोचक्र जिस करके जोयुक्त
होवे सोश्रीरामकथनकरीदाहै ५८ वाराहपुराण
मे और कथनकीनाहै कोदंडीका धनुष केधारणे
वाला औरऊर्ध्वकूटकीन्याईहै आभाजिसकी और
श्याम और रवीहै रद जिसकी और दोरेखों करके यु
क्त औरमस्तकमें धनुष धारीका चिह्न सोभुक्ति
औरमुक्तिके देनेवाला श्रीराम कथन कीयाहै ५६
ब्रह्मांडपुराणमे पद्माभिरामकालक्षणकहाहै पू
र्वभागमें तीनहैं चक्र जिसमें और पासमें जोचा
क्र जिस करके युक्तबाण और भथ्या और चाप
करके युक्त और कल्पवृक्षकाहै चक्र जिसमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिंहासनसमारूढो रामः परिजनैः सह पदाभि
रामइत्युक्तः सर्वलक्ष्मीप्रदो नृणां ५१ बलरा
ममूर्तिलक्षणान्युच्यंते पुराणसंग्रहे बलरा
मः सीरपाणिः प्रलंबघ्न इति त्रयः प्रभेदा बा
लरामस्य तेषां लक्षणमुच्यते ५२ दीर्घाकारो
हृद्वक्त्रः श्वेत लांगलचिह्नितः एकचक्र
समुसलः पद्मे नीलोत्पलप्रभः बलराम इ
ति ख्यातो बलवंशविवर्द्धन इति ५३ ग्रंथांत
रे श्वेताभो हलचिह्नाङ्को मुसलाकृतिरेवा
वा नीलोत्पलप्रसन्नाभः पद्मे श्रीणासनोपिवा
बिलशाली भवेद्रामो बलवंशविवर्द्धन इति

और संबंधियों के साथ सिंहासनमें आरूढ सो संपूर्णा
पुरुषोंको संपूर्ण लक्ष्मीके देनेवाला पदाभिराम कथ
न कीया है ५१ बलराममूर्तिका लक्षण कथन करते
हैं पुराणसंग्रहमें बलराम इति बलराम और सीरपा
णि और प्रलंबघ्न ए तीन बलरामके भेद हैं तिनोंके
लक्षणकों कथन करते हैं दीर्घ है आकार जिसका
और बडे मुखवाला और चिह्न हलका है चिह्न जिसमें
और एकचक्रवाला और मुसलके सहित और पद्ममें
नीले कमलकी है प्रभा जिसमें सो बल और वंशकूं
बधानेवाला बलराम कथन कीता हैं ग्रंथांतरमें
और कथन कीता है श्वेत है आभा जिसकी और हल
के चिह्न करके युक्त और मुसलकी आकृति जिस
में और नीले कमलकी है आभा जिसकी और
पद्ममें नासाका है आसन जिसमें और बलवाला
सो बल और वंशके बधानेवाला राम है ५४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

द्वितीयो वामचक्रस्य रेखो वै वत्सदक्षिणे बलशा
ली भवेद्धामो लांगलेनांकितः प्रभुरिति ५५ स्थू
लचक्रो भवेद्देवः हरितो लोहितवर्णकः बलरा
मः स विज्ञेयो गोत्रकीर्तिविवर्धन इति ५६
सीरपाणिलक्षणं पुराणसंग्रहे सर्वं च रक्त
वर्णः स्यात्श्वेतनीलाभवर्जितः सचक्रो व
क्रचक्रो वा सीरपाणिः शुभप्रद इति ५७ प्र
लंबघ्नमूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे एकच॰
क्रस्तु वदने रक्तवर्णसमन्वितः प्रलंबघ्न इ
ति ख्यातः स जितो मृत्युदायक इति ५८ ॥

द्वितीय इति वामपासे है चक्र जिसमें और दक्षिणमें रे॰
खावाला और बलवाला और हलका है चिह्न जिस॰
में सो राम हूसरा जानना स्थूल ५५ चक्रवाला देव
होवे और हरा और लोहित वर्णवाला सो गोत्र औ
र कीर्तिके बधानेवाला बलराम जानना ५६ सी
रपाणिका लक्षण पुराणसंग्रहमें कथन कीया है
संपूर्ण रक्तवाला होवे और स्वेत और नील आ
भा ते रहित होवे और सहित चक्रके वा मुखमें च
क्र होवे सो सीरपाणि शुभके देनेवाला जानता है ५७
पुराण संग्रहमें प्रलंबघ्न मूर्तिका लक्षण कथा॰
न करते है मुखमें एक चक्र जिसके और रक्त
वर्ण करकै युक्त सो प्रलंबघ्न कथन कीता है
सो एजिया हुआ मृत्युको देतो है ५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निष्केसरोर्ध्वचक्रस्तत्पक्षस्त्रक्रः सकेसरः पद्म
नाम इति ख्यातो विपरीतो हलाग्रपद इति बौद्ध
मूर्तिलक्षणं साद्विधा निर्वाणबुद्धरूपिकाबु
द्धदेवरूपिका च तत्राद्या ब्रह्मांडे अन्तर्गर्भकर
संयुक्तश्चक्रहीनस्तथा भवेत् निर्वाणबुद्ध
संज्ञो सौ ददाति परमं पदमिति द्वितीयपुरा
णसंग्रहे अन्तर्गर्भकरसंयुक्तं चक्रेण रहितं त
था बुद्धदेवं विजानीयात्सज्जकस्य शुभप्रदम्
स्कन्दे। अन्तःशून्यं बहिःशून्यं हरहन्तक्षतिसमा
वितं चक्रशून्यं गुहायां बुद्धदेवं प्रचक्षते २॥

निष्केसर इति ऊर्ध्वमें निष्केसर क्या (०) कर्णोंते रहित
चक्र होवे और अधोमें सकेसर क्या (⊹) कर्णवाला
चक्र होवे सो पद्मनाम कथन करीदाहै जेकर तिना
चक्रोंते विपरीत हो तद हलाग्रप कथन करीदाहै॥
बौद्धमूर्तिका लक्षण कथन करतेहैं सो दो प्रकारकी
है एक निर्वाणबुद्ध और दूसरी बुद्धदेव प्रथम निर्वाण
बुद्धका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन कीयाहै अं
तर जो चक्रतिस करकें युक्त और चक्रहीन क्या ऊर्ध्व
क चक्र होवे सो परम पदको देनेवाला निर्वाण बु
द्ध कथन कीताहै दूसरी मूर्तिका लक्षण पुराणसंग्र
हमे कथन कीया अंतर में छिद्र करकें युक्त हो औ
र चक्र करकें रहित होवे सो बुद्धदेव जानना पूजने
वालेको शुभफलको देताहै॥ स्कंदपुराणमे और
कथन कीयाहै अंतरमें शून्य और बाहरमें शून्य औ
र वडी कांति करकें युक्त और चक्रसें रहित और गुहा
में है चक्र जिसके सो बुद्धदेव कथन कीताहै॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१८

कल्किमूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्डे अतिरिक्तः स्तम्भवि
लः स्पष्टचक्रः स्थिरासनः कृपाणाकृतिकारे
खाहारस्योपलक्षितके । म्लेच्छनाशो भवेत्क
ल्किः कलिकल्मषनाशन इति २ पुराणसंग्र
हे अतिरिक्ते स्पष्टचक्रं स्थिरासनयुतं तथा
कृपाणाकृतिरेखाढ्यं कल्किदेवं विदुर्बुधा इ
ति ३ केशवमूर्तिलक्षणं पाद्मे सौभाग्यं के
शवो दद्याच्चतुष्कोणो भवेदिति ४ वैखान
ससंहितायामनाभ्यस्त्र भवेत्कं खस्त्रके च
वदनान्तरे केशवस्स तु विज्ञेयः सर्वदुःखवि
नाशन इति ॥

कल्किमूर्तिका लक्षण ब्रह्माण्डपुराणमे कथन कीया
है अतिरिक्त इति जो अतिरिक्त होवे और स्तम्भ है वि
लका छिद्र जिसमे और स्पष्ट चक्र वाला और स्थि
रासन और मस्तकमे खड्गकी न्याई रेखा होवे । सो
म्लेच्छों के नाश करण वाला और कलियुगके पा
पों को नाश करणे वाला है सो कल्कि कथन करी
है २ पुराणसंग्रहमे और कथन कीया है अतिरिक्त
और स्पष्टचक्र वाला और स्थिरासन करके युक्त और
कृपाणकी आकृति की न्याई जो रेखा तिस करके
संयुक्त बुद्धिमान तिसको कल्किदेव जानते हैं ३
पद्मपुराणमे केशवमूर्तिका लक्षण कथन कीता
है जो केशव चौकोणवाला होवे सो भाग्यको दे
ता है ४ वैखानससंहितामे और कथन कीया है ना
भिके अग्रमे तकका आकार होवे और मुखके अन्त
रालमें दो चक्र होवे सो केशव जानना संपूर्ण दुः
खके नाश करणे वाला होता है ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विस्वरहस्ये सवर्तुलस्तथाग्निष्टः पृष्टे च सुशो
भवेत् नीलवर्णस्तथा स्थूलः पृथुचक्रः सु १
शोभनः १ केशवस्तु विज्ञेयः सर्वकामफल
प्रदः वामपार्श्वस्थितो चक्रौ रेखा वै वत्सदत्तिण २
रुचिरः सुशिरः स्निग्धः शोभनः सुस्थिरासनः
सौभाग्यं केशवो दद्याद्वृत्तकोणो भवेद्यदि २
ब्रह्मांडे नीलवर्णस्तथा स्थूलः पृथुचक्रः सु
शोभनः रेखाद्वयं द्वारदेशे पृष्ठे पद्मेन लांछितः
सौभाग्यं केशवो दद्याद्वृत्तकोणो भवेद्यदि १

विस्वरहस्यमे ओर कथन कीया है सरति सवर्तुल क्या
गोलाकार होवे और तैसें आग्निष्ट क्या अग्निकी न्याई है
प्रभाव जिसका और पृष्ठ में बाणका चीन्ह होवे और नी
लेवर्णवाला और तैसे स्थूल होवे और बडे चक्रवाला
और सुंदर होवे १ सो संपूर्ण कामनाके देणेवाला के
शव जानना वामपासेमे दो चक्र स्थित होणा और द
दहणेपासेमे रेखा होवे २ रुचिर क्या सुंदर और
शिरका चिन्हवाला और स्निग्ध क्या चिकना होवे और
शोभन और स्थिरासन होवे सो केशव कथन करी
दा है जेकर चार कोणी वाला होवे तद सौभाग्या
कों देना है ३ ब्रह्मांडपुराणमे और कथन कीना है
नीले वर्णवाला और स्थूल और बडे चक्रवाला
होवे और सुंदर और पृष्ठमें दो रेखा होणा और पृष्ठ
मे पद्मका चीन्ह होवे सो केशव कथन करीदा है जो
चार कोणो वाला होवे सो सौभाग्यके देणे वा
ला होता है १ ८।। ८।।

सा॰
ग्राम॰
७९

79

ब्रह्मवैवर्ते राजतैर्बिन्दुभिर्हैमैः रचितं शंखच-
क्रकम् वनमालान्वितं श्यामं केशवाख्यं विदु
र्बुधाः। तथा एवं पश्चिमदिग्भागे यस्य चक्रं प्रति
ष्ठितं केशवं नाम तं विद्यान्महासौख्यप्रदा
यकमिति। नारायणमूर्तीनां लक्षणान्यत्र
अंते नवनारायणा लक्ष्मीनारायणा नरना-
रायणा रूपनारायणा वीरनारायणा माया-
नारायणा शंकरनारायणा महानारायणोऽ
ष्टभेदा भवंति। अग्निपुराणे श्यामो नाराय-
णो देवो नाभिचक्रसमन्वितः दीर्घरेखासमोपे
तो दक्षिणोर्ध्वसमन्वितः। १०॥

ब्रह्मवैवर्त में कथन कीया है प्रकाशमान जो सुवर्ण की
यां बिंदु तिन को करकै युक्त और शंखचक्र वाला और वन
माला करकै युक्त और जो श्याम बुद्धिमान् तिस को केश
व जानते हैं। और कथन कीया है जिस के पूर्व और पश्चि
म भाग में चक्र हो सो बडे सौख्य के देने वाला केशव नाम
करकै जानना। नारायण कीयां मूर्तियां का लक्षण क
थन करते हैं नारायण और लक्ष्मीनारायण और नर
नारायण और रूपनारायण और वीरनारायण और
मायानारायण और शंकरनारायण और महाना रा
यण यह अष्टभेद हैं। अग्निपुराण में नारायण
का लक्षण कथन कीया है श्याम और नाभि में है चक्र
जिस के और ऊंचा और दीर्घ रेखों करकै युक्त और द
क्षिण में जो छिद्र तिन करकै युक्त सो नारायण
देव जानना ।१।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्मांकितमेव दक्षिणावर्त्तसंयुतः वर्त्तलच्छत्रसंयुक्तो भोगमोक्षप्रदायक इति २

ब्रह्माण्डे श्यामं नारायणं विद्यान्नाभिचक्रं तथोन्नतं दीर्घरेखासमोपेतं दक्षिणे शुषिरं शुभ १ बिलजे सुमुखे चक्रे मध्यचक्रः सुशोभनः ताडंकनानाभरणहारकेयूरलाञ्छनः नारायणः समाख्यातः सर्वसिद्धिप्रदायक इति २ ॥

और पद्म करके चिह्नित और दक्षिणमें जो चक्र तिस करके युक्त और गोलाकार जो छत्र तिस करके जो युक्त सो भोग और मोक्षके देनेवाला नारायण कथन कीया है २ ब्रह्माण्डपुराणमें और कथन कीता है नाभिमें है चक्र जिसके और दीर्घ रेखोंकर के युक्त और दक्षिणमें है छिद्र जिसके सो श्याम नारायण जानना १ छिद्रमें सुंदर मुखवाला चक्र होवे और मध्यमें चक्र जिसके और सुंदर और कान फूल और नानाप्रकारके जो भूषण और हार और बचहे इनोंका है चिह्न जिसमें सो संपूर्ण सिद्धिके देनेवाला नारायण कथन कीता है ॥ ॥

सा॰
ग्राम॰
८॰

विश्वरहस्ये वामपार्श्वस्थितेचक्रे शंखवोव
वनदक्षिणे पांडुवर्णेन संयुक्तःस्थिरास
नसवर्त्तुलः सस्यान्नारायणोदेवःसर्वपा
पप्रमोचन इति २ लक्ष्मीनारायणोय
स्या ध्वजवज्रांकुशोपेतो वामचक्रसव
र्तुलः लक्ष्मीनारायणो देवस्त्रिनक्षत्रस
मन्वितः १ पूजनीयःसदासद्भिर्वैष्णवै
र्मोक्षकांक्षिभिरिति २॥

80

विश्वरहस्यमें औरकथनकीयाहै वामपार्श्वेति
वामपासेमेंचक्र और दहनेमें शंखहोवे औरपी
लेवर्ण करके युक्त और स्थिरासन और गोलाका
२। सोसंपूर्ण पापके हर करणेवालानारा
यणदेवहोताहै २ लक्ष्मीनारायणके लक्षण
कों कथनकरतेहै ध्वज और वज्र और अंकुश
इनो करके युक्त होवे और वाम पासेमें चक्रवाला
और गोलाकार और चारवकों करकेयुक्त सो
लक्ष्मी नारायण कथनकरीदाहै मुक्तिकी
इच्छावालेजो वैष्णव पुरुष तिनोने सो स
दा पूजने योग्यहै २॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ब्रह्मांडे एकचक्रश्चतुश्चक्रोवर्तुलः श्यामव
र्णकः ध्वजवज्रांकुशोपेतोमालायुक्तःसबिंदुकः
नातिह्रस्वोनचस्थूलोलक्ष्मीनारायणःस्मृतः
तस्यदर्शनमात्रेणह्यभीष्टफलमाप्नुयादिति २
पाद्मे स्थूलद्वारश्चतुश्चक्रोवनमालांकितो
दरः लक्ष्मीनारायणःश्रीमान्भुक्तिमुक्तिफ
लप्रदः इति तथा चत्वारि सूक्ष्मचक्राणिद्वा
रभागेभवंतिहि उदरेवनमालाचलक्ष्मीना
रायणोभवेत् १ पूजनीयःसदाभक्तैर्भुक्तिमु
क्तिफलप्रदइति २॥

ब्रह्मांडपुराणमें औरकथनकीताहै एकचक्र इति
एकचक्रवा चारचक्रोंवालाहोवे औरगोलाकार औ
र श्यामवर्णवालाऔर ध्वज और वज्र और अंकुश
क्याकृंडानिनोकर्कैयुक्त औरबिंदु वालाहोवे १ औ
र न अतिशयकर्कैछोटा औरनस्थूलहोवे सो ल
क्ष्मीनारायणकथनकीयाहै तिसकेदर्शनतें पु
रुष इच्छितफलकोंप्राप्तहोताहै २ पद्मपुराणमें
औरकथनकीताहैं स्थूलहै मुख जिसका और चा
रचक्रोंवालाऔर उदरमें वनमालाकाहै चिह्न
जिसमें और शोभावाला सो भुक्ति औरमुक्तिके
फलकोंदेनेवालालक्ष्मीनारायणहोताहै १ औरक
थनकीयाहै जिसके मुखमें चार सूक्ष्मचक्रहो
वे और उदरमे वनमालाका चिह्नहोवे सोलक्ष्मी
नारायणहोताहै भक्तजनोंने भुक्ति और मुक्तिके
फलकी देने वाला सोसदा पूजने योग्यहै २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
८(

तथा गवाकृतिस्त्रिरेखश्च लक्ष्मं को मध्यदेशतः ध्वजवज्रांकुशोपेतो वामचक्रः सवर्तुलः लक्ष्मीनारायणो देवः सर्वाभीष्टप्रदायक इति (ब्रह्मांडे वर्तुलं वर्तुलद्वारं त्रिगम्भीरं च गह्वरम् समचक्रं समं वक्षं पृष्ठे च वनमालया (सुवर्णाभं च कृष्णाभं लक्ष्मीनारायणं विदुरिति २ वाराहे स्थिरासनमतिस्निग्धं नातिस्थूलं च नाधिकं चतुश्चक्रसमायुक्तं चारुरेखासुशोभितं लक्ष्मीनारायणं प्राहुस्त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् (॥

और कथन करते हैं गो की आकृति और तीन रेखा होय और मध्य में लक्ष्मी का चिह्न होवे ध्वज और वज्र और अंकुश तिनो करके युक्त होवे और गोलाकार सो संपूर्ण इच्छा के देनेवाला लक्ष्मीनारायण देव होता है (ब्रह्मांडपुराण में और कथन कीया है वर्तुल का गोलाकार और गोलाकार है मुख जिसके और त्रिगंभीर क्या तीन नहीं वाला और गह्वर और समचक्र वाला और समवक्ष वाला होवे और पृष्ठ में वनमाला का चिह्न होवे (और सुवर्ण की आभा वाला और कृष्ण आभा वाला होवे तिसको लक्ष्मीनारायण जानते हैं २ वराहपुराण मे और कथन करते है स्थिरासन होवे और स्थिरा और सूक्ष्म और न अधिक होवे और चार चक्र करके युक्त और सुंदर रेखा करके शोभायमान तिसको लक्ष्मीनारायण कथन करते हैं सो तीनो लोकों मे दुर्लभ है (॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गरुडपुराणे लक्ष्मीनारायणस्सात्तात्तु नश्च
कैर्युतस्तथा त्रिचक्रो वा भवेद्वामे तत्रकं वात्र
तश्शोभनम् १ लक्ष्मीनारायणं देवं भुक्तिमु
क्तिफलप्रदं मिति २ तथा कृष्णवर्णश्चतुश्च
क्रं वनमालोपशोभितं ध्वजवज्राङ्कुशोपेतं
गोष्पदेन च चिह्नितम् १ लक्ष्मीनारायणं दे
वं सर्वकामफलप्रदं मिति २ तथा चिह्निते
वनमालाभिस्तत्र सन्निहितो हरिः तस्मिनो
हे न दारिद्र्यं दुःख शोक भयं न हि १ ॥ ॥

गरुडपुराणमें और कथन कीयाहै लक्ष्मीनिजोबार
चक्रोंकर्कै युक्त होवे सो साक्षात् लक्ष्मीनारायण
होता है और वाम पासेमें तीन चक्र होवे और चक्रक
कें शोभायमान होवे १ सो भुक्तिमुक्तिके देणेवाला
लक्ष्मीनारायण देव होता है २ और कथन करते हैं
कृष्णवर्णवाला होवे और चार चक्र होन और वनमा
लाकर्कै शोभायमान होवे ध्वजा और वज्र और वज्र
और अंकुश इनोकर्कै युक्त होवे और गोका जो खुर
तिसकर्कै चिह्नित होवे १ सो संपूर्णकामनाके दे
नेवाला लक्ष्मीनारायण देव होता है २ और क
थन करते हैं जिस शिलामें वनमालाका चिह्न
होवे तिसमें हरि स्थित होता है जिसमें ऐसे मू
र्ति होवे तिस घरमें दरिद्र और दुःख और शो
क और भय नहि होता है १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शा॰
ग्राम॰
८२

न चौरादिभयं तत्र न दुष्टैः परिभूयते अन्ते मो॰
क्षो भवेत्तस्य पूजकस्य न संशयः इति स्कंदपु॰
चक्रं जंबूफलाकारमङ्कितो वनमालया एक
द्वारश्चतुश्चक्रो लक्ष्मीनारायणो हरिः १ गो॰
स्तनाकारचक्राढ्यः पूर्वभागे तु पुष्कलः गो
पदेन पद्मायुक्तो ध्वजछत्रसमन्वितः २ श्रीव
त्सलाञ्छनोपेतो मालया परिवेष्टितः अंकु
शध्वजसंयुक्तो लक्ष्मीनारायणो हरिः ३ ना॰
घायकं मुखं चतुश्चक्रं वनमालासुशोभितं
नातिसूक्ष्मं नातिदीर्घं शंखचक्रादिभिर्युतम् ४

नेति तिसघरमें चौरादिभय नहि होता और पूजने
वाला जो पुरुष तिसका दुष्टजीवोंने निरादर नहि
करीदा और अंतमें तिसका मोक्ष होताहै इसमें कुछ
संशय नहि २ स्कंदपुराणमें और कथन किया है ए॰
क जो जंबूफल तिनकी न्याई है आकार जि
सका और वनमाला करके चिन्हित और एक है मुख
जिसमें और चार हैं चक्र जिसमें सो लक्ष्मीनारायण ह
रि कथन करीदा है १ गोस्तनके आकारकी न्याई जो
चक्र तिसकरके युक्त और पूर्वभागमें पुष्कल होवे
और गोपद करके युक्त और ध्वज और छत्र करके युक्त २
श्रीवत्सके चिन्ह करके युक्त और मालाकरके परिवे
ष्टित और अंकुश और ध्वज करके युक्त सो लक्ष्मीनाराय
ण हरि होता है ३ एक है मुख जिसमें और चार चक्रोंवा
ला और वनमालाकरके शोभित और न सूक्ष्म और
न दीर्घ और शंखचक्रकरके युक्त होवे ४ ॥

82

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गदापद्मेनखड्गेनतोमरेणापिशोभितम् स्व
र्णविंडुसंयुक्तंलक्ष्मीनारायणंस्मृतमिति ५
तथा पक्कजंबूफलाकारंवर्तुलंश्यामवर्णकं
चतुश्चक्रसमायुक्तंवामभागेतुपुष्कलम् १ क
स्तुभकौस्तुभाद्यैर्मस्तकोपरिमंडितम् स्व
र्णाभंसुस्मवदनंलक्ष्मीनारायणंस्मृतम् २
नरनारायणलक्षणं ब्रह्मांडे नरनारायणो
देवः श्वेतवर्णः सुशोभनः तमालदलसंका
शस्वर्णपंकविलेपन इति १

ओर कथनकरतेहैं गदेति गदा ओर पद्म ओर ख
ड्ग तोमर इनोंकर्के जोसुंदर स्ववर्णकीयांविंडुक
र्के युक्तसोलक्ष्मीनारायणकथन कीताहै ५
ओर कथन करतेहैं पक्कजोजंबूफल तिसकी
न्याई आकारजिसका ओर गोलाकार ओर श्या
मवर्णवाला ओर चारचक्रोंकर्के युक्त ओर वा
मभागमें पुष्कलकाहै चिन्ह जिसमें १ ओरक
स्तुहत्त ओर कौस्तुभ मणिकर्के भूषितहै म
स्तकजिसका ओरसुवर्णकीहैं आभाजिसमें औ
र सुन्दरहै मुख जिसकासो लक्ष्मीनारायणक
थन करीदाहै २ नरनारायणकालक्षण ब्रह्मां
डपुराणमे कथनकियाहै जो श्वेतवर्णवाला
ओरसुंदर ओर तमाल वृक्षकाजोपत्र तिसकी
न्याईहै प्रकाशजिसका ओर पीत हिब्बेवाला
सो नरनारायणदेव होताहै १०॥

सा॰
ग्राम॰
८२

83

रूपनारायणलक्षणं ब्रह्मांडे मुसलायुधमाला
सिशंखचक्रगदान्वितः रूपनारायणो देवोमु
विचाभिमुखंधनुः सर्वसिद्धिप्रदो देवः सर्वका
मफलप्रद इति वीरनारायणलक्षणं पुरा
णसंग्रहे तमालदलसंकाशः स्वर्णसंकलि
तस्तथा वीरनारायणो देवो ह्येकचक्रसम
न्वित इति । तथा वीरनारायणो देवः श्वेत
चक्रसुशोभनः मुसलायुधमालासिशंख
चक्रसमन्वित इति ।।

रूपनारायणका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथनकी
या है मुसलका मोहला और आयुध और माला
और खड्ग शंख और चक्र इनोंकर्कें जो युक्त और मु
खमेंहै धनुका चिह्न जिसकें सो रूपनारायणदे
व कथन कीता है सो संपूर्ण सिद्धि और संपूर्ण
कामनाके फलकों देनेवाला होता है । वीरना
रायणका लक्षण पुराणसंग्रहमें कथन कीया है
तमालवृक्षके पत्रकी न्याई है प्रकाश जिसका औ
र तैसें स्वर्णकी रेखावाला होवै और एकचक्रक
कैं जो युक्त सो वीरनारायण कथन कीता है ।
और कथन करते हैं श्वेत है चक्र जिसमें और सुं
दर और मुसल और आयुध और माला और त
लवार और शंख और चक्र इनोंककें जो युक्त
सो वीरनारायणदेव कथन कीता है ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मायानारायणलक्षणं स्कंदे निर्मलेपुसले
चक्रेमध्यचक्रेसुशोभने नाटंकनासाभरण
हारकेसूरलांछनः १ मायानारायणोदेवःस
र्वसिद्धिप्रदायक इति २ शंकरनारायणल
क्षणं ब्रह्मांडे शिवनाभियुतःपार्श्वेवामयोर
क्षिणोपिवा सचशंकरस्वर्वैनारायणइती
रितः १ पुराणसंग्रहे गंडकीगर्भसंभूतंमनु
ष्याकारशोभितम् शंखप्रतिमपूर्वांगंपश्चा
र्धेश्यामलप्रभम् १॥

मायानारायणकालक्षण स्कंदपुराणमेंकथन
कीयाहै निर्मलपिति निर्मलपुसल और चक्रजिसमें
औरमध्यचक्रकर्के सुंदरऔरनाटंक क्याकन फूल
औरनासाभरणक्यानथ्थ औरहार और भवहै इनो
काहै चिह्न जिसमे १ सोसंपूर्णसिद्धिकेदेनेवाला
मायानारायणकथनकीयाहै २ शंकर नाराय
णकालक्षण ब्रह्मांडपुराणमेकथनकरतेहै वाम
औरदक्षिणपासेमेंशिवनाभिकर्के युक्तहोवे सो
शंकर नारायण कथनकीयाहै १ पुराणसंग्र
हमें औरकथनकरतेहैं गंडकी नदीकेगर्भते उ
त्पत्ति जिसके और मनुषके आकार कर्के शो
भायमानहोवे और पूर्वले पासमें शंखकाआ
कार होवे और पश्चिम पासेमें श्याम रंगकी
प्रभाहोवे १।। ८।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ ८५

सरोजपुटचक्राग्रमयमन्नाइक्कविंदुकम् गौरं लक्ष्मीसमायुक्तंस्थूलश्रीवत्ससंयुतम् २ शीर्षस्थितजटोरेखावनमालापरिष्कृतं सर्वाभोष्टप्रदंश्रीशंकरनारायणात्मकम् ३ यः पूजयेन्नरोभक्त्यालब्धभागवशान्मुने पुत्रपौत्रैः परिवृतोधनधान्यसमन्वितः ४ कोटिजन्मकृतंपापंस्पर्शनात्तस्यविनश्यति इहलोकेसुखंप्राप्यतत्सायुज्यमवाप्नुयात् इति ५ ॥

सरोजेति सरोज क्या कमलका जो पुट जिसकीन्याई है चक्रका अग्र भाग जिसमें और गोर और लक्ष्मी करकें युक्त और स्थूल और श्रीवत्स करकें युक्त २ और जिसके शिरमें जटाकीरेखा होवे और वनमाला करकें युक्त होवे सो संपूर्ण इच्छाके देनवाला शंकरनारायणकथनकीयाहै ३ हेमुने प्राप्त हुआ जो भागवश जिसतें जो पुरुष भक्ति करकें शंकर नारायणकी पूजताहै सो पुत्र और पौत्रे और धन और अन्न करकें युक्त होताहै ४ जिसपुरुषका कोट जन्मका किया जो पाप सो जिसमूर्तिके स्पर्शकरणेंतें तत्काल हर होताहै और इस लोकमें सुखको प्राप्तहो करकें अंत समयमे शंकर नारायणको प्राप्त होताहै ५

84

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

महानारायणलक्षणं स्कंदे ह्रस्ववर्णो महा
स्थूलोऽष्टचक्रसमन्वितः शंखचक्रगदायु
क्तो महानारायणः स्मृत इति। माधवमूर्ति
लक्षणं वैखानससंहितायां माधवो मधुव
र्णो भो गदाकंबुविलक्षित इति। ब्रह्मांडे
मधुवर्णो मधुचक्रः स्निग्धसूक्ष्मतनुस्तथा
माधवः सर्वविज्ञेयो यतीनां मोक्षदायक इ
ति। विश्वरहस्ये शुक्लवर्णस्तथा स्निग्धा
पंचरेखासमन्विता माधवाख्या शिला ज्ञेया
मोक्षैकफलदायिनीति।

महानारायणका लक्षण स्कंदपुराणमें कथन
कीया है ह्रस्व वर्ण इति ह्रस्व है वर्ण जिसका
और महास्थूल और आठों चक्रों करकें युक्त शंख औ
र चक्र और गदा करकें युक्त सो महानारायण कथ
न कीया है। माधवमूर्तिका लक्षण वैखानससं
हितामें कथन कीता है मखीरके वर्णकी न्याई
है आभा जिसकी और गदा और शंख करकें जो
युक्त सो माधव कथन कीता है। ब्रह्मांडपुराण
में और कथन कीता है मखीरकी न्याई है वर्ण जि
सका और मधुका है चक्र जिसमें और चिंदा और सू
क्ष्म है शरीर जिसका सो माधवनारायण जानना सो
यतीयांको मोक्षकें देनेवाला होता है। विश्वरहस्य
में और कथन कीया है श्वेतवर्णवाली जो शिला और
चिंदा और पंचरेखों करकें युक्त सो माधवनाम करकें
शिला जाननी सो मोक्ष कों देनेवाली होती है।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

।

सा॰ ग्राम॰ ८५ ब्रह्मपुराणे स्वर्णबिंदुसमायुक्तो मधुवर्णस्य
विचित्रितः माधवः स तु विज्ञेयो महारोगपहारश्च
य इति। गोविंदमूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे
नाभिस्थूलः ह्रस्ववर्णो गोविंदः पंचचक्रकः
वामचक्रो बृहद्द्वारो स्वनंतो मध्यनिम्नग इ
ति। विश्वरहस्ये पताकाध्वजविक्रान्ताप
द्मवर्णस्सचक्रकम् गोविंदं पूजयेद्यस्तस्यो
लक्ष्मीप्रदायकम् तथा इंद्रनीलनिभाभा
या पृथक्चक्रा सुशोभना गोविंदाख्या च सा
ज्ञेया मूर्तिः सौभाग्यकारका इति १॥

85

ब्रह्मपुराणमे और कथन करतेहै स्वर्णके बिंदुकरकें
जो युक्त और मक्खी की न्याई है वर्ण जिसका और सुं
दर चिह्नोवाला होवे सो बडे रोगके हरणेवाला माध
व जानना। गोविंदमूर्तिका लक्षण कथन करते है
पुराणसंग्रहमे नाभि है स्थूल जिसके और ह्रस्वव
र्णवाला और पंचचक्रों वाला होवे और वामे पासे तें
हैं चक्र जिसका और बडा है मुख जिसका और अनं
त और मध्यमे नीचा होवे सो गोविंद जानना। वि
श्वरहस्यमे और कथन कीताहै पताकाध्वजके
चिह्नकरकें जो युक्त और पद्मवर्णवाला और च
क्रवाला सो गोविंद कथन कीताहै जो पुरुष
भक्ति करकें गोविंदको पूजताहै सो तत्काल ल
क्ष्मीकों प्राप्त होताहै। नीलमणिकी न्याई है आ
भा जिसकी और भिन्नचक्रवाली और सुंदर सौ
भाग्यके करणेवाली गोविंदकी मूर्ति जान
नी २॥

वराहपुराणे कृष्णावर्णा तथा बिन्द्या पंचरे
खा समन्विता गोविंदाख्या शिला ज्ञेया सर्वसौ
भाग्यदायिनीति । विष्णुमूर्त्तिलक्षणं पद्मपु
राणे स्थूलचक्रो भवेद्विष्णुर्मोक्षैकफलदायि
मर्त्ति ब्रह्मांडे कृष्णावर्णा तथा विष्णुः स्थू
लचक्रश्च शोभनः द्वारोपरि न्यस्य रेखा दृश्य
ते मध्यदेशतः इति । पुराणसंग्रहे कृष्णाव
र्णा तथा विष्णुः स्थूलचक्रश्च शोभन यस्य म
ध्ये गदाकारा दृश्यते पंचरेखिकेति । वैखा
नससंहितायां कृष्णवर्णा तथा विष्णुः स्थूल
चक्रश्च शोभनः ॥

वराहपुराणमे और कथन करते है कृष्णेति जो कृ
ष्णवर्णवाली और बिंदी और पंचरेखा करके युक्त
सो संपूर्ण सौभाग्यके देनेवाली गोविंदनामक करके
शिला जाननी । विष्णुकी मूर्त्तिका लक्षण कथन
किया है पद्मपुराणमे स्थूलचक्रवाला विष्णु होता
है सो मुक्ति आज्ञा मोक्षफलको देता है । ब्रह्मां
डपुराणमे और कथन करते है कृष्णवर्णवाला
होवे और स्थूलचक्र जिसमे और सुंदर और मुखमे और
मध्यदेशमे रेखा देखिये सो विष्णु होता है । पुराण
संग्रहमे और कथन करते है कृष्णवर्णवाला होवे
और स्थूल है चक्र जिसमे और सुंदर और जिसके म
ध्यमे गदाके आकारवाली पंचरेखा देखिये सो
विष्णु कथन करीदा है । वैखानससंहितामें और क
थन करते हैं कृष्णवर्णा इति कृष्ण है वर्ण जिसका
स्थूलचक्रवाला और सुंदर और जिसकी पृष्ठ और

सा॰
ग्राम॰
८९

पदाकृतिस्तथारेखादृश्यतेयस्यमध्यगेति।
ब्रह्मांडे वामचक्रोबृहद्वक्त्रउन्नतोमध्यनि
म्नगः सकापिलःस्निग्धवर्णोविषयभोगद
इति। विस्नुरहस्ये विल्वाकृतिस्त्वयोरखा
सुषिरंवातिसंकुलं ह्रस्वावर्तस्तथाविस्नु
स्थूलचक्रेणशोभितः। गदाकृतिस्तथारेखा
दृश्यतेमध्यदेशतः २ वाराहे ह्रस्ववर्णस्त
थाविस्नुं स्थूलचक्रेणशोभितं विल्वाकृति
स्तथारेखादृश्यतेमध्यदेशतः गृहस्थस्यजये
नित्यंधनधान्यसमृद्धिदम्॥१॥

मध्यमें पैरकी नाईं रेखा देखिये सो विस्नु होता है।
ब्रह्मांडपुराणमें ओर कथन कीया है वामपासमें है
चक्र जिसके ओर बडेमुखवाला ओर ऊंचा ओर मध्य
में नीवां ओर कपिल स्निग्ध वर्णवाली सो विष
यभोगके देनेवाला विस्नु कथन करीदा है। वि
स्नुरहस्यमें ओर कथन करते हैं विल्वकी है आ
कृति जिसकी ओर आयारेखावाला ओर अति
संकुल छिद्र है जिसमें ओर ह्रस्ववाला ओर स्थू
ल चक्रकरके जो सुंदर सो विस्नु होता है। ओर जि
सके मध्यदेशमें गदाकी रेखा देखिये सो भी वि
स्नु होता है २ वाराहपुराणमें ओर कथन कीता है
ह्रस्व है वर्ण जिसका ओर स्थूल चक्रकरके सुंदर
ओर जिसके मध्यदेशमें विल्वकी नाईं रेखा देखिये
सो विस्नु होता है जो गृहस्थी जिसको नित्य पूजि
ता है सो धन ओर अन्नकी वृद्धिको प्राप्त होता है।

86

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुराणसंग्रहे विष्णुकांतस्तु नालाकारो वनमाला
ब्जचिह्नितः पंचायुधधरः श्रीमान्विष्णुरित्युच्य
ते बुधैरिति । महाविष्णुलक्षणं पुराणसंग्रहे
महाविष्णुस्तु भगवान्दशचक्रेण संयुतः स्व
र्णरेखासमायुक्तो माणिमाणिक्यदीप्तिमान्
नाभिपार्श्वे शंखपद्मं यस्यासौ दृश्यते म
धुसूदनदेवोसौ शत्रुहा परिकीर्तित इति ।
ब्रह्मांडे मधुसूदनो महादेव एकचक्रो महा
द्युतिः स्वर्णेन समायुक्तो महातेजःप्रदः प्रभुः इति

पुराणसंग्रहमे और कथन कीताहै विष्णुकांत इति जो
नली के आकारवाला और वनमाला और कमलका है
चिह्न जिसमें और पांच आयुधके धारणेवाला और
शोभावाला सो बुद्धिमानोंने विष्णुकांत और विष्णुकथ
न कीयाहै । महाविष्णुका लक्षण पुराणसंग्रहमें
कथन कीताहै दशचक्र करकें जो युक्त और स्वर्णा
की रेखा करकें युक्त भया और माणिक्यकी न्याई जो
प्रकाशनाम सो भगवान महाविष्णु कथन कीताहै
मधुसूदन मूर्तिका लक्षण वैखानससंहितामें कथ
न कीयाहै जिसकी नाभिपासमे शंख और पद्मका
चिह्न देखिये सो मधुसूदनदेव होताहै सो कीर्ति
न कीयाहै अरु शत्रुवोंको दूर करताहै । ब्रह्मांड
पुराणमे और कथन करतेहै एकहै चक्र जिस
में और बडे तेजवाला और स्वर्णकरकें जो युक्त
सो बडे तेजके देनेवाला मधुसूदन कथन की
ताहै । १० ॥

सा॰
ग्राम॰
८७

विश्वरहस्ये विल्वाकृतिर्यत्र रेखा विवरं चातिसु-
शोभनं मधुसूदनउक्तो सावेकचक्रो महाद्यु-
तिरिति । हरितवर्णसमाकीर्णो नीलविंदुभि-
रन्वितः सवर्तुलस्निग्धवर्णः पादरेखासुचि-
ह्नितः मधुसूदनदेवोयं भुक्तिमुक्तिप्रदः स्मृ-
ति २ वाराहे रक्तवर्णास्तथास्थूला क्रूरास्सु-
सुषिराशिला मधुसूदनसंज्ञा स्याद्भुक्तिमु-
क्तिफलप्रदेति । तथा मधुवर्णो भवेद्देवः
षट्चक्रेणसमन्वितः धनधान्यसमृद्धिं च प्र-
दद्यान्मधुसूदन इति ।

विश्वरहस्यमें ओर कथन करतेहैं जिसमें विल्वकी
न्याई आकृतिवाली रेखा होवे ओर सुंदर छिद्रवाला
ओर एक है चक्र जिसमे ओर बडे तेजवाला सो म-
धुसूदन कथन करीदाहै । ओर हरे वर्णके रंगा-
वाला ओर नीलीयां विंदु करके युक्त ओर गोलाकार हो-
वे ओर चिकना ओर पैरकी रेखा करके चिह्नित होवे सो
भुक्ति ओर मुक्ति देनवाला मधुसूदन कथन की-
याहै २ वाराहपुराणमें ओर कथन करतेहैं जो शि-
ला रक्तवर्णवाली ओर स्थूल ओर क्रूर ओर छि-
द्रवाली सो भुक्ति ओर मुक्तिके फलको देनेवा-
ली मधुसूदन नामकरके होतीहै । ओर कथन
करतेहैं माखीरकीन्याईहै वर्ण जिसको ओर छे
चक्रों करके युक्त होवे सो मधुसूदन ओर अन्ना-
कीवृद्धिको देताहै । ।।
~ ।।

87

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वामनपुराणे पीतगोरोचनवर्णश्चनागयज्ञोप
वीतिनम मधुसूदनदेवेन भुक्तिमुक्तिफलप्रद
मिति त्रिविक्रममूर्तिलक्षणमग्निपुराणे श्याम
स्त्रिविक्रमो दक्षेरेखावामेचरेखकइति । विश्व
रहस्ये त्रिविक्रमाख्यानुशिलाहेमवर्णामहा
द्युतिः साशिला हृस्ववर्णा स्याद्धनधान्यसुख
प्रदेति । गरुडपुराणे तथाहिदक्षिणावर्तसु
तो वनमालाविभूषितः त्रिविक्रमोमहादेवः
श्यामवर्णोमहाद्युतिः । गरुडपुराणे अतसी
कुसुमप्रख्यो बिंदुनापरिभूषित इति ।।
वामनपुराणमे और कथन कीयाहै पीलाजो गोरोचन
जिसकी न्याई है वर्ण जिसका और नागों का है यज्ञोप
वीत जिसमें सो देव भुक्ति और मुक्ति के फल को देनेवा
ला मधुसूदन होता है । त्रिविक्रममूर्ति का लक्षण
अग्निपुराणमें कथन करते हैं जिसके दहने पासे में रे
खा होवे और वामपासे में रेखा न होवे और श्यामवर्ण
वाला होवे सो त्रिविक्रम कथन कीताहै । विश्वरह
स्य में और कथन करते हैं सुवर्ण की न्याई है रंग जिस
का और वडे तेजवाली जो शिला सो हृस्ववर्णवाली
शिला धन और अन्न और सुखकी देती है और त्रिवि
क्रम नाम करके होता है । और कथन करते हैं श्या
म है वर्ण जिसका और वडे तेजवाला और दहने पा
से चक्र होवे और वनमाला करके भूषित होवे सो
त्रिविक्रम कथन कीता है । गरुडपुराणमें और क
थन करते हैं अलसी के पुष्प की न्याई है प्रकट और
बिंदु करके जो भूषित सो त्रिविक्रम होता है ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

88

पाद्मे त्रिविक्रमं महादेवं श्याममूर्तिं महाद्युतिम्
वामपार्श्वे स्थिते पद्मे रेखा चैव तु दक्षिणे इति वै
खानससंहितायाम् त्रिविक्रमस्तथा देवः श्याम
वर्णो महाद्युतिः वामपार्श्वे स्थिते चक्रे रेखा चैव
तु दक्षिणे । तथा स्थूलचक्रद्वयं मध्ये गुडला
क्षभयाणिका द्वारपरितया रेखा ध्वजाका
र तु दक्षिणे २ चतस्रो यत्र दृश्यन्ते रेखा वामे स
मः स्थिताः द्वे चक्रे मध्यमे देशे शालायां स्वव-
तर्मुखो ३ स च त्रिविक्रमो ज्ञेयः श्यामवर्णो महा
द्युतिरिति ४ ॥ ~॥

पद्मपुराणमें और कथनकरते हैं त्रिविक्रममिति श्या
म है मूर्ति जिसकी और बडे तेजवाला होवे और वाम
पासमें कमलका चिह्न होवे और दक्षिणमें रेखा हो
वैसो त्रिविक्रम होता है । वैखानससंहितामें और
कथनकरते हैं श्याम है वर्ण जिसका और बडे
तेजवाला होवे और वामपासेमें चक्र स्थित होवे
और दहिणेमें रेखा होवे सो देव त्रिविक्रम होता है
और तैसे कथनकरते हैं जिसके मध्यमें दो स्थूल
चक्र होवे गुडु और लाखकी न्याई है वर्ण जिस-
का और मुखमें रेखा होवे और दहनेमें ध्वजाका-
आकार होवे २ जिसके वामपासेमें चार सम
रेखा देखिये और मध्यदेशमे दो चक्र होवे
और जिसकी शिलाकी चार मुख होवे ३ और
श्यामवर्णवाला और बडे तेजवाला होवे सो त्रि
विक्रम जानना ४ ॥ ~

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुराणसंग्रहे कपिलाभश्चैकचक्रश्चक्रत्रि
तयभूषितः त्रिविक्रमस्त्विष्टदः स्यान्नात्र क
श्चनसंशयः । वलांडे त्रिविक्रमस्त्रिकोण
श्चक्रत्रयसमन्वितः द्विजेन्द्राणामयं पू
ज्यो नान्येषां तु कदाचन । तथाश्चक्रं विशा-
लाभमूर्ध्वचक्रं सदीर्घकं भ्रमरांजनसंका-
शमीषद्दीर्घं त्रिविक्रमम् । चक्रद्वयं बिले
विद्यात्पार्श्वे कोदंडसंयुतमिति । ९ ॥

पुराणसंग्रहमे और कथन कियाहै कपिलकी-
न्याई है आभा जिसकी और एक चक्र वा तीनच
क्रोंकरकें भूषित होवे सो त्रिविक्रम पूजने वाले पु
रुषकों इष्ट कों देताहै इसमें कछु संशय नहीं है ।
तीन कोणोंकरकें युक्त और तीन चक्रोंकरकें जो यु
क्त सो त्रिविक्रम ब्राह्मणों ने सदा पूजने यो-
ग्य है और जातिने कदाचित भी न पूजना चा-
हिये । और ऐसें कथन करते हैं हेठ और ऊपर है
चक्र जिसके और बडी आभा वाला और भ्रमर
और अंजन की न्याई है प्रकाश जिसका और
दीर्घ रूपि सो त्रिविक्रम कथन कियाहै । जि-
सके छिद्रमें दो चक्र होता और पासमें कोदंड
करकें युक्त होवे सो भी त्रिविक्रम होताहै ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ दधिवामनमूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे। अ
भस्त्रकाग्रविलसद्दधिबिंदुसवर्तुलम्। वाम
नेनीलवर्णाभं वदंति दधिवामनम्। एतल्ल
क्षणसंयुक्तं दधिबिंदुदशोभितं। वामनं नील
वर्णाभं रूक्षं चैव सुखप्रदं २ विस्तयमणौ मेरे
रूवाकारे यथा कूर्मे मध्ये चक्रे प्रदृश्यते द
धिबिंदुसमायुक्तं सूक्ष्मेन दधिवामनमिति
१ श्रीधरमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे श्रीधरस्तु न
मा देवश्चिह्नितो वनमालया कदम्बकुसुमा
कारो रेखापंचकसंयुतः १

दधिवामनका मूर्ति लक्षण पुराणसंग्रहमें कथ
न किया है अथ इति अथा है चक्र जिसके और अग्र
भावमें प्रकाशमान होवे दधिकी या बिंदु जिस
में और गोलाकार और वाम पासेमें नीलावर्ण
होवे जिसका जिसको दधिवामन कथन करते हैं
इस लक्षणकर्के जो युक्त और दधिका जो बुलब
ला तिसकर्के शोभित और नीलवर्णकी है आभा
जिसमें और रूक्ष सो सुखके देनेवाला दधिवाम
न होता है २ विस्तयमणौ मेरमें और कथन कीया है
रूबकी न्याई है आकार जिसका और कूर्म जैसा हो
वे और जिसके मध्यमें चक्र दीखिये और दधिबिंदुक
र्के युक्त और जो सूक्ष्म होवे सो दधिवामनु कथन की
दा है १ श्रीधरमूर्तिका लक्षणकथन कीया है ब्रह्मां
ड पुराणमें वनमालाकर्के जो युक्त और कदंब पुष्प
की न्याई है आकार जिसका और पंचरेखोंकर्के जो
युक्त सो श्रीधर देव कथन कीदा है ११ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुराणसंग्रहे श्रीभैरो सो तथा देवविक्लिनो वन
मालया कदंबकुसुमाकार ऊर्ध्वरेखश्च पाद
योरिति ब्रह्मांडे चक्रेद्वे मध्यदेशे च रंकजेन
समन्वितः सूक्ष्माननः श्यामलाभस्तु नः श्री
भैरः स्मृत इति १ तथा निम्नोदरशिरःपा
र्श्वे निम्नमासंस्वर्त्तले निम्नवक्रमतिकृशे
श्रीभैरं सर्वसिद्धिदं २ विश्वरहस्ये यस्य मध्ये
गदाकारा द्युपते पंच रेखिका वामपार्श्वे
स्थिता रेखा तथा चैव तु दक्षिणे १ श्रीभैरोवा
मवक्त्रो हरिद्वर्णो स्वरूपवान् सौभाग्यं सत
तेयेन सर्वसौख्यं ददाति च २८ ॥
पुराणसंग्रह में और कथन कीया है श्रीभैर जिनने वनमा
ला करके जो विक्लिन और कदंबवृक्ष के पुष्प की न्याई है
आकार जिसका और जिसके पादों में ऊर्ध्वरेखा होवे
श्रीभैरदेव होता है १ ब्रह्मांडपुराण में और कथन की
या है जिसके मध्यदेश में दो चक्र होए और कमल
करके युक्त होवे और सूक्ष्म है मुख जिसका और श्या
म रंगवाला होवे सो भी श्रीभैर कथन कीया है १
और ऐसे कथन करते हैं नीवां है उदर और शिर औ
र पार्श्व जिसका और नीवां है मुख जिसका और
गोलाकार होवे और नीवां है चक्र जिसमे और छोटा
जैसा होवे सो संपूर्णसिद्धि के देनेवाला श्रीभैर होता है
विश्वरहस्य में और कथन कीता है जिसके मध्य में ग
दा के आकार की न्याई रेखा होविये वाम और दक्षिण
में रेखा स्थित होवे १ और वक्र तसुंदर होवे और हरितवर्ण
वाला जो देखिये सो श्रीभैर निरंतर सौभाग्य और संपूर्ण
सौख्य को देता है २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कौस्तुभेन तु संयुक्तः पीताभस्त्वातिशोभनः
छत्रचक्रसमायुक्तः सुवर्णाभस्सुशोभन इ
ति तथाशाद्वलसंकाशं वनमालाविभूषि
तं किंचिद्विषमचक्राढ्यं श्रीधरं श्रीकरं वि
दुरिति १ ब्रह्मांडे पंकजं तु फलाकारं दक्षि
णांगे च चक्रिणम् श्रीधरं नाम विज्ञेयं सर्वसि
द्धिप्रदायकमिति १ धनधान्यसमृद्धिं च र
त्नानि विविधानि च पुत्रपौत्रादिवृद्धिं च स
जनाल्लभते नर इति १॥

कौस्तुभमणि करकें जो युक्त और पीली आभा जिस
की छत्र और चक्र करकें युक्त होवे और सुवर्णके रं
ग वाला होवे और सुंदर होवे सो श्रीधर होता है
१ और नेसें हरे घासकी न्याई प्रकाशवाला
और वनमाला करकें भूषित होवे और कुछक
विषम चक्र करकें युक्त होवे सो श्री कों करने
वाला श्रीधर जानना १ ब्रह्मांडपुराणमें
और कथन कीता है पंकजरूपा जो जंबु फल
तिसकी न्याई है आकार जिसका और दक्षिण
पासे में चक्र होवे सो संपूर्ण सिद्धि के देने वाला
श्रीधर जानना १ जिस श्रीधर के पूजने से
पुरुष धन और अन्न की वृद्धि और विविध प्र
कारके जो रत्न और पुत्र पौत्रादि की जो
वृद्धि तिसकों प्राप्त होता है २०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हृषीकेशमूर्तिलक्षणं पाद्मे अर्धचंद्राकृतिर्दे
वो हृषीकेश उदाहृतः नमश्चैतं भजते स्वर्गं विष
यांश्च समीहितानिति । वैखानससंहितायाम्
सूकरस्य निभाकारो यस्य रेखाः सवर्तुलः वज्र
केन्दृश्यते यत्र हृषीकेशः स उच्यत इति । विश्व
रहस्ये प्रदक्षिणावर्तयुक्ता वनमालाविभूषि
ता वर्तुला यत्र रेखा च पृथक्चक्रसमान्विता
ईष्टार्थफलदा मूर्तिस्तां नायत्नेन पूजयेदिति ।

हृषीकेशकी मूर्तिका लक्षण पद्मपुराणमे कथन
कियाहै अर्धेति अर्धचंद्रमाकी आकृतिकीन्याई
जोदेव सोहृषीकेश कथनकीताहै तिसकोंपूजने
वाला जोपुरुष सो स्वर्ग और इच्छित जोविषय ति
नकों प्राप्तहोताहै । वैखानससंहितामें और कथ
नकीताहै सूकरकमुखकीन्याईहै आकारजिस
का और जिसकी तेजवालीयां रेखाहोए और
तिसके उपरवज्रका चिन्ह देखिये सो हृषीकेश
कथन करीदाहैं । विश्वरहस्यमें और कथा
नकीयाहै जोमूर्ति प्रदक्षिणावर्तिकर्के युक्त
होवे और वनमाला कर्के भूषित और गोलाका
र जिसमें रेखा होवे और भिन्न भिन्न जोचक्रति
सकर्के युक्तहोवे सोईष्टफलकोदेनेवाली मू
र्ति होताहै तिसका यत्नकर्के पुरुष पूज
नकरे । ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
६१

91

तथा वर्त्तुलास्निग्धः सर्वांगो गदाकारश्च दृश्यते
। सर्वाभावर्त्तुलायश्च पीतरेखोनथैव च अने
कमूर्त्तिसंयुक्तः सर्वकामफलप्रदेति २ तथा
दित्तचैवतत्सर्वासु यस्यैव दृश्यते मुखं हृषीके
शः स विज्ञेयः सर्वकामफलप्रद इति । पुराण
संग्रहे पंचरेखसमायुक्तं दशचक्रसमन्वितं
श्यामलं कोमलं स्निग्धं हृषीकेशं प्रचक्षते ।
नारदपुराणे शोणपिंगलकेशो यो हृषीके-
शः स उच्यते अयोनरेणावर्णेन रूत्तवर्णेन वा
भवेदिति ।

औरनेसे कथनकरतेहैं गोलाकार औरस्निग्धदेहै अं
गजिसके औरजिसमें गदाकाआकार देखिये सो
हृषीकेश होता है । चासकीन्याई है आभाजिस
की और गोलाकार जिसमें पीत रेखा होवे औ
र अनेकमूर्त्तियों करके जोयुक्त सो मूर्त्ति संपूर्ण
कामनाके देनेवाली होते है २ औरकथनकर
तेहैं संपूर्णदिशोंमें जिसकामुखदेखिये सो
संपूर्ण कामके देनेवाला हृषीकेश जानना । पु
राण संग्रहमें औरकथनकरतेहैं पंचरेखकरके
युक्त और दशचक्रोंकरके जोयुक्त औरश्यामरंगवा
ला और स्निग्ध होवे सो हृषीकेश कथनकरीदा
है । नारदपुराणमें औरकथनकीयाहै शोण
और पिंगलवर्णवाले हैं केश जिसके सो हृषीके
शकथनकीताहै सोहुकीन्याई जो वर्णवाला हूते
वर्णवाला होवे सोभी हृषीकेश होता है । ॥

वाराहे इन्द्रनीलनिभाकारः स्थूलचक्रः सशो
भनः हृषीकेशस्तु विज्ञेयस्सर्वकामफलप्रद
इति । पद्मनाभलक्षणं वाराहे आरक्तं पद्मना
भाख्यं पंकजच्छत्रसंयुतं तत्स्मात्पूजयेन्नि
त्यं दरिद्रः श्रीश्वरो भवेत् । पद्मपुराणे बहुभि
श्छिद्रितश्चक्रैः शुक्लवर्णादिसंयुतैः दैत्यारिः
कमलाक्षश्च गदापाणिरधोक्षजः । पद्मना
भश्च देवः स्यात्सद्यः स्याद्दुःखदायकः तस्मान्न
मानवैः सद्यो बहुचक्रः प्रपूजयेत इति २ ॥

वाराहपुराणमें और कथन कीया है इंद्रनीलेति इंद्र
नील मणिकी न्याई है आकार जिसका और भिन्नभिन्न
चक्रवाला और सुंदर होवे सो संपूर्ण कामफलके देने
वाला हृषीकेश जानना । पद्मनाभका लक्षण वा
राहपुराणमें कथन कीया है लाल है वर्ण जिसका औ
र कमल और छत्र करके जो युक्त सो पद्मनाभ होता
है जो निर्धन पुरुष तिसका तुलसी करके पूजन
सदा करता है सो धन वाला होता है । पद्मपुराण
मे और कथन कीया है बहुतियां वर्णों वाले हैं चक्र
जिसमें सो दैत्योंका शत्रु और कमलकी न्याई है
नेत्र जिसके और गदा है हस्त जिसके और अधोक्ष
ज । और दिन दिन में दुःखके देने वाला पद्मना
भदेव होता है तिस कारणतें पुरुषोंने बहुति
यां चक्रों वाला न पूजना चाहिये २ ॥

विश्वरहस्ये अतसीपुष्पसंकाशो विंदुनापरि
शोभितः पद्मनाभइतिख्यातोदुर्लभस्सर्वका-
मदः १ नानावर्णांशिलाचैव पद्मनाभस्यदृश्य
ते दृष्ट्वायेनेदृशीमूर्तिस्तेनांयत्नेन पूजयेदि
ति २ वाराहे पद्मनाभस्स्थूलवक्रः शुक्लवर्णः
सुशोभनः दीर्घद्वारगृहाकस्यंचक्रंचोन्नत
नाभिकम् १ वनमालाचकंठेच श्रीवत्सांक
सुदृश्यते पद्मनाभो भवेद्देवः ऊर्याच्छत्रुनृप-
राजयः २ ललाटे शेषनागस्यशिलार्द्धेचसं-
किंचनम् सुवर्णाभयस्यचक्रं सुखसौभाग्यव
र्धनमिति ३ ॥

विश्वरहस्यमें और कथनकरतेहैं अतसीपुष्पेति अ
लसीकेपुष्पकीनाईहै प्रकाशजिसका और विंदु-
करके शोभितसो संपूर्णकामके देनेवाला और दु
र्लभ पद्मनाभकथनकीयाहै १ जिसपद्मनाभकी
नानावर्णोंवालीशिला देखिये ऐसी मूर्ति जिस-
ने देखी सो पुरुष यत्नकरके तिसका पूजन करे
२ वाराहपुराणमें औरकथनकीयाहै स्थूलहै जि
समें और शुक्लवर्णवाला होवे और सुंदर और दी
र्घद्वारमें गृहका चिह्नवाला और उन्नत नाभि जिस
मे चक्रहोवे १ औरजिसके कंठमे वनमाला औरश्री
वत्सांक देखिये सो शत्रुवोंको जीतनेवाला पद्म
नाभदेवहोताहै २ जिसके मस्तकमें शेषना-
गका चिह्नहोवे और अर्ध शिलामें सुवर्णकीयां
रेखाहोवें औरजिसका चक्र सुवर्णकी आभावाला
होवेसोसुख और सौभाग्यकों वधानेवालाहोताहै
३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तथा मुखेसूक्ष्मं मध्यसूक्ष्ममंतःसूक्ष्मं च दृश्य
ते सपद्मनाभोविज्ञेयः सौख्यदः सर्वकामद
इति १ दामोदरलक्षणं पुराणसंग्रहे दा॰
मोदरं तथास्थूलं मध्यचक्रप्रतिष्ठितम् दूर्वा
भं द्वारिसंकीर्णं पीतरेखायुतं शुभं १ चक्रद्व
यसमायुक्तं पूजयेत्सुखसंपदे इति २ विश्व
रहस्ये स्थूलो दामोदरो ज्ञेयः सूक्ष्म चक्रो भवे
त्ततः चक्रेतनमध्यदेशस्थे पूजितस्तु सुखं॰
प्रदः १ सर्वद्वारं तु संकीर्णं पीतवर्णं प्रदृश्यते
अनेकमूर्तिसंभिन्नस्सर्वकामफलप्रद इति २

और ऐसे कथन करते हैं जिसका मुखभी सूक्ष्म होवे
और मध्य भी सूक्ष्म देखिये और अंत में भी सूक्ष्म तिस॰
कों पद्मनाभजानना सो सौख्य और संपूर्णकामना
के देनेवाला होता है १ दामोदरकालक्षण पुराण
संग्रह में कथन किया है जो स्थूल होवे और जिसके
मध्यमें चक्र स्थित होवे और दूर्वा की नाई है आभा
जिसकी और द्वारे में संकीर्ण होवे और पीतरेखा करके
युक्त होवे १ और दो चक्रोंकरके युक्त होवे सो दामो
दर होता है सुख और संपदाके वास्ते पुरुष तिनका
पूजन करे २ विश्वरहस्यमें और कथन करते हैं जो
सूक्ष्मचक्रवाला होवे सो स्थूल दामोदर जानना
और जिसके मध्यमें चक्र स्थित होवे सो पूजनेवा
लेको सुख देता है १ जिसका सर्व द्वार संकीर्ण होवे
और पीतवर्ण देखिये और अनेक मूर्तियोंकरके भिन्न
होवे सो संपूर्ण कामके देनेवाला होता है २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
९३

गारुडे स्थूलो दामोदरो ज्ञेयः सूक्ष्मरंध्रो भवेद्यदि
चक्रे तु मध्यदेशस्थे पूजितस्तत्त्वसिद्धिद इति ।
तथा उपर्यधमध्यके रेखा नातिदीर्घमविवि-
लम् मध्ये च रेखा तत्र वै कार्या स च दामोदरः स्मृ-
तः इति । ब्रह्मांडे दामोदरश्च विशेषचक्रद्व-
यसमन्वितः रक्तपुष्पैस्तु समभ्यर्च्य सर्वान्का-
मानवाप्नुयादिति । मध्यस्थूलः प्रतिष्ठास्व-
चक्रवान्स्फुटरूपाकृतिः द्वारदेशेतिसंकीर्णः
पीतरेखास्तु दामवान् २ दामोदराभिधानो
यं विज्ञेयो गंडके मालिः पुष्पैर्यादर्पितोपि सि-
द्धिसेवितः श्रेष्ठभावितः इति ३ ॥

वराहपुराण मे और कथन कीया है स्थूल इति जो क-
र मुख सूक्ष्म छिद्र वाला होवे सो स्थूल दामोदर जान-
ना और जिसके मध्यदेश में चक्र स्थित होवे सो पूज-
नेवाले को सिद्धि के देनेवाला होता है । और अति-
शय करके दीर्घ जिसके मुख में विलक्षण छिद्र हो-
वे और मध्य में लंबी एक रेखा होवे सो दामोदर-
कथन कीता है । ब्रह्मांड पुराण में और कथन क-
रते हैं दो चक्रों करके जो युक्त सो दामोदर जानना
तिसको रक्त पुष्पों करके जो पूजन करता है सो सं-
पूर्ण कामना को प्राप्त होता है । और मध्य में जो
स्थूल और प्रकट चक्रवाला और हस्ति की न्याई है
आकृति जिसकी और द्वारदेश में संकीर्ण होवे और पी-
त है रेखा जिसमें और पुष्पों की माला होवे गंडकी न-
दी कीयां जो शिला तिनों में मणिरूप यह दामोदर ना-
म करके जानना श्रेष्ठ भावना करके जो सेवते हैं तिस-
को सिद्धि के प्रकट करता है ३ ॥

93

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लक्ष्मीदामोदरलक्षणं स्कंदे वर्तुलः कृष्णव
र्णो ह्यो मध्यचक्रसमन्वितः स्वेतबिंदुसमा
युक्तो लक्ष्मीदामोदरः स्मृतः १ धनधान्य
समृद्धिः स्यात्पुत्रपौत्रादिवर्धनः पशुवृद्धि
करो देवो गृहिणां सर्वकामदः इति २ संक
र्षणमूर्तिलक्षणं ब्राह्मे द्वेचक्रे चाग्रसंलग्ने पू
र्वभागश्च पुष्कलः संकर्षणाख्यो विज्ञेयो र
क्ताभश्चातिशोभनः इति १ तथा द्वे चक्रे ए
कसंलग्ने भागेकं मस्तलं भवेत् संकर्षणः स
विज्ञेयो रक्ताभश्चारुदर्शन इति १।।।।

लक्ष्मीदामोदरका लक्षण स्कंधपुराणमें कथनकी
याहै वर्तुल इति वर्तुल क्या गोलाकार और कृष्ण
वर्ण करके युक्त और मध्यमें जो चक्र तिसकरके
युक्त और स्वेतबिंदु करकै संयुक्त सो लक्ष्मीदामो
दर कथन कीताहै १ सो देव धन और अन्नकी
वृद्धि करताहै और पुत्रपौत्रादिकांको वधाताहै
और पशुवांको वृद्धिकों करीदाहै और गृहस्थियां
कोसंपूर्ण कामना देताहै २ संकर्षणमूर्तिका
लक्षण कथन कियाहै ब्रह्मपुराणमें जिसके
अग्रभागमें दोचक्र होता और पूर्वभाग वडाहो
वै और रक्तवर्णवाला और अतिसुंदर होवे सो संक
र्षण नामकरकै जानना १ और कथन करतेहैं दो
चक्र एकमें लगेहूवे होता और एकभागमें एकम
सल होवे और रक्तवर्ण वाला और सुंदर दर्शन
वाला होवे सो संकर्षण जानना १।। ४।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शा॰ ग्राम॰ ९४

वाराहे चक्रद्वयसमायुक्तः कपिलेन च संयुतः असौ संकर्षणो नाम यतिभिः पूज्यते सदेति। वामनपुराणे शंखचक्रगदाकूर्ममत्स्यांकोऽथ प्रदृश्यते संकर्षणस्तु देवानां सर्वो लक्ष्मीप्रदायक इति। वासुदेवमूर्तिलक्षणं सद्विविधः स्मृद्ध शान्तनाम्नेति तत्राद्यो ब्रह्मवैवर्तान समसंहितयोः द्वारदेशसमे चक्रे दृश्येते नातिनीयके वासुदेवः सविशेयः स्वच्छाभश्चस्वतेजसः। अग्निपुराणे वासुदेवः सितद्वारः शिलालग्नद्विचक्रक इति।

वाराहपुराणमें और कथन कियाहै चक्रद्वयेति जो दोचक्रों करके युक्त होवे और कपिलवर्ण करके युक्त होवे सो संकर्षण नामक करकै होताहै यतीयोंने सो सदा पूजना चाहिये। वामनपुराणमें और कथन कियाहै जिसमें शंख और चक्र और गदा और कूर्म और मत्स्यका चिह्न दीखिये सो संकर्षण देवतियोंको अनन्त काल लक्ष्मीको देताहै। वासुदेवमूर्तिका लक्षण कथन करतेहैं सो दोप्रकारकाहै शुद्ध और शांत नामक करके तिनोंमे प्रथम शुद्ध वासुदेवका लक्षण ब्रह्मपुराण और वैखानससंहितामें कथन कियाहै जिसके मुखमें भिन्न भिन्न दोचक्र देखिये और शुक्लवर्ण वाला होवे और बडे तेजवाला होवे सो वासुदेव जानना। अग्निपुराणमें और कथन कियाहै श्वेत है मुख जिसका और शिलामें लगे हुवे दोचक्र होंय सो वासुदेव होताहै।

विस्वरहस्ये कृस्ननीलशिलायस्समचक्रकं दृ
श्यते वासुदेवः स विज्ञेयः सर्वकामफलप्र
द इति । वाराहे द्वारभागे समे चक्रे दृश्यते
नांतरीयके वासुदेवस्स विज्ञेयः शुक्लपी
तांबरोऽव्ययः । तथा वासुदेवो जगद्योनि
पीतवर्णेन चिह्नितः चक्रे द्वारप्रदेशे वसौ
ख्यदः परिकीर्तित इति । तथा वामपार्श्वे
स्थिते चक्रे सितवर्णेन मिश्रिते वासुदेवः स
विज्ञेयो विप्राणां भुक्तिमुक्तिद इति । ब्रह्मा
ण्डे स्थूलशिला महाचक्रे श्यामचक्रं च वारु
णं वासुदेवं च विज्ञेयं सर्वकामफलप्रदमि
ति ।

विस्वरहस्यमें और कथन कीया है कृस्ननीलं
ति जिसकी शिला कृस्न और नीलवर्णवाली होवे और
समचक्रवाली दीखिये सो संपूर्णकामफलके दे
नेवाला वासुदेव जानना । वाराहपुराणमें औ
र कथन कीया है जिसके मुखमें भिन्नभिन्न दो
चक्र दीखिये और शुक्ल और पीतवर्णवाला होवे
सो वासुदेव जानना । और कथन करते हैं जो
पीतवर्णकरकें चिह्नित और जिसके मुखमें च
क्र दीखिये सो जगद्योनि वासुदेव सुखके देने
वाला कथन कीता है । और कथन करते हैं जि
सके वामपासेमे चक्र श्वेतवर्णकरकें मिश्रित हो
वे सो ब्राह्मणोंको भुक्तिमुक्तिके देनेवाला वासु-
देव जानना । ब्रह्माण्डपुराणमें और कथन कीया है
स्थूलशिला जिसकी और बडे चक्रवाला और श्याम
चक्रवाला होवे अथवा लालचक्रवाला होवे सो
संपूर्णकामफलके देनेवाला वासुदेव जानना ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्रा·म·
९५

शांतवासुदेवलक्षणं वाराहे रेखापंचायुधध
रोहिमांशुसदृशप्रभः नाभिचक्रधरः शांतोवा
सुदेवः प्रकीर्त्तित इति । प्रद्युम्नमूर्त्तिलक्ष
णं वैखानससंहितायाम् प्रद्युम्नः सूक्ष्मचक्र
स्तु नीलांबुजनिभास्तथा सददातीप्रियंन्नृ
णामभक्त्यापिप्रपूजित इति । गरुडे प्रद्यु
म्नः सूक्ष्मचक्रस्तु नीलवर्णस्तथैव च सुषि
रः सूक्ष्मवक्त्रश्चांदीर्घाकारस्तथा भवेदिति
अनिरुद्धमूर्त्तिलक्षणं ब्राह्मे अनिरुद्धोहि
भात्येषलक्ष्णलक्षणभेदतः अनिरुद्धस्तुनी
लाभ वर्त्तुलश्चातिशोभनम् ॥ २ ॥

शांतवासुदेवकालक्षणवाराहपुराणमेकथनकीया
है रेखविषंचरेखा और आयुधप्रकाशसकेधारणे
वाला और चंद्रमकीन्याईहै प्रभा जिसकेऔरना
भिमे चक्रहोवै सोशांतवासुदेव कथनकीताहै
प्रद्युम्नलक्षणवैखानससंहितामेकथनकीया
है जोसूक्ष्मचक्रवालाहोवै औरनीले कमलकी
न्याईहै आभा जिसकी सो प्रद्युम्नकथनकीताहै
सोअभक्तिकर्केभी पूजित्याहूआ पुरुषोंकार
स्तीदेताहै । गरुडपुराणमेऔरकथनकरतेहै
सूक्ष्महैचक्रजिसमें और नीलवर्णकीआभा
वालाहोवै औरछिद्र औरसूक्ष्म और वक्रदीर्घ
आकारवालाहोवैसो प्रद्युम्न होताहै । अनिरुद्ध
मूर्त्तिकालक्षणकथनकीयाहै ब्रह्मपुराणमेजिस
मेंलक्षणभेदते अनिरुद्धकीमूर्त्ति इसप्रकारकीहै
नीलेहै आभाजिसकी और गोलाकार और सुंदर

95

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रेखात्रयंतलयद्दृशिहष्टपद्मेन लांछितं
मिति । हृस्ववर्णं समद्वारं चक्रभित्तिस
मीपगम् स्थूलचक्रं भवेदूर्ध्वं पार्श्वे वड्ड
लपुष्पवत् अनिरुद्धमिति प्रोक्तं सर्वलो
कैककारणमिति २ ब्रह्मपुराणे हृस्वव
र्णः समद्वारश्चक्राभ्यां परिभूषितः स्थूलच
क्रं भवेदूर्ध्वं पार्श्वे वड्डलपुष्पवत् । अनिरु
द्धः पीनवर्णो वर्त्तलश्चातिशोभनः सोनि
रुद्धः इति ख्यातः सर्वलोकैककारणमिति २

और जिसके मुखमें तीन रेखा होय और ८ष्टमें क
मलका चिह्न होवे सो अनिरुद्ध कथन कीया है ।
हृस्ववर्णमिति हृस्व है वर्ण जिसका और सम
मुखवाला होवे और चक्रकीयां जो भित्तियां ति
नोके समीपमें उपर स्थूलचक्र होवे और पा
सेमे वड्डलक्या वसमं के पुष्पकी न्याईं होवे सो
संपूर्ण लोकका कारण अनिरुद्ध कथन किया
है २ ब्रह्मपुराणमें और कथन कीता है हृस्वव
र्णवाला होवे और सममुखवाला होवे और चक्रों
करकें भूषित होवे और उपर स्थूलचक्र होवे और
पासेमें वड्डल पुष्पकी न्याईं होवे । और पीत
वर्णवाला होवे और गोलाकार होवे सो सं
पूर्ण लोकका कारण अनिरुद्ध कथन की
या है २ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा० ग्राम० ९९

ब्रह्मांडे कृष्णवर्णं सममुखं द्वारश्चक्रद्वारसमीपगं
सूक्ष्मचक्रं भवेद्यश्च पार्श्वे चक्रेण पुण्यप्रक-
अनिरुद्ध इति प्रोक्तः सर्वलोकैककारण-
मिति १ वाराहे जपाकुसुमसंकाशं वनमा-
लाविभूषितं यज्ञवीणांबुजधरमनिरुद्धं
विवेष्टितं १ नहलक्षणसंयुक्तं सूक्ष्मचक्रं तु सं-
मुखं सोवर्णरूप्योरेखाढ्यमनिरुद्धं विदुर्बु-
धा इति १ पुरुषोत्तमलक्षणं ब्रह्मपुराणे
प्राच्यादिष्वष्टकाष्ठासु यस्यार्धं दृश्यते मुखं
पुरुषोत्तमः स विज्ञेयो भुक्तिमुक्तिफलप्रद इति १

ब्रह्मांडपुराणमें और कथन कीता है वर्ण जिसका
और सममुखवाला होवे और चक्रद्वारके समीपमें
उपर सूक्ष्मचक्र होवे फसमें चक्र होवे करके पुण्य
के धारणवाला और संपूर्ण लोकका कारण अ-
निरुद्ध कथन कीता है १ वाराहपुराणमें और कथ-
न किया है जपाकुसुममेति जपाके पुष्पकी न्याई
प्रकाशवाला और वनमालाकर्के भूषित यज्ञ
और वाण और कमलके धारणेवाला होवे सो अ-
निरुद्ध कथनवाला होवे सुवर्ण और रूपेकी
रेखाकर्के युक्त होवे तिसको बुद्धिमान् अनि-
रुद्ध जानते हैं १ पुरुषोत्तमका लक्षण ब्रह्म-
पुराणमें कथन कीया है पूर्वथी आदि लेकर्के १
आठजो दिशा तिनमें जिसका मुख देखिये
सो भुक्ति और मुक्तिके फलको देनेवाला पु-
रुषोत्तम जानना १॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ब्रह्मांडे षट्चक्रो वर्तुलाकारो वनमालावि
भूषितः पुरुषोत्तमो भवेद्देवो भोगमोक्षफ
लप्रदः । मध्यचक्रस्सवर्णोग्रमस्तके पृष्ठच
क्रकः पुरुषोत्तमो भवेद्देवः ष्टनकस्य शुभ
प्रदः इति २ पुराणसंग्रहे अतसीपुष्पसं
काशो बिंदुनापरिभूषितः पुरुषोत्तमश्चक्रो
सौ सर्वसौभाग्यवर्धनः । अतिरूक्षोरक्त
रेखो द्वृहच्चक्रस्तथक्रवान् कविकापिल
संयुक्तः स्थूलो वास्त्वपवदा २ ॥ ॥

ब्रह्मांडपुराणमे और कथन करते है छठे है च
क्र जिसमें और गोलाकार और वनमाला करकै जो
भूषित सो भोग और मोक्ष फलके देनेवाला पु
रुषोत्तम होता है । मध्यमें है चक्र जिसके और म
स्तकमें सुवर्ण होवे और पृष्ठमें चक्र होवे सो ए
तनेवाले को शुभके देने वाला पुरुषोत्तम देव
होता है २ पुराणसंग्रहमें और कथन करते है
अतसीति अलसीके पुष्पकी न्याई है प्रकाश
जिसका और बिंदु करकै जो भूषित सो संपूर्ण
सौभाग्यके देने वाला पुरुषोत्तम होता है ।
अतिशय करकै रूक्ष वर्णवाला होवे और रक्त है
रेखा जिसमें और बडे चक्र वाला होवे और कि
सी कस्थानमें कपिल वर्ण करकै युक्त होवे और
स्थूल स्वल्प होवे २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

97

पुरुषोत्तमस्तु विज्ञेयो द्वारचक्रेण लांछितः पा
शांकुशयुतश्चक्रे वामपार्श्वे सदा खगा इति २
नारदीये खगासनसमारूढो वाणासनश
ोभमाः उभे चक्रे प्रदृश्येते सर्वसौभाग्यदा
यकः इति ४ विस्वरहस्ये पारिजातध्वजोपे
तो वर्तुलो वज्रसंयुतः पुरुषोत्तमस्तु विज्ञेयः
सर्वसौभाग्यदायकः एवं यो भजते मर्त्यः
शेषपर्यंकशायिनम् पुत्रपौत्रकलत्राढ्यो
विस्नुलोकं स गच्छति २ ॥

पाश और अंकुश का अंक तिस करके जो युक्त और वा
मपाश में सदा चक्र होवे है खग सो बुद्धिमानों ने द्वा
रचक्र करके पुरुषोत्तम जानने योग्य है २ नारदीय
पुराण में और कथन करते हैं पक्षी के आसन में
जो आरूढ और वाण का जो आसन और शर की न्या
ई है उपमा जिसकी और जिसमें दो चक्र देखिये
सो सौभाग्य के देने वाला पुरुषोत्तम होता है ४
विस्वरहस्य में और कथन कीया है पारिजात की
ध्वजा करके जो युक्त और गोलाकार और वज्र करके
जो युक्त सो संपूर्ण सौभाग्य के देने वाला पुरुषो
त्तम जानना ५ एवमिति शेषनाग का जो पलंग
तिस के ऊपर जो शयन करने वाला पुरुषोत्त
म तिस को जो भजता है सो पुत्र और पौत्र और स्त्री
करके युक्त होया हुआ विस्नु लोक की प्राप्त हो
ता है २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वाराहे पञ्चमन्नैरुन्नतांगं वा रुक्ममसमन्वितं
सा मूर्तिः सर्वेशानेन नाम्ना पुरुषोत्तम इति
अथोत्तममूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्डे अतिहृस्वो
रक्तरेखो हृत्तदेहः स च क्रकः किंचित्कपि
लसंयुक्तः स्थूलो वा सूक्ष्म एव वा अथोत्त
मइति ख्यातः पूजकस्य शुभप्रद इति ।
वाराहे पार्श्वे चक्रद्वयं सूक्ष्मं दीर्घवदनसंयु
तः अथोत्तमः स विज्ञेयो यतिभिः पूजनेः
सदेति ।।

वाराहपुराणमें और कथन करतेहैं जिसमू
र्तिका शिर हृंदर चक्र करकें युक्त होवे सो मू
र्ति सर्वेशान नाम करकें पुरुषोत्तम होताहै
अथोत्तममूर्तिका लक्षण ब्रह्माण्डपुराणमें
कथन कीयाहै अतिशय करकें जो हृस्व और
रक्तहै रेखा जिसमें और गोलाकार और चक्र
वाला और ऊच्छक कपिलवर्ण करकें युक्त हो
वे और स्थूल वा सूक्ष्म होवे सो पूजनवाले कों
शुभके देनेवाला अथोत्तम कथन कीताहै
वाराहपुराणमे और कथन करतेहैं पासमें
दो सूक्ष्म चक्र होंय और दीर्घ मुखवाला होवे
सो अथोत्तम जानना औरयतियो नेसां स
दा पूजने योग्यहै ।। ८ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
९८

अथ नृसिंहमूर्तीनां सभेदं लक्षणमुच्यते पु
राणसंग्रहे तेषांमध्ये प्रभवेदाद्यो लक्ष्मीयुक्त
स्ततः परः बालश्च कपिलो योगानन्तसर्वतोमु
खपवच । पातालाकाशकौ विद्युदघोरमु
विभीषणो हारश्चालाऊत्तिष्वैं विहृतास्यो
महाभिधः २ अघोरश्चर्वकश्चैते नृसिंहाः परिकी
र्तिताः तेषां दशावतारेषु राक्षसान्ता विदारण
णे ३ उक्तान्यत्रावशिष्टानां लक्षणानि क्रमा
दितः ४ आद्यनृसिंहलक्षणं गारुडे वर्तुलस्थू
लपर्यन्तं स्पष्टचक्रसमन्वितं ह्रस्वमुन्नतमुच्चै
र्दीर्घं सम्मतिगह्वरम् १ ॥ ८ ॥
इसके उपरांत नृसिंहमूर्तियोंका लक्षण भेदके स
हित कथन करते हैं पुराणसंग्रहमें तेषामिति
प्रथम आद्यनृसिंह और लक्ष्मीनृसिंह और बालनृ
सिंह और योगानंतकपिलनृसिंह और सर्वतोमुख
और पातालनृसिंह और आकाशनृसिंह और विद्यु
न्नृसिंह और अघोरमुखनृसिंह और विभीषणनृ
सिंह और महानृसिंह २ अघोरश्चर्वकयह नृसिंह
कथन किये हैं तिनोके दशावतारमें रा
क्षसांत और विदारण कथन कीते हैं ३ यहांक्र
मतें अवशिष्टका वाकी जो रहते हैं तिनोके
लक्षण कथन करते हैं ४ आद्यनृसिंहका लक्ष
ण गरुड पुराणमें कथन करते हैं गोलाकार
और स्थूलपर्यंत स्पष्टचक्रकरके जो युक्त और ह्र
स्व और उच्चा और दीर्घ और आतिगह्वर जो होवे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्फुरद्रेखावलिस्तुत्तं नाभिर्यस्योन्नतो भवेत् चक्र
स्योभयपार्श्वे तु स्त्रीपुष्पाकृतिर्भवेत् २ केश
भारं तु वै नाभ्यं दृश्यते चक्रपार्श्वतः नृसिंहः पी
तवर्णश्च महाचक्रो मुखे गुरुः यतिः संस्त्यजये
द्देनं गृहस्थः परिवर्जयेदिति २ पुराणसंग्रहे
नृसिंहो महादेवः पृथुवक्त्रः सदंष्ट्रकः ब्रह्मच
र्येण गृहस्थो सौ नान्यथा पूजितो भवेदिति १ अ
थ लक्ष्मीनृसिंहलक्षणं नृसिंहपुराणे वाम
पार्श्वस्थिते चक्रे कृष्णवर्णः सबिंदुकः लक्ष्मीनृ
सिंहो विज्ञेयो भुक्तिमुक्तिफलप्रद इति १ ॥

स्फुरद्रीति प्रकट जो रेखाकी पंक्ति तिस करके युक्त
और नाभि जिसकी उच्ची होवे और चक्रके दोनो पास
यों मे स्त्री के पुष्पकी न्याई आकृति होवे २ और च
क्रके पासे मे केशभार देखिये और पीतवर्णवाला
होवे और बडे चक्रवाला होवे और बडे मुखवाला हो
वे है गृहस्थ सो नृसिंह इसका त्याग करे २ पुराण
संग्रह मे और कथन करते है इस नृसिंहका बडा है
मुख जिसका और दाढोंवाला होवे सो महादेव नृ
सिंह होता है पुरुष तिसका ब्रह्मचर्य करके पूज
न करे ब्रह्मचर्य ते विना न करे १ इसते उपरांत
लक्ष्मीनृसिंहका लक्षण कथन कीया है नृसिंहपु
राणमें जिसके वाम पासे चक्र स्थित होवे और कृ
ष्णवर्णवाला होवे और बिंदुवाला होवे सो भुक्ति
और मुक्ति के फलको देनेवाला लक्ष्मीनृसिंह
कथन कीता है १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
६६

पुराणसंग्रहे वामभागेस्थितेचक्रेवनमालाविभू-
षितः लक्ष्मीनृसिंहोविशेषोभुक्तिमुक्तिफलप्रद
इति ब्रह्मपुराणेनरसिंहस्त्रिबिंदुःस्यात्कपिलः
पंचबिंदुकः वामभागेपृथुलस्तुलक्ष्मीनरहरिः
स्मृतइति । तथा द्विचक्रंचपृथुलंचक्रंकपिलंक
नकप्रभं लक्ष्मीनृसिंहंनामब्रह्मचारिभिरर्चि
तमिति । बालनृसिंहलक्षणं पाद्मे स्थूलंरंध्रं
द्विचक्राढ्यंवनमालाभिरन्वितं तद्बालनरसिं-
हाख्यंयतिसंसारमोचनमिति । ॥

पुराणसंग्रहमेंऔरकथनकरतेहैं वामभागइति
वामभागमेंचक्रस्थितहोवे औरवनमालाकरकेजो
भूषितसो भुक्तिमुक्तिकेफलकोंदेनेवालालक्ष्मी
नृसिंहहोताहै । ब्रह्मपुराणमेंऔरकथनकरतेहैं
जोतीनोबिंदुवालाहोवेसोनृसिंहहोताहै औरक
पिलहैवर्णजिसका औरपंचहैंबिंदुजिसमेंऔर
वामभागमेंवडाहोवेसो लक्ष्मीनृसिंहकथनकरी
दाहै । औरकथनकरतेहैं दोचक्रोंवालाहोवे वा
वडे चक्रवालाहोवे वाकपिलवर्णवाला सुव-
र्णकेरंगवालाहोवे जिसका नाम लक्ष्मीनृसिं
हकथनकरीदाहै सोब्रह्मचारियोंने पूजने यो
ग्यहै । बालनृसिंहकालक्षण पद्मपुराणमेंक
थनकीताहै स्थूलहै रंध्र जिसमें औरदोचक्रों-
करकेयुक्त और वनमालाकरके जोयुक्तसोय-
तियांको संसारतेछुडानेवाला बालनृसिं-
हकथनकीताहै । ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कपिलनृसिंहलक्षणं पाद्मे नृसिंहः कपिलो ते
यस्स्थूलचक्रोग्रदंष्ट्रकः त्रिबिंदुः पंचबिंदुर्वा ब्र
ह्मचर्येण पूजितः १ ददाति वांछितं नृणाम
घौघस्य तु नाशकः अन्यथा जायते क्लेशो ना
त्र कार्या विचारणेति २ अग्निपुराणे नृसिंहः
कपिलश्चैव स्थूलचक्रस्तु शोभनः ब्रह्मचार्य
धिकारोस्ति नान्यथा पूजनं भवेदिति १ ब्रह्म
पुराणे विस्तीर्णास्यं वामचक्रं वर्तुलं कपिलप्रभं
नरसिंहं गृहस्थानां भीतिदं बिंदुभिर्युतमिति १

कपिलनृसिंहका लक्षण पद्मपुराणमें कथन
किया है स्थूल है चक्र जिसमें और भयानक दाढ़ों
वाला होवे और तीन बिंदु वा पंच बिंदु करके युक्त
होवे सो कपिलनृसिंह जानना ब्रह्मचर्य करके
सो पूजिया हुआ १ पुरुषों के वांछित फल को दे
ता है और पापों का जो समूह तिसका नाश करता है
अन्यथा क्या ब्रह्मचर्य ते विना पूजिन किया हुआ
क्लेशों को उत्पन्न करता है इसमें विचार न करणा
चाहिये २ अग्निपुराण में और कथन करने है स्थूल है
चक्र जिसमें और सुंदर होवे सो कपिल नृसिंह कथ
न कीता है तिसके पूजन का ब्रह्मचारी को अधिका
र है ब्रह्मचर्य ते विना तिसका पूजन न करना चा
हिये १ ब्रह्मपुराण में और कथन करते हैं बड़ा है
मुख जिसका और वाम भाग में चक्र होवे और गोला
कार और कपिल वर्ण की न्याईं प्रभा जिसकी और बिंदु
वाला होवे सो नृसिंह गृहस्थियां को भय के देने वाला हो
ता है १ ११

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१००

पुराणसंग्रहे वामभागे स्थिते चक्रे वनमालाविभू
षितः [illegible] यस्मिं दीर्घमुखं एवं कथितं लक्षणै
र्युतं रेखाख्य केसराकारा नरसिंहः स कापिलः
अधोमुखेन्नृसिंहलक्षणं ब्रह्माण्डे पुरः पार्श्वे च
पृष्ठे वा चक्रैरष्टभिः शोभितं अधोमुखमिति
ख्यातं सर्वकामानां विमुक्तिदमिति । विभीष
णनृसिंहलक्षणं पुराणसंग्रहे दीर्घाकारः
दीर्घचक्रं मेचकाख्यं दुःखहन्तनम् विभीषणाभि
निप्रोक्तं दीर्घदुःखफलप्रदमिति । हारनृसिं
हलक्षणं पुराणसंग्रहे सूक्ष्मरंध्रं द्विचक्राढ्यं
वनमालाविभूषितं

पद्मपुराणमें और कथन करते हैं जिसका दीर्घमुख
होवे और प्रथम कथन कीते जो लक्षण तिनकर्के
युक्त होवे और केसर के आकार कीन्याई है रेखा जि
समें सो कपिलनृसिंह कथन कीता है । अधोमुख
नृसिंह का लक्षण ब्रह्माण्ड पुराणमें कथन किया है
पुरः इति सर्वपासे में वा पृष्ठ में चक्रों कर्के जो युक्त
होवे सो पूजनेवाले को मुक्ति के देनेवाला अधोमु
खनरसिंह कथन कीता है । विभीषणनृसिंह
का लक्षण कथन कीता है पुराणसंग्रह में दीर्घ
है आकार जिसका और दीर्घ चक्रवाला होवे सो
वडे दुःख के देनेवाला मेचकनामक कर्के विभीष
णनृसिंह कथन कीता है । हारनृसिंह का मेचक
नामकर्के हारनृसिंह का लक्षण पुराणसंग्रह में क
थन कीता है सूक्ष्म है रंध्र जिसमें और दो चक्रों क
र्के जो युक्त और वनमाला कर्के भूषित ॥

100

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तद्दारनरसिंहाख्यं नृणां संसारमोचकमि
ति । कृत्तनरसिंहलक्षणं पुराणसंग्रहे स्व
स्पष्टचक्रमध्यस्थमल्पभारं महोदरम्। तत्कृ
त्तिनरसिंहाख्यं मवासिभिरर्चितमिति ।
विहृतास्यनरसिंहलक्षणं पुराणसंग्रहे
विहृतास्यं वामचक्रं वर्तुलं कपिलप्रभम्।
नरसिंहं गृहस्थानां भीतिदं विंदुभिर्वृत
मिति । महानृसिंहलक्षणं नृसिंहपुरा-
णे भयानकमुखं चैव विकटं ताम्रवर्णकं
महानृसिंहसंज्ञं च पूजयेत्परमां गतिः ।

सो गृहस्थोंको संसारते छुडाने वाला द्वारनरसिंहकं
थनकीनाहै । कृत्तिनरसिंहकालक्षण पुराणसं
ग्रहमेकथनकीनाहै मध्यमेप्रकटचक्रनहोवे औ
र थोडाहै भारजिसका और बडे उदर वालाहो
वे सो कृत्तिनरसिंहहोताहै सो वानप्रस्थियों
ने पूजिनाचाहिये । विहृतास्य नृसिंहकाल
क्षण पुराणसंग्रहमे कथनकियाहै विहृता
स्यमिति बडाहै मुख जिसका और वाम पासेमें
चक्रहोवे और गोलाकार और कपिलवर्णवाला
होवे और विंदुकर्केजोयुक्तसो नरसिंह गृहस्थि
योंको भयदेनाहै । महानृसिंहकालक्षणकथन
कियाहै नृसिंहपुराणमे भयानकहै मुखजिसका
और विकटक्या उच्चानीवां और तांवेकी न्याईहै वर्णजि
सकासोमहानृसिंहहोताहै तिसको पूजनेसे परमगतिहो
ताहै ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अघोरनृसिंहलक्षणं पुराणसंग्रहे दंष्ट्राक-
रालवदनं हृत्स्थचक्रसमन्वितं अघोराख्यं नार-
सिंहं यतीनां मोक्षदायकमिति ॥१॥ अच्युतमू-
र्तिलक्षणं ब्रह्माण्डे चतुर्भिरष्टचक्रैस्तु वाम-
दक्षिणपार्श्वगैः अधिष्ठितो मुखे रम्ये कुण्ड-
लद्वयशोभितः ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गबा-
णकौमोदकीधरः मुसलध्वजपुष्पैश्च
छत्रवज्राङ्कुशैर्युतः सोऽच्युतः कथितो ना-
म्ना दुर्लभं तपसा विना २

अघोरनृसिंहका लक्षण पुराणसंग्रहमे कथन
कियाहै दंष्ट्राकरकै करालहै मुख जिसका और ह्र-
दे चक्र करकै जोयुक्त सो यतियोंको मोक्षके देने
वाला अघोरनाम करकै नरसिंह होताहै ॥१॥ अच्यु-
तमूर्तिका लक्षण कथनकीयाहै ब्रह्माण्डपुराणमे
वाम और दक्षिणपासेमें चार चार चक्रोंकरकै अ-
धिष्ठित होवे और मुखमे दो सुंदर कुंडल होवा
सो अच्युत होताहै ॥ शंख निशंख और चक्र और ग-
दा और धनुष और कौमोदकी जो गदा तिसकौ
धारणवाला होवे मुसल और ध्वजा और पुष्प
और छत्र और वज्र और अंकुश तिनोकरकै जोयु
न होवे सो अच्युतनाम करकै कथन कियाहै
सो तपसे विना दुर्लभहै ॥१॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वाराहे ऽच्युतोम्बुवर्णाभो भास्वच्चक्रोति
शोभनः पार्श्वे विद्धसमायुक्तो नैष्ठिकैर्वंदितो
भवेदिति १ तथा वहिश्चक्रसमायुक्तमंतश्च
क्रद्वयान्वितं देयंतमच्युतं तेपं सूक्ष्मरंध्रस
शीतलं २ तथा ऊर्ध्वस्थूलमधोहीनं श्या
मं च वर्तुलं स्वत्वं अच्युतं नाम देवेशं तपोलो
कप्रदायकमिति १ जनार्दनमूर्तिलक्षणं
वाराहे द्वारद्वये चतश्चक्रो जनार्दन इहोच्यते
चक्रद्वयं मध्यगतं चक्रयुग्मं च दृश्यते १॥

वाराहपुराणमें और कथन करते हैं माखीरकीन्याई है
वर्णजिसका और प्रकाशमान चक्रवाला सुंदर और
पासेमें विद्ध करकेंजो युक्त सो अच्युत होता है तिसका
ब्रह्मचारियोंने पूजन करणा चाहिये १ और कथ
न करते हैं बाहर चक्र करकेंजो युक्त और अंतरमें
दो चक्रों करकें युक्त होवे और सूक्ष्म है रंध्र जिसमें और
सुशील तिसकों अच्युत देव जानना २ और कथन क
रते हैं ऊपरमें स्थूल होवे और अधामें हीन होवे और
श्याम रंगवाला और खडा है मुख जिसका सो तपलो
ककों देनेवाला अच्युत कथन कीया है १ जनार्द
नमूर्तिका लक्षण ब्रह्मपुराणमें कथन किया है द्वारद्व
यशेन जिसके दोनों भागोमें चार चक्र होणा मध्यभा
गमें दोनो चक्रोवाला होवे सो जनार्दन कथन
कीता है ॥ १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१०२

ब्रह्मांडे पूर्वभागेकवदनः पश्चादेकास्यकायु
नः जनार्दनस्त्वनस्त्रकः श्रीप्रदोरिपुनाशनः ।
पाद्मे द्वास्त्वेचनस्त्रकः समस्तारविभूषितः ज
जनार्दनः सविते यः पुत्रलाभंप्रयच्छति ।
तथा शंखचक्रवनमालांकोनीलस्थूलाकृ
तिःप्रभः जनार्दन इति ख्यातो हिमांशुपरि
शीतल इति पुराणसंग्रहे जनार्दनविजानी
याद्वनमालाविभूषितम् ॥ ~ ॥ ~

102

ब्रह्मांडपुराणमेंऔरकथनकरतेहैं पूर्वभागमें
एकमुखहोवे औरपीछेतेभी एकमुख करकैयुक्त
होवे औरचारहैं चक्रजिसमेंसोश्रीकेदेनवाला
और शत्रवांको दूरकरणेवाला जनार्दनकथन
कीयाहै । पद्मपुराणमें औरकथनकरतेहैं दो॰
नोमुखोंमेचारचक्रोंवालाहोवे औरसमस्तकरकै
भूषितहोवे सोपुत्रकोंदेनेवाला जनार्दनजानना
औरतेसेकथनकरतेहैं शंख औरचक्र और वना
लाहै जिसमे नीलऔरस्थूलहै आकृति
जिसकी औरचंद्रमाकीन्याई शीतलहोवे सो
जनार्दन कथनकियाहै । पुराणसंग्रहमें औ
रकथनकरतेहैं जनार्दनमिति वनमालाक
कै जोभूषित ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऊर्ध्वाधो द्वे समे चक्रे स्थूलम चक्रेण विक्रितः १ वारा
हतंत्रे उत्पत्ते चतुश्चक्रयुक्तो जनार्दन इति २ ब्रह्माण्डे
श्यामस्थूलं महास्निग्धं मध्यचक्रं सुशोभनम्
देवं जनार्दनं नाम महालक्ष्मीप्रदायकमिति
उपेंद्रलक्षणं ब्रह्माण्डे उपेंद्रो मणिवर्णाभो ह्र
स्वचक्रोऽतिशोभनः श्यामलः कोमलांगश्च
चक्रपार्श्वेऽन्यचक्रयुक् । तथा शंखचक्राब्ज
मालांकाऽनीलस्थूलाकृतिप्रभः स उपेंद्र इ
ति ख्यातो भुक्तिमुक्तिफलप्रद इति १॥

ऊपर अरु हेठां दो चक्र होंगा अरु स्थूल चक्र करके जो
युक्त सो जनार्दन जानना १ वाराह तंत्र में है उत्प
त्ति जिसकी और चार चक्र वाला होवे सो भी जना
र्दन जानना २ ब्रह्मांड पुराण में और कथन करते है
श्याम है वर्ण जिसका और स्थूल होवे और बडा स्नि
ग्धा होवे और मध्य में है चक्र जिसके और सुंदर हो
वे सो महालक्ष्मी के देनेवाला जनार्दन देव होता है
उपेंद्र का लक्षण ब्रह्मांड पुराण में कथन कीया है
मणि की न्याईं है आभा जिसकी और छोटे चक्र क
रके युक्त और सुंदर होवे और श्याम और कोमल है
अंग जिसका और चक्र पारसे में अन्य चक्र करके यु
क्त होवे सो उपेंद्र कथन किया है। और कथन क
रते है शंख और चक्र और कमल की है माला जिसमें
नील और स्थूल है आकृति जिसकी सो भुक्ति औ
र मुक्ति के देनेवाला उपेंद्र कथन कीता है।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१०३

103

स्कंदे उपेंद्र इंद्रनीलाभछत्राकारो महाबलः ।
समचक्रसमांगश्च पार्श्वे रेखात्रयान्वितः । हरि
मूर्तिलक्षणं ब्राह्मे ऊर्ध्वमुखं विजानीयाद्धरि
नेत्रं हरिरूपिणं काममोक्षप्रदं चैव धनदं च वि
शेषतः । ऊर्ध्वमुखं विजानीयात् श्यामाभं वर्त
लं शुभम् अर्थोविंदुसमायुक्तं सर्वकामार्थसा
धकमिति । ब्रह्मांडे अल्पद्वारसमोपेतो हरि
मूर्तिरुदाहृतेति । ९ ॥

स्कंदपुराणमें औरकथनकरतेहैं उपेंद्र इति इंद्रनी
लमणिकी न्याई है आभाजिसकी औरछत्रकी न्याई
आकारजिसका औरबडेबलवाला होवे औरसमहै
चक्रजिसमें औरसमअंगवाला होवे औरतीनरे
खाकरके जो युक्तसो उपेंद्रकथनकीयाहै । हरिकी
मूर्तिका लक्षण ब्रह्मपुराणमें कथनकियाहै ऊ
र्ध्वहै मुखजिसका औरहरितवर्णवाला होवे सो
हरिजानना काम औरमोक्षकोदेताहै औरविशे
षकरके धनको देताहै । औरनेसे कथनकरतेहैं
ऊर्ध्वहै मुखजिसका और श्यामवर्णवाला होवे
औरगोलाकार औरअर्थोविंदुकरके जो युक्तसो
काम और अर्थकासाधकजानना । ब्रह्मांडपु
राणमें औरकथनकरतेहैं अल्पमुखकरके जो
युक्तसो हरिमूर्तिकथनकीताहै । ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गरुडे दूर्वाभमकरताभा च नाभिचक्रान्वितो
न्नता हरिमूर्त्तिरिति ख्याता शंखमुद्रासमं
न्विता । विष्णुरहस्ये अतसीपुष्पसंकाशा विं
दुवज्रसमन्विता पारिजातध्वजोपेता वर्तुं
लातिशोभना । प्रदक्षिणावर्त्तयुता वनमा
लाविभूषिता सा शिला हरिसंज्ञा स्याद्धन
धान्यसुखप्रदेति २ पुराणसंग्रहे श्यामलं
कोमलं स्वल्पद्वारं पार्श्वे सुचक्रकं हरिमेनां वि
जानीयात्सर्वपापप्रणाशनमिति १०॥

जो घास की न्याई होवे और मरकत मणि की न्याई है
आभा जिसकी और नाभि में है चक्र जिसके और ऊ
ची होवे शंख और मुद्रा करकें जो युक्त सो हरि की
मूर्ति कथन कीना है १ विष्णुरहस्य में और कथन
करते हैं अतसीपुष्पेति अलसी के पुष्प की न्याई
है प्रकाश जिसका विंदु और वज्र करकें युक्त औ
र पारिजात ध्वजा करकें जो युक्त और गोलाकार
और सुंदर १ और प्रदक्षिणावर्त करकें युक्त और
वनमाला करकें जो भूषित सो शिला हरिसंज्ञावा
ली होती है सो धन और अन्न और सुख को देती
है २ पुराणसंग्रह में और कथन करते हैं जो श्या
म रंगवाला और कोमल और छोटा है मुख जिसका
और पास में सुंदर है चक्र जिसके सो संपूर्ण पाप के
दूर करणेवाला हरि जानना १०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१०४

104

अथ कृष्णमूर्त्तीनां सभेदलक्षणानि पुराण
संग्रहे कृष्णः सबालगोपालः गोवर्धनधरो
पि वा त्रैलोक्यमोहनः कृष्णः सौभाग्यवरद
स्तथा १ रुक्मिणीविजयश्चूडामणिश्चाथध
नंजयः सनातनः पारिजातस्यमंतकहरौ त
था २ कंसकालियचाणूरारिपुमर्दनपूर्वकः
गोवर्धनश्रीसंनातनलक्ष्मीमदनवंशतः ३ उ
त्तरोत्तरः किंच गोवर्धनधरस्तथा भेदा
स्तेषामथो वक्ष्ये लक्षणानि यथाक्रमम् ४
तत्र कृष्णमूर्त्तिलक्षणं ॥

इसते उपरंत कृष्णमूर्त्तियों का भेद के साथ लक्ष
ण कथन करते हैं पुराणसंग्रह में कृष्ण और बाल
कृष्ण और गोपालकृष्ण और गोवर्धनधरकृष्ण
और त्रैलोक्यमोहनकृष्ण और सौभाग्यवरदकृष्ण
रुक्मिणीकृष्ण और विजयकृष्ण और चूडामणि
कृष्ण और धनंजयकृष्ण और सनातनकृष्ण और
पारिजातहरकृष्ण और स्यमंतकहरकृष्ण २
कंसेति कंसमर्दन और कालियमर्दन और चा
णूरमर्दन और गोवर्धन गोपाल और श्रीगोपा
ल और सनातन गोपाल और लक्ष्मीगोपाल औ
र मदनगोपाल और वंशगोपाल ३ और गोवर्धन
धर गोपाल इनके उत्तर उत्तर हैं भेद कथन किये
हैं और क्रम ते लक्षणों को कथन करूंगा ४ जिसमें
कृष्णमूर्त्ति का लक्षण

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मे प्रदक्षिणावर्त्तयुता वनमालाविभूषिता
या शिला कृष्णसंज्ञा सा धनधान्यसुखप्रदेति ।
ब्रह्माण्डे समचक्रा स्याद्देश कृष्णवर्णा सुशो
भना सा कृष्णमूर्तिर्विज्ञेया स्वनित्या सौख्यदा
यिनीति । तथा कृष्णः पीनः कृष्णनवस्रक्
पार्श्वे च चक्रयुक् हारवल्लाभवे नाभिः कूर्मा
कारश्च पृष्ठतः कृष्णो वृत्ताकृतिस्तार्क्ष्यसर्व
सर्वपापनाशनः इति २८ ॥

पद्मपुराणमें कथन करते हैं जो शिला प्रदक्षि
णावर्तकर्के युक्त और वनमालाकर्के भूषित
सो कृष्णसंज्ञावाली शिला धन और अन्न और
सुखकों प्राप्त करताहै । ब्रह्माण्डपुराणमें औ
र कथन करते है सुखमेंहै समचक्र जिसके
और कृष्णवर्णवाली और सुंदर सो कृष्णमूर्ति
जाननी ऐसी होई सुखकों प्राप्त करतीहै ।
और कथन करतेहै कृष्ण और पीन और नाभि
हरि के सदृश होवे और पृष्ठमें कूर्मके आकार
की न्याई होवे । और गोलाकार है आकृती
जिसकी है गरुड सो संपूर्ण पापके हरकरने
वाली कृष्णमूर्ति होती है २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ १-५

बालहंसलक्षणं ब्रह्मांडे उन्नतो मूर्द्धि हंसो भो
निम्नोदरस्य त्रिबिंदुकः स बालहंसो विज्ञेयो
दीर्घस्यः पुत्रभाग्यदः ॥ गोपालहंसलक्षणं
ब्रह्मांडे हंसातिहंसेन स्थूलस्थकाभ्यां शुभ
शोभितः स गोपाल इति प्रोक्तो गोभूधान्यध
नप्रदः ॥ गोकर्णसदृशं चक्रं गोवर्धनहंस
लक्षणं वामनपुराणे गोकर्णसदृशं चक्रं व
ज्ररूपं विशेषतः सुवर्णरूप्यबिंदुश्च वर्तु
ष्कादिकं भवेत् ॥ कुलिशाब्जांकस्त्रदेवः शुः सु
र्णसदृशप्रभः गोवर्धनो भवेद्देवः सो बलाश्रि
यमर्पयेत् २ ॥

बालहंसका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमें कथन करते है
उन्नत इति उच्चा है मस्तक जिसका और हंस है आभा
जिसकी और स्थानतें नीचा होवे और तीन हैं बिंदु जिस
मे और दीर्घ है सो जिसका सो पुत्र और भाग्यके दे
नेवाला बालहंस जानना गोपालहंसका लक्षण
ब्रह्मांड पुराणमें कथन करते हैं बहुत काल और श
छोटी मूर्ति और होच क्रौं कर्के जो सुंदर सो गोवों और
पृथिवी और अन्न और धनकी प्राप्त करणेवाला
गोपालहंस कथन कियो है ॥ गोवर्धनहंसका लक्ष
णका कथन कियो है वामनपुराणमें गौका जो क
र्ण तिसके सदृश है चक्र जिसमें और विशेषतें वज्र
रूप और लाल और श्वेत बिंदु कर्के जो युक्त और चार
चक्रों वाला होवे और कुलिश और कमलका है
चिह्न जिसमें और सुवर्णके सदृश है प्रभा जिस
की सो गोवर्धन देव बल लक्ष्मी को प्राप्त करता
है २ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्रैलोक्यमोहनकृष्णलक्षणं पुराणसंग्रहे ।
कल्पद्रुमं कोमलांगं वनमालाविभूषितं कृ
ष्णवर्णं तथा रक्तं रक्तचक्रेण संयुतम् । शं
खं च शरं चापमूर्ध्वरेखासमन्वितं त्रैलोक्य
मोहनं कृष्णं सर्वसंपत्प्रदायकमिति २ सौभा
ग्यवरदकृष्णलक्षणं पुराणसंग्रहे । उन्नतः
पृष्ठभागे स्यादधोभागे तु वर्तुलः नीलवर्ण
प्रतीकाशो पत्रबाणसमन्वितः । सांकुशो
वामपार्श्वे च वनमालाविभूषितः सौभाग्य
वरदः कृष्णः सर्वसंपत्प्रदायक इति २ ॥

त्रैलोक्यमोहनकालक्षण पुराणसंग्रहमे कथन कि
या है कल्पद्रुममिति कृष्णवृक्षकी न्याईं है आकार
जिसका और कोमल है अंग जिसके और वनमा
लाकर्के जो भूषित और कृष्ण है वर्ण जिसका और
रक्त होवे और रक्तचक्रकर्के जो युक्त । शंख और
शर और बाणका है चिह्न जिसमे और ऊर्ध्वरेखा
कर्के जो युक्त सो सर्व संपदाको देनेवाला त्रैलो
क्यमोहन कृष्ण कथन कीता है २ सौभाग्यवरद
कृष्णका लक्षण पुराणसंग्रहमे कथन किया है
पृष्ठभागमे उच्चा और अधोभागमें गोलाकार हो
वे और नीलवर्णकी न्याईं है प्रकाश जिसका पत्र
प और बाण कर्के जो युक्त । और वामपासेमे
अंकुश क्या ऊंडेका चिह्न होवे और वनमालाकर्के
जो भूषित सो सर्व संपदाको प्राप्त करणेवाला ।
सौभाग्यवरद कृष्ण होता है २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१०९

106

रुक्मिणीवृक्षलक्षणं पुराणसंग्रहे स्निग्ध
श्याममुखं सूक्ष्मनमज्जो ह्यनदप्रभम् समच
क्रसशोभाख्यवामपार्श्वेसविंदुकं । अंकुश
वनमालाचऊर्ध्वरेखासमन्वितं रुक्मिणी
वल्लभंदेवंरुक्मिणीवृक्षसंज्ञकमिति २ वि
जयवृक्षलक्षणं पुराणसंग्रहे धात्रीफल॰
समाकारवृक्षवर्णेनसंयुतः पत्रवाणसमा
युक्तोज्ञेयोविजयवृक्षकरति । चूडामणि
वृक्षलक्षणं स्कंदे जंबूफलसमाकारःऊर्ध्वकू॰
टासनसंस्थितः ॥

रुक्मिणीवृक्षकालक्षणपुराणसंग्रहमेकथनकि
याहै स्निग्धमिति स्निग्ध और श्यामहै मुख जिस
का और सूक्ष्म औ रतनजोहवर्णतिसकीन्याई
है प्रभाजिसकी और समचक्रकर्केसुंदरहै मु
खजिसका और वामपासेमें विंदुहोवे । अंकुश
औरवनमालाकाहै चिह्नजिसमें और ऊर्ध्व
रेखाकर्के जोयुक्तसो रुक्मिणीकाप्यारा रु
क्मिणीवृक्षनामकर्केहोताहै २ विजयवृक्ष
कालक्षणकथनकियाहै पुराणसंग्रहमेंआ॰
मलेन्याईहैआकार जिसकाऔरवृक्षवर्णकर्के
युक्त पत्रप और वाणकर्के जोयुक्त सोविजय॰
वृक्षवर्णकर्केयुक्त पत्रप और वाणकर्के जो॰
युक्तसोविजयवृक्षजानना । चूडामणिवृक्ष॰
कालक्षण स्कंदपुराणमेंकथनकीताहै जंबूफ
लकीन्याईहैआकार जिसका औरऊर्ध्वकूटासनेजो॰
स्थित ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वलयाकृतिरेखाभ्योर्ध्वरेखासमन्वितः ।
धनुःपाशांकितोदेवश्चक्रद्वयसमन्वितः
मालयावेष्टितश्चैवकूर्मश्चूडामणिःस्मृत
इति २ धनंजयकूर्मलक्षणं स्कंदे सव्या
पसव्यरेखाभिर्भूषितःस्थूलचक्रकः पार्श्व
खुरयुक्तो देवो धनंजयविभुःशुभइति । स-
नातनकूर्मलक्षणं स्कंदे हिरण्यगर्भसंका
शः स्थूलचक्रसमन्वितः कूर्मःसनातनः
श्रीमानष्टैश्वर्यफलप्रद इति ॥

ओरवलयआकृति क्या गोलाकार रेखाकर्के
जोयुक्त ओर ऊर्ध्व रेखा कर्के युक्त होवे । धनु
षरिनिधनुष ओरपाशकाहै चिह्न जिसमे ओ
र दोचक्रोंकर्केयुक्त ओरवनमालाकर्केजोयु
क्त सो कूर्मचूडामणिकथनकीनाहै २ धनं-
जयकूर्मकालक्षणस्कंद पुराणमे कथनकि
याहै दहने ओर वाम पासे मे रेखों कर्के जो
भूषित ओरस्थूलहै चक्रजिसमे ओरपासेमखुर
कर्केजोयुक्तसोधनंजयदेवकथनकीनाहै
। सनातनकूर्मकालक्षण स्कंद पुराणमे क
थनकीनाहै हिरण्यगर्भकीन्याईहै प्रकाशजि
सकाओरस्थूल चक्रकर्के जो युक्त सो अष्टसि
द्धिके फलको देनेवाला सना तन कूर्म कथ
नकीनाहै । १० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१०२

107

स्यमंतकहरकृष्णलक्षणं स्कंदे असिवर्णः
श्वेतस्थूलश्चक्रभागेतिशोभनः वनमाला॰
परिवृतः पृष्ठेश्रीवत्सलांछनः स्यमंतहारि
विज्ञेयः पुत्रकीर्तिप्रवर्धनः १ कंसमर्दन
कृष्णलक्षणं ब्रह्मांडे पूर्वभागेकवदनः पा
र्श्ववदनसंयुतः कंसमर्दैभवेत्कृष्णोनीलां
बुदनिभःप्रभः इति १ कालियमनकृष्ण
लक्षणं ब्रह्मांडे दक्षादिवामपर्यंतंप्रलंबाय
ताश्चशोभना रेखासाकृष्णवर्णाभाविद
त्रयविभूषिता कालीयमर्दनः साक्षात्सर्व
शत्रुनिकृंतन इति १ ॥

स्यमंतकहरकृष्णकालक्षण स्कंदपुराणमे क
थन कियाहै अलसीकीन्याईहैवर्णजिसकाश्वे
त ओर स्थूलहोवे ओरचक्रभागमे सुंदरहोवे औ
रवनमालाकरके परिवृतहोवे ओरपृष्ठमे श्रीव॰
त्सका चिह्नहोवेसो पुत्र ओर कीर्तिकेवधाने
वाला स्यमंतकहरकृष्णजानना १ कंसमर्दन
कृष्णकालक्षण ब्रह्मांडपुराणमेंकथनकी॰
याहै पूर्वेति पूर्वभागमेहै मुखजिसका ओर
पार्श्वमेजो मुख तिस करके युक्त ओर नीला जो
मेघ तिसकीन्याईहै आभाजिसकी सोकंसमर्द
न कृष्णहोताहै १ कालीयमर्दनकृष्णकालक्षण
कथन कियाहै ब्रह्मांडपुराणमेंदक्षनेतें लेक
रवामपर्यंत ओर प्रलंबे हें सुंदर रेखा ओरकृ
ष्णवर्णकीन्याई आभाजिसकीहोवे सोसाक्षात्संपूर्ण
शत्रुवोंकेनाशकरनेवालाकालीयमर्दनकृष्णहो
ताहै १

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चाणूरमर्दनलक्षणं ब्रह्मांडे रक्तबिंदुद्वययुतः श्यामो दंतिभुजोपमः रेखा दक्षिणतो वामे मुष्टिवद् दृढबिंदुकः चाणूरमर्दनाख्यः स्यात्सर्वशत्रुनिकृंतनः। गोवर्धनगोपाललक्षणं ब्रह्मांडे वर्तुलो मस्तके निम्नः पार्श्वे रजतबिंदुकः गोवर्धनाख्यो गोपालो दीर्घरेखस्तु दक्षिणे सर्वकष्टविनाशी स्याद्गोभूधान्यधनप्रद इति। श्रीगोपाललक्षणं पुराणसंग्रहे पूर्वलक्षणसंयुक्तं दीर्घाकारं महोदरं श्रीगोपालमिमं प्राहुः सरेखं वंशनालकम्॥ १॥

चाणूरमर्दनका लक्षण कथन करते हैं ब्रह्मांडपुराणमें दो रक्त बिंदु करके जो युक्त और श्याम और हाथीके सुंडकी न्याई है उपमा जिसकी दहने और वाम पासेमें रेखा होवे और मुष्टिकी न्याई दृढ है बिंदु जिसमें सो संपूर्ण शत्रुवांको हरकरणेवाला चाणूरमर्दन कथन किया है। गोवर्धनगोपालका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन किया है। वर्तुल इति गोलाकार और मस्तकमें नीवां होवे और पासेमें श्वेत बिंदु होवे और दहने पासेमें दीर्घ रेखा होवे सो संपूर्ण कष्टके नाश करणेवाला और गौवां और पृथिवी और अन्न और धनको देनेवाला गोवर्धनगोपाल कथन कीता है। श्रीगोपालका लक्षण पुराणसंग्रहमें कथन करते हैं इस प्रथम लक्षणकरके जो युक्त और दीर्घ है आकार जिसका और बडे उदरवाला होवे और वांसकी नालीकी न्याई रेखा होवे इसको श्रीगोपाल कथन करते हैं २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संतानगोपालक्षणं ब्रह्मांडे दीर्घाकारः कृ-
ष्णवर्णः सार्धचंद्रनिभाननः यस्मात्संतानगो-
पालः पुत्रपौत्रादिवर्धनः १ लक्ष्मीगोपालल-
क्षणं पुराणसंग्रहे ककुटांडसमोपेतः श्रीध-
रेवनमालया वेणुलांगलचिन्हाभ्यां कुंड-
लाभ्यां च विन्हितः १ लक्ष्मीगोपालको देवो
दुर्लभो भुवनत्रये वित्तलाभः प्रदः संपद्भु-
क्तिमुक्तिफलप्रदः १

संतान गोपालका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे क-
थन कीता है दीर्घ है आकार जिसका और कृष्ण
वर्णवाला होवे और अर्धचंद्रमाकी न्याई है मु-
ख जिसका सो पुत्र और पौत्रकों वधानेवा-
ला संतान गोपाल होता है १ ॥ लक्ष्मीगोपा-
लका लक्षण पुराणसंग्रहमे कथन किया है
ककुवेति जो ककुटीके अंडे की न्याई होवे औ-
र श्रीके धारणेवाला और वनमाला और वे-
णु और लांगल और कुंडल इनो चिन्होकर
कै जो चिन्हित १ सो लक्ष्मीगोपाल तीन भु-
वनो में दुर्लभ है और सो धनका लाभ औ-
र संपदा और भक्ति और मुक्ति के फलको
देता है २ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मदनगोपाललक्षणं ब्रह्मांडे योगोपालः पार्श्वभागे कल्याल्पनकत्रमवेत् मस्मान्म दनगोपालो मालाकुंडलभूषितः पुत्रपौत्र धनैश्वर्यसर्वलोकैकवश्यद इति। वंशगो पाललक्षणं ब्रह्मांडे चक्रद्वयं चारुवेणुं बिंदुत्रयसमन्वितम् धनुर्बाणसमायुक्तं वंश गोपालसंज्ञकमिति। गोवर्धनधरलक्षणं वैखानससंहितायाम् घनश्यामस्तनस्त्र को बिंदुत्रयसमन्वितः ऊर्ध्वरेखासमायुक्तः

पार्श्वेरत्नबिंदुकः।।

मदनगोपालकालक्षणब्रह्मांडपुराणमेकथन करतेहैं जिसकेपासेमें कल्प वृत्तोंकाचिन्ह हो वे माला औरकुंडलोंकरकें जोभूषितसो पुत्र औरपौत्र औरधन और ऐश्वर्य और संपूर्णलो कोंकी वश्यताकों प्राप्तकरणेवाला मदनगो पालहोताहे। वंशगोपालकालक्षणब्रह्मांड पुराणमेकथनकरतेहै दोहै चक्र जिसमें और सुंदर जो वेणु तिसकाहै चिन्हजिसमें और तीनबिंदुकरकें युक्तधनुष औरबाणकरकेंजोयुक्त सोवंशगोपालनामककरकेंहोताहे। गोवर्धना धरकालक्षणवैखानससंहितामेकथनकी याहे घनश्यामइति मेघकीन्याई जो श्याम और वारहे चक्रजिसमे औरतीन बिंदुकरकें युक्त और ऊर्ध्व रेखाकरकें युक्त और पासे मे रत्न बिंदु होतेहे।।८।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्वर्णाविंदुसमायुक्तो वनमालाविभूषितः
गोवर्धनधरो देवो गोभूधनविवर्धन २ वैकुं
ठमूर्तिलक्षणा आले वैकुंठो मणिवर्णाभ-
श्चक्रमेकं नयात्रुनम् द्वारोपरिभवेद्रेखाकं
बाकारासुशोभनेति १ अग्निपुराणे वैकुं
ठ एकचक्रो वै मणाभः स्वच्छरेखिक इति १
वैखानससंहितायाम् वैकुंठो मणिवर्णा
भश्चक्रमेकं नयात्रुजं द्वारोपरिनयारेखा
चक्रचिह्नेन संयुतः १ ॥

और स्वर्णकी यां विंदु करकै युक्त और वनमाला
करकै जो भूषित सो देव गौवां और पृथिवी और धन
कों वधानेवाला गोवर्धनधर होत्ताहै २ वैकुंठमू
र्तिका लक्षण ब्रह्मपुराणमे कथन करतेहै म
णिके वर्णकी न्याई है आभा जिसकी एक चक्र औ
र कमलका है चिह्न जिसमे और मुखमे रेखा हो
वे और सुंदर स्तनागोका है आकार जिसमे सो वै
कुंठ मूर्ति होताहै १ आग्नेपुराणमे और कथन क
रतेहैं एक है चक्र जिसमें और मणिकी न्याई है
आभा जिसकी और सुंदर रेखावाला होवे सो
वैकुंठ कथन कीयाहै १ वैखानससंहितामें औ
र कथन करतेहै वैकुंठ इति मणिकी वर्णकी
न्याई है आभा जिसकी चक्र और कमलका है
चिह्न जिसमे और मुखके उपर रेखा होवे औ
र चक्रके चिह्न करकै जो युक्त सो वैकुंठ हो
ताहै १ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैडूर्यो मणिवर्णाभो वामपार्श्वैकचक्रकः हारोपरि तथा रेखा पद्माकारा सुशोभनेति २
तथा अतिस्निग्धः सुवृत्तश्च वर्तुलहारसंयुतः बिलमध्ये तथा चक्रं दृश्यते त्यंतशोभनम् १ ब्रह्मांडे वैकुंठे मणिवर्णाभो वामपार्श्वैकचक्रकः चक्रस्य दक्षिणे पार्श्वे युगमणिर्भास्करो भवेत् वर्तुलाकारसंयुक्तो मोक्षादिफलदायकः १

मणिकी न्याई है आभा जिसकी और वामपासे में एक चक्र होवे और मुखके उपर और कमलके आकारकी न्याई जो सुंदर रेखा होवे सो वैकुंठ कथन कीता है २ और कथन करते हैं अतिस्निग्ध और सुवृत्त और गोलाकार मुख करके जो युक्त और बिलके मध्यमे अत्यंत सुंदर चक्र देखिये सो वैकुंठ होता है १ ब्रह्मांड पुराणमें और कथन करते हैं मणिकी न्याई है आभा जिसकी और पासे मे एक चक्र होवे और चक्रके दक्षिण पासेमे सूर्यका चक्र होवे और गोल आकार करके जो युक्त सो मोक्षको देनेवाला वैकुंठ होता है १ ॥

सा॰
ग्राम॰
११॰

विस्तररहस्ये पद्मरेखागदाकारलांछनेम-
ध्यदेशतः वैकुंठोमणिवर्णाभश्चक्रेणैकेन
शोभितम् । तथा वैकुंठोमणिवर्णाभो
वामतश्चैवचक्रकः हारोपरिमध्यरेखाप
द्माकारगताशुभा । हयग्रीवलक्षणं पद्मे
हयग्रीवश्च संज्ञेयो योंऽकुशप्रतिरूपकः च
क्रद्वयसमायुक्तः पूजितःसौख्यदस्तन इ
ति । ब्रह्मपुराणे हयग्रीवो हयाकारो रे-
खाचक्रसमीपगा बहुरूपसमाकीर्णः पृ
ष्ठे स्यान्नीलरूपक इति ।

विस्तररहस्य में और कथन करते हैं पद्मरेखा जिस पद्म
की है रेखा जिसमें और मध्य में गदा की आकार
की न्याई चिह्न होवे और मणि की न्याई आभा जि-
सकी चक्र और कमल का है चिह्न जिसमें सो वै-
कुंठ होता है । और तिसे कथन करते हैं चिह्न जि-
समें सो मणि की न्याई है आभा जिसकी और वाम
पासे में एक चक्र होवे और मुख में कमल का है
आकार जिसमें ऐसी रेखा होवे सो वैकुंठ होता है
हयग्रीव का लक्षण पद्मपुराण में कथन किया
है जो अंकुश की न्याई होवे और दो चक्र करके युक्त
होवे सो हयग्रीव नाम करके होता है सो पूजित हुआ
सुख को प्राप्त करता है । ब्रह्मपुराण में
और कथन करते हैं घोड़े का है आकार जिसका
और चक्र के समीप रेखा होवे और बहुत रूपों करके
जो युक्त और पृष्ठ में नीला होवे सो हयग्रीव होता है

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अग्निपुराणे हयग्रीवोऽङ्कुशाकारो रेखानीलः
सबिंदुकः इति । तथा हयग्रीवोऽङ्कुशाकारो रे
खाः पंच भवंति हि बहुबिंदुसमाकीर्णोऽरूप
णेनीलरूपक इति । तथा हयग्रीवाकृतिर्लं
बा रेखाकाया शिला भवेत् हयग्रीवा शिलास
ला सन्निना ज्ञानदा नृणामिति । अश्वाकृति
मुखं यस्य साक्षमालं शिरस्तथा पद्माकृति
र्भवेद्वापि हयग्रीवस्तु सोमतः २ पुराणसंग्रहे
हयग्रीवोऽपि भगवान् ऋषिनादिविमिश्रितः अंकु
शाकृतिर्विस्तारैश्चक्रद्वयसमन्वितः ।।

अग्निपुराणमें और कथन करते हैं हयग्रीव इति अंकु
शकी न्याई है आकार जिसका और नीले हैं रेखा जिसमें
और बिंदुवाला होवे सो हयग्रीव होता है । और तैसे
कथन करते हैं अंकुशका है आकार जिसका और पंच
रेखा वाला होवे और बहुत बिंदु करके युक्त होवे
और नीला है रूप जिसका सो हयग्रीव होता है । औ
र कथन करते हैं जो शिला घोड़े की न्याई लंबी होवे
और रेखा का है चिह्न जिसमें सो हयग्रीव शिला
होती है सो हमेशा पुरुषों को ज्ञान प्राप्त करती
है । घोड़े के न्याई है मुख जिसका और जिसके शिरमें
रुद्राक्षमाला का चिह्न होवे वा पद्मकी आकृति वाला
होवे सो हयग्रीव जानना २ पुराणसंग्रहमें और क
थन करते हैं अंकुश की न्याई है आकृति जिसकी
और दो चक्रों करके जो युक्त है गरुड़ सो ऋषिनादियों क
र्के मिश्रित भगवान हयग्रीव कथन कीता है ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्माकृतिस्तथापार्श्वेऽङ्कुशाकृतिरेव वा ज्ञा-
नदो मोक्षदो नृणां भोगदो वितनोत्विति २
वाराहे हयग्रीवोऽरुणाकारो रेखाचक्रसमन्वि-
तः कृष्णवर्णः समाख्यातो महाविद्याप्रदो म-
त इति तथा कपिलो वर्तुलोऽत्यन्तः स्पष्टचक्र-
समन्वितः पंचबिंदुः समेपेतः परविद्याप्रदो
नृणामिति १ चतुर्भुजमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे
चतुर्भुजस्ततश्चक्रो नवमेघसमद्युतिः मंड-
लाकारचक्रः स्यात् सर्वेषां भुवि दुर्लभ इति १

पद्माकृतिरिति पद्मकी न्याई आकृतिवाला वा अङ्कु-
शकी आकृतिवाला होवे हे गरुड सो पुरुषोंको
ज्ञान और मोक्ष और भोगको देता है २ वाराहपुरा-
णमे और कथन करते है अरुणकी न्याई है आका-
र जिसका रेखा और चक्रकरके जो युक्त और कृष्ण
है वर्ण जिसका सो महाविद्याके देनेवाला हय-
ग्रीव कथन कीना है १ और कथन करते है कपि-
ल और गोलाकार और अभ्यंतर मे स्पष्ट चक्रकरके
युक्त और पंचबिंदुकरके जो युक्त सो पुरुषोंको
परविद्याके देनेवाला हयग्रीव कथन कीना है
१ चतुर्भुज मूर्तिका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमे क-
थन कीना है चार है चक्र जिसमें और नवीन मे-
घकी न्याई है प्रकाश जिसका और मंडलाकार
है चक्र जिसमे सो चतुर्भुज पृथिवीमे दुर्लभ
है १ ॥१८॥

चक्रद्वयं मुखे यस्य श्यामांगो वर्तुलाकृतिः
देवो गदाधरो नाम राजसूयफलप्रद इति ।
तथा चक्रद्वयं वदने समंताद्वर्तुलाकृतिः
देवं गदाधरं शुक्लं राजसूयफलप्रदमिति ।
पुंडरीकाक्षलक्षणं अस्तोडे पार्श्वे वा मूर्ध्नि वा
पृष्ठे वा चामरद्वयसंयुता पुंडरीकाक्षमूर्तिः
स्यात्सर्वलोकवशंकरी इति । तथा ह्यरोप
रितथ्योरेखा पद्माकारा हशोभना पार्श्वे वा
मूर्ध्नि पृष्ठे वा नयनद्वयसंयुतेति । ॥

चक्रद्वयमिति जिसके मुख मे दो चक्र होवें और
श्याम है अंग जिसका और गोलाकार है आकृति
जिसकी सो राजसूय यज्ञ के फल को देनेवाला ग
दाधर नामक के देव होता है । और कथन करते हैं
जिसके मुख में दो चक्र होवें और चारो ओर ते गोला
कार होवे सो राजसूय के फल को देने वाला गदाध
र देव होता है । पुंडरीकाक्ष का लक्षण अस्तोडु
रा शा मे कथन किया है जिसके पासे मे मस्तक मे
वा पृष्ठ में चौरीयों के दो चिह्नों कर के जो युक्त सो सं
पूर्ण लोक कों वश करने वाली पुंडरीकाक्ष की
मूर्ति होता है । और जैसे कथन करते हैं जिसके
जिसके मुख मे कमल की न्याई है आकार जिस
का ऐसी रेखा होवे और पासे मे वा मस्तक वा पृष्ठ
मे नेत्रों के दो चिह्न होवें सो पुंडरीकाक्ष हो
ता है । ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुंडरीकामूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे एकचक्रयुतो॰
चक्रेश्वेतवर्णसमन्वितः पुंडरीकः समाख्या
नः एज्जितोमोक्षदायकइति । सुदर्शनमूर्त्ति
लक्षणं पुराणसंग्रहे सुदर्शनंत्रिधाज्ञेयंलक्ष
णांतरभेदतः शुद्धसुदर्शनंचैवतथोभयसु
दर्शनं सुदर्शनसमाख्यंच सेयंलक्षणकोवि
देरिति । तत्रादौ शुद्धसुदर्शनलक्षणं पुराण
संग्रहे एकचक्रः शिरोदेशे पार्श्वे शंखादिचि
ह्नितः असौसुदर्शनोदेवः एजनात्सर्वकाम
दः । ॥

इसते उपरंत पुंडरीककालक्षणब्रह्मांडपुराण
मेकथनकियाहै एकचक्रतिजिसकेमस्तकमे एक
चक्रहोवे औरश्वेतवर्णकर्केजोयुक्त सोपुंडरी
ककथनकीताहै सोएजिआहुआमोक्षकौं
देताहै । सुदर्शनमूर्त्तिकालक्षणपुराणसं
ग्रहमेकथनकरतेहैं लक्षणकोंजाननेवा
लेजोबुद्धिमान् तिनोने लक्षणांतरभेदते
सुदर्शनतीनप्रकारकाजानीदाहै कौनसे शु
द्धसुदर्शन १ औरउभयसुदर्शन २ औसमसुद
र्शन ३ प्रथमशुद्धसुदर्शनकालक्षणकथन॰
कियाहै पुराणसंग्रहमेंजिसकेशिरमे एकच
क्रहोवे औरपासेमे शंखादिचिह्नहोवे सोए
जनतें संपूर्णकामके देनेवाला शुद्धसुदर्श
नदेवहोताहै । ॥ ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अजामिलकथां वक्ष्ये परमाश्चर्यकारिणीं य
स्मिन्नाम्नश्च माहात्म्यं व्यंजेच्चक्रे जनार्दन ५४ आ
सीत्कश्चिद्द्विजः पूर्वमेनवैरेति विश्रुतः का
निकुब्जातिधनवान्सर्वैधर्मविवर्जितः ५५
दुःसंगविवशाद्विप्रो वेश्यायां निरतोऽभवत्
मद्यं वा पिबते नित्यं मांसमश्नाति नित्यशः
विसस्मार निजं ज्ञाति कर्म नाम तथा हरेः प
वं भूतो वंधुवर्गैस्त्यक्तो ग्रामसमीपतः ५७
निर्माय भवनं वेश्यां संरक्ष्य गृहिणीमिव
उवास ग्रामाद्बाह्ये स चांडाल इवापरः ५८

अव इसमें वडे आश्चर्य के करणेवाली अजामिलकी
कथा कथन करते हैं जिसमें भगवानजी अपने नामके
माहात्म्याकों प्रगट करते भये ५४ पूर्व एक समय अंत
र्वेदी देशके मध्यमें कान्यकुब्जनीवाला धनवान
सारे धर्मों से वाहर कराहुया अजामिलनामक कैं ब्रा
ह्मण निवास कर्त्ता था ५५ सो खोटी संगति के वशतें
वेश्या गमन करनेमें तत्पर होता भया नित्य मदि
रापान कर्त्ता भया और मास भी नित्य प्रति खाता भया ५६
और सो ब्राह्मण अपनी जाति का जो ब्राह्मणका कर्म
और हरि का नाम तिसकों विसार देता भया इस प्र
कार का जद होगया तद बांधवोंने मिल करजा
तिसें वाहर करदिया ५७ तदतिसने ग्रामकी वाहर
सुंदर एक स्थान वनायकर तिसमें वेश्याकों
विवाहित स्त्रीकी न्याई रखकर दूसरे एक चां
डालकी न्याई निवास कर्त्ता भया ५८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परंतु स्वगृहद्वारमंगनं चापि सर्वदा ब्राह्मणा
श्रमवत्स्फीतं रत्नाजामिलेन सा: ८९ एवं
विनायकान्तिचित्स्समन्त्वाद्विजाधमः गृहि
णीवेश्यया रेमे मद्यपानरतः सदा ९० एक
दा तत्समीपे च ग्रामे तु आगतोऽतिथिः सायं
काले विप्रभक्तः शालग्रामशिलां वहन् ९१
केचिदाह्वातिथिः प्रेम्णा निशयवनिवसाम्य
हम् स्थलं दर्शय वासार्थं सोब्रवीद्विदुर्जनः ९२

परंतु अपने घर का द्वार और वे आ सर्वदा ब्राह्मणों
कें आश्रम की न्याईं बनाय रखती भई ऐसे आश्र
म मैं अजामिल कों भी रखती भई ८९ इस प्रकार
कितनेक वर्ष सो द्विजाधम गृहिणी वेश्या करकें
सर्वदा काल मद्य पान करने मे रत सोपआ हूआ
या व्यतीत कर्ता भया ९० एक दिन तिस घर के
समीपवर्ती ग्राम मैं कोई शालग्राम की शिला लि
येहूए सायं काल के समय अतिथि साधु आय
ग्राम सोपआ ९१ किसी के पुरुष कों बड़े प्रे
मकर मधुर वाणी से कहने लगा बाबा
मैंने रात भर रहना है कोई जगा मेरे कों
दिखा ९२ ॥

113

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अतसीपुष्पसंकाशो बिंदुनापरिभूषितः सु
दर्शनः स्मृतो देवः श्यामो भूमिसुखप्रद इति २
अस्त्यपुराणे सुदर्शनसंज्ञा देवः श्यामवर्णो म
हाद्युतिः वामपार्श्वे गदाचक्रे रेखा चैव तद्दक्षिणे
इति १ अस्त्यांडे एकचक्रं शिरोदेशे हंससवर्ण
मुखस्तथा सुदर्शनः स विज्ञेयः सर्वपापप्रणा
शन इति पाद्मे चक्राकाररेखापंक्तिश्च यत्र रेखा
मयी भवेत् स सुदर्शन इत्येवं ज्ञेयो नः पूजाफ
लप्रद इति १ ॥ ९ ॥

अतसीति अलसीके पुष्पकी न्याई है प्रकाश जिस
का और बिंदुकर कें भूषित और श्याम सो पृथिवी और सु
खकों देनेवाला सुदर्शन कथन किया है २ अस्त्यपु
राणमे और कथन करते है श्यामवर्णवाला होवे
और बडा है तेज जिसका और बामपासमे गदा औ
र चक्र होवे और दहनेमैं रेखा होवे सो सुदर्शन दे
व होता है १ अस्त्यांडपुराणमे और कथन किया है
जिसके शिरमे एकचक्र होवे और तैसे हंससवर्ण
वाला मुख होवे सो संपूर्ण पापके नाश करणे
वाला सुदर्शन जानना १ पद्मपुराणमे और क
थन करते है जिसमे चक्राकारकी न्याई रेखा वा
ली पंक्ति होवे सो सुदर्शन जानना सो पूजित किया
हूआ संपूर्ण फलकों देता है १ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तथा सुदर्शनं तथाज्ञेयं सर्वपापप्रनाशनं पद्मा
सनं दृढचक्रं निम्ननाभि सुदर्शनं यतिभिः पू
जनीयं च त्रैलोक्य चक्रं सरक्तकमिति १ तथा सु
दर्शनं कृस्नवर्णमुत्तमं परिकीर्तितं मधुवर्णं
मध्यमं स्यात्कपिलं तत्परित्यजेदिति २ तथा
नवांकितं कृस्नवर्णं विंदुना परिशोभितं सु
रारेखासमायुक्तं नराणां भुक्तिमुक्तिदमि
ति ३ ॥

और तैसे कथन करते हैं तथेति कमलकी न्याई है
आसन जिसका और दृढ है चक्र जिसमे और नीवीं
है नाभि जिसकी और रक्तवर्णवाली है एक च
क्रका है चिन्ह जिसमे सो सुदर्शन जानना ति
सका यतियोंने पूजन करणे योग्य है १ और तैसे
कथन करते हैं कृस्नवर्णवाला जो सुदर्शन सो
उत्तम कथन किया है और जो मखीर के रंगवा
ला होवे सो मध्यम होता है और जो कपिलव
र्णवाला होवे तिसको त्यागना चाहिये २ और तै
से कथन करते हैं नहिं है चिन्ह जिसमे और कृ
स्न है वर्ण जिसका और विंदु करके भूषित औ
र सुवर्णकी रेखा करके जो युक्त सो सुदर्श
न पुरुषोंको भुक्ति और मुक्तिको देता है
३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततः प्रांजलिराहेदं कृपोयमुदकं ततः गृ
हाण नाहमुदकं दातुं योग्या त्वजाय मा ११
इति श्रुत्वा द्विजा साधुस्तद्वहिर्मंदिरे स्वयं
उपलिप्य सुचौ देशे पक्वा देवं समर्प्य च १२
बुभुजे निशि सुष्वाप सुप्रीतेनांतरात्मना
अथार्धरात्रसमये वारुणीमदविह्वलः १३
अजामिलः समायातो निन्ये तं सा द्रुतं गृहे
अथ रात्र्यां व्यतीतायां प्रभाते सोतिथि र्द्विजः
गंतुं प्रवृत्तो द्वारिस्थस्त्राम्नुहाव पुनस्तनम १४

तिसके उपरंत हाथ जोडकर बोली हे साधु यह
स्तल है इसका जल लनि काल लेमैं अंत्यज स्त्रि॰
छ जाती हूं मैंने अपना हाथ नहि लगाना है ११
इह वचन सुनकर सो ब्राह्मण साधु तिसके घर
के बाहर सुंदर चोका लगाय पवित्र स्थान बना॰
यकर भोजन तियार करके विसको नैवेद्य लगा
या आप भी भोजन करा प्रसन्न मन होकर्के रात
कों सोय रहा १२ इससें उपरंत वारुणी मंदिरके पा
न करके मस्त व्याकुल होयआ ऊया आधी रात
के समय अजामिल आया तद तिसकों वेश्या
शीघ्र घरके अंदर लेगई १३ अब इससें उपरंत रा
त के व्यतीत होय हुय निर्मल प्रभात का समय
तद रूपा तद निद्रा त्याग परमेश्वर का स्मरन कर
जाने लगा तब फिर द्वारमें स्थित होकर अजा
मिल कों उठाने लगा १४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नदेवं रात्रिहन्तांतमथाचाजामिलायसा पु
नरहम्रजास्मवंगतालंचनमस्करु १५ स
दास्मतिवरंवैवपुत्रवरयमेप्रियं इतिश्रु
त्वागजोद्वारितंसाधं प्रणनामहू १६ नमा
हसाधुःसंतुष्टस्त्वयिदास्यामितेवरं ब्रूहि
हिश्रुत्वाप्रोवाचप्रांजलिःसोप्यजामिलः
१७ भगवन्ननपत्योहंपुत्रोमेजायतामि
ति प्रार्थयामिवरंत्वत्तोनान्यमिच्छाम्यहेव
रम् १८ ॥

सोवेश्या तिसरात्रिकेहन्तांतकोअजामिलके
तांई श्रवणकरावतीभई फिर कहनेलगीसो
जानेवालाहै तूंशीघ्रउसकेपासजाकेनमस्कार
कर १५ सोतेरेकों प्रसन्नहोयआहोया जेका
रतेरेकोंवरदेवेंगा तदमेराप्यारा पुत्र वरनाका
पहकहना कीइसवेश्यामे पुत्रहोवे पहवचा
नसुनकर अजामिल द्वारपरजाके तिससा
धुको प्रणामकर्ताभया १६ तदतिसकोंसो
साधु बोला मैंतमारे परप्रसन्नहुयाहां तेरे
कोंवरदेताहूं जोतेरीइच्छाहै सोवर मांगले पहवा
क्यश्रवणकर सोअजामिलहाथजोडकरबोला
१७ हेभगवन् मैंविनासंतानकेहां मेरेघर पु
त्र होवे वरतमारे सें मांगताहूं औरकिसी
इच्छा नहि कर्ताहूं १८ ॥

परमहंसमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे परमहंसः
खगेशानशिखंडिगलसन्निभः स्निग्धश्याय
नहेतश्च वर्नलढ्यसंयुतः तथा विलम
ध्येतथा चक्रे द्वे शुभतेयत्रशोभने चक्रसद
क्षिणोपार्श्वे द्युमणिर्भास्वरो भवेत् । वामहे
रेखायत्रामेदृश्यते विततासन मूर्तिःपर
महंसाख्याचतुर्वर्गफलप्रदेति । लक्ष्मी
पतिलक्षणं ब्रह्मांडे मुखेवापार्श्वतोवापि
मयूरगलसन्निभः कृष्णवर्णसल्मचक्रः स्थू
लास्यः स्रगन्वितः लक्ष्मीपतिरितिख्यातो
लक्ष्मीसंपत्तिदायक इति ।

परमहंसमूर्तिकालक्षणब्रह्मांडपुराणमेकथन
कियाहै परमहंसइति हेगरुड जो मोरके गलकी
न्याई चिह्नोंवाला होवे और थिंदा और विस्तारवा
ला गोलाकार और गोलाकारमुखकर्के युक्त
सोपरमहंस होताहै । और तिसे कथन करते हैं
जिस शिलाके विलके मध्यमें सुंदर दो चक्र होवे
और चक्रके दहने पासेमें सूर्यका चिह्न होवे । जि
सके वामपासेमें सूर्यकी न्याई रेखा देखियेसो
हेगरुड धर्मअर्थकाममोक्षके फलको देनेवा
ली परमहंसकी मूर्तिकथन कीताहै । लक्ष्मी
पतिकालक्षणब्रह्मांडपुराणमेकथन कीताहै मु
खमें और पासेमें मोरकेगलकी सदृश होवे और कृ
ष्णहै वर्ण जिसका और स्थूलसाहै चक्र जिसमे और वडा
है मुख जिसका और मालीकर्के जो युक्त सो लक्ष्मीकी जो
संपत्ति तिसको देनेवाला लक्ष्मीपति कथन कीयाहै ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
११९

गरुडध्वजमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे स्वर्णशृंगखु
रःसौम्योवर्तुलःस्निग्धकेसरः चक्रेमध्यग
ते कृष्णेरेखाविंदुविभूषितः १ लक्ष्मीकरो
वैनतेयगरुडध्वजसंज्ञक इति २ वटपत्र॰
शायिलक्षणं ब्रह्मांडे वटपत्रशायीभगवान्
वर्तुलोऽत्यंतशोभनः तीरवुद्बुदवत्तासैनी
लश्वेतविमिश्रितः १ वक्त्रस्यवामतःशंखोद
क्षिणेपद्ममेवच वदनेकमध्यदेशेचतुश्चक्र
स्त्रिविंदुकः इति ॥ २ ॥

116

गरुडध्वजमूर्तिकालक्षणब्रह्मांडपुराणमेकथ
नकियाहै स्वर्णजिस्वर्णकाहै शृंग और खुरजि
समें और सौम्य और गोलाकार और स्निग्धकेसर
वाला और मध्यमे कृष्ण चक्रहोवे रेखा औरविं
दुकर्के जोभूषित १ हैगरुडसो लक्ष्मीकेशा
यीका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथनकिया
है गोलाकार और अत्यंतसुंदर और उदकके
बुलबुलेकीन्याई होवे हैगरुड नील और॰
श्वेत कर्के मिश्रित १ मुखके वामपासे शं
ख और दहनेमें कमलका चिह्न होवे और
मुखकेमध्यदेशमे चार चक्रहोंण औरती
नहैविंदु जिसमे सो वटपत्रशायी भगवा॰
न कथनकीताहै ॥ १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शेषशायिलक्षणं ब्रह्मांडे फणाकारशिला
यस्यमुखेचक्रद्वयं भवेत् शेषशायाभिधःकेशे
कृस्नवर्णोमहाद्युतिः १ ऊर्ध्वरेखासमायुक्तो
वनमालाविभूषितः शेषशायीतिविख्यातः
सर्वैश्वर्यप्रदायक इति २ विश्वंभरमूर्तिल
क्षणं ब्रह्मांडे चक्राणांचापिविंशत्यायुक्तो
विश्वंभरःप्रभुः भुक्तिमुक्तिप्रदोन्नृणांमंते
मोक्षप्रदायक इति १॥

शेषशायीका लक्षण कथन कियाहै ब्रह्मांडपु
राणमें फणोंकि जिसकी शिला फणाके आका
रकीन्याई होवे और मुखमें दोचक्र होंणसोशेष
शायीहोताहै अथवा दोचक्रोंवालाहोवे और कृ
स्नवर्ण वाला और बडे तेजवाला १ और ऊर्ध्व
रेखाकर्केयुक्त और वन मालाकर्के भूषित सो
संपूर्णऐश्वर्यके देने वाला शेषशायी कथनकी
ताहै २ विश्वंभरमूर्तिकालक्षणब्रह्मांडपुरा
णमेंकथनकरतेहैं वीस चक्रोंकर्केजोयुक्त
सो विश्वंभर कथन कीताहे सोपुरुषोंकोभु
क्ति और मुक्तिकोंदेताहै और अंतमे मोक्षकों
देताहै ॥ १॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

117

पीतांबरमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे स्निग्धोगोरोच
नाकारःसचक्रोवर्त्तुलोपिवा पीतांवरपरोदे
वःसौख्यदःशुभदोःस्मिनःइति । तथा द्वारा
देशेभवेच्चक्रंवज्रवर्णसमन्वितः पीतांबरप
रोदेवःसौख्यैकफलदोर्चित इति । सत्यवी
रश्रवसोलक्षणं ब्रह्मांडे सवर्त्तलोहृदचक्र
सर्वांगेहेमविंदुकः सत्यवीरश्रवाःप्रोक्तःस
र्वसौभाग्यवर्धनइति । तथा वर्त्तुलःपंचव
क्रःस्यात्सर्वांगेहेमविंदुकः सत्यवीरश्रवानाः
मसर्वसौभाग्यवर्धनइति ।

पीतांवरमूर्त्तिकालक्षणब्रह्मांडपुराणमेंकथनकी
नाहै स्निग्धइति स्निग्ध और गोरोचनकेरंगवाला
और चक्रवाला औरगोलाकारहोवे सोपीतांवर
देवहोताहै पूजियाहुआ सो सुख औरशुभकों
देताहै । औरकथनकरतेहैं मुखमेंएकचक्रहो
वे औरवज्रनवर्णकर्के जोयुक्त सोपीतांवरपू
जिआहुआ सुखकोंदेताहै । सत्यवीर श्रवका
लक्षण ब्रह्मांडपुराणमेंकथनकीनाहै गोला
कार और हृदयमेंहै चक्रजिसके औरसंपूर्णअं
गमें सुवर्णकीविंदुवालाहोवेसो सौभाग्यकेदें
नेवाला सत्यवीर श्रवा कथनकियाहै । औरकथ
नकरतेहैं गोलाकार और ५ पंचमुखोंवालाहो
वे औरसंपूर्णअंगोंमें सुवर्णकीयांहै विंदुजिसमें
सो सौभाग्यकों वधानेवालासत्यवीरश्रवाक
थनकियाहै । ८ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इति श्रुत्वा वचस्तस्य सोऽतिथिः प्राह तं वचः
अहो ते भविता पुत्रः सत्यमेव न संशयः ७९
परंतु तस्य नामाहो नारायण इति त्वयः रति
नयमिति सीतः स्थापनीयो मदीरितं ८० इत्यु
क्त्वा स गतो विप्रो जामिलोपि गमद्गृहं वे
श्यायै सर्वमाचख्यौ श्रुत्वा चापि जहर्ष च ८१
ततः कतिपये काले जाते सा गर्भवत्यभूत्
सुषुवे दशमे मासि पुत्रं सर्वांगसुंदरम् ८२

यह वचन सुनकर तिसका सो अतिथी साधु ति
सकों कहने लगा अच्छा तेरे घर पुत्र होवेगा
यह बात सत्य है इसमें संशय नहिं है ७९ परं
तु तिसका नाम मेरे कहने सें नारायण ऐसे
रखना और तिसकों अंदर में स्थापन करना ८०
ऐसा कहकर सो ब्राह्मण कहीं चला गया और
अजामिल भी अपने घरकों चला आया सो सा
रा वृत्तांत वेश्या के ताईं कह दिया सुनकर
ओह प्रसन्न भई ८१ तिससें उपरंत कितनेक
समयके व्यतीत होगए पीछे सो गर्भवती हो
ई दशम मासमें सारे अंगोंसे सुंदर मनोहर
बालक जनती भई ८२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्रम॰
११९

ततोनामापिचक्रेसनारायणायतिस्फुटं सो
प्यवर्द्धत कालेन युवावस्थामुपागतः ८३ अ
जामिलो निहदी भूत्वा रयाजर्जरीकृतः तां
श्चापि मदिरापानं मांसाद्याहारं न तत्यजे ८४
अथ सोजामिलो रोगाक्रियमाणो गृहे स्थितः
शय्यायां सेवितः प्रीत्या रुदंत्या वेश्यया सह
अथ तं म्रियमाणं तु ज्ञात्वा चैव स्वतः प्रभुः प्रा
हदूतान्दंडपाश हस्तानतिभयंकरान् ८६

118

तद नारायण यह स्फुट प्रसिद्ध नाम रखता भ
या तो सो बालक अपने समय करके युवावस्था कों
आमहोपआ ८३ अजामिल वृद्धावस्थाकों प्रा
प्त होगया जरा करके जर्जरी देह जिसका होग
या तद भी मांस मदिराकों नहि त्यागताभया
८४ इससें उपरंत सो अजामिल रोगसें मरणा
के तल्प घरमें स्थित शय्यापर लंबा पडरहा
ताभया तो रोदन कर्ती वेश्यानें बडे प्रीति क
रकें सेवा करी होभयी ८५ अव इससें उपरंत
धर्मराज मरणेवाले तिसकों जानके बडे
भयंकर दंडफांसियां हाथ वाले दूतोंकों
कहता भया ८६ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुरारिमूर्त्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे मध्येचक्रं
शिलासूक्ष्मंदक्षिणांगेचपुष्कलम् मुरारिदे
वतेदेहकुष्टव्याधिविनाशनमिति । मकुंद
मूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे अत्यास्योवक्रच
क्रेश्च श्यामवर्णस्तथोज्वलः मकुंदःसर्व
पापघ्नः पांडुरेवफलप्रद इति । ब्रह्मांडे
षण्मुखेनमकुंदाख्यः सतांमुक्तिप्रदायक
इति । श्रीवत्सलांछनलक्षणं पुराणसंग्र
हे श्रीफलकारसदृशंपीतंचसहचक्रिणं
श्रीवत्सलांछनंनामस्त्रीहत्यापापनाशनम्

मुरारिमूर्तिकालक्षणपुराणसंग्रहमेकथनकी-
याहै मध्यचिति मध्यमेहैचक्र जिसके और सूक्ष्महै
शिलाजिसकेऔरदक्षिणपासेमे वडाहोवे सोदेह
मे जोकुष्टरोगतिसकोदूरकरणेवाला मुरारिदेव
ताहोताहै । मकुंदमूर्तिकालक्षणपुराणसंग्रह
मेकथनकीयाहै अत्यहै मुख जिसका और वक्र-
नहैंचक्र जिसमेंऔर श्यामहैवर्ण जिसकाऔर
उज्वलहोवे सोसंपूर्णपापोंकोदूरकरणेवाला
मकुंदहोताहै पांडुवर्णवालाभीफलकोदेताहै
ब्रह्मांडपुराणमेऔरकथनकरतेहै छेमुखोंवा
लीजोमूर्ती सोमकुंदनामकरकेहोतीहै और श्रेष्ठ
पुरुषोंकों मुक्तिदेतीहै । श्रीवत्सलांछनकाल-
क्षणपुराणसंग्रहमेकथनकरतेहैं गोलाकार औ
रपीतहै वर्णजिसका औरचक्रवालाहोवे सोस्त्री
हत्याकाजो पाप तिसकोनाशकरणेवालाश्रीव
त्सलांछनहोताहै । ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीफलाकारसदृशंपीताभंवामचक्रिणं
श्रीवत्संनामदेवेशंहत्याकोटिविनाशन।
मिति परणीधरमूर्तिलक्षणं वृत्तोर्द्धे वर्त्त
लोद्धारचक्रश्च शिलास्थूलः सुशोभनः प
रणीधरः स विज्ञेयः सर्वयज्ञफलप्रदः इति
योगराजमूर्तिलक्षणं विस्तरह्रस्वो वामां
गे प्रफुल्लं स्निग्धं द्विचक्रं च सुसूक्ष्मकं स्थि
रासनं कृष्णवर्णं नाभिमुक्तं च यद्भवेत् त
द्वेयं योगराजस्य लक्षणं योगदायकं।

ओर नेसे कथन करते है श्रीफलेति श्रीफलके
आकारके सदृश क्या गोलाकार ओर पीतवर्णवा
ला ओर वाम पासेमें चक्र होवे सो कोट हत्याके
हरकरणेवाला श्रीवत्सनामककेदेव होता।
है। परणीधरमूर्तिकालक्षणकथनकीया
है वृत्तोर्द्धपरणामे गोलाकार ओर मुखमें च
क्र होवे ओर स्थूल है शिला जिसकी ओर सुंदर
सो संपूर्ण यज्ञके फलको देनेवाला परणीधर
जानना। योगराजमूर्तिकालक्षणविस्तर
ह्रस्वमे कथन कीया है वामभागमे वडा हो
वे ओर खिला ओर दो हैं चक्र जिसमें ओर सूक्ष्म
ओर स्थिर है आसन जिसका ओर कृष्णवर्ण
वाला होवे ओर नाभि करके युक्त होवे सो
योगकों देनेवाला योगराज जानना॥१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीमूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे यथोपलक्षित्रि
वदनः षट्चक्रः श्यामलो विभुः श्रीमूर्तिरि
तिविख्यातः सर्वसौभाग्यदायक इति । स्कंदे
शंखचक्रादिकमलकमंडलनिशाकरैः
मुखत्रयेण संयुक्तः श्रीमूर्तिस्तु शुभप्रदः ।
श्रीसहायमूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे चक्रै
स्तु केवलैर्युक्तः पंचभिः समलंकृतः वन
मालांकितश्चैव संज्ञेयः श्रीसहायक इति ।

श्रीमूर्तिका लक्षण पुराणसंग्रहमे कथन कि
याहै अथ इति जिसके अथा अर्थात् तीन मु
खहोण और छे ६ चक्रोंवाला और श्यामव
र्णवाला और विभु सो संपूर्ण सौभाग्यके दे
नेवाला श्रीमूर्ति कथन करीदाहै । स्कंद पुरा
णमे और कथन करते हैं शंख और चक्र और कम
ल और कमंडल और चंद्रमा इनों करके और ती
न मुखोंकर्के जो युक्त सो शुभके देने वाला
श्रीमूर्ति होताहै । श्रीसहाय मूर्तिका लक्ष
ण पुराणसंग्रहमे कथन कियाहै केवल पंच
चक्रोंकर्के जो अलंकार कीयाहुआ और व
नमालाकाहै चिन्ह जिसमें सो श्रीसहाय
क जानना । ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देवदेवमूर्त्तिलक्षणम् स्कंदे सर्वाभः सूक्ष्म-
वदनः पनिरेखः सलक्ष्मकः विदिक्षुदिक्षु स-
र्वासु दृश्यते च समंततः १ स देवदेवो विज्ञेयः
पुराणः पुरुषोत्तमः २ कपिलमूर्त्तिलक्षणं
स्कंदे कपिलो वर्त्तुलोऽत्यंतस्पष्टचक्रसम-
न्वितः पंचबिंदुसमोपेतः परविद्याप्रदो नृ-
णामिति १ अव्ययमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मे प्रद-
क्षिणावर्त्तयुक्तो वनमालाविभूषितः कृष्ण-
वर्णोपुनस्थापि धनधान्यसुखप्रदः १ ॥

देवदेव का लक्षण स्कंदपुराण मे कथन किया है
सर्वाभ इति संपूर्णमें है आभा जिसकी और सू-
क्ष्म मुखवाला और पीत है रेखा जिसमें और
चिह्नवाला और संपूर्ण दिशा और विदिशा में
चारे औरतें जो दखिये १ सो पुराण पुरुषोत्तम
देवदेव जानना २ कपिल मूर्त्ति का लक्षण स्कं-
दपुराण मे कथन कीया है गोलाकार अत्यं
स्पष्ट चक्र करके युक्त और पंचबिंदु करके जो यु-
क्त सो पुरुषों को परविद्या के देने वाला कपि-
लदेव होता है १ अव्यय मूर्त्ति का लक्षण क-
थन कीता है ब्रह्मपुराण मे प्रदक्षिणावर्त्त क-
रके युक्त और वनमाला करके भूषित और कृ-
ष्णवर्ण करके जो युक्त सो धन और अन्न और
सुख के देने वाला अव्यय होता है ॥ १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नीराविधशायिलक्षणं स्कंदे एकचक्रंचवदने पंचास्यमलसत्तनु इदंसवर्नलंलक्षातीरकांतिसमन्वितम् १ चक्रस्योभयपार्श्वेतुफणिपंजरशोभितं सवर्तुलंतथास्त्रिग्धंतीराविधिशयनंविदुरिति २ मुसलायुधमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे मुसलाकाररेखाभिरेकचक्रेणसंयुतः मुसलायुधनामासौशंखचक्रगदान्वितः एजनाच्चैवसर्वेषांभुक्तिमुक्तिफलप्रद इति १॥

नीराविधिशायीकालक्षणस्कंदपुराणमेकथनकीयाहे एकचक्रमिति जिसके मुखमे एकचक्रहोवे ओर ५ पंच वाणोकर्के प्रकाशमानहे शरीर जिसका ओर इदमें गोलाकार ओर लाल ओर क्षीरकीकांतिकर्के युक्त ओर ओरचक्रकेदोनो पासेयोंमें सर्पकेदेह कर्के युक्त ओर गोलाकार ओर जो स्थिंदा तिसकोनीराविधिशायी जानतेहें २ मुसलायुधमूर्तिकालक्षणाकथनकीनाहे ब्रह्मांडपुराणमे मुसलाक्या मोहलेके आकारकीन्याई जोरेखा ओर एकचक्रकर्के जोयुक्त शंख ओरचक्र ओर गदाकर्के जो युक्तसोमुसलायुधनामकर्के देव होताहे एजनतेसो संपूर्णकोंभुक्ति ओर मुक्तिके फलकोंदेताहे १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१२१

चक्रपाणिमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे पूर्वभागेत्रि
वदनःपश्चादेकास्यसंयुतः चक्रपाणिरिति
ख्यातश्चक्रवर्तित्वदायकः। वज्ररूपमूर्ति॰
लक्षणं ब्रह्मांडे अभ्यंतरेएकचक्रोवज्र
लास्यःसमंततः वज्ररूपीसमाख्यातः पू
जितोमोक्षदायकः। अथजगद्योनिमू॰
र्तिलक्षणं ब्रह्मांडे द्वारचक्रोरक्तवर्णोज
गद्योनिःसुखप्रदः इति।

चक्रपाणिकी मूर्तिकालक्षण ब्रह्मांडपुराण
मे कथनकीयाहै पूर्वभागयनि पूर्वभाग
मे तीनमुख होंए पीछेसेएकमुखकरके
जोयुक्तसोसारी पृथिवी के राज्यकों देने
वाला चक्रपाणिकथनकीताहै। वज्ररूप
मूर्तिकालक्षणब्रह्मांडपुराणमेकथनकी
ताहै जिसके मध्य मे एकचक्रहोवे और
वडेमुखवालाहोवे सो पूजित्राहुआ मोक्ष
कों देने वाला वज्ररूपी कथनकीताहै।
इसते उपरंत जगद्योनि मूर्तिकालक्षण
ब्रह्मांडपुराणमे कथन कीताहै मुखा
मे चक्रवालाहोवे और रक्त वर्ण वालाहो
वे सो सुखकों देने वाला जगद् योनि
होताहै।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्रिमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे ऊर्ध्वाधस्त्रिवदनः
षट्चक्रः श्यामलांगधृक् त्रिमूर्त्तिरिति वि-
ख्यातः सर्वसौभाग्यदायकः । वामने चक्रत्र
यसमेतस्तु त्रिमूर्त्तिः सौभाग्यप्रद इति । वि
ष्वक्सेनमूर्त्तिलक्षणं स्कंदे पद्मकोशप्रती-
काशो नवचक्रसमन्वितः विष्वक्सेनस्तु भग
वानश्वमेधफलप्रदः । पुराणसंग्रहे अष्टच
क्रस्त्रिवर्त्तकः श्रीचक्रेण समन्वितः स्वेनरेखा
समायुक्तः कस्तावर्णः स्थिरासनः । ॥

त्रिमूर्त्तिकालक्षणब्रह्मांडपुराणमेकथनकीताहे
ऊर्ध्वेति उपरऔर अधामें तीनमुखोवालाहोवे
और छे ६ हे चक्र जिसमें और श्यामअंगके जो-
धारणेवालाहोवे सो संपूर्ण सौभाग्यके देनेवा
ला त्रिमूर्त्तिकथनकीताहे । वामनपुराणमे औ
रकथनकरतेहे तीनचक्रोंकरके जोयुक्त सोसौ
भकों देनेवाला त्रिमूर्त्तिहोताहे । विष्वक्सेनमू
र्त्तिकालक्षणकथनकीयाहे स्कंदपुराणमेकम
लकीडोडीकीन्याईहे प्रकाश जिसका और ९
नौचक्रोंकरकेंजोयुक्तसो अश्वमेधफलकोंदेनेवा
ला विष्वक्सेन होताहे । पुराणसंग्रहमे और
कथनकरतेहे आठहेचक्र जिसमे और चारहेमु
ख जिसमे और श्रीचक्र करकें युक्त और स्वेन रे-
खाकरकेंजोयुक्त और कस्तहेवर्ण जिसका और
स्थिर आसन वालाहोवे । ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शंखचक्रगदायुक्तोधनुर्वाणसमन्वितः
यज्ञसूत्रधरःश्रीमान्विष्वक्सेनःप्रकीर्त्ति
तः २ हैहयमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे गर्भा
गारेतुचक्रेद्वेपद्मेदक्षिणतोवहिः पद्म
पत्राकृतिर्वापिहेमवर्णसमाकुलः हैह
यस्तुभवेद्देवःसर्वसिद्धिप्रदायकः ३
निशालग्राममूर्तिलक्षणम् ॥

शंखेति शंखचक्र और गदा करके जो युक्त ध
नुष और बाण करके जो युक्त यज्ञसूत्रके धा
रणेवाला सो शोभावाला विष्वक्सेन होता
है २ हैहय मूर्तिकालक्षण ब्रह्मांडपुराण
मे कथनकीया है जिसके गर्भमें दो चक्र हो
ण और दक्षिणके बाहरकी तरफमें कम
लका चिन्ह होवे वा कमलके पत्रकी आ
कृतिवाला होवे और सुवर्णके रंगवाला हो
वे सो संपूर्ण सिद्धिके देनेवाला हैहयदेव
होता है ३ यह शालग्राममूर्तियोंकालक्ष
ण समाप्त भया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ शालग्रामशिलास्नानजल महिमा
स्कंदे शालग्रामभवे देवो देवेश्वरसुतो भवः
उभयोः स्नानतोयेन ब्रह्महत्या निवर्तते १
पाद्मे सस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षि-
तः शालिग्रामशिलातोयैर्योभिषेकं समा-
चरेत् २ गंगागोदावरीरेवा या मुक्तिप्र
दास्तु याः निवसंति हि तीर्थानि शालग्रामशि
लाजले ३ अम्बरीषगृहे नेवं दासोहं वशगः
सदा हरेः स्नानावशेषं च जलं यस्योदरे स्थि
तम् ४

अब शालग्रामशिलाके स्नानवाले जलके साथ स्ना
न करनेकी महिमा लिखीहै स्कंदपुराणमे शालग्रा
मपर्वतभव जो देवता और देवेश्वरके पुत्र जो म
हादेव इन दोनोंके स्नानजलके साथ ब्रह्महत्या
दूर होतीहै १ पद्मपुराणमे कहाहै सोई पुरुष सा
रे तीर्थोंमे न्हायाहै और सारे यज्ञोंमे दीक्षित भी
होहीहै कौन जो शालग्रामकी शिलाके स्नानक
रायेहोय जलोंकरकै आपमार्जन कर्ताहै २ गंगा
गोदावरी रेवा इत्यादिक नदियां शीघ्रस्नानमात्र
करकै मुक्ति देनेवालियां जौनसीयां है सो सा
रियांही नदियां और तीर्थ शालग्राम शिलाके
जलमे निवास कर्तेहै ३ ॥ अंबरीषके प्रति भ
गवान कहतेहै हे अंबरीष हरिका स्नानवि
शेष जल जिसके उदरमे नित्य स्थितहै उन
के घरमें दास होकर रहताहूं ४ ~ ॥

अंबरीषप्रणम्योच्चैः पादपांशुः प्रगृह्य तं ग
र्जंति तावदन्यानि तीर्थानि भुवनत्रये याव
न्न प्राप्यते तीर्थं शालिग्रामभिषेकजं ५ ज
न्मप्रभृति पापानां प्रायश्चित्तं यदीच्छसि
शालग्रामशिलावारि पापहारि निषेव्या
तां ८ नृसिंहपुराणे गंगाप्रयागगयापु
ष्करनैमिषारण्यानि यानि कुरुजां
गलयामुनानि कालेन तीर्थसलिलानि
पुनंति कालेपादोदकं भगवतः प्रपुनाति
सद्यः ७ ॥

हे राजन अंबरीष तूं भी प्रणाम करके उनके पादों
की धूलि ग्रहण कर और बड़ो श्रेष्ठ है और त्रि
लोकी में तीर्थ उतनो ही काल गर्जन करते है
जितना काल शालग्रामशिला के स्नान कर
णे वाला तीर्थरूप जल नहिं प्राप्त होता है ५
हे अंबरीष जन्म ते लेकर पापों के प्रायश्चित की
जे कर इच्छा करता है तो पापों का हर करणे
वाले शालग्रामशिला के जल का सेवन कर ८
नृसिंहपुराण में कहा है गंगा प्रयाग गया पुष्क
र नैमिषारण्य और जो नसें पवित्र कुरुजांगल
यमुना के किनारे के देश है सो काल करके पवित्र
करते है और तीर्थों के जल और भी चिरकाल क
रके पवित्र करते है जौनसा भगवान् जी के चरणों
का जल है सो शीघ्र पवित्र करता है ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्मृत्यंतरे देहःशुध्यतिवाह्योःद्भिरंतरात्मो
दकंहरेः नित्यनैमित्तिके काम्ये पीत्वा भु॰
क्त्वान्न तु ध्यति ७ विष्णुपादोदकं पीत्वा शाल
ग्रामशिलाभवं विशेषेण हरेत्याय ब्रह्मह
त्यादिकं नृणाम् ६ विष्णुरहस्ये विष्णुपादो
दकं पीत्वा पश्चादशुभशंकया यश्चाचाम॰
ति संमोहात् ब्रह्महत्यां स विंदति ९ बृहन्ना
रदीये तुलसीदलसंमिश्रं जलं सर्षपमात्र
कं गंगायास्तु पानात्येकं कुलानामेकविंशतिं ॥

स्मृत्यंतरमें लिखा है कि देह जो है सो बाहरसें जल
करके शुद्ध होता है और अंतरात्मा हरि के चरणो
दक करके शुद्ध होता है सो हरि का चरणामृत कैसा
है नित्य नैमित्तिक काम्य कार्य के बाद और भो॰
जन के पीछे उसका पान करके पुरुष उच्छिष्ट
नहि होता है ८ विष्णु के पादों का जल शालग्राम
की शिला सें उत्पन्न होय आइया विशेष करके पु
रुषों के ब्रह्महत्यादि पापों को हर्ता है ६ विष्णुर॰
हस्य में लिखा है विष्णु के पादों का जल पान करके
पीछे से अपवित्रता की शंका करके जो आच
मन करता है अज्ञान से सो ब्रह्महत्या को प्राप्त हो
ता है ९ बृहन्नारदीय में कहा है तुलसीदल
के साथ मिला हुआ श्रीगंगाजी का जल सर
सों के दाने तुल्य पान कराहुया इकीस कुलों
को पवित्र करता है ॥ ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

क्रियायोगसारमौले॰ ततः पादोदकं श्र
द्धो महाविष्णोः परात्मनः समस्तपातक
ध्वंसि गृह्णीयाद्भक्तिभावतः १२ कण
मात्रं वहेद्यस्तु विष्णुपादोदकं शुभं स स्ना
तः सर्वतीर्थेषु जैमिने सत्यमुच्यते १३
स्पर्शेत्पादोदकं विष्णोर्गंगास्नानफलं
लभेत् गांगेयं सलिलं विप्र विष्णुपादो
दकं यतः १४ पापव्याधिविनाशार्थं वि
ष्णोपादोदकौषधं पापिनोऽपि नरास्तत्तु
पिबंतु प्रतिवासरं १५ ॥

क्रियायोगसारमे लिखाहै जिसकारणसे वि
ष्णुके पादोंका जल सारेही पापोंका नष्टकरने
वाला भक्तिभावनसे पुरुष ग्रहणकरे १२
जो पुरुष विष्णुके पादोंका शुभ जल किणका
मात्र भी धारण कर्ताहै हे जैमिने सो पुरु
षसारे तीर्थोंमे न्हाया यह बात सत्यका
थन करीहै १३ विष्णुके चरणोंका जल जो
स्पर्श करे सो गंगाजीके स्नानका फल पाव
ताहै क्योंकि जिसकारणसें हे विप्र गंगाजी
का भी जल विष्णुके हि पादोंका जलहै १४ पाप
रूपी व्याधिके विनाशवास्ते विष्णुके पादोंकाज
लही औषधहै इसकारणसे हीं प्रतिदिन नि
सका पापी पुरुष पानकरे १५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अकालमरणंनास्तिनचसंसारजंभयं स्पृ
शतःपादसलिलंकेशवस्यमहात्मनः १६
विष्णुपादोदकंशुद्धंतुलसीपत्रमिश्रितं यो
वहेच्छिरसानित्यंतस्यपुण्यंवदाम्यहं १७
ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्विमुक्तोविष्णुरूपधृ
क् अन्ते विष्णुपुरंगत्वाविष्णुनासहमोदते
अनर्हंममनैवेद्यंपत्रंपुष्पंफलंजलं शाल
ग्रामशिलास्पृष्टंसर्वयातिपवित्रताम् १८
स्कंदे सुलभं किंनसेवेतशालग्रामशिला
जलं यस्यस्पर्शनमात्रेणपूतोभवतिमानव २०

महात्मा केशवविष्णुजीकेपादोंका जल स्पर्श क
रनेवालेपुरुषकोंअकाल मृत्यु नहिंहोताहै
औरसंसारका भयनहिंहोताहै १६ शुद्धनिर्मल
जो विष्णुःके पादोंकाजलतुलसीदलकेसाथ
मिलाहुया तिसकों शिरकर्के जो धारणकर्ताहै
तिसकेपुण्यकामाहात्म्यकहताहूं १७ सोब्रह्म
हत्यादिपापोंसेनिर्मुक्तहोआ हुआ विष्णुका रू
पधारणकर अंतमें विकुंठलोकमेविष्णुकेसा
थसुखभोगताहै १८ औरअनर्ह क्या अयोग्य
जो स्पर्शादिदोषोंकर्के पत्र पुष्पफलपर सभ
शालग्रामकीशिलाकर्के स्पर्शकरेहोपपवित्र
ताकोंप्राप्तहोतेहैं १९ स्कंदपुराणमेकहाहै सुला
लीवस्तुजो शालग्रामशिलाकाजलतिसकोंलो
क क्यो नहिं सेवता जिसके साथ स्पर्शमात्र
कर्के मनुष्य पवित्र होजाताहै २० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१२५

125

पिबंति ये नरा नित्यं शालिग्रामशिलाजलं पं
चगव्यसहस्रैस्तु प्राशितैः किं प्रयोजनम् २१
शालग्रामशिला यत्र तत्तीर्थं योजनत्रयम् त
त्र दानं च होमश्च सर्वं कोटिगुणं भवेत् २२
शालग्रामशिलातोयं यः पिबेद्बिंदुना समं
मातुस्तन्यं पिबेन्नैव स भवेन्मुक्तिभाङ् नरः २३
अत्र विशेषः विष्णुपादोदकं यस्तु करेणापि
बते यदि स मूढो नरकं याति यावदिंद्राश्च
दश २४ ॥

जो नर नित्यं प्रति शालग्राम की शिला का जल
पान करते हैं तिनों को हजारों वार पंचगव्य खा
ने करके क्या प्रयोजन है २१ जिस स्थान में शा
लग्राम की शिला है उह स्थान तीन योजन त
क तीर्थरूप है उहां दान होम यज्ञादि किये
होय कोटगुणा अधिक पुण्यवाले होते हैं २२
जो शालग्राम की शिल का जल विंदु के स
मीन भी पान करे सो मुक्ति भागी पुरुष
माता के स्तनपान को नहि कर्ता है २३ उ
समे विशेष है विष्णु के पादों का जल एक
हाथ करके जो पान कर्ता है सो मूढ पुरुष
नरक को जाता है जितना काल चौदां इं
द्र है २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

क्षिप्तस्तेन महाभाग गर्भवासः सुदारुणः
पीतं येन महाविष्णोः शालग्रामशिलाजले
पादोदकेन देवस्य हत्याकोटिसमं ततः शो २५
धयंति न संदेहस्तथा शंखोदकेन च २६ स्कं
प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने किं दानैः किमुपोषणैः
चांद्रायणैश्च किं तीर्थैः पीत्वा पादोदकं मुवि
२७ पाद्मे क्रियायोगसारे विष्णोः पादोदकं
विप्रयः पिबेच्छ्रेष्ठतमः पानकं तच्छरी
रस्थं तत्क्षणादेव नश्यति २८ ॥

हे महाभाग जिस पुरुष ने महाविष्णु की शालग्राम
शिला का स्नान कराया हुया जल पान करा है ति
सने दारुण गर्भवास होना काट दिया है २५ और
देवता के पादोदक कर्के चारों ओरसे हत्या को
टिकों शोधन कर्ता है और इसी प्रकार शंखके ज
लकर्के शोधन कर्ता है २६ स्कंदपुराण मे कहा
है प्रायश्चित्त के उत्पन्न होए हुए दानों कर्के और नि
राहार व्रतों कर्के चांद्रायणों कर्के और तीर्थ
स्नानों कर्के क्या प्रयोजन है क्योंकि विष्णु का
चरणामृत पान कर्के ही शुद्ध हो जाता है २७
पद्मपुराण के क्रियायोगसार में लिखा है हे
विप्र जो श्रेष्ठ तम विष्णु का पादोदक पान
करे तिसके देह मे जितने क पाप स्थित है सो
सारे ही तत्क्षण मे नष्ट हो जाता है २८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१२९

126

यथौषधेन देहस्थं हन्यते देहिनो विषं तथैव
पातकं सर्वं विष्णुपादोदकं हरेत्॥ २९ विष्णु-
पादोदकस्पर्शात् यत्फलं प्राप्यते जनैः सप्त-
द्वीपां महीं दत्वा द्विजेभ्यो यत्फलं लभेत्॥ ३०
तत्फलं लभते मर्त्यो विष्णुपादोदकस्य तत्
दीपिकाशतदानेन यत्पुण्यं परिकीर्त्तितं ३१
तस्मादभ्यधिकं पुण्यं लभेत्पादोदकस्पर्शनात्
बहुनात्र किमुक्तेन सत्यं तु उच्यते मया वि
ष्णुपादोदकस्पर्शान्मुक्तिमाप्नोति मानवः ३२
भूयो भूयोपि विप्रेंद्र सत्यं हि कथ्यते मया पु
नर्न लभते जन्म विष्णुपादोदकस्पर्शनात् ३३

जैसे देहिके देहमें स्थित जो विष है जैसें औषधी क
र्कें दूर होता है इसीतरह देहिके सारे पापोंको वि
ष्णुका चरणोदक हरकर्ता है २९ और विष्णुके पादो
दककों स्पर्श कर्कें पुरुषोंको सो फल प्राप्त होता है
जो सप्तद्वीपवाली पृथिवी दान कर्कें होता है ३०
विष्णुके पादोदकको स्पर्श कर्ते हो मनुष्य सो पुण्य
रूपोंकों प्राप्त होता है जो फल सो दीपिका दान
करने कर्कें होता है परन्तु तिससे अधिक पुण्य
विष्णुके पादोदकको स्पर्श कर्नें होता है ३१ बहुत
इसमें क्या कहना है मैंने एक कर्कें यह वात कही
है सो क्या वात है कि विष्णुके पादजल स्पर्श क
रनेसें मानव मुक्तिकों प्राप्त होता है ३२ हे विप्रेंद्र
वारंवार मैंने दृढ निश्चयवाली वात कही है
का विष्णुके पादोदककों स्पर्श कर्कें फिर जन्मकों
नहि लभता है ३३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बृहन्नारदीये सूतशौनकसंवादे सेतिहासं
नारायणचरणोदकमाहात्म्यं वर्ण्यते
संगात्स्नेहाद्भयाल्लोभादज्ञानादपि यो नरः
विष्णोरुपासनां कुर्यात्तदक्षयं सुखमश्नुते १
हरिपादोदकं यस्तु क्षणमात्रं तु धारयेत्
स्नातः सर्वतीर्थेषु हरेः प्रियतरो भवेत् २
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनं
सर्वपापक्षयकरं विष्णोः पादोदकं शुभम् ३
अत्राप्युदाहरंतीममितिहासं पुरातनं प
ठतां शृण्वतां चैव सर्वपापप्रणाशनम् ४

बृहन्नारदीयपुराणमें सूतशौनकसंवादमें इति
हासके सहित नारायणजीके चरणामृतका महा
त्म्य वर्णन करीदा है जौनसा कोई रूपसत्संग
वश करके और स्नेहसें वा किसीके भयसें अथ
वा लोभसें वा विना जाने विष्णुकी उपासना क
रता है सो अक्षय सुख भोगता है १ जो हरिके चर
णोदकको क्षणमात्र धारता है सो सारे तीर्थोंमें
स्नान कुया हुया हरिका प्यारा होता है २ विष्णुके
पादोंका जलपान करना अकालमृत्युको हर
ता है सारियों व्याधियों का नाश करता है और सा
रे पापक्षयकर्त्ता है ऐसी शुभ माहात्म्य वाला है ३
अब इस चरणोदकपानमें प्राचीन एक कथा
नका कथन करता हुं कैसा है पढने सुनने
वालेयोंके सारे पाप क्षय करने वाला है ४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सूतउवाच आसीत्पुरा कलियुगे कलिको
नाम लुब्धकः परदारपरद्रव्यहरणे सततं
रतः ५ परनिंदापरो नित्यं जंतुपीडाकरस्त
था हतवान्ब्राह्मणान्गाश्च शतशोऽथ सह-
स्रशः ६ देवस्वहरणे नित्यं परस्वहरणे र
तः इत्युक्तः सततं विप्राः कीनाशानामधी
श्वरः ७ कदाचित्पथि गच्छंतमुत्तंकमृषि
पुंगवं द्रव्यापहरणं कृत्वा बंधयामास य
त्नतः ८ अहो दुःखमनर्थानां ममताकुल
चेतसां महापापानि कृतवत्स्वपि परान्मुसं-
नियच्छतः ९॥

सूतजी कथन करते भये पूर्व एक समय कलियुग मे
कलिक नामवाला एक वधिक होता भया कैसा
था पराईयां स्त्रियां पराई द्रव्य के हरने में सर्वदा-
काल रतथा ५ और दूसरे की निंदा करनी जीवों-
कों मारना नित्यप्रति और सैंकडे हजारों गौयां ब्रा
ह्मणों कों मारना भया ६ और देवता का द्रव्य नि
त प्रति चुरायलेना पराया धन हरना था हे वि
प्राः इस प्रकार का कथन करा है सो कीनाशों
का अधिपति ॥७ किसी काल में रस्ते मे जाते
हूए श्रेष्ठ उतंक ऋषि के द्रव्य को लूट कर फेर
यत्न से तिसकों बांधना भया तद बडे तेजवा
ला सो उतंक ऋषि कलिक कों कहता भया ८
बडा आश्चर्य है ममता करके व्याकुल चित्तवाले म
नुष्यों कों वश करे है जो बडे पाप करके दूसरों कों य
त्न से हरते है ९॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र्जितं त्वयनं सर्वैर्भुंजते बांधवाः सदा स्व
यमेकेन भोक्तव्यं तस्य पापफलं मतं ११
इति श्रुत्वा तेन ऋषिं विमुच्य भय विह्वलः कं
पितः प्राह स महात्मा क्षमस्वेति पुनः पुनः ॥
तस्य संगस्य प्रभावेण हरिसंनिधिमात्रतः
गत पापोत्यलुब्धकस्ततः सोऽनुतापीदमब्रवीत्
मया कृतानि पापानि महांति सुबहूनि च ता
नि सर्वाणि नष्टानि विप्रेंद्र तव दर्शनात् १२

इकट्ठे करे होए धनको सारे ही बांधव सर्वदा
काल भोगते हैं और आप एकला ही मूढ पुरुष
तिस पापके फलको भोगता है ११ इस प्रकार क
हते होए तिस ऋषिको त्यागकर्के भय करके व्या
कुल कम्पित वारंवार ऐसे कहता भया क्षमा
करो ॥ तिसके संगके प्रभावकर्के और हरि
के संनिधिमात्रसें दूर होगए पाप जिसके ऐसा
लुब्धक पश्चात्ताप करता हुआ यह वाक्य कहता
भया १२ क्या वाक्य है सो कहने लगा हे विप्रें
द्र मैंने बडे २ बहुत पाप करे हैं परंतु सो सभी
तुमारे दर्शनसें नष्ट हो गए हैं १२ ॥

अहं वै पापधीर्नित्यं महापापं समाचरं कथं मे
निष्कृतिर्भूयात्कां यामि शरणं विभो ॥५॥ पूर्व
जन्मार्जितैः पापैर्लब्धकं जन्म वा मया तत् अत्रा
पि पापजालानि कृत्वा कां गतिमाप्नुयाम् ॥५॥
अहो मम आयुः क्षयमेति शश्वत्पापानि यानि
समुपार्जितानि प्रतिक्रिया नैव कृता कदा
चिद्गतिश्च का स्यान्मम जन्म किं वा ॥६॥ अ
हो विधिः पापरते कुले मां किं सृष्टवान्दारर
ते नमस्याः कथं न तत्पापफलं च भोक्ष्ये कि
यन्ति जन्मस्वहमुग्रकर्मा ॥७॥

निश्चय कर पापबुद्धिवाला नित्यं प्रति बडे पाप कर्ता भ
या हे विभो कैसे मेरी पापों से मुक्ति होवेगी और
किसकी शरण को प्राप्त होऊं ॥५॥ पिछले जन्म
के इकट्ठे करे हुए पापों करके लब्धक जन्म को
प्राप्त होता भया अब यहां भी पापों के समूह करे
हैं आगे किस गति को प्राप्त होऊंगा ॥५॥ अहो का
वडे आश्चर्य की बात है आयु मेरी क्षय होती है नि
रंतर मैंने सर्वदा काल पाप इकट्ठे करे हैं पर
उनकी प्रतिक्रिया क्या है होने का कछु उपाय न
हीं करा न जाने मेरी क्या गति होती है और क्या ज
न्म होता है ॥६॥ वडे खेद की बात है ब्रह्मा जो है ऐ
सो मेरे को पापी कुल में क्यों उत्पन्न कर्ता भया और
सो दाररत मे उग्रकर्म करने वाला कितने जन्मों
मे उन पापों का फल भोगांगा ॥७॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवं विनिंदयात्मानमात्मनालुब्धकस्तदा संत
तापाग्निसंतप्तः सद्यः पंचत्वमागतः १८ उतं
कः पतितं प्रेक्ष्य लुब्धकं तं दयापरः विष्णुपा
दोदकेनैवमभ्यषिंचन्महामतिः १९ हरिपा
दोदकस्पर्शाल्लुब्धको वीतकल्मषः दिव्यं
विमानमारुह्य मुनिमेतदथाब्रवीत् २०
कलिक उवाच उतंक मुनिशार्दूल गुरुस्त्वं
मम सुव्रत विमुक्तस्त्वत्प्रसादेन महापात
कसंकटात् २१ त्वानं तउपदेशान्मे संजातमु
निसत्तम तेन मे पापजालानि विनष्टान्यतिवे
गतः २२
इस प्रकार तिस समय लोभी पुरुष अपने कर्के आत्मा
की निंदा कर्त्ता हुया अंदर के संताप की अग्निकर त
पया हुया शीघ्र पंचत्वभाव कों प्राप्त होगया अर्था
त् मृत होगया १८ तद मृत होकर डिगे होए लुब्ध
क कों देखकर दया युक्त होए आहुया सो महाम
ति उतंक तिसकों विष्णु के चरणामृत कर्के सिं
चन कर्त्ता भया १९ तो हरि के चरणोदक स्पर्श हो
नेसें दूर होगये हैं पाप जिसके ऐसा लुब्धक दिव्य
विमान के ऊपर बैठ के मुनिकों यह वाक्य कह
ता भया २० कलिक कहने लगा हे उतंक हे मुनि
यों में श्रेष्ठ तूं मेरा गुरु है हे श्रेष्ठव्रतवाली तेरी कृ
पासें महापापों के कष्ट में मुक्त होगया हूं २१ औरः
हे मुनिसत्तम तेरे उपदेश सें मेरे कों ज्ञान उत्प
न्न होए आहे तिसकर्कें मेरे पापों के समूह बडे
वेगसें नष्ट होगये हैं २२ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिपादोदकंयस्मान्मयिवैसिक्तवान्भवे
प्रापितोस्मित्वयातस्मात्तद्विष्णोःपरमंपदं
२३ धन्योहंकृतकृत्योस्मिगुरुस्त्वंमम॰
सुव्रत तस्मान्नतोस्मितविद्वन्यत्कृतंतत
त्क्षमस्वमे २४ सूतउवाच इत्युक्त्वादेवा॰
कुसुमैर्मुनिश्रेष्ठमवाकिरन् प्रदक्षिणा
त्रयंकृत्वानमस्कारंचकारसः २५ ॥

तुमने जिस कारणसें मेरेमें हरिके चरणोंके
का जल तुलसी सिंचन कर्ते भये जिस कार
णसेंही हरिके परम पदकों प्राप्त करा हों
२३ हे सुव्रत तेनें मेरेकों कृतकृत्य करा है मे
रा गुरु है हे विद्वन् जिस कारणसें तुमारेकों
नमस्कार कर्ता हों और जो कुछ मैंने आ॰
का बुरा करा है सो मेरेकों क्षमा करो २४ ॥
सूतजी कहते है हे ऋषियो सो लव्य का॰
कलिक स्वर्गके पुष्पोंकरकें मुनि श्रेष्ठके ऊ
पर वर्षा कर्ता भया और तीन प्रदक्षिणा
करकें फिर नमस्कार कर्ता भया २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततोविमानमारुह्यसर्वकामसमन्वितम्
अप्सरोगणसंकीर्णंप्रपद्येहरिमंदिरम् २६
एतद्दृष्ट्वाविस्मितोऽभूत्तंकस्तपसांनि
धिः शिरस्यंजलिमाधायस्तौषीत्कमला
पतिम् २७ तेनस्तुतोमहाविष्णुर्दत्तवान्वर
मुत्तमम् वरेणतेनतेनापिप्रपद्येपर
मंपदम् २८ इतिहरिपादोदकमाहात्म्य
वर्णनम् ॥ ~ ॥

तिससें उपरंतसम्पूर्णकामनांकर्कें भराहुया
जोविमान तिसपर वैठके अप्सरागण गंधर्वों
कर्कें संयुक्त हरिके मंदिरमेप्राप्तहोजाताभ
या २६ तोइसनरेंकाआश्चर्यदेखकेविस्मय
युक्तहोयआ हुया तपोंकानिधि सो उनेकशि
रमेंअंजलवांधकरक्याहाथ जोडकरकमला
पतिभगवान्जीकीस्तुतिकरताभया २७ तद
तिसकर्केस्तुतकर्केहोयमहाविष्णु तिसकोंश्रे
ष्टवर देतेभये जिसवरकर्कें उनेकभी परम
पदकोंप्राप्तहोजाताभया २८ प[illegible]रिच
रणोदकमाहात्म्य वर्णन समाप्तभया ॥

सा॰
ग्राम॰
१३॰

भक्तमालायां चरणोदकमाहात्म्यं सेतिहा
समाह अथ श्रीरंगभक्तेस्तु माहात्म्यं कथ
याम्यहं पुष्करात्पश्चिमे ग्रामो धौसानाम्ने
ति विश्रुतः १ तत्र श्रीरंगनामासीद्वैश्यो जै
नपथे स्थितः तस्य दासो मृतो यातो यमदूतैः
स एकदा २ वणिग्द्वारि समागत्य दर्शयि
त्वात्मनो वपुः उवाच वणिजं पापाद्यमदू
तो भवं वणिक् ३ हरिभक्तिं विना सर्वे स
दा नरकभाजिनः इदानीं पश्य प्रत्यक्षं ते यो
ऽसौ वैष्णवो महान् ४ ॥

130

अब भक्तमालमें चरणोदकका माहात्म्य इति
हासके सहित वर्णन करते हैं अब श्रीरंगकी
के भक्तिके माहात्म्यकों कहता हूं पुष्करती॰
र्थके पश्चिम पासें धौसा नामक एक ग्राम है १
तिसमें श्रीरंग नाम करके जैनोंके मतमें स्थित
वाणियां था तिसके दासके मृत होगये हो ए
एक दिन यमदूतन २ वाणियेके द्वारेमें आका
र तिसकों अपना देह दिखायके वाणिएकों क
हता भया कि मैं वाणिआं पापसें यमदूत हो
ता भया ३ हे वाणिआं हरिकी भक्ति विना सा
रेही सर्वदाकाल नरकोंके भागी है हे वैष्णव
अब प्रत्यक्ष दृष्टांत देखले जो नसा पह वा
डा वैष्णव है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्य शृंगेण गतस्याहं स्वर्णकारमिमं पुनः । पर
दाररतं दुष्टं हत्वानेष्ये यमालयम् ५ इत्युक्त्वा
नदृश्ये हत स्तत्काले तत्र सान्निध्यनम् स्वर्णका
रं स तदा वृषः शृंगाभ्यां निजघान ह ६ इति दृष्ट्वा
महाश्चर्यं श्रीरंगः स्वमतं तदा । त्यक्त्वा कस्या
पि शिष्योभूद्वैष्णवस्यातिभक्तितः ७ हरिपू
जारतो नित्यं हरिनामपरायणः ददावन्नं
च पानीयं क्षुत्पिपासार्त्तनराय सः ८ स्वर्णका
रस्तु हस्तेन हत्वानीतो यमालयं । पुनरागत्य
संग्रामे जातः प्रेतोतिहिंसकः ९

तिसके बैल के शृंग में प्राप्त होय आ ज्या में इस प
रस्त्री गमन करने वाले दुष्ट स्वर्णकार को मारके
यमपुरी कों लेजावोंगा ५ ऐसे कहकर्के हृत उस
हां छुपगया उसी समय तहां बैठे होये स्वर्णकार
को सो बैल अपने शृंगों करके मारदेता भया ६
इस महाश्चर्य को देखके श्री रंग उसी समय अ
पने मत को त्यागकर किसी वैष्णव का शिष्य
भक्ति पूर्वक होता भया ७ हरि की पूजा कर
ने में युक्त होगया और हरि के नाम जपने में तत्पर
रहने लगा और भूखे प्यासे यों को अन्न पाणी देने
लगा और अनेक तरों के श्रेष्ठ कर्म करने लगा ८
और सो जो स्वर्णकार धर्मराजा की पुरी में प्राप्त का
रा उहां पापफल भोगने के वास्ते अपने ही नगर
में आके बडो हिंसा करने वाला प्रेत हुया ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बहुसंतापयामासहरिभक्तिविवर्जितान्
एकदास्वर्णकारःसःप्रेतःस्वतनयंरुषाः १
दर्शयामासचात्मानंततोभीतस्तनयस्ततः
नकिंचिन्मन्यतेसाधुःस्मरंस्तंप्रेतमुत्कटम्
अत्यहंचिंतयामासराजन्नस्वस्थेवबभूवसः
एकदानिशितंपुत्रंहंतुंसपुनरागतः २
ततउस्यापतन्पत्नीप्रार्थयंतीसमागताः
किमर्थंहंसोभोपुत्रंवदभीष्टंकरोमितत् ३

तोक्याकरनेलगा जोनसें हरिकोभक्तिसें रहि
नहै तिनकों बडा संताप दुःखक्लेश देताभ
या एक दिन सोईस्वर्णकार कोपकके अप
ने पुत्रकों अपना प्रेतका रूप दिखावता
भया तिसमें सो पुत्र भयभीन होगया १
तदतिस उत्कच प्रेत कों स्मरण कर्ताहु
या मनमें कछु तिसकों अच्छा नहि लगता
भयातो प्रतिदिन चिंताकर्ता हुया सो सूक
गया देह दुरहो गई एक दिन ओह प्रेत
पुत्रकों मारने वास्ते रातकों आया ॥
तोपुत्रउसकाभयसें करलाया उसकाश
ब्द सुन उसकी माता उस प्रेतकी स्त्रीप्रा
र्थना कर्तीहोई चलीआई तिसकों कहने
लगी किसवास्ते पुत्रकोंमारताहैं जोतेरी
इछाहै सो कहो मैकरोंगी २ ३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इति श्रुत्वा वचस्तस्याः पत्न्याः संपश्यतो हरेः
प्रेतः प्रोवाच येन स्यात्सद्गतिस्तत्कुरुष्व भोः
इति श्रुत्वा तु सा प्राह कथयेन सद्गतिर्भवेत् तं
प्राह प्रेतो ऽहं तस्य शरीरे प्रविशाम्यथ ७५ तं
तु श्रीरंगराजाया भगवच्चरणामृतं प्रदी-
यते हि मे शीघ्रं तदा स्वर्गं व्रजाम्यहं ७६ इत्यु-
क्ता सा करोत्सर्वं तदा स प्रेतबंधनात् मु-
क्तो बभूव तत्पुत्रः स्वस्थो जातस्तदैव हि ७७

इहका पत्नी का श्रवण कर पश्यतों हर जो स-
र्णकार प्रेत कहने लगा जिस कर्के मेरी सद्ग-
ति होवे एसा कर ७५ इह वचन प्रेत का सन क-
र सो कहने लगी किस तरां तेरी सद्गति हो-
वेगी सो कथन कर तद प्रेत कहने लगा मैं तो
इस बालक कै देह मे प्रवेश कर्ता हूं ७५ तं श्री
रंग को एजा सें भगवानजी का चरणामृत ला
कर मेरे कों दे तद शीघ्र स्वर्ग कों चला जाता
हूं ७६ इस प्रकार कथन करी होई उसी त सं-
सें सभी कुछ कर्ती भई तद सो प्रेतयोनी के
बंधन सें मुक्त होता भया और पुत्र उसका उ-
सी काल मे राजी प्रसन्न होजाता भया ७७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवं श्रीरंगभक्तेस्तु माहात्म्यं कथितं मया
यः शृणोति नरो भक्त्या लभते भक्तिमु-
त्तमाम् १८ इति शालग्रामशिलोदक-
माहात्म्ये श्रीरंगचरितं समाप्तम् ॥

इस प्रकार श्रीरंगकी भक्तिका माहात्म्य मै
ने कथन करा है जो इस कथाको भक्ति
करकें सुनता है सोभी उत्तम भक्तिकों ल-
भता है १८ इति श्रीभक्तिमाहात्म्ये भगव-
च्चरणामृतमहिमावर्णनम् ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मध्यमार्गेमार्गचौरास्त्वनुयाताः सहिंसितं ततस्तान्श्रीधरोज्ञात्वाशस्त्रपाणिर्भयं करान् ५ ततःश्रीरामकवचं भक्त्यासस्म रन्द्विजः कवचंसकृत्तेपाठे भ्रातरौरामलक्ष्मणौ ६ धनुर्वाणधरौवीरौश्यामगौर कलेवरौ श्रीधरस्यमहीपेतु गच्छंतौभी षयन्वलान् ७ तापएवचश्रीधरःकविनो राहष्टात्नोप्यथि नप्ररूर्त्तेशक्कवंतःश्री धरेणसमागतः ८ ॥

तदतिसकोंमार्गकेमध्यमार्ग चोररस्ता लूट नेवालीतिसकोंमारनेकेलियेपीछे २ आवते भयेतो श्रीधरस्वामीतिनकोंशस्त्रधारीभयंक ररूपवाले अपने मारनेकोपीछे आयाकर्ते होएओं कोंजानकर ५ उसैंयाद्रया भक्तिप्र मसे श्रीरामकवचकापाठकर्ताभया तद उसीसमयपाठके करेहोय अपनेभक्तकी रक्षाकेवास्ते दोनाभ्राता रामलक्ष्मण ६ श्याम गोरशरीर वाले वडे शूर वीर धनुषवाण धारे श्रीधर के समीप २ पीछे २ चोरों कोंभय देते होए चलतेभये ७ परंतुश्रीधर नहि तिनकों देखताभया सोचोरतिनकों देखके श्रीधरकेसाथ आए होए तिसके मारणेको समर्थ नहिहोतेभये ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दृष्ट्वा नयोः सौकुमार्यं सौन्दर्यं चाप्यनुत्तमं
मोहिता नुभहर्त्तं वै शक्तास्तद्भयतः खलाः
अथ श्रीधरविप्रोपि निजग्राममथागतः य
दा तो भ्रातरावंतर्हितौ रामलक्ष्मणौ ११
अथ चौरा अंहृष्टा तौ वीरौ चापशरैर्युतौ
विरहार्त्ताः श्रीधरः पश्चाद्याग्यागत्य स॰
माश्रिता ॥ दृष्ट्वा तान् श्रीधरो विप्रः पप्र
च्छ विनयान्वितः स्वयं त्वद्य समायाता नाथे
मया सहान्ते ध्रुवम् १२

133

औह चौर तिन दोनों की सुकुमारता क्या कोमल
ता और अत्युत्तम सुंदरता देखकर मोहित हो
ए और तिनके भय से प्रहार करने कों समर्थ
नहि होते भये ६ इससे उपरंत जिस समय
श्रीधरजी अपने ग्राममैं चले आये तद सो
दोनो भ्राता राम लक्ष्मण अंतर्धान होगए
क्या छिपगए ११ तिससे उपरंत औह चौर ध
नुषबाणधारी सूरवीरों को नहि देखके
विरहकर पीडित श्रीधर के पीछे आय के
उसी के द्वार पर वैठगये ॥ तद तिन कों श्री
धर बाह्मण द्वार मैं वैठयां को देखकर वा
डी नम्रता से पूछने लगा तुम तो औ॰
ही हो जो आज मेरे साथ आये हो १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

योर्चयेत्केतकीपुष्पैः कलिमलापहं
पुष्पैः पुष्पैः स्वमेधस्यफलमिच्छति भूमिप ६
स्वयमाहृत्य पुष्पाणि भिक्षाशी केशवं नि
यः करोति स राजेंद्र विश्वानामुद्धरेच्छतम् ७
बृहन्नारदीये मनोहरैस्सुगंधैश्च पुष्पैश्चापि
मनोहरैः अभ्यर्च्य विष्णुमीशं वा तत्सारूप्य
तां व्रजेत् ॥ पद्मपुराणे पद्मपुष्पैर्यो वि
ष्णुं शिवं वार्चति मानवः स याति विष्णुभवनं
नेकुलत्रयसमन्वितः १२

जोपुरुष कलियुगकीमलकों हरकरनेवाले
भगवानजीका केतकीके पुष्पोंकरकें पूजनक
रेगा हेभूमिप सो एक २ पुष्पमे अश्वमेधके
फलकी इच्छाकर्ताहै ६ ओरजोभिक्षामांगने
वाला आपपुष्पोंको उतारकर केशवजीकी
पूजा करताहै सोहेराजेंद्र वंशोके सौकों उ
द्धारकर्ताहै ७ बृहन्नारदीयमें लिखाहै मनकों
हरनेवाली सुगंधिकरकें ओरमनकों हरने
वाले पुष्पोंकरकें विष्णुजी अथवा शिवजीकें
पूजनकरकें उनकी २ सारूप्यताकों प्राप्तहो
वेगा ॥ पद्मपुराणमेलिखाहै पद्मकेपुष्प
करकेंजोविष्णुकोंपूजताहै ओरशिवजीकोंसो
तीनकुलोंके सहित विष्णुलोक वैकुंठ मे
जाताहै १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिं च केतकी पुष्पैः शिवं धत्तूरकस्तथा स
र्वपापविनिर्मुक्तो वसेद्विस्नुपुरे युगम् १२
हरिं च चम्पकैः पुष्पै रक्तपुष्पैश्च शंकरं स
मभ्यर्च्य महाभाग नत्वा सालोकतां व्रजेत्
जीती पुष्पैः शिवं पूज्य वंधूककुसुमैर्हरिम्
सर्वपापविनिर्मुक्तो मेरुमूर्ध्नि युगं वसेत्
मालतीकुसुमैर्विस्नुं पुष्पैर्मनोहरैः श
मीपुष्पैश्च राजेन्द्र सर्वान्कामानवाप्नुयात् १६

और केतकीके पुष्पोंकरकें जो हरिकों पूजते हैं
और धतूरेके पुष्पोंकरकें शिवजीको पूजते हैं सो
सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त होय हुए एकयुगपर्यं-
त विस्नुलोकमें वसते हैं १२ हरि विस्नुजीकों
चंपके पुष्पोंकरकें और शंकर महादेवजीकों
रक्तके पुष्पोंकरकें पूजनकर वडे भाग्ययुक्त
पुरुष उनकी सारूप्यताकों प्राप्त होता हैं १४
चंवेलीके पुष्पोंकरकें शिवजीकी पूजाकर वंधू-
क हउंज वा गुलदुपहरके पुष्पों करकें हरिकों
पूजाकर संपूर्ण पापोंसे निर्मुक्त हो पुरुष हु-
या एकयुग पर्यंत मेरुके मस्तकपर निवास
करेगा १५ ॥ और मालतीके पुष्पोंकरकें विस्नु-
की पूजाकर मनकों हरनेवाले पुष्पों करकें रु-
द्रजीका पूजन कर अथवा शमी जंडीके पु-
ष्पों करकें पूजा कर संपूर्ण कामनाकों
प्राप्त होवेगा १६ – ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कार्तिकमाहात्म्ये पाद्मे: पद्मालयाभर्त्ताच
विंतः पुंडरीकपुष्पकैः ददाति वैष्णवस्तत्राभ
क्तिमव्यभिचारिणीं ७ स्कंदे अपर्युषितैर्नि
श्छिद्रैः पुष्पैर्जंतुविवर्जितैः हयमारोद्भवै
र्नित्यं पूजयेन्मधुसूदनं ८ मालतीकाकुसु
मैर्जातीकुसुमैश्च विशिष्यते जातीपुष्पस
हस्रस्य योमालां संप्रयच्छति वैष्णवोविभ
वेतुल्या न स पुण्यफलं लभेत् ९ कल्प
कोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च व
सेद्विष्णुपुरे विप्र कुलसत्तः पराक्रम १०

पद्मपुराणके कार्तिकमाहात्म्यमे कहाहै और क
मलके पुष्पोंकर्के लक्ष्मीका स्वामी कमलोंकीट
टिवाला पूजनकराहुया वैष्णवभक्तिकरपुत्रपौ
त्र देताहै और अनिश्चलभक्ति देताहै ७ स्कं
दपुराणमे लिखाहै पूर्वदिनके वासेपुष्प न
होवे और छिद्र नहि जिनमें होवे और कीट छो
टे जीव ना होवें ऐसे हयमार गंडीरेके पुष्पों
कर्के मधुसूदनजीको पूजनकरे ८ और स
भनी पुष्पोंमे मालती और चमेलीइनके पुष्प
वडेश्रेष्ठहैं जो पुरुष चंवेलीके हजार पुष्पोंकी
माला विष्णुजीकों चढावताहै तिसके पुण्यका
फल मेरेसें कहान ९ क्या जो ऐसी माला चढाव
ताहै सो कल्पोंके हजारों सेकडे क्रोड वर्ष तिस
के तुल्यपराक्रमवाला वैकुंठमे निवास कर
ताहै १० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वर्णानांच यथाविप्रस्तीर्थानांजाह्नवीतथा सु
राणांच यथाविष्णुः पुष्पाणांमालतीतथा २१
मालत्यादिवनेदेवंयोर्चयेद्गरुडध्वजं जन्मदुः
खजरारोगैर्मुक्तोमुक्तिमवाप्नुयात् २२ के
तक्युद्भवकुसुमैः पूजयेद्गरुडध्वजं समास
हस्रंसुप्रीतोजायतेमधुसूदनः २३ मल्लि
काकुसुमैर्देवंवसंतेगरुडध्वजं योर्चयेत्प
रयाभक्त्यासयातिपरमांगतिं २४ ॥

चारवर्णोंमे श्रेष्ठजैसे ब्राह्मणहै औरतीर्थोंमे गं
गाजीजैसें श्रेष्ठहै और देवतोंमे विष्णुजी जैसें
श्रेष्ठहै इसीतरांसे पुष्पोंमें मालतीश्रेष्ठहै २१
जो कोईपुरुष मालतीसें आदलेकर फूलोंको
वाटियोंमे गरुडध्वज भगवान् जीका पूजन
कर्ताहै सोजन्मदुःख वृद्धावस्थाव्याधियांरोग
इनोंकरमुक्त होय आइयामुक्तिकोंप्राप्त हो
ताहै २२ केतकीके उत्पन्न होएफूल पुष्पों
करकै जोगरुडध्वजजीकोंपूजनताहै तिसपर
मधुसूदन भगवानजी हजारवर्षप्रसन्नरह
तेहै २३ औरपुष्पवसंतऋतमें गरुडध्वज
भगवानजीकोंमालतीके पुष्पों कर पूज
ताहै परमभक्तिके साथसोपरमगति
कोंप्राप्तहोताहै २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुगंधैर्मल्लिकापुष्पैरर्चयित्वा नरोत्तमम् स
र्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते २५
यः पुनः पावनैः पुष्पैर्वसंते गरुडध्वजं अर्च
येन्नरो भक्त्या स याति परमं पदम् २६ यो
विष्णुं च वकुलापुष्पैः पूजयेत्पापनाशनं स
पुनः परमं स्थानं वैष्णवं व्रजते ध्रुवं २७ अग
स्त्यकुसुमैर्देवं येर्चयंति जनार्दनं पतेषां द
र्शनादेव नरकाग्निः प्रशाम्यति २८ न तत्क
रोति विप्रेंद्र तपसा तोषितो हरिः यत्करोति
हृषीकेशो मुनिपुष्पैरलंकृतः २९ ॥

और सुगंधवाले मालती के पुष्पों करकें नरोत्तमजी
कौं पूजन करकें सारे पापों से रहित होए अरु या वि
स्नुलोक में महिमा कों प्राप्त होता है २५ और जो को
ई वसंत ऋतु मे पवित्र पुष्पों के साथ परम भक्ति
करकें पूजन कर्ता है सो परम पद कों प्राप्त होता है २९
और जो कोई पुरुष पापों के नाश करने वाले विस्नु
कौं वकुला के पुष्पों करकें पूजन कर्ता है सो पवित्रऊ
या २ परम श्रेष्ठ जो वैस्नव स्थान तिनकों प्राप्त
होता है निश्चय करकें २७ अगस्त्य के पुष्पों करकें जो
जनार्दन भगवानजी का पूजन कर्ता है तिसके
दर्शन मात्र से नरकों की अग्नि शमन होती है २८
हे विप्रेंद्र तप करकें प्रसन्न करे होए हरि नारायण
ऐसा काम नहीं कर्ते हैंन क्या ऐसा फल नहिं देते
हैंन जो फल मुनि अगस्त्य के पुष्पों करकें पूजा क
रे होए फल सिद्ध कर्ते हैंन २९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१२९

136

मुनिपुष्पार्चनंविष्णोः कार्तिके पुरुषोत्तमः
ददात्यभीप्सितं कामं शशिसूर्यग्रहो यथा २०
वकुलाशोककुसुमैः ये चार्चयंति जगत्पतिं अ
शोकास्ते भवंतीह यावत्सोमदिवाकरौ २१
गंधाढ्यैर्विविधैर्वन्यैः कुसुमैः श्वेतकोमलैः
शक्त्याभ्यर्च्य हृषीकेशं श्वेतद्वीपे वसेन्नरः २२
सुभासुभैर्महागंधैः कुसुमैः पंकजैस्तथा
अधोक्षजं समभ्यर्च्य नरो याति हरेः पदम् २३

हे पुरुषोत्तम कार्तिक महीने में जो कोई पुरुष
अगस्त पुष्पों करकें विष्णु का पूजन कर्ते है तिन
कों वांछित कामना देते है जैसें सूर्य चंद्रमा का
ग्रहण देता है २० वकुल अशोक के पुष्पों करकें
जो जगत्स्वामी का पूजन कर्ते हैं सो ईस लोक
में अशोक होते हैं जितना काल सूर्य चंद्रमा है २१
और गंध करकें युक्त अनेक तरों के वन के श्वेत
कोमल पुष्प करकें यथा शक्ति हृषीकेश का
पूजन कर पुरुष श्वेतद्वीप में निवास कर्ता
है २२ और श्वेत रंग के वा और किसी रंग के
बहुत सुगंधि वाले पुष्पों करकें अथवा कम
लों करकें अधोक्षज भगवान जी का पूजन
कर पुरुष हरि के पद कों जाता है २३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

समायातास्तदा ह्यावीरौ चापबाणधरौ भी
षयंतौ तत्तावस्मांस्तु पृष्ठे मयं पुनः २१ न
हिंसितौ भवांस्तौ तत्र तासह समागतौ प्र
विष्टौ गृहांतरे तौ न दृष्टौ तौ पुनर्द्विज २२
इतिश्रुत्वा वचस्तेषां श्रीधरो विनयान्वितः
प्रणम्य पत्न्या स्वयं तत्र इत्युवाच पुनः पुनः २३
ततस्ते तमपृच्छन्ति किमिदं भाषसे द्विज
तौ दर्शय महाभाग प्रतिज्ञातं पुरा द्विज २४

तिस समय धनुषवाण धारणे वाले वीर हमा
रे कों पीछे आउने देखकर हमारे कों भय दे
ते हुए पीछे चले हम तिनके भय करके तुमारे
कों मार नहि सकते भये २१ तिनके भय
सें हमने नहि मारा सो पीछे २ तुमारे घर में
प्रवेश कर्ते भये फिर नहि देखे २२ एह व
चन तिनका श्रवण कर कहने लगा नम
स्कारहो २ ऐसे वारंवार कहना भया २३
तद ओह पूछने लगे हे द्विज यह क्या क
हता हैं हे महाभाग तैने पहले प्रतिज्ञा क
रीहै सो वह दिखा २४ ~॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा·
ग्राम·
२३९

137

श्रुत्वैतद्वचनंतेषांश्रीधरःप्राहतान्नरःअ
होननोगृहेनौमेभ्रातरौरामलक्ष्मणौ २५
यावान्तभवतोहृद्वैहिंसितुंमांसमागतान्
तदाश्रीरामकवचंमयापठंविपिनेभयात् २६
रक्षितुंमांसमायातौदेवौतौभक्तवत्सलौ
ग्रामपर्यंतमायातौतावंतर्द्धानंगतौततः
धन्याभवंतपुण्यावैभाग्यवंतोनसंशयः
येर्दृष्टौजगतांनाथौलोचनेरामलक्ष्मणौ
२८

यह वाक्य फिर तिनका श्रवणकर श्रीधरजी
कहने लगे ओ है राम लक्ष्मण दोनों भ्राता हैं सो तो
मेरे घर नहि है २५ जिस समय वन के मध्यमें
तुम मेरे मरणेको पीछे आये तद तुमको
चोर जानके मैं उस समय श्रीराम कवच
का पाठ कर्त्ता भया बडे भयसें २६ ओ है भ
क्तवत्सल देवता ग्राम पर्यंत मेरी रक्षाके लि
ये आये फिर वो दोनो भ्राता छिप गये हैं २७
तुसी धन्य हो बडे पुण्यवान हो भाग्योंवा
ले हो जिनोंने इहो अपने नेत्रों जगतका
नाथ देखे हैं २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सनत्कुमारसंहितायां मालतीकुसुमैरपि।
किं विष्णुर्नैर्मनोहरैः समभ्यर्च्य हृषीकेशं
जन्मदुःखाद्विमुच्यते ५३ कदंबकुसुमैर्दे
वमर्चयेन्मधुसूदनं दृष्ट्वा कदंबपुष्पा
णि प्रीतो भवति माधव ५४ सकृत्कदंबपु
ष्पाणि पूजयेद्धेलया हरिं सप्तजन्मानि दे
वर्षे न स्यात् लक्ष्मीर्न दुर्लभा ५५ कदंबपुष्प
गंधेन केशवो येन तोषितः जन्मायुतार्जि
तं पापं दहते नात्र संशयः ५६ ॥

सनत्कुमारसंहितामें लिखाहै मनकों हरनेवा
ले किंचित् श्वेत रमणीक मालतीके पुष्पोंकर्के
हृषीकेशजीकी पूजन कर्के जन्म मरणके दुः
खसे मुक्त होताहै ५३ जो पुरुष कदंबके पुष्पों क
र्के देवता मधुसूदनजीकी पूजा करताहै
तिसके कदंब पुष्प देखके माधवजी प्रसन्न
होतेहैं ५४ जो कोई पुरुष एक भी कदंबके
पुष्प कर्के हेलाके साथ क्या लीलाके साथ
पूजन कर्ताहै हे देवर्षे सात जन्म तिसकों
लक्ष्मी दुर्लभ नहिंहै ५५ और कदंब पुष्पकी
गंधि कर्के जिसने नारायण प्रसन्न करेहैं
सो दस हजार जन्मोंके इकट्ठे करे पापोंको
दग्ध कर्ताहै इसमें संशय नहीं है ५६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वर्षाकालेतुदेवेशंकदंबकुसुमैर्हरिं येर्च
यंतिनतेषांचसंसारेपुनरागमः ५७ पद्म
पुराणेक्रियायोगसारे सदाचंपकपुष्पे
योर्चयेत्कमलापतिं सगच्छेत्परमंधामवि
मुक्तःसर्वपातकैः ५८ यावंतिस्वर्णपुष्पा
णिदीयंतेचक्रपाणिनः तावद्युगसहस्रा
णिस्थीयंतेविष्णुमंदिरे ५९ मेरुतुल्यसुव
र्णानिदत्वाभवतियत्फलं एकेनस्वर्णपु
ष्पेणहरीसंपूज्यतत्फलम् ५० ॥

जोकोईवर्षाऋतुमें कदंबकेपुष्पोंकरकेदेवेश
हरिकापूजनकरतेहैं तिनकासंसारमें फिरआ
गमनहिंहोताहै क्याजन्मनहिंहोताहै ५७ पद्म
पुराणमेंक्रियायोगसारमेंलिखाहै जोपुरुषस
दाकालचंपेकेपुष्पोंकरकेकमलापतिको
पूजनेहैं सो सारेपापोंसे मुक्तहोयकेआ
परमधामकोंजाताहै ५८ जितनेस्वर्णके
पुष्प चक्रपाणि भगवान्जीके ऊपर दानक
रीदेहै उतने हजारयुग विष्णुके मंदिरमें स्थि
तहोतेहै ५९ सुमेरु पर्वतके तुल्य सुवर्णका
दानकरके जोफल होताहै सो फल एक सु-
वर्णके पुष्प साथ हरिका पूजन करके
होताहै ५० ॥ ९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फलंचंपकपुष्पस्यब्रवीम्यहमशेषतः आ
कर्णयद्विजश्रेष्ठसेतिहासमवत्तमम् ५१
सुवर्णोनामभूपालोबलवान्सर्वशास्त्रवित्
आर्यावर्तेषुसर्वेषुबभूवप्रभुरुत्तमः ५२
राज्यश्रियाविद्ययाचतपसाचसभूपतिः
अतिप्रमत्तोविप्रर्षेसदापापरतोऽभवत् ५३
पाखंडमंत्रिणांवाक्यैर्विनादोषैरपिद्विज
धनलोभात्तेनराज्ञादंडिनेबहवोजनाः ५४

चंपेकेपुष्पचढानेका माहात्म्य सम्पूर्णतासें
कहताहूं हेद्विजश्रेष्ठतिसमें एक बडाउत्तम इ
तिहास श्रवणकर ५१ सुवर्णनामकरकें एक
सारे शास्त्रोंके जाननवाला बलवान् पराक्र
मीराजा सारेआर्यावर्त देशमें उत्तम होताभ
या ५२ सोराजा राज्यलक्ष्मीकरकें विद्या करकें
तपकरकें हेविप्रर्षे बडामस्तहोएआ इश्रा
सर्वदाकालपाप कर्ममें रत होताभया ५३
हेद्विजसोपाखंडिजोमंत्रिये तिनकी शिक्षा
करकें औरधनकेलोभसें अपराधके विना
ही बहुत लोक दंड युक्त करीदे होय ५४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अन्यायोपार्जितं वित्तं गीतवाद्यादिभिर्नृप
समस्तं नाशयामास यज्ञदानोविवर्जितः
न ज्ञातिपालनं चक्रेन देवद्विजपूजनं नच
पावकसंतुष्टिं राजपापविमोहितः ५६ न
च कारातिथेः पूजां जहार गुरुयोषितां प
पौच मदिरां नित्यं स भूपः पापमोहितः ५७
कृतानि तेन पापानि यानि पाप्मविवेकिना
अपि वर्षशतैः शक्याः संख्यातुं तानि तानि
कः ५८ ॥

और अन्यायकरा अनीतिकर्के एकट्ठा कियाहुया जो
धन तिसको गायन वाद्य नृत्यादि इनकर्के यज्ञदा
नादियोंसें विना सारे उसधनकों नष्टकर्ता भया ५५
नातो उहराजा जातिवालेयोंका पालन कर्ता भ
या और उसने देवता ब्राह्मण पूजन करे और पा
पोंके साथ मोहित होयइहपने अग्निभी प्रसन्न न
हिकरी क्या हवनादि नहि करे ५६ और न ति
सनै अतिथियोंका पूजन करा और सुंदर गुरु
अपने की स्त्री को हरलेना भया और सो भूपपा
पकर मोहित हुआ नित्यप्रति मदिरा
कौं पान कर्ता भया ५७ हे द्विज विना विचारवाले
तिसने जौनसें जितने २ क पाप करे हैं निश्चय
कर्के तिन की संख्या करने को सौ वर्ष कर्के
भी समर्थ नहि हो सकता है ५८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकदासमहीपालःकामेनपरिमोहितःजगा
मवेश्यानिलयंनिशीथेभूरिनायके ५९ त
मायांतंततोदृष्ट्वाभूपालमुज्वलाख्ययाःस
हसोत्थायपर्यंकाच्चक्रेतत्पादवंदनम् ९० ध
त्वातत्पादयुगंभृंगारसलिलेनसामं
चेनिवेशयामासदोर्भ्यामालिंग्यतंनृपं ९१
ततःप्रेमामृतधाराभिःसिक्तोऽसौपृथिवीपतिः
तस्मिन्नधापपर्यंकेतयासहकुतूहली ९२

एकदिनसो महीपाल राजा काम देव करा
मोहित होएआ हुया वहुतहै तेरे जिसमें
ऐसे अर्ध रात्रकेसमय वैश्याकेघरमे चला
जाता भया ५९ तिसआउते राजाको देख
कर जिससें उपरंत अपने पलंघ सें शीघ्र
उठ कर सो उज्ज्वल वेश्या तिसके पाद
वंदना कर्त्ती भई ९० फिरउससेउपरंत गं
गासागरके जलोंकर्कें दोनो पादकमल
धोयकर वाहूयों के साथ आलिंगन कर
तिसराजाकों मंचका पलंघके ऊपर विठा
यलेती भई ९१ तदतिसमय तिसके प्रेमरू
पी अमृतकी धारो कर्कें सिंचितहोएआहुया
कुतूहल वाला क्या वडी इच्छावाला ति
स वेश्याके उतपलंघपर शय कर्त्ता भ
या ९२ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
९८॰

140

ततः सा गणिका प्रीत्या हसंती नवयौवना द
दौ पंचकपुष्पाणां तस्मै भूमिभुजे स्रजम् ९३
पुष्पमाल्यात्पुष्पमेकं तस्मात्पतति हस्तगात्
पपात धरणीपृष्ठे गंभवा मदिगंतरम् ९४
तच्छ्रुतं ऊसमं दृष्ट्वा स राजा त्वेन संभ्रमात्
नमो नारायणायेति जगदोंकार पूर्वकं
नारायणायेति वाक्येन सर्वाणि पातकानि च
स्वर्णपुष्पप्रदानेन तस्य नष्टानि भूप
ते ९९ ॥

तिसते उपरंत नवीन युवावस्थावाली सो गा
णिका हास्य कर्ती २ बडी प्रीतिसें तिस रा
जाके तांई अति सुंदर चंबेके पुष्पों की माला
देती भई ९३ तद तिस राजाके हाथमें ते मा
लाका एक पुष्प सुगंधिकर युक्त जो उस्की
की पृथिवी तिसपर डिगपडता भया ९४
सो राजा वडे संभ्रमसें तिससें डिगे होए पु
ष्प कों देखकर ओं नमो नारायणाय ऐसें
उच्चारण कर्ताभया ९५ तद ओं नमो ना
रायणाय ऐसें वाक्यके कहने कर्के औ
र चंबेका पुष्प दान करने कर्के तिस
भूपतिके सारे पाप नष्ट होगए ९९
॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रामिणोऽप्यस्य सर्वोपि समागम्याजिघांसयं
तस्यामेव निशायां ते जघ्नुर्वेश्यागृहे स्थितम् ९७
नेतुं तमथ भूपालं सर्वपातकिनां वरं किंक
रान्प्रेषयामास क्रुद्धो वैवस्वतोऽन्तकः ९८ ते
ताज्ञया सन्नोद्धताः पाशमुद्गरपाणयः प्रति
वेगात्समायाताः क्रोधसंरक्तलोचनाः ९९ ते
बद्ध्वा चर्मपाशेन ज्वलज्ज्वलनलोचनाः उद्यमं च
क्रिरे गंतुं यमहन्तायमालयं १०० ॥

और उदरसें दुष्टनीति वाले दुखदाई राजाकों उ
सीके नगरवासीलोक वैश्याके घरमें आये हुए
राजाकों जानकर सारेही इकठे होके वैश्याके
घरमै वैठे होए कोंही उसी रातमेमार देनेभये
९७ तदपापीयोंमे श्रेष्ट तिस भूपालकों ल्याउने
के वास्ते क्रोधकों प्राप्त होए आ हुया सूर्यका पु
त्र धर्मराज वडे भयके करनेवाले दूतोंकों भेज
ता भया ९८ तिसनें आज्ञा करे होए दूत तिस
में उपरंत पाश मुद्गर हाथोंमे लेके क्रोधकर
लाल नेत्र जिनके ऐसे सो वडे वेगसें आया
प्राप्त भये ९९ तो अग्निकी न्याई वलने हैं नेत्र जि
नके ऐसे चर्मकी फांसीके साथ बाधकर
यमालयमें जाने कों उद्यम कर्नेभये क्या
तियार होने भये १०० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्व॰
ग्राम॰
१५१

151

ततोनारायणप्रेष्याःशंखचक्रगदाधराःआ
जग्मुर्गरुडमारूढास्तंनेतुंपृथिवीपतिम् ११
पाशेनपाशितंदृष्ट्वातंनृपंविष्णुकिंकराःज
घ्नुश्चैकेगदाभिश्चयमदूतान्नृपापथि १२
तेप्यत्यंतसंत्रस्तायमदूताःप्रदुद्रुवुःवि
ष्णुदूतगदाचक्रप्रहारशतजर्जराः १३ अथ
तंपृथिवीपालंविष्णुदूतामहाबलाः पी
तकौशेयवासोभिःस्वर्णालंकारभूषिताः
१४

तिससे उपरंतविष्णुभगवान्जीकेदूत शंखचा
क गदापद्मधारणकरणेवालेगरुडकेऊपरचढे
होए तिसपृथिवीपतिलेजानेकोंअहभीआयजा
तेभये ११ उससमयविष्णुकेकिंकरफासीकरा
साथवंधेहोए तिसराजाकोंदेखकरवडेक्रोधक
के मार्गकेवीचही यमदूतोंकोचक्रगदाशस्त्रों
करकेमारेभये १२ तोयमकेदूतअत्यंतत्रासक
र युक्ततिसकों त्यागकर विष्णुकेदूतोंकेग
दाचक्रशस्त्रोंके प्रहारकर जर्जरीभूत क्या
छिन्नभिन्न अंगोवाले दौडजातेभये १३ इस
सेउपरंतमहावलीविष्णुकेदूतपीलेपट
के वस्त्रोंवाले स्वर्णके अलंकार भूषणों
करके युक्त तिसराजाकोंलेजाते भये
१४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्तूयमानो मुनिगणैर्वेदवेदांगपारगैः विस्र
हृतैः परिवृतो हरेः सालोक्यमाययौ २५ स्र
थोत्थाय स्वयं विस्रस्रत्नभिर्दीर्घबाहुभिः न
मालिंगितवान्भूयं प्रोक्तवांस्र हिजोत्तम २६
श्रीभगवानुवाच नृपते कुशलं ब्रूहि सर्वभू
एपवनोवर किम स्वसाध्यं भवनात सान्ता
पयसोप्रतं २७ ॐ नमो नारायणायेति वारेक
मपियोवदेत् तिस्येन स्मा तुवास्तोहं समे भ्राता
समे पिता २८ ॥

तो उहां वेद वेदांगशास्त्र के पारकों जानणे वाले
मुनिलोकों के सम्रह करके स्तुत कराहुया विस्र
हृतों के साथ परिवारेया हुया विस्नुको सोलो
कमुक्ति क्याहे तत्स स्तूपता तिसकों प्राप्तहोता
भया २५ इससे उपरंत जद उहां प्राप्त भया तदस्रा
प विस्नुजी वडीयें लंबीयें चारोंबाहोंके साथ ति
स राजाकों आलिंगन करतेभये क्या गलेमे मि
लावतेभये हे हिजोत्तम और यह वाक्य कहतेभ
ये २६ क्या भगवानजी कहनेलगे हे सारे प्र
एपवालेयोंमे श्रेष्ट राजन् तेरेकों कुशलहै
क्या राजीप्रसन्नहे ना और तेरेकों कोई कार्य अ
साध्यहै क्या नहि भी सिद्ध होने वालाहै सो मेरे
कों आज्ञाकर २७ ॐ नमो नारायणाय ऐसें जो
पुरुष एकवार भी कहे जिसका निसंप्रति पालक
हों और सोमेरा भ्राताहै अरु सोई मेरा पिताहै २८

नारायणायेतिनाम कदाचिद्यः स्मरेन्नरः
साधयाम्यागविलंतस्यपितः पुत्रइवोत्तमः ७९
मद्भक्तोसित्वपम्श्रेष्ठतस्मात्निजमनोरथः
प्रकाशयद्भुतंभ्रातः किंनदास्यामितेपुन
८० राजोवाच सर्वमेवदयासिंधोत्वयारत्तं
नसंशयः पापिनापिमयाप्राप्तंतवस्थानं
सुदुर्लभं ८१ व्यासउवाच तस्यानेनत्ववा
क्येनप्रसन्नः कमलापतिः स्वेहास्निवेयामा
सभूपालंतंनिजासने ८२॥

ॐनमोनारायणाय यहनाम एकवारभी जोक
दी पुरुष स्मरणकरे तदतिसके सारे कार्य सा
धनकर्त्ताहुं जैसें पिताकेकार्य उत्तम पुत्रसाधन
कर्त्ताहै ७९ हेराजेयोंमें श्रेष्ठतूमेराभक्तहै इस
कारन सेंअपनेमनकामनोरथक्या अभिप्राय
सोशीघ्रप्रगटकरहेभ्रातः सोतेराकार्यक्या नहि
देवेगा नादेवुंगा ८० भगवानजीकेमुखसें इ
तनावचनसुननेंही राजाकहनेलगाहेदयाके
समुद्र सभीकुछतुमारादियाहुआहै इसमेका
छुसंशयनहीहै क्योंकी वडीपापकरनेवाले मै
ने एहदुर्लभस्थानप्राप्तहोएआहै इसीमेसभीकु
छआपगया ८१ इतनीकथासुनाइकर फिरव्या
सदेवजीबोले हेमुने तिसराजाकेइसवाक्यकर्के
कमलापति भगवान प्रसन्न होएके वडेस्नेहसेंश्री
तिसें तिसराजाकों अपनेकमलासनपरविठावते
भये ८२॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततः स्वर्णालंकारैर्विश्वकर्मविनिर्मितैः च
कारांडवनेन सस्वयमेव दयापरः ८३ अथ
नानाविधैर्भक्ष्यैर्देवानामपिदुर्लभैः तोषितः
समहीपालो विष्णुनाशत्रुजिष्णुना ८४ एवं
शतिदिनं न स्थौ स राजा विष्णुमंदिरे मन्वंतरस
हस्राणि द्वितीय इव केशवः ८५ अथ पुण्या
वसाने तु पुनरागतिमेदिनीं जातिस्मरो म
हाभागः सार्वभौमो वभूव सः ८६ ॥

तिससे उपरंत विश्वकर्मा करके वनाए होए स्वर्गके
रत्नोंकर जड़ित भूषणों कर तिस राजाका आ
पद्यामें तत्पर होए हुए भगवानूजी श्रृंगार
कर्तेभये ८३ फिर देवता लोकोंको जोदुर्लभ
अनेकप्रकारोंके भक्ष्य भोज्य हैं तिनों करके
शत्रुयोंको जीतने वाले विष्णुने सो राजा प्र
सन्नकरा ८४ इस प्रकारके आदर सन्मान पूर्व
क रोजके राजा मन्वंतरोंके हजारों दूसरे केशव
जीकी न्याई हो विष्णुके मंदिर वैकुंठमें स्थित
होताभया ८५ इससे उपरंत उस पुण्य फल
के अंतमै फिर पृथिवी लोकमें आयकर सो
महाभाग पूर्व जन्म जिसको स्मरण और सा
र्वभौम क्या चक्रवर्ती राजा होता भया ८६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१४३

नववर्षसहस्राणिनववर्षशतानिच प्रजा
नांपालनेचक्रेसराजाधर्मतत्परः ८७ पूज
यामाससततंभक्त्यापरमयाहरिं चारुचंप
कपुष्पैश्चनैवेद्यैर्विविधैस्तथः ८८ प्राप्तःशे
षंसभूपालोमरणंजाह्नवीजले समासा
द्यययौमोक्षं प्रसादाच्चक्रपाणिनः ८९ व्यास
उवाच विप्रचंपकपुष्पस्यप्रभावोयंप्रकी
र्तितः चंपकैर्हरिमभ्यर्च्यमुक्ताःस्युःपापि
नोपिच ९० ॥ ७

तो सोराजाधर्ममेंतत्परहोयकुया नौहजारनौसव
वर्ष प्रजाकापालनकर्त्ताभया ८७ औरपरमभ
क्ति करके सर्वदाकाल हरिकोंपूजताभया सुंदर
चंपेकेपुष्पों करके औरअनेक तरांकेनैवेद्यांक
र्के ८८ जद तिसकोआयुपूर्ण होजाती भई
तद गंगाजीके किनारे जायकर मृत्युकों प्रा
प्तहोकर चक्रपाणिभगवान् जीके प्रसाद क
रकेमोक्षकों प्राप्तहोताभया ८९ इतनीक
थ्या सुनायकरिफिर व्यासदेवजी कहनेलग
गे हेविप्रऋषे चंपेके पुष्पचढानेकाप्रभावक
थन करोहे जिसचंपेके पुष्पोंकर्के हरिका पू
जनकर पापि पुरुषभी मुक्तहोतेहे ९० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्तुतं चंपकपुष्पेण पूजितो भगवान्हरिः
अचिरेणैव विप्रर्षे ददात्यभिमतं फलं ॥
ये यजंति परात्मानमिच्छयावाप्यनिच्छ
या ते प्रयांति परं धाम विमुक्ताः सर्वपा
तकैः १२ हरौ प्रसन्ने हरितेन कोपि रुष्टे
च न स्मिन्स्तु कृतीन कोपि यतः स राजा
कृतघ्नात कोपि जगाम मोक्षं कृपया
मुरारेः १३ ॥

अगरे जवान है की चंदे की पुष्पों करकें पूजा
करे होय हरि है विप्रर्षे थोड़े काल करकें ही
अभिमत फल क्या वांछित फल देते है १२
जो पुरुष इच्छा करकें वा विना इच्छासें प
रात्मा हरि कों पूजते हैं सो सारे पापों क
रकें मुक्त होय हूए परम धाम कों जाते हैं
१२ ऐसे औह भगवान् हरि हैन जिनके
प्रसन्न होयदे पापी कोई नहि है और
जिनके कोपी भी होय हूए पुण्यवान् कोई न
हि है देखो जिन की कृपासे पापकरने
वाला सो राजा मोक्षमार्ग कों प्राप्त होता
भया १३ ॥ ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१८८

विश्वार्णवं निम्न मिमं तितीर्षुर्दिव्यैस्तुगंधैश्चंपकजैः प्रसूनैः नारायणं पद्मदलायताक्षं मत्योयियो विप्रविहायपापम् ॥ १८ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे पुष्पार्पणमहिमा वर्णनम् ॥

155

ऐसे प्रभाव वाले तिनकों जानकर वडे दुंगे संसार समुद्र कों तरने की इच्छा वाला दिव्यसुगंधि वाले चंबेके पुष्पों करकें पुरुष पद्मपत्रकी न्याईं विशाल नेत्रों वाले भगवान जीका पूजन कर हे विप्र पापों कों त्यागके नारायण की सालोक्यता कों प्राप्त होताहै ॥ १८ ॥ यह पद्मपुराण के क्रिया योगसारमें भगवान् जीके ऊपर पुष्प चडाने का माहात्म्य वर्णन होचुका ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ विष्णुपरि तुलसीदलार्पणे माहात्म्यं
वर्ण्यते पाद्मे देवहूतविकुंडलसंवादे आ
रोप्य तुलसीं वैश्य संपूज्य तद्दलैर्हरिम् । व
संति मोदमानास्ते यत्र देवश्चतुर्भुजः १ प्रथ
मतो तुलसीवर्णनम् जैमिनिं प्रति व्या
सवाक्यम् इंद्राद्यैर्दैवतैः सर्वैस्तु तुलसीभ
गवत्यसौ संसेव्या सर्वदा विप्र चतुर्वर्ग
फलप्रदा २ स्वर्गे मर्त्ये च पाताले तुल
सी दुर्लभा मता चतुर्वर्गफलप्रेप्सुस्तस्यां
भक्तिं करोत्यसौ ३ ॥ ~ ॥

अब विष्णुजी के ऊपर तुलसीदल चढाने की
महिमा वर्णन करते है पद्मपुराण मे देवहूत
विकुंडल के संवाद करके हे वैश्य जो पुरुष घर
में तुलसी लगाकर तिसके दलों के साथ ह
रिका पूजन करके प्रसन्न मन वाले तहां नि
वास करते हैं जहां देवता चतुर्भुजजी निवा
स करते हैं १ प्रथम तुलसी के वर्णन में जै
मिनि के प्रति व्यासदेवजी का वाक्य है हे विप्र
सर्वदा काल चार वर्ग फल देनेवाली यह भ
गवती तुलसी सो इंद्रादि देवतेयों ने सेवीरी
हय २ कैसी तुलसी है स्वर्ग मर्त्य पाताल इनो
तीनों लोकों मे बडी दुर्लभ है और जो कोई चार
वर्ग धर्म अर्थ काम मोक्ष इन की इच्छावा
ला इस तुलसी में भक्ति करे ३ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यत्रैकस्तुलसीवृक्षस्तिष्ठति द्विजसत्तम
तत्रैव त्रिदशाः सर्वे ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः
४ केशवः पत्रमध्ये च पत्राग्रे च प्रजापतिः
पत्रांते च शिवस्तिष्ठेत् तुलस्याः सर्वदैव
हि ५ लक्ष्मीः सरस्वती चैव गायत्री चं
डिका तथा शची चान्या देवपत्न्यस्त
त्रैव वसंति हि ६ इंद्राग्नी शमनश्चै
व निर्ऋतिर्वरुणस्तथा पवनश्च कुवे
रश्च तच्छाखायां वसंत्यमी ७ ॥

हे द्विजसत्तम जहांमे एक तुलसीका वृक्ष
लगा हुया है तहांमे ब्रह्मा विष्णु शिव इत्या
दि सभ देवता निवास कर्ते हैं ४ और केसा है
यह तुलसी वृक्ष के एक पत्र के मध्यमें के
शव विष्णुजी निवास कर्ते है और पत्र के अ
ग्र मैं प्रजापति ब्रह्मा निवास कर्त्ता है औ
र पत्र के अंतमे सदा शिवजी रहते हैं ५
और लक्ष्मी सरस्वती गायत्री चंडी और
इंद्राणी और जो शक्तियां हैं देवतेयों कीयां
स्त्रियां सो सभी तिसके पत्रोंमे निवास कर्ती
यां है ६ और इंद्र अग्नि शमन क्या यम
राज निर्ऋति वरुण और पवन कुवेर य
ह सभी दिशांके पालक तिसकी शा
खोमें निवास कर्ते है ७ ॥

145

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आदित्यादिग्रहाः सर्वे विश्वेदेवाश्च सर्वदा वस
वोमुनयश्चैव तथा देवर्षयोऽखिलाः ८ वि
याधराश्चगंधर्वाः सिद्धाश्चाप्सरसस्तथा तु
लसीमूलमासाद्य सर्वदा निवसंति हि ९
गंगा च यमुना चैव नर्मदा च सरस्वती गो
दावरी चंद्रभागा स्तथान्याः सरितोऽखिलाः
१० कोटिब्रह्मांडमध्ये च यानि तीर्थानि भूत
ले तुलसीमूलमाश्रित्य ता न्येव निवसंति
वै ॥ ११ ॥

आदित्यादि सारे ही नौग्रह और विश्वेदेव भी स
र्वदा काल और आठ वसु मुनि देवर्षि सोही
८ वियाधर गंधर्व सिद्ध अप्सरां इत्यादि सा
रे ही तुलसीकी छयामे आश्रित होके नि
वास कर्ते हैं ९ और गंगा यमुना सरस्वती
नर्मदा गोदावरी चंद्रभागा तैसे ही और सा
रियां नदीयां भी १० और कोटब्रह्मांड के म
ध्य में और पृथिवी तलमे जितने क तीर्थ
है सो सारे तुलसीके मूल को आश्रित
होके निवास कर्ते हैं ॥ ११ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्वदेवमयी देवी तुलसी विष्णुवल्लभा यत्र
तिष्ठति तत्रैव तिष्ठन्ति सर्वदेवता: २ पाद्मे
पुनस्तत्रैव तुलस्यारोपणमहिमा यावद्व
र्षसहस्राणि यावद्बीजदलानि च वसंति
वैष्णवे लोके तुलसीं रोपयंति ये ३ रोपा
णात्पालनात्सेकाद्दर्शनात्स्पर्शनादपि तु
लसी दहते पापं वाङ्मनःकायकर्मजम् ४
न पश्यंति यमं वैश्य तुलसीवनरोपणात्
सर्वपापहरं सर्वकामदं तुलसीदलम् ५

सारे देवतों के रूपवाली देवी तुलसी विष्णुकी
प्यारी जहां स्थित रहती है तहां ही सारे ही देवता
निवास करते हैं २ अब पद्मपुराण में तुलसी ल
गाने की महिमा लिखी है जितने क तुलसी के
पत्र और बीज होते हैं उतने हजार वर्ष तुलसी
लगानेवाले विष्णुलोक मे निवास करते हैं ३
तुलसी को लगाने से और पालना करने से और
सिंचन करने से और दर्शन से इसके स्पर्श से इत
ने कर्म करने से तुलसी मन वाणी देह के के
रहे भी पाप दग्ध करती है ४ और तुलसी का व
न लगाने से मृत होकर पुरुष यम को नहि
देखता है सारे पापों के हरने वाला और
संपूर्ण कामनां के देने वाला तुलसी का
दल है ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तुलसी काननं वैश्य गृहे यस्मिंस्तु तिष्ठति न
द्गृहं तीर्थभूतं हि नो यांति यमकिंकराः १६
विष्णुभक्तजनः सम्यक् तुलसीं यस्तु रोपयेत्
युगायुतं मध्येकं नरो मर्को मोदते दिवि १७
आम्राणां तु सहस्रेण पिप्पलानां शतेन च
यत्फलं तत्तदेकेन तुलसीविटपेन तु १८
पाद्मे कार्तिकमाहात्म्ये यावच्छाखाप्रशा
भिर्वीजपुष्पदलैर्मुने रोपिता तुलसी नृ
भिर्वर्धते वसुधातले १९ ॥

हे वैश्य जिसके घर में तुलसी का वन स्थित है सो
घर तीर्थ रूप है तहां यम के किंकर हैं तो नहिं
आवते हैं १६ विष्णुभगवान्‌जी की पूजा क
रनेवाला जो पुरुष अपने घर में तुलसी कों
लगावता है सो पुरुष युगों के अयुत एक
लाख वर्ष स्वर्ग में आनंद भोगता है १७ आमों
के एक हजार वृक्ष लगाने करके और पिप्प
लों के सैकड़े लगाने करके होता है सो फ
ल एक तुलसी का वृक्ष लगाने करके होता
है १८ पद्मपुराण के कार्तिकमाहात्म्य में लि
खा है जितनीयां शाखां करके और प्रशाखां
करके और पुष्प दलों करके हे मुने पुरुषों ने ल
गाई होई तुलसी पृथिवीतल में उसकी संता
न वसुधातल में वधती है १९ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तेषां वंशे तु ये जाता ये भविष्यंति ये गताः आ
कल्पयुगसाहस्रं तेषां वासो हरेर्गृहे २० अ
थ तुलस्याः सेक महिमा वर्णनं तुलसीं सेचा
येद्यस्तु अंभोदकमात्रकैः तुलस्याः शृणु
राजेंद्र तस्य पुण्यमनंतकम् २१ पाद्मे क्रिया
योगसारे वैशाखे कृत धाराभिरद्भिर्यस्तु
लसीं नमः सेचयेत्सोऽश्वमेधस्य फलमाप्नो
ति नित्यशः २२ अथ तुलस्या रक्षणमाहात्म्य
वर्णनं क्रियायोगसारे तरुणानि तुलसी
मूलान्यावत्यवहन्ति वै तावतीर्ब्रह्मह॰
त्यां वै छिनत्ति न संशयः २३

और तुलसी लगाने वाले के वंश में जो जन्मे हो गये हैं
और मर गये हैं और जो आगे जन्मेंगे तिनका निवा
स कल्प पर्यंत युगों के हजारों हरि के मंदिर
में होता है २० अब तुलसी को सिंचन करने की
महिमा लिखी है जो पुरुष थोड़े भी जल करके
तुलसी को सिंचन करता है क्या जल दान करता
है हे राजेंद्र तुलसी को जल सिंचन करने का
अनंत फल श्रवण कर २१ पद्मपुराण में क्रि
या योग सार में लिखा है वैशाख महीने में अत
न धारा करके जो पुरुष सेचन करता है सो पुरुष
नित्यं प्रति अश्वमेध के फल को प्राप्त होता है २२
अब तुलसी की रक्षा करने का महात्म्य लि॰ पद्म
पुराण के क्रियायोगसार में जितने कतरुणवा तु
लसी के मूल देश में हरक करता है उतनी ही ब्रह्म
हत्या छेदन करता है इसमें संशय नहीं है २३

157

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छिंदंति तृणजालानि तुलसीमूलजानि ये
स्वदेहस्थाब्रह्महत्यां छिंदंति सहसा हि ते २५
कंटकावरणं वापि वृतिं काष्ठैः करोति यः
तुलस्याः शृणु राजेंद्र तस्य पुण्यफलं महत्
यावद्दिनानि संतिष्ठे काष्ठकावरणं नृप कु
लत्रययुतः सोपि तिष्ठेद्ब्रह्मपदे युगं २६
प्राकारं कल्पको यस्तु तुलस्या मनुजेश्वर
कुलत्रयेण संयुक्तो विष्णोः सायुज्यमाप्नुया
त् २७

जो पुरुष तुलसी के मूल देशमें जन्म होय तृण
घासके समूह तिनकों छेदन कर्तेहै सो पुरुष अप
ने देहमें स्थित जो ब्रह्महत्या है तिनकों शीघ्र छे
दते हैं २५ और जो पुरुष कंडेयोंका आवरण वा
काष्टका आवरण क्या गोलाकार जिसके चारों
ओर जो तुलसीकी रक्षाके लिये कर्ते हैं हे राजेंद्र
तिस पुण्यका वडा फल श्रवण कर २५ हे नृप
तुलसीके चारों पासें काष्टकावरण जितने दिन
रहता है उतना काल पर्यंत पुत्र स्त्री इनके यु
क्त ब्रह्माके पदमें स्थित रहता है २६ हे मनुजे
श्वर तुलसीकी रक्षाके लिये जो प्रकार क्या को
टवनाते हैं सो तीन कुलोंके सहित विष्णुकी
सायुज्य मुक्तिकों प्राप्त होते हैं २७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१५८

148

निदाघसमयेतुलस्या उपरि छत्रादिकस्यम
हिमावर्णने पाद्मे चंद्रातपं वाञ्छितं वा नसेव
लभेच्छति विशेषतो निदाघेषु समस्तकः स
र्वपातकैः २८ अन्यजीवेभ्यस्तुलस्या रक्ष
णो महात्म्यं वर्णने क्रियायोगसारे गोभ्यो
ऽजोष्ट्रवैरिभ्यश्च माहिषेभ्यश्च रक्षति शिशु
भ्यस्तुलसीं यस्तु तं रक्षते केशवः स्वयम् २९
तुलस्याः संमार्जनादि महिमावर्णने
गोमयैस्तुलसीमूलेयः अर्थादनुलेपनं स
मार्जनं च विशेषेण सम्पूर्णफलमश्नुते ३०
गर्मीके दिनोंमें तुलसीके ऊपर छतरी लगानेकी
महिमा वर्णन करते हैं पद्मपुराणमें लिखा है जो पु
रुष चांदनीके निवृत्ति वास्ते वा सूर्यकी धूप नि
वृत्तिके वास्ते छतरी लगाते हैं और विशेष क॰
के ग्रीष्म ऋतुमें जो तिसके ताईं देते हैं सो संपूर्ण
पापोंकरके मुक्त होते हैं २८ अब गौयां महिषि
यांसे आदलेकर पशुयोंसें रक्षा करनेकी म
हिमा लिखा है क्रियायोगसारमें गौयांसें बक
रियांसे ऊंटोंसें गधेयोंसें और महिषियोंसें
और बालकोंसे जो तुलसीकी रक्षा करते हैं ति
नकी रक्षा केशवजी आप करते हैं २९ अब तुल
सीके नीचे सोतना लेपन लगाना इसकी म॰
हिमा लिखा है जो पुरुष तुलसीके मूलमें गोह
के साथ सदर लेपन लगाते है और हे विशेष नी
चे संशोधन करते हैं तिनके पुण्यका फल अवनकर ३०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रजांसि तत्र यावंति हरी भूतानि जैमिने ता
वत्कल्पसहस्राणि मोदते विस्नुनासह ३१।
दर्शनमहिमा पाद्मे प्रभाते तुलसीं पश्येद्
भक्तिमान्योनरोत्तमः स विस्नुदर्शनस्यैव फ
लं प्राप्नोति चाक्षयं ३२ पूजनमहिमा पद्मे
दूर्वाभिरक्षतैः पुष्पैर्नैवेद्यैस्तुलसीं शुभाम्
समाराध्य नरो भक्त्या विस्नुपूजाफलं लभेत्
येनार्चिता भगवती तुलसी कदाचिन्नैवेद्य
पुष्पवरधूपयुतप्रदीपैः धर्मार्थकाममो
क्षदायविशां किं तस्य विस्नुचरणापचितिप्र
योगैः ३४ ।।
हे जैमिनि तुलसी के नीचे में जितनीक रज धूलि हर
होई है उतने ही हजारां कल्प विस्नु के साथ आनंद भो
गता है ३१। अब तुलसी के दर्शन की महिमा लिख
ते हैं पद्मपुराण में कहा है जो नर सा भक्ति वाला पुरु
ष प्रातःकाल तुलसी को देखता है सो विस्नु के
दर्शन करने के अक्षय फल को प्राप्त होता है ३२
अब तुलसी की पूजा का माहात्म्य पद्मपुराण में लि
खा है दूर्वा अक्षत पुष्पों करके नैवेद्यों करके पुरुष
भक्ति के साथ शुभ तुलसी का आराधन करके विस्नु
की पूजा करने के फल को लभता है ३३ और जिसने
भगवती तुलसी कदाचित् श्रेष्ठ नैवेद्य पुष्प धूप
युतके दीपों करके पूजन करी है धर्म अर्थ काम
मोक्ष इन चार पदार्थों के देने वाली तिस को विस्नु
के चरणों की पूजा करके क्या प्रयोजन है ३४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१५६

स्थानेषुदोषरहितेषुगृहोद्यसेत्थायेरोपयं
तीतुलसींहरितुष्टिकर्त्रीं तुष्टोहरिस्त्रि
जगतामधिपोमुरारिस्तेभ्योददातिपर
मंपदमाशुविप्र ३५ तुलसीसमीपेपित
यज्ञादिकरणोमहिमावर्णितेपाद्मे यज्ञं
व्रतंचपितृपूजनमच्युतार्चादानंयदन्य
दपिकर्मशुभंमनुष्याः कुर्वंतिदोषरहि
तेतुलसीतलेचतान्यक्षयानिसकलानि
भवंतिनूनं ३६ स्कंदे तुलसीकाननच्छाया
यत्रयत्रभवेद्द्विज तत्रश्राद्धंप्रकर्तव्यंपि
तृणांप्रीतिहेतवे ३७ ॥

ओरदेवतेयोंके समूह करकें सेवनकरीहोई तुल
सीकों दोषरहित स्थानोंमे जोनसें पुरुष तुलसी
कों लगातेहैं हरिकों प्रसन्नकरनेवाली हे वि
प्र तीनलोकोंके अधिपति जोनारायणविष्णु
सो प्रसन्न मनवाले होय हुए तिनके तांई शी
घ्र हीपरम पद देतेहैं ३५ अब तुलसीके पास
श्राद्धादिकरनेकी महिमालिखीहै पद्मपुराणा
णोंमे हेमने जोकोई मनुष्यदोषरहित तुलसी
केतलनीचे यज्ञव्रत दान पितरोंका पूजन
विष्णुकी पूजा ओरजोकछु शुभकर्म कर्तेहैं
सोसारेही निश्चयकर्कें अक्षय फलवाले होजा
तेहैं ३६ स्कंदमें लिखीहै हेविप्र तुलसीके व
नोंकीछायाजहां २ होवे तहां मे पितरोंकी तृ
प्तिकेकारण श्राद्धकरणा चाहिये ३७ ॥ ९

149

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पितृपिंडार्चणं श्राद्धे यैः कृतं तुलसीदलैः । त
र्पिताः पितरस्तेन यावच्चंद्रार्कतारकाः १८
तुलसीमृत्तिकायत्र काष्ठं पत्रं च वेश्मनि
तिष्ठति मुनिशार्दूल न हरेर्वेश्म वै पदम् १९
अभिन्नपत्रा हरिता हृद्यामंजरिसंयुता क्षी
रोदार्णवसंभूता तुलसी दापयेद्धरेः २० ना
रायणोपरि तुलसीदत्तार्पणमहिमा पा
द्मे देवदूतविकुंडलसंवादे तावद्गर्जंति र
त्नानि कौस्तुभादीनि भूतले यावन्न प्राप्यते
कृष्णो तुलसीकुसुममंजरी २१ ॥

और जिन पुरुषों ने तुलसी दलों के साथ श्राद्ध में
पितरों के पिंड का पूजन करा तिन पुरुषों ने तृ
प्त न करके जब तक चंद्रमा सूर्य तारे हैं उतना
काल तृप्त करे है १८ हे सतियों में श्रेष्ठ तुलसी की
मृत्तिका काष्ठ पत्र जिस घर में है तिनको वेश्म
व पद हर न हि है १९ नहीं किसी प्रकार करके
भी भेद होय हरे रंग के पत्रों वाली मनोहर मं
जरों के सहित क्षीर समुद्र से उत्पन्न होई
हुई तुलसी को हरि के ताँई देवे क्या ऊपर चढा
वें २० नारायणजी के ऊपर तुलसी चढाने की
महिमा देवदूतविकुंडल के संवाद करके पद्म
पुराण में लिखी है पृथिवी में कौस्तुभादिक मणि
यां उतना ही काल गर्जना करती हैं जितना काल कृ
ष्णजी को तुलसीदल मंजरी प्राप्त होई २१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
५॰

150

तुलसीगौरकृस्नाख्यानयाभ्यर्च्यजनार्द्दनं
नरोयातितनुंत्यक्त्वाश्रीविस्नोःशाश्वतींगतिं
४२ पाद्मे हंदावासदेवोपाख्याने सत्यप्रीति
करंविस्नोःकोपतस्यनुनामसः भावद्वयं
हरौजातंननत्दुर्गांद्वयंसुमन् ४३ श्यामा
पितुलसीविस्नुःप्रियागौरिविशेषतः विस्न
रहस्ये यत्फलंसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुयत्
फलं तुलसीदलेनदेवर्षेप्राप्यतेकेशवार्
चनात् ४४ स्कंदे किंकरिष्यतिसंरुष्टोयमा
पिसहकिंकरैः दलैस्तुलस्यादेवेशःपूजि
तोयेनदुःखहा ४५ ॥

श्यामातुलसी औरगौरतुलसी जिसकेसाथजना
र्दनजीकोपूजनकरकें पुरुष इसदेहकों त्यागकर
विस्नुकी शाश्वतगतिकोंप्राप्तहोताहै ४२ पद्मपु
राणके हंदा वासदेवजीकेउपाख्यानमेलिखाहै
विस्नुकासत्यप्रीतिकरनेवालाहै कोपतिसकात
नीजाताहै यहदोभाव हरिमे उत्पन्नहोयतो सोई र
दोवलंरंगभीहोगए ४३ श्यामातुलसीभी विस्नु॰
कीप्यारीहै गौरीप्यारीहै विशेषकरकें विस्नुरहस्य
मेलिखाहै हेदेवर्षजोफल सारीतीर्थोंमे स्नान
करकेहोताहै औरजोफलसभयज्ञोंकेफलपत्र च
ढानेकरकें होताहै सोफल पत्रतुलसीकेदलसमा
थ केशवजीकीपूजासेंहोताहै ४४ स्कंदमेविशेष
वाक्यलिखाहै क्याजिसनेदुःखहरकरनेवाले दे
वेश हरितुलसीकेदलोंकरकें पूजेहैं तिसकोंअ
पनेदूतोंकेसाथ क्रोधभीहोय यमराजया भयभीक्याकरे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मणिकांचनपुष्पाणि तथा मुक्तामयानि वै
तुलसीदलमात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीं ५८
तुलसीमंजरीभिर्यो युक्तो हरिहरार्चनं नस
गर्भगृहं याति मुक्तिभागी भवेन्नरः ५७ पु
राणांतरे लिंगमभ्यर्चितं दृष्ट्वा प्रतिमां के
शवस्य हि तुलसीपत्रनिकरैर्मुच्यते ब्रह्म
हत्यया ५८ गारुडे तन्मूलमृत्तिकां चांगे
कृत्वा स्नाति दिने दिने दशाश्वमेधावभृथ
स्नानजं लभते फलम् ५६ ॥

माणिया कांचन के पुष्प और मोतियों कर्कै जड़
ित स्वर्ण के पुष्प तुलसी दलमात्र की सोलह
मी कला को नहि प्राप्त होसकते हैं ५८ और तु
लसी की मंजरी कर्कै हरि हर जी का पूजन
कर्ता है सो गर्भवास मे नहि जाता है क्या मुक्ति
का भागी पुरुष होजाता है ५७ पुराणांतर मे
लिखा है तुलसी के पत्र समूहों कर्कै पूजन करा
हुया शिवलिंग का और केशव जी की प्रतिमा
का दर्शन कर्कै ब्रह्महत्या से मुक्त होता है ५८
गरुड पुराण मे लिखा है तुलसी के मूल की
मृत्तिका अंगों मे लगाकर प्रतिदिन जो स्ना
न कर्ता है सो दशाश्वमेध में स्नान करने
के फल को लभता है ५६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१५।

तुलसीदलजांमालामेकादश्यांविशेषतः
मुच्यतेसर्वपापेभ्योयद्यपिब्रह्महाभवेत् ५॰
श्रीभगवद्वाक्यं तुलसीपत्रमादाययत्रग
च्छतिमारुतः यःकरोतिममार्चनं नपुन
र्योनिमायातिमुक्तिभागेभवेत्तुसः ५।
स्कंदे तुलसीगंधमादाययत्रगच्छति॰
मारुतः विदिशश्चदिशःपूताःभूतग्रा
मश्चतुर्विधः ५२ योर्चयेद्धरिपादाब्जंतु
लस्याःकोमलैःदलैः नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्र
ह्मलोकात्कथंचन ५२॥

तुलसीके दलोंकोंबनाईहोई माला विशेषकर्कै
एकादशीकेदिनमें श्रीपतिकोचढ़ातेहैं सोसमां
नोंपापों सेंमुक्तहोतेहैं जेकरब्रह्महत्यावालेभी
होवें तदभीमुक्तहोजातेहैं ५॰ श्रीभगवानजीका
वचनलि॰ जोकोई तुलसीकापत्रलेकर्कै मे
रीपूजाकर्ताहै सोफिर योनि क्या गर्भवास में
नहि आवताहैं सोमुक्तिकाभागीहोताहै ५।
स्कंदमेलिखाहै तुलसीकीसुगंधिलेकेवायु
जहांकोचलताहै तहांकीयांदिशा विदिशा भूत
ग्रामचारप्रकारके पवित्रहोजातेहै ५२ और जो
पुरुषतुलसीके कोमल दलों कर्कै हरिके चर॰
ण कमलों कों पूजताहै तिसकी ब्रह्मलोकेंमे
कदीभीपुनरावृत्तिनहिहोतीहै क्या जेह्रपात
कर नहि आवताहै ५३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सृज्यमाना च तुलसी यस्य वेश्मनि तिष्ठति तस्यै
व सर्वश्रेयांसि वर्धंते हरिर्द्विज ५४ पुष्करा
दीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा वासुदे
वादयो देवाः वसंति तुलसीदले ५५ पाद्मे तु
लसीदलपत्राणि ये यच्छंति जनार्दने का
र्तिके सकलं वत्स पापं जन्मायुतं हरेत् ५६
दृष्टा स्पृष्टा तथा ध्याता कीर्तिता नमिता नृ॰
णां रोपिता सेविता नित्यं पूजिता तुलसी शुभा
नवधा तुलसीभक्तिं ये कुर्वंति दिने दिने युग
कोटिसहस्राणि तन्वंति सुकृतं मुने ५८

और हे द्विज सृज्यमान तुलसी जिसके वेश्य में का
घर में स्थित है तहां में दिन प्रति दिन कल्याण व
धातियां है ५४ तुलसी के दल में पुष्करादि तीर्थ
गंगादिक नदीयां वासुदेव जी से आदि लेकर स
म्पूर्ण देवता निवास करते हैं ५५ पाद्म में लिखा है
जो पुरुष तुलसीदल पत्र जनार्दन भगवान जी
पर चढ़ावता है कार्तिक महीने में सो रे हे वत्स
तिसके दश हजार जन्म के पाप हर होते हैं ५६
तुलसी का प्रातःकाल दर्शन करना उसके सा
थ स्पर्श करना तुलसी कि ध्यान करना और की
र्तन करी होई नमस्कार करी होई अपने घर में
और सिंचन करी होई और नित्यप्रति शुभदायक पू
जन करी होई ५७ नौ प्रकार की भक्ति दिन २ में जो
करते है सो युगों के क्रोडों हजारों पुण्य को विस्ता
र करते हैं ५८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रसंगाद्धत्र तुलसीदलार्चनमाहात्म्यमाह
स्कंदपुराणे तुलसीदललक्षेण योर्चयेद्द्वार
कापतिं जन्मायुतसहस्रस्य पापस्य कुरुते
क्षयम् ५६ पाद्मे तुलसीलक्षपत्रेण कार्त्ति
के योर्चयेद्धरिं पत्रे पत्रे मुनिश्रेष्ठ मौक्तिकं
लभते फलं ९० तुलसीदललक्षेण पूजा
यत्कमलापतिं लक्षैकवाजिमेधस्य फलं
प्राप्नोति मानवः ९१

अव प्रसंगवशसें तुलसीकी लक्षावलि चढाने
को माहात्म्य कहतेहैं स्कंदपुराणमें लिखाहै
लाख तुलसीदलके साथ जो द्वारकाके स्वा
मि कृष्णजीकों पूजतेहैं सो दशहजारजन्मों
के इकट्टे करेहोए पापोंको क्षय कर्तेहैं ५६
पद्मपुराणमें लिखाहै जोपुरुष कार्तिक मही
नेमें लक्ष तुलसीके पत्रों करकें हरिकों पूज
तेहैं सोपुरुष एक २ पत्रमें मोती चढानेके
फलकों लभतेहै ९० औरजोपुरुष कमला
पतिकों तुलसीदलों के लक्ष करकें पूजन
कर्तेहै सो मानव लक्ष अश्वमेधके फलकों
प्राप्तहोताहै ९१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मेकार्तिकमाहात्म्ये पृथुनारदसंवादे इ
तिहासमवतारयति पृथुरुवाच आराधयं
ति सर्वेऽपि विष्णुंभक्तार्तिनाशनं यज्ञैर्दानै-
र्व्रतैस्तीर्थैस्तुलसीवनसेवनैः १ विष्णुप्री
तिकरं तेषां विष्णुसान्निध्यकारणं यत्कृत्वै
तानि चीर्णानि सर्वाण्यपि भवंति हि २ त
द्ब्रूहि सर्वमेयत्र सर्वशास्त्रार्थवित्तम ३
नारदउवाच साधुपृष्टंत्वयातातनृपश्रेष्ठै-
काग्रमानसः इतिहासकथांदिव्यांकथ्य
मानांशृणुभवान् ४ ॥

अब तुलसीचढानेकामाहात्म्य पद्मपुराणके का
र्तिकमाहात्म्यमैंपृथुनारदकेसंवादकरकैंकथनक
र्तेहैं पृथुराजानारदजीकेप्रति कथनकर्ताभया
हेऋषे भक्तोंकीपीडानाश करनेवालेविष्णुजी-
कोंयज्ञदानव्रततीर्थ स्नानादि तुलसीकेवनकी
सेवाकरकें सारेही आराधनकर्तेहैं १ औरविष्णु-
कीप्रीति करनेवाले और विष्णुकी सान्निध्यताके
कारणजो व्रतदानादिसारेहि जिसएक कर्मको
करकें तिनसभनोंके करनेका फलहोताहे २
हेप्रभोसभनोंशास्त्रोंके अर्थजाननेवाले हेवि
द्वपऊसभीमेरे प्रतिकहो ३ इतनावाक्य श्रवण
करकें नारजीकथनकर्तेभये हेतात वडी अच्छी
वातपूछीहै अवएकाग्र मनवालाहोके श्रवणक
र इसवातमें पूर्वहोई हुए दिव्यकथा कथनक
री होई श्रवण कर ४ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

153

कांचीपुर्यां पुराचोलश्चक्रवर्तीनृपोभव
त् यस्यनाम्नैवतद्देशाश्चोलाःख्याताःकि
लाभवन् ५ यस्मिन्शासतिभूचक्रेनदरि
द्रोनदुःखितः पापबुद्धिःसरुग्वापिनैव
कश्चिदभून्नरः ६ यस्याप्यनंतयज्ञस्यताम्र
पर्णास्तटावुभौ सुवर्णयूपशोभाढ्या
वास्तांचक्ररथ्योपमौ ७ सकदाचिद्गतो
राजाह्यनंतशायनंमुने यत्रास्तेजगतां
नाथोयोगनिद्रामुपासते ८ ॥

एवं एकसमय कांचीपुरीमे चोलनाम करकें
चक्रवर्ती राजाहोता भया जिसके नामकरकें
ओह देशभी चोलानामकरकें प्रसिद्धहोतेभये
५ जिसराजाके भूचक्रको शासनाकरतेहुए
दरिद्री और दुखी कोई नही होताभया और पाप
बुद्धि वाला अर रोगीभीकोईनहीहोताभया
औरपापबुद्धि वाला अर रोगीभीकोई नाहिहो
ताभया ६ जिसअनंतयज्ञके ताम्रपर्णीके
दोनोकिनारे चक्ररथकी उपमावाले सुव-
र्णोके यूपोंकी शोभाकरयुक्तहोतेभये ७
हेमुने सोराजा एकसमय अनंतशयनजी
के जाताभया जहां एह भगवान् जगतके
स्वामि योगनिद्राकरतेहै ८ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तत्र श्रीरमणं देवं संपूज्य विधिवन्नृपः मणि
मुक्ताफलैर्दिव्यैः स्वर्णभूषैश्च शोभनैः ६
प्रणम्य दंडवद्भूमावुपविष्टः स तत्र वैः ताव
द्ब्राह्मणमायांतमपश्यद्देवसन्निधौ ७ देवा
र्चनार्थमायांतं तुलस्युदकपाणिनं स्वपुरी
वासिनं तत्र विष्णुदासाख्यं द्विजं ८ तत्राभ्य
र्च्य स देवर्षिर्देवदेवं जनार्दनम् विष्णुसूक्ते
न संस्नाप्य तुलसीमंजरैर्जलैः ९ तुलसीपू
जनात्तस्य रत्नपूजा तिरस्कृता आच्छादि
तां समालोक्य राजा क्रुद्धोऽब्रवीद्द्विजः १०

तहां श्रीरमणदेवताजीकों शास्त्रोक्त विधिसें
सो राजा शोभायमान स्वर्णके भूषण मणियां
मोती दिव्य भूषणों के साथ पूजा करके ६ दंड
वत भूमिमें प्रणाम करके तहां पासही बैठ
जाता भया ३ तितनेमें एक ब्राह्मणकों सामग्री
हाथमें लिये होए कों राजा देखता भया विष्णु
जीके पासमें ७ देवताकी पूजा करनेकों आ
या तुलसी जलका कमंडलु हाथमें लिये
होए अपनीपुरीमेंही निवासकरनेवाले वि
ष्णुदास कों देखता भया ८ तहां सो ब्राह्मण दे
वतेयोंके देवता जनार्दनजीकों विष्णुसूक्तके
साथ स्नान कराके फिर तुलसीयां जो मिंजरा
तिनके साथ शृंगार करता भया ९ परंतु तुलसी
की पूजासें रत्नोंकी पूजाका शृंगार आच्छादित
होगया तो क्रोधकर राजा कहता भया १०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१५४

154

राजोवाच स्वर्णमणिमुक्तादिशोभाढ्यार्चा
कृता मया विष्णुदास कथं सेयमाछन्ना तु॰
लसीदलैः १४ विष्णुभक्तिं न जानासि वराको
सि मतो मम यत्त्विमामतिशोभाढ्यां पूज
याच्छादयस्यहो १५ इति तद्वचनं श्रुत्वा सको॰
पः स द्विजोत्तमः राज्ञः गौरवमुल्लंघ्य जगाद व
चनं तदा १६ विष्णुदास उवाच राजन्भक्तिं न
जानासि गर्वितोसि नृपश्रिया किं विष्णु॰
व्रतं सम्यक् त्वया चीर्णं वदस्व तत् १७ ॥

राजा बोला हे द्विज स्वर्ण मणियां पुष्पां दि॰
यों के साथ शोभायुक्त मैने पूजा करी होई थी
सो तैने तुलसीदलों के साथ आछादित क
री है क्या ढक दी है १४ निर्धन है और विष्णु॰
की भक्ति नहिं जानता है कैसा होता है जिस
तरां जो इस अतिशोभा कर युक्त को पूजा के
साथ ढक दिया है १५ ऐसा तिसका वचन सु
नकर क्रोध के सहित ब्राह्मण राजा की व
डेयाई को भी उलंघनकर वाक्य कहता
भया तिस समय १६ विष्णुदास बोला हे राज
न तूं राज्य लक्ष्मी करके मस्त है भक्ति को
नहिं जानता है अच्छा जे कर तैने कोई पी॰
छे विष्णुव्रत करा है तद कथन कर १७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारदउवाच तद्ब्राह्मणवचःश्रुत्वाप्रहस्यस
नृपोत्तमः विष्णुदासंततोगर्वादुवाचवच
नंद्विजं १८ इत्थंचेद्वदसिविप्रविष्णुभक्त्याः
विगर्वितः भक्तिस्तेकियतीकेनदरिद्रेणाय
नेनच १९ यज्ञदानादिकंचैवविष्णुतुष्टिकरं
स्मृतम् नापिदेवालयंविप्रकृतंपूर्वंत्वयाक्व
चित् २० एवंसत्यपितेगर्वःप्रवर्तिष्ठतिभा
क्तिजः तच्छृणुध्वंतवचोमेद्यसर्वेप्येतेद्विजो
त्तमाः २१ ॥

नारदजीकथनकरतेहैं हेराजन् सो नृपोत्तमा
चोलराजातिसब्राह्मणकावचनसुनके हास्य
कर तिससें उपरंत विष्णुदास ब्राह्मणको ग
र्वसें वाक्य कहता भया १८ हे विप्र विष्णुकी
भक्तिकर्के वडा गर्वित हैं जोतूं ऐसे कहता है
परंतु तैने निर्धन दरिद्रिनेक्या भक्ति करणी है
१९ विष्णुकी प्रसन्नता करने वाले यज्ञा
दाना दिकर्म कहे हैं तैने हे विप्र कही तैने
अब तक देवताकामंदिर नहि बनाया है २०
इस तरां के दरिद्र भावतें भी तेरेकों भक्ति
सें गर्व बना हुया है हे द्विजोत्तमाः सारे ह्योतम
मेरा वचनसुनो २१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ माम॰ १५५

साक्षात्कारमहं विष्णोरेषवाप्नुगमिष्यति ता
नः सर्वेपि पश्यंतु भक्तिं मम तवापिहि २२
इत्युक्त्वा स नृपो गच्छन्निजं राजगृहं नृप
आरेभे वैष्णवं सत्रं कृत्वाचार्यं त मङ्गलम् २३
ऋषिसंघसमाकुलं वह्वन्नं वहुदक्षिणाम्
यद्वद्ब्रह्मकृतं पूर्वं गयाक्षेत्रे समृद्धिमत् २४
विष्णुदासोपि तत्रैव तस्थौ देवालये व्रती
पंचैतान्नियमान्कृत्वा विष्णुतुष्टिकरान्स
दा २५ ॥

155

साक्षात्कार विष्णुके यह ब्राह्मण जाता है वा
मैं जाताहूं यह सारे ब्राह्मण मेरी भक्ति कों
और इस की भक्ति कों देखें २२ हे राजन ऐ
सा कहके सो राजा अपने घरों में चलागए
या तहां जाके मङ्गलजी कों आचार्य बनाय
कर वैष्णवयज्ञ का आरंभ कर्ता भया २३
कैसा यज्ञ है ऋषयों के समूहकर्के युक्त
अन्न वहुत और वहुत है दक्षिणा जिसमे
फिर कैसा है जैसे गयाक्षेत्र में समृद्धि वाला
पूर्व समय ब्रह्मा ने किया तिस की न्याई है २४ औ
र सो विष्णुदास विष्णु व्रत धारण कर्के तिस
मंदिर में ही स्थित होजाता भया क्या कर्के वि
ष्णु को प्रसन्नता करने वाले पांच नियम धारण
कर्के २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

माघोर्जयोर्व्रतं सम्यक्तुलसीवनपालनं एक
दशीव्रतं जप्यं द्वादशाक्षरविद्यया २६ उप
चारैः षोडशभिर्गीतवादित्रमंगलैः नित्यं
विष्णोस्तथा पूजां व्रतान्येतानि सोकरोत् २७
नित्यं च स स्मरन्विष्णुं गच्छन्भुंजन्स्वपन्नपि
सर्वभूतास्थितं विष्णुमपश्यत्समदर्शनः २८
कदाचिद्विष्णुदासोऽथ कृत्वा नित्यविधिं न
प पाकं चाप्यकरोत्तावदहरत्कोऽप्यलक्षि
तः २९

और माघ महीने के और कार्तिक महीने के व्र
त तुलसी के वन का पालन एकादशी का
व्रत और द्वादशाक्षर विद्या का जप २६ ॥
षोडशोपचार पूजन विष्णु पदों का गायन
बाजे बजाने मंगल कृत्य करने विष्णु की
पूजा इत्यादि नियम सो कर्ता भया २७ औ
र नित्य प्रति विष्णु का चलने फिरने बैठे
भोजन करते शयन करे होए स्मरण करते
रहना और सारे जीवों में हरि को देखना
और हरि में सभ जीव देखने इस तरां का सम
दर्शी होना भया २८ हे नृप एक दिन विष्णुदा
स नित्य विधि को करके भोजन बनावता भया
इतने मे अलक्षित होके कोई भोजन को
हरता भया २९ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तमदृष्ट्वाप्यसौपाकंपुनरेवाकरोन्नहि सा
यंकालार्चनस्यासौव्रतभंगभयाद्विज १-
द्वितीयेह्नि ततःपाकंकृत्वायावत्सविसवे
उपहार्य्यैपीदणंकर्तुंगतःकोप्यहरत्सुतः
एवंसप्तदिनंतस्यपाकंकोप्यहरन्नृप त
तःसविस्मयःसोथमनस्येवंविचारयत् २२
अहोनित्यंसमभ्येत्यपाकंकोहरतेमम
हेतुस्संन्यासिनःस्थानंतत्त्याज्यंममसर्वथा
२२ ॥

तब आकर देखने लगा तो भोजन नहि देखा
तो फिर सायंकाल पूजाके भंग होनेके भयसें
नहि बना बत्ता भया १- दूसरे फिर दिन
उसी समय भोजन बनायके पूजाके नैवे
द्यके लिये ठाकुर जीकों लेने गया तबफि
र अलक्ष्य रूप होके किसीनें हर लिया
२१ हे राजन् उसी तरां कोई सात्त दिनप
र्यंत भोजन तिसका हर लिये जाता भया
तब सो विस्मय कर युक्त मनमें ऐसा
विचार कर्ता भया २२ बडा आश्चर्य है कौ
न आके नित्य प्रति भोजन चुराके ले
जाता है संन्यासियों का यह तेत्र है मेरे
कों त्यागना भी नहि चाहिए २२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुनः पाकं विधायात्र भुज्यते यद्दिवा मया सा
यंकालार्चनं विष्णोः परित्यज्य कथं मया २४
मया पाकं विधायैवं भोक्तव्यं च कथं भवेत्
अनिवेद्य हरेः सर्वं वैष्णवैर्न तु भुज्यते २५
उपोषितोऽहं च कथं तिष्ठाम्यत्र व्रतोस्थितः
अद्य संरक्षणं सम्यक्या कस्मात्र करोम्यहं
इति पाकं विधायासौ तद्देवलः ततः स्थितः
तावद्ददर्श पुरुषं पाकान्तहरणे स्थितम्
क्षामं दीनवदनमास्थिचर्मावशेषितं
तमालोक्य द्विजाग्र्योऽभूत्कृपयाविष्टमानसः २८

नेकर फिर भोजन वनाके भोजन कर्त्ताहूं तद विस्नु
भगवान की पूजा सायंकाल समय की किस तरां
त्यागनी है २४ और जेकर ऐसे ही पाक वनाके वि
स्नु कों नैवेद्य लगाये विना कैसें खाणा है सो वैः
स्नवों ने नहि खाणा योग्य है २५ और उपोषित का
विना भोजन न खाये व्रत में स्थित होए आज या
कैसे स्थित हो सकेगा अच्छा आज भोजन की रक्षा
करूंगा २६ ऐसा निश्चय करके भोजन वनाया
और छिपकर्के स्थित हो गया तद इतने में भो-
जन चुराने में युक्त होए हुए एक पुरुष कों देख
ता भया २७ कैसा पुरुष तपा कर्के कृश दीन मुख
वाला अस्थियां चर्म मात्र शेष रहा हुया ऐसे तिस
को देख कर सो ब्राह्मण कृपा युक्त होता
भया २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१५०

151

विलोक्यान्नहरं विप्रास्निग्धनिरैक्षति चाब्रवीत्
कथं भवान्नीरसं चान्नमेनद्गृह्णाति भो
४९ इत्थं भवान्तं विप्राग्र्यमायान्तं स विलोक्य
च भीत्यावेगाद्धावन्सन्मूर्छितः सपपा
तह ५० विभीतं मूर्छितं दृष्ट्वा पुरुषं सद्द्विजो
त्तमः वेगादभ्येत्य कृपया स्ववस्त्रेणैव वी
जयत् ५१ अयोग्यितं तमेवासौ विस्मृदा
सोऽवलोकयत् साक्षान्नारायणं देवं शं
खचक्रगदाधरम् ५२

भोजन चुराने वाले ब्राह्मण कों देख के कहता भ
या खड़ा हो २ कैसे रूखा भोजन करेगा घृत भी
लेजा ४९ इस प्रकार के वचन कहते होए विप्रा
ग्र श्रेष्ठ ब्राह्मण कों और अपने पीछे आवते
होए कों देखकर बड़े तिस के भय से वेगकर दौ
ड़ता २ सो पुरुष मूर्छित होके डिग पड़ता भ
या ५० तो सो ब्राह्मण भयकर के युक्त और मूर्छा कों
प्राप्त होए हूए कों देखकर बड़े वेग से तिस के पा
स प्राप्त होकर कृपा करके वस्त्र के अंचल साथ
वीजन करता भया क्या शीतल ता भया ५१ तो र
स से उपरंत चैतन्यता कों प्राप्त होने से उपरं
त उठ खड़े होए रूप तिस कों देखता भया क्या
शंख चक्र गदा पद्म के धारण करने वाले
साक्षात् नारायण जी कों देखता भया ५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पीतांबरं चतुर्बाहुं श्रीवत्सांकं किरीटिनं
अतसीपुष्पसंकाशं कौस्तुभोरःस्थितं वि
भुं ४३ तं दृष्ट्वा सात्विकैर्भावैराहृतो द्विजस
त्तमः स्तोतुं चापि नमस्कर्तुं न दालं न बभू
वसः ४४ अथ शक्रादयो देवास्तत्रैवाभ्या
ययुस्तदा गंधर्वाप्सरसश्चापि जगुश्च ननृ
तुस्तदा ४५ विमानशतसंकीर्णं देवर्षि
गणसंकुलं गीतवादित्रनिर्घोषं स्थानं तेन
वाद्भुतं ह्यभूत ४६

फिर कैसे हैन पीले वस्त्र जिनके चार भुजो कर
युक्त श्रीवत्सके चिन्ह वाले किरीट मुकुट धारण
कराहुया और अलसी के पुष्प की न्याई शोभा जि
नकी और कौस्तुभ मणि है हृदय में स्थित जि
नके ऐसे विभुकों ४३ देखके द्विज सत्तम सा
त्विक भावों करकें युक्त होता भया और स्तुति क
रने कों नमस्कार करने कों तिस समय समर्थ
नहि होता भया ४४ इतने में शक्रादिक देवता
उहां मैही सारे चले आवते भये और गंधर्व
अप्सराएं इह सभ गायन कर्ते भये और नृत्य क
र्ते भये ४५ और सो स्थान सैकडे विमानों कर
भर गया और देवर्षियों करकें युक्त होता भया
और गायन के बाजयों के शब्द होते भये ऐसा स्था
न तिस समें अद्भुत रूप वाला होता भया ४६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा·
ग्राम·
१५८

ततो विष्णुस्समालिंग्य स्वभक्तं सात्विकव्रतं
सारूप्यमात्मनो दत्वा नयद्वैकुंठमंदिरं ५७
विमानवरसंस्थानं गच्छंतं विष्णुना सह
दृष्ट्वा नृपतिर्विस्मयाविष्टो वसिष्ठं गुरुमब्रवीत्
...

मंदिरं ५६ दीक्षितेन मया सम्यक्कृते ब्रह्मणि
...

तिसके उपरंत विष्णुभगवान सात्विक व्रतों वा
ला अपने भक्तको आलिंगनकरक्या गलकेसा
थ मिलायकेअपनी सारूप्य मुक्तिको देकर
वैकुंठ मंदिरमें लेजाते भये ५७ उससमयश्रे
ष्ठविमानमें स्थित विष्णुभगवानजीकेसाथ
जातेहोएकोदेखकर दीक्षामें वैठाहुआ चोल
राजा वडीभारी आश्चर्यतासे अपने गुरु मुद्गलजी को
बुलायकर इसप्रकार वचन कहताभया ५८
चोलराजा कहताभया हेगुरो जिसको साधो
कर इसप्रकारके यज्ञदानादि करे हैं सो ब्रा
ह्मण विष्णुकारूप धारे होए वैकुंठ मंदिरमें
जाताहै ५६ औरदीक्षित होके मैनेक्या यज्ञमेंवैठे
होए मैने वैसेव कर्म कियाहैं अग्निमें हवनकरे
हे और दानादिकर्के ब्राह्मणोंके मनोरथ पूर्णक
रेहैं ६०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैवाथापि समे देवः प्रसन्नो जायते ध्रुवं भक्त्यैव
तस्य विप्रस्य साक्षात्कारं ददौ हरिः ५१ तस्माद्य
नैश्चयस्तैश्च नैव विष्णुः प्रसीदति भक्तिरेव प
रं तस्मान्निदानं दर्शने विभोः ५२ नारद उवाच
इत्युक्त्वा भागिनेयस्य चाभिषेचनमासने स्वा
वाल्याद्दीक्षितो यस्तेह्यपुत्रत्वमगाद्यतः ५३
तस्माद्द्यापि तद्देशे सदा राज्यांशभागिनः
यज्ञवाट्यां ततो भूत्वा वह्निकुंडाग्रतः स्थितः
त्रिरुच्चैर्भीजनहारासो विष्णुं संबोधयन्निव वि
ष्णुभक्तिं स्थिरां देहि मनोवाक्कायकर्मभिः ५५

और सो देवता आज तक मेरे पर प्रसन्न भी नहि होए
और तिस ब्राह्मण की भक्ति करके तिसको साक्षात्
कर देते भये नारायणजी ५१ तिस कारण से जाना
लिया है कि यज्ञ दान व्रतों करके विष्णु प्रसन्न नहि
होता है तिस भगवान के दर्शन में भक्ति ही कार-
ण है ५२ नारदजी कहते हैं हे राजन इस प्रकार क-
थन करके सो राजा अपनी भगिनी के पुत्र को रा-
ज्यासन में अभिषेक करता भया क्या राज्य तिलक
तिसको देता भया क्योंकि बालि अवस्था से लेके
यज्ञ में दीक्षित था इस कारण से तिसके संतान नहि
थीं ५३ और तिस कारण से आज तक उस देश में
भागिनेय ही राज्यांश के भागी है उससे उपरंत
राज्य यज्ञवाटि में प्राप्त होकर हवन कुंड के आगे स्थि-
त होके ५४ तीन वार ऊंचे विष्णु को बुलावता हुआ क-
हता भया हे विष्णु मन वाणी कर्म करके अपनी स्थिर
भक्ति दे और नहि मांगता हूं ५५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ १५९

इत्युक्त्वासोपतद्भूमौसर्वेषामेवपश्यतां मुद्ग
लस्तनदाक्रोधाच्छिखामुत्पाट्यतत्क्षणात् ५६
ततस्तस्यापितद्गोत्रेमौद्गलाश्चाशिखाभवन्
तावदाविर्भवद्विष्णुःकुंडाग्रेभक्तवत्सलः ५७
तमालिंग्यविमानाग्र्यसमारोह्यदच्युतः
ततोदत्वात्मसारूप्यंवैकुंठमनयद्विभुः ५८
योविष्णुदासःसत्पुण्यशीलोयश्चोलभूपः
ससुशीलनामा पतावुभौतत्समरूपभा
जौद्वास्थौकृतौतेनरमाप्रियेण ५९ इतिश्री॰
पद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येविष्णुदासचोलो
पाख्यानेतुलसीमहिमावर्णनम् ॥

ऐसाकहकेसभनोंकेदेखते २ सोराजाअग्निमें गिर
पड़ताभया औरमुद्गलऋषि उससमयक्रोधसे अप
नीशिखा पुटताभया ५६ जिससेउपरंत आजत॰
कर मुद्गल गोत्रके आशिखहोतेभये इतनेमेंकुंडके
आगेविष्णुभगवानजीप्रगटहोतेभये ५७ औरभक्त
वत्सल तिसकों आलिंगन कर्केविमानपरविठाय
लेतेभये औरअपनीसारूप्यमुक्ति देकर विभु
परमेश्वरजी वैकुंठमे लेजातेभये ५८ उहांजा
के जोविष्णुदासथा सोपुण्यशीलहुया औरजो
चोलराजाथा सोशीलनामा द्वारपालहुया यह
दोनोपरमेश्वरकेसमानरूपवालेहोतेभये
औररमाप्रियभगवानजीनेदोनो द्वारपालव
नाए ५९ यह पद्मपुराणकेकार्तिकमाहात्म्यमें
विष्णुदास और चोलराजाके उपाख्यानमे तु
लसीकीमहिमाका वर्णन समाप्तहुयाहै ॥

159

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ विष्णोरुपरि दूर्वार्पणमाहात्म्यम् विष्णुर
हस्ये दूर्वांकुरैर्हरेर्यस्तु पूजाकाले प्रयच्छति
पूजाफलं शतगुणं सम्यगाप्नोति मानवः
स्कंदे गृह्य दूर्वामयैः पुष्पैः तथा काशकु
शोद्भवैः भूयरेसमलंकृत्य विष्णुलोके व
सेन्नरः २ अथ बिल्वार्पणमहिमा सकृद
भ्यर्च्य गोविंदं बिल्वपत्रेण मानवः भक्तिभा
गी निरातंकः कृष्णस्यानुचरो भवेत् । स्कंद
पुराणे बिल्वपत्रेण यः कृष्णं कार्तिके कलि
नाशने पूजयेत महाभक्त्या मुक्तिस्तस्य मयो
दिता २॥

अब विष्णुके ऊपर दूर्वा चढानेका माहात्म्य लि॰
विष्णुरहस्यमें हरिनारायणजीकी पूजाके सम
य जो दूर्वा चढावता है सो मानव पूजामें सौगु
णा अधिक फलको प्राप्त होता हैं । स्कंदपुराण
मे लिखा है घरकी यां दूर्वा करकें और पुष्पोंक
कें और कोई कुशाककें गिरिधारीकों अलं
कार कर विष्णुके लोकमें जाता हैं २ अब बिल्व
पत्र चढानेको महिमा लिखा है एक वारी बि
ल्वपत्रके साथ गोविंदजीका पूजन करकें दुःखों
सें रहित होय अथवा कृष्णजीका अनुचर होता
है । स्कंदमे लि॰ पापोंके नाश करनेवाले कार्तिक
महीने बिल्वपत्रके साथ महाभक्ति करकें मेरी पूजा
करे सो मुक्तिका भागी होता है २॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारसिंहपुराणे नरसिंहं च यो भक्त्या बिल्वप
त्रैरर्चयेन्नरः सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वभूषण
भूषितः कांचनेन विमानेन विष्णुलोके म-
हीयते । अथ शमीपत्रार्पणमाहात्म्यम्
शमीपत्रैश्च ये देवं पूजयंति सुरद्विषं यम
मार्गं महाघोरं निस्तीर्णांस्ते नारद ।
अथ धात्रीफलपुष्पैर्विष्णवर्चनमहिमा
स्कंदे धात्रीवृक्षप्रसूनैश्च योर्चयेच्चक्र-
विणिनं पुष्पे पुष्पेश्वमेधस्य फलं प्राप्नो-
ति नारद । धात्रीपत्रैर्नवीनैश्च कोमलैर्हरि
मर्चयेत् यमलोके महाघोरे न वसंति महामुने २

नारसिंहपुराणमें लिखा है नरसिंहजीकों अरु बिल्व
पत्रोंकर्के जो भक्तिके साथ पूजन कर्ता है सो सारे पापों
कर्के रहित सर्व आभूषणोंकर्के भूषित कांचनके
विमानकर्के विष्णुलोकमें महिमाकों प्राप्त होता
है । अब विष्णुके ऊपर जंडीके पत्र चढानेके महि-
मा लिखा है जो पुरुष असुरोंके द्वेषी देवताकों जं-
डीके पत्रोंके साथ पूजते हैं हे नारद तिनोंने म-
हाघोर यममार्ग तर लिया है । अब आमलीके
फल पुष्पोंके साथ विष्णुपूजाकी महिमा लि-
आमली वृक्षके पुष्पोंकर्के जो चक्रके चिह्नवा-
ले भगवान्‌जीका पूजन कर्ता है हे नारद सो पुरुष
एक २ पुष्पोंमें अश्वमेधके फलकों प्राप्त होता है ।
और नवीन आमलीके फलोंकर्के हरिकों पूजते हैं
हे महामुने सो यमलोकमें नहि निवास कर्ते हैं २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ धूपमाहात्म्यं वामनपुराणे स्नानका
लेतु देवस्य अगरुं दहते नरः प्रविष्टे नासि
कारंध्रे पापं जन्मायुतं व्रजेत् १ नारसिंहे
महिषाख्यं गुग्गुलं च आज्ययुक्तं सशर्करं
धूपं ददाति राजेन्द्र नारसिंहाय भक्तिमान् २
सधूपितः सदा हृष्टः सर्वपापविवर्जितः अ
प्सरोगणयुक्तेन विमानेन विराजते वायु
लोकं समासाद्य विष्णुलोके महीयते ३
कृष्णागरुसमुत्थेन धूपेन श्रीधरालयं धू
पयेद्वै स वै यस्तु स मुक्तो नरकार्णवात् ४

अब धूपकामाहात्म्यवामनपुराणमे लिखाहै देव
ता विष्णुके स्नानकरनेसमयजोनर अगरकों द॰
ग्ध कर्ताहै और उस अगरधूपके नासिका रंध्रमें
प्रवेश करे होए दशहजार जन्मोंकेपापहरहो
तेहैं १ नारसिंहमें लिखा॰ महिष नामा धूप गु
गलकों घृत शर्करा युक्त हे राजेंद्र जो भक्तिमा
न पुरुष नरसिंह जीकों धुखावताहै २ सो धू
पितकरे होए सर्वदाकाल प्रसन्न सारे पापोंककें
रहित अप्सरोंके गणों करकें युक्त विमानमें
विराजमान होताहै और वायुलोकमें प्राप्त होक
र विष्णुलोकमे महिमाकों प्राप्त होताहै ३ और
काले अगरके बने होए धूप करकें श्रीधरजी
के मंदिरकों धूप देताहै क्या सुगंधियुक्त क
तीहै जो वैस वसीनरक समुद्रसें मुक्त
होताहै ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
याम॰
९९।

161

क्रियायोगसारे वत्स धूपं द्विजश्रेष्ठ चंदना
गुरुवासितं दद्यान्नारायणे यस्तु तं सिद्धि
र्वांछितं ५ धूपं योयच्छति विप्र हरये हु
तवासितं सगच्छेद्धरिसद्मभवनं विमुक्तः स
र्वपातकैः ६ नारायणाय यो धूपं दद्याद्
गुग्गुलवासितं सयाति परमं धाम म
रैरपि दुर्लभं ७ पाद्मे योददाति हरेर्धू
पं सकर्पूरं सकेसरं युक्तं मृगमदेनापि
सगच्छेद्वैष्णवं पदम् ८॥

क्रियायोगसारमेंलिखाहै हे द्विजश्रेष्ठ चंदन अ
गुरु करकै वासित युक्त धूपको नारायणके ताईं
धूपित करताहै तिसके वांछित शीघ्र सिद्ध
होतेहैं ५ हे विप्र घृतके साथ वासित धूपको
हरिकेताईं देताहै सो सारे पापोंको करकेमु
क्त होयकरया विष्णुलोकमें जाताहै ६ और
जो पुरुष नारायणकेताईं गुग्गुलका धूप देता
है सो परमधामको जाताहै जोनसा धाम दे
वतयोंकोभी दुर्लभहै ७ पद्मपुराणमें लिखा
है जो पुरुष हरिकेताईं केशरके सहित धू
प देताहै अर कस्तूरी के सहितं सो पु
रुष वैस्नव पदमें जाताहै
८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कंदपुराणे कृष्णागुरुं च धूपं च धूपयेत्के-
शवाग्रतः स वै सर्वेन रोजैर्यो विमुक्तो न
रकार्णवात् १ पाद्मे पातालखंडे गुग्गुलं
घृतसंयुक्तं दद्यात्कृष्णाय भक्तिमान् युक्तं
सुगंधद्रव्येण स गच्छेद्धरिमंदिरम् १ अथ
विष्णोर्नैवेद्यभक्षणमाहात्म्यं गारुडे पादो
दकं पिवेन्नित्यं नैवेद्यं भक्षयेद्धरेः शेषाश्च
मस्तके धार्या इति वेदानुशासनं उच्छिष्ट
मवशिष्टं च भक्तानां भोजनद्वयमिति १

स्कंदपुराणमे लिखाहैं जो कालाअगर और धूप
केशवजीके आगे धूपितकर्ताहैं सो वै सब पुरुष
नरकसमुद्रासे मुक्त होय हैं ऐसा जानना १
पातालखंडमे लिखाहै गुग्गुलका धूप कृष्ण
जीजी के तांई जो भक्तिमान् पुरुष घृतसंयुक्त
और सुगंधि द्रविके सहित देताहै सो हरिके
मंदिरमें जाताहै १ अब विष्णुके नैवेद्य भक्ष-
णका माहात्म्य लिखाहै गरुडमें· कहाहै हरि
पादोंका जल और नैवेद्य नित्य प्रति भक्ष
ण करे और जो वाकी हाथमें लगा हुया
रह जावे सो मस्तक में धारण करे यह वे
दकी आज्ञाहै और जो उच्छिष्टहै विष्णुका
और जो वाकी रिहा हुया यह दोनों भक्तों
के भोजन कहेहै १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हलायुधे स्कंदपुराणे नैवेद्यशेषं तुलसी
विमिश्रं विशेषतः पादजलेन सिक्तं योश्ना
ति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुत
कोटिपुण्यं २ ब्रह्मांडे षड्भिर्मासोपवा
सैश्च यत्फलं परिकीर्तितं विष्णोर्नैवेद्य
सिक्थाशे भुंजतां तत्फलं भवेत् ३ विष्णो
धर्मोत्तरे मुकुंदाशितशेषं तु यो हि भुंक्ते
दिने दिने सिक्थे सिक्थे लभेत्पुण्यं चांद्राय
णशताधिकम् ४ ॥

हलायुधमें लिखाहै स्कंदपुराण॰से॰ नैवेद्य
का जो शेष है तुलसीके साथ मिला हुया
और विशेष करके चरणामृत करके युक्त जो
नित्यंप्रति भोजन कर्ता हैं सो यज्ञों के अ
युत कोटि पुण्यकों प्राप्त होता है २ ब्रह्मां
डमे लिखा है छै महीनेयों के उपवास व्र
तों करकें जो पुण्य कहा है सो चरणामृत क
र्कें सिंचित विष्णु के नैवेद्य भक्षणमें फल
कहा है ३ विष्णुधर्मोत्तरमे लिखा है मुकुंद
जीके भोजन शेषकों जो नित्यप्रति भोजन
कर्ता है सो सिंचित करे होए मैसों सें भी
अधिक चांद्रायणका फल लभता है ४।

नारदसंहितायां गौरींप्रति शिववाक्यं
अग्निष्टोमसहस्रैस्तु वाजपेयशतैरपि
यत्फलं लभते देवि विष्णोर्नैवेद्यभक्षणात्
क्रियायोगसारे देहस्थजनितपापानिब्र॰
ह्महत्याद्यनान्यपि भंजतो हरेर्नैवेद्यं दा
सीच वशगा भवेत् ६ भक्तिर्मुक्तिसुरश्रे
ष्ठदैवतैरपिदुर्लभा संपूज्य कमलाकां
तंकिंचिनैवेद्यमत्तियः ७ ॥

नारदसंहितामें लिखा है गौरीके प्रति शिवा॰
जीका वचन है हजारां अग्निष्टोमोंकरके सैकडे
वाजियेयों यज्ञोंकरके हे देवि जो पुण्य होता है
सो विष्णुके नैवेद्यभक्षणासें होता है ५ क्रिया
योगसारमें लिखा है हरिका नैवेद्य खानेवालोंका
देह अर्जुनब्रह्महत्याकरके युक्त भी पापोंको ना
गता है और दासी वशीभूत होती है ६ हे सुरा॰
श्रेष्ठ भक्तिमुक्ति देवतेयोंने भी वडी दुर्लभ है
परंतु कमलाकांतजी को पूजन करके थोडा
जो नैवेद्य भक्षण कर्ता है तिसकों थोडे चि
रकाल करके विष्णुजी अपने तनुके प्रतिले
जाते है ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१८२

अविरेधोवर्तंविस्नुनयन्तेस्वांतनुंप्रति नै
वेद्यस्य महाविस्नुर्गुणां किंकथयाम्यहम् ०
यद्भुंजनो केशवो पिस्याद्धीनो द्विजोत्तम
इति १ स्कंदे भुक्ता केशवनैवेद्यं कोटिय
ज्ञफलं लभेत् ब्रह्मचारी ग्रहस्थश्ववान॰
प्रस्थो यतिस्तथा विस्नोर्नैवेद्यभोक्तारस्सा
नात्र कार्या विचारणा ९ सेतिहासं विस्नो
र्नैवेद्यभक्षणमाहात्म्यं पद्मपुराणे जैमि
निप्रति व्यासवाक्यम् ॥ ७॥

हे द्विजोत्तम महा विस्नुके नैवेद्यके क्या गु
णकहों जिसके भोजनकर्तेहोए केशव
जी अधीनहोतेहैं १ स्कंदमेंकहाहै केश
वजीकेनैवेद्यको भोजन कर्के क्रोडयज्ञो॰
का फललभताहै इसविस्नुके नैवेद्यको
ब्रह्मचारी ग्रहस्थी वानप्रस्थी संन्यासी
परमभक्षकरणवाले होवें इसमेंवि
चार नहिंहै ९ इतिहासके सहित विस्नु
के नैवेद्य भक्षणका माहात्म्य पद्मपुराण
मेंलिखाहै जैमिनीके प्रति व्यासदेवजी
का वाक्यहै ॥ ७॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

व्यासउवाच अथातःकथयिष्यामि सेतिहासंपुरा
तनं विष्णोर्नैवेद्यमाहात्म्यं सर्वपापप्रणाशनं
सेतिहासंपुनर्वंशेभृगोर्विप्रसमाहितः १
रासीत्सुजननिर्नामब्राह्मणः भृगुवंशजः २ शा
न्तोदान्तोदयायुक्तो देवब्राह्मणपूजकः हरि
पूजापरश्चैव हरिस्मरणतत्परः ३ याचकेक्ले
शविध्वंसी सत्यवादी जितेंद्रियः प्रातःस्नायी
निजाचाराग्राही हिंसाविवर्जितः ४ ॥

व्यासदेवजी कथन करते हैं हे ऋषेश्वर इसमें तेरेकों
पुरातन इतिहास कथन करताहूं कैसा माहात्म्य
है जिसमे सारे पापोंके नाशकरनेवाला विष्णु
के नैवेद्य भक्षणका माहात्म्य है १ हे विप्र सा
वधान मनवाला होके तूं श्रवणकर इतिहास
फिर तेरेकों कहताहूं एवं एक समय भृगु
वंशमे उत्पन्न होए आऽया सुजानि नाम करके
ब्राह्मण होताभया २ कैसाकी शांतदांतमन
वाला दया करकेंयुक्त देवता ब्राह्मणोंका पूज
क और हरिकी पूजा करनेमें तत्पर और हरीका
स्मरणकरणेवाला ३ फिर कैसा और ब्राह्मणा
याचनाकरनेवालेयों केजो क्लेश है क्या दरिद्रता
तिसकोंदानदें २ कर दूरकरनेवाला और सत्यवा
दी और इंद्रियांजीत्तयांहोइयां जिसने और प्राता
काल स्नान करना अपने आचारधर्ममें प्रवृ
त और हिंसा क्रोधकरके रहित ४ ॥

एकादशीव्रतरतो ज्ञातिसत्कारपरायणः कदा
चित्स द्विजश्रेष्ठः स्वप्ने च ददृशे केशवम् ५ श्या
मं विकचपद्माक्षं स्मेरास्यं पीतवाससं स्वर्ण
कुंडलमंजीरकिरीटोज्वलविग्रहं ६ कौस्तु
भोद्भासितोरस्कं वनमालाविभूषितं चतु
र्भिः शंखचक्रगदापद्मवरप्रभं ७ समस्त
लक्षणोपेतं स्वर्णयज्ञोपवीतकं संप्राप्य
दर्शनं सम्यग्विप्रो जगतीपतेः ८ कृतांज
लिस्तमस्तौषीदिमां विनतनम्रदा ९ ॥

और एकादशी के व्रत करने में तत्पर और ज्ञाति वां
धवों का पालन करना इसमें युक्त ऐसा सो द्विज श्रे
ष्ठ एक समय स्वप्न में केशवजी को देखता भया ५
कैसे केशवजी को जो श्याम मनोहर वर्ण वाले
विकसित कमलपत्रों की न्याईं नेत्र जिनके और
मंदहास्ययुक्त मुख जिनका और पीले वस्त्र जिन
के फिर कैसे हैं स्वर्ण के कुंडल मंजीर भूषण
किरीट मुकुट इनके साथ उज्वल देह जिनका ६
और कौस्तुभ मणि करके भूषित चार भुजों वाले
शंख चक्र गदा पद्म प्रकाशित हैं हृदय जि
नका और वनमाला करके इनों को धारण वाले
प्रभु हैं ७ फिर कैसे हैं सारे सुंदर लक्षणों करके यु
क्त स्वर्ण के यज्ञोपवीत वाले ऐसे तिनको प्राप्त
होकर सो ब्राह्मण रोम जिसके देह में खड़े होए ग
ये ऐसा सो हाथ जोड़ कर जगत के पति विष्णुजी को
स्तुति करता भया ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सृजनिरुवाच त्वमेवं नमोस्तु जगतः सकलस्यभ
र्त्रे सहलोकशोकभयरोगविनाशनाय नारा-
यणाय कमलाहृदयप्रियाय धर्मार्थकाम
परमामृतदायनित्यम् २ पापानि देवसक-
लानि मया कृतानि मत्तेन मोहहृतया सततं
मुरारे तस्मात्त्वमेमि जगदंबुनिधेगंभीरा
न्मामुद्धर स्वनिजभक्तगतिप्रदाय ३ जाना
मि यद्यपि हरे दुरितं मनुष्यो व्यामोहमाश्रित
भने भविकैटभारे पापं तथापि च मुदा सततं
करोति तस्मान्न कोप्यहमिवास्ति जनो विमूढः ॥

सृजनि ब्राह्मणको कहता भया सारे जगत के पोषण
करनेवाले तुमारे तांई नमस्कार होवे कैसे तुम हो
सैष लोकोंके शोक मोह भय रोग इनके विनाश
करनेवाले हो फिर कैसे केतांई नारायणजी के
तांई और कमला क्या लक्ष्मी के हृदय के प्यारे औ
र नित्य प्रति धर्म अर्थ काम परम अमृत क्या मोक्ष
इनको नित्य प्रति देनेवाले २ हे देव मुरारे निरंतर
मैने मोह हुति कर सभ तरां के पाप करे हैं हे भगव
न तिस संसार रूपी गंभीर गहरे समुद्र से उरता-
हो अपने भक्तों को गति देनेवाले तिस मैं मेरा
उद्धार कर ३ हे हरे जे कर पापों कों जानता भी
हां तद भी मनुष्य जो है हे कैटभारे सो शीघ्र मो
ह कों लभता है अर पृथिवी में तद भी पापकर्त्ता
हे वडे हर्षयुक्त तद भी मेरे जैसा दूसरा कोई
मूर्ख नहीं है ॥ ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुण्यद्रुमः सुतफलं सहसैव धत्ते किं वेत्ति नैव
नरहरे हृतनपानकोऽहं पुण्यद्रुमार्पणविधौ म
मनास्ति चिंतनाय प्रसीद भगवन्किमहं करो
मि १२ त्वत्पादपद्मयुगलं परमामृतं च सत
तं विहाय मम चित्तमधुव्रतोऽयं नीरागसुखव्र
जति देवसततिप्रदायिस्त्रैणप्रकीर्णमलिनेश
कमलभ्रमेण १३ पाणिः प्रदानरहितोऽनृ
तभाषि वक्रं कर्णौ च पापवचनश्रवणाय द
त्तौ दोषानिमान्मम हरे हर सेवकस्य यस्मा
त्त्वमाशुशरणागतदोषहर्ता १४ ॥

हे नरहरे पापकरनेवाला मैं किसतरां सुखको प्राप्त हों
आ क्योंकी पुण्यका वृक्ष शीघ्र सुखको लभता है औ
र पुण्यके वृक्ष लगानेमें मेरा चित्त नहिं है हे नाथ प्र
सन्न हो मैं क्या करों १२ हे भगवन् मेरा चित्तरूपी भ्र
मर सर्वदा काल तुमारे चरणारविंद परमअमृ
तरूपी तिनको त्यागकर मृत्युदेनेवाले स्त्रीया
से भरे होए स्त्रीके मुखको कमलके भ्रमकर्के
बारबार जाता है १३ हे देव पर मेरे हाथ किसीको
कुछ नहि दे सकते है और मुख मेरा झूठ कह
ता है और कानभी पापोंके वचन सुननेमे च
तरे है हे हरे इतने मेरे दोष आपना सेवक
जानकर दूरकरो जिसकारणसे आप शर
णागतोंके दोष हरकरनेवाले १४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संसारघोरजलधौनरहरेकदाचिद्वद्धोक्तिनौरिवदृढं च वराङ्गदिव्यं तत्रापि दैववशतोजनितैव दुःशायातस्त्वथैवसततंममदुःखकालः १५ संसारपारगमनायनसंसत्वंहि किं सर्वदुःखरहितः सदयः प्रशस्तः श्रेयोकृतस्यममभोहमहान्धकारे दृष्टिर्नतेप्रतिकदापिच यातिविष्णोः १६ पापात्मनोपिममचित्तमिदंमरारे नष्टं विशिष्टजनकष्टविनाशकारिन् यस्त्वं समस्तसुरवंदितपादपद्मं स्वप्नेऽपि केशिमथनस्यविभोसमीक्षे १७

हे नरहरे इसघोर संसाररूपी समुद्रमें दैववशतेभक्तिरूपी तुमारी वेडीचराङ्गरूपी वर्ततीसे वांधी हुई है तहां मेरि प्रारब्धवशतेदुष्टप्राशाउत्पन्नभई सोमेरे दुःखकासमयप्राप्त होयस्राहै १५ हे भगवन संसाररूपी समुद्रके पारजाने वास्ते और कोई दुःखोंसे रहित दयावाला श्रेष्टमार्गनहिंहै क्योंकिमहामोह रूपी अंधकारकके श्रेयी होई होई मेरीदृष्टितुमारे प्रतिकदीभी नहिंजातीहै १६ हे मरारे हे भक्तमनुष्योंके कष्टविनाशकरनेवाले पापीआत्माका यहमेराचित्तनष्टहोगयाहै क्योंकीजोंसंपूर्णदेवतयोंकर्के वंदनाकराइयाहै पादपद्मजिनका ऐसे जो केशिके मथनकरनेवाले विभु तुहीं तुमारास्वप्नमें दर्शन कर्तीभया १७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
९९

166

व्यास उवाच इति तेन स्तुतो देवो भगवान्कम
लापतिः उवाच प्रहस्य वाक्यं संसारार्णवता
रकः १८ श्रीभगवानुवाच भक्तिभिस्तव वि
प्रेंद्र तुष्टोहं नित्यमेव च तस्मानवाविरेणैव
सर्वं भद्रं भविष्यति १९ ब्राह्मण उवाच कोहं
नरेशो पुरा विस्तु किं वा पापं मया कृतं पापि
नोपि मम उद्धारः कथं एवं त्वया कृतः २० सं
सारेऽत्रवरे नास्मिन्पतितोहं कथं त्वया पत
त्सर्वं प्रभो ब्रूहि यत्तत्वं सदयः सदा २१

व्यास देवजी कथन करते भये इस प्रकार तिस ते
स्तुत करे रूप भगवान् कमलापति संसार समु
द्र से तरनेवाले हसते २ वाक्य कहते भये १८
भगवान्जी कथन करते हैं हे विप्रेंद्र भक्ति करके
तेने नित्य ही मै प्रसन्न करा हैं इस कारण से तेरे
कों थोडे करकें समयतैंकी कल्याण होवेगा १९
इतना वचन सुनते ही ब्राह्मण बोला हे भगव
न् पूर्व जन्म मैं मैं कौन था और कौन मैंने पा
प करे पापी जो मैं था मेरा उद्धार आपने कि
स प्रकार करा है २० और उस संसार मैं कि
स प्रकार ठगाया हैं और जिस कारण से
सदा आप दयालु रहते हो इस का कारण
सर्वदा मेरे कों कहो २१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीभगवानुवाच अप्रकाश्यमिदं गुह्यं
यद्यपि द्विजसत्तम तथापि तव वात्सल्या
न्निगदामि निशामय २२ पुरा त्वं ब्राह्मणा
श्रेष्ठ पत्तिवंशसमुद्भवः स्थितोसि भूमिभा
गे च निजकर्मविपाकतः २३ तृषयातृष
या चापि संतप्तो व्याकुलो भवान् बभ्राम भ
क्षयन्कीटं निर्झरस्योदकं तथा २४ नाना
दुःखं सदा भुंजन्नृपतियोनिसमुद्भवः चतु
र्वर्षसहस्राणि स्थितोसि त्वं धरातले २५

इस प्रकार का वचन श्रवन कर भगवान्जी कह
ने लगे हे द्विजसत्तम यह बात जे कर प्रगट कर
ने वाले भी नहिं है और बडे गुप्त है तद भी अब तेरी
इस वत्सलता प्रीतिसें कथन करता हूं तूं श्रवन क
र २२ हे ब्राह्मणश्रेष्ठ पूर्वजन्म में नृपतियों के वं
श मे उत्पन्न होय आइया अपने किसी कर्म के
विपाक का फलसें भूमिभाग पर स्थित था २३
और निरंतर तृषा तृषा करके व्याकुल तूं एक दिन
में कीडे यों कौं भक्षण करता २ और झरने का जल
पान करता २ फिरया करता था २४ तद पक्षियों की
योनि में उत्पन्न होय आइया अनके तरों के दुः
ख भोगता इया चार हजार वर्ष पर्यंत पृथि
वी लोक में एवं तूं रहा २५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

167

एकदावलभद्राख्यो ब्राह्मणः सर्वतत्त्ववित्
पूजयामास मां भक्त्या नैवेद्याद्यैर्नदीतटे २६
समभ्यर्च्य स विप्रेन्द्रो मम नैवेद्यतंडुलं ययौ
तत्रैव नैत्तित्यमभूयप वनिजगृहं २७ ततोऽह
तान्समुत्सृत्सृथयापतितान्तया मम
नैवेद्यसेवैथिभक्षितं सर्वतंडुलं २८ सम
स्तपातकध्वंसे मम नैवेद्यमुत्तमं भुक्त्वै
व सद्यो मुक्तोऽसि पातकैरतिदारुणैः २९
कदाचित्स्वामकालस्य कालधर्मगते द्विज
त्वां मानेतुं मया हृष्टाः प्रेषिताः सरथावितः ३०

एकदिन सब तत्वार्थों के जानने वाला बलभद्र
ब्राह्मण मेरे कों नदी के किनारे भक्ति करकें नैवे
द्यादिकों के साथ पूजन कर्त्ता भया २६ सो विप्रे
न्द्र मेरा पूजन करकें मेरे नैवेद्य के चावल तहां
में ही छोड करकें फिर अपने घर में चला गया २७
उसके चले गये होए पीछे हर्षसें उछल करता
या श्रकपत्नीनें जैसे मेरे नैवेद्य के तंडुल सारे ही
खाय लिये २८ तद सब भक्तों के पाप विध्वंसन
करने वाला मेरा उत्तम नैवेद्य तिसकों खाय क
र तूं शीघ्र ही अत्यंत दारुण पापों करकें मुक्त हो
गया २९ हे द्विज कालधर्म के व्यतीत होने उ
प तेरा मरण का समय जद प्राप्त हुआ तद मे
नें अपने दूत रथ के सहित तेरे ल्याउने वा
स्ते भेज दिये ३० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततोरथेसमारोप्यभवंतंनष्टकल्मषं सद्यो
हंतगणाः सर्वे समायाताः पुरेमम ३१ यु
गकोटिसहस्राणि स्थितोसि मम सन्निधौ
भुंजन्सुखानि सर्वाणि दुर्लभानि सुरैरपि ३२
ततोजातोसि विप्रेंद्र दुर्लभे ब्राह्मणालये
तत्रापि मम भक्तिस्ते जाता नित्दृढापुनः
क्रियायोगेन मां नित्यं समाराध्य द्विजोत्त-
म आयुषोंते मत्प्रसादात्पापघ्नं पदमाप्स्य
सि ३४ ॥

तिससेउपरंतनष्ट होगये पाप जिसके ऐसे
तेरेंकोरथमैंचढ़ायकर हंतमेरे शीघ्र ही मेरे
पुरमै तेरेकों साथ लेके आय प्राप्त भये ३१
तदकोटियुगहजारमेरे समीप पुरके मध्यमें
स्थितरहा जो देवता लोकोंकोदुर्लभसुखथे
तिनकोभोगताहूया ३२ तिससेउपरंतहे
विप्रेंद्र दुर्लभब्राह्मणोंकेघरमै फिरतूं ज
न्मता भया तहांमैभी तेरेकों दृढनिश्चय
वाले मेरी भक्ति होतीभई ३३ हे द्विजोत्तम
अवक्रियायोगकर्कैमेरेकोंनित्यंप्रति आ
राधन कर आयुके अंत में पापों के नष्ट
करनेवाले पद क्या स्थान को प्राप्त होवेगा
३४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यस्य तुष्टोस्म्यहं विप्र स पापात्मापि मोक्षभाक्
कदाचिद्यस्य रुष्टोस्मि स पुण्यात्मापि दुःख
भाक् २५ तस्माद्ब्राह्मण भद्रं ते भक्तोसि म
म सुव्रत दास्यामि परमं स्थानं यद्दुर्लभं सु
रैरपि २६ ब्राह्मण उवाच त्वत्प्रसादाच्छ्रु
तं नाथ पूर्ववृत्तांतमात्मनः इदानीं श्रोतुमि
च्छामि यत्किंचिद्धृदि तत्प्रभो २७ कस्य तु
ष्टोसि देवेंद्र कस्य रुष्टोसि वा प्रभो महत्या
कृपया सर्वमेतन्मे वक्तुमर्हसि २८ ॥

हे विप्र जिस के ऊपर मैं प्रसन्न होया सो पापात्मा
भी मोक्ष का भागी होता है और जिस के ऊपर कदी
मैं क्रोधी होजाऊं सो पुण्यात्मा भी दुःखों का भा
गी होता है २५ तिस कारण से हे ब्राह्मण तेरे कों
कल्याण होवे हे सुव्रत तूं मेरा भक्त है मैं तेरे कों
परम स्थान देता हूं जो देवतयों कों भी दुःखक
कै लभने योग्य है २६ इतना वाक्य सुनते हीं
ब्राह्मण बोला हे नाथ तुमारे प्रसाद से अपना
पूर्वला वृत्तांत श्रवण कराई है प्रभु अब जो क
छु श्रवण करने की इच्छा करता हूं सो मेरे क
थन करो २७ हे देवेंद्र बडी कृपा करके आप
किस पर प्रसन्न होते हो और किस के ऊपर बा
डा क्रोध करते हो पहु सो भी मेरे प्रति कथ
न करो २८ ॥

श्रीभगवानुवाच कर्मणायेनविप्रेंद्रतुष्टि
र्मेहृदिजायते क्रोधश्चतत्समस्तंतेकथ
यामिसमासतः ४६ योदयावान्द्विजश्रेष्ठ
सर्वभूतेषुसर्वदा अहंकारेणहीनश्चत
स्यतुष्टोस्म्यहंसदा ४७ कर्मकुर्वन्मदर्थंयो
श्रद्धाभक्तिसमन्वितः वृत्तेयथार्थंवक्तेने
तस्यतुष्टोस्म्यहंसदा ४८ कर्माणिकुरुते
यस्तुसविचार्यपुनःपुनः गोब्राह्मणा
हितेकुर्वंस्तस्यतुष्टोस्म्यहंसदा ४९

एसासुंदरवचनसुनकेभगवानजीबोले हेवि
प्रेंद्र जिसकर्मकर्केमेरे हृदयमें प्रसन्नताहोती
है ओर जिसकर्म कर्केमेक्रोधीहोताहुं सो सारा
ही कारण संक्षेपसें श्रवणकर ४६ जोकोई
ब्राह्मण सभनोंजीवोंमें सर्वदाकाल दयावा
ला होवे ओर अहंकार जिसकेमननेमेनहिहोवे
जिसकेऊपर सदाहीमेंप्रसन्नहो ४७ ओरजोको
ई श्रद्धाभक्तिकर्केसंयुक्तमेरेनिमित्तकर्मकर्ताहै
ओरवक्तेनेवालकों यथार्थ कहताहै जिसके
ऊपरमेंप्रसनहो सर्वदाकाल ४८ ओर जोको
ई पुरुषवारंवार विचारकरकर्मोंको कर्ताहै
ओर गोब्राह्मणोंका हितप्यारकरताहै ति
सके ऊपर सदामें प्रसन्नहो ४९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१९२

169

ददात्यनुपकारिभ्यो यो ददाति द्विजोत्तमे म
य्यर्पितं सदा यस्तु तस्य तुष्टोस्म्यहं सदा ५२
कर्मणा येन तुष्टोस्मि निरुक्तेन तत्समासतः
रुष्टोस्मि कर्मणा येन विप्र वक्ष्यामि शृणुष्व त
त् परहिंसारतो यस्तु निर्दयः सर्वकर्मसु अ
हंयुः सर्वदा क्रुद्धः समांनयति शत्रुताम् ५५
असत्यभाषी क्रूरश्च परनिंदाकरस्तु यः प
रवर्तनविध्वंसी स समानेयत्र शत्रुताम् ५६
अदृष्टदोषौ पितरौ स्त्री भ्राता भगिनी तथा
मोहात्त्यजति यो मूढः समांनयति शत्रुता ५७

जो पुरुष अनुपकारियों के तांई दान देता है और उत्तम
ब्राह्मण के तांई देता है अरु मेरे मे चित्त मन लगाइया
जिसका तिसके ऊपर सदा प्रसन्न रहता ५२ हे द्विज जि
न कर्मों के करे मे प्रसन्न सदा रहता हूं सो संक्षेप से क
हिये हैं और जिनों कर्मों के करे होए मेरा षी क्या क्रो
धी होता हूं सो सुन ५४ जो पुरुष हिंसा करने में त
त्पर रहता है और सभ जनों के कामों मे निर्दय है
और अहंकारी है जो सर्वदा काल क्रोधयुक्त रहता
ता है सो पुरुष अपने शत्रुभाव कों मेरे में प्राप्त
कर्ता है ५५ और झूठ कहने वाला अरु क्रूर स्वभाव
वाला और पराई निंदा करने में तत्पर और पराई
वृत्ति के नाश करने वाला सो मेरे कों शत्रुभाव में
प्राप्त कर्ता है ५६ और जो कोई विना दोषों के देखे
माता पिता स्त्री भ्राता भगिनी इन कों मोह से
त्याग देता है सो मेरे कों शत्रुभाव मे प्राप्त कर्ता है ५७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पितृनिर्भर्त्सनं यस्तु कुरुते मूढधीर्नरः गुरो
रवज्ञां विप्रेन्द्र समानयति शत्रुतां ४८ दंपत्
योर्भेदनं यस्तु हेतुमात्रेणकेनचित् कुरु
ते ब्राह्मणश्रेष्ठ समानयति शत्रुताम् ४९
विप्रस्वं देवताद्रव्यं परद्रव्यं च मानवः हर
यस्तु विप्रेन्द्र समानयति शत्रुताम् ५० आ
रामच्छेदिनो ये च जलाशयविभेदिनः ग्रा
मनाशकरा ये च तेषां रुष्टो स्म्यहं सदा ५१

और जो कोई मूढ बुद्धिवाला पिता का अनादर
कर्ता है और हे विप्रेंद्र गुरों की अवज्ञा कर्ता है
सो मेरे को शत्रुता में प्राप्त कर्ता है ४८ और जो को
ई पुरुष किसी कारण करके स्त्री पुरुष का
भेद क्या विछोडा कर्ते हैं हे ब्राह्मण श्रेष्ठ
सो मेरे को शत्रुता में प्राप्त कर्ते हैं ४९ हे विप्रें
द्र जो कोई ब्राह्मण का द्रव्य देवता का धन
वा और किसी का द्रव्य चुरावता है सो मेरे
को अपने शत्रुभाव में प्राप्त कर्ता है ५० और जो
आराम क्या बागों का छेदन कर्ते हैं जल के
स्थान भेदन कर्ते हैं और जो ग्रामों का ना
श करनेवाला है तिनके ऊपर सर्वदा का
ल मैं क्रोधी रहता हूं ५१ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
८॰

170

दिवसेमैथुनंयेचकुर्वंतेकाममोहिताः राज
स्वलास्त्रियंयांतितेषांक्रुद्धोस्म्यहंसदा ५२ ये
चभ्रष्टांतरांनारींमोहाद्गच्छंतिसत्तम व्रतस्था
चसदातेमांनयंतिभुविशत्रुताम् ५३ अमा
वास्यांतिथौयेचकुर्वंतिनिशिभोजनं भोज
नद्वयमेकार्केतेषांहृष्टोःसदास्म्यहं ५४
आमिषंमैथुनंतैलंह्यमावस्यादिनेद्विजे म
येत्रजंतिविप्रेंद्रतेषांक्रुद्धोस्म्यहंसदा ५५

औरजोकोईकामकरकेंमोहितदिनविषेमैथुनकरतेहैं
औरजोकोई रजस्वलास्त्रीसें गमनकरतेहैं तिनके
ऊपरमें सर्वदाकालक्रोधवालारहताहों ५२ हे॰
सत्तम जोपुरुष भ्रष्ट आतुरस्त्रीकोंमोहसें गमन
करतेहैं औरव्रतमें स्थित जो स्त्री तिसकेसाथ ग
मन करतेहैं सोलोक पृथिवीमें मेरी शत्रुता कों
प्राप्तहोतेहैं ५३ औरजोकोई अमावास्या तिथि में
रात्रिमें भोजन करतेहै और एक अर्कमें क्या प॰
कसूर्यमें दोवार भोजनकरतेहै तिनके ऊपरस
दाक्रोध क्रोधवालारहताहों ५४ हे द्विज अमा
वस्याकेदिन जोकोई मास और मैथुन और तै॰
ल इनकों भोजन सेवन मर्दन करतेहै तिन
के ऊपर सदाक्रोधवाला रहताहूं ५५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बहुनात्र किमुक्तेन संक्षेपात्ते वदाम्यहं निंदंति
वैष्णवान्ये च तेषां रुष्टोस्म्यहं सदा ८६ व्यास उवा·
इत्युक्त्वा भगवान् विष्णुरदृश्योऽभवत्तदा सर्व
विप्रसमस्तस्त्रोमत्कानिरुत्तमंचततः ८७ केश
वोक्तेन वाक्येन स विप्रो हरिभक्तिकृत् त्यक्
त्वा सकलं कार्यं क्रियायोगरतोभवत् ८८
नारायणस्य नैवेद्यं भुंजतो यत्फलं विदं हरि
पूजाकृतः पुंसो न जाने किं भविष्यति ८९ स
मासेन ब्रवीमि त्वां मुनिराजसत्तम जैमिनि सकृ
त्कृत्वा हरेः पूजां प्राप्यते हरिमंदिरे ९० ॥

और इसमें बहुत कहने कर्के क्या है संक्षेप से कहदे
ताऊं जो पुरुष वैष्णवों की निंदा कर्त्ता है तिसके ऊ
पर सर्वदा काल क्रोधवाला रहता हों ८६ इतनी क
था सुनाय फिर व्यासदेवजी कहने लगे इस प्र
कार कथन कर्के भगवान विष्णुजी तिस समय अ
दृश्य होजाते भये क्या छिप जाते भये तद सो ब्रा
ह्मण हर हो गई निद्रा जिसकी ऐसे मंचे के
ऊपरसें उठ खडा होता भया ८७ और केशवजी के
कहे हुए वाक्य कर्के सो ब्राह्मण हरीभक्ति के
करने वाला सारे गृहस्थ के काम त्याग कर्के क्रि
यायोग करने में तत्पर होता भया ८८ देखो नारा
यण को नैवेद्य खाने का तो यह फल है और यह खब
र नहीं की पूजा करनेवाले पुरुष को क्या फल होता
होगा ८९ हे ऋषियों में श्रेष्ठ जैमिने संक्षेप में तेरे
को मैं कहता हूं कि एक बार भी हरि विष्णु की पूजा
कर्के विष्णु मंदिर में प्राप्त होता है ९० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मनुष्यं दुर्लभं लोके पूजनं तत्र पि च भक्तितः भ-
क्तिस्तत्रापि विशेषेन दुर्लभा परिकीर्तिता ९१
संसाराब्धिं दुःखपूर्णं अपारं तर्तुं वांछा-
यस्य चित्ते तिष्ठते सः भक्त्या नित्यं वासुदेव-
स्य पूजां कुर्यान् नित्यं कर्मणा सेऽखिलेन
९२ इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसा-
रे नैवेद्य भक्षणमहिमावर्णनम् ॥

हे ऋषे संसार मे मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है
उस मनुष्य जन्म में भगवानजी की पूजा दुर्लभ
है और उस पूजा में भी भक्ति बड़ी दुर्लभ कथ
न करी है ९१ हे जैमिने जे कर दुःखों कर के भ
रे होए अपारसें रहित संसार समुद्र कों तर
ने की इच्छा है और जिस के चित्त मे यह इच्छा है
संसार समुद्र से पार हो जाऊं सो पुरुष भक्ति
युक्त नित्य संपूर्ण कर्मों कर के वासुदेवजी की
पूजा करे ९२ यह श्रीपद्मपुराण के क्रियायोग
सार में नैवेद्य के भक्षण का माहात्म्य कहा
है ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भक्तमालायां सेतिहासे नैवेद्यमहात्म्यवर्णनं
अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि भक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं
महदाश्चर्यजननं हरिभक्तिप्रदायकम् १
पश्चिमे पुष्करस्यांते कर्मनाम्नीति विश्रुता
ब्राह्मणी पतिपुत्राभ्यां रहिता बंधुवर्जिता
निर्धनापि सुभाचारा भिक्षामात्रपरायणा
एकदा पर्यटंती सा भिक्षार्थं ब्राह्मणी सती
श्रीजगन्नाथमाहात्म्यं पुराणोक्तमशृणोत्क्वचित्
तत्र गत्वा जगन्नाथं दृष्ट्वा सर्वेपि पातिनः ४

भक्तमालमै इतिहासके सहित नैवेद्यके भक्षण
का माहात्म्य वर्णन करते हैं अब और उत्तम भक्ति
का माहात्म्य कथन कर्त्ताहूं कैसा वडे आश्चर्य के
उत्पन्न करनेवाला और हरिमें भक्ति वधानेवाला
पश्चिम देशमै पुष्कर तीर्थके समीप कर्मानाम
करकै प्रसिद्ध ब्राह्मणी पति पुत्र बंधुवर्ग इनक
करकै रहित उहां निवास कर्तीथी २ निर्धन भी
थी परंतु श्रेष्ट आचरण वाली भिक्षा मांगने
मे तत्परथी एक दिन सो भिक्षा मांगनेके नि
मित्त फिरती २ पतिव्रता ब्राह्मणी १ कहीं एक
किसि स्थानमें पुराणकी कथामेंसें श्रीजग
न्नाथजी के नैवेद्यका माहात्म्य श्रवण कर्ती भई
क्या माहात्म्य तहां जगन्नाथजीकी पुरीमें
जायके पापी भी भक्त होजाने है ४ ॥ ~ ॥

मुक्तंतेपापराशिभिः सत्यंसत्यंनसंशयः कि
चित्तत्रतुनः कश्चिदन्नंतस्मैनिवेदयेत्
५ भक्त्यान्नंपरमप्रीत्यातस्मैतच्चनिवेद
रिः इहभुक्त्वाखिलान्भोगानंतेप्राप्नोति
सद्गतिं ६ इतिश्रुत्वापुराणंसामाहात्म
त्म्यंभगवद्विभोः तत्रैवगत्वास्थास्यामिया
वज्जीवंविचिंतयत् ७ तावद्यावत्पियत्किं
चिल्लप्स्यामिभिक्षयात्वहम् सर्वंनिवे
द्यभोक्ष्यामिव्रतमेतन्मयाकृतम् ८ ॥

और पापोंके समूह सें मुक्त होताहै यह वात सत्य
है इसमें संशय नहिंहै जोकोईतहां जाकरथोडा
भीअन्न निवेदनकर्त्ताहै ५ औरपरमप्रीतिकर्कें
अन्नभोजनकर्त्ताहै जिसकेतांई हरिप्रसन्नहो
तेहैं औरइसलोकमेंश्रेष्ठसुख भोगकरअंतमें
श्रेष्ठगतिकों प्राप्तहोताहै ६ इसप्रकारपुराणमें
भगवान विभुका महात्म्यश्रवण कर्कें ऐसे चिंत
नकर्त्तीभई तहांमें जाकरजितनाकाल जीवि
त रहूंगी उतनाकाल उहांमें स्थितरहोंगी ७
औरजवतकर उहां नहि जाउंगीउतनाकाल
जो कुछ भिक्षा कर्कें अन्न लभया करूंगी सो
सभनारायणजीकों निवेदन कर्कें भोजनकी
या करूंगी यह मैनेव्रत क्या नियम धारा
ण करलियाहै ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवं निश्चित्य मनसा भिक्षाटनपरायणा ग्रा
ममाश्रित्य तदारभ्य निवेद्य हरये पुनः ९ स्वयं
सा तु भुंजे नित्यं भक्तिभावपरायणा: अथै
कस्मिन् दिने श्रीमज्जगन्नाथं दिदृक्षवः ९ श्री
गता वैस्नवास्तत्र मार्गक्रमवशादथ तद्
ग्रामीणाश्चापि जनास्तैः साकं गन्तुमुद्यताः ॥
सापि कर्मनिविष्टा तु ब्राह्मणी वैस्नवैः स
हः जगाम श्रीजगन्नाथं द्रष्टुं भक्तिपरायणा: १२

इस प्रकार मन के साथ निश्चय करके भिक्षामां
गने में तत्पर उस दिन से लेकर प्राप्त होई हु
ई अन्न को हरि के तांई निवेदन कर ९ फिर
पीछे से भक्तिभाव में तत्पर नित्यप्रति सो
भोजन करती भई इस प्रकार वर्तन कर
ने से उपरांत एक दिन श्रीमज्जगन्नाथजी के
देखने वाले ९ वैस्नव लोक मार्ग वशातें उस
ग्राम में आय प्राप्त भये तब उस ग्राम के
लोक भी तिनके साथ जाने को उद्यत भये
॥ तौ सो कर्मा ब्राह्मणी उनौं वैस्नवों के
साथ श्रीमज्जगन्नाथजी के दर्शन कों भक्ति
करने में तत्पर होई हुई चली जाती
भई १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा·
माम·
१७२

173

तत्रगत्वाजगन्नाथंदृष्ट्वाहृष्टाबभूवसा भु
क्त्वान्नंतस्मैतत्रप्रसादंमुमोदसा ।३ एवं
दिनद्वयेजातेनस्मार्यंसापपाचवै अतो
नेहृदयेनैवदत्तोभुक्तंस्वयंपुनः ।४ ततो
येदिवसेसातुसस्मारनिजकर्मतत् ततो
निचिंतयाविष्टामहाशोकपराभवत् ।५
आहस्वमनवेदिंमायददत्वान्नविस्मवे
भुक्तंदिनद्वयंचान्नंतस्मायदद्यकरोमि
किम् ।६॥

तहांपुरुषोत्तमपुरीहैं जाकेजगन्नाथजीकोंदेख
कर सोप्रसन्नमनवालीहोतीभई औरअन्नके
तुल्य प्रसादका महाभोगका अन्नखायकर ब
डे हर्ष आनंदकों प्राप्तहोतीभई ।३ जबइसप्र
कारदोदिनबीतगयेसो अपने निमित्त भोजन
नहींपकावतीभई इसकारणसें हरिकों नैवे
द्य नहिंलगाया और आप भोजनखातीभई ।४
तदतीसरे दिन इसकों अपने नित्यकर्मका
स्मरणहोताभया तद बडी चिंताकर्के युक्त
बडेशोकमें तत्परहोतीभई ।५ औरअपनेमन
में कहतीहै कि धिक्कारहै मेरेकों जोमैं विष्णुकें
तांई नहिंनिवेद लगाके दोदिन भोजन खाय
लियाहै जिसकारणसें आजमैं क्याकरों ।६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इति संचिंत्य मनसा किंचित्पप्रच्छ वैष्णवं कि
म्याहं करिष्यामि तद्ब्रूहि भगवन्मम ८
निवेद्य हरये चान्नं भोक्तव्यमिति मे मतं त
दत्र दिनयुग्मं तु भग्नं नैवेद्य भोजनात् ९
अतः परमदत्वान्नं जगन्नाथाय विष्णवे
न भोक्तव्यं मया हे न स्नाय यथायोग्यं वदस्व मे १०
इति श्रुत्वा वचस्तस्य वैष्णवो वाक्यमब्रवी
त् यद्येवं ते दृढा भक्तिस्तदा नैवास्ति दूषणं ११

इस प्रकार मन करके चिंतन कर किसी कि
वैस्नव कों पूछने लगी हे भगवन् मेरे तांई
पहचान कहो मेरे इसका क्या उपाय करां
८ मेरा यह नियम है की हरि कों अन्न नि
वेदन कर भोजन कर्ती हां सो इहां आये हूये
महाप्रसाद के खाने सें दो दिन भंग पड़ गा
पड़ गया है इसके निमित्त क्या करां ९ औ
र इससें उपरंत विस्नु जगन्नाथ के तांई
अन्न बिना दिये तो नहि भोजन करूंगी
परंतु इसमें यथायोग्य मेरे को कहो १०
यह तिसका वाक्य श्रवण करके वैस्नवा
बोला तेरी ऐसी भक्ति है तद तेरे कों कु
छ दोष नहि है ११ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ १७५

174

ऊरुष निजहस्तेन पाकं संभोज्य केशवं स्व
यंभुक्ते न संदेहो भक्त्यानन्यनिवेदिनीः २१
इतिश्रुत्वा वचस्तस्य कर्मनाम्नातिहर्षिता
भिक्षयित्वा तंडुलादीनि समादाय निजस्थले २२
पक्वानि तानि वेद्यास्मै बुभुजे भक्तितत्परा
एकस्मिन्दिवसे सा तु महाभोगं ददर्श ह २३
दृष्ट्वा सर्वरसोपेतं परमान्नमनल्पकम् म
नसा चिंतयामास सा चाचारपरायणा २४
अहो सर्वरसोपेतमन्नं भुक्त्वा तु पुनः दत्ता
मा हं कदन्नैवे कथं भोक्ष्यत्ययं प्रभुः २५
अपने हाथ करकें भोजन वनायकर नारायणजी कों
नैवेद्य लगायके पीछे आप भी भोजन कर नाराय
ण हरि भक्ति करकें प्रसन्न होते हैं इसमें संदेह नहीं
है २१ यह वचन तिसका श्रवण करकें कर्मा ब्रा
ह्मणी वडी प्रसन्न होई हुई भिक्षा मांगकर तंदु
लादि ल्यायके अपने स्थानपर २२ तिनकों निरं
धनियकाय कर निवेद लगायके भक्तिमें तत्पर
होई हुई आप भी भोजन कर लेती भई एक दि
नमें ब्राह्मणी महाप्रसादके लगानेके समय
मंदिरमें जाय प्राप्त भई तहां तिसने महाभोग दे
खा २३ तिसकों देखकर सभ नरों के पदार्थों क
र युक्त परमश्रेष्ठ अन्नों करकें भरा हुया सो आचा
रमार्गमें तत्पर मनमें चिंतन करने लगी २४ दे
खो यह सर्व रसों कर युक्त भोजन पदार्थ खा
नेवालेकों खोटा अन्न वनायकर देती हों सो य
ह मेरा दिया हुया अन्न कैसे खाते होवेंगे २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अतोहं प्रातरुत्थाय कृत्वान्नं कृशरं द्रुतं भो
जयामि सदा प्रातः त्वया याभोस्त्विति प्रभुः २ १
विचार्य्यैवं हृदा नित्यं प्रातरुत्थाय सा पुनः
अकृत्वा शौचमस्नानावास्यं मार्जयित्वा लंपुन २९
मृत्पात्रे कृशरान्नं वै शैघ्र्यात् संपाद्य भक्तितः
निवेद्य हरये पश्चात्स्वयं स्नानं च कारसा २८
स्नानात्पूजन गन्नाथं पश्चात्तद्भुजे स्वयम्
एवं भक्तिपरा सा न कृशरान्नेद दौ मुदा २९

आजसे लेकर प्रभुको मै प्रातःकाल उठके शी
घ्रतांसे खिचडी वनाके सदा सवेरे भोजन करा
या करूंगी उस समय तथा करपुरुक होनेहें भो
जन करलिया करेंगे २६ मन के साथ पसा
विचार करफिर प्रातःकाल उठके नित्यही मा
अंदरको शोधन करना ना शौच ना स्नान ऊ
कवी काम नहि करकें २७ मृतिकाके पात्र
में शताबी भक्तिसें आप स्नानादि करतीभई
२८ स्नानादि करके जगन्नाथजी का दर्श
न करना पीछेसे सोही नैवेद्य आप भो
जन करलेना इस प्रकार भक्तिमें तत्पर
सो वडे हर्ष आनंद करकें खिचडी निवे
द लगावती भई २९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तद्भक्तिवशगो नित्यं जगन्नाथः कृपामयः बु
भुजे कृशरान्नं वै स तस्माद्व्योम्नि स्थितः ॥ १९
वं गतेषु कालेषु कदाचित्कोपि वैष्णवः क
र्मांगः हे समायातः कृशरान्नार्पणान्वितः ॥ २०
अनाचारेण तेनेष्टं हरेर्नार्पणं न सत् ज
गर्ह कर्म स साधुः स आचारं चाप्यशिक्षयत् ॥ २१
किमिदं क्रियते मूढ त्वनाचारनिवेदनं नै
वेद्यं भोक्ष्यति देवेशस्तस्मादाचारतोर्पय ॥ २२
उषस्युत्थाय संमार्ज्य गोमयेनोपलिप्य च गृ
हं ततः शुचिः स्नात्वा पक्त्वा भक्ष्यं समर्पय ॥ २३

कृपा करनेवाले जगन्नाथ स्वामी ऐसी तिसकी भक्तिके
वशीभूत होए हुए आकाशमें स्थित होकर नित्यही
तिसकी खिचडी खाते भये १९ इसी तरांसे कितनाक स
मय बीत ताहुए पीछे एक दिन कोई वैष्णव साधु खि
चडी निवेद लगाने के समय कर्मों के जरमे आय प्रा
प्त भया २० तो अपवित्री नित्यही बिदिक कैं निवेद ना
रायणजी कों लगाती होई कों देखकर कहने ल
गा हरी कों इस प्रकार भोजन देना अच्छा नहिं है औ
र तिसके कर्म की निंदा करने लगा फिर पीछे सें
आचार पवित्रता शिक्षा करता भया क्या विधि सि
खावता भया २१ कहने लगा हे मूढ यह क्या करती
हैं बिना अस्नान करे ही निवेद लगाती है ऐसे न
हि भगवानजी खाते हैं इस वास्ते पवित्र होके ना
रायणजी कों नैवेद्य लगाना योग्य है २२ प्रातकाल
उठ के स्थान शोभना गोहे के साथ लेपन लगाना
फिर अस्नान करके पवित्र होकर भोजन बनाना
फिर पीछे नारायणकों नैवेद्य लगाना २३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा स गतः साधुः कर्मी चिन्तामवाप सा अ
हो यावपि यद्दत्तं हरये नं मदा मया २५ न भ
क्तेन तु हरिस्तामामनाचारस्थितो पि गास्त्व
मां तत्तो मूढां त्वमस्त्वां मे हरिः प्रभुः २६ इति ।
निर्भर्त्स्य मात्मानमन्यस्मिन्दिवसे तु सा स्ना
त्वा चैवार्द्रवस्त्रेन संपाद्यान्नं शुचौ शुचिः २७
वह्नप्रकारं तदन्नं जगन्नाथाय चार्पयत्
यथा गत्य हरिस्तत्सा वुभुजे भक्तिपं त्रितः २८

ऐसा वचन कहके साधु चला गया पीछेसें
कर्मावती परम चिंताकों प्राप्त होई की आज तं
क जो कछु मैंने हरिकों अन्न दिया है २५ सो हरि
ने नहि भोजन करा अनाचार कर जो मैं देती रही
मूढमतिवाली मेरे कों धिक्कार है परंतु हरि मेरे
अपराध कों क्षमा करे २६ इस प्रकार अपने आ
पकी आप निंदा कर फिर दूसरे दिन उसने तो जै
से साधुने कहा था प्रातःकाल घरकों शोधन क
र स्नान करा गिला वस्त्र ऊपर लेके पवित्र हो
कर पवित्र स्थानमें खिचडी वनाई २७ और
भी कछु वनाय भक्ति करकें जगन्नाथजीकों अ
र्पण कर्त्ती भई तद उस दिन जैसें रोज आय
कर उसकी भक्ति करकें वश्य होए हरि भोज
न कर्ते भये २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परंतु तस्याचारकरणे कष्टदर्शनात् स्व॰
यमुद्विग्नचित्तोभूज्जगन्नाथः कृपामयः ४९
समदे पूजकैर्दत्तमन्नं नैवाददे प्रभुः यतो
महत्त्वराणां लीनो वारिणोवगमत्त्वहिः ५॰
किंचोच्छिष्टमुखेलग्नंदर्शयामास पूजकान्
जगन्नाथस्ततः सर्वे दृष्ट्वा तत्परमाद्भुतं ५१
ततस्तत्पूजकाश्चिंतां संप्राप्तातिमहत्त
रां विभुक्तिना स्मिन्नारात्रौदहस्युः समम्॰
तमम् ५२ ॥

परंतु तिसकेआचारकरणेमे कष्टदेखकर आप
उद्वेग करयुक्तमन वाले कृपामय जगन्नाथ
जी होते भये ४९ तदउससमय पूजकोंने जो
अन्न दिया तिसकों नहि खाते भये जिसका
रणतें वडेप्राणालेसें जल करूलीका वाहर
नहीआवताभया ५॰ और कुछेक अपने मु
खमें उच्छिष्ट लगाहुया पुजारियोंको दिखा
वते भये तिसतें उपरंत सारेही तिससे परमअ
द्भुतदेखके ५१ सारेही पुजारी वडी चिंताकों
प्राप्तहोते भये अन जलकात्यागकर रात्रि॰
कों भूषे होयेसोयरहे तो उतम स्वप्न देख
ते भये ५२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जगन्नाथः समागम्य वभाषे स्मानिदं वचः अ
हो ध्यान्नं न भुक्तं यत्कारणं तस्य कारणम् ५२
कर्मानाम्नेति मद्भक्ता आलणीमत्पराय
णा न त्वा विनोदितं नित्यं कृशानममदाम्यहं ५४
भुंजानानेविसंतुष्टस्तद्भयानात्रसंशयः
तांतकश्चिद्वा चाय मूढेनाचारतः कथं ५५
कृशरानं ददास्येतन्न भोक्ष्यति हरिः स्वयं
तस्मादाचारपूर्वं तत्कृत्वा नैवेद्यमर्पय ५६

क्या समझइ याकी जगन्नाथजी आयकर हमारे कोप
हु वचन कहते भये येसा कोः आज जो मैने भोजन
नहि खाया तिसका कारण श्रवण करो ५३ क्या की
कर्मानाम वाली ब्राह्मणी मेरे मैं तत्पर मेरी भक्तिनी
है तिस करके दिया हुया कृशरान खिचडी नित्य भो
जन कर्ता हों ५४ और इतिस की भक्ति करके भोजन
कर्ना ह्या वडी प्रसनता को प्राप्त होता हूं तिसको
कोई कहता भया हे मूढ अनाचार करके कैसे निवे
द लगाती है ५५ यह जो इस विधि करके कृशरा
न्न देती है तिसको हरि भोजन नहि कर्ते है ति
सकारणासें आचार पूर्वक भोजन वनाय कर
नारायणजी को अर्पण कर ५६ ॥ ~

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इतितस्यवचःश्रुत्वाकर्मचारीतीवदुःखिता
महाकष्टेनसंपाद्यनैवेद्यंमेसमर्पयत् ४७ न
मैवेद्यमहंभुक्त्वातद्दुःखेनातिदुःखितः शुश्रू
षितंमनंचनस्पृष्टंपाणिनामया ४८ मम
चोद्विग्नमनसाविस्मृतंमुखमार्जनं त
तउच्छिष्टमन्नंमेलग्नमेतद्विवर्तते ४९ न
सात्वंवंतःस्मएवंनत्वंभोक्ष्यामिनिजेप्सितं
साकर्मचारीतीवमेभक्त्यायथापूर्वंयदृच्छया ५०
कृशरान्नंददात्वेषानतुक्लिश्यतुमत्कृते
अद्यारभ्यैवनियमोममसर्वोविनश्यताम् ५१

इहतिसकावचनसुनकर्के कर्मचारी बडे दुःखकों प्राप्त
होतीभई आज बडे दुःखकर्के भोजनबनायकर मे
रेकों निवेदलगावतीभई ४७ तिसकानैवेद्यमैं
भोजननकर्के औरतिसके दुःखकर्के दुःखित हो
पश्चाद्धया तुमाराअन्नमैने आज हाथ कर्केभी
स्पर्श नहि करीहै ४८ और उद्वेग युक्त मन वाले
मेरेकों मुखकामार्जनभी भूलगया इस कारण
सें जूठा अन्न मेरे मुखमे लगाहुया रहगयाहै ४९
तिस कारणसें तूसीसारेहीसुनो और मैं भोजन
भी अपनी इच्छा पूर्वक कर्ताहूं परंतु सो कर्म
चारी अत्यंत भक्तिकर्के अपनी इच्छासे आगेकी
न्याई देवे जैसें देतीथी ५० और खिचडी हदेवे
मेरे निमित्त क्लेश मत करे और मेरे सारे नियम
आजसें नष्ट होगयेहैं ५१ ॥

कर्माया: कृशरान्नं त्वं सर्वं भोस्वामन्नहं गुरा
नतःपरं भवद्दत्तमन्नेषां न निवेदितम् ५२
भोस्वामन्नत्र संदेहः स्वस्मात्कुरु मदीरितं
उक्तवान्यः समाचारं तस्यै तेन समं गुनः ५३
भवं तोयां तत्र गेहे कर्मां संबोधयंत वै
कृशरान्नं यथा सर्वं कृत्वा मह्यं ददाति सा
ततो हं परितुष्टः स्यां भोस्वामि भवदर्पितं
मवेहस्यान्नतो स्वप्नमेवदं तत्पुरुषोत्तमम् ५५

कर्माकी दीहोई खिचड़ी प्रसन्न तासें पहलेखाना
ऊं पीछे संत्त मारा औरनों का दियाऊया निवेद
खानाऊं ५२ इसमें संदेह नहीहै इसवास्ते मेरा
कहा मानों क्या कीजो उसकों सदाचार कहो
आयाहै फिर तिसके साथ जाके ५३ तुम भी
सारेही उसकेघरमें कर्माकों समझाओ क्या की
भगवान्‌जी कहते हैं आगेकी न्याई कृशरान्न
मेरेकों देवे ५४ तदमे प्रसन्न होए आऊया तुमा
रा दियाऊया निवेद खाऊंगा ऐसे पुरुषोत्तम
जीकों स्वप्नमें कहते होएकों देखकरके सो
संपूर्ण पुजारी ५५ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा.
ग्रम.
१२८

प्रातरुत्थाय चैकत्र भुक्त्वागत्वा तदालयं
तेनैव सार्धं समादाय सदाचारप्रवादिनं ५६
कृत्वाग्रतस्तं ते सर्वे कर्मां प्राहुर्विनीतवत्
कर्मा देवि नमस्तुभ्यं धन्यासि त्वं शुचिव्रते
त्वदर्थं खिद्यते देवः श्रीमान्पुरुषोत्तमः
नैवेद्यं त्वं यथा सर्वं दत्तवत्यसि सुव्रते ५८
तथैव देवदेवाय मा चिरं कुरु कष्टदं त्वत्क्ले
शात्क्लेशमाप्नोति जगन्नाथो महाप्रभुः ५९

178

सो दूसरे दिन प्रातः काल उठ करकें इकठे
होय भोजन कर फिर तिसके घरमैंजाय के तिस
वैस्नव कोंसाथ लेकर जिसनैं तिसकों आचा
र कथन कराथा ५६ उसकों आगे सो पुरु
जारी सारेहि करकें बड़ी नम्रता करकें कह
ते भये हेकर्मा देवि श्रेष्ट व्रतवालि तूं धन्य
है तेरेकों नमस्कार होवे ५७ क्योंकिश्रीमान्
पुरुषोत्तम देवता तेरे निमित्त बड़ा देख पा
तेहैं और जोतूं नैवेद्य देती रही ५८ उसी त
रे देवताके तांई दियाकर कष्टके देने वा
ला चिर मतलगा क्यों तेरे क्लेशकेकरने
सें भगवान् जी क्लेश पातेहैं ५९ ॥ ..॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्मात्त्वत्त्रमं भद्रे निवेदय यथारुचिः
अनेनोक्तं त्वया त्वेवमाचारादन्नमर्पय ९
तद्भक्तस्य जानीहि भक्तौ नाचारचिंतनं
तवान्नं प्रथमं भुक्त्वा कुशरं वै ततः परं १०
अन्यार्पितं प्रसादं तु ग्रहीष्यति तदा हरिः
अद्यारभ्य ततस्त्वं तु स्वेच्छयान्नं विधाय
च १२ समर्पय यथापूर्वं जगन्नाथाय भ
क्तितः इत्येतदर्थमायाता वयं सर्वे तवा
श्रमम् १३ ॥

इसकारणसें हे भद्रे अन्न क्या देखपाना त्यागदे
जिसतरां तेरी इच्छाहै उसतरां निवेदलगा और
जो इसने पिचले दिनमें तेरेकों कहाथाकी आ
चारक्या पवित्रतासें अन्नदिया कर ९ सो आ
चारविनाभक्ति वालेकों जान और भक्तिमें आ
चार विचार नहिंहै तेरे दिये होए अन्नकों प
हले खायके तिससें उपरंत १० और किसीका
दियाहुया महाप्रसाद प्रभुजी ग्रहणकर्ते हैं
इसकारणसें आजसें लेकर अपनी इच्छासें आ
न्नवनायकर १२ रोजकीन्याईं जगन्नाथजीके तां
ई अर्पणकर हम सारेही तेरे घरमें भगवानजी
की आज्ञासें इसीवातके कहणे वास्ते आयेहैं
१३ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अद्यारभ्य कृष्णेन त्वां प्रार्थयामो वयं मुहुः इ
तिश्रुत्वा वचस्तेषां कर्मादेव्यति हर्षिता
१४ उवाच वचनं तांस्तु प्रणम्य विहितांज
लिः अहो न जाने हं किं विद्याचारं वा न तथा परं
भवादृशोक्तमेवाहंकृत्वाकारिषमर्चनं
अतः परं भवंत स्त्वय हदंति करोमि तन् १५
इत्युक्त्वा सा समभ्यापि नैवेद्यस्य च साधने
कर्त्तुं व्यवसिता सा श्रीकर्मादेव्यतिभक्तितः
पूर्ववत्कृशरान्नं सा संपाद्य हरयेऽर्पयत्तते
पि वै स्वजका विप्राः समागमन्स्वमंदिरं १८

आजसे लेकर ऐसे कर यही हम तेरी वारंवार प्रार्थ
ना करतें हैं यह वचन तिनका सुनके कर्मा देवी व
डी प्रसन्न हुई १४ औरहाथ जोड विनती कर तिनकों
ऐसे कहने लगी हे ब्राह्मणो मैंतो आचार विचार कु
छ नहि जानती हों १५ तुमारे जैसे पुरुषों का कह
ना सुनके पूजन कर्ती रही अब इससें उपरंत जि
सतरां आप कहते हो उसी तरां करोंगी १६ इस प्र
कार कथन करके सो उठ खडी होई और नैवेद्य के
बनानें को सो कर्मादेवी साधुवर्तन वाली आरं
भ कर्ती भई बडी भक्ति से १७ पूर्वकीन्याई खि
चडी बनाय कर हरिकों भोग लगावती भ
ई और सो पूजारि ब्राह्मण आयकर अपने
मंदिरमें १८ ॥

तस्मात्त्वज्जन्मभद्रे निवेदय यथारुचि: अ
नेनोक्तं तयम्सर्वमाचारादनमर्पय ९० त
दभक्तस्य ज्ञानी हि भक्तौ नाचारचिंतनं न
वान्नप्रथमं भक्ता हृश्यरेवैनतः परम् ९१
अमार्षितं प्रसादंत ग्रहीष्यति तदा हरि:
अद्यारभ्य ततस्त्वं तस्वेछया नैविधाय च
समर्पय यथा सर्वं जगन्नाथाय भक्तितः
इत्येवदर्थमायाता वयं सर्वे तवाश्रमम् ९ ३

इसकारणासें हे भद्रे अन्न क्या वेदपानात्याग दे
जिसतरांतेरी इच्छा है उसतरां निवेद लगा औ
र जो इसने पिचले दिन में तेरेकों कहा था की
आचार क्या पवित्रतासें अन्नादियाकर ९० सो
आचार विनाभक्तिवालेकों ज्ञान और भक्ति में
आचार विचार नही है तेरे दिये होये होए अन्न
कों पहले खायके तिससे उपरंत ९१ गेरकि
सीकादियाजूठा महाप्रसाद प्रभजी ग्रहण
करतेहै इसकारणासें आजसेंलेकर अपनी इ
छासें अन्न बनायकर ९२ रोजकी न्याई जग
नाथजीकेतांई अर्पणकरहमसारेही तेरे घर
मे भगवानजीकी आज्ञासे इसीबातके क
हणे वास्ते आये हैं ९३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अद्यारभ्य कृष्णेन त्वार्थयामो वयं मुहुः ९३
तिष्ठन्ताव चलेत्येषां कर्मा देव्या निरूपिता ९४
उवाच वचनेनोक्त प्रणम्य विहिताञ्जलिः
अहो न जाने हं किं विदाचारं वा तथापरम्
भवादृशोक्तमेवाहं कृत्वा करिष्य मर्चनं अ
नःपरं भवेनत्त यद्वदं ति करोमि न तत् ९६
इत्युक्त्वा सा समभ्याय नैवेद्यस्य च साधनं
कर्तुं प्रवसिता साध्वी कर्मा देव्यति भक्तितः
पूर्ववत्कृशरान्नंसा संपाद्य हरये र्प्पयत्
नैपिवेद्यजका विप्राः समागमन्स्वमंदिरं ९८

आज सें लेकर ऐसें कर यही हम नेरी वारंवार प्रार्थ
ना करतें हैं यह वचन जिनका सुन के कर्मा देवीव
डी प्रसन्न भई ९४ और हाथ जोड विनती करति न
कों ऐसें कहने लगी हे ब्राह्मणी मैं तो आचार वि
चार कछु नही जानती हौं ९५ तुमारे जैसे पुरुषों
का कहना सुनके पूजन करती रही अब इससें
उपरंत जिस तरां आप कहते हो उसी तरां करोगी
इस प्रकार कथन करकें सो उठ खडी होई और
नैवेद्य के बनानें को सो कर्मा देवी साधु वर्तन
वाली आरंभ करती भई बडी भक्तिसें ९७ पूर्वकी
न्याई खिचडी बनायकर हरि कौं भोग लगा
वती भई और सो पुजारी ब्राह्मण आयकर
अपने मंदिर में ९८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कृत्वाह्निकाः सर्वे रसमन्नं संपाद्य भक्तितः नि
वेदयामासुस्तदा जगन्नाथाय हृष्टवत् ९
यथार्हं स जग्राह तत्सर्वं पुरुषोत्तमः मंद
प्रणालिकाद्वाराद्बहिर्नीतं जलं तदा १०
दृष्ट्वा मुमुदिरे सर्वे यथार्हं च पूजकाः एवं
प्रभावः कर्माया भक्तेर्वर्णितो मया ११
अद्यापि तस्याः कृशरमत्ति हर्षं जनार्दनः
तस्माद्भक्तिर्हि सर्वेषां कर्मणो वै गरीयसी
तयासंतोपि बहवः शालेरुः संसारसागरम्
इतिश्रीभगवन्नैवेद्यमहात्म्ये कर्माचरितं
समाप्तम् ॥
स्नानसंध्यादिकृत्यकर्के भक्तिप्रीति नानाप्रकारों
के अन्ननैवेद्यके वास्ते बनायकर प्रसन्न मनवाले
बडेहर्षसें जगन्नाथजीकोंनिवेद लगावते भये ८१
तदपुरुषोत्तमजी तिस सारे नैवेद्यकों आगेकी
न्याई ग्रहणकरलेते भये और मंदिरमें जलनि
कलनेकेमार्ग प्रणालेसें तिससमय जलभीबा
हर आगया १० तिसकोंआगेकीन्याई पूजारी
लोकदेखकेप्रसन्नभये इसप्रकारकाप्रभाव
कर्माकीभक्तिकामैंने वर्णनकरा है ११
सोअबभीजनार्दनभगवानजीप्रीतिपूर्वक
कृशरान खाते हैं तिसकारणसें सारे कर्मोमें
भक्तिहिश्रेष्टहै १२ तिसभक्तिकर्केबहुतलोक
नारायणकों प्रसन्नकरसंसार समुद्रकोंतरगये
है १३ यहभगवानजीकेनैवेद्यलगानेकेमहात्म्य
मेकर्माका चरित्र कहाहै ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ विष्णुप्रतिनैवेद्यार्पणमाहात्म्यवर्णनं
पद्मपुराणे क्रियायोगसारे यस्तु यच्छति ।
कृष्णाय शिशिरे गोपमूर्त्तये तिलानां मोद
कं दिवं स गच्छेद्धरेर्मंदिरम् १ यो दुग्धमो
दकं दद्यात्केशवाय महात्मने स पिवेदमृ
तं स्वर्गे मन्वंतरशतावधिः २ सघृतं हरये
खंडं यस्तु यच्छति जैमिने तस्य विष्णुः स
संतुष्टाच्छिनत्ति भवबंधनं ३ विचित्रफ
लानि यस्तु दद्याद्भगवते द्विज अंते सुर
पुरे गत्वा स भवेत्सर्ववंदितः ४ ॥

अब और विष्णुके प्रति नैवेद्य लगानेका माहात्म्य
वर्णन कर्ते हैं पद्मपुराणके क्रियायोगसारमें
जो पुरुष गोपमूर्त्ति कृष्णजीके तांई शिशिर
क्या माघ फाल्गुनमें दिव्य तिलोके मोदक नि
वेद लगाता है सो हरिके मंदिरमें जाता है १ और
जो कोई महात्मा केशवजीके तांई दुग्धके बने
होए मोदक देता है सो पुरुष सौ मन्वंतर पर्यंत
स्वर्गमें अमृत भोजन कर्ता है २ और जैमिने घृ
तके सहित जो खंड नैवेद्य हरिके तांई देता है
तिसके भवबंधन प्रसन्न मनवाले विष्णु काट दे
ते हैं ३ और हे द्विज भगवानजीके तांई वि
चित्र फलान क्या गंदोडे निवेद लगाता है
सो अंत समई इंद्रपुरीमें जायके देवतेयों
कर वंदना करने योग्य होता है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निर्मलां शर्करां यच्छेद्यस्तु कृष्णाय भक्तिमान्
स भक्तिर्भूमिसुरश्रेष्ठ देवानामपि दुर्लभा ५ ना
रसिंहे हविः शाल्योदनं यावदाज्ययुक्तं सश
र्करम् निवेद्य नरसिंहाय यावकं पायसं तथा
समास्तंदुलसंख्याया यावतीस्तावतीर्द्विज
विष्णुलोके महाभोगान्भुंजानास्ते स वैष्णवः ६
गारुडे यो दद्याद्धि सर्वे विप्रस्वपक्वं कदली
फलं शक्राद्यास्त्रिदशाः सर्वे वंद्यं तेन महर्निशं

जो भक्तिमान् पुरुष कृष्णजी के तांई निर्मल शर्करा
का खेत खंड देते हैं सो हे भूमिसुर श्रेष्ठ देवतायों
को दुर्लभ भक्ति हैं सो तिनकों प्राप्त होती है ५
नारसिंह पुराण में कहा है जो पुरुष घृत के स
हित शर्करा युक्त हवि शालि का ओदन देता
है नरसिंहजी के तांई और यावक का वशा०
और पायस खीर देता है ६ सो चावलों की संख्या
के वर्ष हैं उतने संख्या के वर्ष विष्णु लो
क में महाभोग भोगता हुया वैष्णव रहता है
गारुड में लिखा है जो विष्णु के तांई हे विप्र प
क्के होए फल देता है तिसकों शक्रादि देव०
ता सारे वंदना करने हैं ७ ॥७॥

सा. ग्राम. १९२

मासे कृष्णाय नवनीतं यो ददाति वैसवोत्तमः
तस्य पुण्यं न संख्यातं शक्रोप्यब्दशतैरपि ९
सशर्करा गितुग्धानि कृष्णाय यस्तु यच्छति
तस्य प्रसन्नो भगवान्ददाति अभिमतं फलं १०
पक्वैस्तालफलैर्दिव्यैर्योर्चयेद्यदुनंदनं ग
र्भवासं महादुःखं स भूयो लभते नहि ॥ यो
दद्यादिक्षुनैवेद्यं देवदेवाय विष्णवे सोपि
तत्फलमाप्नोति किमन्यैर्बहुभाषितैः १२

पद्मपुराण में लिखा है जो पुरुष कृष्णजी के तां
ईं वैसवोत्तम नवनीत का मखन निवेद देता
है उसके पुण्य की संख्या करने को सौ वर्ष क
के इंद्र भी समर्थ नहि होसकता है ९ जो पुरुष
कृष्णजी के तांईं शर्करा के सहित दुग्ध देता है
तिसको प्रसन्न होय कर भगवान् अभिमत फ
ल देता हैं १० जो पुरुष यदुनंदनजी को पके हो
ए ताल फलों करके पूजन करता है सो महादुःख
रूपी जो गर्भवास तिसको फिर नहि लभता है ॥
और जो पुरुष देवतेयों के देवता विष्णुजी के
तांईं ईक्ष गन्नेयों का नैवेद्य देता हैं सो भी ति
स फल को प्राप्त होता हैं और बहुत कहने क
के क्या है १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मे क्रियायोगसारे अथ वे कथयिष्यामि वै
तिहासं पुरातनम् व्यास उवाच शृणुष्व द्वि
जश्रेष्ठ महाविष्णोर्महात्मनः ब्रवीमि शृणु
माहात्म्यं सर्वदुःखनिवारणम् ।३ ब्राह्मणाः
क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चान्त्यजातयः हरि
भक्तिं प्रपन्नाय ते कृतार्था न संशयः ।४ ह
रेरभक्तो विप्रोपि विज्ञेयः श्वपचाधमः ह
रिभक्तः श्वपाकोपि विज्ञेयो ब्राह्मणाधिकः
स कथं ब्राह्मणो यस्तु हरिभक्तिविवर्जितः
स कथं श्वपचो यस्तु भगवद्भक्तिमानसः ।६

पद्मपुराणके क्रियायोगसारमें लिखा है· २ सो मैं प्रा
चीन इतिहास कथन करता हूं व्यासदेवजी कथन
करते हैं हे द्विजश्रेष्ठ अब फेर महात्मा विष्णुका
सर्वदुःखनिवारण वाला माहात्म्य कहता हूं
तूं श्रवण कर ।३ जौनसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शू
द्र अन्त्यजाति भी हरिकी शरणकों प्राप्त होए हैं
सोई कृतार्थ हैं ।४ और जो ब्राह्मण हरिका अभ
क्त सो तो श्वपचसें भी क्या चांडालसें भी अधिक
जानना और जो चंडाल हरिका भक्त होवे सो
ब्राह्मणसें भी अधिक जानना ।५ जो ब्राह्मण
हरिकी भक्ति नहिं कर्ता है सो ब्राह्मण कैसे हैं
और भगवान्जीकी भक्ति करनेमें मन जिस
का ऐसा चांडाल कैसे हैं ।६ ॥

स्का॰
ग्राम॰
१८३

183

याजेनापियथाविष्णुः स्वपाकेनप्रपूजितः
तदापश्येनमप्येवन्नवेदविदंवरम् १७
रासीच्चक्रिकोनामशवरोलोकहर्षकृत
स्वजातिवृत्तिहीनश्चयुगेद्वापरसंज्ञके १८
प्रियवादीजितक्रोधः परहिंसाविवर्जितः
दयालुर्दंभहीनश्चपितृसेवापरायणः १९
नकृतोवैष्णवालापोमोक्षशास्त्रंनचश्रुतं
तथापिजातानश्चितेहरिभक्तिरचंचला २०
हरेकेशवगोविंदवासुदेवजनार्दन इत्या
दीनिस्मरतिस्मनमानिसचचक्रिकः २१

जोविष्णुभगवानश्वपाकचांडालनें वहानेकर्कें
पूजनकीनाहुया सोपहुवेद वेत्तोमें श्रेष्ठ जि
स पूजन करनेवालेकों देखतेहैं १७ पूर्वएक
चक्रिकनामकर्कें लोकोंके हर्ष करनेवाला
शवरभलि होताभया द्वापरयुगमें अपनी
जातीवृत्तिकर्कें हानिहोताभया १८ केसाथा
प्रियवचनबोलनेवाला क्रोधजेतिया हुया
जिसनेपरहिंसा कार्कें रहितदयालुतथा दंभ
सेहति और पितरों कीसंवादमें परायण
था १९ औरवैष्णवकेसाथआलापभी नहि
करेया और मोक्षशास्त्रभीनहि सुनातदपी
जिसकेमनमें अचंचल हरिकी भक्तिहोतीभ
ई २० हेहरे हेकेशव हेगोविंद वासुदेव जनार्द
न इत्यादिनाम सोचक्रिक नित्यप्रतिस्मरणक
रताभया २१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वन्यं फलं समयं किं वित्स्याश्नोति द्विजसत्तम
आदौ ददाति तद्धक्तो निजे शबरवंशजः २२
तस्माद् भुक्तं ततो ज्ञात्वा वक्त्रादानीय तन्मनः
ददाति हरये भक्त्या सुप्रीतः प्रतिवासरम् २ ३
उच्छिष्टं वाप्यनुच्छिष्टं द्वयमेव न वेत्ति सः
निजजाति स्वभावोयं सततं मूर्ध्नि वर्तते २ ४
कदाचित्स द्विजश्रेष्ठ काननाभ्यन्तरे भ्रमन्
फलमेकं प्राप्य वहु पिप्पलाख्यस्य शाखिनः
२५ ॥

हे द्विज सत्तम जो वनके फल तिसकों प्राप्त होते
हैं तिनकों मुखमें अपनेमें पहले पायके मीठास
लूना स्वाद जानके शबर वंशमें उत्पन्न हुया
हुया २२ उनको मीठे २ जानके मुखसें निका
लकर फिर तिनको प्रसन्नमन वाला रोजके
रोज भक्तिकर्के नारायणको देता भया २२
और उच्छिष्ट अनुच्छिष्ट इन दोनो कोंन
हि भगवान जानते भये जिसके मूर्धमें अप
नी जातीका स्वभाव वर्तता है २४ हे द्विज श्रेष्ठ
एकसमय सो शबर वनके वीच भ्रमता हु
या पिप्पल वृक्षके वहुत फल तिसको प्रा
प्त भये २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१२४

अथासौहर्षितस्तत्रफलंसंप्राप्यचक्रिणो
रसास्तुभेदंज्ञात्वाचनिजवक्त्रांतरेददौ २६
तदासौतत्फलंयावन्निजवक्त्रांतरेद्विज प्र
विवेशगलंयावत्तत्फलंतसजैमिने २७
तावत्सवेनहस्तेनगलवर्त्मवबंधसः य
त्नाद्द्वितीयसव्येनपाणिनासागलादुद्धि-
ज २८ फलमेतन्मुरारातेस्मैनददामिस्वारये
नजातःकोपिसंसारेतदाहमिवपापकी २९

इससें उपरंत हर्षित ओह होयम्रा हुया फलों
को प्राप्त होकर चक्रि भगवानजीके लिये स्वा
द उसका जानणे कों अपने मुखमें दे
ता भया २६ हे जैमिनि द्विज तदसो फल
मुखमे दिया हुया गलेमें प्रवेश करता
भया २७ उतनेमें सोवामे हाथसें गले
के मार्ग कों बंधन करलेता भया
और दूसरे हाथसें गलके मध्यसें निका
लनेलगा २८ और चिंतन करनें लगा य
ह फल मुरारिकों नहि देवां तद मेरे जै
सा कोई दूसरा पापी इस संसार मे न
हि हुया २९ ॥

इति संचिंत्य कृतवान्यत्नं निष्कासितं ततः
तथापि तत्फलं तस्य निष्क्रांतं न गलाद्द्विजः
हरेरेकांतभक्तोसौ छित्वा परशुना गलं
आनीय तत्फलं चाथ दत्तो देवाय विस्रवे २ १
अथ छिन्नगलो भूमौ शवरोसौ महाशयः
पपात मूर्छितेत्यंतं व्यथयाव्यथितमानसः
तस्य भक्त्या ततस्तुष्टो महाभगवान्हरिः
ततं संनिधिं समायातः स्वयमेव कृपामयः २ २

ऐसा चिंतन करकें तिसके निकालनेकों बहुत य
त्न कर्त्ता भया तदभी सोफल तिसके कंठसे नहि
निकलता भया ३- हे द्विज तदसो हरिका एक
दृढ निश्चयवाला भक्त परशु कहाडेसें आप
नागला काटकर फलकों निकालया त्याके
सोफल हरि देवता विसके तांई देवता भया २ १
अब इससे उपरंत कटेहोए गल वाला महाश
य शवर भील अत्यंत व्यथा पीडा करकें पी-
डित मूर्छित होके पृथ्वीपर डिग पडता भया २२
तद तिसके भक्ति करकें प्रसन्नमनवाले महा
त्मा भगवान हरि प्रसन्न होए हुए आपकृपा
मय दयाका रूप उहां उस के पासमें आव
ने भये २२ ॥

सा॰
ग्राम॰
१८५

रुधिरैस्तिनसर्वांगं पतितंपृथिवीतले तंदृष्ट्वा
भगवान्विस्मुदयार्द्रोव्यथितोभवत् ३४ पत्न
स्मसदृशोभक्तोममकोनविद्यते येनागल
मिदंछित्वामह्यंफलमिदंददौ ३५ यथानेन॰
नचभक्तेनसात्विकंकर्मवैकृतं तथान्येना
पिनभक्तेनअद्यावधिकृतंनहि ३६ यद्दे॰
वामृतमाप्नोतितथावस्तुकिमस्तिमे ध
न्योसांमितिधन्योयंधन्योयंनात्रसंशयः ३७

रुधिरकरकेंसिंचितहोयपडेहुए सारेअंगजिसके
ऐसे जिसकों पृथिवीतलमें पडे होयकों दे॰
खकर भगवान्विस्म दयार्द्र और व्यथितहोते
भये ३४ औरकहनेलगे इसके समान मेरा
भक्त कोई औरनहिंहै जिसकारणसें इस॰
ने अपना गलाभी कटकर फलनिकाल
केमेरेकों देता भया ३५ औरजिसप्रकार॰
कासात्विक कर्म इस भक्तने कराहैं ऐ॰
सा और किसी भक्तने भीआजतकनहिं
करा ३६ और ऐसी क्यावस्तुहै जिसकोदे
केअमृतकों प्राप्तहोताहैं धन्यहै यहभक्त इ
समें कछु संशयनहीहै ३७ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्राणानपिचसंत्यज्यममसंतोषणंकृतं ब्र
ह्मत्वंवाशिवत्वंवाशक्रत्वंवापिदीयते ३०
नत्थामस्समयेतस्यभक्तस्यनहिविद्यते ३ २
सुक्त्वामंतसंतुष्टोभगवान्गरुडध्वजः ३
स्वहस्तकमलेनाथतस्यमस्तकमस्पृश
त् तद्धस्तकमलस्पर्शाद्व्यथावरोसौगतव्य
थः ५० समुत्तस्थौमहासत्त्वोनारायणपरा
यणः व्यासउवाच पुत्रस्येवापितागात्रंर
जः प्रोंछितवान्द्विज ५२ तमोस्यभक्तस्ये
हस्यानिजवस्त्रेणकेशवः

देवोजिसनेअपनेप्राणत्यागकरमेराप्रसन्न
ताकरीहै अवइसकामक्यावदलेइसकोब्र
ह्मभावदेवोवाशिवपदवीदेवोअथवाइं
द्रभावदेवोक्यादेवो ३० जैसेहीमेराइसके
जैसाभक्तिनहिंहै ऐसाकहकर्के गरुडध्वज
भगवान् वडेप्रसन्नहोतेभये ३१ फिरतिस
काअपनेकमलरूपीहाथकर्के मस्तकस्पर्श
करतेभये जोतिनकेहाथकेस्पर्शकरनेकर्के
व्यथातिसकीदूरहोगई ५० जोवडेपराक्रम
युक्तहोयऐसाइया नारायणकोंभक्तिमेंतत्प
रउठखडाहोताभया ५१ अवव्यासदेवजीकथ
नकरनेहैं हेद्विजतदइसभक्तकोंकेशवजीअ
पनेवस्त्रकेसाथइसकेअंगोंकीरजकोंदूरक
रतेभये जैसेपितापुत्रकीरजदूरकरताहै ५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चक्रहस्तंसमालोक्यमूर्तिमंतंजनार्दनं वा
चामधुरयास्तोषीदाम्नहर्षकृतांजलिः ५४
चक्रिकउवाच गोविंदकेशवहरेजगदी
शविस्नोजानामियद्यपिननेस्तुतियोग्य
वाक्यैःस्तोतुंत्तथापिरसनाममवांछिति
तांस्वामिन्प्रसीदहरदोषमिमंप्रवृद्धम् ५५
सक्ताभवंतमखिलेश्वरचक्रपाणेअन्या
न्भजंतिमनुजाजगतीहमूर्खाः मूर्खाऽस्त
पवृत्तिरतप्रकरैकधाम्निसाम्प्रहस्तमा
पिमय्यपिदेवयस्मात् ५६ ॥

चक्रहाथमैलियेहुये मूर्तिमान क्याप्रत्यक्षजनार्द
नजीकोदेखकरशाम हुयाहै हर्ष आनंदजिसको
ऐसा सोहाय्य जोउकर मधुरवाणीकर्के स्तुति
कर्ताभया ५४ चक्रिककहनेलगा हेगोविंद
हेकेशव हेहरे हेजगदीश हेविस्नु यद्यपि तुम
रीस्तुतिकेयोग्य नहि भी नहीजानताहुं तदभी
मेरी रसनाहेस्वामिन् तुमारी स्तुतिकरनेकी
इच्छाकर्त्तीहै परंतु यहजो प्रवृद्ध दोषहै इस
को हरदूरकरो ५५ हेअखिलेश्वर चक्रपाणे
तुमारेकोंत्यागकरजोनरसे औरनोकों भजतेहैं
सोमनुष्य इसजगतमें मूर्खहै किसतरां जो
तैसे तुम पापोंके समूह का एक स्थान जोमेंहूं
ऐसे मेरेमें है देव जिसकारणसें कृपा दृष्टि
वालेहो ५६ ॥

186

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यन्नामदेवभजतोभुवनैकनाथभक्तिर्नयद्य
पिनसंसृतिभववंधहंत्री एकांतपापशवलान्व
यजन्मलब्धाविस्मोतथापिचभवान्मयिसु
प्रसन्नः ५७ यस्यप्रभोतवमनोज्ञपदारविंद
स्पर्शंचनर्मसुखभवाद्यपिदेवहेदाः नप्राप्नु
वंतिविदितसमयासलब्धस्वनोनकोपि
सदृशोनिजसेवकस्य ५८ येनत्वयाभगव
तात्रिदशैकवैरीकंसासरोविनिहतःकृत
सर्वपापः संसारमरःप्रकरमस्यहितायएवं
तस्मैनमःपरममंगलदायतुभ्यम् ५९

हेदेव त्रिभुवनोंके एकस्वामी तुमारे भजन करनें-
होए संसारके बंधन दूरकरनेवाली भक्ति नहि
होई तद्रूप निर्भागए है न कैसें जैसें एकांत पा
प रूपी जोभी लोंकावंशतिसमें जन्म पापकर्के
हे विस्मु तैसे मेरेमें तुसी प्रसन्नहोएहो ५७ हे प्र
भो जिन तुमारे मनकों हरनेवालें चरणारूपी क
मलोंकोस्पर्शकों ब्रह्मा शिवजी सें आद लेकर
देवसमूह नहि प्राप्तहोतेहें जो तसा स्पर्श सुख
मैने जानाहे सोसुख तुमारेसें मैने लभयाहे
सोजानाहें कीअपनेसेवकपरतुमारेजैसा कोई
दयाकरनेवाला नहिहे ५८ जिसतेने भगवान
ने देवतेयोंका एक वैरी कंस दैत्यकरहे मारेन सें
के पापजिसनेएसासो देवतेयोंके हितवास्ते औरम
नुष्यसमूहोंके सुखवास्ते मारा है ऐसे परम मंगल
देने वाले तमारे तांई नमस्कार होवे ५९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

येनत्वयासकलगोकुलरक्षणार्थंगोवर्धनाख्
यगिरिर्विधृतोनखाग्रे शक्रार्चितांघ्रिकमला-
यकृतप्रियायतस्मैनमोव्रजकुलस्तवकाय
तुभ्यं ५० येनत्वयातिबलिनौयमलार्जुनौतौ
देवत्वमेवविहितौवसुदेवजेन दुष्टश्चकाल
यवनोप्यपिधेनुकश्च तस्मैनमोस्तुनवमेघ
निभायतुभ्यम् ५१ श्रीदामरंकसुहृदर्थम
नंतमूर्तेयेनत्वयामरपतेरचिताविभूतिः
एवंकृताभगवतापरमेश्वरेण तस्मैनमोस्तु
निजसेवकदुःखहंत्रे ५२ ॥

औरहेभगवन् जिस तैनेसारेही गोकुलकी रक्षाके
लियेगोवर्धन नामा पर्वत नखोंके अग्रभागकर्के
धारणकराहै औरइंद्रकर्के पूजित करेहैं चरण
कमल जिनके और इंद्रकाकियाहै प्यारजिनोंने
ऐसे ब्रजकुल के स्तवकतुमारे तांई नमस्कार
होवे ५० और जिसतैने अत्यंत वलवान् यमल
कादोनो रूकहे अर्जुनोंके वृक्ष हेदेव वसुदेव
के पुत्रहोए रूप तैने हनकीतेहै और दुष्ट काल
यवनयुद्धमें माराहै और धेनुक दैत्य जिसतैनेमा
रा ऐसे नवीन मेघकी न्याई आभा वालेतुमारे
तांई नमस्कारहोवे ५१ हे अनंतमूर्ते भगवान्
जिसतैनें अपनेमित्र वडे निर्धन श्रीदामाके नि
मित्त हे अमरोंके पति विभूतिऐश्वर्य रचाहै
और उसकोंवडाकराऐसे अपने सेवकोंके दुःखह
नन करणेवाले तुमारे तांई नमस्कार होवे ५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मायाभिरच्युतनिजाभिरनंतमूर्ते र्दुर्योधनो निवलवान् विनिपातितस्स्र येन त्वया कृषि कसुत्रसा खेन विस्मीन तस्मै नमोस्तु यदुवंश धरायतुभ्यम् ५३ पारिजाततोनिजितोयेन विजि ताखंडलादयः स्वजायाप्रीणनार्थाय तस्मै तुभ्यं नमोनमः ५४ नरकोनिहतो येन त्वयादेवोत्तमेन वै नृणां नरकदुःखं च तस्मै नित्यं नमोनमः ५५ बाणासुरस्य निहता बाहवो येन वै विभो लीलाजितम हेशान तस्मै तुभ्यं नमोनमः ५६ ॥

हे अच्युत हे अनंतमूर्ते तैने अपनी माया करके अनंत बलवान दुर्योधन डिगायादिया और हे किसु कृषि करके पुत्रदे सखा होप्रभु तेने हे यादवों के वंश को धारण करने वाले ऐसे तुमारे कों नमस्का रहोवे ५३ और जिसत्तेने अपनी स्त्री सत्यभामा कीप्रसन्नता केलिये इंद्रादि देवता जीतकरपा रिजात वृक्ष स्वर्ग से जीत कर ल्याया ऐसे तुमा रे तांई नमस्कार होवे ५४ और निश्चय करदेवते यों मे श्रेष्ट तेने नरकासुर मारा और पुरुषों के नरकदुःख हरकरे ऐसे तुमारे कों नित्य ही न मस्कार होवे ५५ हे विभो बाणासुर की यां बाहु काटके तिसकों जीतया और लीला करकेम हेश जी जिनोंने जीते ऐसे तुमारे कों नित्य ही नमस्कार होवे ५६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भूमेरपहृतो भारस्त्वयायेन महात्मना क्षत्रि
याम्मायया हतान् सैन्नभ्यं नमो नमः ५७
व्यास उवाच इति तेन स्तुतो विष्णुः शवरेण
महात्मना उवाच परमप्रीत्या परेहाविनि
जैमिने ५८ चक्रिक उवाच परंब्रह्मपरंधाम
परमात्मा कृपामयः अपश्यं त्वामहं साक्षा
त्ताद्वरे किमन्यद्वरं मम ५५ न ध्यानाभव
तो मूर्तिः पूजास्तुतिशतानि च नैवेद्यैर्दिव्य
पुष्पैश्चादिव्यधूपैः प्रदीपकैः ६० ॥

और जिस महात्माने तैने भूमिका सारा भार उता
रेया क्षत्रियों को माया करके मारके तिस तेरे तां
ई नमस्कार होवै ५७ इतनी कथा सुनाय फिर
व्यासदेवजी बोले हे जैमिनि इस प्रकार जिस
महात्मा शवर करके स्तुत करे होए विष्णु प्रसन्न
मन वाले प्रीतियुक्त कहते भये जो तेरी इच्छा
है सो वर मांग ५८ इतना वचन भगवानजी
के मुखसे सुनते ही चक्रिक कहने लगा हे
परंब्रह्म परंधाम परमात्मा कृपामय हे ह
रे तुमको साक्षात् इस मनुष्य दृष्टि करके
मैने देखया है इससे परे तुमसे और क्या व
र मांगू ५९ और तुम्हारी मूर्ति मैने ध्यान न
हि करी पूजा न करी स्तुतियों के सैकडे नहि
पडे और दिव्य धूप पुष्प दीप नैवेद्यों करके
पूजा नहीं करी ६० ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नतेस्मृतानिनामानि कदाचिद्भक्तितो मया तस्मादसलिलंचैव विसृष्टं तन हिमूर्धनि ९१ नभुक्तं तव नैवेद्यं तद्वतं नमयाकृतं तथाप्यहमयप्यंतां किंकरोमिपरेर्वरैः ९२
शवरान्वयजातोस्मि सर्वधर्मवहिष्कृतः तथापि पादपद्मं ते हष्टमस्यैर्वरैस्तुकिं ९३
त्वद्दर्शनं महाविस्सो देवतैरपिदुर्लभं तं देवाद्यमयाप्राप्तं वरैर्विमपरैर्मम ९४

ओर तुमारे नाम मैंने भक्ति सें नहि स्मरण करे हैं ओर तुमारे पादोंका जल मस्तमें नाहि धारणा करा ९१ ओर तुमारा नैवेद्य नहि खाया ओर ना तुमारा व्रत करा तदवी इस मनुष्य दृष्टि करकें मैंने तुमको देखा इस थे परें ओर वर करकें क्या करना है ९२ शावर भीलोके वंशमें जन्माहुया सारे धर्मसें बाहर भीहां तदवी तुमारे चरण कमल देखे हैं ओर वरो करकें क्या करना है ९३ हे महाविस्सो तुमारा दर्शन देवतोंने भी दुर्लभ है सो मैंने आज प्राप्त होय आहै ओर नों वरो करकें क्या प्रयोजन है ९४ ०॥

सा॰
ग्राम॰
१८६

नथापिकमलाकांतवरंदित्सर्यदिभवान्
नयितिष्टन्नमेचित्तंमयस्तवदंघ्रिग्रहः ९५
श्रीभगवानुवाच वचनामृतवर्षेणानंदी
येनमहाशय संप्राप्तामहतीतुष्टिमया
सेवकपालिना ९६ यद्दिदंवत्समेदत्तंमया
पात्यमनुत्तमं स्तनेनात्येतनप्रोस्मिभक्तिः
ग्रहणाम्येहनव ९७ व्यासउवाच इत्युक्त्वा
भगवान्विस्र्भंक्तिग्राहीदयामयः नमालि
गितवान्भक्तंचतभिर्दीर्घवाहुभिः ९८

हेकमलाकांत नदभीस्त्रापजेकरमेरेकों वर दे॰
ने होतद परहमेरेकोंवर देऊंकीमेराचित्तनमारे
मैंवनारहे पर हतुमारामेरेकों वरहे ९५ इत
नी वातभक्तिसुनके भगवानजीकहने
लगे हेमहाशय सेवकोंके पालनकरने वा
ले मैनेतुमारे वचनरूपी अम्रतकी वर्षा॰
करके वडीप्रसन्नता प्राप्तहोईहै ९६ हेवत्स जो॰
पह मैने तेरेकोंवरदियाहे सोतैने पालना हे इ
सकरकेमेप्रसन्न अत्यंत होयआहोतदमे भ॰
क्तितेरी कों ग्रहण कर्ताहुं ९७ व्यासदेवजी
कथन करतेहे इस प्रकार कथन करके भ॰
गवान्विस्नुजीभक्तिकेग्रहणकरणेवाले द
याका रूप तिस अपने भक्तकों चारोही लं॰
विये वाहों से आलिंगन कर्ते भये ९८ ॥

189

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीभगवानुवाच तुष्टोस्मि भवतो भक्त्या
वत्स चक्रिक सत्तम तवाभिलषितं सर्वं शि
घ्रं सिद्धिं गमिष्यति ९ भूयोपि तं महाभक्त
मालिंग्य परमेश्वरः तत्रैवांतर्दधे विश्ववि
श्वात्मा विश्वपालकः १० स चक्रिकोति सं
हृष्टः हरिभक्तिपरायणः पुत्रदारादिकं त्य
क्त्वाजगाम द्वारिकापुरीम् ११ तत्र स्नात्वा
समासाद्य प्रसादाच्चक्रपाणिनः आयुषा
ते ययौ मोक्षं देवानामपि दुर्लभम् १२॥

फिर भगवानजी कहने लगे हे वत्स चक्रिक सत्त
म तेरी भक्ति करके मैं प्रसन्न हूं और तेरा मन का
मनोरथ सारा ही शीघ्र सिद्धि को प्राप्त होवेगा ९
फिर भी तिस महाभक्त को परमेश्वर जी आलिंग
न करके विश्व के पालन करनेवाला हे विष्णु उहां
हीं अंतर्धान होगए क्या छिपगए १० उससे
उपरंत सो चक्रिक वडा प्रसन्न होए और हया
भक्ति मे तत्पर स्त्री पुत्रा दियों को त्याग कर
द्वारिका पुरी को चला जाता भया ११ तहां
जाके चक्रपाणि की प्रसन्नता से ज्ञान को प्रा
प्त होकर आयु के अंत मे देवतेयों को जो दुर्ल
भ मोक्ष है तिसको प्राप्त होत भया १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्माद्भक्तिवशो देवो भक्तिमात्रेण तुष्यति
न लोकैर्न च वित्तैश्च न तपोभिर्जपैर्न च १३
फलं यच्छति चोच्छिष्टं दत्तं तेन द्विजोत्तम त
थापि तुष्टिमान्विष्णुर्ज्ञात्वा भक्तिमचंचा-
लाम् १४ तस्मान्नारायणो देवः संसारे सि
त्तमुमुक्षुभिः पूजनीयः सदा भक्त्या श्रद्ध-
या द्विजसत्तम १५ ये यजन्ति दृढयाखिल
भक्त्या वासुदेवचरणांबुजयुग्मं वासवा
दिविबुधप्रकरैस्तुते वंजन्ति मनुजा खल
मोक्षं १६ इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसा
रे नैवेद्यार्पणमहिमावर्णनं नाम ॥

तिस कारण से देवता भक्ति के वश है भक्तिमात्र क
र प्रसन्न होते हैं ना और लोकों कर वित्तधनक
र तपों कर्के और जपों कर्के प्रसन्न होते हैं १३ देखो
हे द्विजोत्तम जैकर उच्छिष्ट फल भी देता रहा तद
भी विष्णु भगवान् अचंचल भक्ति तिस की जान
कर प्रसन्न होते भये १४ जानो की इस कारण से
नारायण देवता इस संसार में मोक्ष को चाहने वा
लेयों ने हे द्विजसत्तम सर्वदा काल भक्ति श्रद्धा
कर्के नारायण जी पूजने योग्य है १५ जो नर पुरु
ष वासुदेव भगवान जी के चरण कमलों के युगल
दृढ़ भक्ति कर्के पूजन करते हैं सो वासव इंद्रा
दि देवतेयों के समूहों कर्के स्तुति के योग्य और
निश्चय कर परमपद मुक्ति को प्राप्त होते हैं १६ य
ह पद्मपुराण के क्रियायोगसार में नैवेद्य लगा
ने की महिमा कही है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ नैवेद्यार्पणमहिमप्रसंगान्नामदेवक-
थामाह भक्तमालायाम् वामदेवसुतापुत्रो
नामदेवेति विश्रुतः स जातो वर्द्धमानस्तु
भक्ति केलिपरो भवेत् १ तत्रापि बालकैः सा
र्धं निर्मायारजसा हरिं पूजयन्मनसा हृष्टः पूजा
मनकुर्वन्निवार्भक २ एवं गतेषु कालेषु
स जातः सप्तहायनः मातामहेन सार्धं स
विक्रीडति निशं सखी एकदा कार्ययोगे
न वामदेवः क्वचिद्गतः ३ उक्तेदं नामदेवाय
वत्स यामि दिनत्रयं कार्यमस्ति ततस्त्वं नि-
प्रातरुत्थाय नित्यशः ४ ॥

अब नैवेद्यलगानेकी महिमाके प्रसंगसें नामदेवजी
वेकी कथा भक्तमालासें कहतेहैं वामदेव नामा
एक छीपाथा तिसकी कन्याका पुत्र नामदेव ना
मा प्रसिद्ध हुया सो जन्माहुया वधता २ भक्तिकेसा
थ क्रीडा करनेमें तत्पर होता भया १ तहांभी बाल
कोंके साथ मिटीके हरि बनायकर प्रतिदिन पूजा
करताथा और सो बालक तिसकेसाथ नकलक
रतेभये २ इसप्रकार समयके व्यतीत होनेसें आपसा
तवर्षका हुया परंतु सब पूर्ववत् अपने नानाम
हनाने वामदेवके साथ दिनरात्र क्रीडा करताफिर
ताभया ३ एकदिन किसी कामके वास्ते वामदेव क
हीं जाताभया तो नामदेवको ऐसें कहगया हे पुत्र
तीनदिन मेरे उहां लगने हैं सो एक काम घरका
है सो तैने नित्यही करना प्रातःकाल उठके ४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

191

गांदुग्धाय शुचिर्भूत्वा गोविंदं पाययिष्यसि
पयस्तदा त्वं भुंजीथ इत्येवं न व्रतं मम ५
तथेत्युक्त्वा गतो वामदेवो ग्रामांतरं तदा
नामदेवोपि गां दुग्ध्वा घटकेन हि धायव ६
नीत्वा गोविंदभवने प्रातः प्रांजलिरब्रवीत्
पिब दुग्धं महाराज मातामह निदेशतः ७
मयैवोपाहृतं चाद्य स तु ग्रामांतरागतः
जल्पन्नेवं नामदेवो गोविंदप्रतिमाग्रतः
८ ॥

प्रातःकाल उठना गौकों दोहना पवित्र होकर दूध
गोविंदजीकी प्रतिमाकों पिलाना फिर तैंने भोज
न करना ऐसा मेरा निश्चय है ५ इतनी वचन सुन
तेही नामदेवनें तथास्तु कथन करा तो क्या ऐसे
हो करा कहूंगा ऐसे जद कहा तद वामदेव ग्रामां
तरकों चला गया तो नामदेवनें गौको दोहना
करके सो दूध दोनेमें पायकर ६ प्रातःकाल गोविं
दजीके मंदिरमें स्थायके हाथ जोडकर ऐसे कहने
न लगा हे महाराज कौनानेकी आज्ञा है सो मैं ह
मल्या आहां आप इसे पीओ ७ और सो आज ग्राम
कोगया है घरका काम मैंनेही किया है ऐसा
कहता हुया नामदेव गोविंद प्रतिमाके आगे
स्थित होता भया ८ ॥ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पिबतिस्मयदानैवनदासभुनरेवहि उत्था
योत्थायदुग्धंतगृहीत्वाप्रणिपत्यच १
चिंतयामासमनसाचिंतानाम्निसमाहृ
ता अतोयंनैवपिबतेवांदत्वादयितेपयः ॥
२ नत्वाचिंतयादुग्धंकृत्वादुग्धंकरोति
च गृहीत्वाधनरुत्थायप्रार्थयामासभूरिशः
नपयोप्रतिमादुग्धंमनस्येवमचिंतयत
मांनजानातितोनैवपिबत्येनत्पयोमम ॥२

जब प्रतिमा दुग्ध नहि पान कर्ती भई तद सो फेर
तिस पात्र को उठाय २ के प्रणाम कर कर के मुख
में जोडता भया १ तद भी नहि पान कर्ती भई
तो मन मे चिंतन करने लगा इसमें मैने खंड न
हि पाया है इस वास्ते नहि पीते हैं खंड पाऊंगा
तद पीएंगी ॥ ऐसा कह के दुग्ध कों खंड के सा
युक्त किया ग्रहण कर्के फिर हाथमें लेकर ख
डे प्रार्थना कर्ता भया ॥ तद फिर भी नहि प्रति
माने दुग्ध पान करा तद मन में ऐसे चिंतन क
र्ती की यह मेरे कों जानते नहि हैं इस वास्ते
मेरे हाथ से दुग्ध नहि पीते हैं ॥२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१९२

अहंतु वामदेवस्य हन्तो पुत्रो न संशयः तिष्ठा
म्यत्रैव भवने जाने त्वां त्वमवेत्सि माम् ॥ ३
मुक्का उदयमादाय पुनरुत्थाय यत्नतः
प्रसीद मे पिब पयो मुहुरेवमुवाच नम् ॥ ४
एवं प्रार्थयमानस्य संहृत्यां दिनमत्यगात्
न पयो प्रतिमा उदयं तत्तच्छिंतापरोभवत् ॥ ५ ५
किं चाहमसुचिः किं वा पात्रमेतत्पयोशुचिः
अतः प्रातः समुत्थाय स्नात्वा प्रतस्य भाजनं

192

एसा चिंतन करकें कहने लगा हे महाराज मैं तो
वामदेव की पुत्री का पुत्र हौं और इहां ही रहुंगाउं
आप मेरे कों नहिं जानते हो मैं तुमकों जानता
हूं ॥ ३ एसे कहके उदय लेकर फिर उठाया यत्न
सैं उनके मुख मैं लगाया वारंवार एसे कहने
लगो हे भगवन् आप प्रसन्न होउ इस दूधकों
पीओ ॥ ४ इसी तरां से प्रार्थना कर्त्ते होए सारादिन
वीत जाता भया और प्रतिमा भी उदय नहिं पान
कर्ती भई तद वडी चिंता मे तत्पर होता भया ॥ ५
और मन मैं विचारता भया कि मैं आप विप्र हां
जो यह पात्र उच्छिष्ट है जिस कारणसें नहिं
पीते हैं अच्छा प्रातःकाल उठके स्नान करकें भा
डा दूधका धोयकर ॥ ६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दासामिसस्मितं देवं ततः पास्यसि निश्चितं
कथमन्नमहं भोक्ष्ये गोविंदेऽस्मिन्नभुक्तिते १७
इति निश्चित्य शिष्ये स राज्ञोऽन्नाशनोदकः
मायाति निशं प्रार्थ्यमानोऽपि भजे नैव किंचनः १८
अथ प्रभाते चोत्थाय स्नात्वा संमार्ज्य मंदिरं
पयोदुग्धं प्रतिष्ठाप्य पुनः स्नात्वा समाहितः १९
स सितं दुग्धमादाय पिबेति मधुरं ब्रवीत्
न पापौ प्रतिमा तत्र मनस्येवमचिंतयत् २०
न स्नानं कृतमेतेन न कृतं दंतधावनं स्ना
पयित्वा भस्माव स्त्रं परिधाप्याग्रतः स्थितः २१

गोरस दूध काढ कर पकाय के उसमें खांड मिलाय
कर देऊंगा तद निश्चय कर पी लेएंगे परंतु इनके
भूखे रहने में कैसे अन्न भोजन करूं १७ ऐसा निश्चय
करि अरु अन्न जल कछु नहि खाया पीया गौ
र माताने बहुतसी प्रार्थना भी करी तदभी भू
खा प्यासा ही सोय रहा १८ रात के बीत जाने से उपरं
त उठ कर आप मंदिर कों पवित्र करा गौका दू
ध चोय कर पकाया भांडे मे पाय कर फिर आ
स्नान करा सावधान मन वाला १९ खांड पाय के दू
ध मे उनके पास स्याके वारंवार कहने लगा अब दूध
पीओ जद फिर भी प्रतिमाने दुग्ध नहि पिया तो फि
र एसा चिंतन कर्ता भया २० की इनोंने स्नान नहि
करा है फिर उनकों स्नान कराया वस्त्र पहराय आ
गे स्थित होके कहने लगा २१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१९२

193

पयोगृहीत्वापाणिभ्यामुवाच प्रणयान्वितः
मयापि नैव भुंक्तं भो दिनमेकं समत्यगात् २ २
अतः पिव महाराज पय इत्यब्रवीन्मुहुः
न पपौ प्रतिमा तु यं तावेतत्स रुरोद ह २ ३
अथ तत्र तु गोविंद प्रतिमानेत्रयुग्मतः
आपश्यद्बाष्पधारां वै दृष्ट्वा बालो व्यभाः
षत २४ किं रोदिषि पिवस्व त्वं नो चेदद्यैव
जीवितं त्यक्ष्यामि पश्य त्वं स्तेय सत्यमेत
न्न संशयः २५ ॥

हाथोंकरकें दूधको ग्रहण कर नम्रताके युक्त क
हने लगा हे भगवन् एक दिन वीत गया है मैने
भी कुछ नहि खाया है २२ हे महाराज इस का
रणसें आप इस दूधको पान करो जद फिर भी
नही पान करा तद यह वात जानी उसने कीअ
व नहि ही पान करती तद रोने लगा २३ इससें
उपरंत प्रतिमाके दोनो नेत्रोंसें अश्रुपात चल
ने लगे तो उनको देख कर बोला २४ वाल
क कहने लगा रोदन करते हो और इसको न
हि पीते हो अवश्यमे अपना जीवन इसीज
गामें त्यागूंगा देखते २ हमारी इसमें कु
छु झूठ नहि है सत्य कहता हूं २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा तन्मुखे दुग्धं योजयामास हृष्टवत्
प्रतिमाप्यपिबद्दुग्धमित्याश्चर्यंतरे महत् २६
पिबन्तीं तां पुनः प्राह नामदेवो निहर्षितः
सर्वं पिबसि गोविंद मदर्थं नैव रक्षसि २७
तव पीत्वावशिष्टं तु मानामह समर्पितं तु
हं चार्पितमस्माभिरतो विज्ञापयाम्यहम्
इति स्मृत्वा तस्य सा मूर्तिः सस्मिता दुग्धमत्य
जन् गृहीत्वा तत्करे हृष्टो नामदेवो बुभुक्तितः

ऐसा कहकर्के फिर प्रसन्न मन वाला दुग्ध का
पात्र उनके मुखमें जोडता भया तद प्रतिमा तिस
दुग्धकों पान करने लगी यह आश्चर्य है २६
जद हुय पिया कनीं थी तिसकों हर्षित हुया
२ नामदेव कहने लगा है गोविंद सारा ही दूध
पी जाते हो मेरे निमित्त कुछ नहि रखते हो २७
क्योंकि तुमारे पीनेसें शेष रहा हुया जो होगा
सो अपने ताने कों दिखाउंगा तद सो सत्यमा
नेगा इस वास्ते तुमारी प्रार्थना करताहूं २८
इस प्रकार का वचन सुनके तिसका सो मूर्ति
मंद हास्य कर्त्ती २ दुग्धकों त्याग देती भई
तिसकों हाथमें लेकर प्रसन्न चित्त वाला
भूखा हुया तिसकों पान करलेता भया २९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बुभजे मातर्दत्तंपद्मगृहे भोज्यादिकं स्थितं
केचिदाश्चर्यमेवेति कृत्वाश्रद्दधिरे नहि ३०
केचिद्वदंति सत्यं स्याद्भगवान्भक्तिवत्सल :
केचिदागत्यसंमत्तिंपप्रच्छुरिदमादरात् ३१
इत्येतद्भक्तिमाहात्म्यं नामदेवस्य कीर्तितं

और घरमें जो भोज्यादिक स्थित था सो माता
ने दिया तिसकों भोजन कर्ता भया इसवा
तकों सुन कर कईक लोक आश्चर्यमान
ते भये और श्रवण करकें निश्चय नहि क
र्ते भये कि यह वात सत्य है ३० और को
ई कहें कि भगवानजीकों भक्त प्यारे हैं
भक्तों की इच्छा पूर्ण कर्ते हैं यह वात
सत्य है और कितनेक लोक आय २
कर वडे हर्ष आदर प्यारसें संमतिकें
यह वात पूछते भये कीइहवात कैसें
हय ३१ इह इतनीकथा नामदेवकी भ
क्तिकीकहीहे नैवेद्यकी महिमाहै ॥

अथ केशवोपरिव्यजनकरणमहिमावर्ण
नम् कूर्मपुराणे अनुलिप्य जगन्नाथं ताल
वृन्तेन वीजयेन्नः वायुलोकमवाप्नोति पुरु
षस्तेन कर्मणा १ पाद्मे क्रियायोगसारे मयू
रपिच्छव्यजनैर्निदाघे स जितो हरिः ददाम
भिमतं सर्वमचिरेणैव सत्तम २ तालवृन्त
कवातेन पवित्रांबरवायुना ये ग्रीष्मे वीजि
नो विष्णोस्ते सर्वे स्वर्गगामिनः ३ ॥

अब केशव भगवानजी कों पंखा फोलने की म
हिमा कहते हैं कूर्मपुराणमें जो पुरुष जगन्ना
थजी कों गंधादियोंकर लेप करकें पंखे कें
साथ वीजन करे क्या फोलें नदसो पुरुष
तिस कर्मके प्रभाव करकें वायुलोकमें प्राप्त
होताहैं १ पद्मपुराणके क्रियायोगसारमें लि
खाहै हे सत्तम गरमीके दिनोंमें मयूरके
पिछके साथ क्या मोरछडके साथ पजेहोए
नारायण थोडे कालकर केही अभिमत का
मना देतेहैं २ और तालवृन्तककी वायु क
कें क्या पंखेके साथ और वस्त्रकी वायु क
कें जो ग्रीष्म ऋतुमें वीजन करतेहैं क्या फोल
तेहै सो सारेही स्वर्गके गामीहोतेहैं ३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सां॰
ग्राम॰
१९५

195

अथचामरमाहात्म्यंकूर्मपुराणे चामरैर्वी-
जयेयस्तु देवदेवंजनार्दनम् तिलप्रस्थप्रदा
नस्यफलप्राप्नोत्यसंशयम् १ दत्वा देवाय
चामरंमणिदंडविभूषितं हेमरूप्यादिकं
दंडंनस्यपुण्यफलंशृणु २ चामरव्यग्रह
स्ताग्रदिव्यस्त्रीपरिवारितः महाभोगवि
मानस्थश्चिरंदेवपुरेवसेत् ३ ॥ ॥

अब भगवानजीकों चौरीकरनेकी महिमालिखा
है कूर्मपुराणमेंकहाहै जोपुरुषदेवदेव जना
र्दनजीकों चौरी कर्ताहै सोप्रस्थप्रमाण ति
लोंकेदानकरनेकेफलकों प्राप्तहोताहै १
औरजोकोईपुरुषमणियोंके साथ शोभाय
मानदंडवालि अथवासोने चांदीके दंडवा-
लिचौरी विस्नकों देताहै तिसकेपुण्यका-
फलश्रवणकर २ क्याफलहोताहै चौरियां
जिनकीहाथमें डोलनेमें तत्पर हाथोंके
अग्रभाग जिनके ऐसियें दिव्यस्त्रियोंक
रपरिवारेयां हुया महाभोगोंकर युक्त
विमानपर चढकर्के देवपुरीमें जायक
र चिरकाल निवासकर्ताहै ३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रूप्यदर्पणमाहात्म्यं कूर्मपुराणे
दर्पणस्यप्रदानेन रूपवान्दर्पवा
न् भवेत् दर्शयित्वा तथानंच नाभा
गस्त्वधजायते । ॥ ५ ॥

अबभगवान्जीकों सीसा दिखानेकामा
हात्म्यलिखतेहैं कूर्मपुराणमें कहाहै
भगवान्जीकों सीसेके दिखानेककें सुं
दररूपवान् दर्पित अहंकारवालाहोताहै
ओर उनकों सीसादिखाने कर्के अभागी
नही होताहै । ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

196

अथ नृत्यगीतादिमहिमावर्णनं विष्णोरग्
रे ततः प्रमुदितैर्भक्तैस्तालवीणादिभूषितैः
कारयेद्गीतनृत्यादि कृष्णचांदनयत्नजं १
विष्णुस्थलमायातो गीतेनृत्येन गायतेपिच
कुलकोटिसमायुक्तो लभते मामकं पदम् २
यो नृत्यति प्रहृष्टात्मा भक्तिभावैरनेकश
स निर्दहति पापानि मन्वंतरकृतान्यपि ३
नारदः नृत्यतां श्रीपतेर्गेहे तालिकावादनै
र्भृशं उड्डायंते शरीरस्थाः सर्वे पातकपक्षिणः

अब विष्णु के आगे नृत्य गीत की महिमा
लिखते हैं विष्णुधर्मोत्तर मे कहा है भगवान्
जी को आर्ति कर्के पीछे प्रसन्न मन वाले भक्तों
ने ताल वीणादियों कर्के भूषितों ने गीत नृ
त्य करना योग्य है आनंद के उत्पन्न करने वा
ला १ और जो पुरुष लज्जा का त्याग कर के गा
यन कर्ता है और नृत्य कर्ता है सो कोटि कुल
कर्के युक्त मेरे पद को प्राप्त होता हैं २ जो पुरुष
प्रसन्न चित्त अनेक तरों के भक्ति भाव कर्के वि
ष्णु के आगे नृत्य कर्ता है सो सैकडे मन्वंतरों
के करे होए पापों को दग्ध कर्ता है ३ नारद जी
कथन कर्ते हैं अतिशय कर्के ताडियां बजा कर
श्रीपति के मंदिर में नृत्य करने वाले पुरुषो के
शरीर में स्थित जो पाप हैं सो पक्षिरूप होक
र उड जाते हैं ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हृस्येऽमंनोषयेयस्तु स्वगीतैर्मधुरस्वनैः सा
मवेदफलंप्राप्यमोदतेविस्नुसन्निधौ ५ नार
दीये विस्नोर्नृत्यंचगीतंचनटनंचविशेषतः
ब्रह्मन्ब्राह्मणजातीनांकर्तव्यंनित्यकर्मव
त् ६ वाराहे ब्राह्मणोवासुदेवार्थेगायमा
नोनिशंपरं नववर्षसहस्राणिकुवेरभव
नेवसेदिति ७ स्कंदे गीतंवाद्यंचनृत्यंच
हास्यंविस्नुकथांशृणे यःकरोतिसपुण्या
त्मात्रैलोक्योपरिसंस्थितः ८ ॥

और जो कोई मधुरस्वरोंवाले सुंदर गीतों करकें हृ
स्यजी कों प्रसन्न कर्ते हैं सो सामवेद का पाठ कर
ने के फल कों प्राप्त होकरकें विस्नु के समीप आनं
द भोगते हैं ५ नारदीयमें कहा है हे ब्रह्मण ब्रा
ह्मणजातिवालें कों विस्नु के आगे नाचना गा
यन करना नाट्य करना विशेष कर नित्यक
र्मों की न्याई करना योग्य है ६ वाराह में कहा है
ब्राह्मणजातिवाला वासुदेवजी के निमित्त वा
रंवार उत्कृष्टगायन कर्ता है सो नो हजार वर्ष
कुवेर के भवन अलकापुरी में निवास कर्ता है ७
स्कंद में कहा है हेमुने गायन करना वाजे व
जाने नृत्य करना हांसी करणी विस्नु की कथा श्र
वण करणी इतने काम विस्नु के निमित्त जो
कर्ता है सो पुण्यवान् त्रिलोकी के ऊप
र स्थित है ८ ॥

क्रियायोगसारे विष्णोरायतने यस्तु भक्तियुक्तः प्रनृत्यति सयाति विष्णोः श्रेष्ठ तद्विष्णोः परमं पदं ९ यस्तु गायति गीतानि भक्त्या नारायणाग्रतः सन्वपत्वमवाप्नोति गंधर्वाणां पुरे स्थितः १-पद्मे वाणीवेणुरवो येन योगीतेन प्रभुं हरिं श्रावयेत्परया भक्त्या सयाति परमां गतिम् ११ वल्लकीनिनदं शब्दं यः करोति हरेर्विभोः पुरतस्तांश्च द्विजश्रेष्ठ सयाति हरिमंदिरम् १२

क्रियायोगसारमे लिखा है विष्णुके मंदिरमें भक्तिके युक्त जो नृत्य कर्ता हैं हे ब्राह्मणश्रेष्ठ तिस विष्णुके परमपदकों प्राप्त होता है ९ जो पुरुष नारायणजी के अग्रमें गीत गायन कर्ता है सो गंधर्वोंके पुरमें स्थित होय अरु या तत्वभावकों प्राप्त होता है १०
पद्मपुराणमे लिखा है वेणु वेणुके शब्दकों उत्पन्न होयकरि गीतिकरिके परम भक्तिके साथ हरि प्रभुकों श्रवण करातेहैं सो तिस परमेश्वरकी योग्यताकों प्राप्त होतेहैं ११ जो पुरुष विभु हरिके आगे वीणाका शब्द करतेहैं सो हरिके भक्तोंके आगे विष्णुके मंदिरमें जातेहैं १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मृदंगवाद्येनयुक्तंनर्त्तनंयःकरोतिवै पुरस्ता
द्वासुदेवस्य सभवेद्विष्णुवल्लभः ९३ बृहन्नार
दीये देवतायतनेयस्तुभक्तिःयुक्तःप्रनृत्य
ति गीतानिगायतियदानं फलंशृणुभूपते ९४
गंधर्वराजतांरागात्नृत्याद्रुद्रगणेशताम्
प्राप्नोत्यष्टकुलैर्युक्तआकल्पंमोक्षभाङ्न
रः ९५ नरसिंहपुराणे गीतवाद्यादिकंना
ट्यंशंखतूर्यादिनिःस्वनम् यःकारयतिवै
विष्णुःसयातिसदनंहरेः ९६ ~ ॥

और जो कोई पुरुष मृदंग बाजे करकें भगवानजी
के आगे नृत्य कर्त्ते हैं सो वासुदेवजी के आगे वि
ष्णुके प्यारे होतेहैं ९३ बृहन्नारदीयमें कहाहै दे
वताके मंदिरमें भक्तिकरकेंयुक्तजो पुरुषनृत्य
कर्ताहै औरजद गीत्तगायन कर्ताहै जिसका
फलश्रवणकर ९४ रागगायनकरनेसें गंधर्
वकी राजताकों प्राप्तहोतेहै औरनृत्य करने
सें रुद्रगणोंकी ईशताकों प्राप्तहोताहै औ
र आठकुलोंकरकेंयुक्तकल्प पर्यंत मोक्ष
भागीहोताहै ९५ नरसिंहपुराणमेंकहाहै गा
नावाजेरआनें नाचना शंखादिवाजेयांके श
ब्द करने अथवाकरावताहै विसके आगे
सो हरिलोकमें जाताहै ९६ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
याम॰
१९८

पर्वकालेविशेषेणकामगःकामरूपवान्
ससंगीतविदैश्चैवसेव्यमानेप्सरोगणैः ७
महार्हमणिचित्रेणविमानेनविराजितः
स्वर्गात्स्वर्गमनुप्राप्यविस्नलोकेमहीयते
अथगीतनृत्यप्रसंगादितिहासमाहपुन
र्भूयःप्रवक्ष्यामिभक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं यच्छ्रु
त्वाजायतेभक्तिर्वासुदेवेमहात्मनि ९ ज
गन्नाथपुरीप्रान्तेदेशेचैवोत्कलाभिधे वि
उविल्वइतिख्यातोग्रामोब्राह्मणसंकुलः १०

पर्वके समयविषेककर्केकामगहोताहै औरकाम
देवकीरूपकीनाई होताहै औरसंगतिकेजानेवा
ले और अप्सरोंकेसमूहकों कर्के सेवितहोताहै ७
और वडे मोलकीयांमणीयोंके चित्रोंवाले वि
मान पर विराजमान होयआहुया स्वर्गसें स्व
र्गकोंप्राप्त होकरविस्नके लोंकमें महिमाकों
प्राप्तहोताहै ८ अव गीतनृत्यके प्रसंगमें
इतिहासकहतेहैं अवफेर भक्तिकाउत्तम
माहात्म्य कहताहों जिसकों श्रवण कर्केवा
सुदेव महात्मा में भक्तिहोताहै ९ जगन्नाथ
पुरीकेसमीप उत्कलनामा देशमें विउवि
ल्वनामक ब्राह्मणोंका भरा हुया ग्रा
मथा १०॥

198

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तत्रोत्कलेद्विजोजातोजयदेवइतिश्रुतः
विद्याभ्यासरतःशांतःपुरुषोत्तमसृजकः
अथतत्रैवविप्रोन्योदेवशर्मेतिविश्रुतः
अनपत्योवभूवासौजगन्नाथमुपागतः २२
नमस्कृत्यहरिंमूर्ध्नास्वीकारकृतांज
लिः यदिमेसंततिर्नाथभवत्प्रसादाद्भवि
ष्यति २३ अपत्यंप्रथमंतन्मयमर्पयिष्या
मिसंशयं प्रतिश्रुत्यमनसेवंसयानि
जमंदिरम् २४ ॥

तिसमैं उत्कलजातीकाब्राह्मणजयदेवनाम
क विद्याका अभ्यासीशांतरूपीपुरुषोत्तम जी
काभजनकरनेवालानिवासकर्त्ताथा २१ उसी
मैंगैरएकदेवशर्मानामकब्राह्मणनिवासक
र्त्ताथा सोब्राह्मणअनपत्यका संतानसें रहि
तथा सोएकदिन जगन्नाथपुरीमेंआयप्राप्तभ
या २२ तहांमंदिरमैं शिर करकें हरिको प्र
णामकर हाथजोडकै स्वीकारकर्त्ताभया
क्यासखनकर्त्ताभया क्या हेनाथ तुमारी कृपा
करकें मेरेघर संतान होवेगी २३ तदपहलीसं
तानतुमारेकौंअर्पणकरूंगा इसमें संशय न
हीहै ऐसे करकें अपनेघरमैं चला आया
२४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततः कालेन क्रियता कस्मैका प्रथमा जनि त
तः पुत्रान् लभत सा प्रवृत्तान्मनोहरान् २५ त
तः स मनसा स्मृत्वा सपत्नीको द्विजोत्तम
कन्यां गृहीत्वा हर्षेण जगन्नाथमुपागतः
नमस्कृत्य जगन्नाथं देवशर्माब्रवीद्वचः
देवदेव जगन्नाथ त्वत्प्रसादः फलितो मम २७
प्रथमा तनया जाता पुत्रास्तु तदनंतरं प्र
तःप्रतिश्रुता कन्यां ददामि प्रतिगृह्यतां २८

तिससें उपरंत कितनेक समय करकें प्रथम तिसके
घर एक कन्या जन्मी तिससें उपरंत फिर श्रेष्ठवर्तन
वाले सुंदर पुत्र जन्मते भये २५ तद कितने चिर
काल पीछे पत्नीको सहित सो द्विजोत्तम मन-
में तिस प्रतिश्रुत स्तवनको स्मरण करकें इस
रे दिन बडे हर्ष कर युक्त कन्याकों लेकर जगन्ना
थजीके मंदिरमें आया २६ जगन्नाथजीके आ-
गे नमस्कार करकें देवशर्मा कहने लगा हे देवत
योंके देवता जगतके स्वामी भगवान्जी तुमारा
प्रसाद मेरेकों फलित हुया है क्या मेरे मनका
मनोरथ सिद्ध हुया है तुमारी कृपासे २७ परंतु
एक वार्ता है पहले कन्या जन्मी फिर उपरंत पुत्र
होई इस कारणसें मैं तुमारीकों प्रथम संतान
स्तवन करी होई कन्या है सो देता हूं इसकों
तुम ग्रहण करो २८ ॥

इत्युक्त्वा तां करेणासौ गृहीत्वा तां प्रदर्श्य च स्व
जनेभ्योथ वृत्तांतमादितो यथा महायशः २९
ततो वहिः समागत्य सोऽवतस्थौ द्विजः क्वचित्
रात्रौ तस्य च विप्रस्य पूजकस्य जगत्प्रभुः ३०
स्वप्ने स कथयामास जगन्नाथोद्भुतं वचः दे
वशर्मन्प्रसन्नोऽस्मि स्वीकृता ते सुता मया ३१
परं तु जयदेवाय देह्येनां मत्प्रियो ह्यसौ म
द्रूपमेव स विज्ञेयो नात्र कार्या विचारणा ३२

ऐसे कथन कर हाथसें कन्याकों पकडकर तिन
कोंदिखायके और पुजारियोंको उसके चढा
नेका वृत्तांत आदसें लेकर सुनादेताभया २९
फिर तिस मंदिरसें बाहर आनकर कहींस्थानां
तरमें वैठ जाताभया क्या उहां निवास करताभ
या ऐसें दिन वीत गया रात पडी जद शयन
करा तिसने तो उसकों स्वप्नमें और पुजा
रियोंकों स्वप्नमें जगत्प्रभु कहते भये ३० जग
न्नाथजी कहने लगे अद्भुत वाणी करकै हे देव
शर्मन तेरी मैं ग्रहण करलई ३१ मेरा प्याराज
यदेव नामा भक्त है और मेरा ही सो रूप है इसमें
कुछ विचार नहिंहै सो यह कन्या उसकों आ
के दान करदे मैं तेरे पर प्रसन्नहां ३२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
४॰॰

200

एवं कोप्येवमेवाथ स्वप्नं दृष्ट्वा प्रबोधितः देवशर्मा समागम्य स्वप्नं प्रोवाच हर्षितः ३३ श्रुत्वेदं देवशर्मापि स्वप्नं स सत्यममन्यत एवं केतेन सत्कृत्य गृहीत्वा तनयां निजाम् ३४ जगाम जयदेवस्य सन्निधौ हृष्टमानसः तेन तत्पर्णकुटीमध्ये ग्रामाद्बहिर्वैतनं ३५ दरिद्रं निरपेक्षं च शान्तं पश्यन्तमादरात् मनसा तं जगन्नाथं ध्यायन्तं मुदिताननम् ३६ ॥

और इसी तरां का स्वप्न पुजारीयों कों हूया की तुम उस ब्राह्मण कों जा के कहो की यह अपनी कन्या जयदेव की दान करदे ऐसे देखकर पुजारी उठ खडा हूया और उस ब्राह्मण के पास जा के हर्ष युक्त पुजारी ब्राह्मण स्वप्न का वृत्तांत कहने लगा ३३ ऐसा स्वप्न तिस का सुन के देवशर्मा सत्य मानता भया फिर तिस पुजारी को नमस्कार करी कन्या कों साथ लेकर उहां से चलता भया ३४ चलता २ प्रसन्न मन वाला जयदेव के पास चला गया जो क्या देखता है शहर से बाहर निर्जन स्थान में पत्रों की कुटीया के मध्य में बैठा हूया जिस कों देखता भया ३५ कैसा जयदेव है दारिद्री इच्छा किसी वस्तु की नहि जिस कों और आदर से शास्त्र कों देखता है और प्रसन्न हास्य युक्त मुख जिसका मन करके जगन्नाथ को ध्यान कर रहा है ३६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रणम्यजयदेवंतंदेवशर्माब्रवीद्वचः इमे
मेतनयाब्राह्मन्जगन्नाथाज्ञयामया ४७
नाम्नीपद्मवतीतुभ्यंदीयतेनगृहाणतां
इत्युक्तोजयदेवस्तमुवाचमधुरंवचः ४८
अहंनकन्यादानस्यपात्रंदीनोनिकेतनः
ममापिनजिहीर्षास्तिकिमिदंभाषसेवृथा
जगन्नाथाज्ञयेमत्कायम्मांवंचयसिस्फुटं
ऊनमेवंमतिभ्रंशोगच्छगच्छयथागतम् ४९

ऐसे जयदेवकों नमस्कार देवशर्मा कहनेलगा
हे ब्राह्मणों मे श्रेष्ठ यह मेरी कन्या है जगन्नाथ
जी की आज्ञा करके मैने यह पद्मावती नाम क
न्या तुमकों देने हैं इसको आप ग्रहण करो ४७
इस प्रकार जब ब्राह्मणने जयदेवकों कहा त
ब जयदेव मधुरवाणी करके कहता भया ४८
हे द्विज मै कन्यादान लेने का पात्र नहि हों क्यों
कि दारिद्रही हों घरवाहर मेरा नहि है और
मेरेकों गृहस्थ की इच्छा भी नही हैं क्यों वृथा
वार्ता कर्ता हैं तू जो तूं जगन्नाथजी की आज्ञा
ऐसे कह करके मेरेकों ठगता हैं कहां सेंने
री बुद्धि मारी गई चला जा २ जहां सें आया
है ४९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

२०

आनीयदृजकं तेन देवशर्मा नियत्नतः नि
वेदयामास सुहृत्तां च न स्वीचकार सः ४२
ततः स तनयां तत्र स्थापयित्वा द्विजोऽब्रवीत्
अयं तवैव पतिः पुत्रि नयाहृज्यस्व सर्वदा ४४
पतिसेवापरा नारी सुखमत्यन्तमश्नुते इत्यु
क्त्वा तां देवशर्माऽयं ययौ पत्न्या सहाश्रमम् ४५
सापि कन्या स्थिता तत्र जयदेवस्य सन्निधौ
जयदेवस्तां प्राह गतौ तौ पितरौ तव ४६

ऐसे जदनि सने कहा तद तिस पुजारी कों यत्न से स
यल्पाया कर स्वम का वृत्तांत निवेदन कर्ना भया
तद भी उह जयदेव नहीं स्वाकार कर्ना भया ४२
तद सो ब्रह्मण अपनी कन्या को तिस के पास
उटिया सें बाहर उठाय कर कहने लगा हे पुत्रि
यह तेरा पति है तैनीं इस की आसा में सर्वदा र
का लवर्तना यहो तेरी कों स्माके योग्य है ४४
क्यौं कि पति के सेवा में रहने वाली नारी अत्यन्त सु
ख भोगती है इस प्रकार की शिक्षा तिस कों
देकर्के अपनी स्त्री के सहित आश्रम कों चला
आया ४५ सो कन्या तिन के आये होय पीछे
तहां जयदेव के पास बैठी रही तो जयदेव
तिस को कहने लगा तेरे मातापिता तो च
ले गई हैं तूं क्यों इकली रहां बैठी है ४६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्वंविहायत्वमप्येकाकथंस्थास्यसिकानने
अथपद्मावतीप्राहभगवन्किंब्रवीषिभोः ४
स्वतातपितृदेयावैसमात्वभ्यंददौपिता
अनन्तराहंत्वंचेन्मामतिभक्तामनागसं
त्यक्तासीत्यत्रकिंकुर्यांनाहमेकात्वयिस्थिते
पद्मावतीवचःश्रुत्वाजयदेवोपिचिंतयत् ४
अनयासत्यमुक्तंहित्यागेदोषोमहान्मम
तस्मादस्याःपितुर्गेहंगत्वाहमनयासह ५०

गेहूंतो तेरेकों छोड़गयेहैं तू कैसे इकली वनमैं रहेगी इतना वचन कहनेसे उपरंत पद्मावती कहने लगी आप क्या कहते हो ४७ कन्या माता पिताने दान करी दीहै सो तो मेरेकों तुमारे प्रति देगयेहैं अब तुम मेरे पति हो मैं तुमारी भक्ति करने वाली दासी हूं ४८ निरपराध मेरेकों आप त्याग देओगे तद क्या करोंगी और तुमारे पास होनेसें इकली नहीं हूं ऐसा सार्थक वाक्य पद्मावतीका सुनकर जयदेव चिंतन करने लगा ४९ इसने तो सत्य कही है त्यागनेमें अब मेरेकों भी बड़ा दोष है अब इसकारणसें इसके साथ इसके पिताके घरमे जाकर वेदविधिसें व्याह करूंगा ५० ॥

सा॰
ग्राम॰
५०२

202

इमां प्रतिग्रहीष्यामि विधिनानात्र संशयः इ
ति निश्चित्य मनसा जयदेव उवाच ताम् ५१
एहि गच्छ त्वया सार्धं गच्छामि तव पितुर्गृहे
विधिना तत्र ते पाणिं ग्रहीष्यामि न संशयः
इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्राह पद्मावती पुनः
तदाज्ञाकरणं धर्म इत्येवं मां पिताब्रवीत्व
त्तः प्रसादोऽयं महानित्युक्त्वाग्रो स्थिताभ
वत् जयदेवस्तया सार्धं देवशर्मगृहं गतः

इसकों वेदकी विधिकर्कें ग्रहण करूंगा इसमें
कछु संशय नहिं है इसतरां मनमें निश्चयकर्कें
जयदेव तिसकों कहता भया ५१ इधर आ अ
र मैं तेरी साथ तेरे पिताके घर चलताहूं उहां
वेदकी रीतिसें तेरा पाणि ग्रहण करूंगा ५२
इस प्रकारका वचन श्रवण कर्कें पद्मावती
फिर कहने लगी तुमारी आज्ञा माननी य
ही वचन पिता मेरीकों कह गयाथा ५३ इ
स कारणसे महा प्रसाद है क्या तुमारी कृपा
पसा कहके आगे चल पडती भई जयदे
व भी तिसके साथ देवशर्माके घरमें च
ला गया ५४ ॥ राम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तमुक्त्वा गरुडं देवं सर्वं प्रतिगृह्य यथाविधि पद्मा
वती तेन सार्धमाजगाम निजं गृहम् ५५
उभौ तौ दंपती तत्र एकप्राणौ बभूवतुः नृ
त्यं तौ चापि गायंतौ श्रीकृष्णार्चन तत्परौ ५६
एकदा जयदेवस्तु मनस्येवमचिंतयत् स्व
यं कृतेन गीतेन तोषयिष्याम्यहं हरिम् ५७
इति निश्चित्य निर्माय गीतगोविंदनामकं
गायंस्तु देवदेवाग्रे पत्न्या सह ननर्त ह ५८

तिसको गरुडदेवाणी करके कथन करके वेद विधि
करके ग्रहण कर फिर पद्मावती तिसके सा
थ अपने घरमें चली आई ५५ सो दोनो स्त्री
पुरुष प्रीति करके एक प्राण होते भये नृ
त्य करना गायन करना श्रीकृष्णजी की
पूजामें तत्पर होते भये ५६ एक दिन ज
यदेव मनमें ऐसा चिंतन करता भया की
अपनी बनाय होए गीत करके हरिको प्रस
न्न करूंगा ५७ ऐसा निश्चय करके गीत
गोविंद नामक ग्रंथ बनाकर उसको गा
यन करता २ देवताके आगे पत्नीके सा
थ नृत्य करता भया ५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१॰३

203

एवं नित्यव्रतं तस्य तत्रैकस्मिन् दिने पुनः
निबंधरासचरिते श्रीकृष्णो राधिकां प्रति
शिरसा देहि मे पादमित्यर्थककरं हृदि
समायातं न तु न्यस्तं शशाकेश्वरतां स्मरन् ९०
अन्यदन्वेषमाणोपि न लेभे तादृशं पदम्
संस्थाप्य पुस्तकं स्नातुं जगामान्याह्निविं
नयन् ९१ तावज्जयदेवरूपेण कृष्णस्तत्र
समागतः पद्मावतीमुवाचाथ पुस्तकं
देहि मे प्रियमम् ९२ ॥

एसा नित्यका व्रतथा तिसका तहां एक दिन
में गायन बनाते २ रासचरितके निबंधमें श्री
कृष्णजीका वचन राधिकाके प्रति जद उसने
मानकराहुया उस समय ५६ हे राधे प्राणे
श्वरि मेरे शीरपरपाद रख और अपराध क्षमाक
र इस अर्थके करने वाला पद हृदयमें आया
तो श्रीकृष्ण जीकी ईश्वरता स्मरण करती हुया
उह पद न हि देता भया ९० उसके जैसा और पा
द ढूंढने लगा तो ऐसा पद न हि मिला तद पु
स्तककों छोडकर पद चिंतन करता २ स्नान क
रनेकों चलागया ९१ उसके गये हुये पीछे ज
यदेवका रूप धारण कर कृष्णजी आयके प
द्मावतीकों कहणे लगे हे प्रिय मेरा पुस्तक
दे ९२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्मावती समानीय दत्तेन तत्पुस्तकं द्रुतं गृ
हीत्वा पुस्तकं तत्र जयदेवेन यत्कृतं १२
मनसा तन्हि लेखासौ जयदेवस्वरूपधृक्
पुनरुत्थाय सस्नातं गंगामाति नरानितः
कंचित्कालमतीत्याय जयदेवसमागतः
देवानभ्यर्च्य भुक्त्वा च गृहीत्वा पुस्तकं पुनः
मनसा कल्पितं पादं लिखितं च समुद्यतः
ददर्श तत्र तत्पादं नालिखं यद्वयं पुराः १४

इतना वचन सुन पद्मावती शीघ्र पुस्तक कों
लाय कर तिसकौं देदेती भयी तब जयदेव
नेजोमन करके कल्पना करा हुया पद था
सो जयदेव का रूप धारे होए भगवान् जी लि
खते भये फिर पुस्तक उठाय के तिसकों दिया
स्नान करने कों चलेगए १४ फिर कितनाक
काल व्यतीत हुया तो जयदेव भी आया दे
वताकी पूजा करी भोजन खाय कर पीछे फिर
पुस्तक कों लेकर लिखने लगे १५ वो मनक
कें और कल्पना करा हुया पद लिखने लं
गा तो क्या देखता है उसमें जोनैसा पदप
हले नहि लिखा था सो उहां लिखा हुया दे
खा १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१०५

अनेनलिखितंज्ञात्वाआहपद्मावतींप्रियां
अयिकेनदमालेखिजानासित्वंशुचिस्मि
ते ९७ नाहमेतत्पदंपूर्वमालिलेनाक्षरंम
म इतिश्रुत्वावचस्तस्याआहपद्मावतीप्रि
या ९८ नाथकोऽयंभ्रमस्तेऽद्ययद्येवंभाषसे
स्वतः स्नातुंगतस्त्वंनकालेपुनरागमस्
त्वरं ९९ गृहीत्वापुस्तकंमत्तोलिखित्वा
त्वंपुनर्गतः स्नातुमेवंनजानामिकोऽन्य
स्त्वत्तोऽत्रलेखकः १००

और किसीकके लिखाहुया जानकर प्यारी
अपनी स्त्री पद्मावतीकों कहने लगा हे शु
चिस्मिते यह किसने लिखा है तूंजानती है
९७ क्योंकि यह पद पहले मैंनेनहि लिखा
था और मेरे अक्षर भी नहि है यह वचन सुनक
र पद्मावती कहने लगी ९८ हे नाथ यह तु
मारे कों क्या भ्रम होय आ है जो तुम ऐसे कह
ने हो जद स्नान करने कों आप गए थे तत्का
लही फिर परत कर आके ९९ शीघ्र मेरे सें पु
स्तक लेकर उहके लिखाया फिर चले गए
हों स्नान करने कों ऐसा मैं जानती हो औ
र तुमारे बिना कौन है लिखने वाला १००

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इतिश्रुत्वाप्रियावाक्यंजयदेवोतिविस्मितः
अहर्निशंतमेवार्थंचिंतयमालभन्नवै ११
तदातस्मिनरात्रिशेषेस्वप्नेश्रीपुरुषोत्तमः
उवाचजयदेवंतस्वस्वप्नंममदेभ्रुशम् १२
स्वपत्नीसहभगोमीनेश्रीपुरुषोत्तमदर्शना
त् तदारभ्यातिभक्त्यावैपत्न्यासहहरिं
भजन् १३ गायन्वैगीतिगोविंदंनृत्यन्वै
केशवाग्रतः निर्मायगीतगोविंदंतोष
यामासकेशव १४ ॥

यह पत्नी कियाकावाक्यश्रवणकरजयदेववो
डे विस्मयकोंप्राप्तहोपश्चात्‌हुया दिनरात उसी
वात कों चिंतनकर्ताहुया स्वखनहि किसी
समयभीलभताभया ११ तदनितसमयरा
त्रिके पहर शेषमैं स्वप्नमैं आयकर श्रीपुरु
षोत्तमजी जयदेवकोकहतेभये तदसुंदर
सम देखकर अतिशयकर्के प्रसन्नहोताभया १२
ओरश्रीपुरुषोत्तमजीकेदर्शनसें अपनी स्त्रीकों
वडीभाग्यवान् मानताभया तिनदिनसैंले
करवडीभक्तिकरकेपत्नीकेसाथ हरिका
भजनकर्ताभया १३ ओरगीतगोविंदकोंगा
यन कर्ता हुया नारायणके आगे नाचताहु
या गीतगोविंद ग्रंथकों समाप्तकर केशवभ
गवानजीकों प्रसन्नकर्ताभया १४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भा॰
ग्राम॰
२०५

निवेद्यकृतकृत्योभूज्जयदेवमहामनाः
७५ इतिश्रीभक्तमालायांभगवद्भक्ति
माहात्म्ये जयदेवचरितंसमाप्तम्

२०५

औरतिस उल्लकको भगवानजी के आगे
निवेदनकर सो महामन वाला जय देव
अपने आपमें कृत कृत्य होता भया
७५ यह भक्तमाला ग्रंथके भगवान्
की भक्तिके माहात्म्य जयदेवका चरित्र
समाप्त हुआ ॥ ८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ विष्णुस्मरणायां रामनामोच्चारणमहिम
वर्णनं नारसिंहे हिरण्यकशिपुं प्रति प्रह्
लादवाक्यम् रामनाम भवरोगभेषजं रा
मनाम जपतां कुतो भयं पश्यतात ममदे
हस्थितः पावकोपि सलिलायतेधुना ।
तदुक्तं दानरत्नाकरे प्रायश्चित्तसहस्रा-
णि कृत्वा व्रतशतानि च कलौ गच्छंति पा
पानि न विष्णोः स्मरणं विना २ पाद्मे देवह
तिविकुंडलसंवादे यत्र संति वैष्णवाः यत्र स-
न्ये सत्यं मयोदितं प्राह्मस्मान्यमुनाभ्राता
सादरं हि पुनः पुनः ३ ॥

अथ विष्णुकी स्मरणामें रामनाम उच्चारण करनेकी
महिमा लिखते हैं नरसिंहपुराणमें· हिरण्यक
शिपके प्रति प्रह्लादका वाक्य हैं हे तात रामनाम
संसाररूपी बंधनोंका औषध है और रामनामज
पनेवालियोंको किसीसे भी भय नहीं है देखो रा
मनामके प्रभावकरकें मेरे देहमे अग्नि लगाइ
अब शीतल जलकी न्यांई आचरण कर रहा है ।
और कहा है दान रत्नाकर ग्रंथमें प्रायश्चित्तों-
के हजारों व्रतोंके सेकडे करकें भी कलियुगमें पा
प विष्णुके स्मरण विना नहि हरते हैं २ पद्मपु
राणमें कहा है देवहूति विकुंडलके संवाद करकें कह
है हरि कहता है हमारे प्रति यमुनाका भ्राता यमरा
ज कहता भया वारंवार आदर युक्त मेने तुमारे को स
त्य कहा है जहां वैष्णव रहते होवें जहां देखते होवें न
हां तुमने नहि जाना ३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१९

206

भवद्भिर्वैस्नवास्त्याज्या न ते स्युर्मम गोचराः
ये स्मरंति सकृत् हृताः प्रसंगेनापि केशवम् ४
दुराचारो दुष्कुलोपि सदा पापरतोपि वा भ
वद्भिः सर्वथा त्याज्यो विस्नंचेद्भजते नरः ५
गोविंदेति जपन्यो हि म्रियेत यदि कुत्रचित
स नरो न यमं पश्येत् तं त चेत्तामहे वयम् ६ ब
हुनोक्तेन किं वैश्पकर्मं चं पापभीरुणा स्म
रणं वासुदेवस्य सर्वपापहरं हरेः ७ तपस्त
प्त्वा नरो घोरमरण्ये नियतेंद्रियः यत्फलं सम
वाप्नोति तन्नत्वा गरुडध्वजम् ८ ॥

और वैस्नवोंको त्यागदेना और हमेरे अधीन नहिंहै सो
वैस्नव कौनसे है जो प्रसंगकर्कें भी केशवजीका
स्मरण कर्नेंहैं ४ और दुराचारी भी पुरुष होवे और
खोटे कुलमे जन्मा हुया सर्वदा कालपापकर्मसे
रहताहोय जेकर विस्नुजीकों भजताहोवे सो सर्व
दाकाल तुमने त्यागदेना ५ और जो कोई पुरुष
गोविंद २ पैसे जपताहोय जेकर सो कही भी मृत
होजावे सो नर यमराजकों नहीदेताहै और तिस
कोहम नहि देखतेहै ६ हे वैश्य इसमें वहुत क्या
कहनाहै परंतु पापसे भय करनेवालेने सारे पापों
के हरनेवाले हरिवासुदेवका स्मरण करनेयो
ग्यहै ७ नरजो मनुष्यहै सो इंद्रियांजीतकर घोर
वनके मध्यमे तपकर्कें जिस फलको प्राप्तहोता
है सो फल गरुडध्वज भगवानजीका नामस्म
रने से प्राप्तहोताहै ८ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च
तानि सर्वाण्यवाप्नोति विष्णोर्नामानुकीर्त्त-
नात् १ तत्रैव प्रह्लादवाक्यं न गंगा न गया
सेतुर्न काशी न च पुष्करं जिह्वाग्रे वर्त्तते य
स्य हरिरित्यक्षरद्वयं १० ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः
सामवेदो ह्यथर्वणः अधीतास्तेन येनोक्तं
हरिरित्यक्षरद्वयं ११ अश्वमेधादिभिर्यज्ञैः
नरमेधैः सदक्षिणैः यजितं तेन येनोक्तं ह
रिरित्यक्षरद्वयम् १२ गवां कोटिसहस्राणि
कन्यानामयुतानि च दत्तानि तेन येनोक्तं
हरिरित्यक्षरद्वयम् १३ ॥

और पृथिवी में जितने तीर्थ हैं और पवित्र स्थान हैं ति
न सारे यों में स्नान दान निवास करने का जो फल है
विष्णु के नाम उच्चारण करने से होता है १ उसी स्था
न में प्रह्लाद जी का वाक्य है एसी न गंगा है न गया
है सेतुबंध रामेश्वर है न काशी है न पुष्कर तीर्थ है
फल देनेवाला जैसें जिसकी जिह्वा के अग्रभाग
में हरि पद दो अक्षर स्थित हैं उसको जैसा फल है १०
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्वण वेद पढ़ चारों
ही वेद तिसने पढ़े जिसने हरि पद दो अक्षर उच्चा
रण करे हैं ११ और बहुत दक्षिणा के सहित अश्वमे
ध नरमेधादि यज्ञ तिसने हीं करे जिसने मुखसें
हरि पद दो अक्षर उच्चारण करे हैं १२ और गौयों के
हजारां क्रोडां कन्या के दशहजार विधि के सहित दा
न करने के तुल्य उसी को फल है जिसने मुखसें
हरि पद दो अक्षर उच्चारण करे हैं १३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
९०

207

प्राणकांतारपाथेयं संसारछेदभेषजं दुः
खक्लेशपरित्राणं हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥५॥
जितं तेन जितं तेन जितं तेनेति निश्चयः जि
ह्वाग्रे वर्तते यस्य हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥६॥ अ
सारभवसंसारसागरोत्तारकारणं व्यस
नोत्तारकं देवि हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥७॥ विरं
चिसर्वस्वे नाम्नो हरेः कीर्तनतः प्रयाति
संसारपारं दुरितौघमुक्तः नरः स सत्यं क
लिदोषजन्मपापं निहंत्याशु किमत्र चित्रम् ॥८॥

प्राणरूपी कांतार वनका पाथेय है क्या रस्तेका
खर्चा और संसाररूपी रोग छेदन करनेका भेष
ज औषध है और दुःखक्लेशसे रक्षा करनेवाला
है हरिपद जोनसे दो अक्षर हैं ५ तिस पुरुषने
सभी कुछ जीत लीया है २ जिसकी जिह्वाके
अग्रमें हरिपद दो अक्षर वर्तमान रहते हैं ६
और असार क्या है सार जिसका नहीं ऐसा जो
भवसंसाररूपी सागर है तिससें पार उतारणों
का कारण है और व्यसन जो दुःख तिनसें ता
रनेवाले हरि पद दो अक्षर है ७ विरंचिसर्वस्व
ग्रंथमें लिखा है कि पुरुष जो है सो हरिके नाम
कीर्तन करनेसें क्या उच्चारण करनेसें पापोंके
समूहोंको त्याग कर संसारके पारकों उतरता है
और सो पुरुष कलिके दोषोंसे उत्पन्न होए जो पाप
तिनकों शीघ्र त्यागता है इसमें क्या आश्चर्य है
८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शिवसर्वस्वे यावन्न कीर्तयेद्रामं कलिकल्म
षसंभवं तावत्तिष्ठति देहेस्मिन् भयं चात्र प्रव
र्तते १८ च्यवनस्मृतौ प्रायश्चित्तप्रकरणे
श्रुतिस्मृतिपुराणेषु रामनाम समीरितं
तन्नामकीर्तनं भूयस्तापत्रयविनाशनं १९
सर्वेषामेव पापानां प्रायश्चित्तमिदं स्मृतं ना
तः परतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते नाम
संकीर्तनादेव तारकं ब्रह्म दृश्यते २० माण्ड
व्यस्मृतौ सुरापो ब्रह्महा स्तेयी चौरो भग्नव्रतो
ऽशुचिः स्वाध्यायवर्जितः पापो लुब्धो नैष्कृतिकः
शठः २१ ॥

शिवसर्वस्वमे लिखाहैं जितना काल रामचंद्रजी कों
नहि कीर्तन करे उतना काल कलिकल्मषसें उत्प
न्न जो पाप सो इस देहमें स्थित रहताहैं और इसते
कमें भय बधावताहै १८ च्यवनस्मृतिके प्रायश्चित
प्रकरणमे लिखाहैं श्रुतियां स्मृतियां पुराण इ
नमें रामनाम उच्चारणकी महिमा लिखीहै और ति
नके नामका उच्चारण तापत्रयोंके नाश करनेवाला
है १९ और यह रामनाम सारे पापोंके नाश कर
नेवाला प्रायश्चित कथन कराहै और इससें परे त्रि
लोकीमें पवित्र मंत्र कोई नहिहै क्यों जिन नाम
के कीर्तनसें तारकब्रह्म देखनेमें आताहै २०
मांडव्यस्मृतिमें कहाहै सुरापान करनेवाला ब्रा
ह्मनहत्यावाला सुवर्णचुरानेवाला और चोर और भाग
करके युद्धसें जो चला आया फिर मारा गया और स्वा
ध्याय कर्के रहित पापी वंचकी नैष्कृतिक शठ २१

सा॰
ग्राम॰
१०८

परदाशी वृषलीभर्ता कुंडाशी सोमविक्रयी सो
ऽपि मुक्तिमवाप्नोति विष्णोर्नामानुकीर्तनात्
याज्ञवल्क्ये नतावत्पापमस्तीह यन्नाम्नान
हन्ते हरेः अतिरेकभयादाहुः प्रायश्चित्तांतरं
वृथा २३ चतुर्वर्गचिंतामणौ श्रीभगवंतं
प्रतिरुद्रवाक्यं त्वन्नामकीर्तनाद्विष्णुस्तनः
ध्योजैवे रहं त्वेहं सर्वजेतुं नाम लेतेन हरीः
स्मृतः २४ वैसवचिंतामणौ नारदं प्रति युधिष्ठि
रवाक्यं क्रतो धर्मो वहुविधो त्वनंतफलदो म
या नामसंकीर्तनफलं नदाचक्ष्व मुनेऽधुना २५

परस्त्रीगमन करने वाला वृषली शूद्राणी का भर्ता और पि
तृ के प्रति तहोते जार ते उत्पन्न जो पुत्र तिसका अन्न
खाने वाला और सोमरस वेचने वाला सोभी विष्णु के
नामों के कीर्तन से मुक्ति को प्राप्त होता है २२ याज्ञ
वल्क्यस्मृति मे कहा है ऐसा तो कोई पाप नहि है जो
हरि के नाम कर के हरन हि होता है परंतु प्रायश्चित
जो कहते हैं सो अतिरेक भय से वृथा कहते हैं २३
चतुर्वर्गचिंतामणि में भगवान जी के प्रति रुद्रजी
का वाक्य है हे विष्णो तुम्हारे नाम के उच्चारन कर
ने से मैं पवित्र हो जनों कर के पूजा करेया जाता हूं
आप सारे जीवों के पाप हर कर्ते हूं एस वास्ते तुम्हा
रे को हरि कहते हैं २४ वैसेव चिंतामणि में ना[illegible]र
दजी के प्रति युधिष्ठिर जी का वाक्य है हे ऋषि तुम्हा
रे मुख से अनंत फल देने वाले वहुत तरों के धर्म
श्रवण करे हैं अव नाम संकीर्तन का फल कथ
न करो सो श्रवण करने की मेरी इच्छा है २५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रुत्वा युधिष्ठिरवचः परया मुदा समप्राहेदमा
मुनिश्रेष्ठो भगवान्नारदोऽपि नामानुकीर्तनभर
तो हृष्टोऽतिमात्रं रोमांचसंहति विचित्रितसर्व
गात्र २९ नारद उवाच न देशनियमो राजन् न
कालनियमस्तथा विद्यते नात्र राजेंद्र विष्ण
र्नामानुकीर्त्तने २० कालोऽस्ति दाने यज्ञे वा
स्नाने कालोऽस्ति यज्जपे विष्णुसंकीर्त्तने का
लो नास्त्यत्र पृथिवीपते २० गच्छंस्तिष्ठन् स्वपं
श्चापि पिबन् भुंजन् भजन्स्थितः कृष्ण कृष्णे
ति संकीर्त्य मुच्यते पापपंजरात् २६ ॥

इस प्रकार युधिष्ठिर राजा का वचन श्रवन कर मुनि
योंमें श्रेष्ठ नारद भी परम हर्ष कर के शीघ्र ऐसे कहता
भया के सो नारद हैं हरि के नामों का जो कीर्तन भर
तिस कर्के अतिशय कर रोमों का समूह अंचहोने
कर्के क्या रोम २ खडा होने कर्के विचित्र क्या प्रफु
ल्लित अंगो वाला है २९ नारदजी कहते हैं हे राजन्
युधिष्ठिर इस परमेश्वर के भजन करने में काल का
नियम नहि है और देश का भी नियम नहि है २० देश
काल जो है सो दान करने में यह और स्नान करने में
हय यज्ञ करने में हय और मंत्रों के आराधन में भी
है हे पृथिवीपते विष्णुसंकीर्तन में काल देश कोई
नहि है २० चलता २ गुरुष खडा २ सोया ऊया
पान कर्ता ऊया भोजन कर्ता ऊया बैठा २ कृष्ण २
ऐसें संकीर्तन कर्के क्या उच्चारण कर्के पापरूपी
पिंजरे सें मुक्त होता है २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१-२

सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितःसर्व
दानफलंप्राप्तोयस्तुसंकीर्तयेद्धरिम् १० उ
माशिवसंवादे उमाप्रतिशिववाक्यम् हि
मवद्विन्ध्ययोर्मध्येजनाभागवताःस्थिताः १।
उच्चारयंतिरामेतियेतेभागवतोत्तमा २।
अवजानंतिस्मरणंविष्णोर्बह्वायासेनसा
ध्यते ओष्टस्पंदनमात्रेणकीर्तनंतुततो
वरम् १२ ॥

ओहपुरुषसारेतीर्थोंमे स्नानकरआयाहै ओर
यज्ञोंमेदीक्षाभीउसकों हुईहै ओरसभतरांके
दानभी उसनेकरेहैं जोहरिकेनामों काउच्चा
रण कर्ताहै १० गौरीशिवजीकेसंवादमें गौरी
केप्रतिशिवजीका वचनहै हिमाचल विंध्या
चल इनदोनोपर्वतोंकेमध्यमें भगवानजी
के भक्तलोकरहतेहैं परंतुराम २ मुखसेंक
जो उच्चारण कर्तेहैं सोउत्तमभगवानजीके
भक्तहै २। हेकमलकीन्याईनेत्रोंवालेवि
ष्णुकास्मरणबडेयत्न करसिद्ध होताहै
परंतु जिसभजनमे ओष्ट फटक हलता
है सोभजन अच्छाहै १२ ॥

२०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ईशोहंसर्वजगतांनाम्नांविस्रोर्हिजापकः
सात्यंसत्यंवदाम्येवंहरेर्नामगतिर्नृणां २३
प्रायश्चित्तप्रकरणेरोगामेणकीर्तनंमम
वैरोगनिवारणं प्रायश्चित्तंहिपापानांनाम
क्तिदंसर्वदेहिनां २४ आगमशास्त्रेहृद
गौतमीये कुष्ठरोगीभवेल्लोकेबहवोब्रह्म
हानरः सकृदुच्चरितंनामहरेस्तान्पावयत्स
हो २५ विश्वयामलेरुद्रंप्रति श्रीभगवद्वा
क्यं ममनामानिलोकेस्मिन्सर्वदायस्तुकी
र्तयेत् तस्यपापायकोटीस्तत्क्षमाम्येवन
संशय २६

मैंजोसारेजगकास्वामीहूं सोविष्णुकेना
मोंकाहीस्मरणाकरनेकेप्रभावसेहूं सत्य २ मैंतेरे
आगेकहताहूं हरिकानामहीपुरुषोंकीगतिहै २३
प्रायश्चित्तप्रकरणमेलिखाहै हेराजनरामपेसे
जोउच्चारणाकरनाहैभक्तिश्रद्धाकरकेसोसारेरोगों
कानिवारणाकरणेवालाहैऔरपापोंकेशोधनकर
णेवालासारिदेहधारियोंकोमुक्तिदेनेवालाहै २४
आगमशास्त्रकेहृदन् गोतमीयग्रंथमेंलिखाहै
इससंसारमेंकुष्ठरोगीबहुतहैं औरबहुततरोंके
ब्रह्महत्यारेहैं नरभीएकबारहरिकानामउच्चार
णकराइया पापोंकोतत्क्षणदग्धकरलेताहै २५
विश्वयामलमेंरुद्रजीकेप्रतिश्रीभगवान्जीका
वाक्यहै मेरेनामोंको इससंसारमें जोसर्वदाका
लकीर्तनकर्ताहै तिसकेअपराधोंकेकोडांतर
माकरदेताहूं इसमें संशय नहीं है २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
॥॰

गौतमीतंत्रे शिविराजानं प्रति नारदवाक्यं
न तादृशं महाभाग पापं लोकेषु विद्यते या
दृशं परांतिनाथ हरिनाम्ना न दह्यते १७
आश्वलायनतंत्रे येकीर्तयंति नामानि वि
ष्णोरतुलतेजसः सर्वधर्मवहिर्भूतास्तेपि
यांति परं हरेः १८ विरंचतंत्रे इंद्रद्युम्नं-
प्रति ब्रह्मवाक्यम् पूजयस्व जगन्नाथं
सर्वतंत्रेषु गोपितं गुह्याद्गुह्यतरं नामकी
र्तयस्व निरंतरम् १९ ॥

गौतमतंत्रमे शिविराजाके प्रति नारदजीका-
वाक्य है हे महाभाग ऐसा पाप संसारमे कोई
भी नहिं सुना है जो पाप हे पृथिवीके नाथ स्वा
मि हरिके नाम करके दग्ध नहिं होता है १७ आ-
श्वलायन तंत्रमे लिखा है जो पुरुष अतुल ते-
जवाले विष्णुके नामोंका कीर्तन करते हैं सो सा
रे धर्मोंसेभी वहिर्भूत होवे तदभी हरिके पद
को जाते हैं १८ विरंचितंत्रमे इंद्रद्युम्न राजा-
के प्रति ब्रह्मका वाक्य है हे राजन् सारे तंत्रों
मे गुप्त जो जगन्नाथजी तिनका पूजन कर-
और गुप्तसे गुप्त जो उनका नाम तिसका-
सर्व जप कर १९ ॥ ॥

210

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यस्तु संकीर्तयेन्नित्यं जगन्नाथमतंद्रितः
विमुक्तः सर्वपापेभ्यो मुक्तबंधः परं व्रजेत्
मेरुतंत्रे नाम्नां मुख्यतरं विप्रो जगन्नाथ
मुदीरितं ततः परतरं नाम त्रिषु लोकेषु
विद्यते ५१ न गंगास्नानमेतादृक् न काशी
गमनं तथा जगन्नाथेति संकीर्तिं नरः कै
वल्यमाप्नुयात् ५२ नारायणतंत्रे ब्रह्महा
स्वर्णहारी च सुरापी वापि वा नरः नारायणे
ति संकीर्त्य मुच्यते नात्र संशयः ५३ ॥ ॥

जो पुरुष निरालस होके नित्य प्रति जगन्नाथजी
का कीर्तन करता है सो सारे पापों से मुक्त होय अ
रु या मुक्तबंधन होके परब्रह्म में प्राप्त होता है ५०
मेरुतंत्र में लिखा है नामों में मुख्यतर जो नाम ज
गन्नाथ ऐसे कथन करना चाहिए इससे परे
श्रेष्ठ नाम त्रिलोकी में भी और नहीं है ५१ ऐसा
न गंगा का स्नान है न काशी की यात्रा है जैसे
जगन्नाथ ऐसे कह करके मनुष्य कैवल्य प
द को प्राप्त होता है ५२ नारायणतंत्र में क
हा है ब्रह्महत्या करने वाला स्वर्ण चुराने वाला
और सुरापान करनेवाला जो नर है सो नाराय
ण ऐसे कथन कर पापों से मुक्त होता है इस
में कुछ संशय नहीं है ५३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
४११

२११

काश्यपपंचरात्रेनारदंप्रति श्रीभगवद्वाक्यम्
येगृह्णंतिनिरंतरं ममपदं रोमांचिभक्तोत्त
मांतःसंभूतहर्षजातपुलकाजातप्र-
मोदाश्रुवनेनिस्तीर्यभवार्णवंसुतकलत्र-
ग्राहेश्चनक्रैर्युतं तत्सर्वाविसहुस्तरंमयि
पुनस्सायुज्यमायांतिवै ४४ वामनभवद्
सीये पृथिव्यांकतिधालोकानजायंतकाति
नोम्रियंत मुक्तास्तेत्रनसंदेहोयेहरेर्नामकी-
र्तनः ४५॥

काश्यपपांचरात्रग्रंथमेनारदमुनिकेप्रति भग-
वानजीकावाक्यहै हेनारदजोपुरुषसर्वदाका-
लमेरे इसनाममपदमात्रकोंग्रहणकर्तेहैं क्याउच्चा-
रणकर्तेहै सोजोउत्तमभक्तहैं कैसे औरभक्तहैं
अंतःकरणमें इकट्ठाहुया २ जोहर्षआनंदति-
सतेंउत्पन्नहुया पुलकरोमांच जिनकाओरस्तन
नेसेंप्रसन्नताकरकेंअस्त्रुहरेहै ऐसेजोपुरुषसं-
साररूपीसमुद्रकोतरकरकेंमेरीसायुज्यमुक्ति
कोंप्राप्तहोतेहैं कैसाओरसमुद्रहै तत्सारूपी-
समुद्रकरकेंभराहुया वडेक्लेशकरतरनेयोग्यहै
औरस्त्रीपुत्रपोत्रादिरूपीजो नक्रवडे२ जलजी-
वतिनोंकरभराहुया ४४ वामनभवदासीयग्रं-
थमेलिखाहै पृथिवीमेंकितनेनरोंकेलोकहैं
औरकितनेनरोंकेमरणहैहै परंतउनमेसें औ-
हो पुरुषमुक्तहैं जोहरिकेनामकोंकीर्तन
करनेवालेहै ४५॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिस्मरणपरो यस्तु हरिनामपरायणः वसिष्ठ
तंत्रे सस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः
ग्रंथान्तरे श्रीशब्दं सर्वजयशब्दमध्ये जय
दद्यात्ततो रत्नस्तथैव त्रिःसप्तकृत्वा रघुना
थाख्यनामजपान्निहंति द्विजकोटिहत्याम् ५
[illegible]पि अथ पातकभीतस्त्वं सर्वभावेन
भारत विमुक्तान्यसमारंभो नारायणपरो
भव ५८ श्रीमद्भागवतेऽजामिलप्रस्तावे
परीक्षितं प्रतिशुकदेववाक्यं न तथा ह्यघ-
वान्राजन्पूयेत तप आदिभिः यथा कृ
ष्णार्पितप्राणस्तत्पुरुषनिषेवया ५९

वसिष्ठतंत्र में लि॰ जो पुरुष हरि की स्मरण में तत्पर है और
हरि का नाम जपने में तत्पर है सो ई पुरुष सारे तीर्थों
में न्हाया है और सारे यज्ञों में दीक्षित भी ओ ही है ५६
किसी ग्रंथ में ऐसे भी लिखा है श्रीशब्द आद में देना ज
य शब्द मध्य में देना फिर रघुनाथपद के अंत में दो ज
य शब्द देने ऐसें मंत्र बनाय कर २१ इकीस वार पाठ
करे तद है द्विज क्रोड़ करी होइ हत्या कों हर कर्ता हैं ५७
और कही भी लि॰ हे भारत जे कर तूं पापों सें डरता है
तद सभ तरीं के भाव करकें सारे आरंभ त्याग कर ना
रायण में तत्पर हो ५८ श्रीमद्भागवत के अजामिल
की कथा के प्रस्ताव में परीक्षित के प्रति शुकदेव जी
का वचन है हे राजन् इस प्रकार पापी पुरुष तप आ
दियों करकें पवित्र नहिं होता है जैसें श्रीकृष्णजी में चि
त लगाय कर तिन के भक्तों को सेवा करणे करकें शुद्ध
होता है ५६ ॥

सध्रीचीनोह्ययंलोकेपंथाक्षेमोऽकुतोभयः सु
शीलाःसाधवोयत्रनारायणपरायणाः ५० प्रा
यश्चित्तानिचीर्णानिनारायणपराङ्मुखं न
निष्पुनंतिराजेंद्रसुराकुंभमिवापगाः ५१ सकृ
न्मनःकृष्णपदारविंदयोर्निवेशितंतद्गुण
रागियैरिह नतेयमंपाशभृतश्चतद्भटान्स्वप्ने
पिपश्यंतिहिचीर्णनिष्कृताः ५२ अत्रचोदाह
रंतीममितिहासंपुरातनं दूतानांविष्णुयम
योःसंवादस्तंनिबोधमे ५३ ॥

नहिंहै काहूसेंभय जिसमेंऐसा कल्याणका
मार्ग इससंसारमें यह बहुत सुखालाहै जिस
मार्गमें नारायणपरायण सुशीलश्रेष्ठ व्रतों
वाले साधु वर्त्ततेहैं ५० और नारायणसें परा
ङ्मुखजो पुरुष सो प्रायश्चित्तभीकरे तदभी
हे राजेंद्र तिसकोंनहिं पवित्रकर्तेहैं जिसप्र
कार नदियां मदिराके कुंभकोंपवित्र नहिं
कर्तीयांहैं ५१ एकवारभीकृष्णजीकेगुणानुवा
दश्रवणकर उनके चरणोंमें लगायाहै मन
जिनोंनेसो पुरुषयमकों औरफांसियांधार
णेवाले यमकेदूतकों स्वप्नमेंभी नहिंदेखते
हैं कैसेपुरुषहैं व्रतादियोंकेकरनेकर्के शु
द्ध होय हुयेहैं ५२ अबइसमें प्राचीन इतिहा
स कथाकथनकर्ताहूं और विष्णुके दूत य
मराजाके दूत इनोंका संवाद तूं श्रवण
कर ५३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अतिसूक्ष्मं श्यामवर्णं सरवाकारकं मुखे के
मलं वर्तुलं स्निग्धं नराणां भुवि दुर्लभमिति १
भ्रमवर्णं तथा स्थूलं रक्तकेसरमंडितं सछिद्रं
विलहीनं च गृहस्थः परिवर्जयेदिति २ अथो
भयस्य दर्शनलक्षणं पुराणसंग्रहे एकचक्रं
शिरोभागे तथाधोप्येन चक्रकम् श्यामव
र्णं सूक्ष्मरूपं न वा केनापि विच्छिन्नम् । स्वदर्श
नं चोभयाख्यं देवानामपि दुर्लभं एनं यः पूजा
येन्नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयादिति २॥

अतिसूक्ष्ममिति जो अतिसूक्ष्म होवे और श्याम है
वर्ण जिसका और सरवा मकखी के आकार की
न्याई है मुख जिसका और कोम और गोलाकार
होवे और चिंकना होवे सो पुरुषों को पृथिवी में दुर्ल
भ है १ भ्रम की न्याई है वर्ण जिसका और स्थूल
और रक्तकेसर करके भूषित और छिद्र है जिसमें
और छिद्र सें हीन जो तिसका गृहस्थी त्याग करे २
इसते उपरंत उभयस्य दर्शन का लक्षण कथन कि
या है पुराणसंग्रह मे जिसके शिर मे और हेठ मे
एक चक्र होवे और श्याम है वर्ण जिसका और सू
क्ष्म रूपवाला होवे और अनेक करके विछिन्न न होवे
सो उभयस्य दर्शन होता है सो देवतियों को दुर्लभ
है इसका जो पुरुष नित्य पूजन करता है सो
संपूर्ण कामनों को प्राप्त होता है २॥ ९॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
११२

समस्वदर्शनलक्षणं नेत्रैव द्वाभ्यां शिरसि चक्रा
भ्यां पंक्त्याकारेण भूषितः श्यामवर्णः पार्श्वभा
गे राजशंखादिसंयुतः। समःस्वदर्शनो देवा
भूतलेन विदुर्लभः पूजनीयः सदासद्भिर्भु
क्तिमुक्तिफलप्रद इति २ योगेश्वरलक्षणं
ब्रह्मपुराणे हृयस्ते शिखरे लिंगं शालिग्रा
मसमुद्भवं स वै योगेश्वरो नाम ब्रह्महत्या
पापोहति। विश्वपंजरलक्षणं पद्मपुराणे
वज्रकीटद्वरेखाः परिभ्रमन्त्यत्रैव शा
लग्रामशिलायांसा विश्वपंजरसंज्ञिता।

समस्वदर्शनका लक्षण पुराणसंग्रहमे कथन
कियाहै द्वाभ्यामिति पंक्तिकेआकारकर्केशि
रमें दो चक्रोंकर्के जोभूषित और श्यामहैवर्ण
जिसका और पासेमे राजशंखकर्केजोयुक्त
। सोसमस्वदर्शनदेव श्रेष्ठपुरुषोंने सदा पू
जनेयोग्यहै किसकारणतें भुक्ति और मुक्ति
केफलकों देनेवाला और पृथिवीमे दुर्लभहै २
योगेश्वरका लक्षण ब्रह्मपुराणमे कथनकि
याहै जिसके शिखरमें शालग्राममतें उत्पन्नहुआ
जोलिंग सोदेखिये सोब्रह्महत्याके हरकरणे
वाला योगेश्वर नामकर्के देवहै। विश्वपंजरका
लक्षण पद्मपुराणमे कथनकियाहै जिसशि-
शिला विश्व पंजर संज्ञावाली होताहै ।३

ग्रामद्वाह्ये महाने को धर्मात्मा जामिलो द्विजः
शुश्रूषति सतः सर्वांल्ल भोजनास्तरणादिभिः
इत्युक्तः स गतो द्रष्टुं सोऽतिथिस्तत्र चागतः
द्वारदेशादाजुहावनाम्नाचाजमिलस्य वै ९४
श्रुत्वा तद्गृहिणी वेश्या समागत्याब्रवीच्च
ने कोसि कस्मादिहायातः किमर्थं त्वमिहे
च्छसि ९५ स उवाच ततः साधुः पथिकोनि
वसाम्यहं गते सर्वे महद्ग्रामे तत्र सोमाऽभुं
वावह ९६ ॥

सो उह पुरुष बोला हे साधु ग्राम से वाहर वडा एक
धर्मात्मा अजामिल ब्राह्मण निवास करता है सो
भोजन विछावने और नरों की सेवा करके सेवता
है उहां चला जा ९३ इस प्रकार कथन करा हुआ
सो अभ्यागत उहां आया अजामिल का नाम ले
२ करके द्वारदेश से बुलावता भया ९४ उसकी
घरवाली वेश्या शब्द श्रवण कर उहां आके ति
सको कहने लगी तूं कौन है कहां से आया है
क्या तेरा प्रयोजन है किस वास्ते तिसकों बुलाता है ९५
इतना वचन सुनकर साधु बोला मार्ग में चल
नेवाला साधु हां रात भर रहना है सो मैं पीछे
के ग्राम में रात रहने की जागा मैने पूछी उहां
के लोक कहने लगे शहर से वाहर धर्मात्मा अ
जामिल है उसके पास जाइ सो सभ नरां से ने
री टहल सेवा करेगा ९६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
५१५

ग्रामद्बाह्ये तिष्ठ धर्मात्मा विप्रोऽजामिलसंज्ञकः
तत्र गच्छ निवासाय स ते वासप्रदास्यति ९७
इत्युक्ता हरिमित्राया ततः क्वास्ते जामिलः सु
तः इति पृष्टा तु सा वेश्या बहिर्वेश्मनि तं त
दा ९८ निवासाय ददौ स्थानं स नास्ति भवने
ऽधुना आगमिष्यति चेत्तां त्वनमस्यति न सं
शयः ९९ अथ सा शीघ्रं नागत्य ग्रामे कंचि
जनं तदा समानीयोत्तमानादिभोजना
र्थमाहरत् १०० ॥

२१४

ग्राम से बाहर धर्मात्मा अजामिल नामक ब्राह्म
ण है उसके जो तेरे को निवास के वास्ते स्थान दे
वेगा ९७ इस प्रकार कहा हुया मैं इहां आ
या हां सो अजामिल कहां है ऐसे वचन सु
न कर सो वेश्या उसी समें तिसको बाहर
के घर में ९८ निवास के वास्ते स्थान देके क
हन लगी सो तो अब घर में नहि है जे कर आ
य जाता है तद सो भी तुम को नमस्कार करे
गा इस में संशय नहि है ९९ इस से उपरंत सो
शीघ्र ग्राम में आय कर किसी वाणिये को
साथ लेकर बडे २ सुंदर पदारथ तिस के
सिस के भोजन के वास्ते ल्यावती भई १००

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ यज्ञमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे यज्ञमूर्तिर्भ
गवान्पीतरक्तादिमिश्रितः हारस्य वामतश्च
क्रे स्वस्तिकचिह्नं दक्षिणेन तथा । पुराणसंग्रहे
पीतरक्ता यज्ञमूर्तिरिति वेदविदो विदुः ।
अथ दत्तात्रेयलक्षणं पीतारुणसिताभश्च
कृष्णः षड्भुजो भवेत् अक्षमालाकृतिः ष
डे दत्तात्रेयः शुभप्रदः । तथा कृष्णोर
क्तश्च पीतश्च दत्तात्रेयाभिधो भवेदिति ।

इसतें उपरंत यज्ञमूर्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे
कथन किया है यज्ञमूर्तिरिति पीत ओर लाल रंगक
के जो मिश्रित ओर मुखके वाम पासेमे चक्र होवे
ओर दहनेमें स्वस्तिका चिह्न होवे सो यज्ञमूर्ति भ
गवान होता है । पुराणसंग्रहमे ओर कथन कर
ते हैं पीत ओर रंगवाली जो शिला तिसकों वे
द के जाननेवाले यज्ञमूर्ति जानते हैं । दत्तात्रेय
का लक्षण कथन किया है पीत ओर लाल ओर
कृस है आभा जिसकी ओर कृष्ण है षष्ठ ओर
उचा होवै ओर षष्ठमें रुद्राक्षमालाकी आकृ
ति होवे सो शुभके देनेवाला दत्तात्रेय होता है
। ओर कथन करते हैं कृष्ण ओर रक्त ओर पी
त है वर्ण जिसका सो दत्तात्रेय होता है

२॥ ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

215

शिशुमारलक्षणं ब्रह्माण्डे शिशुमारो दीर्घका
यः शिलादिर्ब्यांगगकरः पुरतः पृष्ठभागे च
चक्रेणैकेन संयुतः सर्वाधारः स विज्ञेयः स
र्वसिद्धिप्रदो नृणामिति १ पृष्ठभागे चैकचक्रं
वक्रे चक्रद्वयं भवेदिति २ अथ हंसमूर्त्तिल
क्षणं ब्रह्माण्डे हंसस्तु धनुषाकारो नीलश्वेत
विमिश्रितः चक्रपद्मसमोपेतः केवलमु
क्तिदो भवेदिति १ गारुडे हंसः शंखाकृति
र्युक्तो नाभिचक्रस्तयोन्नतः दक्षिणे धनुषाका
रो वामे क्रमद पुष्पकम् दृश्यते भिन्नवर्णश्च
मोक्षवर्गफलप्रदः शुभ इति १ ॥ २ ॥

शिशुमारका लक्षण ब्रह्माण्डपुराणमे कथन किया
है शिशुमार इति दीर्घ है काया जिसकी और शि
ला का सुंदर है अंग जिसका और पृष्ठ के चारे
और ते एक चक्रकर्के जो युक्त सो पुरुषों को सर्व
सिद्धि के देनेवाला और संपूर्ण का आधार
शिशुमार जानना १ पृष्ठभागमे एक चक्र होवे
और मुखमें दो चक्र होगा सो भी शिशुमार जानना २
हंसमूर्त्तिका लक्षण कथन किया है ब्रह्माण्डपुरा
णमे धनुषकी न्याई है आकार जिसका नील और
श्वेतवर्णकर्के मिश्रित और कमल और चक्रकर्के जो
युक्त सो केवल मुक्तिको देनेवाला हंस कथन की
या है १ गरुडपुराणमे और कथन किया है शंखाकृति
जो होवे और नाभिमे है चक्र जिसके और ते सें ऊंचा और द
क्षिणमें धनुषका आकार और वाममे क्रमद पुष्पका र
चिह्न दिखे और भिन्न वर्ण जिसका सो मोक्षके देने
वाला हंस कथन किया है ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथामृताहरणमूर्तिलक्षणं ब्रह्मांडे वर्तुलो
ह्रस्ववदनो ह्रस्वचक्रेऽतिकोमलः अमृताह
रणो देवो नीलोत्पलसमप्रभ इति । नरमूर्ति
लक्षणं ब्रह्मांडे नरमूर्तिस्तु भगवानतसी-
कुसुमप्रभः एकचक्रसमोपेतो ब्रह्मसूत्रं च
पार्श्वके । अथ शेषमूर्तिलक्षणं पाद्मे ना
गवत्कुंडलीभूतरेखापंक्तिः स शेषक इति
ब्रह्मांडे अथवा कुंडलीभूतनागभोगसमन्वि
तः शेषमूर्तिस्तु भगवान् शेषैश्वर्यदायक
इति । ॥

इसतें उपरंत अमृताहरणमूर्तिका लक्षण ब्रह्मां
डपुराणमें कथन किया है वर्तुल क्या गोलाकार
और ह्रस्व है मुख जिसका और ह्रस्व है चक्र जि
समे और कोमल और नीले कमलकी न्याई है
प्रभा जिसकी सो अमृताहरण देव होता है ।
नरमूर्ति भगवानका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें क-
थन किया है अलसीके पुष्पकी न्याई है प्रभा जिस
की और एक चक्र करके जो युक्त और पासेमें यज्ञो-
पवीतका चिह्न होवे सो नरमूर्ति भगवान होता
है । इसतें उपरंत शेषमूर्तिका लक्षण पद्मपु-
राणमें कथन करते हैं नागकी न्याई कुंडलीभूत
है रेखाओंके पंक्ति जिसमें सो शेषनागमूर्ति होता है ।
ब्रह्मांडपुराणमे और कथन करते हैं अथवा कुंड
लीभूत नागभोग करके जो युक्त सो संपूर्ण ऐश्व-
र्यके देनेवाली शेषमूर्ति होती है ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२१८

216

अथ गरुडमूर्त्तिलक्षणं पाद्मे पत्ताकारेश्चचक्रे
द्वेमध्येलंवाचरेखिका गरुडःस्तविज्ञेयोभु
क्तिमुक्तिप्रदायकइति । ब्रह्मांडे द्विपत्ताभ्या
मुपेतंयद्गरुडंभुविदुर्ल्लभं दुर्लभंसमचक्रंच
कलौकल्मषनाशनं तथा कल्मषोघवि॰
नाशीस्याद्वलयाकाररेखया स्वर्णाभि
याद्वित्रिचतुष्टयसमेतया । वनमालिमूर्त्ति
लक्षणं शिलाशुभ्राचसुस्निग्धाशुभचक्र
सुशोभना वनमालीसविज्ञेयोभुक्तिमोक्षफ
लप्रद इति ।।

इसतें उपरंत गरुडमूर्त्तिकालक्षणपद्मपुराणा
मेकथनकरतेहैं पत्तेत्ति खेवके आकारकी
न्याई मध्यमे दोचक्र जिसमे औरलंबीहै रे
खा जिसमे सोभुक्ति औरमुक्तिकेफलकोंदे
नेवालागरुडजानना । ब्रह्मांडपुराणमे औरक
थनकरतेहैं जोगरुड दोपंखोंकरके युक्तसो ए
थिवीमे दुर्लभहै अथवा समहै चक्र जिसमे
सोभीदुर्लभहै सोकलियुगमे पापोंकानाश
करताहै । औरतैसेकथनकरतेहैं स्वर्णकी
न्याई दोतीनवाचारजोवलयाकार रेखाति
नकरके जोयुक्तसोगरुडकलियुगमेपापोंका
जोसमूहतिसकानाशकरताहै । वनमालि॰
मूर्त्तिकालक्षणकथनकरतेहैं स्वेतजोशिलाओ
र कोमल औरशुभ चक्रकरके सुंदर सो ताका॰
लमोक्षफलकोदेनेवालावनमालीजानना ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यातस्वयंकामम् अज्ञोम्रियमाणोतिपातकी
ब्राह्मणो द्विजः कर्मणासौ चांडालादधिकोभा
वत् ९७ तमानयित्वा पाशेन बध्वात्र नरके
क्षिप पातयाधं न तं चाहं द्रष्टुमिच्छामि पा
पिनम् ९८ इत्याज्ञां शिरसा धृत्वा आगतास्ते य
मकिंकराः दंडपाशधराः सर्वे दीर्घदंष्ट्रा
भयंकराः ९९ आगत्याजामिलगृहे ते पा
शैर्बद्धुमुद्यताः तान्दृष्ट्वाजामिलो भीत्याजुहू
वत्तनयं निजम् १०० ॥ ~ ॥

हे दूतों जल्दी जाके उस अंत्यंज पापी मरणे वा
ले काम्य अज्ञ ब्राह्मण कों ल्याडो जो जाती क
र्के ब्राह्मण कर्मों कर्के चांडालोंसे भी अधिक
होताभया ९७ तिसकों फासीयोंके साथ बांध
कर नरकोंमे सुट देओ वाहरके वाहर मैं एसे
पापीका दर्शन भी नहि करना चाहताहूं ९८
इह आसा शिरकर धारण करके सो यमकिंक
र उहां चले आए दंडने फांसीयां हाथोंमें लिये
होए लंबीयां जिनकीयां दाडां वडे भयंकर
रूपोंवाले ९९ अजामिलके घर आयकर तिस
कों फासियोंसें वाधने लगे तिनकों देखकर
भयकरके अजामिल अपने पुत्रकों बुलावता
भया १०० ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२१७

217

अहोनारायणत्रेतिमांवभंनिभयंकराः
नारायणाततःपाहीत्येवंपुत्रमभाषत ९
वृत्रवारंवदत्यास्ताविस्त्रहूताःसमागताः
शंखचक्रधरासर्वेतुलसीदामभूषिताः
यमहूतास्भसंपन्नेविजहीतेविवादिनः
ततस्तुयमहूतास्तैरयुध्यंतमहात्मभिः
ततोघोरतरंयुद्धंकृत्वातेविस्नुकिंकराः अ
जामिलंसमादाय विमानेहरिमंदिरे १०

वहुतडरघालकोंकेसाथडोंउमेआसक्तपुत्र
कोंऊंचेस्वरसेकहताभया हेनारायणशीघ्र
रहोआमेरेकोंपहभयंकरवांधनेलगेहै ३
नसेरताकरपेसेपुत्रकोंकहताभया ।१ उसे
तांसे वहुतवारकहतेहोपकों सुनकेवि
स्नुकेहूतचलेआयेकैसेउहविस्नुकेहूतहैं
शंखचक्रगदापद्मधारेहोप तुलसीकोमाला
ककैशोभायमान ।२ औरयमकेहूतोंका
तिरस्कारकर्नै२कहतेभये इसकोंछोडदेउ
क्योंतुमनेपकडाहै पेसेकहकर पीछेसेतिन
महात्माकेसाथयमहूतोंकायुद्धहोताभया
।३ तदसोविस्नुकेरत वडाघोरयुद्धकर्केअ
जामिलकोंविमानपर विठायके विमल॰
हरिकेमंदिरमैलेजानेभये ।४ ५०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैकुंठंप्रापयामासहरिस्याश्चर्यमभूदहो १४
अथतेयमदूतास्तुछिन्नहस्तोरुनासिकाः
संप्राप्यधर्मराजानंतेदूतोवाक्यमब्रुवन् १५
अविचार्यैवभवताप्रेष्यंतेकिंकरानिजाः
अथवाचित्रगुप्तोयंसहसासंवदत्यहो १६
वयंतत्रगतास्तेनंविप्रंचाजामिलंतदा वि
हृताःसमागत्ययुद्धंकृत्वातिदारुणम् १७
विनिर्जित्यचनःसर्वान्नीतस्तंभवनंहरेः
पश्यास्मदीयान्यंगानिचक्राक्रान्तान्यनेक
धा १८

वैकुंठमेंप्राप्तकरनेभये यहवडेआश्चर्यकी
बात होतीभई १४ अबइससेउपरंत क्या अजा
मिलकोंलेजानेसें उपरंत यमकेहस्त कटेग
यें हाथपार जिनके ऐसेसो धर्मराजाके पा
स प्राप्तहोकर रोदनकरतें २ वाक्यकहतेभये
१५ हेराजन आप विनाविचारि अपने किंकर
भेजतेहो अथवा चित्रगुप्त सनावीकरताहै
ओकछुविचारनहिकरताहै १६ हमतिसकों
लेजानेवास्ते तहां गए आजामिलके घर
तिससमयही विष्णुकेगण आयकर वडा घो
र युद्धकरकें १७ हमारेकोंजीतलियातिसकों
हरिके मंदिर लेगएहै और चक्रों करकें क
टे होए हमारे अंगोको देखो १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमप्यानयुनंचास्मान्नुच्छीमंतः प्रेषयंतिहि
नस्मादियमवस्थानोयोनाभागंनमर्हति ।
इतिश्रुत्वावचस्तेषांयमराजोतिविस्मितः
आहूयाचित्रगुप्तंतंपप्रच्छाजामिलस्यसः २
चित्रगुप्तोनिरीक्ष्याहनाजन्ममरणावधि
पुण्यलेशोनचास्यास्तिनिश्चिन्मेनब्रवीम्यहं
किंतुप्राणांतसमयेदृष्ट्वानूद्‌तान्भयंकरा
न् नारायणेतिनामानंतनयंस्वमपाह्वयत्

विना विचारे आप हमारेकों भेज देता हों इस
कारणसें इह हमारी अवस्था जई है जो वडे नि
र्भाग्यवालेयोंके योग्यथी ।१ यह वचन ति
नका श्रवणकर यमराज वडे विस्मय आश्च
र्यकों प्राप्त होयकर तो चित्रगुप्तकों बुलाय
कर आजामिलका पुण्यपाप पूछता भया
उस समय चित्रगुप्त तिसका जन्मसें लेकर म
रणे पर्यंत पाप पुण्य देखकर कहने ल
गा हे महाराज जन्मसे मरणे पर्यंत पुण्य
का इसकों लेशभी नहिं है इह बात निश्चि
त करमें कहता हूं । परंतु यह बात है कि
मरणेके समय भयंकर दूतोंको देखर
कर नारायण नामवाले अपने पुत्रकों बु
लावता भया २॥ ८ ॥

218

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तदाज्ञहावबुद्धंसनन्नतंजगदीश्वरं इति
श्रुत्वावचत्तस्यविचित्रमसमहामतिः १०२
गृहीत्वानिजदूतान्सवैकुंठंप्रययौद्रुतं त
त्रगत्वाजगन्नाथंविस्नुंनारायणंहरिं १०४
प्रणम्यप्रार्थयामासवद्धांजलिपुटोयमः
भगवन्नधिकारोमेहृथातवगुणैःकृतः १०५
महापातकिनांश्रेष्ठोजामिलोप्युद्दिश्य
जायमःनमानेतेमयादूताःप्रेषिताःज
गदीश्वरः १०६ ॥

तिससमयसोअपनेपुत्रकोंबुलावताभया
कोईपरमेस्वरकोंनहिंबुलाया यहविचित्रमक
वचनसुनकर यमराज १०२ अपनेदूतोंको
साथलेकरशीघ्रवैकुंठमेंप्राप्तहोताभया और
तहांजाकरजगतकेस्वामी हरि नारायण
विस्नुकों १०४ प्रणामकरहाथजोडकेयम
राजकहनेलगा हेभगवन् मेराअधिकारते
रेगणोंनेवृथाकरदियाहै १०५ महापापि
योंमेंश्रेष्ठअजामिलब्राह्मणोंमेअधमथा
तिसकेल्याउनेकोंहे जगदीश्वर मैंने दूत
भेजेथे १०६ ॥

सा॰
ग्राम॰
२१६

219

अथांतरे भवद्दासा यमदूतान्निहत्य ते सा॰
मानिन्युरिहायं ते राजन्नेभवनं द्विजः ७ श्रु॰
त्वैतद्धर्मराजस्य वचनं भगवान् हरिः सस्मि
तं शांतयित्वा तं यमराजमभाषत ८ अहो
सत्यं नास्य पुण्यमाजन्ममरणावधि प
रं त्वमस्य समये मन्नामोच्चारणादयम् ९
त्रिमुक्तः सर्वपापेभ्यो अनीतो मम किंकरैः
मरणावसरसमये मन्नो निजविनेव पारय १०

इतने में हे भगवन् तुमारे सदा यमदूतों कों मा
रकर तिसकों ल्यावते भये सो द्विज यह तुमारे
वैकुंठ में विराजमान हैं ७ यह वचन धर्मराज
का श्रवण करके हरि भगवान् मंद हास्य करके
युक्त धर्मराजकों समझावते २ ऐसे कहने ल
गे ८ हे धर्मराज जो तूं कहता है सो सत्य है
क्या जन्म सें लेकर मरणे पर्यंत इसने कुछ
पुण्य का लेश नहि करा परंतु मरने के सा॰
मय मेरे नाम के उच्चारण सें ९ सम्पूर्ण पा॰
पों से मुक्त होय आइया मेरे किंकराने इस
लोक में ल्याया है अब आगे वास्ते मेरे सें संकी
न श्रवण कर सो अपने मन में निश्चय धा
रण कर रखो १० ॥ ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पापिनोपि यथा दंडं भवतो नाप्नुवंति हि ॥ तथा वत्मार्य चिंतेवे विहरस्व महीतले ॥ ये नाम संततं मह्यो मम शंकरस्य देव्या भजं ति मनुजा भुवि पापिनोपि ॥ तान्स्त्यजहीति न च ते तव दंडयोग्या अस्मात्प्रियाइति न नत च्चरितं विचार्यम् १८ तत्रापि ये विजहति स्वकलेवराणि मन्नाम भावरात अरसर मध्यचिंताः किं चामलत्रिपथगा तटभा जिनो ये संसेव्यतांइ तनवः खलुतेपि अस्माः

ओर पापी पुरुष भी जिस प्रकार तेरेसें दंडको न हिं प्राप्त होवे उस प्रकार की शिक्षा अपने म नमें निश्चय सें धारणा कर सुखपूर्वक पृथिवी लोकमें विहार कर ॥ और जो कोई पुरुष स र्वदा मेरा नाम जपे वा शिवाजी का अथवा देवीका नाम जपे पृथिवी लोकमें सो पापी भी होवे तद भी तिसको तूं त्याग दे क्योंकी तेरे दंडके योग्य नहिंहे सो मेरे प्यारे हें इसमें वि स्मय की बात नहिं हे क्या विचार करनी हे १८ और उसमें भी एक विशेष होताहे क्या मेरे नाम जपनेमें तत्पर निश्चिंत होके देह त्या ग करतेहें और निर्मल श्रीगंगाजी के किना रे मर रहने वाले सो मेरे अर्थ देह के भोगी हे और वडे अप्रहें १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२२॰

९२०

एवंशिक्षामरीकृत्यनमस्कृत्यमहोहरिं
निजंगाममगणैःसार्थंहृष्टःसंयमनींपुरीं
तज्ञापिनिजहूतेभ्यःशिक्षामाहहरेःकृता
इतिजामिलसंवृत्तंभक्तिमाहात्म्यमुत्तमं
।५ परमाश्चर्यजनकंनामसामर्थ्यबृंहि
हितं श्रुत्वाभक्तिमवाप्नोतिमहापापा
न्मुच्यते ।९ इतिजामिलचरित्रंसमा
प्तम् ॥ ~ ॥

इसप्रकारकीशिक्षाभगवान्जीकी ग्रेगीका
रकर्कै ओरयमराजधर्मराज हरिकौंनमस्कार
कर प्रसन्नमन वाला अपने गणोंकेसाथ
संयमिनी पुरीकों चलाआवताभया ।७
तहांआकेश्रीभगवान्जीकीकरी होईशि
क्षाओर नौं दूतोंकोभीसुनाय देता भया य
ह अजामिलककी भक्तिके माहात्म्यवर्ण
वांधीहोई कथाउत्तम ।५ परमआश्चर्यको
उत्पन्नकरेवालीनामकी समर्थकरभरी
हुई इसकों श्रवण कर नारायणमें भक्ति
कों प्राप्त होताहै ओर भक्त महापापसें मु
क्त होताहै ।९ यह अजामिलकी भक्ति
का चरित्र समाप्तभया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ भक्तमालायां नाम माहात्म्य निरूपणम्
एकदा नाममाहात्म्यं नामदेवेन भक्तितः
कथाव्यक्तीकृतं लोके तदाश्चर्यं निशामय १
महाधनो वणिक्कश्चिद्दिदृक्षुर्विट्ठलप्रभुं
समायातोऽतिभक्त्या वै धनान्याधाय भूरिशः २
स्नात्वा भीमासरितोयं दृष्ट्वा तं विट्ठलं हरिं
संपूज्य विधिवद्भक्त्या रत्नालंकरणादिभि ३
स्तुलादानं चकारासौ हिरण्यस्य यथाविधिः
मेद्वैस्तोषयामास यथायोग्यं द्विजान्स्वरा ४

अब भक्तमालसें रामनामकी महिमा लिखते हैं
एक समय नामदेनें भक्तिसें नामका माहात्म्य
प्रगट करा सो संसारमें आश्चर्यरूप कथा श्रव
ण कर १ वडा धनवान एक वाणिया विठ्ठल
भगवानजीका दर्शन करणे वास्ते आया वडी
भक्ति कर संयुक्त वहुत नरोंके धन देने वास्ते
लाया २ तो भीमा नदीके जलमें स्नान कर ह
रि भगवान विठ्ठलजी का दर्शन करके विधिक
र संयुक्त वडे प्रेमसें वस्त्र भूषणादियों से पू
जन करा ३ फिर वेदकी रीतिसें सुवर्णादिद्र
व्योंका तुलादान कर्त्ता भया और तिनों द्रव्योंक
कैयथा योग्य ब्राह्मण साधुयों को प्रसन्न
कर्त्ता भया ४ ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अन्यैरपि धनैस्तु च विट्ठलप्रीतये वणिक् दी
नानाथांस्तु संतोष्य प्राह कोप्यत्र नागतः
दीयमानं धनं नस्मै दास्यामि त्वहमीप्सितं
इति तस्य वचः श्रुत्वा सर्वे ते ग्रामवासिनः ६
ऊचुः सादरमानास्ते नामदेवेति वैष्णवः
अयाची नियताहारी सदा गोविंदपूजकः ७
नायाति कस्य चिद्गेहं संतुष्टो येन केन चित्
इति श्रुत्वा वचस्तेषां वणिगाह निजात्मजं ८

और अनेक जरों के धन विट्ठल भगवानजी कों
प्रीतिके वास्ते दीन अनाथ दरिद्रयों को प्रसन्न
कर बोला ऐसा तो कोई इस शाहरमे नहि रहा
जोकोई इहां नहि आया है ५ क्यों कि दान करा
हुया यह धन उसको भी मन मांगा हुया देऊं
यह तिसका वचन सुनके सारे ही उहांके रहने
वाले ६ बडे आदर पूर्वक कहने लगे इहां ए
क नागदेव परम वैस्नव है ओह किसीके आ
उता नहि है न किसी को याचना करता है नियम
का भोजन करता है और सर्वदा काल गोविंद
जीकी पूजामे लगा रहता है ७ आउता जाता
किसीके नहि और जो कुछ थोडा वहुत उस
कों घरमे बैठे हुई दे आवे उसीसे प्रसन्न रह
ताहै ऐसा वचन लोकों का सुनकर सो सा
हूकार वाणीयां अपने पुत्रको कहता भया ८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गच्छत्वंतत्रयत्रास्तेनामदेवोहरिप्रियः प्रणि
पत्यविनीतात्मातंप्रार्थयमहाभोः १३
तिपितृवचःश्रुत्वागतःपुत्रोतिहर्षितः प्र
णाम्यनामदेवंतंप्राहमेजनकप्रभो १ मा
नोदिदृक्षतिधर्मात्मातत्रत्वंकृपयावल
श्रुत्वैतद्वचनंतस्यनामदेवोब्रवीद्वचः ॥
प्रायोनयामिकुत्रापिकोहंयस्मांदिदृक्षति
सदातातधर्मशीलोमेकिंचिद्दातुमिहेच्छ
ति १२॥

पुत्रकोंकहनेलगा तूंउस जगा जा जहांना
मदेवहरिकाप्यारा रहताहै तिसकों प्रणाम
कर नम्र आत्मा वालाहोके उसकों कहो कि
सी उपायककर्के ल्या १ यहपिताकावचन
सुनकरपुत्र प्रसन्न मनवाला उहां चलाग
या नामदेवकों प्रणाम करबोला हेसाधोमे
रापिता १ तुमारे दर्शन करनेकी इच्छा
कर्त्ताहै तहां आप कृपा करकें चलो इजना
वचनसुनतेही नामदेवकहताभया ॥ अस
लसेंमे आजतक कहींगया नहीहांपरंतु मे
कौन हांजो मेरादर्शन करनेकी इच्छाकर्त्ता
है मैनेजानलियाहै कीओहदाता धर्मकरने
वालाहै कुछमेरे कोंभी देनेकी इच्छा कर्त्ता
है १२॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तज्जानामिनमेवांछाधनेवान्यत्रकुत्रचित् प्रा
णाधारणमाहारंददातिविट्ठलःप्रभुः ३ इति
पित्रेप्रवक्तव्यंगच्छवत्साविचारयन् ततः
सवैश्यपुत्रस्तुपितुरंतिकमागतः ४ उवा
चनामदेवस्यवचःसचपुनर्वणिक् प्राहपु
त्रंपुनर्गच्छप्रसाद्यानयतंसुत ५ ततःस
ग्रामवृद्धैस्तुसाकंतत्रपुनर्गतः उवाचप्रां
नलेभेनातथाहंपुनरागतः ६ ॥

सोमैजानतीयाहै परमेरी इछानहिहै धनले
नेकीन और किसीवस्तुकीऔर प्राणोंके धारण
करणेकानिर्वाह मात्र अन्न विट्ठल भगवान
जी देहीदेतेहैं ३ यहवात अपनेपिताकोंक
हदे हे पुत्र विचार मनकर और उहां जाके
पिताकों कहदे ओह नहि आवता है इतनाव
चनसुनके वैश्यका पुत्र पिताके पासचला
आया ४ और नामदेवके वचन तिसकों सुना
य दिये की ऐसे कहता है तद वणियापुत्रकों
कहनेलगा फिर उहांजाके तिसकोंप्रसन्नकर
इहांल्या ५ तद फिर सो वाणियाके पुत्र ग्राम
के वृद्धपुरुषों कोसाथ लेके उहां गया तद र
नामदेवने पूछा अब कैसे आया तो बालक
कहने लगा है साधो मे फिर तुमारे उहां ले
जाने वास्ते बुलानेको आया हां ६ ॥

अश्राद्धमे पितृवचनं यावत्त्वं नैषि मे गृहं ता
वदन्नं च पानीयं न ग्रहीष्यामहं ध्रुवम् १८
इति प्रतिज्ञां कृत्वा स मरणे कृतनिश्चयः
उत्कण्ठितो भवंतं वै द्रष्टुं नास्त्यत्र संशयः १९
भवंतं भगवद्भक्तं जानन्ति भक्तवत्सलं
नायातः स्वयमेवात्र तदागमननिश्चयात् १६
अथैवं वचनं तेषां हृष्टानां तत्र तस्य वै श्रु
त्वा स नामदेवोपि समुत्तस्थौ प्रहृष्टवत् २०

फिर कहने लगा है साधो मेरे पिता का वचन सु
नो जो ऐह कहता है जितना काल आप मेरे घ
रमें नहि आवोगे उतना काल अन्न पाणी
ग्रहण नहि करूंगा निश्चय करकें १८ ऐसी प्र
तिज्ञा करके मरनेमें भी निश्चय वाला होके
तुमारे दर्शन करनेकी चाहना वाला वैठा है इ
समें संशय नहीं है १९ और तुमारे को भक्तवत्सल
भगवानका भक्त जानके आप नहि आया है
को जरूर मेरे पर कृपा करेंगे क्या मेरे घर
जरूर आवेंगे इस निश्चयसें ॥ इस प्रकारके
वचन तिनके श्रवण कर हृष्टोंके और तिस
वालक के नामदेव प्रसन्नमन वाला होके
उठ खडा होता भया २० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२२२

नगामवणिजोगेहेयत्रदानंकरोतिसः वै
श्योदृष्ट्वानामदेवंसमुत्थायातिहर्षितः २१
पाद्यार्घ्यैः पूजयित्वातं प्रोवाच विहितांजलिः
प्रसीदत्वंभवानद्यदद्दामि गृह्यताम्त्वं २२
तद्दृवैष्णवस्यवचःश्रुत्वानामदेवोप्यभाषत
ग्रहीतंदर्शनायातोनमेवांछाधनादिषु २३
इतिजानंत्यमीसर्वेतस्माद्देहित्वमस्वभोः
इतिश्रुत्वातुसर्वाणितस्यारोप्रतिगृह्यच २४

सो मै जानतीयाहै परमेरी इच्छा नहि है धनलेने
की नऔर किसीवस्तु की औरप्राणीको धारनक
रनेका निर्वाह मात्र अन्न विट्ठलभगवानजी
देते सोनामदेवतिसकेसाथवणियाकेघरमें
जाताभया जहांवेठके उहदानकर्ताथा जदउ
सके सन्मुखगया सोउसको देखकर वडेहर्ष
आनंदसें उठखडाभया [illegible]पाद्यअर्घ्यआच
मनादियोंसें पूजनकरहाथजोडकेबोला हे
साधो आपमेरे परप्रसन्न होवो और जोकुछ त
मकौं देताहूं सो मेरेसें ग्रहणाकरलेवो २२
यहवाक्य तिसवणियेकासुनकरनामदेव क
हताभयाहे धर्मशीलमें दानलेनेकौंमहिंआ
याहौं औरनमेरीइच्छाहीहै धनादियोंमें २३ य
हवातसारेलोकजानतेहैं इसकारणसे मेरेप
रक्षमा करइतना वाक्यसुनतेही तिसकेपा
दवणियानेपकडलिये २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततस्ताञ्जसनस्याद्दौ नामदेवोऽब्रवीत्तदा देहि
मेभिहितं द्रव्यं त्वत्प्रीत्यै स्वीकरोम्यहम् २५
इत्युक्त्वा तुलसीपत्रमेकमादाय तत्र हरा
मेति सार्धमलिख्याह तं वणिजं पुनः
यत्त्वयारमितं द्रव्यं देहि मेयदि दास्यसि २
तिरस्कृत्वा वचस्तस्य प्राह तं स वणिक् पुनः २२
उपहासो न योग्यस्ते मम भक्तस्य सर्वते
गृहाणायद्ददामीह स्वेच्छयाहं प्रसीद भोः

सो वाणीयां जिसके यादौं को नहि त्यागता भ
या तद नामदेव कहने लगा हे साधु अच्छा
जेकर देताहैं तद उतना द्रव्य देजितना मैं
मांगताहों तेरी प्रसन्नताके लिये ग्रहण
कर्ताहुं २५ ऐसे कहकर्के उहांसेही एक
तुलसीकापत्र लेकरराम इसका आधा
पद राम मात्र लिखके फिर वाणियांकों
कहता भया २६ हे वाणिक जेकर देता
हैं तद उसके साथ तोलकर दे यह वच
न जिसका सुनतेही वाणियां फिर कहने
लगा २७ हे सन्त मैं जो तुमारा भक्तहोंमे
रेसाथ हांसी करनी योग्य नहिहै हे साधो
जो मै अपनी इच्छासें देताहुं उतना ग्रह
णकरों २८ ॥

एकं चैव तु वचनं तस्य नाम देवोऽब्रवीत्पुनः नो पहासं करोम्यद्य ताम्नस्वर्णादधिकं भवेत् २१
सत्यमेतन्न संदेहो न किंचित्तत्समं भुवि इति श्रुत्वा स वैश्यस्तु सौवर्णां तोलिकां तु तो १ समादाय ततस्त्वत्रं राम नामार्थ संयुतम् एकतः स्थापयामास हिरण्मयं द्वितीयकतः २१ न समं तुलसीपत्रेणासीत् कनकं पुनः सुवर्णानि समादाय क्षेपयामास यत्नतः २२ ॥

यह वचन तिस का सुन के नाम देव फिर कहता भया मैं हासी नहीं करता हूं यह सुवर्णों से अधिक है २१ सत्य बात है आप संदेह मत करो इस के बराबर की वस्तु पृथिवी में भी नहीं है इस तरां का वचन सुन के सो वैश्य सुवर्ण तोलने वाली तखड़ी लेके १ राम नाम के अर्थ कर संयुक्त तुलसी पत्रों को एक पासे पाय कर दूसरे पासे सुवर्ण को स्थापन करके २१ तोलने लगा तो तुलसीपत्र के साथ और सुवर्ण बराबर नहि होता भया और सुवर्ण लेकर यत्न से उस में धरता भये २२॥

नययोस्तत्रसाम्यंनतुनर्त्यांतुलांदधेतत्रा
पिनययोसाम्यंनामार्थस्यतुनहनम् २३
पुनर्निर्मायमहतींतुलांसंस्थाप्यसर्वशः
स्थानानितोलयामासनययोस्समतांपुनः
ततस्तंवणिजंप्राहनामदेवोतिविस्मित
अहोयावंतिदानानिव्रतानिचमहीतले
तीर्थानिचोपवासाश्चतेषांयत्फलमीरितं
संकल्प्यतज्जलेनत्वंदत्वातोलयपश्यभोः २६

उसतुलामें स्वर्णादि उसनामार्थकेसाथवरा
वर नहिंहोए तदश्रौरतुला उनीनें ग्रहणक
री तिसमेंभी नामार्थके साथ सोधनवरावर
नहिंहोएश्रा २३ तोफिरवङ्गत वडीएक तु
लावनाके उसमें सभीकुछ स्थापन करप
त्रोंकोतोलते भये तदभी रामनामार्थके
साथवरावर नहिंडया २४ उससमयना
मदेवविस्मययुक्तहोएश्राडया वाणियेको
कहताभया हेसाहुकार श्रव देख जितने
कदान व्रत महीतल मेंहैं २५ श्रौरतीर्थ
है उपवास व्रतजितनेहैं तिनका जोफल
है तिसको संकलपकरकें उसका जो जलहै
सो उसमें पायकर तोलके देख २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्रीम॰
२२५

225

इतिश्रुत्वावणिक्तीर्थव्रतादीनांफलानि
नु संकल्पप्रदत्तानि न साम्यंजग्मुरेव
पि १७ ततस्तत्परमाश्चर्यंदृष्ट्वासर्वेविवि
स्मिताः उवाचनामदेवस्तानेतन्मेपरमंध
नं १८ नैतादृशंधनंलोकेयस्याप्यस्तिम
त्तोमया नयाच्यतेजनः कोपिमत्तःसर्वे
हिनिर्धनाः १९ इतितस्यवचःश्रुत्वासाधु
साध्विनिवादिनः दृष्ट्वानेप्रत्ययंचित्तेजगु
र्नामचिंतनम् ५० ॥

यहवचनतिसकासुनकेवणिकयांव्रतउपवा
सतीर्थआदियोंकेफलसंकल्पकरके तिसमेंज
लछोडदेताभया तदभी तिसकीथोडीसमता
कोंप्राप्तनहिंहोताभया १७ तदसारेलोक
परमाश्चर्यदेखकरविस्मयकोंप्राप्तहोतेभये
उससमय उनकोनामदेवकहताभया य
हमेरापरमधनहै देखातुमने १८ इसके
जैसाधनसंसारमेंकिसीकेपास नहिंहै मेरे
हीपासहै इसीकारणसें किसीकोंयाचना
नहींकरताहूं मेरेसें सारेही निर्धनहैं मैंवडा
हूंसभसें १९ यहवाक्यतिसकाश्रवण क
रसारेलोकसाधु २ कहनेलगे क्यायहवात
होकहै अच्छे संदेहनहिंहैं इसनरांका नि
श्चयदेखकर सारेलोकआपने २ मनोंमें
नामकाचिंतनकरतेभये ५० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवं वै नाम माहात्म्यं पुराणेषु परिकीर्तितं नामो
च्चारणमात्रेण गजो मुक्तो बभूव ह ॥ गणि
का च दिवं याता राम नाम प्रभावतः अजामि
लोऽतिपापिष्ठो नारायणसुतस्य तु ॥ ज
गाम परमं धाम तस्मान्नामैव तारकं कृस्ने
ति मंगलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते ॥ भस्मी
भवंति राजेंद्र महापातककोटयः इति स्मृ
तिरभिव्याख्या मन्यते ऋषिभिः सदा ॥

इस प्रकार नाम का माहात्म्य पुराणों में कथन क
रा है प्रत्यक्ष देखो नाम के उच्चारण मात्र करके ग्रा
हने ग्रसा हुया गज राज मुक्त होता भया ॥
और वेश्या राम नाम के जपने के प्रभाव से
स्वर्ग में जाती भई और अजामिल बड़ा पापी था
सो भी पुत्र का नारायण नाम ले करके ॥
परम धाम को प्राप्त होता भया इस कारण से
रामनाम ही तारणे वाला है और भी विशेष वा
क्य लिखा है कृस्न यह मंगल नाम जिस की
वाणी में प्रवर्त रहता है ॥ हे राजेंद्र तिस के म
हा पापों कीयां कोड़ां भस्म हो जियां है यह स्मृति
वाक्य प्रसिद्ध सर्वदा का सब ऋषियों ने मानी
दा है ॥ ॥ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्मान्नामसमो नास्ति तपो योगो व्रतं च वा
अन्यानि पुण्यकर्माणि नाशुचिः कर्तुमर्हति ५५
तत्र नामस्मृतिर्विप्रा सर्वदेशेषु चोत्तमोत्तमं का
म्यानां कर्मणां सिद्धौ यन्मन्त्रजपनं स्मृतं न्यू
नत्वांगवैगुण्यकृतं दोषमनर्थं करोति वै ना
मस्मृतेर्न चांगानि न च वैगुण्यमस्ति वै ५७
तस्मान्नामस्मृतिर्लोके सर्वेभ्योऽपि गरीया
सी नामैव तावद्देवेति निर्णीतं मुनिभिः पुरा
गृहीत्वा विचरेत्तिष्ठेत्तथाध्येत न संशयः ५८

इसकारणसे नामके समान कोई तपयोगव्रता
पि व्रत नहि हैं और जितने कपुण्यकर्म हैं अपवि
त्र होय जपकों करनेकों योग्य नहि होते हैं ५५
तहां नामकी स्मृति विप्रके की सारे देशोंमें उत
म पवित्र वस्तु है और काम्यकर्मोंकी सिद्धिमें मंत्र
जपनेमें अंगकी न्यूनता होजावे ओह दोषवड
अनर्थ कर्ता है और नामके स्मरणमें न अंग हैं ५
इसकारणसें नामका स्मरण संसारमें सभ
नोंसें वडा है मुनियोंने नामका उच्चारणही
करना पीछे २ निर्णय करा है ५८ इसमंत्र
कों ग्रहण करकें विचरता हुया स्थित होय अ
ड्या चलता फिरता उच्चारण कर्ता है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्मान्नाम्नस्तु माहात्म्यं न कोपि वक्तुमर्हति
यस्य नाम्नि स्मृते भक्तिस्तस्य भक्तिर्हरौ दृढा
४॰ न देव नाम माहात्म्यमद्भुतं यथा पुरा
नमेव कथयिष्यामि ग्रंथान्ते विस्तरादहम्
५॥ इति श्रीभगवद्भक्तिमाहात्म्ये नाममा
हात्म्यवर्णनम् ॥

इसकारणसें नाम का माहात्म्य कोई भी कहने
कों समर्थ नहि है और जिसकी भक्ति नाम के
स्मरणमें है उसीकी भक्ति हरिमे दृढ निश्च
यवाली है ५॰ जिस प्रकार नाम का माहात्म्य
पूर्व समय उत्पन्न हुआ है जिसकी कथा वि
स्तारसें ग्रंथके अंतमे कथन करूंगा ५॥
इह श्री भगवानजीकी भक्तिके माहात्म्यमें
राम नाम उच्चारण का माहात्म्य कथन करा
है ६॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

227

अथ विष्णवग्रे स्तोत्रसहस्रनामपुराणपा
ठमाहात्म्यं पाद्मे क्रियायोगसारे सत्कथाश्र
वणे बुद्धिर्यस्य यस्य प्रवर्तते तस्य प्रवस्य ये वि
ष्णुस्तस्मै विष्णवे नमो नमः १ सत्कथाश्रवणा
देव विष्णुभक्तिः प्रवर्तते तस्य तस्य भवेज्ज्ञा
नं धर्ममोक्षप्रदं विदुः २ प्रभावं वासुदेवस्य
श्रुत्वा तृप्यन्ति ये जनाः ज्ञेयास्त एव देवेशाः
पूज्या दृश्याश्च सत्तम ३ यत्र यत्र महादेव वै-
ष्णवी वर्तते कथा सान्निध्यं तत्र भगवान्न ज-
हाति कदाचन ४ ॥

अब विष्णु भगवान जी के आगे स्तोत्र सहस्रनाम
पुराण के पाठ का माहात्म्य पद्मपुराण के क्रि
यायोगसार में लिखा है जिस जिस पुरुष की
श्रेष्ठ कथा श्रवण करने में बुद्धि है सो २ आप
विष्णु का रूप है हे विप्र तिसके ताईं नमस्कार
होवे २ । श्रेष्ठ कथा श्रवण करणे से विष्णु में भ
क्ति प्रवृत्त होता है और २ जिस २ को भक्ति होता
है तिस २ को धर्म मोक्ष के देने वाला ज्ञान हो
ता है २ जौन से पुरुष वासुदेव भगवान जी का
प्रभाव सुन के मन में प्रसन्न होते हैं हे सत्तम सो
पुरुष देवेश का रूप जानने पूजा के योग्य हैं औ
र देखने के योग्य है ३ हे महादेव जिस २ जगा में
वैष्णवी कथा होती होवे तहां की सानिध्यता
भगवान कदी नहिं त्यागते हैं ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

महाभागवतस्यापिपुराणस्यैकमक्षरं यः
पठेत्परयाभक्त्यागोप्रदानफलंलभेत् ५
अन्यच्चगीताध्यायंपठेद्यस्तुश्लोकार्धंश्लोक
मेववा सर्वपापविनिर्मुक्तोयातिविष्णोःपरं
पदम् ६ विष्णोर्नामसहस्रंतुपूजाकालेतुयः
पठेत् अष्टादशपुराणानांफलंप्राप्नोतिमान
वः ७ नारदीये यःशृणोतिपुराणानिसतत
तंभक्तिसंयुतः तस्यस्याद्विपुलाबुद्धिर्भूप॰
धर्मपरायणाः ८ ॥

जोपुरुषपूजाकेसमयमहाभागवत पुराणका
एकअक्षर भीपरम भक्तिकरकेपाठ करे सोभी
गौके दानकरनेके फलकोंप्राप्तहोताहै ५ औ
रभीलिखाहै गीताका एक अध्याय एकश्लो
क वा अर्ध श्लोक पाठकर्ताहै सो सारे पापोंसे मु
क्त होएआइया विष्णुके परमपदकोंप्राप्तहोता
है ६ विष्णुकासहस्रनाम स्तोत्र पूजाके समय
जोपढताहै सो अठारां पुराणोंकेपाठ करने
के फलकों प्राप्तहोताहै ७ नारदीय पुराणमें
लिखाहै जोपुरुषसर्वदाकालभक्तियुक्तपुरा
णोंकी यथा सुनताहै हेराजन तिसकी धर्म
मे तत्पर वडुत वुद्धि होताहै ८ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यः शृणोति पुराणानि भक्तिमान्प्रयतः सदा
हरिभक्तिर्भवेत्तस्य समस्तगुणदायिनी ७
पुराणश्रवणान्नॄणां बुद्धिर्धर्मे प्रवर्त्तते धर्मा
त्पापानि नश्यंति ज्ञानं शुद्धं च जायते ८· स्कं·
दे वैवस्वतभयं नास्ति न यामरणजन्मनोः
यः कथां कुरुते विष्णोः शालग्रामशि·
लाग्रतः ९ ॥

जो भक्तिवाला पुरुष सर्वदाकाल पवित्र हो·
कर नियमसें पुराणोंकों श्रवण कर्ताहै ति
सकों सारे गुणोंके देनेवाली हरिकी भक्ति
होतीहै ७ पुराणोंकी कथा श्रवण करनेसें
पुरुषोंकी बुद्धि धर्ममार्गमें प्रवृत्त होताहै
धर्मकरनेसें पाप नष्ट होतेहैं और शुद्धनि
र्मल ज्ञान होताहै ८· स्कंदपुराणमें लिखाहै
जो पुरुष शालिग्रामकी शिलाके आगे विष्णु·
भगवानजीकी कथा कर्ताहै तिसकों धर्मरा
जसें भय नहिंहै और मरणेजन्मनेकाभी
भय नहिंहै अर्थात् गेह मुक्त होजाताहै
९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गंधमाल्यादिनैवेद्यैर्धूपदीपैश्चलेपनैः
गीतवाद्यैस्तथास्तोत्रैश्शालग्रामशिला
र्चनम् ॥२ कुरुते मानवो यस्तु कलौ भ
क्तिपरायणाः कल्पकोटिसहस्राणि र
मते विष्णुसन्निधौ ॥३ पाद्मे कार्तिकमा
हात्म्ये कुर्वन्ति ये कथां विष्णोर्ये शृण्वं
ति सुभावतः श्लोकार्धं श्लोकपादं वा ल
भन्ते गोशतं फलम् ॥४ ॥

और जो कोई पुरुष गंध पुष्पमालादि नैवेद्य
धूप दीप लेपन गायन करता है बाजे बजाने
स्तोत्रोंके पाठ करने शालग्रामकी शिलाका पू
जन ॥२ जो मानव करता है भक्तिमें तत्पर कलि
युगमें सो कल्पोंके हजारों क्रोडों वर्ष विष्णुके
समीप सुखभोग भोगता है ॥३ पद्मपुराणके
कार्तिक माहात्म्यमें लिखा है जो पुरुष प्रीति
भक्ति के युक्त विष्णुकी या कथा श्रवण करते
हैं वा आप सुनाते हैं एक श्लोक वा आ
धा श्लोक सो गो दान करनेके फलको
प्राप्त होते हैं ॥४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२२९

न तथा तुष्यते यज्ञैर्न दानैर्गोगजादिभिः
यथा शास्त्रकथालापैस्तुष्यते मधुसूद
नः १५ सर्वधर्मान्परित्यज्य कार्तिके केश
वाग्रतः शास्त्रावधारणं कार्यं श्रोतव्यं
च महामुने १६ श्रेयसा लोभबुद्ध्या वा
यः करोति हरेः कथां शिलाग्रे मुनिशा
र्दूल जनानां तारयेच्छतम् १७ ॥ ॥

इतने प्रसन्न भगवान गौयां हाथी घोड़े
इनके दानों करकें नहिं होते हैं जितने शा
स्त्र की कथा सुनने सुनाने सें मधुसूदन
जी प्रसन्न होते हैं १५ सारे धर्मों कों त्याग क
र कार्तिक महीने में शास्त्र कीयां कथा सु
ननीयां श्रवण करावणीयां चाहिए १६
हे महामुने अपने कल्याण वास्ते जो लोभ
की बुद्धि करकें जो हरि कीयां कथा कार्तिक
में केशव विष्णु जी के आगे करता है वा शा
लग्राम की शिला के आगे करता है सो
अपने पीछे के सौ जनें कों तारता है
वा उद्धार करता है १७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नियमेन नरो यस्तु शृणोति वैष्णवीं कथां कार्तिके
न विशेषेण गोसहस्रफलं लभेत् ॥१८ प्रबोध
वासरे विष्णोः शृणोति यो हरेः कथां सप्तद्वीपव
नीदान फलं स लभते मुने ॥१९ ह्रत्राभविक
थां विलोयेर्चयंति कथाविदं स्वशक्त्या मुनि
शार्दूल तेषां लोकोऽक्षयः स्मृतः ॥२० स्कंदे नि
त्यं वैष्णव शास्त्राणि ये शृण्वंति पठंति च ध
न्यास्ते मानवा लोके तेषां कृष्णः प्रसीदति ॥२१

जो मनुष नियम करके रोज के रोज वैस्नवी कथा-
को सुनता है और विशेष करके कार्तिक महीने
में सो हजार गौवा दान करने के फल को प्राप्त
होता है ॥१८ और जो कोई विस्नु के प्रबोध दिन में
हरि की या कथा सुनता है सो सात द्वीप वाली
पृथिवी के दान करने के फल को प्राप्त होता है ॥१९
जौनसे पृथिवी लोक में विस्नु की कथा करते है
और तिनका जो अपनी शक्ति करके है मुनि-
शार्दूल पूजन करते है तिनके अक्षय लोक
वने रहते हैं ॥२० स्कंद मे कहा है जौनसे पु-
रुष नित्य ही वैस्नव शास्त्रो को सुनते है पढ
ते है और मनुष्य संसार में धन्य है तिनके ऊ
पर श्री कृस्नजी प्रसन्न होते है ॥२१ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१२॰

पठंति वैस्नवं शास्त्रं भक्त्या भागवतं हि ये क
ल्पकोटिसहस्राणि ब्रह्मलोके वसंति ते २२
श्लोकार्थं श्लोकपादं वा श्रुयाद्भागवतं गृहे
सहस्रशतसंख्याकैः किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः
२३ पुराणं वैस्नवं शास्त्रं श्लोकं चैव मथापि वा
श्लोकपादं पठेद्यस्तु गोसहस्रफलं लभेत्
पुनस्तत्रैव श्रोतव्यं विस्नुचरितं विस्नुभक्तैः
सदा नरैः पापक्षयार्थं देवर्षे स्वर्गप्राप्त्यै च
सर्वदा २५ ॥

230

जोनसे परमेश्वर के भक्त वैस्नव शास्त्र जो भागवत
तिसको पढते हैं सो कल्पों के हजारों क्रोडों वर्ष
ब्रह्मजी के लोक में वसते हैं २२ और जो पुरुष
अपने घर में भागवत का एक श्लोक वा आधा
श्लोक वा एक पाद नियम से श्रवण करते हैं ति-
सको सैकड़ों हजारों शास्त्रों के संग्रह करके क्या
प्रयोजन है २३ पुराण जो है वैस्नव शास्त्र तिस-
का श्लोकमात्र जो श्लोकपाद श्रवण करना
अथवा आप पढ़ना हजार गौओं के दान करने के
फल को प्राप्त होता है २४ फिर वहां उसी पुराण
में लिखा है विस्नु की भक्ति करनेवाले पुरुषों ने
सर्वदा काल विस्नु भगवान जी के चरित्र पापों के
नाश करने के लिये और स्वर्ग की प्राप्ति के
लिये सुनने योग्य है २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कंदे नियमेन नरो यस्तु शृणोति विष्णुस
त्कथाः सप्तद्वीपावनेर्दाने यत्फलं तल्लभे-
न्नरः २९ श्रुत्वा विष्णुकथां पश्चाद्ये चार्चयंति
मधुद्विषं स्वशक्त्या मनिशा हूँस्तेषां लोकाः
सनातनाः २७ गीतवाद्येस्तवा स्तोत्रैः शा
लिग्रामशिलार्चनं कुरुते मानवो यस्तु क
लौ भक्तिपरायणः २८ युगकोटिसहस्रा
णि रमते विष्णुसंनिधैः पुस्तकस्याप्यभा
वेन विष्णुनामसहस्रकं स्तवराजं नवविप्रे
द्र गजेंद्रस्य तमोक्षणं २६ ॥ ॥

स्कंदपुराणमें कहा है जो नर नियम करकें विष्णु
की श्रेष्ठ कथा श्रवण कर्ता है सो मनें सात द्वी
प वाली पृथिवी के दान का जो फल है तिसको
लभता है २९ जो विष्णु की पाकथा श्रवण क
रकें पीछे से मधुद्विष भगवानजी को पूजते
हैं अपनी यथा शक्ति करकें तिनके सनातन
लोक बने रहते हैं २७ गायन कर्ता है वा-
जे वजाता है स्तोत्रपाठ कर्ता है शालिग्राम की
शिला की पूजा में जो मानव कलियुग में भक्ति
मे तत्पर होय श्रा होया सो हजारों क्रोड़ युग
विष्णु के समीप रमण कर्ता है २८ जिसके
घर में पुस्तक नहि होवे हे विप्रेंद्र सो विष्णु का
सहस्रनाम स्तवराज गजेंद्र मोक्ष इनका
पाठ करे २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा. ग्राम. १३१

पूजाकाले तु देवस्य गीताध्यायं मनुस्मृतिं
पंचस्तवं महाभाग महाप्रीतिकरं हरेः १०
स्तोत्राणां परमं स्तोत्रं विष्णोर्नामसहस्रकं
कृत्वा स्तोत्रसहस्राणि पठनीयानि सुव्रत
तेनैकेन मुनिश्रेष्ठ पठितेन सदा हरिः प्री २१
तिमायाति देवेशो युगकोटिशतानि च
विहाय गीतवाद्यानि पूजाकाले सदा ह
रेः पठनीयं सदा भक्त्या विष्णोर्नामसह
स्रकम् १३ ॥

231

देवता विष्णुकी पूजाके समय जो गीताका एक
अध्याय भी पढते हैं और अनुस्मृतिको पढ
ते हैं यह जो पांच स्तव हैं सो हरिकी बडी प्रसन्न
करने वाले हैं १० स्तोत्रोंके मध्यमें विष्णुसह
स्रनाम स्तोत्र श्रेष्ठ है हे सुव्रत हजारां स्तोत्र
इकठे करकें पढने योग्य है ११ परंतु तिस स
हस्रनामके एक वार पढने करकें हे मुनि
श्रेष्ठ सर्वदा काल सैकडे युगों पर्यंत देवे
श प्रसन्न रहते हैं १२ सर्वदा काल हरिकी
पूजाके समय गीत वाद्यादि त्याग कर
विष्णुसहस्रनाम भक्ति करके पढना यो
ग्य है १३ ॥ ० ॥

विस्नोर्नाम सहस्राख्यं कलिकाले पठंति ये
वेदानामपि पुण्यानां फलप्राप्तिर्भवेन्नृणां
श्लोकेनैकेन देवर्षे विस्नोर्नाम सहस्रतः प
ठनेन फलं प्रोक्तं न तत्क्रतुशतैरपि २५ मं
त्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं पूजनं हरेः परि
पूर्णं भवेत्सर्वं सहस्रनामकीर्तनात् २९
क्रियायोगसारे स्तोनिस्तोत्रैर्जगन्नाथं ये
भक्त्या वै स्तवीजनः तस्य प्रसन्नो भगवान्
सर्वकामान्प्रयच्छति २

विस्नुका सहस्रनाम कलियुगकें समय जो
पठतेहैं तिनों पुरुषों ने पवित्र वेदोंके पाठ
करनेके फलको प्राप्त होताहै २५ हे देवर्षे स
हस्रनामके एक श्लोक पढनेकर्के जो फल
प्राप्त होताहै सो सैकडे यज्ञोंकर्के भी नहि
होताहै २५ और जो मंत्रोकर्के क्रियाकर्के
हीन जो हरिका पूजन कराहै सो सारही ह
रिसहस्रनामकि पाठ कर्के परिपूर्ण होजा
ताहै २९ क्रियायोगसारमे लिखाहै जो को
ई वैस्नव पुरुष भक्तिके साथ स्तोत्रों कर
कें जगनाथजीकी स्तुति कर्ताहै तिसके
ऊपर प्रसन्नहोएहुए भगवान सारियां ही
कामना पूर्ण कर्तेहैः ३० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्तोत्रपाठकरणे चेतिहासमवतारयति
भक्तमालायां पुनर्भूयः प्रवक्ष्यामि भक्ते
र्माहात्म्यमुत्तमं यस्य श्रवणमात्रेण नरो
मुच्येत संसृतेः १ पूर्वं यः कथितो देवः श्री
धरः स्वामिसंज्ञितः तस्य पूर्वव्यवस्थायां
भक्तेर्माहात्म्यमुच्यते २ स एकदा गृहे तिष्ठ
न्ने शास्त्रार्थपारगः आहूतो धनिनैक
स्मिन्दिने केन विदध्वरे ३ तत्र गत्वा स वानि
श्रीधनानि कतिचिद्द्विजः गृहीत्वा नानि वै
काकी श्रीधरो गृहमाव्रजत् ४ ॥

स्तोत्रादियों के पाठ करणे के फलमें इतिहास क
थन करते हैं भक्तमाला ग्रंथमें फिर अब भक्ति
का उत्तम माहात्म्य कथन कर्ता हूं जिसके श्रव
णमात्रसें पुरुष संसारसें मुक्तिको प्राप्त होता हैं
१ पीछे जो कथन कराया श्रीधर स्वामी तिस
की कथा पूर्व व्यावस्थामैं भक्तिकी कथा क
ही दी है २ सो स्वामी घरमैं ही निवास कर्ता हू
या शास्त्र का चिंतन कर्ता रहता था एक दि
न किसी धन्य साहूकार शिष्यने यज्ञके वि
षै बुलाया ३ तहां जाकर्के ब्राह्मण श्रीधरजी
कितने तरैंके द्रव्योंको प्राप्त होता भया ति
नको लेकर्के एकलाही श्रीधर वनमार्गक
र्कें अपने घरकों आवता भया ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथकेशवार्चने पुष्पमाहात्म्यं तत्राह हारीतः
तुलस्यौ पंकजे जात्यौ केतक्यौ करवीरकौ
शस्तानि दशपुष्पाणि तथारक्तोत्पलानि
च । स्कंधे अपराधसहस्राणि ह्यपराधशता
नि च कमलैकेन देवेशं योर्चयेत्कमलाप
तिं २ वर्षायुतसहस्रस्य पापस्य ऊरुतेत्तयं
पत्रेणैकेन केतक्याः पूजितो गरुडध्वजः ३
सहस्रमब्दं संप्रीतो भवेच्च मधुसूदनः ३
स्वर्णकेतकेपुष्पं योददाति जनार्दने को
टिजन्मार्जितं पापं दहते गरुडध्वजः ४

अब विस्नुकीपूजामें पुष्पचढानेका माहात्म्य
लिखतेहैं जिसमेहरीतका वाक्यहै तिलपत्री
तुलसीपंकज कमल मालाती चंबेली केतकी
करीरे यह दशतरहके पुष्पश्रेष्टहै और ला
लरंगके कमलभी श्रेष्टहै । स्कंद पुराणमें
कहाहै अपराधोंकेहजारों और अपराधोंकैसै
कडे हरहोतेहै उसकेजोदेवतयोंके स्वामी
कमलापतिका एक कमलके साथ पूजन
करताहै २ औरकेतकीकेएकपत्रककैपूजाकरे
होय गरुडध्वजजी दशहजारवर्षके पापोंका
क्षयकरतेहैं ३ औरहजार वर्ष प्रसन्न रहतेहैं
और सोनेका केतकीपत्र बनाके जो जनार्द
नजीको चढाताहै जिसके कोडजन्मके पा
पगरुडध्वजजी नष्ट करतेहैं ४ ॥

सा॰
ग्राम॰
१३३

पुनस्तत्रैव येर्चयंतिजगन्नाथंकरवीरैः
सितासितैः चतुर्युगाणिदेवेद्रःप्रीतोभव
तिकेशवः पाद्मे मंजरीसहकारस्यकेश
वोपरिनारद येर्पयंतिमहाभागागोको
टिफलभागिनः ८ कदंबपुष्पगंधेनकेश
वार्चाहवासिता कोटिजन्मार्जितंपापं
निहंतिनिश्चितंमुने ७ पद्मानिपुसमुत्था
निरक्तनीलोत्पलेनतथा सितोत्पलेवक्र
लस्यदयितानिसदानृप ८॥ ॥

फिर और उसमे लिखाहै जोपुरुषश्वेतरंगके
जोश्यामरंगके करीरपुष्पोंकर्के जगन्नाथजी
कों पूजतेहैं तिनके ऊपरकेशवजी चारयुग
प्रसन्नरहतेहैं ५ पद्मपुराणमेलिखाहै हेनार
द आम्र वृक्षके पुष्पोंकीमंजरी जोंनसें वडे
भगवान केशवजीके ऊपर चढातेहैं सोक्रो
ड़गोवादान करनेके फलभागी होतेहैं ६॥
और कदंबके पुष्पोंकीसुगंधिकर्के भगवानकी
प्रतिमासुगंधिवाली करीहै हेमनेतिनके को
टि जन्मोंमे इकट्ठे करे होऐ पापोंकोभगवान
हरकरतेहैं ७ औरजलमें उत्पन्नहोएहोए जो
कमल औरलालपत्रों वालेकमलनीले कम
ल औरश्वेतकमल सर्वदा काल हेराजा
जोकोंप्यारेहैं ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

किमत्र॒ह्नकार्यंवो॒यदर्थ॒मिह॒निष्ठत नि
वसिष्यथचेद्यवसताञगृहेमम १२३
त्युक्ताश्रीपरेशायतेहिचोराइदंवचः न
वलमिच्छामवयंत्वयासहसमागताः
मार्गेऽत्राद्यचयौवीरोश्यामगौरकलेव
रौचापवाणधरौधीरावागतौत्तौनौवण
सह १५ नौवयंद्रष्टुमिच्छामःक्वगतौतौ
प्रदर्शय दृष्ट्वातौसुंदरौवीरौगच्छामोय
नसंशयः १९ ॥

इहां तुमारा क्या काम है कि जिसवास्ते बै
ठेहो जेकर निवासकरने की इच्छा है त
द घरमे चलो बैठो निवास करो १३ इस
प्रकारश्रीधरजीनेकथनकरेसोय चोरपे
से कहते भये हमकों निवासकरनेकी
इच्छा नहि है ओही है हम जो तुमारे साथ
आये हैं १४ मार्गकेवीच श्याम गौरकलेव
रवाले जिनों दोसूरवीरों को देखते भये
धनुषवाणधारे हुई तुमारे साथ आया
करेथे १५ उनकों हमदेखनेकी इच्छा
वाले है ओह कहांगये हैं उनकोदिखा ह
मारेकों उन सुंदर स्वरूप वाले सूर वी
रों को देखके हमचले जावेंगे १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा· ग्राम· १२५

234

श्रुत्वा तेषां वचो विप्राः श्रीधरः प्राह तान् पुनः
अहो किं वदतास्चर्यं यूयं सत्यवचः किमु १७
केयूयं कुत्रवो वेश्म कावा ह निरिहास्थितिः
ब्रूत सत्यं ततो हं वो दर्शयिष्यामि संशयम् १८
इति श्रुत्वा वचस्तस्य चोराः सत्यं वभाषिरे
वयं विप्रकुले जाता धर्मकर्मविवर्जिताः
स्थिता नस्मिन्वने चौरहत्यास्माकं तु जीव
नं दृष्ट्वा वयं भवंतं तेनो सधनं हिंसितुं द्रुताः
२०

तिनका वचन सुनके श्रीधर ब्राह्मण तिनकों
फिर कहने लगा यह बात तुम सत्य करते
हो वा झूठ है बडा आश्चर्य है मैने नहि देखे
हैं तुमने कैसे देखे १७ तुसी आप कोन हो
तुमारा घर कहां है क्या तुमारी उपजीवका
का है तुम सत्य कहो तद मैं दिखावता हां
इसमें संशय मत जानो १८ ऐसा वचन तिस
का सुनके ओह चौर सत्य ही कहते भये हे ब्रा
ह्मण हम ब्राह्मणों के घर जन्मे हो पए हैं और
धर्म कर्म करके वर्जित हैं १९ तिस वन के
मध्य में निवास करते हैं और चौर वृति करके ह
मारी जीविका है हम सारे हि तुमारे कों धा
न के समेत देख कर मारणे कों पीछे आ
ये हे २०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

समायान्तास्तदादृष्ट्वावीरौचापशरोद्यतौ
भीषयंतौततस्तावस्मास्तद्भयेनवयंपुनः २१
नहिंसितौभवांस्तौतुतयासहसमाग
तौ प्रविष्टौगृहंतौरितौनदृष्टौतौपुन
र्द्विज २२ इतिश्रुत्वावचस्तेषांश्रीधरो
विनयान्वितः प्रणम्यधन्याइत्येवंतरसमु
वाचपुनःपुनः २३ ततस्तेतमपृच्छंत
किमिदंभाषसेद्विज तौदर्शयमहाभाग
प्रतिज्ञातंपुराद्विज २४ ॥

तिससमयधनुषवाणधारणेवाले वीर२
हमारे कों पीछे आउते देख कर हमारे
कों भयदेते हुए पीछे चले हम तिनके
भयकरके तुमारेकों मारनहिं सकते भये
२१ तिनकेभयसें हमने नहिंमारा सोपीछे २
तुमारे घरमें प्रवेश करते भये फिर नहिं
देखे २२ यह वचन तिनका श्रवण कर
श्रीधर नम्रता कर युक्त तिनकों प्रणा
म कर कहने लगा तुम धन्यहो २ ऐसेवा
रं वार कहता भया २३ तब वोह पूछ
ने लगे हे द्विज यह क्या कहता हैं हे म
हाभाग तैने पहले प्रतिज्ञा करी है अब
तूं दिखा २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रुत्वैतद्वचनं तेषां श्रीधरः प्राह तान्पुनः । अ
हो न नो गृहे तौ मे भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ २५
ज्ञात्वात भवतो हं वै हिंसितं मां समागमात्
तदा श्रीरामकवचं मपठं विपिने भयात् २६
रक्षितुं मां समायातौ देवौ तौ भक्तवत्सलौ
ग्रामपर्यंतमायातौ तावंतर्द्धानं गतौ तदा २७
धन्या भवंतः पुण्या वै भाग्यवंतो नसंशयाः
येर्हष्टौ जगतां नाथौ लोचनै रामलक्ष्मणौ
२८

यह वाक्य फिर तिन का श्रवण कर श्रीधरजी क
हने लगे ओह राम लक्ष्मण दोनो भ्राता है न सो वो
मेरे घर नहि हैं २५ जिस समय वन के मध्य में
तुम मेरे मारणे को पीछे आये तद तुम को
चोर जान के मैं उस समय श्रीराम कवच का
पाठ कर्ता भया वडे भय सें २६ ओह भक्तवत्स
ल देवता ग्राम पर्यंत मेरी रक्षा के लिये आए
फिर वो दोनो भ्राता छिप गए हैं २७ तुसी धन
य हो वडे पुण्यवान हो भाग्यों वाले हो जिनों
ने रह आपने नेत्रों कर के जगत का नाथ
देखे हैं २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अभ्यर्च्यकुंदपुष्पैश्चकेशवंकल्मषापहं प्रया-
तिभुवनंविष्णोःसिद्धचारणसेवितं २४ अ-
शोककुसुमैरभ्यर्च्यजनशोकभयापहं पूजयि-
त्वाहरिंविष्णोःपदंयातिसनातनं २५ तिल-
कस्योज्वलैरभ्यैःपुष्पैःसंपूज्यकेशवं धूतपा-
पोनिरातंकःकृष्णस्यानुचरोभवेत् २६ मंज-
रीसहकारस्यकेशवोपरिनारद अर्पयन्ति
नरःसप्तकोटिपुण्यफलंलभेत् २७ पुष्पै
पुष्पमहत्पुण्यंकोमलैश्चनारद तुलसी
दलसंमिश्रंपवित्रंकेशवार्चने २८ ॥

औरकुंदकेपुष्पोंकर्केपापोंकेनाशकरनेवालेके-
शवजीकों पूजनकर सिद्धचारणोंकर्के युक्त
जो लोकहै विष्णुभवन तिसकों जाताहै २४ और
लोकोंके शोक मोह भय इनके हरकरनेवाले दे-
वताहरिकों रमणीक अशोक पुष्पों कर्के पूज-
नकर सनातन विष्णुके लोकमे जाताहै २५ के-
शवजीकों रमणीक तिलकवृक्षके उज्वल पुष्पों
करके पूजनकर धूतपाप क्याहै धोते गए पाप
जिसके एसा ओर दुःखोसे रहित होए आहूया श्री
कृष्णजीका अनुचर होताहै २६ हे नारद आम्रवृ-
क्षकी मंजरी जो कोई केशवजीके ऊपर चढाता
है सो कोड़ यज्ञ करनेके पुण्यका जो फल तिसकों
लभताहै २७ हे नारद नारायणजीके ऊपर कोमल
पुष्प चढानेका तो बहुत ही पुण्यहै परंतु तुलसी
दलके साथ मिलाहूया केशवजीकी पूजामें बडा
पवित्रहै २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१३०

236

अगस्त्यकुसुमैर्देवं येचयंति जनार्दनं तेषांत
दर्शनादेव नरकाग्निः प्रशाम्यति ४९ नत
करोति विप्रेंद्र तपसा तोषितो हरिः यत्करो
ति हृषीकेशो मुनिपुष्पैरलंकृतः ५० विहा
य सर्वपुष्पाणि मुनिपुष्पेण केशव का
र्तिके योर्चयेद्भक्त्या वाजपेयफलं लभेत् ५१
मुनिपुष्पकृतां मालां प्रियच्छति केशवे
देवादयोपि भक्तिं च कुर्वंते नस्य शंकया ५२

जो पुरुष देवता जनार्दनजी कों अगस्त्यमुनि
के पुष्पों करकें पूजन कर्ते हैं तिनके दर्शनमें से
सो जो पापरूप नरकाग्नि है सो शमन होती है
हे विप्रेंद्र तपकरकें प्रसन्न करे हो ए हरि सो फ
लन हि देते हैं क्या देते हैं जो फल अगस्त पुष्पों
के साथ अलंकृत क्या शृंगार करे हो ए देते हैं
५० सारे तरों के पुष्प त्यागकर कार्तिक महीने
में मुनि अगस्त पुष्पों के साथ जो पूजन कर्ता
है केशव भगवानजी का सो वाजिमेध यज्ञ
के फल कों लभता है ५१ और जो कोई पुष्प
मुनि अगस्त पुष्पों की बनाई होई माला के
शवजी कों देता है तिसके भय की शंका क
कें देवता लोक उसकी भक्ति कर्ते हैं ५२ २९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इतिश्रुत्वावचस्तस्यश्रीधरस्यचतस्कराः
अस्त्राणिचूर्णयित्वातेवैराग्यंपरमंययुः २६
नमस्कृत्यचतेविप्रंश्रीधरंविनयान्विताः
यत्कृपयागतासर्वेचिंतयंतस्ततोमुदा २७
तेपियातामहाभक्ताश्चौराअपिकलौयुगे
तस्माद्भक्तिसमंनास्तिनृणांसुखकरंभुवि
२८ इतिश्रीभगवद्भक्तिमाहात्म्ये स्तोत्रा
दिपाठमहिमावर्णनं ॥

इहतिसकावचनसुनकर सारेहीचौर अपने
अपने शस्त्रार्थतोडकरपरमवैराग्यको प्राप्त
होतेहैं २६ औरसो चौरश्रीधरब्राह्मणको
नम्रताकरयुक्तप्रणामकर स्तुतिकरके ति
नके स्वरूपको चिंतनकरते २ अपनी २ इच्छा
पूर्वक चलेजातभये प्रसन्नतापूर्वक २७ सो
ऐसे निर्दय चौर कलियुगमें महाभक्त होजा
तेभये तिसकारणसे भक्तिकेसमानसुखक
रनेका उपाय पृथिवीमें और नहिंहै २८ यहभ
गवानकी भक्तिकीमहिमामें स्तोत्रपाठकी
महिमाकावर्णन समाप्तहुया ॥ अबवि
ष्णुकीपूजाकरनेकोमहिमाकावर्णनलिखाहै
गरुडमे कहाहै मनको विषयों सेहटायकर
एकस्थानमें निश्चलकरनावास्थापनकरा
ना उनमनकीस्थितिकानामधारणाहै औरउ
सीमनकी निर्गुणब्रह्ममे स्थितिहोवेकाउस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ विष्णोः पूजाप्रशंसा वर्णितं गारुडे मनो
पतिभिः पूज्या स्यात्समाधिब्रह्मणोस्थितिः
अमूर्त्तो चेत्स्थिरा न स्यात्ततो मूर्त्तिं विचिंतयेत्
सा च चतुर्विंशतिमूर्त्तिः शालिग्रामशिलास्थि
ता द्वारकादि शिलासंस्था ध्येयः पूज्योथवा ह
रिः २ बृहन्नारदीये हरिपादार्चनरताः प्रयां
ति परमं पदमिति ३ पाद्मे नित्यार्चनं हरेर्ये
न पितृवर्य्य मुनिसत्तम गंगायां पिंडदानं त
त्कृतं तेन दिने दिने ४ ॥

ब्रह्म है निश्चल होकर लगे जद उसकों समा
धि कहते हैं जेकर ओही मन अमूर्त क्या निरा
कार ब्रह्म है स्थिर नहि होवे तद मूर्ति क्या है
साकार ब्रह्म जिसका चिंतन करे । सो साका
र ब्रह्म कीयां चौवीस मूर्त्तियां शालिग्राम की
शिला में स्थित है और सो भगवान् द्वारका से
आद लेकर जो उत्तम तीर्थ हैं तिन में उत्पन्न होई
हुई आ शिला के मध्य मे स्थित हरि ध्यान करने
योग्य है अथवा पूजने के योग्य है २ बृहन्ना
रदीय मे लिखा है हरि के पादपद्म पूजने मे प्री
ति वाले पुरुष परमपद कों जाते है ३ पद्म
पुराण मे लिखा है हे मुनियों मे श्रेष्ठ पितरों
निमित्त जिसने प्रतिदिन हरि का पूजन
करा है तिस पुरुष ने दिन २ मे पिंडदान
करा है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पितॄनुद्दिश्ययैःपूजाकेशवस्यकृतानरैः
हित्वातेनारकींपीडांदिवंयांतिपितामहाः
स्कंदे कार्तिकमाहात्म्ये केशवस्य च पूजा
भिः कार्तिके स्नानमात्रतः नरकान्मुक्ति
मायांति पितरः सपितामहाः ६ धन्यास्ते
मानुषेलोकेकलिकालेविशेषतः येऽर्चयं
ति हरेः पूजां पित्रर्थं पूजयंति यो ७ किं द
नैर्बहुभिः पिंडैर्गयाश्राद्धेन वा पुनः यैरा
र्चितो हरिर्भक्त्या पित्रर्थं च दिने दिने ८ ॥

पितरोंका उद्देश करकें जिन पुरुषोंने केशवजी
कीपूजा करीहै तिसके पितर नरकोंकी पीड़ा
त्याग कर स्वर्गकों जातेहैं ५ स्कंद के कार्ति
कमाहात्म्यमें लिखाहै पितरोंके निमित्त कार्ति
क महीनेमें केशव भगवान्‌ जी की पूजा करकें
और स्नान मात्र करकें पितामहादियों के स
हित पितर नरकों सें मुक्तिकों प्राप्त होताहै
६ मनुष्यलोकमै जेह पुरुष धन्यहैं औ
र कलिकालमें विशेष करकें धन्यहै जौन सें पुरु
ष हरिकी पितरोंके निमित्त पूजा करतेहैं ७
और पितरोंके निमित्त विष्णुकी पूजा दिन २
करीहै तिनौंने तिनकों गयामें बहुत पिंड
दानें करकें क्या प्रयोजन नहै ८ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
२३८

निमित्तं यो हरेर्येन पित्रर्थे मुनिसत्तम ग
यायां पिंडदानं च कृतं तेन दिने दिने ९ यमु
द्दिश्य हरेः पूजा क्रियते मुनिपुंगवः उद्धृ
त्य नरकात्तं तं नयेदात्मपदं हरिः १० क्रि
यायोगसारे अनेन विधिना विप्र प्रतिमा
सं जनार्दनं संपूज्य भक्तिभावेन मुक्तिमा
प्नोति मानवः ११ किं वा धनेन विप्रर्षे पूजा
या जगतीपतेः भक्तिसंतुष्टचित्तस्य भक्ति
रेवात्र कारणम् १२ ॥

हे मुनि सत्तम पितरोंके निमित्त जिसनें हरि
की पूजा करीहै सन्नेतो दिन २ मे गयामे पिंड
दान करेहैं न ९ हे मुनिपुंगव जिसका उद्देश
करकें हरिकी पूजा करीदीहै उसकों नरकों
सें निकालकर हरि अपने पदकों लेजातेहैं
१० क्रियायोगसारमे लिखोहै हे विप्र इस वि
धि करकें महीनेके महीने जनार्दनजीकों भ
क्तिभाव करकें पूजन कर पुरुष मुक्तिकों
प्राप्त होताहै ११ हे विप्रर्षे जगतके पति वि
ष्णुकों धनके साथ क्या प्रयोजन है क्योंकि
भक्ति करकें संतोष मन वाले कों भक्ति
ही कारण है १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मूर्खो वदति विस्नाय विद्वान्वदति विस्नवे द्व
योरपि समं पुण्यं भावग्राही जनार्दनः ।२
विधिहीनाम पि श्रेष्ठां पूजां श्रीकमलापतेः
यः कुर्याद्भक्तिभावेन सोपि स्यात्केशवप्रियः
विधिज्ञो विधिना विस्नुमभ्यर्च्य यत्फलं लभेत्
अविधिज्ञोपि विप्रेंद्र भक्त्या तत्फलं लभेत् ।४
यस्य वै यावती भक्तिर्देवदेवे जनार्दने ताव
त्येव फलावाप्तिस्तस्य नास्त्यत्र संशयः ।६

मूर्ख पुरुष विस्नाय नमः ऐसे कहता हैं और बुद्धिमा
पुरुष विस्नवे नम ऐसे कहता है परंतु दोनो कों एक
समपुण्य होता है क्योकि जनार्दन भगवान भाव
कों ग्रहण कर्ते है न क्या भक्ति में दृष्टि रखते है ।२
और जो कोई पुरुष कमला लक्ष्मी के पति विस्नुकी
पूजा विधि कर्के हीन कर्ता है और जो कोई विधिस
र्वक श्रेष्ट पूजा कर्ता है भक्ति प्रीति भाव कर्के सो
दोनो ही एक जैसे केशव जी कों प्यारे होते है ।४
हे विप्रेंद्र शास्त्र वेत्ता विधि के जानने वाला जो पु
रुष विधि कर्के विस्नु कों पूजन कर जौनसा फल
लभता है सोई फल भक्ति वाला पुरुष विना विधा
न के पूजन कर उसी फल कों लभता है ।५ औ
र जिस पुरुष की देव देव जनार्दन जी मे जित
नी क भक्ति प्रीति होवे उतने ही फलों की ति
स कों प्राप्ति होती है इसमे संशय नहि है ।६॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ज्ञानमूलं सैव भक्तिर्भक्तिमूलं जगत्पतिः पू
जा मोक्षद्रुमोत्पत्तौ मूलं माराधनं हरेः ७ अ
णुमात्रमपि श्रद्धः श्रद्धया कुरुते यदि नर
स्तयं भवेत्सर्वं श्रद्धाधीना क्रिया शुभा ८ भक्त्या
यः पूजयेद्धि स्कृं वारमेकमपि द्विज स्वस्थानं द
दते विस्युंततो भक्तिवशो हरिः ९ अभक्त्या
या हरेः पूजा क्रियते भुवि मानवैः सा पूजा
प्राप्नोत्यशेष पूजाकाले वहन्निवे १० ॥

ज्ञानका जो मूल है सोई भक्ति है और भक्ति का मू
ल जगत्पति विष्णु है और पूजा जो नर से है सो मोक्ष
का वृक्ष है तिस वृक्ष की उत्पत्ति का जो मूल है सो
हरि का आराधन है क्या सेवा है ७ प्राज्ञ जो
बुद्धिमान् पुरुष होय जेकर श्रद्धा करके कछु
थोडा भी करे तद सो कर्म नाश रहित हो जाता है
क्योंकि सम्पूर्ण जो क्रिया है न सो श्रद्धा के हि अधी
न है ८ हे द्विज श्रद्धा श्री जि करके विष्णु को जो
एक वार भी पूजता है तिस को भगवान् जी
स्वस्थान वैकुंठ देते हैं जिस कारण से भक्ति के
ही वशी भूत हरि है ९ और विना भक्ति के जो
न सी पूजा पृथिवी में है मनुष्यों ने करी दी है
सो पूजा उसी पूजा के समय ही फल प्राप्त
कर्ता है फिर नही उसका फल होता
है १० ॥ ~ ॥

239

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुनस्तत्रैव हरिं संपूजयेद्यस्तु पशुपाशवि
मोचनं सर्वेंतरायानश्यंति मनःशुद्धिश्च जा
यते २१ संसारेस्मिन्महाघोरे मोहनिद्रास
माकुले ये हरेः शरणं यांति कृतार्थास्ते न
संशयः २२ यावन्नायाति मरणं यावन्नाया
ति वै जरा यावन्नेंद्रियवैकल्यं तावद्देवार्च
येद्धरिम् २३ सर्वतीर्थानि यज्ञाश्च सर्वे वेदा
श्च सत्तमाः नारायणार्चनस्यैते कलां नार्हं
ति षोडशीम् २४

फिर उसी बृहन्नारदीय मे लिखा है कि जो पुरुष
पशुयों के पाशमुक्त करनेवाले हरि को भक्ति कर के
पूजन करता है तिसके सारे जो अंतराय हैं विघ्न
सो नष्ट होजाते हैं और मन को शुद्धि होती है २१
मोह अज्ञान निद्रा आलस्य इनों कर के भरे होए
इस महाघोर संसार में जो हरि की शरण को
प्राप्त होते हैं सो कृतार्थ रूप हैं इस मे कुछ सं
शय नहि है २२ जितना काल मरण का समय
नहि आया और जितना काल वृद्धावस्था नहिं
आई और जितना काल इंद्रियों की व्याकुलता
क्या शिथिलता नहि होई उतना काल इंद्रियों
की पर्यंत हरि का पूजन करे २३ हे सत्तमाः सारे ती
र्थ और यज्ञ और सारे वेद इनके करने का फ
ल हरि के पूजा की सोलवी कला को नहिं
प्राप्त होते हैं २४ ~ ॥

मा.
ग्राम.
२५.

सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते वेदा
च्छास्त्रं परं नास्ति न देवः केशवात्परः २५ सत्यं
वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनः पुनः असा
रे चैव संसारे सारं वै विष्णुपूजनम् २६ यो भा
रतभुवं प्राप्य विष्णुपूजापरो भवेत् न तस्य
सदृशो लोके यथा वै रवितेजसः २७ अद्यापि
देवा इच्छन्ति जन्म भारतभूतले कदा पुण्ये
न महता प्राप्स्यामः परमं पदम् २८ ॥

240

व्यासदेवजी कथन करते हैं संसार के लोकों हनो में
भुजा उठाय कर सभ कों सुनावता हूं वारंवार सत्य
कहता हूं २ कहता हूं क्या वेद शास्त्र में परे और दूस
रा शास्त्र नहि है और केशव विष्णुजी से परे श्रेष्ठ
देवता कोई नहि है २५ मैं सत्य कहता हूं सभ के
हितकार कहता हूं और सार वाक्य क्या है तथ्य
वचन सो कहता हूं सार से विना संसार मे विष्णु
की पूजा करनी सार है और कछु नहि है २६
जो पुरुष भारखंड के भूमि में प्राप्त होकर विष्णु
की पूजा करने में तत्पर होता है तिसके समा
न लोक मे दूसरा कोई नहि है जैसें सूर्य के
तेज समान और तेज कोई नहि है २७ देखा के
सा भारतखंड है जिसमें स्वर्गनिवासी देवता
आज तक भी भारभूमि में जन्म धारणे की इ
च्छा करते हैं क्या कहते हैं की किस समय कि
सी वडे पुण्य के प्रभाव करके हम भारतरूपी
परमपद में प्राप्त होवेंगे क्या जन्मेंगे २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दानैर्वा विविधैर्यज्ञैस्तपोभिर्वाधिशायिनं
पूजयित्वा कदामो पद्वैपदं निरस्त्रयः २१
पाद्मे कार्तिकमाहात्म्ये पृथुनारद संवादे
नेतिहासमवतारयति पृथुरुवाच हरि
पूजनमाहात्म्यं श्रोतुमिच्छामहे मुने त्वत्तो
धर्मभृतां श्रेष्ठ सर्वमाख्याहि तत्वतः १ श्री
नारद उवाच परोपहास्यमुद्दिश्य करोति
हरिपूजनम् सयाति वैष्णवं धाम किंपुनः
श्रद्धयान्वितः २ अत्राप्युदाहरंतीममिति
हासं पुरातनं भस्मकेशो महापापी यथा
लोभे परां गतिम् ३ ।।

ऐसी इच्छा स्वर्ग के लोक करते हैं नकी पसाको नसाके
ईशान हैं और अनेक तरों के यज्ञों करके तपों करके अ
भिशायि विष्णुजी को पूजन कर कदे हम भारतवर्ष
मे जावेंगे जिस को सूरि विद्वान् लोक देखते हैं २१
पद्मपुराण के कार्तिक माहात्म्य मे पृथु नारद के सं
वाद करके इतिहास कथन करते है पृथु राजा नारद
जी के प्रति कथन करता भया हे मुने तुमारे से अब
हरी की पूजा का माहात्म्य श्रवण करने की इच्छा करता
हूं हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ तत्व से मेरे प्रति आप कथन
करी १ नारद जी कहते भए हे राजन् कोई दूसरा जो हरि
का पूजन करता होए उसके साथ हांसी करने को मान
ने उसके पूजा की नकल करे ओह पुरुष वैष्णव लो
क में प्राप्त होता है और जो निश्चिक करके श्रद्धा करके पू
जन करे उसके वास्ते तो क्या कहना की किस पद को
प्राप्त होता है २ इस वात में प्राचीन इतिहास कथन क
रता है जिस प्रकार भस्मकेशव नामा महापापी परम ग
ति को प्राप्त होता भया ३ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्का॰
क्षेम॰
२५८

251

कलिंदपर्वते रम्ये नाम्ना दीर्घपुरं शुभं तत्र
राजा नितिधर्मात्मा सत्यवाक्‌ सोमवंशजः ४
ब्रह्मण्यो विष्णुभक्तश्च प्रजापालनतत्परः
तस्यात्मजो धूम्रकेशो ज्येष्ठो राजेंद्र रूपवान्
क्रीडन्स बालकैर्दुष्टैर्दुष्टसंगात्स दुर्मतिः द्यू
तक्रीडारतो नित्यं तदर्थं तस्करायते ६ मू
ढः पिबति मद्यं च यौवने मत्स्यमांसभुक्
मार्गयन्नागरीनारीर्विटयूथसमन्वितः ७

रमणीक क्या सुंदर जो कलिंद नामा पर्वत तिस
में दीर्घपुर नाम करके एक नगर वसता था
तहां का राजा चंद्रवंशी वड़ा धर्मात्मा सत्यवाक्
नाम करके राज्य करता था ४ कैसा सो राजा ब्रा
ह्मणों को मानने वाला विष्णु भगवान जी का
भक्त और धर्म से प्रजा के पालन करने में त
त्पर था हे राजेंद्र तिस का वड़ा पुत्र वड़े सुंदर
रूप वाला धूम्रकेश नाम करके होता भया ५
सो दुष्ट बुद्धि वाले बालकों के साथ क्रीड़ा करता
हुया दुष्टों के संग वश से दुष्ट बुद्धि सो भी द्यू
त क्रीड़ा में आसक्त होता भया और तिस के
निमित्त चोरी करता भया ६ और मद्य म
द्यपान करता भया युवा अवस्था में मत्स्य का मा
स खाता भया और दुष्टों के यूथ कर युक्त
नगर कीयां स्त्रीयां ढूंढता फिरता था ७॥

इतिकाभिः छलेनापि यत्नेन च बलेन च अ-
गम्या ब्राह्मणीश्चापि नात्यज काममोहितः
पिताश्च तातेन कर्मशासनेनाऽनेबहुः अ-
कार्षीन च तस्याभूत्स्वभावं कर्तुमन्यथा ६
कदाचित्कंदुकक्रीडां कुर्वमानेन कंदुकः अ-
हितो राजभवने आगात्तस्यानिरीक्षया ७
स्वयं पश्चाद्गतस्तेन बनवोप्या राजभोगिनी
नद्दिमातातस्यातस्वरूपदर्शनमोहिता ॥

उसराजकुमारनेनगरकीयां सुंदरस्त्रियां इतियां
के द्वाराजाछलकर्के वलात्कारसें भी अगम्या ब्राह्म
णीयां इतरजातियों वालियां काम कर्के मोहित
होयने किसीकोंनहि त्यागया सभनोंकेसाथ भो
गविलास कर्ताभया ८ तद उसके पिताने उग्र
कर्मनिसका अवणाकर बहुत तरेंकीभी ताडना
करी तदभी उसके सभावके श्रेष्ठ करने कोंस-
मर्थ नहिहोताभया ६ ऐसेही बालकोंकेसाथ
खिन्नू खेलते हुए तिनोंके तद उस राजकुमार
ने खिन्नू ताडन कर्के बालकोंके पाससे हटेया तद
सो खिन्नू राजाके अंदर महलोंमे पडा तो उस
के देखनेकों पीछे चलागया ७ जद आपराजा
का पुत्र उहां पीछे खिन्नूके लेनेकों गयातो
उहां नवीन व्याही हुई राजाकी राणी उसकी
विमाता मौत्रेयां सो उसकों देख कर मोहि
त होगई ॥ ८ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२५२

हृष्टः कंदुकं तस्मै दर्शयंती पुनः पुनः। सा
व्रीडहास्यभावेन प्रोवाच मधुराक्षरम्॥२॥ आ
गत्य गृहाणेमं कंदुकं चयनं तथा य
यदिच्छसि तत्सर्वं दास्यामि नृपनंदन ॥३॥
इत्येवमारिक्ष्णिकर्णरोचनं वाक्यं हितं
तस्या मधुरं महाविदः अंधीकृतात्मा बुबुधे
न पातकं प्रविश्य गेहं द्रुतमालिलिंग तां
ज्ञात्वा च नृपतिस्तस्य कर्म चात्यंतदारुणं
देशान्निस्सारयामास स्नेहान्हत्येन नावधत्

सो हित होई हुई सो हर्ष से ही तिस को नाई खिन्न दि
खाती होई ओ हुवा है २ और लज्जा के सहित हा
स्य कर युक्त भाव को धारन करकैं मधुर वाणी करकैं
कहती भई ॥२॥ क्या हे राजकुमार इहां मेरे पास आ
के इस खिन्न को भी ले और जिस २ की इच्छा कर
ती है सो भी ले यतन भी ले ॥३॥ इस तरां के वाक्य व
र्णों को सुख देने वाले तिस के मधुर वचन सुन
सो महा विद कामदेव कर अंध होय आ हुया
आत्मा जिस का सो पाप को नहि जानता हुया
उस के घर में प्रवेश कर शीघ्र तिस को लिंग
न कर्ता भया ॥४॥ तद तिस का अत्यंत वड़ा उ
ग्र कर्म जान कर राजा पिता उस को अपने दे
श सें निकाल देता हुया क्योंकि सो वध के
योग्य था परंतु पुत्र के स्नेह सें नहि मारेया ॥५ २

निःसारितो गृहाद्राज्ञा सुभद्रकेशो नृपात्मजः
वने विवेश व्रीडार्तो निर्जने फलमूलभुक् १६
दस्युकर्मरतो नित्यं पथिकान्लुंठितुं रति
ततो निराजभीत्या च दूरे च गहने वनम् १७
गच्छन्वनान्तरं प्राप्तो दैवाद् वृंदावनं शुभं
तत्रावात्सीद्दिवा मिथ्या रात्रौ मधुपुरीं ययौ १८
चौर्यार्थं ददृशे चित्रं वैश्यासद्म सुशोभितं
वेश्यां च रूपसंपन्नां दृष्ट्वा तस्यां बबन्ध मन १९
चौर्येण धनमानीय तस्यै दत्वा गृहे वसन्
दिवा वृंदावनं याति राजकुलैरलक्षितः २०

सो राजकुमार सुभद्रकेश राजाने घरसे निकालाहु
या लज्जाका मारा फलमूल खानेवाला वनमें प्र
वेश कर्ता भया १६ उस निर्जन वनमें चोरीके क
रनेमें रत और रस्ते आउनेवालेयोंको लूटता भ
या तो उस वनमेंसें भी राजाके भय करकें वडे दूर ग
हन वनमें चला गया १७ फिर ऐसें ही वनसें वनां
तरोंमें जाता २ प्रारब्ध वश करकें वृंदावनमें चला
गया तहां जाकर दिनमें तो वृंदावनमें रहना रात
कों मथुराजीमें चले जाता भया १८ उहां एक चो
री करनेकों वडा सुंदर शोभायमान वेश्याका घर
देखा और रूपयुक्त वेश्याको देखकर आसक्त मनवा
ला होता भया १९ तद फिर क्या करने लगा चोरी क
र्कें धन ल्यावना उसकों देकें उहां उसके घर निवास
कर्ता भया दिनमें वृंदावन चले जाता भया परंतु रा
जाके कुलवालों करकें अलक्षित क्या उनको उसवा
त की खबर नहि २०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिंधुदेशोद्भवो विप्रो नाम्ना सत्यव्रतः सुधीः
विरक्त इंद्रियार्थेभ्यस्त्यक्त्वा पुत्रगृहादिकं २१
वृंदावने स्थितः कृष्णमाराधयद्दिवानिशं
तिः स सत्यव्रतो विप्रो निर्जने विग्रमानसः २२
कार्त्तिके पूजयामास प्रीत्या दामोदरं नृप
तृतीयेह्नि सकृत्कंदुकैः पत्रैर्मूलफलैस्तथा
पूजयित्वा हरिं स्तौति प्रीत्या दामोदराभिध
म् २३ ॥

उहां वृंदावनके मध्यमें सिंधुदेशका जन्मा हुया
ब्राह्मण विद्वान् सत्यव्रत नाम इंद्रियोंके सुखसें
विरक्त होरह्या हुया स्त्रीपुत्रगृहत्यागकर निवास
कर्ताथा २१ वृंदावनमें स्थित होके दिनरात कृ
ष्णजीकों आराधन कर्ताभया केसाथा जिसके
पास कछु नहिं पैसा सो सत्यव्रत ब्राह्मण सावध
न मनवाला निर्जन वनमें २२ कार्तिकमही
ने प्रीतिभक्ति कर्के हे राजन दामोदरजीका
पूजन कर्ताभया तीनीसरे २ दिन एकबार
फलमूल पत्र जो कछु मिलजावे सो भोज
न करलेताभया २३ और नारायणका पूज
न कर्के वडी प्रीतिसें दामोदरजीकी स्तु
ति कर्ताभया सो स्तुति अब आगे कथन
करेंगे २४ ॥

सत्यव्रतउवाच नमामीश्वरंसच्चिदानंदरूपं
लसत्कुंडलंगोकुलेभ्राजमानं यशोदाभि
यालूखलेधावमानंपरामृष्टमत्यंततोद्रुत
गोप्याः २५ रुदंतंमुहुर्नेत्रयुग्मंमृजंतंक
राम्भोजयुग्मेनसातंकनेत्रं मुहुःश्वासकं
पंत्रिरेखांककंठस्थितंग्रैवदामोदरंभक्ति
बंधम् २६ वरंदेवदेहीशमोक्षावधिंवा
नचान्यंवृणोहंवरेशादपीह इदंतेवपुर्ना
थगोपालबालंसदामेमनस्याविरास्तांकिम
न्यैः २७

सत्यव्रतकथनकर्त्ताभया सच्चिदानंदरूपी ईश्वरकों
नमस्कारकर्त्ताहुं कैसेहैंन शोभायमान कुंडलमा
त्रोंमें जिनके औरफिरकैसेहैंन गोकुलमें प्रकाश
मान और यशोदाकेभयकर्के ऊखलके साथ
बंधे होई इधर उधरफिर रहेहैंन फिरकैसेहैंन
रोदनकर्त्तेहोई दोनोंनेत्रोंसेअश्रुपात दोनोंहा
थरूपी कमलों करके भयवाले नेत्रोंको रुक
ते भयेफिर कैसेहैंनवारंवार ऊंचे श्वासलेने
भये कंपायमानहैं फिरकैसेहैंन तीनरेखावाले
कंठमे जिनके औरवैठे होए जोभक्तिकर्के वंद
नाकरनेयोग्यदामोदरतिनकोंनमस्कारकर्ताहुं २६
हेदेव हेईश मेरेकोंमोक्षकों अवधिपर्यंतवरदान
करो औरवरदेने वालेयोंकेस्वामी जोतुमहोतुमारे
से औरकुछ नहिमांगताहुंहेनाथ पहुजोगोपालों
कावालकरूपीतुमारा देहसो सर्वदाकालमेरेमन
में प्रगटहोवे औरवरोंसे क्याप्रयोजननहे २७॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इदंतेमुखांभोजमत्यंतनीलैर्वृतंकुंतलैःस्नि
ग्धवक्तैश्चगोप्यामुहुश्चुंबितंबिंबरक्ताधरंमे
मनस्याविरास्तामलंलक्षलाभैः २८ नमो
देवदामोदरानंतविष्णोप्रसीदप्रभोदुःख
जालाब्धिमग्नं कृपादृष्टिवृष्ट्यातिदीनंवत
नुगृहाणेशमामज्ञमेध्यक्षिदृश्यम् २९ कु
वेरात्मजौबद्धमूर्त्यैवयद्वत्त्वयामोचितौ
भक्तिभाजौकृतौच तथाप्रेमभक्तिंस्वकांमे
प्रयच्छनमोक्षेग्रहोमेस्तिदामोदरेह ३०॥

हे भगवन् यह जो तुमारा मुखरूपी कमल जो अत्यं
त काले वर्णके चिकणे और कुंडलों कर युक्त के
शों कर के परिवारियां हुया और विंबफलकी न्याई है
अधरोष्ठ जिनके और गोपीयशाने वारंवार चुंबन
करा हुया सो मेरे मनमें प्रगट होवे और लक्ष लाभों
कर के क्या प्रयोजन है परिहराहि २८ हे देवदामोद
र हे अनंत हे विष्णो हे प्रभो तुमारे को नमस्कार
होवे और दुःखों के जालरूपी समुद्र में डूबे होए
मेरे को प्रसन्न होकर कृपा की दृष्टि रूपी वृष्टि क
र के अतिदीन अनाथ जो मैं हो मेरे को ग्रहण करो
और हे ईश अज्ञ मूर्ख जो मैं हो मेरे को अपने नेत्रों
कर के देखो २९ हे दामोदर जिस प्रकार कुवेर के दो
नों पुत्र वृक्षयोनी में था मदोपद्रूप मुक्त करे हैं भ
क्ति कौं सेवनवाली आपनी योनी कौं प्राप्त करे हैं
इसी प्रकार अपनी प्रेमभक्ति मेरे कों दान करो मो
क्ष के होने में मेरा कोई हठ नहि है की जरूर मेरे कों मो
क्ष ही देजो ३०॥

नमस्तेस्तुधाम्ने स्फुरद्दीप्तधाम्ने तथोदरस्थ
विश्वस्यधाम्ने नमस्ते नमोराधिकायैवं
दीयप्रियायैनमोनंतलीलायदेवायतुभ्यं । २
नारदउवाच सत्यव्रतद्विजस्तोत्रं श्रुत्वादा
मोदरोहरिः विद्युल्लीलाचमत्कारोहृदयेज
नकैरभूत् २२ अंतर्हितोपितद्रूपेविकलो
विललापह इतस्ततोधावमानः पुनःप्र
ज्ञाकरोतिच २३ ॥

औरसुंदरदेणेवालेकेताईं औरप्रकाशमानस्था
नवालेताईं नमस्कार होवे और उदरमेंस्थित
जगत केपालनकरणेवालेताईं नमस्कार हो
वे औरअनंतहै लीलाजिसकी तिसविष्णुकेता
ईं नमस्कारहोवे २१ नारदजीकथनकर्तेभये
हे द्विजसत्य व्रतके मुखसे इसप्रकारकीस्तु
ति आपनी सुन करके दामोदर हरि भगवान्
सोतिसके हृदयमें बिजलीकी लीलाके च
मत्कारकीन्याईं धीरे जैसे उनकारूप प्रगट
होताभया २२ फिरजिससमय सोरूपछिप
गया तदसो सत्यव्रत व्याकुल होकर विलाप
कर्ताभया और इधर उदर उस रूपके ढूंढ
ने वास्ते दौडता हुया फिरप्रज्ञाकोकर्ता
भया २३ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दैवादत्रागतः सोपि सुभ्रकेशो नृपात्मजः
लीनो ददर्श तत्सृजां वेसवीं चातिकौतुकं ३४
रात्रावागत्य वेश्यायै हासप्रीतिरसप्रदः उ
वाच तस्य वृत्तांतं सविस्तारमुदीरितम् ३५
तथैव सृजामकरोत्कृत्वा च प्रतिमां मुदा
तथैव नाम गृह्णाति यास्तदासौ दुष्टमान
सः ३६ एवं बहुविधं वाक्यं कृत्वा विप्रस्तु
वेशया रेमे रात्रौ तदासौ ततो हृतो राजाधि
कारिभिः ३७ ॥

उस समय प्रारब्धवश करके राजा का पुत्र सुभ्रके
श उहां आय गया और लीन होकर कहीं तमा
सेमें वेसवी सृजा को देखता भया ३४ और रा
त्रि के समय अपने घर में आयकर हास
प्रीति के रस देनेवाला प्रसन्नता युक्त देख
ना जिसका ऐसा सो विस्तार के सहित ति
सका वृत्तांत कथन कर्त्ता भया ३५ और
जिस प्रकार उसने प्रतिमा बनाई हुयेथी
उसी प्रकार प्रतिमा भगवान की बनायकर
बड़े हर्ष से उसी तरोंसे सृजा कर्त्ता भया और सो
दुष्ट मन वाला उस की तरां में नाम ग्रहन क
र्त्ता भया ३६ इस प्रकार तिस ब्राह्मण का वा
क्यादि सृजा की नकल वेश्या के साथ रात्रि
के समय तिसके साथ प्रसन्नता से रमण
कर्त्ता भया जो उसमें राजा के अधिकारियों ने
पकड़ लिया ३७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्यापराधं संचिन्त्य हन्तस्तैः स यमालयं
नीतो हन्तैस्तदीयैस्तद् ददर्श पितृराट् स्वयं
१८ ज्ञात्वा तस्य च तत्कर्म कार्त्तिके हरिसज्ज
ने मथुरायां परीहासव्याजेनाखिलधर्म
भृत् १९ उत्थाय चासनात्तूर्णमातिथ्यं त
स्य चाकरोत् आर्घ्यासनादि संपूज्य पश्चाद्
तांस्तानगर्हत २० ॥

सो तिसका अपराध चिंतन करकें सो राजाके॰
अधिकारी तिसकों ताडन कर्ने भये तदसो मृत
हो जाता भया उसकों राजा धर्मके दूत पकड
करले जाते भये तो उसकों पितरोंका राजा
धर्म आप देखता भया १८ तिसका सो कर्म॰
जान करकें क्या कार्तिक महीनेमें इसने ए॰
जा करी है मथुरामें वैठकरकें दूसरेकों हास
करणेके वहाने करकें उसकी महिमा जान
कार १९ सारे धर्मोंके जानणेवाला धर्मराजा॰
शताबी आसनसें उठकरकें तिसका आतिथ्य
सत्कार कर्ता भया और अर्घ आचमनादि
योंसे पूजन कर पीछेसें दूतोंको तिरस्कार
कर्ता भया २० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्रीम॰
२४९

246

यमउवाच रेदूताभ्रष्टविज्ञानान्विष्णु
भक्तान्हासम्नानतिगान् यतोनिवारिताश्र
युस्तान्सुदुर्मतीवसंशयः ४। कतिधाशि
क्षितानायद्भक्ताजोविष्णुपरायणाः नाहंत
स्यप्रभुर्दंडेयूयंदंडंचिकीर्षवः ४२ इत्यु
क्त्वाथुनरेवाहधूम्रकेशंसधर्मराट् अ
होकष्टंधूम्रकेशानवदुःखंमहत्कृतम्
मथुरामागतस्यापिकृतंदंडस्यपार्थिवैः
भुक्तस्यापितथाचोर्जेकृष्णस्यजांप्रकुर्वतः
४४

धर्मराजाजीकथनकरनेलगे रेदूताभ्रष्टहोग
याहै ज्ञानजिनकापसे तुमारेकोंधिक्कारहैं जो
तुममेरेआज्ञासें वाहरवर्त्तनेहो जिसवातसें
तुमारेकों हटा आसोईवाततुमवारंवारकर्ते
हो इसमें संशयनहिंहै ४। कितनीवारतुमा
रेकोंशिक्षाकरीहैकिविष्णुकीभक्तपुरुषकों
त्यागनातिनकोंदंडकरनेकोंमैंसमर्थ नहिं
हों तुमउनकोदंडकर्नेकीइच्छाकर्तेहो ४२ पसें
तिनदूतोंकोकहकरकें फिरधर्मराजधूम्रकेश
कोंकहनेलगा हेधूम्रकेशावडेक्लेशकीवातहै
तेरेकोंइन्नोंनेवडा दुःखदियाहै ४३ मथुरामेंतूं
आयाहुया राजानेतेरेकोंदंडभीदिया भुक्तहै
प कृप तेरेकोंऔरकार्त्तिकमें कृष्णजीकी
पूजा कर्ते होमकों ४४ ० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैकुंठपुरवासाय योग्यस्य न वशासना
मत्स्यमानयनं चापि युज्यते न कदाचन ५५
धर्मकेश उवाच सर्वथा जन्म पापेन युक्त
स्य वद मे विभो कथं शुद्धिः प्रजायेत कुतो
वैकुंठयोग्यता ५६ महदाश्चर्यमुक्तं ते म
हान्मे नुग्रहः कृतः कस्य पुण्यस्य माहात्म्या
त्पापोहं यामि सद्गतिम् ५७ नाहं वेद्मि च पु
ण्यस्य पापस्यापि च लक्षणं त्वन्मुखाच्छ्रु
न संदेहस्तेनो यास्यामि सद्गतिम् ५८

तेरेको जो तूं वैकुंठ में वास करने योग्य हैं यमको
दंड देना और मत्स्य ने ल्यावना यह कदी भी यो
ग्य नहि है ५५ इतना वाक्य सुन कर धर्म केश
कहने लगा हे विभो जन्म सें लेकर पाप क
रने वाला जो मै हों मेरे कों दंड होना योग्य है
पापी की दंड सें विना शुद्धि कैसें होनी और वै
कुंठ की योग्यता कैसे होती है ५६ यह तुमने
बडे आश्चर्य की बात कही है तुमने बडी कृपा क
री है परंतु मै किस पुण्य के माहात्म्य सें पापी
मै सद्गति कों प्राप्त होआं ५७ और हे धर्मराज
पुण्य पाप के लक्षणों मैं नहि जानता हुं कि पु
ण्य वस्तु क्या है और पाप क्या है सो तुमारे मु
खसें सुनकर निःसंदेह क्या विना संशय वाला
होय आकुया सद्गति कों प्राप्त होआंगा ५८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२५१

यमउवाच नमस्कृत्वारविंदाक्षंनारायण
मनामयं धर्मंतेहंप्रवक्ष्यामिसुकेशशृ
णुतत्त्वतः ४९ वेदप्रणिहितोधर्मोह्यधर्म
स्तद्विपर्ययः तत्रापिद्विविधोधर्मःप्रवृत्तो
थनिवृत्तिकः ५० अर्थानुरागिणःपुंसःप्र
वृत्तोधर्मउच्यते अर्थानर्थदृशःपुंसोभ
क्तस्यचहरेस्तथा ५१ निवृत्तःप्रोच्यतेसद्भिः
रधिकारिव्यवस्थया एकएवहिधर्मोपि
फलेच्छानिच्छतोद्विधा ५२ ॥

इनना वाक्यनिसके सुखका श्रवणकर यमजी क
थनकर्तेभयेनिर्विकार जोकमलकीन्याईनेत्रोंवा
ले नारायणजिनकों नमस्कारकरकेहे सुकेशजे
रेकों धर्मके लक्षण कथनकर्ताहूं सोतूंश्रवण
कर ४९ जोवेदमें कथनकराहै सोधर्महै तिस
वेदमें जिसकानिषेधहै क्याअमुककर्म न
हिकरणा सोअधर्म पापहै उनदोनोकेमध्यमे
धर्मीभी दोप्रकारकाहै एकप्रवृत्तिमार्गकाहै द
सरानिवृत्तिमार्गकाहै ५० जिसधर्मकेकरणेमें
अर्थप्रयोजनोकीइच्छाहै सोप्रवृत्तकहीदाहै
औरअर्थमेंअनर्थ देखना परमार्थ चिंतनकर
णासंसारकीइच्छानहि जिसमें औरहरिभक्ति
करणेवालेकों निवृत्तिधर्म किहाहै ५१ सो
निवृत्तिधर्म सत्पुरुषोंने अधिकारी व्यवस्थाक
रकें कहाहै औरसोधर्म एकहीहै परंतु फलका
ग्रहण इन करकें दोप्रकार कहा जाताहै ५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ्यात्मक्रुणसंगोप्यं श्रीन्यावसेन्यात्मज
येन धर्मेण गोविंदे भक्तिर्जायेत वैसवी ५३
श्रवणं कीर्तनं विस्नोः स्मरणं पादसेवनं
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्
इतिपुंसार्पिता विस्नो भक्तिश्चेन्नवलक्षणा
येक्रुता भक्तिपुत्रैश्च स्ते मुक्ता नात्र संशयः
५५ श्रीविस्नुश्रवणे परीक्षिदभवद्वैयास
किः कीर्तने प्रह्लादः स्मरणे तदंघ्रिभजने
लक्ष्मीः पृथुः पूजने ॥ ~ ॥

हे राजन्के पुत्र अव और वडी गुह्यबात तेरेकों कहता
हुं सो तूं श्रवण कर जिस धर्मके कर्म करणे करके
वैसवी भक्ति गोविंदजीमे उत्पन्न होती है ५३ सो
नौ प्रकारकी भक्ति है मुख्य तो विस्नुके गुणोंको
श्रवण करना फिर उनका कीर्तन करना स्मरण
करणा भगवानजीके चरणोंकी सेवा करनी
नमस्कार करणी उनका दास्यभाव करना ५४
यह नौ लक्षणोंवाली भक्ति विस्नुकी भक्ति पुरुषोंमें
अर्पित करी है क्या स्थापन करी है यह जिन पुरु
षोंने करी है भक्ति युक्त मनवालियोंने सो मुक्त पुरु
ष है इसमें संशय नहीं है ५५ विस्नुकी गुण सुन
नेमें राजा परीक्षित होता भया शुकदेवजी सुना
नेवाले होते भये प्रह्लाद स्मरण करनेवाला होता
भया और चरणोंकी सेवामें तत्पर लक्ष्मी होती
भई पूजा करनेमें पृथु राजा होता भया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२४८

अक्रूरस्त्वभिवंदने कपिपतिर्दास्येऽर्जुनः सख्ये
ऽर्जुनः सर्वस्वात्मनिवेदने बलिरभूत्पर्याप्तिरेषां परा ५२ परहास्यपरेणापि कृष्णस्याज्ञा
फलं त्विदम् नामाभासेन मुञ्चंति महापातकिनो जनाः ५७ तस्य वैकुंठनाथस्य सेवाज्ञा
वै भवत्यहो ताः यद्धोरनरकाः हि स्य वैकुं
ठं तयनं स्वभूत् ५८ तस्मान्नपात्मजः श्रेयः
परं किंचिन्न विद्यते शंखचक्रकितो भूत्
नामा शालिग्रामशिलास्य च ५६ ॥

वंदनामे अक्रूर सेवामे हनुमान सखिभावमें
अर्जुन और सर्वस्वके सहित आत्म निवेदनक
रणेमें बलिराजा होताभया इनकी पर्याप्ति
होतीयी क्या भगवान् इनके गति होते भये ५
पराई पूजा देखकर्के हांसीकरनेमें तत्पर होय
उपने कृष्णपूजाका परम फलहै और उस पर
मेश्वरके नाम लेने कर्के महापापी पुरुष आ
दहोजाने है ५७ तेने तो तिस वैकुंठके स्वा
मी की पूजा करी है जो पुरुष घोर नरकों के या
प होताहै सो वैकुंठमें चलाजाता है ५८ तिस
कारणसें हे राजके पुत्र परमेश्वरसें विना और कु
छ कही कल्याण नहि पाती नहोती है जो पुरुष
शंख चक्रके चिन्हों वाला होकर शालिग्राम
की शिलामें ५६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमभ्यर्च्य हरिं यांति नराःलं हैमवं पदं अथ वासर्वदा स्न्योवासुदेवो मम त्तभिः ९०

शालिग्राम शिलाचक्रे वज्रकीटविनिर्मिते अधिष्ठाने हि तद्विसोः सर्वपापप्रनाशनं ९१

सर्वपुण्यप्रदं चैव सर्वेषामपि मुक्तिदं नरकं गर्भवासे च तिर्यक्ते क्रिमियोनितो न यातिन्पपापो पिशालिग्रामाच्युतार्चकः ९२ इतिश्रीपद्मपुराणे कार्तिकमाहात्म्ये स्प्तकेशोपाख्यानं समाप्तम् ॥ ॥

नारायणजी का पूजन करते हैं सो शुक्लपक्ष वैष्णव पद को प्राप्त होते हैं अथवा जो मोक्ष की इच्छा वाले हैं तिनोंने वासुदेवजी का पूजन करना ९० और वज्रनामक कीडे करके बनाये हुये जो शालिग्राम की शिलाचक्र तिनमे संपूर्ण पापों के नाश करने वाला तिस विस्नुका अधिष्ठान है ९१ और सभ पतरों के पुण्य देने वाला है सारे पापों के नाश करने वाला और सभनों को मोक्ष देने वाला है और जो कोई पुरुष शालिग्राम की शिला में अच्युत भगवानजी का पूजन कर्त्ता है सो नरकों मे नहि जाता है फिर उसका गर्भमें वास नहि होता है और तिर्यक् योनि जो पशुपंछियों की तिसमें नहि जन्मता है ९२ पद्मपुराण के कार्तिकमाहात्म्य में सप्तकेश का उपाख्यान समाप्त हुया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ भक्तमालायां सेतिहासं पूजामाहात्म्य
माह अथातः संप्रवक्ष्यामि पूजामाहात्म्य
मुत्तमं शृण्वतां प्रीतिजनकं कृष्णभक्तिप्र
दायकं १ एका रतिमती नाम्ना ब्राह्मणीह
तलाख्यजा पतिपुत्रविहीना सा धनिनी ध
र्मवत्सला २ कदाचिद्भवने तस्याः सायंका
ले समागतः साधुः श्रीकृष्णभक्तश्च बाल
गोविंदपूजकः ३ तं दृष्ट्वा सा समुत्थाय हृ
षिता प्रणाममच पाद्यमाचमनीयं च पा
नीयमुदकं शुचिः ४ ॥

अब भक्तमाल में इतिहास के सहित पूजा का माहा
त्म्य कहते हैं अब औरउत्तम पूजा का माहात्म्य क
थन कर्ता हूं जो सुननेवालेयों को प्रीति उत्पन्न
करने वाला और श्रीकृष्ण में भक्ति देनेवाला है
१ एक ब्राह्मणों के वंश में ब्राह्मणी रतिमति
नाम कर के प्रसिद्ध पति पुत्रादियों कर रहित
बहुत धनवाली और धर्म करने में प्रीति वा
ली निवास कर्ती थी २ एक दिन सायंकाल
के समय तिसके घर बालगोविंदजी का पु
जारी श्रीकृष्णजी का भक्त साधु एक आवता भ
या ३ तिसकों देखकर सो उठे हर्ष आनंद से
उठ खडी होकर तिसकों प्रणाम कर्ती भई
और पाद्य आचमन अर्घ पवित्र जल पह
देती भई ४ ॥ ४ ॥

अन्नं स्वादु ददौ तस्मै द्विजायातिथये मुदा गृहीत्वा सर्वमातिथ्यं विप्रः संध्यामुपास्तवान् ५ बालगोविंदप्रतिमां वहिः संस्थाप्य तत्पुरः निवेद्य सर्वस्तत्रावत्तणं नेत्रे निमीलिच ६ भोजयित्वाथ संस्थाप्य स्वयं हि बुभुजे पुनः इति मत्वा ददर्शाय बालगोविंदमद्भुतं ७ विप्रं प्राहातिभक्त्या सा हृत्तां जलितृढा सती अहो ब्रह्मकुले जाता पतिपुत्रविवर्जिता ८

और तिस अतिथिकों स्वादसार अन्न वडे हर्षसें देतीभई सो विप्र तिससें अतिथिसत्कार ग्रहणकार सायंकालकी संध्या कर्ताभया ५ फिर तिसने भोजन बनायकर बालगोविंदजीकी मूर्ति बाहर निकाल कर राखी तिसको अन्न बनायहुया निवेदन कर्के क्षणमात्र नेत्र मीट कर फिर स्तुति कर्ताभया ६ इसतरांसे तिनकों भोजन खुलायकर तिनकों किनारे स्थापन करपीछेसें आप भोजन कर्ताभया तदउसमयसोरतिमति ब्राह्मणी अद्भुत बालगोविंदजीकी मूर्तिकों देखतीभई ७ फिरवडी भक्तिप्रेमकर्के ब्राह्मणकों कहनेलगी हाथ जोडकर हे साधो मेंब्राह्मणोंके घरजन्मी हुईयां और नामेरा पीतेहे नापुत्रहे बांधवोंकर्के रहितहां ८

सा॰
ग्राम॰
२५॰

250

न जाने कां गतिं यामि कथं स्यात्सद्गतिर्मम
अयावधि च पापानि जानतैव मया कृतानि भोः ९
धर्मं चापि न वा कार्यं पतिपुत्र शुचाहि ना
अयैव वालगोविंदं दृष्ट्वा मे मतिरुत्थिता १०
यताहं ममं मन्देवकं कारयित्वा स्वेवेस्म
नि संस्थाप्य पूजयिष्यामि इत्याज्ञां देहि
सुव्रत ॥ तन्मंत्रं देहि मे विप्र पूजोपकार
णानि च शिल्पिनं च समासाद्य कारयामि
गृहे नमम १२ ॥

हे ब्राह्मण आज तक मैंने जान कर के पाप भी न
हि करे हैं परंतु तद भी नहि जानती हां की किस
गति को प्राप्त होवांगी श्री और किस प्रकार मेरी
सद्गति होवेगी ९ और पति पुत्र के शोक कर पी
डित होई री मैंने धर्म भी नहि करा है पर आज इ
स नगरी वालगोविंद जी की प्रतिमा देख क
र मेरी बुद्धि उत्पन्न होई है की मैं भी कछु धर्म
करां १० सो क्या इच्छा है की ऐसी ही इस देव की
मूर्ति बना य कर अपने घर में स्थापन कर के पू
जन करे यां कहूं हे सुव्रत प्रहु मेरे ताईं आज्ञा
देउ ११ और हे विप्र तिन का मंत्र मेरे को देउ औ
र पूजा के उपकरण क्या सामग्रीयां कहो मैं का
रीगर को बुलाय कर उत्तम कर वनवामीहूं १२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तावन्नयात्र वत्सलं प्रसन्नोभवसज्जन इत्यु
क्तो ब्राह्मणः सोथ प्राह तं ब्राह्मणाग्रिया
म् ।३ सर्वकर्मविपाकेन विधवानपत्र
त्रिणी इदानीं त्वं तथन्यासि यस्यास्ते मति
रीदृशी ।४ दृष्ट्वमं बालगोविंदं जाता तेभ
क्तिरुत्तमा नाममंत्रो नैवसामग्री भक्त्यानय
ति वै हरिः ।५ सुप्रसन्नोददातीष्टं प्रेमरज्ज
नियंत्रितः श्रीकृष्णायनमोस्त्वेतद्गृह्य
णमंत्रमुत्तमम् ।६

हे श्रेष्ठ व्रतवाले ब्राह्मण उतना काल तुम मेरेघ
रमें रहो जितना काल मूर्ति और इनका मंदिर सज्जा
के वर्तन नदि बने हैं इस तरांसे कथन करा हुआ
ब्राह्मण तिस स्त्रीको कहने लगा ।३ पूर्वजन्म के
करे होय कामोंके फल करकें तूं विधवा और विना
पुत्र के हुई है अब इस समय तूं धन्य हैं जिसकी
परमेश्वरमें एसी बुद्धि हुई है भक्ति करने में ।४ इ
स बालगोविंदजी कों देखकर तेरेकों उत्तम भक्ति
उत्पन्न होई है इस भक्ति में नाममंत्र है ना सामग्री है
नारायण हरि तो केवल भक्ति प्रीति करकें प्रसन्न हो
ते है ।५ और सो भगवान् प्रेमभक्ति रूपी रस्सीके
साथ बंधे होय अभिमत फल देते हैं इस वास्ते श्री
कृष्णाय नमः यह जो मंत्र है इसको ग्रहण कर
इसी से सभी कुछ सिद्ध होवेंगा ।६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा· ग्राम· २५१

251

प्रतिपुत्रेय यथा प्रेम तथा स्याद्यदि केशवे त
दा शीघ्रं स गोविंदो ददात्यभिमतं प्रभुः १७
तावन्निशम्य तवेक्ष्वाकोः शीघ्रमानय शिल्पिनं
एवमुक्ता रतिमती शीघ्रमाहूय शिल्पिनं १८
दर्शयामास गोविंदप्रतिमामीदृशीं कुरु
इत्याज्ञाप्य द्विजं चाथ तर्पयित्वा धनैर्वरैः
विससर्ज तदा विप्रं गोविंदं हृदि संस्मरन्
गते विप्रे रतिमती गोविंदप्रतिमां शुभाम्

हे ब्राह्मण कहने लगा हे सुव्रते जैसा प्रेम प्रति
पुत्रमें होता है एसा कदी केशव भगवानजी में
होवे तद शीघ्र गोविंदजी मन कर्के चाहना करे
होय फल देते हैं १७ सुनके तेरी इक्ष्वाक कें उता
ना काल तेरे घरमें वैठता हूं तेरी भक्ति कर्के पा
रंतु शीघ्र कारीगर कों बुलाकर ल्या ऐसे तिसने
कथन करी होई रतिमती शीघ्रतासें शिल्पीका
रीगर कों बुलाइ कर ल्याये १८ प्रतिमा कृष्णजी
की दिखाय कर कहने लगी ऐसी एक प्रतिमा
मेरे कों भी वना के त्यार कर दे ऐसे तिस कों आ
ज्ञा कर्के पीछे सें तिस द्विज कों धन वस्त्रादियों
के साथ प्रसन्न करती भई १९ फिर तिस समय उ
स ब्राह्मण कों विदा करती भई पीछे सें गए हु
ए तिसके गोविंदजी कों हृदय में स्मरण करती हुई
२०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्थापयामास नंदस्तं महोत्सवपुरस्सरं ए-
कपुत्रेव जननी नित्यं बालमिव सर्वदा २१ कर्म-
णा मनसा वाचा मुदा परिचचार सा विभीत-
कफलैः सार्धमरिष्टफलमालया २२ अलंच-
कार गोविंदं दृष्टिदोषभयेन सा सर्वालंकर-
णैर्युक्तं भव्यं कज्जललांछितं २३ दृष्टिदो-
षोपशांत्यर्थं मातेव पुत्रवत्सला चकार
शीतसमये ददावुसं तथौषधम् २४ ॥

फेर सो आपने घर में सुंदर जो मूर्त्ति गोविंदजी की
तिसकों बडे उत्सव करकें स्थापन कर पीछे से ऐ-
सा प्रेम तिसमें कर्त्ती भई जैसे एक पुत्र की माता
सर्वदा काल प्रेम कर्त्ती है ऐसी बाल की न्याई २१
और मन वाणी कर्म करकें तिसकी रातसेवा क-
र्त्ती भई और बिभीतक फल को साथ अरिष्ट फ-
लों की माला के साथ २२ गोविंदजी की प्रतिमा
कों अलंकारयुक्त कर्त्ती भई दृष्टिदोष के भय
करकें की इनकों दृष्टि किसी की न हि लगे और
सारे अलंकारों के युक्त तिस मूर्त्ति कों करकें मुख
तिसका कजल कर युक्त कर्त्ती भई २३ दृष्टिदोष
की शांति के लिये किसी की मूर्त्ति नजर न हि ल-
गावे ऐसे पुत्र है प्यारा जिसकों ऐसी माता की
न्याई और शीतकाल के समय रात कों गर्मी-
की करने वालियां औषधीयां देती भई २४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२५२

रात्रौ सा ततं गोविंदं संस्थाप्य बालवृंद्धदि आ
च्छाद्य चलवस्त्रेणानाना सुखावसत्तदा २५
सुकाष्ठ निर्मितैश्चैव बालक्रीडनकं तदा
तस्याग्रे स्थापयित्वा सा क्रीडंती च जहर्ष च
प्रातःकाला दनेचैव तैलाभ्यंगादिकेन॰
या आह्लाद भाषणंचापि कुर्वती च मुं॰
मोदह २७ एवं तत्पुत्रबुद्ध्या सा सृजयंतीज
गत्पतिं गते कतिपये काले सुश्राव सा तीचरि
तं हरेः २८ ॥

सो ब्राह्मणी रात के समय श्री बालकों की न्याई
हृदय पर स्थापन करकें गोविंदजी कों अपने वस्त्र
के साथ आच्छादन करशयन करावती भई २५
और मिट्टी की काष्ठ के बने होए बालकों के लिये
खिडावने सो तिन के आगे स्थापन कर क्रीडा क
ती होइ वडे आनंद कों प्राप्त होती भई २६ और
प्रातः काल के समय भोजन देना तेल मर्दन
करकें स्नान करना आह्लाद आनंद के भाषण॰
करने का लोरीयां देनीयां इस तरह सें करती हो
ई हर्ष आनंद कों प्राप्त होती भई २७ इस वि॰
धि सें पुत्र की भावना रखकर जगत्पति का
पूजन करती भई इसी तरीसें कितना क काल
व्यतीत होए पीछे हरि के चरित्र श्रवण करती॰
भई २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीमद्भागवतंनामपुराणंद्विजविष्णुनं वन
नीतस्यचौर्य्यंतुयशोदायाविभीषिका २९
पलायनंभगवतोमातुश्चाप्यनुधावनं
श्रीकृष्णग्रहणंचैवमातुस्ताडनमेवच ३०
मूर्छनंततःश्रुत्वापुत्रस्नेहेनतत्रसा त
तोयशोदयादाम्नावद्धः कृष्णोहठेरुषा
श्रुत्वानेवंरतिमतीहाहाकृष्णेतिभाषिणी
मूर्छितापतितांभूमौप्राणांस्त्यजजनंतत्
त ३२ ॥

श्रीमद्भागवतनामशास्त्रकाकर्कें कथनकरतु
या तिसमेपद्दकथाआईकी श्रीकृष्णजीने मा
खनकीचोरी करि यशोदानें उनकोंभयदिया
उहांसेभगवानजी भागगये तोमातायशोदा
पीछेसेंउनकी पकडनेकोंदौडे श्रीकृष्णजी
कोंपकडकर ताडनकराक्या उनको मारिया ३०
पीछेसेमिहीरखाई पहवातसुनकर पुत्रस्नेह
करकेंयशोदातहांजाकरवडे क्रोधकों प्राप्त
होकर रस्सीसें बांधतीभई ३। इसप्रकाररति
मतीसुनकरहाहाकार करकृष्ण २ कर्ती २ मू
र्छाकोंप्राप्तहोकर भूमिपर डिग पडी औरत
त तत्प्राणोंकोत्यागदेतीभई ३२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२५२

253

नतोहाहाकृतास्सर्वेजनास्तत्रसमागताः क
श्चित्तुस्थापयामासनोतस्थौसाम्रतायतः २३
कृष्णप्रेमवशाद्देहान्मृतारतिमतीपुनः जा
गामकृष्णसान्निध्यंयशोदेवनसंशयः २४
नयोगोनतपोध्यानंनज्ञानंनापिसक्रिया
प्रेमैवरतिमतीशुक्ताभक्तेर्माहात्म्यतोध्रुवं
बलिगेहेगतोविश्वंहृत्वावामनरूपधृक्तं
दृष्ट्वाबलिपुत्रीसामनसैवमचिंतयत् २६

तिससें उपरंतहाहाकारकर्के सारेही लोकतहां
चलेआये औरकोईतोतिसको पडीहोई कों
उठावता भयातद सोमरीहोईथीनहि उठती
भये सारेयोंनेमिलकरपश्चातापकिया २३ क
हनेलगे श्रीकृष्णजीके प्रेमवशसे इह रतिम॰
तिमरगईहै औरयशोदाकीनाई श्रीकृष्णजी
की समीपताकोंप्राप्तहोगईहै इसमें संशय॰
नहिंहै २४ देखोएसानयोगहै नतपहै ध्याना॰
नहिंहै नज्ञानभीएसाहै नऐसीकोईश्रेष्ठक्रियाहै
प्रसन्नदेखोप्रेमकर्के रतिमतिभक्तिकेमाहा॰
त्म्यसें निश्चयकरमुक्तहोगईहै २५ एवंएकसम॰
यबलिराजाके वामनकारूपधारणकरविश्वव
लेगये तौंउहांबलिकीपुत्रीतिनको देखकर म॰
नमेंऐसेचिंतनकरतीभई २६॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अहोनिसंदरोवालोथमामातानसंशयः। य
घेकं ननयो मेस्मा मा यपि ष्यामि संस्तनम् १७
कृत्वार्थी स्यामि निम्न दा संकल्पं मनसा कृ
तं सैवागत्य व्रजेजाता पूतनाबालघाति
नी १८ पाययित्वा स्तनं द्वेषाद्यशोदागति
माप सा एवं द्वेषादपि गता मुक्तिरात्म
कन्यका १९ किं पुनर्वो स्त्र सारी भूरा पा कृस्न
पूजापरायणा २० इति श्रीभगवद्भक्ति
माहात्म्ये रतिमतिचरितं समाप्तम्॥

एसा संदर जिस का पहवाल कसो इसकी माता
इसमें संशाय कुछ नहिं है जो कर एसा पुत्र मेरा
भी होवे नदम्रपना स्तन पान मेंभी करावों १७
फिर कृतार्थ होजाती हूं एसा संकल्प मन का
कें करा तिसने सो मृतहो ई हुई आके व्रजभू
मि में बालक मारने वाली पूतना हुई १८ तो
श्रीकृस्नजी कों द्वेष भाव सें स्तनपान कराक
र यशोदा की गति कों प्राप्त होजाती भई इस प्र
कार के द्वेष भाव सें दैत्य की पुत्री मुक्ति कों प्राप्त
होगई १९ तो पह जो ब्रास्त्र रागी थी पुत्र भाव क
कें श्रीकृस्नजी की पूजा में तत्पर रहती थी इस
की क्या बात कहनी है २० यह भगवद्भक्तिमाहा
त्म्य में रतिमती ब्रास्त्रगी का चरित्र समाप्त होया
है॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ हरेरलंकारदानमाहात्म्यम् नंदिपुरा-
णे अलंकारंच यो दद्याद्विष्णवे चक्रपाणये
सोमलोके रमित्वा तु विष्णुलोके महीयते १
स्कंदे स्वशक्त्या देवदेवं च भूषणैर्भूषयंति ये
हेमजैरत्नजैः शुभ्रैर्माणिजैरापशोभनैः २
तेषां फलं शतानंदो न रुद्रो वासवादयः
जानंति मुनयो नैव वर्जयित्वा तु माधवम् ३
पद्मपुराणे दद्यादाभरणं विष्णोः सर्वरत्ना-
मुत्तमम् सदाकल्पान्तवसतिः सोमर्थंवि-
ष्णुवेश्मनि ४ ॥

अब हरि कों भूषण देने की महिमा लिखते हैं नंदिपु-
राण में कहा है जो कोई पुरुष हरि के तांई अथवा
ब्राह्मण के तांई भूषण देता है सो पुरुष चंद्रमा
के लोक में सुख भोग कर विष्णुलोक में महिमा
कों प्राप्त होता है १ स्कंदपुराण में कहा है जो को-
ई पुरुष श्रीदेवजी यां के देवता विष्णु कों सुवर्ण-
के भूषणों कर के अथवा रत्नों कर के जड़े हुए
कों और श्वेत रंग की मणियों से शोभायमान
भूषणों के साथ भूषित करते हैं २ तिन का फल
शतानंद जो विष्णुजी हैं रुद्र महादेवजी और इं-
द्रादि देवता और मुनिलोक इन में से बिना माधव
जी के और कोई नहिं जानता है ३ पद्मपुराण में क-
हा है जो पुरुष विष्णु भगवान जी कों अमूल्य उत्तम
रत्नों कर के जड़ित भूषण देता है सो सर्वदा काल
कल्पपर्यंत निश्चय करके विष्णुलोक में बसता है ४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नरसिंहपुराणे सर्वाभरणैर्दिव्यैर्हारके
यूरकुंडलैः मुकुटैः कटकाद्यैश्च यो विस्वं र
जयेन्नरः ५ सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वाभर
णभूषितः वसेद्विस्नपुरे श्रीमान्यावदिंद्रा
श्चतुर्दश ६ भक्तमालायां हरेरलंकारदाने
इतिहासमाह अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि भा
क्तेर्माहात्म्यमुत्तमं यस्यश्रवणमात्रेणाकृ
ष्टेभक्तिर्दृढा भवेत् ७ श्रीरंगनाथो यत्रा
स्ति दक्षिणे तीव विश्रुतः तत्समीपे वभू
वैकावेश्याकामकलावती ८ ॥

नारसिंहपुराणमे कहा है सर्वणोंके भूषणों
करकैं और दिव्यजोहारकेयूरकुंडलहै मुकुटकट
कइत्यादिभूषणोंकरकैं जोपुरुषविस्नकोंपूज
ताहै ५ सोसारेपापोंकरकैंमुक्तहोकर सारेभू
षणोंकरकैं शोभायमान श्रीकरयुक्त चौदाइं
द्रोकी अवधिपर्यंत विस्नलोकमैं निवासकर्ताहै ९
भक्तमालमें विस्नकोभूषणदेनेका इतिहास
कहाहै अवगैरउत्तम भक्तिका माहात्म्यकह
तेहैं जिसकेसुननेमात्रकरकैंश्रीहरिजीमेंदृ
ढनिश्चयभक्तिहोतीहै ७ दक्षिणदेशमें जोनं
से वडे प्रसिद्धश्रीरंगनाथहै तिनकेसमीपका
मकलाकेजाननेवालीएकवेश्या निवासक
र्तीथी ८ ॥ ७॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२५५

गीतनृत्यादिकुशला मोहिनी सर्वदेहिनाम्
वधाद्यतिथिभक्त्या च साधुसेवापरायणा ६
एकदा नगरद्वारे दृष्ट्वा स्फीतं सुसंस्कृतं म
हानुभावश्चैकस्तु विद्वान् धर्मज्ञो द्विजः
ब्राह्मणाश्रमद्रुमेवं सानानत्रोपविष्टवान्
अथ दृष्ट्वाथ सा वैश्या द्विजं विद्वांसमागतम्
रत्नानि स्वर्णमुद्राश्च कृत्वा रजतभाजने
ब्राह्मणाग्रे निधायाथ कृतांजलिपुटास्थिता
१२ ॥

केसी सो वेश्या थी गाने नाचने में वडी कुशल थी औ
र सभ मनों देहियों को मोहन करनेवाली और वडी
धर्मवाली अभ्यागतों कीं मोहन करनेवाली औ
भक्तिनी साधुयों की सेवा में तत्पर ६ एक समय ति
स के घर के बाहर की ड्योढी वडी सुंदर वनी हो
ई ब्राह्मणों के आश्रम की न्याई प्रसिद्ध देख कर
वडे प्रभाव वाला धर्मात्मा एक विद्वान् ८
ब्राह्मणों का सन्मान करके तिस के अंदर में च
ला जाता भया तद तिस को वेश्या ने देखा वि
द्वान् पुरुष कोई है ऐसा जान कर क्या करती
भई ॥ फिर रत्न और स्वर्णों को यां रुपों को चां
दी के थाल में पाय कर ब्राह्मणों के आगे र
ख दिये और प्रणाम करके हाथ जोड कर खडे
हो गई १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथविप्रस्तुनांहृष्टांविनीतांदयितांधनं उवा
चकासिकस्यगृहिणीकस्यत्वंदयितावद ।३ श्रु
त्वेदंवचनंतस्यवारनारीवचोऽब्रवीत् स्वामिन्
हं त्वहंदुर्भाग्यावेश्यास्मिन्नगरेस्थिता ।४ इति
श्रुत्वावचस्तस्यमहाभाग्यवतोऽब्रवीत् बा
लेनाहंनवाहामिधनमेतन्नसंशयः ।५ इ
स्मामेवहिनिष्ठोस्मीसुकागंतुमनाश्चभूत्
ततोवेश्याप्रणम्याहकृतांजलिपुटांस्थितं ।६

अब सोब्राह्मणधनदेतेहुई तिसकोंदेखकेकैं
कहताभया तूंकौनहै किसकी स्त्रीहै प्रहमे
रे प्रीतकथनकर ।३ इसप्रकारकावाक्यति
सका सुनकर्केवेश्याकहतेभई हेस्वामिन्
मैवेश्यादुर्भाग्या इस नगरमें रहने वालीहूं
।४ इहवचनतिसकासुनके वडाभाग्यवालाब्राह्म
ण बोला हेबाले इसतेरे धनग्रहणकरा
नेकों मैयोग्यनहीहो इसमें कुछसंशयनहि
है ।५ औरमैं इसी नगरसें तेरेपर प्रसन्नहो
पसेकहके चलनेकी कामनावाला होता
भया तद वेश्या हाथ जोड विनती करप्र
णामकर्केकहनेलगी ।६ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ब्रह्मन्निदं पनं नभ्रं मया संकल्पितं मनुः क
थं नेष्यामि न ह ह्हि किं चैकं प्रार्थयाम्यहं १७
भावाद्दृशानां विप्राणां न योग्याय यद्यहं विभो
तदा कथं ते प्रीतेय भगवान्पुरुषोत्तमः १८
इति श्रुत्वा वचस्तस्या द्विजो वचनमब्रवीत्
त्वयि तुष्टोस्ति श्रीरंगो भगवान्भक्तवत्सलः
वैष्णवि त्वंस्सु आचारा साधुसेवापरायणाः
अतो जानामि ते तुष्टो भगवान्जगदीश्वरः
२० ॥

256

हे ब्रह्मन् यह यन मैं ने मन करके संकल्प कर
तुमारे तांई देदीया है अब कैसे परन करले जा
उं आप कहो और एक मैं प्रार्थना करती हों सो
भी कहो १७ हे विभो तुमारे जैसे ब्राह्मणों के
जे कर योग्य नहीं हों तद भगवान पुरुषोत्त
म कैसे मेरे पर प्रसन्न होवेंगे १८ यह तिस
वैष्णवी का वाक्य सुन करके सो ब्राह्मण कहं-
ता भया तेरे पर भक्तवत्सल भगवान श्रीरं
गजी प्रसन्न ही हैं १९ किस तरां कि वैष्णवी हों-
के तूं श्रेष्ठ आचारवाली है और साधुयों की
सेवा में तत्पर रहती है इस बात से जानता हूं
कि जगदीश्वर भगवान तेरे पर प्रसन्न हैं
२० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यदंत्तयच्चनेमह्यंदत्तंतेनसत्नशोभनं कारयि
त्वात्र मुकुटं श्रीरंगाय समर्पय २१ इत्युक्तेवं
नतं विप्रं वेश्या प्राह कृतांजलिः भवानेवन
गृहणाति श्रीरंगस्य कथं स्पृशेत् २२ इति श्रु
त्वा वचस्तस्याः पुनर्विप्र उवाच तां भक्तिप्रि
यास्ते लोके भु निरपेक्षो गृहीष्यति २३ इत्यु
क्त्वा स गतो विप्रो ग्रामांतरमुदारधीः सापि वे
श्या तिभक्त्या वै स्वर्णकारमथाह्वयत् २४

और जौनसा धन तैनें मेरेकों दिया है तिसीका
ही अतिसुंदर रत्नोंकर जडित मुकुट बनायकर
श्रीरंगजीके अर्पणकर चढायदे २१ इस प्रकार
कथनकर्ते होए तिस विप्रकों हाथजोडकर वे
श्या कहनेलगी तुसी पंडित शुध मेरा धन न
हि ग्रहणकर्तेहो तद साक्षात् भगवान् श्रीरंग
जी कैसे तिसकों स्पर्श करेंगे २२ यह वचन ति
सका सुनके ब्राह्मण फिर कहनेलगा सो भ
क्तिप्रिय हैं इनकों इच्छा तो किसी वस्तु की नहि
है परंतु भक्ति कर्के जो कुछ देवे सो ग्रहण क
र्लेते हैं इस कारण से यह मुकुट भी ग्रहण कर्ले
वेंगे २३ ऐसें कथन कर उदार बुद्धि वाला ब्राह्मण
और ग्राम को चला गया पीछेसें सो वेश्या अत्यंत
भक्तिप्रीतिकर युक्त होईहुई स्वर्णकारकों बुला
वती भई २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२५१

251

अन्यान्यपि सुवर्णानि दत्तानि तस्मिन्सुवर्णके
मुकुटं कारयित्वा सा रत्नैश्च खचितं शुभम्
एकस्मिन्दिवसे वेश्या मुकुटं रत्नमण्डितं श्री
रंगस्वामिने दातुं मनश्चक्रे तदा निशि २६
तस्यामेव तु श्रीरंगः स्वप्ने सेवकमब्रवीत् प्रा
तरेष्यति सा वेश्या दातुं मे मुकुटं शुभं २७
दृष्ट्वा मां सुखिनी सा वै भविष्यति न संशयः
सहस्तेनैव मुकुटं मस्तके मे यथार्पयेत् २८

ओर भी सुवर्ण अपने घर में तिस सुवर्ण में पा
य के रत्नों के साथ जडाउ बडा सुंदर मुकुट ब
नाय के रखती भई २५ एक दिन सो वेश्या रात
के समय रत्नों कर खचित जो मुकुट तिसकों
श्रीरंगस्वामि के तांई देने कों मन धारण करती
भई कि कल्ह के दिन मुकुट चढाउं २६ जिस
समय उसने चिंतन करा उसी रात को श्रीरंगजी
स्वप्न में अपने सेवक कों कहने लगे सो का
मकलावती वेश्या मेरे कों शुभ मुकुट देने वा
स्ते आवेगी २७ सो मेरे कों देख कर सुखवती
क्या कृतमती होजावेगी इसमें कुछ संश
य नहिं है तद भी अपने ही हाथ कर कें जैसे चढ
वै तैसे ही यत्न करणा क्या उसको कहना अप
ने ही हाथ से चढा दे २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न यथा वयाप्र कर्तव्यं प्रीतये मम सज्जकं संदेहो
त्र न कर्तव्यः सा मम प्राणवल्लभा २९ इति दि
ष्टान्त स्वप्ने सः पूजकः प्रातरुत्थितः उत्काले
भ्यश्च विप्रेभ्यः पूजां कर्तुं मठे गतः ३० अथ
सा वारयोषापि स्नात्वा शुक्लांबरस्रजा श्वे
तचंदनलिप्तांगी मुकुटं रौप्य भाजने ३१
हृत्वा करेण चा दाय दासीभ्यर्वं धुभिः सह
जगाम सा महद्वारि महाभक्तिसमन्विता ३२

हे पूजन मेरी प्रसन्नता के वास्ते पसे ही तैने क
रना इस बात में कुछ संदेह नहिं है क्योंकि सो
मेरी बहुत प्यारी है २९ यह स्वप्न देख करकें सो
पुजारी प्रातःकाल जागे या हुया और नें ब्राह्म
णों को समकाय करकें पूजा करने कों मंदिर में च
ला गया ३० इससें उपरंत सो वार योषिता क्या
वेश्या स्नान करकें संदर वस्त्र भूषण लगाय कर
श्वेत चंदन का अंगों में लेप कर लिया और मुकु
ट कों और सामग्री के सहित चांदी के थाल में
पाय कर ३१ हाथ के ऊपर थाल ले कर दास
दासियों बांधवों के सहित महा भक्ति कर
मेयुकमठ के द्वार पर जाय श्री रंग जी के सन्मु
ख खड़ी होती भई ३२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दृष्ट्वा तां पूजकः सत्यं रात्रिस्वप्नममन्यत आ
गम्यतामुवाचाथ समागच्छ भयं जहि ३३
न वा स्नावर्त्तते विष्णोर्मुकुटे दानमुत्तमं ध
न्यासि त्वं यतो भक्त्या एवं प्रीतोसि वै हरिः ३४
इति श्रुत्वा वचस्तस्य पूजकस्य च सा पुनः न
मस्कृत्य जगामांतर्मंदिरं प्रमुदितानना ३५
दृष्ट्वा श्रीरंगनाथं सा महानंदे ममज्ज ह र
त्नस्खला तदैवाभूत्सा वेश्यातीवलज्जिता
३६ ।।

पुजारी तिसकों देखकरकें रातका स्वप्न सत्यमा-
नता भया और द्वारमें तिसकों आके कहने लगा
तूं निःसंदेह अंदर चली चल कछुभी भय मन
में नहि कर ३३ क्यों उत्तम मुकुट चढानेके वा
स्ते तेरेकों हो आपने हाथसे आज्ञा है तूं धन्य है
जिसने ऐसी भक्ति करकें प्रसन्न करे भगवान् ३४
ऐसी वाक्य तिस पुजारीके मुखसें सुनकरकें
सो वेश्या फिर प्रणाम करकें हास्य करयुक्तमु
खवाली अंदर मंदिरके चली जाती भई ३५
तहां अच्छीतरा श्रीरंगनाथजी कों देखक
र बडे आनंदमें मग्न होती भई और तिसस
मयही रत्नस्खला होगई तद सो वडी लज्जा-
कों प्राप्त होती भई ३६ ।।

258

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्यैन तैव संत्रस्ता पूजनकस्तां तदाब्रवीत्
किं तिष्ठसि त्वमे गच्छ देह्यस्मै मुकुटं शुभम् २७
श्रुत्वेदं प्राह सा वेश्या स्पृष्टेनार्हाम्यहं हरेः
दर्शनादेव देवस्य जातानास्मि च रजस्वला २८
इति श्रुत्वा वचस्तस्याः पूजकः प्राह सस्मितः
न ते दोषोऽस्ति हसुश्रोणि देह्यस्मै मुकुटं स्वयं २९
इति श्रुत्वापि सा वेश्या संस्थाप्य मुकुटं म दे
वहिरागम्य सुस्नाता नावासो न्यधारिधायसा
३० ॥

तोरवसी होइ उसी जगा पर खडी होजाती भई त
ब पुजारी कहने लगा हे सुभे क्यों खडी होगई है
क्यों नहि इनके तांई मुकुट देती २७ यह वचन
सुनके सो वेश्या बोली अब मैं हरि के साथ स्प
र्श करणे के योग्य नहि रही हां क्योंकी इनके
दर्शन से ही रजस्वला होगई हां कैसे स्पर्श क
रां २८ ऐसा वचन तिनका सुनके पुजारी हस
ता २ कहने लगा तेरी कों कुछ नहि दोष है
अपने हाथ से मुकुट पहिरादे २९ ऐसे सुनक
कैं भी सो वेश्या मंदिर मे सुंदर मुकुट स्थाप
न कर बाहर आके स्नान करा फिर और नवीन
वस्त्र लगावती भई ३० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा० ग्राम० २५९

मठे गत्वाथ मुकुटं नीत्वा रंगसमीपतः दातुं
मुकुटमारेभे न प्राप मस्तकं हरेः ४१ प्रति
मायाः स्वयं मास्तु मस्तकमस्य संस्थिते त
दा संचिंत्य वैश्या ह किमर्थं मुकुटं कृतं ४२
एवं संचिंत्यन्त्यां तोतस्यां स भगवांस्तदा उ
न्याप्य स्वशिरस्तत्र जग्राह मुकुटं शुभं ४३
पश्यतां सर्वलोकानां महाश्चर्यमभूदिदं
अथ सा वारयोषापि परमा हर्षाश्रुलोचना

फिर मंदिर में जाय कर श्रीरंगजी के समीप मुकुट
चढ़ाने का आरंभ किया पर हरि के मस्तक पर्यंत
नहिं पहुंचती भई ४१ और सो मुकुट सोई हुई प्रति
मा के शिर के ऊपर स्थान नहिं आवता भया तब सो
मन में चिंतन करने लगी की किस वास्ते मुकुट ब
नाया जो इन के शिर पर स्थान नहिं आया ४२ ऐसें
चिंतन कर्ती होई खेद पाती खडी हो गई तब भग
वान जी तिस समय उस की मन की व्यथा जान के
अपने शिर कों उठा कर उस सुंदर शुभ मुकुट कों
ग्रहण कर लेते भये क्या शिर पर चढ़ाय लेते भये
४३ इस वात कों देखते होए सभनों नर नारियों के
मन मे महा आश्चर्य होता भया वेश्या क्या और इस
के आगे मुकुट के वास्ते शिर ऊंचा ना क्या इस से
उपरांत सो वेश्या हर्ष से अश्रुपात जिस के नेत्रों से
चलने लगे ऐसें सो अपने आप को धन्य मानती
भई ४४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ननर्तगीतंगायंतीवानायस्वगृहस्थने दीना
नाथदरिद्रेभ्यो ददौश्रीरंगतुष्टये ७५ तुष्टुवु
स्तांवारयोषांधन्याधन्येतिवादिनः सावेश्या
विजहौस्वीयंकर्मश्रीरंगसन्निधौ ७६ कृत्वा
ऊटीमवासाथभक्ताकिंचिद्दयत्निता ग्रस
गीतैश्चसततंतोषयामासवैहरिम् ७७
एवंभक्तिपरावेश्यासात्यक्त्वाकर्मतल्लौकिकं
श्रीरंगोपासनांकृत्वासेभामासाहरिमंदिरम्
७८

और प्रसन्नमनवालीनृत्यकर्ती २ गायनकर्तीभ
ई औरसाराधनअपने घरसंस्थायके दीनअना
थ दरिद्रयोंकोदानकर २ श्रीरंगजीकेप्रसन्न
नाकेलिये देतिभई ७५ और उहांकेलोक धन्यध
न्यकहर २ केतिसवेश्याकीप्रशंसाकर्तेभये और
सोवेश्या श्रीरंगभगवानजीकेसन्मुख अपनेकु
लधर्मकात्यागकर्देतीभई ७६ उससेंउपरंत कु
टियावनायकर भगवानजीकेसामनेनिवासक
र्तीभई औरजोकछुकोईभोजन देजावे उसकों
खायलेतेभये औरनित्यप्रति नृत्यकर्के गाय
नकर्के श्रीरंगजीकोंप्रसन्नकर्तीभई ७७ इसप्र
कारभक्तिकरणेमे तत्परहोईहुई वेश्या लौकि
ककाम त्याग करश्रीरंगजीकी उपासनाक्या
सेवाकर्के हरिके मंदिर वैकुंठधाम में प्राप्त
होतीभई ७८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२९॰

जातिभ्रष्टो महापापी कृतघ्नो गोघ्न एव च भ
क्त्या हरिं व्रजेद्देवं सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ५६ ॥ इति
श्रीभक्तमालायां भगवद्भक्तिमाहात्म्ये
वैष्णवचरितं समाप्तम् ॥

देखो कैसी भक्ति की महिमा है जिस जाति का य
मन ही है जातिभ्रष्ट महापापी कृतघ्न गोहत्या
रा भी होवे तद भी भक्ति के प्रभाव से वैकुंठ
लोक में जाता है इस में संशय नहि है सत्य
है इह भक्तमाल के भगवद्भक्तिमाहात्म्य
मे वैष्णव चरित्र समाप्त
भया ॥

260

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथभगवतो विस्नोर्यज्ञोपवीतार्पणमहि
मा नरसिंहपुराणे ॥ हेमकुंभंचपीतंच
स्वर्णपट्टादिनिर्मितं यज्ञोपवीतंगोविंदे
दद्देस्तांतगोभवेत् । यज्ञोपवीतदानेन
विस्नवेब्राह्मणायच भवेद्विप्रस्तुवेदी
शुद्धभीर्नात्रसंशयः २ ॥

अबभगवानविस्नुजीकोंयज्ञोपवीत देनेकीम
हिमालिखीहै नरसिंहपुराणमेकहाहै वहु
तस्वेतरंगका वापीले वर्णका अथवा पह
का वा स्वर्णकी तंतुयोंका वहुतसुंदर व
नाहुया यज्ञोपवीतगोविंदजीके चढाए तं
द उसमहिमाके फल करके वेदांतके जान
नवालाहोताहै । और भीकहाहै विस्नुकेतांई
ब्राह्मणाके तांई जोकोई यज्ञोपवीत देवे सो
चारवेदोंकेजानन वाला और होताहै नि
र्मल बुद्धि वालाहोताहै २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथविष्णोःपूजने घंटावादनमहिमावर्णने
स्कंदेनारदप्रतिब्रह्मवाक्यं कृष्णार्चनक्रि
याकालेघंटानादंकरोतियः शृणोतावासु॰
देवस्ततस्यपुण्यफलंशृणुः । वर्षको॰
टिसहस्राणिवर्षकोटिशतानिच व
सतेदेवलोकेतुअप्सरोगणसेवितः
२ सर्ववाद्यमयीघंटाकेशवस्यसदा
प्रिया वादनाल्लभेत्पुण्यंयज्ञकोटि
शतोद्भवं ३ वादित्रनिर्घोषेणपूजाका
लेहरेःसदा घंटाशब्देनपूर्णेनप्रीतो
भवतिमाधवः ४ ॥

अथविष्णुभगवानजीकेपूजाकेसमयघंटा
वजानेकीमहिमालिखतेहैं स्कंदपुराणमे
नारदजीकेप्रतिब्रह्माजीकाकथनहैक्या
श्रीकृष्णजीकीपूजाकेसमय जोघंटाकाश
वदकर्ताहै आगेवासदेवजीके तिसके
पुण्यकाफलश्रवणाकर । सोपुरुषवर्षों
केसैकडे हजारोंक्रोडांवर्ष अप्सरोंके समू
हकरकेंसेव्यमानहो देवलोकमैनिवासकर्ता
है २ परजोघंटाहै सोंसभनोवाजेयोंकारूपहै
औरकेशवजीकीसदासेहीप्यारी है इसवास्तेतिन
केआगेवजानेसें सैकडेक्रोडांयज्ञोंसे उत्पन्नहूया
जोफलसोहोताहै ३ औरहरिकीपूजाकेसमय
सभनरोंकेवाजेयांकेमध्यमै घंटेके शवदक
कैंपूर्णकरेहोइमाधवजीप्रसन्नहोनेहै
४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ वृंदावनप्रसंगात् पूजाकाले अन्यवाद्या नां माहात्म्यं। स्कंदे वादित्रनिनदैः अ गीतमंगलसंस्तवैः यः स्नापयाति देवेशं जीवन्मुक्तो भवेद्विजः। १ वीणावेणुनिनादं च करोति पुरतो हरेः युवतीयोनिसंयोगं न याति हरियोगतः २ मृदंगवादनयुतं पुराणेन समन्वितम् अर्चनं वासुदेवस्य अनंतमोक्षदायकं ३ गीतं नृत्यं च वाद्यं च साम वेदस्य पाठनं पूजाकाले तु विप्रेंद्र सर्वं केशवप्रियं ४॥

अब हरिके पूजाके समय वृंदावनजानेकी महिमा के प्रसंगसें औरभी बाजेयोंको बजानेकी भी महिमा कहते हैं स्कंदपुराणमें कहा है बाजे जो मृदंगादिक हैं और वीणादिक जो हैं इनकों बजानेकर्के मंगलस्तुतियोंके गायनकर्के जो पुरुष देवेश विष्णुजीकों स्नान कराता है सो जीवन्मुक्त होता है १ और जो कोई पुरुष वीणा वंसी इनका शब्द करता है पूजाके समय आगे वाहूके बजाता है सो फिर मुडके हरियोगतें युवती स्त्रियोंके योनिसंयोगकों नहि जाता है अर्थात् गर्भवासमें नहि जाता है २ और जो कोई पुरुष मृदंगादि बाजेयोंके पुराणों के सहित वासुदेवजीका पूजन करता है सो अनंत पुरुषोंको मोक्ष देनेवाला है ३ हे विप्रेंद्र पूजासमय नृत्यकर्णा गायनकर्णा बाजे बजाने सामवेदका पाठ कराणा सर्वदाकाल भगवानजीको प्यारा है ४॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वादित्रनामभावेतुकुर्यान्मूलकवाचनं
पूजाकालेतुविप्रेंद्र विष्णोः प्रीतिकरंसदा
पाद्मे यस्तुशंखध्वनिंकुर्यात्पूजाकालेविशे
षतः तस्यपुण्यफलंवक्ष्ये शृणुवत्ससमा
हितः ६ अगम्यागमनाद्यैश्च विमुक्तःस
र्वपातकैः अंतेविष्णुपुरंगत्वा विष्णुनास
हमोदते ७ वीणांवादयते यस्तु पूजाका
लेजगत्पतेः पंडितानामग्रणीःस्यात्स
मर्त्यःप्रतिजन्मनि ८ ॥ ~ ॥

जिसमंदिरमेंबाजेनाहोवे तहांमूलकोंकोपाठ
करणापूजाकेसमय हेविप्रेंद्र इहभी विष्णुकों
सदाप्याराहे ५ पद्मपुराणमेंकहाहै जोपुरुष
पूजाकेसमयविशेषकरकेंशंखकाशब्दक
ताहै हेवत्स तिसपुण्यका फलकहता हूं
तूं सावधानमन वालाहोकेसुन ६ क्याफ
लहोताहै किअगम्यागमनादिपापोंकरकें
मुक्तहोपश्चात् अंतमेंविष्णुकेपुरजायक
र विष्णुजीकेसाथही हर्ष आनंद भोगता
है ७ औरजोकोई जगतपतिकी पूजाके
समय वीणा बजावताहै सोअगले ज
न्ममें पंडितोंका अग्रणी होताहै क्या ब
डा विद्वान होताहै ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मृदंगवाद्यकृद्यस्तु पूजायां कैटभद्विषः
तस्य प्रसन्नो देवेशो दद्यादभिमतं फलं १
डमरुं डिंडिमं चैव झल्लरीं मधुरीं तथा प
टहं डुंडुभिं चैव काहलं सिंधुवादिनीम् १०
कांस्यं च करतालं च वेणुं वादयते तु यः
पूजाकाले महाविष्णोस्तस्य पुण्यं निशाम
य ॥ ब्रह्मघ्नाद्यैः पातकैर्मुक्तो मंदिरं याति चा
क्रिणः परमज्ञानमासाद्य तत्रैव परिमुच्य
ते १२ ॥ ~ ॥

जोकोईपुरुषकैटभद्वेषी भगवानकीपूजामें
मृदंगबजाताहै तिसपरदेवेशजी प्रसन्नहोईक
र अभिमतफलदेतेहै १ औरजोकोईमहिमा
विष्णुकीपूजामें डमरू डिंडिम झल्लरी वडेआ
ल मधुरी और नगारा ढोल कहला तुरी न
सिंहा सिंधु वादिनी १० औरकांसियांतालवेण
वंसी इत्यादि वाजियोंकोबजातेहैं तिनकेपु
ण्यकाफलश्रवणकर ॥ ब्रह्महत्यादिपा
दि महापापोंसे मुक्त होयकर इया चक्रपाणि
भगवानजीके मंदिरमें जाताहै औरतहांमेंही
परमज्ञानको प्राप्तहोकर वहांही मुक्त
हो जाताहै १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२९२

263

बृहन्नारदीये मुखवाद्यकृतायेन देवता
यतने नराः विमानशतसंयुक्ताः कल्पस्व
र्गादिवासिनः ॥२ करशब्दं प्रकुर्वन्ति देवता
यतने नराये ते सर्वपापनिर्मुक्ता विमाने
शाग्रगच्छयम् ॥४ देवतायतने येन घंटा
नादं प्रकुर्वते तेषां पुण्यं निगदितं कः स
मर्थोस्ति पंडितः ॥५ भेरीमृदंगपटहमुर
जाद्येश्चाथ डिंडिमैः संतोष देवदेवेशं लभं
ते तत्फलं मृणु ॥६॥

बृहन्नारदीयमें कहा है जौनसे पुरुष देवता
के मंदिरमें मुखोंके साथ्यबाजे बजाने वाले
है सो सेकडे विमानों कर संयुक्त कल्प पर्यंत
स्वर्गमें निवास करते हैं ॥२ औरजोनसे कोई
देवताके मंदिरमें तालियां बजाते हैं सो सा
रे पापोंसे निर्मुक्त होय पहुप दोयुगों पर्यंत
विमानेको स्वामी होते हैं ॥४ औरजोनसे र
कोई देवताके मंदिरमें घंटाका शब्द करते
है तिनका पुण्य कहनेकों कौनपंडित सम
र्थ है ॥५ औरभेरीयां नगारे मृदंग पटह ढो
ल मुरजा डिंडिम इत्यादि बाजो करके देवदे
वेशजोकों प्रसन्न कर जोनसा फललभता
है सो श्रवण कर ॥६॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथविष्णुपूजनेवस्त्रार्पणमहिमा अग्निपुराणे दुकूलपट्टकौशेयक्षौमकार्पासकादिभिः वासोभिःपूजयेद्देवंस्वशुभैःरात्मनःप्रियैः १ वस्त्राणिसुपवित्राणिसारवंतिमृदूनिच रूपवंतिहरेर्दत्वासुश्लक्ष्णानिनवानिच २ यावत्तस्यतंतूनांपरिमाणंभवत्यथ तावद्वर्षसहस्राणिविष्णुलोकेमहीयते ३ विष्णुधर्मोत्तरे रांकवंमृगरोमोत्थंकार्पासाद्यं तदाशुभं योदद्याद्देवदेवायसोश्वमेधफलं लभेत ४ ॥

अब विष्णु भगवानजी को वस्त्र चढाने की महिमा लि अग्निपुराण मे कहा है दुकूल जो है सो पट्ट के कोशे के क्षौम अलसी के और कार्पास के दुकूल दुपट्टे और वस्त्र जो न से वडे वडे सुंदर अपने प्यारे तिनों के साथ देवता विष्णुजी को पूजन करे अर्थात सभ तरों के सुंदर २ वस्त्र चढावे १ और वडे पवित्र सारवाले और अत्यंत सुंदर रूपवाले कनारी तिल्ली की विलछूटी कारचूबी नवीन नवे कोमल और वरीक ऐसे सुंदर २ वने होए नारायणजी को चढावे २ उनके चढाने से यह फल होता है की जितनीयां क वस्त्र दी तंतू है उतने हजार वर्ष विष्णुलोक में महिमा को प्राप्त होता है ३ विष्णुधर्मोत्तर में कहा है पशमीना कार्पास अलसी इत्यादि वस्त्रों के जो सभ तरों के उपकरण देता है सो अश्वमेध के फल को प्राप्त होता है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाद्मे उत्तरखंडे दिव्यांबराणि यो दद्यात् उत्सवे
समुपस्थिते मन्वंतराणि वसते मानवस्तंत
संख्यया ५ सर्वं प्रावरणं वस्त्रं दद्यात्कृष्णमुरा
रये शीतस्य वारणार्थाय दद्याद् वस्त्रं वनू
तनं ६ विष्णुप्रतिवस्त्रार्पणमहिमांतर्गत
त्वात् ध्वजस्यापि वस्त्ररूपत्वात्तन्महिमान
माह नरसिंहपुराणे ध्वजं तु विष्णवे यस्तु ग
रुडेन समन्वितम् दद्यात्सोपि ध्वजाकीर्णे वि
माने न विराजितः विष्णुलोकमवाप्नोति से
व्यमानोप्सरोगणैः ७ ॥

पद्मपुराणके उत्तरखंडमे लिखाहै जोपुरुषरामन
वम्यादिक उत्सव दिनोंके प्राप्त होनेपर विष्णुको
दिव्य क्या सुंदर रंगोंकर संयुक्त तिहोके नारी गोटे
केवेलां बूटेयोंकर युक्त वस्त्र देताहै सो वस्त्रकी
तंतुयोंकी संख्याकर युक्त वैकुंठमे वसताहै ५
और पुरुष पुराणे वस्त्र सारें उतारकर शीतके
निवारणवास्ते मुरारि भगवानजीके तांई न
वीन वस्त्र देवे ६ अब विष्णुजीके ऊपर वस्त्र चढा
ने की महिमाकी अंतर्गत होनेसें ध्वजाकोभीं व
स्त्ररूपहै इसवास्ते जिसके चढानेकोभी महि
मा इहां लिखाहै नरसिंहपुराणमें कहाहै जोपु
रुष गरुडकी मूर्तिकर युक्त ध्वजा बनाके विष्णुके
मंदिरमें चढाताहै सो ध्वजोंकर युक्त विमानमें
चढकर अप्सरां जिसकी सेवा करेया करतीयां
हैं ऐसे विष्णुलोकमें प्राप्त होताहै ७ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देवस्त्रीशतसंयुक्ताः सर्वकामसमन्विताः स्वा-
र्गलोकमनुप्राप्य मोदते कल्पपंचकम् १७ पा-
द्मे क्रियायोगसारे यस्तु शंखध्वनिं कुर्यात्सं-
ध्यायां कमलापतेः तस्य पुण्यफलं वक्तुमिमृणा
वन्तसमुपाहितः १८ अगम्यागमनाद्यैश्च वि-
मुक्तः सर्वपातकैः शंखेन विष्णुपुरं गत्वा वि-
ष्णुना सह मोदते १९ देवतायतने यस्तु कुर्व
च्छंखरवं नरः सर्वपापविनिर्मुक्तो ब्रह्मणा
सह मोदते २० ॥

सो पुरुष सैंकडे देवलोक की स्त्रियों कर संयुक्त
और सम्पूर्ण कामना संयुक्त स्वर्गलोक में प्राप्त हो-
कर पांच कल्प पर्यंत सुख भोग भोगते हैं १७ प-
द्मपुराण के क्रियायोगसार में कहा है जो पुरुष
कमला लक्ष्मी के पति कौं संध्या समय शंख
की ध्वनि करता है देवता तिस पुण्य का फल कथ-
न करनौं असमर्थ हैं सो ऐसा वचन मवाली हो के सुवर्णक
र १८ क्या फल होता है की अगम्या स्त्रियों के सा-
थ गमन करे हो पुनः जो पाप होते हैं तिन पापों कर्के
मुक्त होय पश्चात् मृत्यु होकर विष्णु के पुर वैकुंठ
में जायकर विष्णु के साथ सुख भोगता है १९ और
हे राजन जो कोई देवता की मंदिर में शंख का शब्द
करता है सो सब पापों से निर्मुक्त होय पश्चात् ब्र-
ह्मा के साथ सुख भोगता है २० ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२६४

काहलंविनिनदंकुर्वन्देवतायतनेनरः सर्वपा
पविनिर्मुक्तः स्वर्गलोकाधिपोभवेत् २१ ता
लादिकांस्यनिनदंकुर्वन्विष्णुगृहेनरः य
त्फलंलभतेराजंस्तच्छृणुष्वनराधिप २२
सर्वपापविनिर्मुक्तोविमानशतसंवृतः
गीयमानश्चगंधर्वैर्विष्णुनासहमोदते २३

264

मनुष्यजोहैसोदेवताकेमंदिरमें काहलोंका
शब्द कर्ताहुया सारे पापोंसे निर्मुक्तहोका
र स्वर्गलोकका अधिपतिहोताहै २१ और
विष्णुकेघरमें तालादियोंका जो कंसियों
का शब्दकर्ताहुया हेराजन् जोफललभता
है हेनराधिपति सो श्रवणकर २२ सोपुरु
ष सारे पापोंसें निर्मुक्तहोके सैकडे विमानों
कर युक्त गंधर्व जिसकेआगे गायनकर्तेहैं
एसेसुखभोगोंकर युक्त विष्णुके साथ
सुख भोगताहै २३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्मपुराणे पातालखंडे शौनकादीन्मुनि-
सूतवाक्यं सूतउवाच अन्यद्व्रतंप्रवक्ष्या-
मिध्वजारोपणसंज्ञितं सर्वपापहरंपुण्यं
विष्णुप्रीतिकरंनृणां १ ब्राह्मणक्षत्रिय
विशांशूद्राणांचद्विजोत्तम सर्वदुःखोप
शमनंसंसारच्छेदकारणं २ यःकुर्याद्वि
ष्णुभवनेध्वजारोपणमुत्तमं संपूज्यतेवि
रिंच्याद्यैःकिमन्यैर्बहुभाषितैः ३ हेमभार
सहस्रंतुयोददातिकुटुंबिने तत्फलंतु-
समाप्नोतिध्वजारोपणकर्मणि ४ ॥

पद्मपुराणके पातालखंडमें शौनकादियोंके प्र
तिसूतजीका कहना है सूतजी कहनेलगे हे शौ
नकादिकऋषियों और तुमारे प्रतिध्वजारोपणना
मक व्रत कथन कर्ता हूं कैसा है सारे पापोंके ह
रनेवाला और पुरुषोंको विष्णुकी प्रसन्नता क
रनेवाला सो कथन कर्ता हूं १ और हे द्विजोत्तम-
ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्र इन चारों वर्णोंके सारे
दुःशमन करनेवाला और संसारके छेदका का
रण है २ जो कोई पुरुष विष्णुके मंदिरमें उत्तमध्व
जालगता है सो पुरुष ब्रह्मादिक देवतेयोंने पू
जीदा है और बहुत कहनेकर क्या है ३ जो को
ई पुरुष कुटंबि ब्राह्मणके तांई सोनेका हजार
भार देता है उसको जो फल है सो ध्वजारोप
ण कर्ममें तुल्य है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ध्वजारोपणतुल्यं स्याद्गंगास्नानमनुत्तमम्
अथवा तुलसीसेवा शिवलिंगप्रपूजनम् ५
कार्तिकस्य सिते पक्षे द्वादश्यां प्रयतो नरः
स्नानं कुर्यात्प्रयत्नेन दंतधावनपूर्वकं ६
नित्यकर्म निर्वर्त्य पश्चाद्विष्णुं समर्चयेत्
धात्रीं च विधात्रीं पूजयेत्स्तंभकद्वये ७
हरिद्राक्षतगंधाद्यैः पुष्पमाल्यैर्विशेषतः
विंशतिहस्तमात्रं तु स्थंडिलं चोपलिप्य ८

सभसें उत्तम जो श्रीगंगाजी का स्नान है सो ध्व-
जा चढाने के समान फलवाला है अथवा तुल-
सी के वृक्ष की सेवा और शिवजी के लिंग का
पूजन ये भी दोनों ध्वजा चढाने के तुल्य हैं ५
कार्तिक महीने के शुक्लपक्ष में द्वादशी के
दिन यत्न करके भी दंतधावनपूर्वक पवित्र
होकर स्नान करे ६ पीछे से नित्यकर्म संध्या-
दि कृत्य समाप्त कर विष्णुजी का पूजन करे
और हरिद्रा अक्षत गंध पुष्पादिकों करके दो-
नों स्तंभों में धात्री विधात्री का पूजन करे
७ और वीस हाथ का स्थंडिल बनाय कर
तिसमें गोबर का लेपन देवे ८ ॥

आधायाग्निं स्वगृह्योक्तं चाज्यभागादिकं क्र-
मात् जुहुयात्पायसेनैव हुतमष्टोत्तरं शतं
ततो मंगलवाद्यैश्च सूक्तपाठैश्च शोभनैः
नृत्यैश्च स्तोत्रपठनैर्नयेद्विष्ण्वालये ध्वजं ।१
देवस्य द्वारदेशे वा शिखरे च मुदान्वितः
सुस्थिरं स्थापयेद्विद्वान्ध्वजं स्तंभसंयु-
तं ॥ गंधपुष्पाक्षतैर्दैवं धूपैर्दीपैर्मनो-
हरैः भक्तभोज्यादिभिर्युक्तैर्नैवेद्यैश्च हरिं
यजेत् ।२॥

उस स्थंडिलमें अपने गृह्यके अनुसार अग्नि
स्थापन कर फिर क्रमसें आज्यभागादि हवन
करे फिर अष्टोत्तर शत आहुति विष्णुके ना
मों कर्के पायसजां चुनका हवन करे १ हवन
सें उपरंत मंगल वाजे वजनते होवे वेदोकीयां
ऋचांके पाठोंकर्के नृत्यहास्य मंगल पूर्वक
तिस ध्वजाकों विष्णुके मंदिरमे लेजावें ।१ सो
ध्वजा देवताके द्वारदेशमे जां मंदिरके शिख
रऊपर प्रसन्नतापूर्वक अच्छे सुंदर दृढ स्तंभ
के सहित अच्छीतरांसे स्थापन करे जो वायु-
वेगसें छुटी नहि जावे ॥ फिर गंधपुष्पधूपदी
पोंकर्के मनोहर पुष्पोंकर्के नानाप्रकारोंके नै-
वेद्यादियो कर्के हरिका पूजन करे ।२॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा
ग्राम·
२६२

नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन न
मस्तेस्तु हृषीकेश महापुरुष सर्वज ॥३ य
त्रेदमखिलं जातं यत्र सर्वं प्रतिष्ठितं लय·
मेष्यति यत्रैतत्तं प्रपन्नोस्मि माधवं ॥४ यन्मु
खाद्ब्राह्मणा जाता बाहुभ्यां भवन्नृपाः वै
श्याः यस्योरुतो जाताः पद्भ्यां शूद्रोभिजायते
मायासंगममात्रेण वदंति पुरुषं शुभं
स्वभाव निर्मलं शुद्धं निर्विकारं निरंजनं
॥६

स्नानके पीछे इस प्रकार स्तुति करे हे पुंडरीक कम
लकी न्याई नेत्रों वाले तुमारे तांई नमस्कार होवे और
हे विश्वके वपाने वाले तुमारे तांई नमस्कार होवे
हे हृषीकेश महापुरुषों के पहले जन्मे होए तुमा
रे तांई नमस्कार होवे ॥३ जिस तुमारे बीच इह
चराचर जन्मा है और जिस तुमारे में इह विश्व स्थि
त है और जिस तुमारे में अंत लीन भी होता है ऐ
से माधव लक्ष्मी के स्वामि को शरणागत होता हूं
॥४ सो कोन माधव है जिसके मुखसें ब्राह्मण
उत्पन्न भये और बाहूंमें क्षत्रिय उत्पन्न भये और ऊ
रुपहों सें वैश्य उत्पन्न भये और जिसके पादों से
शूद्र होने भये ॥५ और मायासंगम मात्र करके पुरु
ष जिसको कहते हैं और जो स्वभाव करके शु
द्ध निर्मल निरंजन निर्विकार है जिसकी ॥६

सद्भक्तवत्सलं देवं भक्तिगम्यं जनार्दनं निर्म
लं परमं सूक्ष्मं प्रणतोस्मि पुनः पुनः हृदय
स्थोपि दूरस्थो मायया मोहितात्मनां चिद्रूप
स्वपरानंदो स मे विष्णुः प्रसीदतु १८ य इदं
कीर्तयेत्स्तोत्रं स्तोत्राणामुत्तमोत्तमम् सर्व
पापविनिर्मुक्तो विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् १९
इति स्तुत्वा नमेद्विष्णुं ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः
आचार्यं पूजयेत्सम्यग्दक्षिणाच्छादनादिभिः
२०

और सद्भक्त हैं प्यारे जिनकों भक्ति करकें प्राप्त होने
वाले जनार्दनजी जो निर्मल परम सूक्ष्मरूप ति
नकों वारंवार प्रणाम करता हूं १७ और जो परमेश्वर
माया करकें मोहे हुई आत्मा मनवालेयों के हृद
यमे भी स्थित है तद भी तिनकों दूर प्रतीत होते
है सो चैतन्यस्वरूप परानंद विष्णु भगवान् परे
पर प्रसन्न होवें १८ जो कोई पुरुष उत्तम स्तोत्रों
के मध्यमें उत्तम जो यह स्तोत्र है इसकों जो कोई प
ढेगा सो सारे पापों से निर्मुक्त होकर विष्णु की सा
युज्य मुक्तिकों प्राप्त होगा १९ इस प्रकार स्तुतिक
कें विष्णुजी कों पीछे से दंडवत् प्रणाम करे फिर
पीछे से ब्राह्मणों को उहां मंदिर मेही भोजन क
राय कर दक्षिणा वस्त्र भूषणादियों करकें अ
पने आचार्य कों पूजन करे क्या विद्या करे
२० ॥

सा॰
ग्राम॰
२९८

पुत्रमित्रकलत्राद्यैर्बंधुभिः सह वाग्यतः भु-
ञ्जीत पारणां तत्रा विष्णुभक्तिपरायणः २१
यस्त्वेतत्कर्म कुर्वीत ध्वजारोपणमुत्तमम्
तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये शृणुष्व सुसमाहितः २२
वद्धो ध्वजोसि विप्रेंद्र यावच्चलति वायुना
तावद्वै पापजातानि विनश्यंति न संशयः
महापातकयुक्तोपि युक्तो वाप्युपपातकैः
ध्वजं विष्णुगृहे कृत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते २४

फिर आचार्य कों विदा करकें अपने पुत्र मित्र कलत्र
भ्राता बांधव नौकर सभनों को साथ्य विठाय कर वि
ष्णु की भक्ति में तत्पर व्रत का पारण करे क्या इन
के साथ वैठकर मौन होके भोजन करे २१ जो
कोई इस ध्वजारोपण कर्म कों कर्त्ता है तिस कें पु
ण्य का फल कहता हूं तूं सावधान मन वाला हो
के श्रवण कर २२ हे विप्रेंद्र जिस पुरुष की स्था
पन करी होई ध्वजा जितना काल वायु करकें च
लती है क्या कंपायमान होता है उतने ही उस
के पापों के समूहों को नाश कर्त्ता है इस में संश
य नहीं है २३ जो कोई पुरुष महापापों कर युक्
त होवे वा उपपातकों कर्कें युक्त होवे सो वि
ष्णु के मंदिर में ध्वजा लगाय कर्कें सारे पापों
सें मुक्त हो जाता है २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यावद्दिनानिवसतिध्वजोविष्णुगृहेद्विजाः
तावद्युगसहस्राणिहरिसायुज्यमश्नुते २५
आरोपितंध्वजंदृष्ट्वायेभिनंदंतिधार्मिकाः ते
पिसर्वेप्रमुच्यंतेमहापातककोटिभिः २६
शृणुध्वमृषयश्चित्रमितिहासंपुरातनं
सर्वपापप्रशमनंनारदेनप्रभाषितं २७
आसीत्पुराकृतयुगेसुमतिर्नामभूपतिः
सोमवंशोद्भवःश्रीमान्सप्तद्वीपैकराट्स्वयं २८

हे द्विजाः विष्णुजीकेमंदिरमें ध्वजाजितनें दिन
लगीरहे उतनेही हजार युगपर्यंत हरिकीसा
युज्यमुक्तिभोगताहै २५ औरजोनसे धर्मबुद्धि
वाले कोईकलोकमंदिरपर लगीहोई ध्वजा
देखकरप्रसन्नहोतेहैं सोभीसारे महापापों
कीयोंकोटियोंकर्केमुक्तहोतेहै २६ हे ऋषि
यो इस ध्वजाकेमहात्मकहनेमें प्राचीन इति
हास आश्चर्यके करनेवालाकहताहूं तुमश्र
वणकरो कैसाहै पापोंकेशमनकरनेवाला
औरनारदजीकाकथनकराहुया २७ सत्यस
त्ययुगके आदमें सुमतिनामकर्के चंद्रवं
शमे सात द्वीपोंका एक राजा शोभावा
ला होता भया २८ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्वलक्षणसंपन्नः सर्वसंपद्विभूषितः स
दाहरिकथासेवी हरिपूजापरायणः २९ ह
रिभक्तिपराणां च शुश्रूषरनहंकृतिः सर्व
भूतहितः शांतः नयज्ञः कीर्तिमान्सुधीः ३०
न स्य भार्या महाराज्ञी शुभलक्षणसंयुताः
पतिव्रता पतिप्राणा नाम्ना सत्यवतीश्रुता
ताउभौ दंपती नित्यं जलदानपरायणौ त
डागारामकूपादीन संख्यानाविनेनतुः ३२

फिरके सा ओह राजा था सारे शुभलक्षणों कर्के युक्त
सभ तरां की संपदा कर्के शोभायमान सर्वदाकाल
हरिकी कथा श्रवण करणी नारायणजीकी पू
जामें तत्पर रहता था २९ ओर नारायणजीकी भ
क्तिकरनेवाले पुरुषों की सर्वदाकाल सेवा क
र्ता था ओर अहंकार नहि जिसकि मनमें सभ
नों जीवों का हित चाहने वाला शांतरूप अरु नी
ति के जाणने वाला वडा पवित्र वडा बुद्धिमान्
राजा था ३० तिसकी राणी वडी शुभ रूपा सुंदर
लक्षणोंवाली पतिव्रता पतिकी प्राणरूप नाम
कर्के सत्यवती प्रसिद्ध थी ३१ सो दोनों राजा राणी
नित्यप्रति जलदानमें तत्पर रहते थे ओर त
लाव ओर बाग इत्यादि असंख्यात जिनोंने व
नाए है ३२ ॥

सातुसत्यवतीनित्यंश्रीविष्णुगृहेसदा नृ
मेसंत्यंतसंतुष्टामनोज्ञामंजुभाषिणी २३
सोपिराजामहाभागोद्वादशीद्वादशीदिने
ध्वजविस्तारयामाससमनोज्ञंवरंविष्णुरम
एवंहरिपरंनित्यंराजानंधर्मकोविदं तं
स्यप्रियांसत्यवतींदेवाअपिसदास्तुवंत
आययौदंपतीशिष्यैर्द्रष्टुकामोविभांडकः
विभांडकमुनिंप्राप्तासमायान्तंजनेश्वरः

सोजोसत्यवतीहै नित्यंप्रतिसर्वदाकालविष्णु
जीकेमंदिरमें अत्यंतप्रसन्नता पूर्वकमनोज्ञसुं
दरमधुरभाषणकरतीहोई नृत्यकरतीथी २३
औरमहाराजाभाग्यवान् द्वादशीकीद्वादशीदि
नमेंअतिसुंदरवडेविस्तारवालीध्वजा विष्णु
केमंदिरमेंलगावताभया ३४ इसप्रकारनित्यं
प्रतिभगवानजीकीभक्तिमें तत्परधर्मकावि
धराजाकोंऔरजिसकीप्यारीसत्यवतीस्त्रीकों
देवताभीसर्वदाकाल स्तुतकरतेभयेकीयाऽ
न्यस्त्रीहै ३५ उसकादर्शनकरनेकी का
मनावालाशिष्योंकेसाथपरिवारिया हुयावि
भांडकमुनिआवताभया तदआउतेमुनिकों
सुनकर्के राजा क्या कर्ता भया ३६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२०॰

270

अभ्युद्ययौ सपत्नीकः प्रजाविभवविस्तरम्
कृत्वातिथ्यक्रियं शांतं कृत्वासनपरिग्रहं ३७
नीचासनगतो भूपः प्रांजलिर्मुनिमब्रवीत्
भगवन्कृतकृत्योस्मि त्वत्प्रसादान्मुनीश्वर
स्पृशन्करेण राजानं प्रश्रयावनिहर्षितः ३८
ऋषिरुवाच यत्कृतं भवता राजेन्द्र तत्सर्वं॰
तव कुलोचितम् ३९ विनयावनताः सर्वे परं॰
श्रेयो व्रजंति हि धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्ष
श्च राजसत्तम ४० ॥

सभनों कों साथ लेकरकें आगे जाय मिलता भया
और विभव विस्तार पूर्वक आतिथ्य सत्कार करता॰
भया और कियाहै आसन परिग्रह जिसने ऐसे
शांतरूपी मुनिकों ३७ नीचे आसन पर बैठके
राजा हाथ जोड विनती कर मुनिकों कहता भ
या हे मुनीश्वर तुमारे आउने करकें तुमारी कृ
पासें कृतकृत्य होगयाहां ३८ इननीवानके
सुनतेही हर्षयुक्त होइ आइया मुनिराजाकों
पीठमें हाथके साथ स्पर्श करताहुया ऋषि कह॰
ने लगा हे राजन् तूं जो जो कछु तैने करा है सो
सभ तेरे कुलके योग्य ही है ३९ क्योंकि विन॰
ती कर नम्र पुरुष परम कल्याण कों प्राप्त होते
हैं और हे राजसत्तम धर्म अर्थ काम मोक्ष चा
र पदारथ भी नम्रतासें लभते हैं ४० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विनयाल्लभते सर्वं विनयात्किं न साध्यते
प्रीतोऽस्मि तव भूपाल सन्मार्गपरिवर्तिनः ५१
ब्रूहि ते यन्महाभाग यत्पृच्छामि तदुच्यतां
अर्हणा बहवः संति हरिसंतुष्टिकारकाः ५२
त्वं नित्यमाहितमना धजारोपणकर्मणि
तव भार्यापि साध्वीयं नित्यं तत्परायणा
किमर्थमेतद्वृत्तांतं यथावद्वक्तुमर्हसि रा
जोवाच श्रूयतां भगवन्सर्वं यत्पृच्छसि वदा
मि तत ५५ ॥

और विनय नम्रता सें सभी कछु लभता है और वि
नय सें ऐसी कौन वस्तु है जो सिद्ध नहि होता है ना
स भी कछु सिद्ध होता है हे भूपाल सच्छे श्रेष्ठ मार्ग
में वर्तने वाले तेरे पर में वहुत प्रसन्न हुया हूं ५१
तेरे कों कल्याण होवे और जो कछु मैं पूछता हूं सो
कथन कर क्यों की विष्णु के प्रसन्न करणे वालियां
वहुत तरां की यां पूजा है सो देखियां सुनियां है ५२
परंतु तूं सावधान मन वाला होय प्रसाइया और
तेरी राणी भी पतिव्रता नित्य प्रति तत्पर करणे में
तत्पर होके धजारोपण कर्म में लगी रहती है ५३
सो यह किस निमित्त है यह वृतांत मेरे कों यथा
वत् कहने कों योग्य हो इतनी वात सुनि के मु
ख कौ श्रवण कर राजा कहता भया हे भगवन्
अबे जो कछु आप पूछते हो सो सारा ही कथन
करता हूं ५५ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आश्चर्यभूतं लोकानां मावयोश्चरितं मुने अ
हमासं पुराजन्म झोमलिनो नाम सत्तम ५५
कुमार्गनिरतो नित्यं सर्वलोकाहितेरतः
पिशुनो धर्मविद्वेषी देवद्रव्यापहारकः ५६
महापातकसंसर्गाद्भक्ष्याभक्ष्यरतः सदा
गोब्रह्मब्रह्महा चौरः सर्वप्राणीवधेरतः
नित्यंनि...रवक्ता च पापा वेश्यापरायणः
एवंस्थितः कश्चित्कालमनादृत्य महद्वचः
५८

हे मुने हमारा चरित्र लोकोंको आश्चर्य रूप है सभ
लोक इसमें विस्मित होते हैं पिचले जन्ममें मैं
इयामलिन नाम करके हे सत्तम ५५ सो मैं नि
त्यही कुमार्ग में रत रहता था और सारे लोकों
का अहित कर्ता था बड़ा ठग था धर्मके सा
थ द्वेष करना देवतायों के मंदिरों से द्रव्य चुरा
य लाता था ५६ सो महापापीयों के संसर्ग क्या
साथ से भक्ष्य अभक्ष्य वस्तु सभ खाय लेता था
और गोहत्या ब्रह्महत्या और सभ जन्तुओं को जीव मा
रणे चोरी करणी इसमे तत्पर मनवाला रहता
था ५७ नित्यप्रति कठोर बोलना पापकरना और
बड़ेयोंका कहना न हि मानकरके वेश्या के साथ
संभोग करणे में तत्पर होए हुए कितना काल
बीत गया ५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्वबंधुविनिर्मुक्तो दुःखी वनमुपागमम्
मृगमांसाशनो नित्यं धर्ममार्गाबहिष्कृतः
एकाकी दुःखबहुलो ह्यवसन्निर्जने वने
एकदा त्वनया रिक्रांतो निदाघार्तः पिपासि
तः ५० जीर्णे देवालये विष्णोर्निवासं कृतवा
नहं शीर्णस्फुटितसंधानमकार्षं वासभोग
ने ५१ पर्णैस्तृणैश्च काष्ठैश्च गृहं सम्यक्काक
लिते भूमिर्मया संभोगवास्तस्याहितेनाग
नीश्वर ५२ ॥

फिर मैं सारे बांधवों को करके त्यागा गया हुआ दुःखित
होकर वन में चला जाता भया तहां वन के मध्य
में नित्य प्रति मृगों के मांसों को भक्षण कर्ता भया
और धर्ममार्ग में अंधा हुया हुया ५१ इकल्ला बहु
ते दुःखों कर युक्त निवास कर्ता भया एक समय
तृषा कर व्याकुल गर्मी के साथ पीडित तृषा क
रके युक्त वन में फिरता ५० उस वन के मध्य में ए
क पुराणा विष्णु देवता का मंदिर था तिस में मैं
जाकर मैं निवास कर्ता भया और हे मुने पुराने
तिस भग्न टूटे होए मंदिर को कहीं २ बनाव
ता भया ५१ और पत्र काष्ठ तृण मृत्तिका इनों क
रके मैंने सो घर अच्छा बनाय दिया और हे मुने ।
घर में स्त्री के संभोग करने की इच्छा थी तिसें उ
स मंदिर में भूमि लेपनादि लगाय कर अच्छी
तरां बनावता भया ५२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तत्राहं व्याघवनस्थो हत्वा बहुविधान्मृगान्
आजीववर्तनं कृत्वा वासराणां च विंशतिः
अथेयमागता साध्वी विंध्यदेशसमुद्भवा
निषादकुलसंभूता नाम्ना कोकलिनी स्मृ-
ता ५४ बंधुवर्गपरित्यक्ता दुःखार्ता जीर्ण-
विग्रहा क्षुत्पिपासापरिश्रांता शोचंती स्व-
कृतां क्रियाम् ५५ दैवयोगात्समायाता भ्र-
मंती विजने वने १ मोदुःखवती दृष्ट्वा जाता मे
विपुला हृगा ५६

तिस वनमें व्याघ हिंसकों कीन्याई निवासकर्ता
भया और तहां मैने वीसा दिनो तक रवहुत
तरों के मृगमार २ करके जीवका कर्ता भया
५३ इससे उपरंत ऐसेही विंध्याचलमें उत्पा
न होई रूप यह पतिव्रता निषादों के कुलमें
जन्मी हुई कोकिलनी नाम करके प्रसिद्ध
उहां मेरे पास आवती भई ५४ कैसीथी यह
बांधवों ने त्यागी होई वडी दुःखित जीर्णदे
हवाली है क्षुत्प्यास तृषाकर पीडित गे
र अपने करे होए कर्मोंकों शोचती हुई ५५
दैवयोगसें निर्जन वनमें फिरती २ मेरे पा
स आई तद इसकों देखकर मेरे मन में वडी
दयाउत्पन होती भई ५६ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मयार्द्रंजलंचास्मैमांसंचाग्नेस्तनूभिदं से
वागतस्त्वमा ब्रह्मन्मयाप्याश्रमे तथा ५७
निवेदयस्व कर्माणिनानाविधानि महामुने
अहंकोकिलनीनाम्ना निषादकुलसंभवा
दाशकस्य सुता ब्रह्मन्वसंविंध्यपर्वते
परस्वहारिणीनित्यंसदापैशुनिवादिनी ५८
बंधुवर्गैःपरित्यक्तायतोहंकृतनवस्त्वनिम
कांतारे विजनेब्रह्मन्त्वत्समीपमुपागता

हेमुनेइसकोंमैनेजलदिया औरअग्निकेंकरनेः
वाला मांसदियाहेब्रह्मन् जदइसकाथकेवा
दूरहोगया तदमैनेजिसतराहसूछीयेसेहीअ
पनेकर्मनिवेदनकर्नीभई ५७ हेमहामुनेजो २
कुछइनेअपनेकर्मनिवेदनकरेसोश्रवणकर
हेब्रह्मन् पहकहनेलगेमें निषादोंकेकुलमें
जन्मीहुईहांकोकिलनीमेरानामहै ५८ दाशक
नामाभीलकीपुत्रीहां विंध्याचलकेऊपरनिवा
सकर्तीहां नित्यप्रतिपराया द्रव्यचुराने वाली
हां औरसर्वदाकाल पिशुनकठोर बोलने
वालीहां ५९ औरमैने औरकोईपतिवनायाथा
इसवास्तेबांधवोनेमेरेकोंत्यागदियाहै अबर
सवनमें फिरती २ निर्जनमें तुमारे पास
आय प्राप्त भईआं ६० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्मिन्देवालये विष्णोरहं चेयं च वै मुने दंप
तीभावमाश्रित्य स्थितौ मांसाशनौ तदा ९१
तत्र देवालये रात्रौ मुदितौ मांसभोजनात्
वध्वा वस्त्रं च दारुणे प्रमत्तौ मद्यसेवनात्
अत्यंतहर्षसंपन्नावावां सम्यगनृत्यताम्
तत्कालमेव पंचत्वमावयोरभवन्मुने ९२
आगता यमदूतास्तु पाशहस्ता भयंकराः
यस्तु वध्वा गृहीत्वावां प्राप्ता संयमनीं यदा ९४

हेमुने तिस विस्नुदेवताके मंदिरमें और यह सा
भी दंपती भावकों आश्रित होकर सर्वदाकाल
मांस खाने वाले हम निवास कर्ते भये ९१ ति
स देवताके मंदिरमें एक दिन मांस खानेसें प्र
सन्न चित्त होएहुए और मद्यपान करनेसें प्रम
त्त काम दमत हम दोनोही ९२ अत्यंत हर्ष॰
कर संयुक्त दंडके आगे वस्त्र बांधकर हाथ
में पकडके नृत्य कर्ते भये तो हेमुने उसी नृ
त्यके कर्ते २ हम तत्कालहीमें दोनों मृतहो
गये ९३ तद उसी समें फांसियां हाथों मेंलि
ये होय वडे भयंकर रूपी वाले यमदूत आग
ये और तद हमारे कों बांधकर संयमी धर्म॰
राजाकी पुरीमें प्राप्त करने वास्ते चलेथे
९४ ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कर्मणानेन तेनैव तुष्टो भगवान्मधुसूदनः स्वदू
तान्प्रेषयामास आवयोर्हरणकारणात् ९५
तावत्तु देवदूतास्ते हरिनामपरायणाः दे
वदूता ऊचुः भोभो दूता दुराचार विवेकपरि
वर्जिताः मुंचधर्मेतौ निष्पापौ दंपती हरिव
ल्लभौ विवेकस्त्रिषु लोकेषु संपदामादिकार
णम् ९७ अपापिपापयोर्यस्तं विध्यात्पुरुषा
धमं पापेत्वपापधीर्यस्तं विद्यादधमाधमं ९८

हे सत्तम जिस हमारे नमस्कार ने करके भगवान् मधु
सूदनजी प्रसन्न होय हुए उसी समय हमारे कों वै
कुंठ में लेजाने के वास्ते अपने दूतों कों भेजदेते
भये ९५ तद सो देवदूत जही हरि के नाम जपा
नेमें तत्पर आउते ही तिन यम के दूतों कों कह
नेलगे भो क्रूरस्वभाववाले दुराचारियों विचार
सें रहितो ९६ इनों दोनों निष्पापी स्त्री पुरुष कों
छोड देओ यह हरि के प्यारे हैं इनकों क्यों पकडे
या है तसी यम के दूतहो विचार नहि है तमारे
में विचार त्रिलोकी संपदा का आदि मुख्य
कारण है तम क्यों नहि देखते ९७ निष्पापी पु
रुष में जिसकी पापबुद्धि होवे जिसकों अध
म पुरुष जानना और पाप करणे वाले में निष्पा
प बुद्धि होवे जिसकी तिस पुरुषो कों अधमों
से भी अधम जानना चाहिये ९८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यमदूताऊचुः युष्माभिःसत्यमेवोक्तमेतेषां
नकिंसत्तमा ज्ञेयौवैपापिनोदंड्यौतस्मान्नेष्या
महेवयम् ९९ श्रुतिप्रणिहितोधर्मोह्यधर्म
स्तद्विपर्ययः एतच्छ्रुत्वातुकुपितादेवदूता
महौजसः प्रस्फुल्लातिमभटाप्रभासिता
दिगंतराः १० देवदूताऊचुः अहोकष्टंधर्मदृ
शामधर्मःस्पृशतेमहान् ११ यूयंकिमर्थम
प्यापिकर्तंपापनिरोधमाः स्वकर्मत्वयप
र्यंतंमहापातकिनोपिच १२ ॥

इतनावचनसुनकरयमकेदूतकहनेलगे तुमने
सत्यहीकथनकराहै परंतुयहदोनोंजोपापियोंमे
श्रेष्ठजाननेयोग्यहैं इन्होंनेबडेपापकरेहैं दंडके
योग्यहै इसकारणसेइनकोंहमलेजातेहैं ९९
क्योंकिवेदोंनेजोकथनकराहै सोईधर्महै ति
ससे और जोहै सोसब अधर्महै इतना वचनसु
नतेही बडे तेजपराक्रमवाले देवदूतक्रोधकों
प्राप्तहोतेभये १० और अपनेतेजकरके प्रकाशि
तकरेहैं दिशोंकेअंतर जिनोंने ऐसेसो देव
दूतयमकेदूतोंकों कहतेभये बडे कष्टकी
बातहै जोधर्म देखनेवालोंको बडाअधर्मभी
स्पर्शकर्ताहै ११ तुमीकिसवास्तेआजतक
रभी पापकरनेकों उद्यतहो औरजोमहापा
पीभीहै सोभीअपने कर्मोंके क्षीणहोने प
र्यंतहीं नरकोंमे क्षिप्तरहतेहैं १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिष्ठंति नरके नूनं यावदाचंद्रतारकं पूर्वसं
चितपापानां न दृष्टा निष्कृतिः क्वचित् ॥ १३
किमर्थं पापकर्माणि करिष्यथ पुनः पुनः
श्रुतिप्राणिहितो धर्मः सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १४
किं वाभ्यां चरितेन धर्मो ह्यवस्थामोपयातश्च
यथा चनर्तनं च के नग्याचैव धनंददन् ॥ १५ प
त्नो पापवि निर्मुक्तो मुंचधर्मा विलंबथ श्रंत
काले पि यन्नाम स्मृत्वं नो पि वै सकृत् समेते
परमं स्थानं किमु शुश्रूषणो रताः ॥ १६ ॥

और नरकों जो हो सो जितना काल सूर्य चंद्रमा तारे हैं उ
तना काल तक मनरकों में रहोगे तुमने पूर्व संचित
पापों की निष्कृति नहिं कहिं भी देखी है ॥ १३ अब
फिर किसनिमित्त वारंवार करिया करते हो और श्रु
ति वेदों ने कथन कराइया सो धर्म है यह बात
सत्य है २ इसमें संशय नहीं है ॥ १४ परंतु हमने
जो कथन करे और वर्तै धर्म है सो यथा योग्य ह
नाते हैं क्या यह जो है सो धजा को धारण करें
॥ १५ नृत्य करते भये इससे इह पापों से मुक्त
हो गई है इनको तुम छोड देओ मत विलंब क
रो और अंत के समय जिस परमेश्वर के नाम
को कथन करने वाला परम स्थान को लभ
ता हैं जो न सा कोई सेवा कर्ता होवे उसकी
क्या बात कहनी है ॥ १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

महापातकसंयुक्तोयुक्तोवैसुपपातकैः
इतिनाभगवद्भक्तैर्लभंतेपरमांगतिं ७७
मुहूर्तंवामुहूर्तार्धं यातिष्ठेद्धरिमंदिरे स
यातिपरमंस्थानंकिमुशुश्रूषणेरतः ७८
उपलेपनकर्तारोसंमार्जनपरायणे प
नोहरिगृहेनित्यंशीर्णसंधानकारिणो ७९
जलसेचनकर्तारोदीपदोहरिमंदिरे कथ
मेतेमहाभागोनयंतियममांतिके ८०

जोपुरुषमहापापोंकर युक्त होवे और उपपातकों
करकें भीयुक्तहोवे तरभी भगवानके भक्तोंकरकें
देखपाहुया परमगतिकाप्राप्तहोजाताहै ७७
जोपुरुषएकमुहूर्त दोघडियां जांएकघडीहरि
रिकेमंदिरमे वैठसोपरमस्थानकोंजाताहै औ
र जोसेवामेरतहै उसकी क्या वात कहनीहै
७८ यहदोनो हरिनारायणके मंदिरमें उपले
पन करणेवालेहै संमार्जनक्या शोभनापवि
त्रकरना और भजा हूला इनोने नवीन वना
याहै ७९ और जलसिंचन करनेभये दीप
जगाते रहे इतने श्रेष्टकाम करणे वाले इन
कोतम कैसे लेजातेहो ८० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा देवदूतास्ते छित्त्वा पाशांस्तथैव च
आरोप्यावां विमाने तु पुरुविष्णोः परंपदं ८१
आवां समीप्यमापन्नौ देवदेवस्य चक्रिणः
भुक्तवंतौ महाभोगान्यावत्कालं शृणुष्व मे ८२
युगकोटिसहस्राणि युगकोटिशतानि च
उषित्वा विष्णुभवने ब्रह्मलोकं समागतौ
तावत्कालं च तत्रापि स्थित्वेंद्रपदमागतौ
तत्रापि तावत्ता भोगं भुक्त्वा दिव्यमनुत्तम
म्. ८४॥

इसप्रकारके देवताके दूत कथनकर्के फिर
हमारीयां फांसियां काटकर विमानके बीच
हमारेकों विठायके विष्णुके परमपदकों च
लेजातेभये ८१ औरहमदोनोंही देवतयोंके दे
वताचक्रधारणेवाले कोसमीपताकों प्राप्त
होगए तहांजितनाकाल हम महाभोग भोग
तेरहे उतनाकाल मेरेसें श्रवणाकर ८२ उस
लोकमें हम युगोंके सैकडे हजारां कोउनि
वासकर्के फिरब्रह्मलोकमें आये ८३ उतनाही
काल ब्रह्मलोकमें निवास कर्के महाभोग
भोगकरफिर इंद्रलोकमें आवे उहांभी अ
नुतम भोग उतनाहीकाल भोगके ८४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰ ग्राम॰ २०९

ततः पृथिवीशत्वं प्राप्तोसौ क्रमेण मुनिसत्तम
अन्यापि संपदतुला हरिपूजाप्रसादतः ५८
अनिच्छयापि कृतेनापि प्राप्तमेवंविधं फलं
सम्यगाराध्य विश्वेशं भक्तिभावेन माधवं
प्राप्स्यामीति परं श्रेयः इति मे निश्चिता मतिः
एतत्सर्वं निशम्यासौ विभांडकमुनीश्वरः
अविवंद्य महीपालं प्रययौ स्वं तपोवनं य
इदं पुण्यमाख्यानं सर्वपापप्रणाशनं वा
वयेच्छृणुयाद्वापि ध्वजारोपणपुण्यभाक्

इति ध्वजारोपणमहिमा समाप्तम् ॥

फिर क्रम करकें हे मुनिसत्तम पृथिवीकी स्वामिता
कों प्राप्त भये इहांभी देखो हरिकी पूजाके प्रसा
दसें अतुल संपदा है ८५ इस प्रकारका फल तो
विना इच्छा अश्रद्धाके करणेसें हुया है जेकर अ॰
च्छी तरांसे विश्वके ईशकों आराधन कर भ॰
क्तिभाव करकें परम श्रेयकों प्राप्त होऊंगा प
ह मेरी निश्चयवाली बुद्धि है ८६ यह सारा वृत्तां॰
त विभांडक मुनीश्वर सुनके प्रसन्न होकर अ
पने तपोवनमें चला आया और राजाकों अभि
वंदन करकें ८७ जो कोई पुरुष सारे पापोंके नाश॰
करनेवाले इस पवित्र आख्यानकों सुनेगा वा
पढेगा सो ध्वजा चढानेका जो पुण्य है तिसके
फलका भागी होवेगा ८८ यह ध्वजारोपणकी॰
महिमा वस्त्रोंकी महिमाके वीच ही लिखी है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भक्तमालायांवल्लभमाहात्म्येचेतिहासमाह
यः पूर्वंवल्लभाचार्यःसंप्रदायप्रवर्तकः श्री
कृष्णस्यहृत्तोनाम्नाविठ्ठलेतिवभूवह १
महाभक्तोजितक्रोधोविजितेंद्रियसंचयः
मथुरायांकलौयेनद्वापरःप्रकटीकृतः २
सोपिकृष्णाज्ञयादारपरिग्रहमथाकरोत्
तस्यपुत्राश्चसप्तासन्नामान्येषांब्रवीम्यहम् ३
रघुनाथोघनश्यामोयदुनाथस्तथैवच श्री
महोकुलनाथश्चवालकृष्णस्तथैवच ४

भक्तमालमेंवल्लभकेमाहात्म्यमें इतिहास क
थनकरतेहैं जोनसापीछे वल्लभाचार्य संप्रदा
य प्रवृत्तकरनेवालाकथनकराहै तिसका
पुत्रविठ्ठल नामकरकेंहोताभया १ सोकैसा
था वडापरमेश्वरकाभक्त क्रोधजिसने जी
तयाहुयाऔर इंद्रियोंकासमूहजिसनेंजी
ताहुया एसाभयाजिसने कलियुगकेविषे
द्वापरप्रगटकराहै २ सोभीश्रीकृष्णजीकी
आज्ञाविषे[illegible]करकें दाराकापरिग्रहकर्ता
भया क्या विवाह कर्ता भया तिसकेसात
पुत्रहोतेभये उनके अब नामकथनकर्ते
हैं ३ रघुनाथ १ घनश्याम २ यदुनाथ ३ श्री
महोकुलनाथ ४ वालकृष्ण ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीगोविंदोगिरिधरःसर्वैनैवेस्सवोत्तमाः
पित्राज्ञयोभुःसर्वैनेस्थानंकृत्वानिजंनिजं ५
वज्रनामकृतामूर्तीःसमससाभ्यसृजयन्
तेषांनामानिवक्ष्यामिसर्वपापहराणिवै ६
गोविंददेवःश्रीनाथस्तथागिरिधरःस्मृतः
चतुर्भुजेतिविख्यातोहरीदेवस्तथैवच ७
श्रीमत्केशवदेवश्चतथावंशीधरःपरम्
यतन्नाम्नासृजयंतोनिजाचारप्रवर्तकाः ८

श्रीगोविंद ६ गिरिधर ७ यह सारेही उत्तम वै
ष्णव होते भये और पिताकी आज्ञा करके सारेही
अपने स्थान वनावते भये ५ और वज्रनामकी
मूर्तियां वनाके सातोंही सृजते भये अव
तिनके नाम पापोंके हरणे वाले कहता हूं
६ गोविंद १ श्रीनाथ २ गिरिधर ३ चतुर्भु
ज ४ हरिदेव ५ और श्रीमत्केशवदेव ६
वंशीधर ७ इतने नामों करके अपना आ
चार प्रवृत्त करणे वाले और सातों सृजन
करनैं भये ८ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्वैवम्भूत्तुर्विख्यातो नाअद्यापि पृथिवीतले अ
थ विट्ठलशिष्यस्य कायस्थस्य कथां ब्रुवे ९
नाथद्वारे निविख्याता पश्चिमे वैष्णवीपुरी
तत्र श्रीनाथदेवोस्ति भुक्तिमुक्तिप्रदायकः
श्रीमत्त्रिपुरदासोभूत् तत्रैकोराजकृत्सदा
कायस्थः स महाभक्तः पूजयामास वैष्णवा
न् ॥ श्रीनाथस्वामिने सोथ प्रतिवर्षं नवंन
वं ततत्कालोचितं वस्त्रं महार्घं प्रददौ मुदा १२

सो साक्षात्ही आजतक पृथ्वीके तलमें प्रसिद्ध
हैं ऐसे परमभक्त होतेभये अब विट्ठल भगवान
जीका शिष्य कायस्थभक्त उसकी कथा कहते हैं
९ पश्चिम दिशामें नाथद्वारा नामएक वैष्णवों
की पुरी है तिसमें भुक्ति मुक्तिके देनें वाले श्री
नाथनामककें भगवानजी हैं १० उसी नगरी
में राजाका अधिकारी त्रिपुरनामक कायस्थ भ
क्त निवास कर्ताथा सो वैष्णवों साधुयों को पू
जन कर्ता भया ११ और सोई त्रिपुरदास का
यस्थ भक्त श्रीनाथ स्वामिकों वर्ष २ में समय
२ के योग्य जौनसे अति सुंदर बडे मोलके व
स्त्र सो देताथा १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा·
ग्राम·
२२८

अथ कालेन कियता विप्रो निर्धनोऽभवत्
शोचयित्वा स दुःखेन व्रतसंरक्षणाय च ।३
यदा कथंचित् सनीय येन केनाप्युपायतः रु
दत्वा श्रीनाथमूर्त्तौ तु वासः स्थूलतरं ददौ ।४
तेन केन तदा दृष्ट्वा वस्त्रं तत्स्थापितं क्व वित्त
नयोगमिति मत्वा तत्र ददौ वस्त्रं नूतनम्
अथ रात्रौ महाशीते तत्र चौरैराकुले जने दद
र्श तं जनकः स्वप्ने श्रीनाथं नाटशांगृहे ।५ ॥

इसी प्रकार वर्त्तता हुया विप्र रदास निर्धन होगया
तदमनमें बड़ा शोक करा जिसने अवक्या करों कै
से भगवान के वस्त्र बने व्रतमेरा हर होता है इस
तरह चिंतन कर ।३ व्रतक्या नियमकी रक्षाके वा
स्ते जिसकिस उपायक कर्के होते थे ऐसे बनाया
कर रोदन करता हुया श्रीनाथजी का भक्त मोटे
कपड़े के बनायके भगवानजी के चढ़ाय आया
।४ पुजारीने सो वस्त्र देखे मनमें चिंतन करा की
एह ठीक नहिहै इनका क्या लगाना भगवान
को ऐसे विचार कर कही किनारे रख छोड़े और
अच्छे सुंदर बनाय पहराय लगाए ।५ तदइसवानके
पीछे दिन व्यतीत हुया रातके समय ऐसा महाशी
तपड़ा कि तषारोके साथ क्या है उके साथ लोकोंके व्या
कुल होपड़ेए पुजारी स्वप्नमें श्रीनाथजी को मंदिर
मे ही देखना भया ।६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

म्रहाशीततरोस्म्यद्यनैतैर्वस्त्रैःसुखंमम त्रिपु
रेणाचयद्दत्तंतदर्प्यंममोपरि १७ तदस्त्रंवं
स्त्रानोचेत्स्युःशीतंमांवाधतेभृशं दृष्ट्वापि सं
मंनोतस्योमहाशीतभयेनसः १८ पुनःस्व
मंतथैवासीद्दर्शपूजकोनिशि ततउत्था
यसहसात्रिपुरार्पितमंशुकम् १९ ददौश्री
रंगनाथस्यशरीरेसतुपूजकः मनाश्चर्य-
सभक्तस्तप्रातरुत्थायभक्तितः २० श्रीम
त्रिपुरदासस्यसःकारंकृतवान्भृशं एवं
भक्तिवशोदेवोभक्तदत्तमभीप्सति २१

हेद्विजअवइससमयशीतकरकेआतरहंइनांलगे
होयवस्त्रोंकरकेसुखनाहिमेरेकोंहोताहेइसवास्ते
आजत्रिपुरदासनेजोनसेंवस्त्रचढायाहेसोमेरेऊपर
आनकेदेदे १७ तदमेरेकोंसुखहोताहेनहीतोशी
तवहुतपीडाकरेयाकर्ताहैइसप्रकारकास्वप्नदे-
खकरकेभीमहाशीतकेभयकरकेपुजारीनहिउठ
ताभया १८ तदफेरउसीतरेकास्वप्नतिसकोंहोता
भयातिसकोंदेखकररातकेसमयनिद्राकात्याग
करउठकेमंदिरमेंचलागयातहांजाकेत्रिपुरकेवा
छापहोयवस्त्रभगवानजीकेऊपरचढादेताभया १९
भगवानजीऊपरवस्त्रचढायकरमनमेंआश्चर्य
मानताभयाऔरप्रातःकालउठकरके २० वडीभक्ति
प्रीतिसेंत्रिपुरदासकावडासत्कारकर्ताभयाइसप्र
कारभक्तोंकेवशीभूतभगवानजीभक्तोंकीदईहुई
वस्त्रयोंकीरक्षाकर्तेहै २१ एहभक्तिमहात्ममेवस्त्रों-
कीमहिमाकहीहै ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ केशवसन्निधौ दीपप्रज्वालनमाहात्म्यं
नरसिंहपुराणे घृतेन तिलतैलेन दीपं यो ज्वा
लयेन्नरः विस्नाग्रे विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफ
लं शृणु १ विहाय सकलं पापं सहस्रादित्यस
न्निभः ज्योतिष्मता विमानेन विस्नुलोके महीय
ते अश्वमेधसहस्रस्य फलमाप्नोति मानवः २
संवर्तः देवागारे द्विजानां च दीपं दत्वा चतुष्प
थे मेधावी ज्ञानसम्पन्नश्चक्षुष्मान् जायते नरः
भविष्योत्तरे प्रज्वाल्य देवदेवस्य कर्पूरेण तु दीपकं
अश्वमेधमवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत् ४

अव केशव भगवान जी की आगे दीप जगाने का मा
हात्म्य लिखते हैं नरसिंहपुराण में कहा है जो कोई पु
रुष घृत के साथ वा तिलों के तेल के साथ विस्नु के
आगे दीप जगाता है भक्ति कर्के तिस के पुण्य का
फल श्रवण कर १ सो पुरुष मृत होय पश्चात् या सा
रे पाप त्याग कर हजार सूर्य की न्याई शोभावाला
होय पश्चात् या प्रकाशवान विमान के ऊपर चढ़क
र विस्नु लोक में जाकर महिमा को प्राप्त होता है औ
र सो मानव हजार अश्वमेध यज्ञ करने के फल-
को प्राप्त होता है २ संवर्त ऋषि जी ने यह बात कही है
कि देवता के मंदिर में और ब्राह्मणों के घर में और चुर
स्ते में दीपदान कर्के मेधावी ज्ञान कर युक्त वडे प्रका
श वाले नेत्रों वाला होता है ३ भविष्योत्तर में कहा है
पुरुष जो है देवता विस्नु के आगे कपूर का दीप ज-
गाकर अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होता है और कु-
ल का उद्धार करता है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भविष्योत्तरपुराणे घृतदीपप्रधानेनतिलतैलेन
वापुनः दीपंप्रज्वाल्यदेवस्यभक्त्यास्वर्गतिमा
प्नुयात् ५ वृहन्नारदीये तिलतैलान्वितंदीपं
विष्णोर्वाशंकरस्यवा दत्वानरःसर्वकामान्सं
प्राप्नोतिनरोत्तम ६ ग्राम्येनवापितैलेनराज
न्येनवापुनः दीपंदत्वामहाविष्णोरनन्तपुण्य
मवाप्नुयात् ७ क्रियायोगसारे घृतेनदीपं
योदद्यात्तिलतैलेनवापुनः निमेषात्सकलं
तस्यपापंहरतिकेशवः ८ ॥

भविष्योत्तरपुराणमेंकहाहै घृतकेसाथभरा हुया
दीपवातिलोंके तेल कर युक्त दीप भक्ति क
र्के नारायणजीके आगे जगायकर पुरुष स्वर्ग
गतिकोंप्राप्तहोताहै ५ वृहन्नारदीयमेंकहाहै
तिलोंके तेलकर युक्तदीप जोहै तिसकों ज
गायकर पुरुष सभ नरोंकीयां कामनांकों
प्राप्तहोताहै ६ हेराजन ग्रामकीयें मेर वस्तु
यांके तेल कर्के वा वनोंकी वस्तुयोंके ते
ल कर्के महा विष्णुको दीपदानकरे तिस
कोंअनंतपुण्यहोताहै ७ क्रियायोगसारमेलि
खाहै जोपुरुषघृतकादीप अथवा तिलोंके
तेलकादीप जगावताहै तिसके पापनिमेष
मात्रसें केशव भगवानजी करतेहैं ८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२८०

पाद्मे कार्तिकमाहात्म्ये मंदिरे वासुदेवस्य कर्पूरेण तु दीपकं प्रज्वालयति कोटीनां कपिलानां लभेत्फलम् १ स्कंदपुराणे माघे पुष्करे गंगा माघ प्रयागे च नर्मदा दीपदानेन देवेशात् फलं सर्वमवाप्स्यसि ८ अवंतीगमनात्सूर्ये नर्मदायां शशिग्रहे तत्फलं कोटिगुणितं दीपदाने सुव्रत ॥ ददाति दीपकं यस्तु तिलतैलेन वा पुनः ज्वलितं प्रतिशार्ङ्गलहय मेधेन तस्य किम् ९

पद्मपुराण के कार्तिकमाहात्म्य में लिखा है वासुदेवजी के मंदिर में जो कोई कपूर का दीपक जगावता है सो क्रोड कपिला गौवां दान करने के फल को प्राप्त होता है १ स्कंदपुराण में कहा है हे पुष्कर महाप्रभु में तू मत जा और प्रयाग में भी मत जा नर्मदा में भी मत जा क्योंकि जौनसा फल २ होंजा के प्राप्त होता है सोई फल घर में बैठा हुया दीप जगायकर देवेश विष्णुजी से ले ले ८ अवंति के जौनसे चंद्रमा के ग्रहण में नर्मदा जान से जो फल होता है सो फल क्रोड गुणा अधिक हे सुव्रत दीप दान करके होता है ॥ जो पुरुष तिलों के तेल कर युक्त दीप विष्णु के मंदिर में जगाता है तिसको अश्वमेधयज्ञ करने करके क्या प्रयोजन है ९ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राहुग्रस्ते दिनकरे कुरुक्षेत्रे यत्फलं तत्फलं
कोटिगुणितं दीपदानेन सुव्रत १३ यथा
च मथनात्काष्ठाद्वह्निर्वने काष्ठे प्रदृश्यते तथा
वृहस्पतेर्धर्मो दीपदानान्न संशयः १४ मेरु
पर्वततुल्यानि कृतपापान्यनेकशः दह
तेनात्र संदेहो दीपदानाच्च नारद १५ यो न कु
र्यात्प्रयत्नेन दीपं केशवसद्मनि गृहे वाय
तने वापि स वै दुर्गतिभाग्भवेत् १६ ॥

राहुकर्के ग्रस्त होय दिनकर्के क्या सूर्य ग्रहणके
समय कुरुक्षेत्रमें जायकर जो स्नानदानादिकर
णेका फल है हे सुव्रत सोई फल कोटगुणाक
राहुयी दीपजगानेकर्के होता है १३ और जिस प्र
कारकथन करनेसें वनके वीच काष्ठोंके मध्य
में अग्नि देखाजाता है इसी प्रकार विष्णादि देवते
योंके आगे दीपदान करनेसें धर्म देखाजाता है
इसमें संशय नहि है १४ और जो कोई पुरुष सुमे
रु पर्वत के तुल्य अनेक नरोंके पापकर्के दीप
दान करे तिसके सारे पाप हे नारद दीपदान
सें ही भगवानजी दग्ध कर्ते हैं १५ और जो कोई
पुरुष यत्न कर्के केशवजीके मंदिरमें और ब्राह्म
णाके घरमें अथवा और जो विहित स्थान है ति
नमें दीप नहि जगावता है सोई दुर्गतिका
भागी होता है १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२८१

281

घृतदीपदाने विशेषमाह बृहन्नारदीये
घृतेन दीपं यो दद्याच्छंकरायाथ विष्णवे स
मुक्तः सर्वपापेभ्यो विष्णुलोके महीयते १७
स्कंदे दीपो वै ज्वालितो येनाःहोरात्रं वहरे॰
र्गृहे एकादश्यां मुनिश्रेष्ठ स स्वर्गसुखभा
ग्भवेत् १८ दिव्यदेवा निरीक्षंते हरेर्दीप
प्रदान्नरान् कदा भवति चास्माकं संगमः
पुण्यकर्मणाम् १९ निष्कं निवद्धवित्तानि
दानानि वर्णिनि हृदयाह्लादकान्याणि
दीपदानेहि न समम् २०॥

घृतका दीपजगाने में विशेष माहात्म्य बृहन्नारदी
य में कहा है कि घृत के साथ दीप जगाय कर जो पु॰
रुष शंकरशिवजी के तांई वा विष्णुजी के तांई दे
ता है सो पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक में महिमा को
प्राप्त होता है १७ स्कंदपुराण में कहा है हे मुनिश्रे
ष्ठ जिस पुरुष ने नारायणजी के मंदिर में दिन रा
त सर्वदा काल वा एकादशी के दिन दीप जगा॰
य रखा है सो स्वर्ग के सुखों का भागी होता है १८
तिन कों देवता लोक स्वर्ग में देखते रहते हैं जो
दीपदान करनेवाले हैं की ऐसे २ पुण्यकरा॰
णी वालों से हमारा कदे संगम होवेगा १९ हे वर
वर्णिनि वहुत २ धनादि जिनों में खर्च होते है ऐसे
वहुत तरों के दान हैं हृदय कों भी आनंद करनेवा
ले परंतु उनका फल विष्णादियों के आगे दी
प जगाने के ही समान है २०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सनत्कुमारसंहितायां तस्मिन्स्वभावस्सभगे
परदीपप्रबोधनं कर्तव्यभूतिकामेनसर्व
दानाधिकंयतः २१ पाद्मे व्रतेनदेवदेवस्य
कर्पूरेणतुदीपकं प्रज्वालयतिकोटीनांक
पिलानांलभेत्फलं २२ पाद्मेक्रियायोगसारे
तुलस्याग्रेप्रदीपमहिमा प्रदीपंयस्तुसंध्या
यांस्थापयेत्तुलसीतले सयातिमंदिरंवि
ष्णोःकुलकोटिसमन्वितः २३

सनत्कुमारसंहितामेलिखाहै स्वभावकरकेही
जोसंदरनारायणजीकामंदिर जिसमें जाकर
अपनी वृद्धि कीकामनावालेनें औरके जगा
ये होए दीपकी रक्षाकरेक्या बुझने लगे तब
उसकी बत्ती ज्यादा करकें प्रकाशितकरे क्यों
की जिसवास्ते सारे दानोंसेंसो अधिकदानहै
२१ पद्मपुराणमेलिखाहै की देवतेयोंकेदेव
ता विष्णुकेव्रतकरणेमें कपूरकादीपजगावे
तब क्रो३ कपिलागौवाके दानकरनेकेफल
कोंप्राप्तहोताहै २२ पद्मपुराणकेक्रियायोग
सारमें तुलसीकेआगेदीपजगानेकीमहिमा
कहीहै जोकोईसंध्याकेसमय तुलसीकेनी
चे दीपजगाताहै सो क्रो३कुलके सहित वि
ष्णुके मंदिरमें जाताहै २३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विष्णुसन्निधौ लक्षदीपकरणे विशेषमाह
भविष्ये दीपानां लक्षकं यस्तु कुर्यात्परम
धार्मिक यावत्कालं प्रज्वलंति दीपास्ते लिं
गसन्निधौ ब्रह्मणो युगसाहस्रं दाता स्वर्गे
महीयते २४ कौसुंभवर्तिकायुक्त दीपस्
तु स्थालये स्वर्लोके च वैकुंठे तिष्ठंति वि
ष्णुसन्निधौ २५ बृहन्नारदीये यः कुर्याद्दी
परचनां शालिपिष्टादिभिर्दीप नरस्सपुं
ण्यमाख्यातुमुत्सहे दशतैरपि २६ अखंड
दीपं यो दद्याद्विष्णोर्वा शंकरस्य च दिने दि
नेश्वमेधस्य फलमाप्नोत्यनुत्तमम् २७

विष्णुभगवानजीके सामने लाखदीपजगानेमें वि
शेषमाहात्म्य भविष्यमें कहाहैं जोकोई परमधर्मा
त्मा पुरुष विष्णुके वा शिवजीके सामने दीपोंका
लाखजगाताहै और सोदीपजितना कालमूर्तिके
सामने जगते रहतेहैं उतनेहीहजार ब्रह्माके यु
गदीपदानकरनेवाला स्वर्गमें महिमाको प्राप्तहो
ताहै २४ कौसुंभके रंगकर रंगी होई वतीकर्के
युक्त जो पुरुष देवताके मंदिरमें दीपदान करने
वालेहैं सो पुरुष स्वर्लोकमें और वैकुंठलोकमें
विष्णुके सामने स्थित होतेहैं २५ बृहन्नारदीयमें
कथनकराहै हे राजन जो कोई पीठेके दीपोंको रच
ना करतेहैं विष्णुके सामने तिनका पुण्य मैं सकडों
वर्षोंकर्के भी नहि कह सकताहूं २६ और जो कोई पु
रुष विष्णुके आगे वा शिवजीके आगे अखंड दीपदा
न करताहै सो प्रतिदिन अश्वमेधयज्ञके अनुत्तम
फलको प्राप्त होताहै २७ ॥

विस्मयमौनरे सामान्यस्य तु दीपस्य राजेन्द्र
दानेन महत्फलं किंपुनर्महतोयस्य फलस्यान्तं
न विद्यते २८ दीपदानेन परं पुण्यमन्यदेवेषु
ध्रुवं किंपुनर्देवदेवस्य ह्यनन्तस्य महात्मनः
यावन्त्यक्षिनिमेषाणि दीपः प्रज्वलति नृप
तावन्त्येव हि राजेन्द्र वर्षाणि दिवि मोदते २९
दीपदानेन राजेन्द्र चक्षुष्मानिह जायते रूप
सौभाग्ययुक्तश्च धनधान्यसमन्वितः ३०

विस्मयमौनरमें लिखा है हे राजन सामान्य दीपके
दान करने में बड़ा पुण्यफल प्राप्त होता है और जो
विशेष दीपदान है उसकी तो क्या बात कहनी उस
के फल का अन्त ही नहिं देखा है २८ और नौं देवतेयों
के आगे भी दीप जगाए हो एवड़ा श्रेष्ठ पुण्य होता है
और देवतेयों के देवता जो हैं अनंत माहात्मा वि
ष्णुजी तिन के आगे दीप जगाने सें तो क्यों नहिं हो
ता होगा २९ हे नृप देवता के आगे जगाया हुया
दीप जितने क निमेष क्या आखोंके फिमकने प
र्यंत जगता है हे राजेंद्र उतने ही दिव्य वर्ष स्वर्ग
में भोग भोगता है ३० और हे राजेंद्र दीपदान क
र्के पुरुष चक्षुष्मान होता है क्या तेजकार युक्त द
ष्टिवाला होता है और रूपसौभाग्य कर्के युक्त ध
न धान्य वाला होता है ३० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दीपमालांप्रयच्छंतियेनराःशार्ङ्गिणोगृहे
भवंतितेचंद्रसमाःस्वर्गमासाद्यमानवाः ३२
दीपानांगृहवृत्तादिकरणेमाहात्म्यम् दीपा
गारंनरःकृत्वाकूटागारनिभंशुभं केशवा
लयमासाद्यनकेभांतिसशक्रवत् ३३ यथो
ज्वलःसदादीपोदीपदातापियाद्वः तथा
निर्मोज्वलोलोकेचक्षूंषिवलवांनिहि ३४
नाकभ्रष्टोभिजायते ३४ समेपेत्वयथालो
केचक्षूंषिवलवेनिहि तथादीपप्रदातारो
भवंतिसफलेक्षणाः ३५

औरजोनरकोईपुरुषविष्णुकेमंदिरमेंदीपोंकीमा
लाबनाकरजगावतेहैं सोमनुष्यस्वर्गमेंप्राप्तहो
करचंद्रमाकेतुल्यप्रकाशवालेहोतेहैं ३२ अवदी
पोंकेघरअथवा वृत्तादियोंकेबनानेमेंमहात्म्य
लिखाहै क्या दीपोंकेघर क्याहै कच्चेसेआदलेक
रवनेहोए फलूसजो काठ बनाकरके उनकाशुभ
सुंदर समूहबनायजोकेशवजीकेमंदिरमेंलगा
तेहैं सोस्वर्गमेंप्राप्तहोकरइंद्रकेतुल्यऐश्वर्यवाले
होकेप्रकाशितहोतेहैं ३३ हेयादव जिसप्रकार सं
सारमें दीपवडा उज्वलप्रकाशवालाहै इसीप्र
कारदीपदानकरनेवालाभी प्रथमस्वर्गकेसुखभो
गकरउहांसेभ्रष्टहोकर इसलोकमें प्रकाशमानहो
ताहै ३४ औरजिसप्रकारलोकोंकेमध्यमेंनेत्रोंवा
लापुरुषसमीपवर्तिपदार्थोंकोदेखताहैतैसेही
दीपदानकरणेवालासफलइक्षणक्योंदेखनाजि
सका ऐसाहोताहै अर्थात् जिस २ कामनाकोंचा
हताहै उसी २ कोंलभताहै ३५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यथैवोर्ध्वगतिर्नित्यं राजन्दीपशिखाशुभा
दीपदातुस्तथैवोर्ध्वगतिर्भवति शोभना त
स्मात्सर्वप्रयत्नेन दीपा देया नरेश्वर ३९ पुन-
स्तैव दीपहर्ता भवेदन्धः काणो निर्वापको भ
वेत् दीपदानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति ३०
पद्मसूत्रोद्भवां वर्तिं गन्धतैलेन दीपके वि-
रोगः सुभगश्चैव रतना भवति मानवः ३०
इत्येवं देवदेवस्य कर्पूरेण च दीपकं अश्व
मेधमवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत् ३१

और हे राजन जिस प्रकार शुभ क्या सुंदर जो दीपकी
शिखा ऊर्ध्वगति वाली होती है क्या ऊपर कों होती है
इसी प्रकार दीपदान करने वाली की भी गति ऊपर
कों होती है क्या उसकी वृद्धि आई संसार में सभ से अ
धिक होती है इस कारण से सभ नरों के यत्नों से हे नरे-
श्वर दीपदान करना योग्य है ३९ फिर उसी पुराणों में
लिखा है कि जो पुरुष मंदिर सें जगत होय दीप कों उ
ठा के ले जावे सो जन्मांतर में अंधा होता है और को
ई उसी स्थान पर जगते दीप कों बुझा देवे सो काणा
होता है क्योंकि दीपदान से अधिक हो रकोई दान
न पीछे हुआ न होवेगा ३० कमल के सूत्र की वट्टी ब
नाय कर सुगंधि वाला तैल पाय कर दीप जगाने वा
ला पुरुष नीरोग होता है और सौभाग्य वाला होता है ३९
और देवतेयों के देवता जो विष्णु जी है जिनके आगे
कर्पूर का दीप जगाना योग्य है और जो कोई जगावता
है सो अश्वमेध के फल कों प्राप्त होता है और अपने
कुल का उद्धार करता है ३१ ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एतन्मयोक्तं तव दीपदाने फलं समग्रं यदुवं
शचंद्र श्रुत्वा यथावत्सततं च देया दीपास्त्व
या विप्रसुरालयेषु ५० मार्कंडेउवाच अत्रा
प्युदाहरंतीममितिहासं पुरातनं दीपदा
नाल्ललितिकाय दवाप पुरा नृप ५१ आसी
च्चित्ररथो नाम विदर्भेषु महीपतिः तस्य॰
पुत्रशतं राज्ञो जज्ञे पंचदशोत्तरं ५२ एकैव
कन्या तस्यासील्ललिता नाम नामतः सर्व॰
लक्षणसंयुक्ता रूपेणाप्रतिमा भुवि ५३

हे यादवों के वंशमे चंद्रमा के तुल्य मैने तुमारे कों
दीपदान का साराही फल कथन करदिया है इस
कों श्रवण करकें तैने देवता के मंदिरमें और ब्रा
ह्मणों के घरसें आद लेकर जो नसें दीप जगाने
के योग्य स्थान है उनमें दीपदान करणे योग्य है ५०
मार्कंडेय ऋषिजी कथन करते हैं इस दीपदान
की महिमा में प्राचीन इतिहास कथन कर्ता हों
जिस कथा में हे राजन् एवं एक समय ललिता ना
म वाली स्त्री दीपदान करणे सें जिस फल को प्राप्त
होती भई ५१ सर्व एक समय विदर्भ देश में चित्र
रथ नाम करकें राजा होता भया तिसके घर एक
सौ पंदरां ११५ पुत्र जन्मते भये ५२ और ल॰
लिता नाम्नी एकही कन्या थी सारे शुभका सुं
दर लक्षणों कर युक्त और रूप करकें पृथिवी मे
तो अप्रतिमा थी क्या उसके तुल्य किसी और
का रूप नहि था ५३ ॥ ० ॥

नां ददौ काशिराजाय तत्पिता चारुधर्मिणे
शतानि तस्य भार्याणां त्रीण्यासंश्चारुधर्मिण
नस्तासां मध्येग्रमहिषी ललिताख्यनदाभवत्
विष्णोरायतने तस्याः सहस्रं राजसत्तम १५
प्रदीपानां प्रज्वलिता दिवारात्रमरिंदम ना
मिस्वमास्य कृष्णात्तं शुक्लपक्षं च कार्त्तिकान्त
तस्याः प्रज्वलितं दीपमुच्चस्थानकृतं तथा
तस्मिन्काले तथान्यत्र ब्राह्मणावसथेषु च १२

तिसका पिता तिसकों श्रेष्ठ धर्मवाले काशि राज
के ताईं विवाह देता भया ओर तिस धर्मात्मा रा
जा की आगे ही तीन सैं रानीयां थी ११ तिन के म
ध्य में ओह ललिता तिसकी सुख प्रीति वाली
रानी होती भई ओर तिस रानी का विष्णु के
मंदिर में १५ हे राजसत्तम हजार दीप जगाए
ताथा दिनरात ओर हे अरिंदम आश्विन के
कृष्णपक्ष सें लेकर कार्त्तिक के शुक्लपक्ष
पर्यंत ऊंचे स्थान पर जगाए होए जगते
थे ओर उनाही दिनों में उसके जगाए होए
ब्राह्मणों के घरों में भी दीप जगते थे १२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निसंव्रज निसायाम्केदीपप्रेषणान्नस्पथा चत्व
र्ष्व्येषुरथ्यासुदेवतायतनेषुच ४८ चैत्य
वृक्षेषु गोष्ठेषु पर्वतानांच मूर्द्धसु पुलिने
षु नदीनांच कूपमूलेषु यादव ४९ तांसप
त्न्योथ संगम्य पप्रच्छुरिदमादरात् ५० स
पत्न्यऊचुः सर्वधर्मान्परित्यज्य ललिते त्वं
सदैवत विष्णोरायतने स्व भुदीपदानपरा
यणा ५१ तदेन कथयास्माकं ललिते कोत्व
कपरं मन्यामहे त्वया वश्यं दीपदानफलं श्रु
तं ५२

सो ललिता सर्वदा काल सायंकाल के समय नित्य
हि दीप जागावती २ फिरतीथी सो कौनसीयां जगों
पर दीपजगावतीथी सो कहते हैं चुरस्ता मे और
श्रेयपयारीयों गालियों मे देवता के मंदिरों मे ४८
पिप्पल वाडे इत्यादि वृक्षों के नीचे गोवों की शाल
में और पर्वतों की शिखरों पर और नदियों के काठे
पर खूहे के उपर ४९ हे यादव इत्यादि स्थानों पर
दीपजगाती फिरतीथी तव तिसकीयां सपत्नी
यां उसके पास जाकर वडे आदर से पहवान पूछ
ने लगियां ५० तिसकीयां सपत्नीयां कहतीयां
है हे ललिते तूं जो सर्वदाकाल और सभ तरों के ध
र्म त्यागकर विष्णु के मंदिर में आदर लेकर स्थानोंपर
दीपजगावती है ५१ हे प्रभु पहवान हमारे को भी
कथन कर वहुन हमारे कों इच्छा है किसवास्ते
कि हम पहवान मनमें मानतियां हां कि तैने
अवश्य कहीं से दीपजगनिका माहात्म्य सुनाऊ
याहै ५२

ललितोवाच नाहंमत्सरिणीभद्रेनचरागादि
दूषिता एकपत्न्याश्रयायातांभवन्तोममसान
वाः ५२ अष्टधर्मस्यमर्मचरणाः श्रवणन्तदिंनश्रम
मयायैवेदीपदानस्ययथावैभुज्यतेफलं ५४ हर
स्यदयिताभार्या शैलराजसुतावरा उमादेवे
तिमुद्देशु देविकायाःसरिद्वरा ५५ नराणामं
नुकंपार्थंब्राह्मणैरवतारिता तीरयोरुभयोरं
स्याःक्षेत्रंक्रोशचतुष्टयम् ५६ ॥

उनकीवचनसुनकर ललिताकहनेलगी हेभ
द्राः कस्याणरूपिणीयों तुमारेसाथ मत्सरनहीक
रतीहां क्याईर्ष्या द्वेषनहिकरतीहां औरहरागादियों
करकें दूषितनहिहां औरहमसबियांही एकपति
कीयां स्त्रियांहैंपरतुसीमेरेकोंमान बडाईदेति
यांही ५३ औरनहिंहै जिनधर्मका आचारण जि
नका ऐसियांतुमसभीमेरा वचनसुनों जोकुछ
मैंकथनकरतीहांक्या जिसप्रकारमैनेदीपदान
करनेकाफलभोगीहांहै ५४ हर महादेवजी
की जोनसी प्यारी स्त्रीशैलराजकी पुत्रीहै व
डुतश्रेष्ठउमातिसकानामथा सोमद्रदेशमें दे
विकानामकनदीरूपहोगईहै ५५ परलोकों
केउपकारकेलियेब्राह्मणोंने कैलासथें उता
रीहै उसदेविकाके दोनों किनारोंमें चार को
शका एक क्षेत्रहै ५६ ॥ ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नृसिंहतीर्थे नृपाणीयं सर्वतीर्थप्रकीर्तितं । नृ-
सिंहतीर्थे मृतानां मर्त्योः प्राप्नुवंति शुभां गतिं ५७
कृताभिलषिता ह्येषा देविका पापनाशिनी
तस्यां स्नात्वा सकृन्मर्त्यो गाणापत्यमवाप्नुया-
त् ५८ तस्यां तीर्थे नृसिंहाख्ये सर्वकल्मषना-
शने नृसिंहवपुषा स्नानं कृतं यत्र प्रभुणा शुभे
सौवीरराजस्य पुरे मैत्रेयो मुनिरोहितः नृ-
सिंहतीर्थे तदा तेन विष्णोरायतनं कृतम् ६०

286

जिस तीर्थ में जितना जल है सो सारा ही पवित्र तीर्थ
रूप कथन करा है जिस तीर्थ में मृत होए हुए मनु-
ष्यमात्र शुभ उत्तम गति को प्राप्त होते हैं ५७ फिर
कैसी तीर्थ रूप देविका है जो कोई उसकी महिमा श्र-
वण करे और जो उस समय स्नानादियों की इच्छा र-
खता है और जो कोई उसका दर्शन कर्ता है उनके
सब पाप देविका नष्ट कर्ती है और मनुष्य उसमें
एक वार भी स्नान करके गणों के पतिभाव को प्रा-
प्त हो जाता है ५८ जिस क्षेत्र के अंतर्गत ही नृसिंहाख्य
एक तीर्थ है सारे पापों के नष्ट करने वाला जिस
तीर्थ में नृसिंह देह को धारण करे होए भगवान
जी ने सर्व समय शुभ स्नान करा था ५९ सौवीर
राजा था उसके पुर में मेरा मैत्रेय नामक पुरो-
हित निवास कर्ता था उहां उस नगर में उसने
विष्णु भगवान जी का मंदिर बनाया था ६० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अहन्यहन्यसंमृष्टपुष्पधूपानुलेपनैः दीप
दानादिभिश्च विविधैस्तत्र सेवे द्विजः ९१ कार्त्ति
के दीपिकास्तत्र प्रदत्तास्तेन चैकदा आस॰
न्निर्वाणभूयिष्ठा देवार्चनरतो निशि ९२
देवतायतने वासीत्तदाहमपि मूषिका
प्रदीपवर्तिहरणे कृतबुद्धिर्वरानना: ९३
गृहीता च मया वर्त्ति हृष्टदंशो रराव च न
ष्टा चाहं तदा तस्य मार्जारस्य भयात्ततः ९४

सोपुरोहित प्रतिदिन पुष्पधूप लेपनादियों॰
करके और अनेक तरोंके दीपदानादियों करके
भगवानजी की सेवा कर्त्ता भया ९१ जो एक दि॰
न कार्त्तिकके महीनेमें तिसनें मंदिरमें बहुत
दीप लगाए और आप भगवानजी की पूजामें
तत्पर होके समय बैठता भया तद उन दीपोंमें
से बहुत दीप निर्वाण होने भये क्या बुझ जाने
भये ९२ हे वरानना: श्रेष्ठमुखवालियों उस॰
समयमें मूषकी क्या चूही तिस मंदिरमें नि
वास कर्त्तीथी तद मैंने दीपवट्टी हरणेमें बुद्धि
धारणे की उनों दीपोंसे वट्टीयां लावनीहां ९३
एसा चिंतन करमेने बाहर निकलके एक दी
से वही ग्रहण करी तद उसी समय मार्जारने
शब्द कीया तद जिसका शब्द सुनकर ति
सके भयसें मे भागती भई ९४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२९०

287

वर्त्तिप्रांतेननष्टंतत्रदीपकःप्रेरितोमया ज
ज्वालशर्ववद्दीप्यात्तस्मिन्नायतनेपुनः ९५
मृताहंतेनराजानाविदर्भराजकन्यका
जातिस्मरामहीपस्यमहिषीचारुधार्मिणः
एषप्रभावोदीपस्यकार्त्तिकेमासिशोभनः
दत्तस्यायतनेविष्णोर्यस्येयंव्युष्टिरुत्तमाः
यदिवोनास्तिमात्सर्यंदीपादेयाःसदाप्रभा
असंकल्पितमप्यस्यप्रेरणायत्कृतंमया ९८

भागवती होए मैंने वहां के प्रांत करके दीप प्रेरा
हुया जिस मंदिर में फिर प्रकाशित होके शर्व की
न्याईं जगता भया ९५ और मैं उहां मृत होगई उ
सके प्रभाव सें अब विदर्भराजा की कन्या हुई हां
और पिछला जन्म भी मेरे कों स्मरण है और श्रेष्ठ
धर्मवाले राजा की राणी हां इतना प्रभाव कार्ति
क में विष्णु के आगे दीप की ऊंची ज्योति करणे
सें मेरे कों हुया है तो दीप जगाने सें क्या फल हो
ता होगा ९६ और कार्तिक महीने में दीप जगा
ने का सुंदर जो प्रभाव सो कथन करा है जिस
दीप के विष्णु जी के मंदिर में जगाने सें भगवानजी
कों इतनी प्रसन्नता होती है ९७ जे कर तुमारे मन
में मत्सरता नहीं है तद सर्वदा काल सभ सुंदर
दीप जगाया करो क्योंकी पहु प्रमत्त फल देखो
बिना जाने चिंतन किये मेरे कों दीप की ज्योति बधा
ने का इतना फल हुया है तो जो कोई जान बूझकर
जगावेगा उस कों खबर नहीं क्या फल होवेगा ९८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केशवालयदीपस्यानस्येदं भुज्यते फलं एतस्मा
त्कारणाद्दीपानहमेतानहर्निशम् १९ प्रयच्छा
मि हरेर्धाम्नि ज्ञातानस्य च हि यत्फलम् २० मार्कं
डेय उवाच एवमुक्त्वा स पत्न्यसा दीपदानप
रायणाः बभूवुर्देवदेवस्य केशवस्य सदा गृ
हे २१ ततः कालेन महता तेन राज्ञा महात्मना
विस्नलोकमनुप्राप्ताः पंचत्वं प्राप्य मानद २२
तेलोकमासाद्य नृपेण सार्धं सा राजपुत्री कम
लाभरूपा रेमे महीपालसदा समेता दीपप्र
दानाच्च्यवनाद्विमुक्ता २३ इति दीपमहिमा

यह अब जौनसा सुख भोगे आकर्ती हौं सो तौ पिछ
लेजन्ममें करे होय दीपकाहै जौनसा तूहेके ज
न्ममें करा है इस कारणसें दिनरात्र इनों दीपों
कों हरिके धाममें जगाती फिरतीहौं क्योंकी इ
सफल मैंने जान लियाहुयाहै २० मार्कंडेय ऋषि
जो कथन करते है एवमिति इस प्रकार कथन
करियाहुई अस्त्रा साऊराणीं सोभी दीपदान करणेमें
तत्पर होतियां भईआं सर्वदा काल देवता केश
वजी मंदिरमें २१ तिससें उपरंत हे मानद कित
नाक समय व्यतीत होय पीछे राजाके मृत
होय पीछे सहगामिनी आ होकर विस्नलोक
में जायकर प्राप्त होतियां भईआं २२ तिसलोक
मैं प्राप्त होकर राजाके साथ कमलकी सुंदर मुख
वाली राजाकी पुत्री उहांके सुख भोगभोगतीभई २३
यह विस्नके आगे दीप जगानेकी महिमा कथन क
राहै ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

286

नारायणसन्निधौ दीपप्रज्वालनमाहात्म्ये चेति
हासमवतारयति भक्तमालायां अथ माध
वदासस्य कथां वक्ष्ये मनोरमां यस्याः श्रव
णमात्रेण नरो भक्तिमवाप्नुयात् १ बभूव
चोत्कले देशे विप्रो माधवसंज्ञकः स्त्रीपुत्र
धनमित्राद्यैर्महासुखसमाकुलः २ नीताय
वहुवर्षाणि वयसा स जरां गतः एकदास
गतः क्वापि कार्यार्थं नगरान्तरे ३ कृत्वा
कार्यमथैकाकी समागच्छन्पथि श्रितः त
रुच्छायामुपाश्रित्य श्रममापनयनायसः ४

अब नारायणजीके सामने दीपजगानेके माहात्म्यमें
इतिहास उतारते हैं कथाकथन करते हैं भक्तमाल
में कहा है अब माधवदास ब्राह्मणकी मनको हर
णेवाली कथाकथन कर्ते हैं जिसकथाके श्रवण
मात्र कर्के पुरुष भक्तिको प्राप्त होताहै १ उत्कल
देशमें माधवनामए ब्राह्मण होता भयाकेसाथा
स्त्रीपुत्रधनमित्रादियोंके सुखकर्के आकुल
क्या परमसुखीथा २ इसीतरांतिसके वहुत वर्ष
व्यतीत होगये पर अवस्थाकर्के वृद्ध भी होजाता
भया एक दिन सो कार्यके निमित्त कहीं ग्रामांत
रमें जाता भया ३ तहांजाके उसने कार्य सापन
करा पीछे इकला वनमें आउता २ थकेमारहर
करणें केवास्ते एक सघनी छायावाले वृक्ष
केनीचे हंडी छायामें वैठ जाता भया ४

अथ दैववशात्तस्य समुत्पन्ना महाव्यथा उद
रे तत्क्षणेनैव मूर्छां प्राप स वै द्विजः ५ निश्चे
ष्टो निपपात भूमौ मुहूर्तादुत्थितः पुनः अहो
किं जातमिति स चिन्तयामास चेतसा ६ अ
द्यास्मिन्निर्जने स्थाने क्व मे पुत्राः सुहृत्स्त्रियः
दुःखिनस्य च साहाय्यं कर्तुमात्र समागताः
प्राग्जन्मकर्मणो वाहं जीवितो नात्र संशयः
अथवा पश्यतां तेषां मयि यज्जीवितं भवेत् ८

वेदने से उपरंत दैववशसे तिसके उदर क्या पेटमें
महाव्यथा आनके उत्पन्न हुई पर जिस पीडा के सा
थ सो द्विज एक क्षणमात्र करकें मूर्छा कों प्राप्त हो
जाता भया ५ और उसी सें निश्चेष्ट क्या म्रतकों के
तुल्य होके भूमि पर पड गया दो घडी सें उपरंत उ
ठ खडा हुया राजी प्रसन्न होगया तदमंतमें विचा
रनेलगा की यह क्या हुया अवही पीडा में मूर्छित
हुया अवही राजी होगया हों ६ अहो आजे कर यह
पीडा और भी होती तद इस निर्जन स्थान में आज मे
रे पुत्र सुहृत संवंधि स्त्रीयां जो रहां पीडा के पुनः
मेरे कों सहायता करनेकों आवते किसी कों
खवर न दिथी जो रहां सो मेरे पास आवते ७ आ
व तो किसी पूर्वजन्म के प्रभाव करकें जीवित हो
गया हों अथवा तिनके देखते २ मेरा जो कछु
होना सोई होनाथ उनों ने इस में क्या कारण
था ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२८६

289

नन्वस्यवारणंकोपिकर्तुमर्हतिभूतले
मयिपश्यतिमेपुत्राःकतिधादुःखमाप्नुया
न् किंचावश्यंपहिमर्तव्यमेकस्मिन्दिवसेमया
तदाकमेसुताःक्वाहंक्वायंस्नेहोगमिष्य॰
ति १० अधिचाद्यावधिकृतंसुखंवैषयिकं॰
मयाजरयाशक्यतेनैवकर्तुंतदपिक्षमया
तस्माद्व्यर्थैवमोहोयंकदर्थयतिमामिह
इतोपिस्थावरावस्थायदायास्यतिमेपुनः १२

और इस मरण के निवारण करनेवाला पृथिवी
लोक में कोई नहि है क्यों कर देखो मेरे देखते॰
मेरे पुत्र कितने तरों के दुःखों को प्राप्त होते भ
ये तद मैने क्या कर लिया था जो उनोंने मेरा क
ह करणा है ६ क्या एक दिन मैने अवश्य म
रजाना है तद मेरे पुत्र कहां रहेंगे मैं कहां हो
वांगा यह मेरा स्नेह कहां को जावेगा १० और
निश्चय करके अब तक मैने विषय सुख ही भो
गे है और कुछ नहीं करा है अरजरा वृद्धाव
स्था जद होवेगी तद भी नहि करने को मै॰
ने समर्थ रहणा ११ इस कारणसें यह मो
ह वृथा ही मेरे को कदर्थ करता है इस गृहा॰
में और इससें भी जद अधिक स्थावर जी
र्णावस्था होवेगी तद क्या करोंगा १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तदा मंदादरो भूत्वा शोचिष्ये नात्र संशयः दृश्यते
हि महाभृत्याः सर्वत्र शिथिलादराः ।२ तस्माद
द्यैव भवनाद्बहिर्गत्वा कुत्रचित्स्थितः परलोक
हितार्थाय करिष्ये स्मरणं हरेः ।४ इति नि
श्चित्य विप्रो सौमाधवः स्वगृहं गतः स्नात्वा
भुक्त्वा सुतान्पत्नीं सुहृदः प्राह हृष्टवत् ।५
अहो मद्वचनमेवाक्यं भवन्तो तीव मे प्रियाः त
स्मान्मदुक्तमेवात्र स्वीकर्तव्यं मदाज्ञया ।६

तद थोडे आदरवाला होकर शोच करूंगा इस
में संशय नहि है कि सब नरों की और भी वडे २ बडे
पुरुष घर २ में शिथिल थोडे २ आदरों वाले दे
खीदें है ।२ इस वास्ते आज ही घरसें निकलक
र कहीं सुंदर एकांत स्थानमें बैठकर परलो
कके हितवास्ते हरिका स्मरण करूंगा ।४
ऐसा निश्चय मनसें धारण कर सोमाधव ब्रा
ह्मण अपने घर चला आया तहां आकर स्ना
न संध्यादि कृत्य करकें भोजन करा पीछेसें
बडी प्रसन्नता पूर्वक स्त्री पुत्र मित्र सुहृद
बांधव इन सभनोंको बुलायकर कहता
भया ।५ हे सुहृद बांधवो तुम सारे ही अत्यंत
मेरे प्यारे हो मेरा एक वाक्य श्रवण करो जो कु
छ तुमारे प्रति कथन करता हूं सो तुमने मा
न लेना यही मेरी आज्ञा है ।६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२६

290

अद्यावधिगृहेस्थित्वायुष्मदर्थंमयाकृतं शु॰
भाशुभफलंकर्ममोहपाशेनचेतसा ७ अ
तःपरंतुसाहितंकरिष्यामिनसंशयः जग॰
न्नाथंस्मरिष्यामिस्थित्वाहंकुत्रविजने ८
मृतेमयिनयूयंमेनयुष्माकमहंपुनः जीव
तोप्युपकुर्वंतिकिंचिमेवमृतस्यच ९
तस्माद्यैवगच्छामिसूर्येनिहतस्वेगृहे
इत्युक्त्वामाधवोविप्रःप्रतस्थेनिजमंदिरात्
१०

क्या आजन्मसें लेकर आजतक घरमें स्थित
होकर तुमारे निमित मोहरूपी फांसी करकें बंधे
होए मनवाले मैंने शुभअशुभफलोंवाले कर्म
किये हैं ७ अब इस कालसें उपरंत कहीं एकांत
वनके मध्यमें स्थित होकर जगन्नाथजी का स्म
रणरूप जो अपने परलोक का हित सो करूंगा
इसमें कछु संशय नहि है ८ क्योंकि मेरे मरे हो
ए पीछे मैं तुमारा नहीं हां तुम मेरे नहि हो जो के
ई है सभ जीवनों के ऊपर हो उपकार करणेवा
ला है मरे होए पीछे कोई किसी का कछु नहि
करता है ९ तिस कारणसें आजही मैं घरसें
चलाजाताहूं तुम सारे ही अपने २ घरों में आ
नंद करो इतना वचन कथन करके माधव
ब्राह्मण अपने घरसें प्रस्थान करता भया क्या
निकल पडता भया १० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ ते बांधवाः सर्वे वारयंतस्तमब्रुवः नाथ
स्यान स कस्यापि गतप्रवयहस्कृपा २१ ते पि
सर्वे पराहृत्य समायाता निकेतनं माधवो
पि प्रहृष्टात्मा नीलाचलमुपागतः २२ तत्र
गत्वाद्रिपार्श्वस्थां गुहायां मासितो भवत् नि
राहारोदको देवं जगन्नाथं विचिंतयन् २३
याते दिनत्रयेन स्पातिराहारोदकस्य च तं
तो तुष्टो जगन्नाथः प्रसन्नो ऽभूद् द्विजस्य सः २४

इसके उठकर चलनेसें उपरंत सोसारेहीपुत्रमि-
त्रादिबांधवनिवारणकामनाकर्तेहोय पीछे च
लते भये बहुतवार तिनोंनेकहाभी तदभीति
सनेकिसीकी वात नहिमानी अपनीइच्छापूर्व
क चलाहीगया २१ जद सो सारेही परत्त क
र अपने २ घरमें चले आपे उधरसें माधव-
भी प्रसन्नमनवाला नीलाचलकों चलाग-
या २२ तहांजाकरपर्वत केपासकी गुफासें
बैठाजाता भया और अन्नजलकात्यागक
रदेवताजगन्नाथजीकों चिंतनकर्ता भया
२३ इसीप्रकारअन्नजलकेखानेपीने विना
तीन दिन बीत गए होय पीछे तद जग
न्नाथजी जिस ब्राह्मण के ऊपर आनंदयु
क्त होके प्रसन्नहोते भये २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चतुर्थे दिवसे राजन्निशायां शयने ततः । ल
ड्डुकानि सुवर्णस्य स्थाल्यां कृत्वाहिश्चनकाः
२५ जगन्नाथाय दत्वा ने मुद्रयित्वा कपाटकं
स्वयुः स्वगृहे सर्वे यथा मद्दिवसे तथा २६
अथ श्रीभगवाल्लक्ष्मीमुवाच करुणामयः
इदं लड्डुकनैवेद्यं नीत्वा नीलाचले त्वहम् २७
गत्वा माधवभक्ताय दत्वायास्यामि सोप्रतं
सन्न सर्वं परित्यज्य स्त्रीपुत्रधनबांधवम् २८

हे राजन निराहार ही तिस को चौथे दिन रात
को सोने के समय स्वर्ण के थाल में लड्डुयों से
आदले कर मिठाईयों का नैवेद्य पायकर भ
गवानजी के आगे रख कर किवाड बंद कर
पुजारी अपने अपने घर में जा के शयन क
र्ते भये जैसे आगे रोज जाते थे तैसेही २६
इस वृत्तांत से उपरंत श्रीभगवानजी ल
क्ष्मी को कहते भये बडे दयावान् होकर
कहते भये यह लड्डुयों का नैवेद्य नीलाच
ल में लेजायके २७ माधवदास भक्त को दे
कर अवही परत कर चला आउंगा हूं जो
ह मेरे निमित्त स्त्रीपुत्र धन बांधव गृह सभ
नों का त्याग कर मेरा भजन करने कों
आया है २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिनत्रयंनिराहारःस्मरन्तेमामनन्यभाक्
तस्मादस्मैचदातव्यमिदमस्मिन्क्षणेमया
इतिश्रुत्वावचस्तस्यलक्ष्मीःप्राहकृतांजलिः
नाथाहमेवगच्छामिदत्वायास्यामिवैद्रुतम् २०
इत्युक्त्वास्वर्णपात्रंतत्सलड्डुकंकरेणसा गृ
हीत्वास्त्रीस्वरूपंचकृत्वातत्रययौरमा २१ ग
त्वामाधवदासस्यसमीपेप्राहसादरं गृहा
णेवंसलड्डुकंपात्रमाहंप्रेषिताद्रुतम् २२

तीनदिनोंसें मेरेकोंनिराहारहोकेअनन्य भा
गी होके स्मरणकर्तीहै इसकारणसें इसी
समयमेंनेउसकों यहनैवेद्य देनेयोग्यहै १९
यहवचनतिनकाश्रवणकरहाथजोडकर
लक्ष्मीकहतीभई हेनाथमैंजातीहूं शीघ्र२
जिसकोंदेकरचलीआवतीहूं २० ऐसेकथ
नकरसमेतलड्डुयोंकेपात्र उठायकर और
सामान्यस्त्रीकारूपधारणकरलक्ष्मीनीलाच
लमें चलीजातीभई २१ तहांमाधवदासके
पासजाकर आदरपूर्वक कहनेलगी हेभ
क्तश्रेष्ठ यह लड्डुयों केसहितहीपात्रग्रहण
कर मेरेकों स्वामिने भेजाहै को उसकों जा
के भोजनदे सोबहुतदिनसें भूखाहै २२

२९१

तवभोजनदानायेमुक्तानज्ञानेरमो लड्डु
कांश्च तस्याग्रे प्रणिधाय समागता ३३ त
दा माधवदासोपि मत्वा हृदि हरेः कृपां बुभु
जे तानि सर्वाणि पात्रं तत्रैव स्थापितं ३४ अ
थ प्रातः समुत्थाय जगन्नाथस्य सेवकाः
पूजा कर्तुं मन्दिरं जग्मुर्ददृशुर्नैव भोजनम् ३५
न लड्डुकं ततो द्विग्नाः कश्चोरोऽत्र समागतः
कपाटस्तादृशो लग्नोऽस्माभिरुद्घटितस्तथा

इसवास्ते तेरेको भोजन देनेवास्ते आई हां ऐसे का
थन कर तिस लड्डुयों के पात्र कों उसके आगे रखक
र चली आई ३३ तद उस समय माधवदास भी मन
में हरि की कृपा मानता भया क्योंकी इस वखत
हमसे बिना कौन खबर लेनेवाला है ऐसे जानक
र तिस सारे नैवेद्य के लड्डुयों कों खाय कर पात्र उ
सी स्थान में रख देता भया ३४ इससें उपरंत प्रातः
काल जगन्नाथ के पुजारी उठकर पूजा करने कों
मंदिर में आवने भये और किवाड खोलकर देख
ने लगे तो रातके नैवेद्यवाला थाल नहि देख
३५ और लड्डूयों को भी नहि देखा इससें उद्वेग कर
युक्त मनवाले होय परस्पर मन में विचारणे लगे की
इहां कौन कोई चोर रातकों आया जो मसा कोई
कपाट लगे होई थाल चुरा के लेगया कपाट जै
से बंद कर या था ऐसे ही लगे होय मेमेरखोले हैं ३६

कथंचौरः समायातो महदाश्चर्यमभूदिदं सर्वं
मेतन्मत्वाराज्ञेदुःखिताश्चभवन्जनाः २७
राजापिचारान्सर्वत्रप्रेषयामासचिंतितः पू
जकाअपिसर्वत्रचौरंस्तानंसमेननतः २८ ग
ताअन्वेषमाणास्तेवनेग्रामेचपर्वते नी
लाचलंगतास्तेचिच्चौरदर्शनकांक्षिणः २९
ददृशुःपर्वतेतत्रमाधवंमीलितेक्षणं तद
ग्रेस्वर्णपात्रंतद्दृष्टासर्वेपिहर्षिताः ३०॥

कपाटलगेहोए सुंदरमंदिरकेचौरकैसेआया व
डेहीआश्चर्यकीबातहैं यहबातदुःखितहोएपडुए
पुजारीलोकराजाकेतांईकहतेभये २७ इनकी
बातसुनतेहीचिंतायुक्तहोएआज्ञया चारो ओर
हलकारेअपनेभेजदेताभया औरपुजारीलो
कभी चौरकोंपकडनेकेलिये शहरकेचारोंपा
सेयोंमें फिरनेलगे २८ तद सोपुजारीलोक
ढूंढते २ वन २ पर्वत ग्रामोंसें फिरते २ नी
लाचलपराकितनेकजायनिकले २९ तद
तहांक्यादेखतेहैं नीलाचलकोगुफांसें नेत्र
मीटकरध्यानलगाए होए माधवदासबैठा
हुया देखा और जिसके आगे स्वर्णकाथाला
भीदेखाबडे हर्ष आनंद कोप्राप्तभये की
चोरतोपकडागया ३०॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२९३

अहो ऽनेनैव तद्धृतं पात्रं देवस्य नान्यथा इत्यु
क्त्वा जगृहुः पात्रं बबंधुर्माधवं रुषा ४१ नीत्वा
यानाः स्वनगरे ताडयामासुः कोपिताः माध
वस्तु न नस्तूष्णीं स्थितः प्राक्कर्मजं स्मरन् ४२
दृष्टे भग्ना त्वचस्तस्य शोथश्चासीत्ताडनाद्भृत
दयालुरेकस्तन्मध्ये वारयामास ताडकं ४३
अथ सायं जगन्नाथे तर्पयंतो जनास्तदा दृ
ष्टमूर्तेस्त्वचो भग्नाः शोथं वै ददृशुर्हरेः ४४

अहो रे यो देवता जगन्नाथजी का पात्र हर लिया है ऐसे
आपस में कथन कर सर्ण के थाल को उठाय लिया औ
र उस माधवदास को क्रोध कर बांध लेते भये ४१ फि
र तहां से ही कोपवाले तिस को ताडना करते अपनी
पुरी में चले आवते भये माधव जो न साध्या सो चुप
होकर स्थिर हो जाता भया न किसी को कछु अच्छी
बुरी कहता की मेरे को किस वास्ते मारते हो मैने क्या
गुना किया है ऐसे भी नहि कहता भया क्यों इस जन
म के कर्म का कोई फल यह भी आपगया इस वात
को स्मरण कर्ता हुया ४२ और बहुत ताडना करणे से
तिस का पीठ में सोजा हो गया और ऊपर का मास
उठ गया तद दयावान एक पुरुष मारणे वाले को हट
टाय देता भया की अब और इसको मत मार ऐसे
कहके छुडाया और कहीं कैद कर रखा ४३ इस से
उपरंत सायंकाल के समय पुजारी लोक जगन्ना
थजी की पूजा करते होए शोष उतारने के समय मू
र्ति की पीठ में मांस उखडा हुया और पीठ सोजी हुई
हरि की देखते भये ४४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दृष्ट्वासर्वेमहाश्चर्यंचिंतयानेसमन्विताः किं
जातामितिनिशोकेनष्टाशनजलानिशि
बभूवुः खिन्नमनसस्ततः श्रीपुरुषोत्तमः
स्वमेनानाह भो विप्रामाधवो नीवमेप्रियः ५९
नीलाचलेस्थितिनस्तस्मैसलड्डुकंनभाजनं
मयैवप्रेषितंतेनस्तेनायंचौरोहिमाधवः ५७
तस्ययत्नाउनंपृष्ठेकृतंयुष्माभिरत्रभोः ते
न मेपृष्ठदेशोयशोथोभेदस्त्वचामभूत ५८

इस प्रकार का महाश्चर्य सारेही पुजारी देखकर
चिंता कर युक्त होजाते भये और मन में विचारते है
की यह क्या हुया ऐसेंही शोक कर युक्त रात के
समय अन्न जल का त्याग करते भये ५५ और
ऐसेही विमन वाले हो पडूप शयन करते भये
तद श्री पुरुषोत्तमजी स्वप्न में तिनों ब्राह्मणों
को कहते भये हे विप्राः तुम वात सुनों माध
वदास मेरा बहुत प्यारा भक्त है ५६ नीलाचल
पर बैठा हुया बहुत दिनों का भूखा प्यासा तिस
कों समेत लड्डुयों के थाल मैने भेजे था सो
चौर नहि है तुमने जो पकड़ा है ५७ और जो तु
मने मिलकर उसकी पीठ में जौनसा ता
डन करा है उन करकै मेरी पीठ की त्वचा टूट
गये है और सोजा भी होगया क्योंकी सो भ
क्त मेरा ही दूसरा देह है ५८ ॥ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा·
ग्रीम·
२९७

294

नान्यः कोपि च मे ज्ञातो दोषः पृष्टेस्ततः प्रदः
एवं दृष्ट्वा निशि स्वप्ने स्वप्नकाले ततां शुभं
उत्थाय तं महाभक्तं मुमुचुर्बंधनाद्द्रुतेन मु
क्ता ब्राह्मणा मुख्याः सर्वे स्नापयित्वा शुभांभसा ५·
भोजयित्वाति भक्त्या तं ददुरास्तरणं शुभम्
उपचारांश्च चक्रुस्ते शोथस्तत्र निवृत्तये ५१
एवं माधवदासस्तु भक्तस्तत्र बभूव सः न
त्रैव निवसन्देवीं चिंतयानो दिवानिशम् ५२

हे विप्राः और कोई मेरेको तान देनवाला दो
षन हुया है इस प्रकार रात के समय पुजारी सुं
दर स्वप्न देखकर तत्क्षण उठ खडे होते भये ४९
और तिस महाभक्त को भी उठाकर शीघ्र बंधनों
से खोलते भये खोलके तिसको सब भक्तों ने प्र
णाम करी उसी समय अच्छे जल के साथ स्ना
न कराय कर पीछे ५· भोजन कराया और
सुंदर बिछौने यों पर सुवाल दिया फिर उस
की पीडा निवृत्ती के वास्ते उपचार क्या म
र्दनादि करते भये ५१ इस प्रकार माधवदा
स भक्त जिस पुरुषोत्तम क्षेत्र में होता भ
या और तिस क्षेत्र में ही दिन रात भगवान
जी का चिंतन करता हुया निवास करता
भया ५२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निनायबहुवर्षाणिपल्लवन्मुदितात्मना
एकदामाधवोदासोनिवसंस्तत्रवैपुरे ५३
भिक्षामादायभोक्तव्यमितिकृत्वाव्रतंततः
पर्यटन्नगरेनित्यंभिक्षामादायसर्वतः ५४
भुक्तोवाससुखेनात्रचैकस्मिन्दिवसेततः
स्थितैकातत्रनगरेमहाचंडीतिकर्कशा
महाधनवतीहेमादानभोगविवर्जिताम
स्यागृहेगतोभक्तोमाधवोनंचभिक्षितं ५६

उसनगरमेंप्रसन्नमनवाला एकपल्लवकीन्याई
बहुतवर्षभोगनकर्ताभया ऐसेही माधवदा
स एकदिन तिसपुरमें निवासकर्ताहुया ए
हमनविषे धारणाकर्ताभया ५३ अब भिक्षा
मांगकर भोजनकरणाचाहिए यहव्रत धा
रणा करनित्यंप्रति भिक्षामांगनेकोंउसनग
रीमेंप्रतिदिन फिरताभया ५४ भिक्षामांग
कर त्याउनी भोजनकर निवास कर्ताभया ऐ
सेहीएकदिनभिक्षामांगता २ एकबडे धन
वाली वृद्धास्त्रीथी उसकेचलागयासोकैसी
थी बडेक्रोधकरयुक्तकर्कशाकठोरस्वभाव
वाली निवासकर्तीथी उसकेचलागया ५५
बडे धनवालि तिसकोंदान भोगकरवर्जि
त देखकर तिसकेघरमेंमाधवदास भक्त
भिक्षा मांगनेकोंचला गया ५६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भिक्षां देहीति प्रोच्चैर्वारं विहरन्नपि ॥ श्रुत्वापि च न सुश्राव लिम्पन्ती चाङ्गनं निजम् ५७
पुनः प्रोवाच देहीति श्रुत्वा साथ प्रकुप्य वै
उत्थाय दण्डिनो हस्तं लेपन्यासहितं रुषा
ततो दृष्ट्वा तु तां चैव उग्रां कामां भयंकरीं
पलायितो गृहद्वाराद्बहिरागत्य संस्थितः ५९
तत्रापि सा समायाता हन्तुं तं सोऽपि च द्रुतं प
लायनं चकाराथ सा तत्रामेव लेपनीं तम्
हि स्थप्रविलेपसा ततामेव लेपनीम् ६०

घरके अंदर जायकर भिक्षा मांगने की आवाज करता
भया द्वारसें खडा होकर तदसो वृद्धा अपने घरका
अंगन लिपतो होई आवाज सुनकर मौन होरह
ती भई ५७ फिर तिसने कहा माई मेरे कों भिक्षा दे
वहुत चिरसें खडा होरहा इतनी वात सुनते ही
सो वृद्धा लेप देनेवाले कपडे के खंडके समेत द
हना हाथ उठाय कर उसके पीछे मारणेकों
दौडी ५८ तदसो माधव मारनेकी कामना वा
लि भयंकरी को देख कर भाग करकें द्वार
सें वाहर चला आके स्थित होगया ५९ सो
वृद्धा उसके मारणे वास्ते शीघ्र वाहर भी आ
वती भई तद माधवदास उहांसें भी भागजा
ता भया तद उस वृद्धाने लेपिनी कों माधव
का उद्देश करकें पीछे सुट देती भई क्या क
हती भई की लेजा इसकों ६० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

माधवस्ततः शीघ्रं परावृत्य सलेपनीं गृहीत्वा द्रुतं भक्तः कर्कशापि च तं ततः ९१ गालिदानपूर्वं तीव्रक्रोधेन रुक्षे मार्गे त्यक्ता पश्चात्पराङ्मुखी ॥ अथ माधवदासस्तु साधुभावा ततस्ततः ९२ उपकर्तुं मनश्चक्रे गत्वोदधितटे स्वयम् प्रक्षालनैश्च बहुभिः शुभ्रीकृत्य च लेपनीम् ९३ शोधयित्वा ततो वर्तीर्विधाय बहुशस्ततः विक्रीय कतिचित्तस्याः क्रीतवान्स मार्तिकास्ततः ९४

माधवदास भक्त परत के शीघ्र तिस लेपिनी कों ग्रहण करके फिर दौडकर चला जाता भया तद सो कर्कशा स्त्री भी हठ कर पीछे से चली जाती भई ९१ गालियां दियां कर्तीं और बड़े क्रोध करके गोए जिसके फर कर रहे इस से उपरंत सो भक्त माधवदास अच्छे स्वभाव से तिस स्त्री के ऊपर उपकार कर्णे की इच्छा कर्ता भया ९२ तो समुद्र के किनारे पर जायके तिस लेपिनी को बहुत बार धोय २ कर स्वेत रंग की कलिता भया ९३ फिर तिस कों सुप में सुकाय कर तिसकी यां बहुत बट्टियां बनायकर कुछ अपने से वेच के उसका घृत लिया फिर घृत के दीप बनावता भया ९४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दीपनिर्माय संध्यायां श्रीजगन्नाथमंदिरे प्र
त्याल्पप्रददौ प्रेम्णा संकल्पं मनसाकरोत् ९५
तस्मात्त्वं भो जगन्नाथ त्वं प्रसन्नो भव प्रभो अ
ज्ञानतिमिरांधाय ज्ञानं भवतु निर्भयम् ९६
दानेन तस्या मतिर्भूयादिह जन्मनि सर्वदा
उपभोगो धनस्यास्याद्दीपदानप्रसादतः ९७
एवं संकल्प्य प्रददौ दीपंस्तत्र मठे द्विजः त
त्क्षणादेव तस्यास्तु पश्चात्तापो महानभूत् ९८

वहुत सुंदर दीप बनायकर उस कपडीकी वत्तियां
और घृत पायकर सायंकालके समय हाथ पैर धो-
यकर श्रीजगन्नाथजीके मंदिरमें जायकर बडे प्रेम-
के साथ मनकर्के ऐसे संकल्प कर्ती भया ९५ हे श्री
जगन्नाथ बडे क्लेशवाली दानभोग रहित धनप
दारथ करके युक्त जो सो हम हैं हे प्रभो तिसके
ऊपर प्रसन्न हो और अज्ञानतिमिर क्या है अज्ञा
नरूपी अंधकार तिसकर्के अंधाको निर्भयज्ञान
होवे तुमारे कृपासें ९६ और जवतक सो जीवती
है तवतक उसको इसजन्ममें दान करने में बु
द्धि उत्पन्न होवे और इस दीपदानकी प्रसादसें धा-
नका उसको उपभोग होवे अर्थात् जितना उसके
पास धन है उसको कछु खाये कछु तुमारे निमि-
त दान करे ९७ इसप्रकार स्त्री ब्राह्मण मनकर्के सं
कल्प कर मंदिरमें दीपोंको जगावता भया तब भग
वानकी कृपासें उसी समय घरमें वे ही होई तिसको
मनमें वडा तपक पश्चात्ताप उत्पन्न होता भया ९८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न ददामि विशिष्टेभ्यो न भुंजामि स्वयं पुनः अ
पि कः साधुरायातस्तस्मै गालिमदामहम् ११
अतो मत्सदृशी लोके नान्या दुर्भाग्यशालिनी
धिग्मां मूर्खां यदेतावद्धनं प्राप्यापि दुष्कले १२
न दीयते भुज्यते वा तस्माज्जन्मैव मे मृषा ३
इति चिंतापरा रात्रौ लेभे निद्रां न कर्कशा १४
प्रातरुत्थाय संमार्ज्य गृहद्वारं तथांगने अ
न्नादि वस्त्र दिव्यानि निष्कास्य गृहात्तसा १५

क्या पश्चात्ताप करने लगी देखोमें कैसीहां ना
नोमें इसधनकों दीन अनाथ साधु अभ्यागतोंकों
देतीहां नामें आपखातीहां आज एक साधु आ
या उसकों भी मैंने गालियां दियां तिरस्कार
किया ११ इस कारणसें जानों की मेरे जैसी सं
सारमें दुष्ट खोटे भाग्योंकरकें युक्त नहि होवें
गी धिक्कार है मेरेको २ जो मेंइतने वडतधना
कों प्राप्त होकरकें भी कुछ नहि करतीहां १२ नामें
ने खाया ना लाया ना दिया ना लिया इसपें मे
राजन्मही वृथा है इस प्रकारकी चिंतामें तत्प
र होईहुई रातके समय निद्राकों नाहि प्राप्त
होती भई १४ बडे क्लेशकर युक्त जदरात व्यत
तीत भई प्रातःकाल उठके सो कर्कशा अपने
घरके अंदर वाहर सारेही सोतकर गोहेका ले
पन देती भई फिर अंदरमें जो कुछ अन्न वस्त्र आ
दु भूषण होये सारेही कुछ निकालकर
वाहर स्थापन करती भई १५ ॥ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दीनानाथदरिद्रेभ्यो साधुभ्यः प्रदद्दौ मुदा चिं-
तयामास मनसा कदा पश्यामि ताहृशं २३
यस्मै गालिर्मया दाना याचमानाय माधवे
मिलिष्यति यदा दैवान्नो षयिष्यामि सर्वथा
एवं चिंते चिंतयंती द्वारदेशे समागता अ-
थ माधवदासस्तु तावं तच्चेष्टितं पुनः २५
आयातस्तेन मार्गेण कर्कशापि ददर्श तं
दूरादागम्य वपतत्पादयो रतिभक्तितः २६

और मनका संकल्प करा और जो उस समय दीन अना-
थ दरिद्र अंधा साधु ब्राह्मण अभ्यागत आवता भया
सभ को मन मांगे याहृया देती भई और मनमें ऐसे चि-
तिंन करती भई कि तिस साधु को कद देखूंगी २३
भिक्षा मांगते होए जिस को मैने एर्व दिन में गालियां
दई आं थी आज जे कर दैव योग से मिल जावे तद
तिस को तों अच्छीतरां से प्रसन्न करूंगी जो कुछ
मांगेगा सो ई वस्तु देवूंगी २४ इस प्रकार मन में चि-
तन करती होई द्वारदेश पर चली आई की न जाने
कहीं आवना जाना मिल जावे इतने में माधव-
दास भी तिस का चरित्र देखने कों चला आया
२५ तिस मार्ग मार्ग कर के आवता ही था तद दू-
र से ही तिसें कर्कशा वृद्धा ने देखा दौउकर ब-
डी भक्ति से तिसकें पादों से लग करकें शिर र-
खकें प्रार्थना करती भई २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्वमस्मायापराधंमेमूर्खायाःक्षमस्व दयानिधे य
त्सर्वंश्रुमयादत्तागालयस्तेनिरागमे ११ अ
याग्गच्छगृहेनाथदयांकुरुममोपरि इत्यु
क्त्वातंकरेभृत्वानिनायनिजमंदिरम् १८
सोपिमत्वादीपदानमाहात्म्यंतद्गृहेगतः
तद्धिनेसर्वमन्नादिस्त्राकृत्यप्रददौस्वयम् १६
उवाचतस्यैमांतत्वंसाधुसेवापरायणा ह
रिभक्तिरतामूत्वासमुद्धरनिजंकुलम् ८०

क्याहे दयानिधिमैंवडीमूर्खहां मेरेअपराधोंकों
आपक्षमाकरोजोमैनेविनाअपराधके तुमारे
कों गालियां दईयां सियां सोई वडा अपराध
हुया सोक्षमाकरो ११ औरहेनाथमेरेपरदया
करकेआजघरमें चलो एसा कहकर तत्काल
रसेहाथपकडकर अपनेघरमें अंदरलेगई १८
सोमाथवदासभीदीपदानकीमहिमाकाप्रभा
वजाणकरतिसकेघरमें चलागया उसहुत्र
नेजोकुछनिकालरखेयाहुयाथासोसाराही
कुछ उसकोंदेदिया उसनेभी अंगीकारक
लिया फिर आपबाटकर देदेतामया १६ फि
रतिसकोंकहनेलगा हेमातः तूंआज सेंले
कर साधुयोंब्राह्मणोंकी सेवाकरेयांकर औ
रनारायणजी की भक्तिमें तत्पर हीकरकें अ
पनेकुलकाउद्धार कर ८० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा निर्ययौ तस्मात् गेहात्स माधवो द्विजः
ब्राह्मणी सापि सत्कर्मनिरता भक्तिमत्यभूत्
८१ भुक्त्वा भोगानशेषांश्च मृता हरिपुरं
ययौ इति ते कथितं दीप माहात्म्यं हरि
भक्तिदम् ८२ इति श्रीदीपदानमाहा
त्म्यम् ॥

इस नरों की शिक्षा करकें माधव दास ब्राह्मणि
सके घरसें निकल आवता भया ओर उसके
पीछे सो ब्राह्मणी अच्छे श्रेष्ठ कर्म में भक्तिवाली
होति भई ८१ इस लोकके सुख भोग भक्ति के प्रभा
व सें भोग कर मृत होइ हुई हरिके पुर वैकुंठ
लोकमें चली जाती भई यह तेरे प्रति हरि की भ
क्ति देने वाला भगवानजी के आगे दीप जगाने
का महात्म्य कहा है ८२ यह भगवानजीके आ
गे दीप जगाने की महिमा समाप्त भई है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ विस्नोरारार्तिकमाहात्म्यं भविष्यपुराणे
वहुवर्तिसमायुक्तं ज्वलंतं केशवोपरि कु
र्यादारार्तिकं यस्तु कल्पकोटिं दिवं वसेत्
नीराजनं च यः पश्येद्देवदेवस्य चक्रिणः स
प्तजन्म भवेद्विप्रो अंते च परमं पदम् २ कर्
पूरेण च यः कुर्याद्भक्त्या केशवमूर्द्धनि आ
रार्तिकं मुनिश्रेष्ठ प्रविशेद्विस्नुमव्ययं ३ मंत्र
हीनं क्रियाहीनं यत्कृतं पूजनं हरेः सर्वं सं
पूर्णतामेति कृते नीराजने हरेः ४ ॥

अब विस्नु भगवानजी की आर्तिकर्णी की महिमा
लिखा है भविष्य पुराण मे कथन करा है वहुत वहु
त कीयां वहियां जिस कों लगदीयां होवे ऐसी
प्रकाशमान क्या वलती होई केशवजी के ऊपर
जो कोई आर्ति कर्ता है सो कल्पों के कोड़ स्वर्ग में
निवास कर्ता है १ और जो कोई देवतयों के देवता
चक्री विस्नु भगवानजी की आर्ति कों देखता है
सो सात जन्म ब्राह्मण होता है फिर परमपद कों
प्राप्त होता है २ और जो कोई पुरुष भक्ति प्रेम
कर्कै कपूर के साथ भगवानजी के शिर मे आ
र्ति कर्ता है हे मुनियों मे श्रेष्ठ सो अविनाशि वि
स्नुजी में प्रवेश कर्ता है ३ जो न सा नारायणजी
का पूजन मंत्रों कर्कै और क्रिया कर्कै हीन क
रा है सो सभ नीराजन के करे होय संपूर्णता
कों प्राप्त होता है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२६६

नीराजनजलंयत्रयत्रपादोदकंहरेः तिष्ठ-
तेमुनिशार्दूलवर्धंतेतत्रसंपदइति ५ पा
द्मेकार्तिकमाहात्म्ये आरार्तिकंहरेर्यस्तु
सकर्पूरंसवर्तिकं कुरुतेमोक्षमाप्नोतिकु
लायुतसमन्वितः ६ स्कंदे वहुवर्तिसमायु
क्तंज्वलंतींकेशवाग्रतः सवैस्वबोनरोत्तेर-
योविमुक्तोनरकार्णवात् ७ सनत्कुमार-
संहितायां कुर्यादारार्तिकंयस्तुकल्पकोटि
दिवंवसेत् कर्पूरेणचयःकुर्यात् भक्त्याके-
शवमूर्धनि ८॥

जिसस्थानमेंनीराजनसें उपरंत भगवानजीके
शिरपर वरियाहुया जल और पादोंकाजल
स्थित होताहै जहां २ संपदावधतीयांहै ५
पद्मपुराणकेकार्तिक माहात्म्यमेंकहाहै
जोपुरुषसुंदरवहियां वालीयां कपूरके सहि
त भगवानजीकोआर्तिकर्ताहै सोअयुतकु
लके सहितमोक्षकों प्राप्तहोताहै ६ स्कंदमें
कहाहै वहुत वहियों करके युक्तआर्तिकों
जोकेशवजीकेआगेकर्ताहै सोनरकसमु
द्रसें मुक्तहोतेहैं ७ सनत्कुमारसंहितामें-
लिखाहै जोकेशवजीके मूर्द्धमेकर्पूरके सा-
थआर्तिकर्ताहै सो क्रोड कल्पस्वर्गमें नि
वासकर्ताहै ८॥

299

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नीराजनावलिर्विस्नोयस्यगात्राणीसंस्पृशे
त् यत्तलक्षसहस्राणांलभतेस्नानजंफलं
इति पाद्मे पातालखंडे आरात्रिकंहरेर्यस्तु
सकर्ईरं प्रजागरे कुरुतेमोक्षमाप्नोतिकु
लायुतसमन्वितः ९ इतिआरात्रिकरण
माहात्म्यंसमाप्तम् ॥

जोकोई पुरुष विस्नुकी करीहोई आरतिकी
पंक्तिकों गात्रोंमेंस्पर्श कर्ताहै सोपुरुषलाखोंके
हजारों लाखोंकेफलकोंप्राप्तहोताहैं १ पद्म
केपातालखंडमेंलिखाहै जोकोई पुरुष जाग
रण के दिन हरिकी आरति कर्ताहै सोअयु
त कुलके सहित मोक्ष कों प्राप्त होताहै ९
यह आरतिकीमहिमा समाप्त होई है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१..

अथ विष्णोर्निर्माल्यग्रहणमहिमा क्रियायो
गसारे मस्तके दृश्यते यस्य विष्णोर्निर्माल्य-
मुत्तमम् स विज्ञेयो द्विजश्रेष्ठ साक्षाद्देवो हरिः
स्वयम् १ दुर्लभं विष्णुनिर्माल्यं पवित्रं पाप
नाशनं ग्रहणं त्रिदशास्सर्वे मानुषा-
णां च का कथा २ जैमिने तुलसीपत्रं यस्तु
जिघ्रति वैष्णवः तस्य देहान्तरस्थापि सर्वं पा
पं विनश्यति ३ तुलसीपत्रगंधस्तु प्रविशे
द्यस्य नासिकां आपदस्तच्छरीरस्थाः सद्यो
गच्छन्ति संक्षयं ४ ॥

अब विष्णु के ऊपर चढे हुए निर्माल्य धारणे की म
हिमा लिखो है क्रियायोगसार में कह्यो है जिस पुरु
के मस्तक में उत्तम विष्णु का निर्माल्य देखने में
आवे हे द्विजश्रेष्ठ सो साक्षात हरि का रूप जाना-
ना १ दुर्लभ जो न सा पवित्र पापों के नाश करणे-
वाला विष्णु का निर्माल्य है तिस कों सारे देवता
ग्रहण कर्ते हैं मनुष्यों की तो क्या वार्ता है २ हे जै
मिने जो वैष्णव पुरुष निर्माल्य की तुलसी कों
सूंघता है तिस के देह के मध्य में स्थित जो न से
पाप हैं सो सारे ही नष्ट हो जाते हैं ३ और जिन कि
सी पुरुष की नासिका में तुलसी के पत्र की सुगं
धि प्रवेश कर्ती है उस के शरीर में स्थित जो आपदा
हैं सो सभ शीघ्र नष्ट हो जातीयां हैं ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कृस्नेनोत्तीर्णन्तु निर्माल्यं यस्यांगं स्पृशते मुने
सर्वरोगैस्तथा पापैर्मुक्तो भवति मानवः ५
विस्नोर्निर्माल्यशेषेण यो गात्रं परिमार्जयेत्
दुरितानि विनश्यंति व्याधयो यांति खंडिता ६
शंखोदकं हरेर्भक्त्या निर्माल्यं पादयोर्जलं
वंदनं धूपशेषस्तु ब्रह्महत्यापहारकं ७ स्कं
दे मुखे शिरसि देहे तु निर्माल्यं पादयोर्जलं
हरेर्देहपरिभ्रष्टं बिभृयान्मुनिसत्तम ८॥

हे मुने जिस पुरुषके कृस्नजीके ऊपरसें उतरा
हुआ अंगामें स्पर्श कर्ताहै सो सारे रोगों करकें
और पापों करकें मुक्त होताहै ५ और जो कोई पु-
रुष विस्नुके उतरे होए निर्माल्य शेष करकें अप-
ने अंगोंको मार्जन कर्ताहै तिसके पाप और व्या-
धियां खंडित होजातीयांहै ६ और जो कोई
पुरुष शंखका जल और विस्नुके पादों का नि-
र्माल्य जल पान कर्ताहै धूपदीपके शेषको वं-
दना कर्ताहै यह सभ काम ब्रह्महत्याके दूर
करणे वाले हैं ७ स्कंदपुराणमें कहाहै हे मुनि-
सत्तम हरिके देहसें भ्रष्ट हुया २ जो निर्माल्य पु-
ष्पादि और पादों का जल तिसको मुखमें शिरमें
देहमें उनने स्थानों मे धारण करे ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३०१

महास्नानोदकं यत्र यत्र पादोदकं हरेः । तिष्ठ
ते मुनिशार्दूल तत्र स्युः सर्वसंपदः ९ स्कंदे
विष्णोर्मूर्ध्नि स्थितं पुष्पं शिरसा यो वहेन्नरः
जन्मप्रभृति यत्पापं शतधा तद्विनश्यति १०
पाद्मे मुखे शिरसि देहे च विष्णोर्निर्माल्यं च यो व
हेत् तुलसीं मुनिशार्दूल न तस्य स्पृशते क
लिः ॥ गारुडे तुलसीदलसंमिश्रं यस्तोयं
शिरसा वहेत् सर्वतीर्थाभिषेकस्तु तेनश्रा
मेन संशयः १२ स्कंदपुराणे मुखे शिरसि
विप्रेंद्र विष्णुदेहार्चने रतः तुलसीस्पर्शमा
त्रेणा विनश्यति सदा कलिः १३ ॥

जिसस्थान महात्मा नका जल है और जहांमें पादोंका
जल है हे मुनियोंमें श्रेष्ठ तहांसारियांही संपदा है ९
स्कंदपुराणमें लिखा है विष्णुके शिरपर स्थित जो पुष्प
तिसकों सिरकरकें जो धारणा कर्ता है तिसके जन्मसें
लेकरके जो पाप है सो सोप्रकारका होके नष्ट होता है
१० पद्मपुराणमें लिखा है विष्णुके ऊपरसें उतारी हुई
तुलसीकों हे मुनिशार्दूल समुखमें और शिरमें दे
हमे जो धारणा कर्ता है तिसकों कलि स्पर्श नहि कर्ता
है ॥ गरुडमें लिखा है तुलसीदलसे मिला हुया जो ज
ल तिसकों शिरकरकें जो धारणा कर्ता है तिसने सारे ती
र्थोंमे स्नानका फलही प्राप्त हुया है इसमें संशय न
हि है १२ स्कंदपुराणमें कहा है हे विप्रेंद्र विष्णुकी पू
जामें तत्पर होया पुरुष मुखमें जो शिरमें अथवा दे
हमें इतने स्थानोंमे तुलसीके स्पर्शमात्र करकें सर्व
दा काल कलि क्या कलहा नष्ट होता है १३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्मे क्रियायोगसारे तुलस्याः स्मरणेनैव सर्व
पापं विनश्यति तुलसीस्पर्शनेनैव नश्यंति
व्याधयो नृणां ७४ योऽश्नाति तुलसीपत्रं सर्व
पापहरं शुभं तच्छरीरं नरस्यापि पापानि न
श्यंति तत्क्षणात् ७५ तुलसीकाष्ठसंभूतां
मालां वहति यो नरः तद्गात्रे पातकं नास्ति
सत्यमेव मयोच्यते ७९ तुलसीपत्रसंमि
श्रं यत्तोयं शिरसा वहेत् गंगायाः स्नानजं पु
ण्यं लभते नात्र संशयः ७०

पद्मपुराणके क्रियायोगसारमें लिखाहै तुलसी
के स्मरणमात्र करकें सारे पाप नष्ट होतेंहै और तु
लसीके साथ स्पर्श करणे करकें पुरुषों कीयां
व्याधियां नष्ट होतीयांहै ७४ जो कोई पुरुष सभ
नों पापोंके हरणे वाले शुभ क्या मंगल रूप तु
लसीके पत्र कों भोजन कर्ताहै तिसके देहांतर
मे स्थित जौनसें पापहै सो तत्क्षण नष्ट होजाता
है ७५ जो कोई पुरुष तुलसीके काष्ठकी बनी
होई मालाकों धारण कर्ताहै तिसके देहमें को
ई पाप नहि रहताहै यह बात मैने सत्य कथन
कराहै ७९ जो कोई पुरुष तुलसीदल करकें मि
लित जलकों शिरकरकें धारण कर्ताहै सो श्री
गंगाजीके स्नान करणे पुण्यकों लभताहै
इसमें संशय नहिहै ७० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सं॰
ग्राम॰
१०२

302

पाद्मे राजसूयसमंपुण्यंपुष्पेपुष्पेऽश्वमेधजं
यः पुनस्तुलसीमालांकंठेऊर्ध्वांप्युद्धिषः
ललाटे दृश्यते यस्य तिलकं तुलसीमृदा न
सपापानिनश्यंति क्रियामाणानि नारद १९
गारुडे तुलसीमूलमृत्तिकां चांगे कृत्वा स्नाति
दिने दिने दशाश्वमेधावभृथे स्नानजं लभ
तेफलं २० स्कांदे तुलसीमृत्तिकालिप्तो यदि
प्राणान्परित्यजेत् यमोपिनो वीक्षितुं शक्तो युक्तं
कं पापशतैरपि २१ ॥

पद्मपुराणमें लिखाहैं राजसूयके समान पुण्य हो
ताहै और अश्वमेधफल प्राप्त होताहै एक २ पुष्प च
ढानेमें और जो पुरुष तुलसीकी मालाको भ
गवानजीके ऊपर चढाताहै तिसकी क्यावा
तकहणी १८ और जिस पुरुषने तुलसीके मू
लकी मृत्तिकाका तिलक लगायाहोवे हे नारद
तिसके क्रियामाण क्या रोजके रोज करीदे जो
पाप सो नष्ट होतेहैं १९ गरुडमें लिखाहै तुल
सीके मूलकी मृत्तिकाकों अंगोंमें लगायकर
जो प्रतिदिन स्नान कर्ताहै सो पुरुष दशअश्व
मेधमें स्नानकरणेके फलकों प्राप्त होताहै २०
और जो कोई तुलसीके मूलकी मृत्तिका करके
लिपायहुया प्राणोंकों त्याग करे तिसकों यमराज
भी देखनेकों समर्थ नहि होताहै चाहे सो सैक
डे पापों करभी युक्त होवे २१ ॥ ७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अधुना विष्णोर्निर्माल्यतुलसीमहात्म्यं सेति
हासं वर्णयामि पद्मपुराणे क्रियायोगसारे
जैमिनिं प्रति व्यासवाक्यं व्यास उवाच माहा
त्म्यं तुलसीधात्र्योः प्रोक्तमेतद्दशेषतः अत
ते कथयिष्यामि चेतिहासं पुरातनम् । जैमि
निरुवाच भूयएव महाभाग तुलस्याः पाप
नाशने अतिथेः पूजनस्यापि माहात्म्यं ब्रूहि
विस्तरात् २ सूत उवाच ततो व्यासो महाते
जास्तुलस्या द्विजसत्तमाः माहात्म्यं वक्तुमा
रेभे शृण्वतां पापनाशनम् ३

अब विष्णुजी की निर्माल्यरूपा क्या ऊपर सें उतारी होई
तुलसी के धारण का मात्म्य इतिहास के सहित वर्णन क
तीहूं पद्मपुराण के क्रियायोगसार में जैमिनि के प्रति
व्यासदेवजी का कथन है व्यासदेवजी कथन करते भ
ये हैं जैमिनि तुलसी का और धात्री आमली का माहा
त्म्य अच्छीतरां सें वर्णन करा है जिससें कुछ शेष नहि
रहा है अब तेरे कों इसमें इतिहास कथन कर्ताहूं १
जैमिनि ऋषि व्यासदेवजी का वचन सुनके कहने लगे
हे महाभाग अब पापों के नष्ट करणे वाला तुलसी
का माहात्म्य और अतिथियों के पूजन का माहात्म्य वि
स्तार सें मेरे प्रति कथन करा है २ सूतजी कथन कर
ते हैं हे शौनकादिक ऋषियो वडे तेजवाले व्यासदेवजी
श्रवण करणे वालयों के पाप नष्ट करणे वाला तु
लसी का माहात्म्य कहने कों आरंभ करते भये ३॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२॰३

303

व्यास उवाच इयं साक्षान्महालक्ष्मीस्तुलसी
भगवत्प्रिया तस्माद्यमां नपश्यंति हृदस्ताने
नसूरयः ४ सादरं तुलसीं मर्त्यो यथैव भुवि
सेवते तथैव सेंद्रा विबुधाः सेवंते तां सुरार
ये ५ परं ब्रह्मस्वरूपेयं तुलसी यत्र तिष्ठति त
त्रैव कुशलं सर्वं सत्यं प्रोच्यते मया ६ प्राणो
ज्झिमृत्युकालेयस्तोये पातकवानपि तुल
सीपत्रगलितं स याति हरिसंनिधिं ७ तुल
सीमृत्तिकापुंड्रं मृत्युकाले समुद्वहेत् समु
क्तः सर्वपापौघैः पुरं गच्छति वैष्णवः ८॥

व्यासदेवजी कथन करने लगे हे ऋषे यह तुलसी सा
क्षात् भगवान् विष्णुजी की प्यारी महालक्ष्मी का रूप
है उसकारणसें बुद्धिमान् लोक इसकोंहस्तानक
कें नहि देखे की पहहस्ते है ४ और जिस प्रकार पृथि
वीलोक में आदरपूर्वक तुलसी कों पूजते है इसी
प्रकार स्वर्गलोक में इंद्रादिक देवता प्यारी जो वि
ष्णु भगवान तिनकी प्रसन्नता की वास्ते तुलसी कों
सेवते हैं तहां मेंही निश्चय करकें सम्पूर्ण कल्याण
स्थित है यह बात मैने कही है ६ जो कोई पापी पुरुष
भी मरण के समय तुलसी के पत्रों सें डिगे हुए ज
ल कों प्राप्त होता हैं सो हरि की समीपता कों प्राप्त हो
ता है ७ जो पुरुष मरण के समय तुलसी के मूल
की मृत्तिका का त्रिपुंड्र तिलक धारण करता है
सो सम्पूर्ण पापों सें मुक्त होय आद्या भगवानजी
के वैकुंठपुर में जाता हैं ८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यस्यास्यान्तुलसीपत्रं मृते शिरसि कर्णयोः
मृत्युकाले द्विजश्रेष्ठ न तस्य स्वामी न भास्करिः
पवित्रनामा समानिर्बभूव परमार्थवित्
बभूव ब्राह्मणी तस्य वङ्कुला नामधारिणी ।
सद्वंशप्रभवा साध्वी पतिसेवापरायणा ॥ अ
नाथस्सुमतिर्नाम तत्रैकोस्ति द्विजोत्तमः ॥
सख्यं तेन समं हार्देन कृतं च हरिसेविना व
योनयत्सुमतिमान्कथालापेन सत्तम ८

मरणेकेसमय जिसपुरुषके मस्तमेंवाशि
रविषें अथवा कानोंमेंतुलसीपत्रस्थितहोवे
तिसकास्वामीयम नहिंहोताहै ६ परमारथ
केजाननेवालाश्रेष्टबुद्धिकरयुक्त पवित्रनामा
एकब्राह्मणहोताभया तिसकी स्त्री वङ्कुला
नाम वालीहोतीभई ७ सोवङ्कुला अच्छेश्रेष्ट
वंशमें उत्पन्नहोई पतिव्रतापतिकी सेवा क
रणेंमें तत्परहोती भई उसी नगरमें और
एकसुमतिनाम करकें अनाथ ब्राह्मण नि
वासकर्ताथा ८ उसकेसाथसुमतिका स
त्वभावथा सोदोनोंहरिकी सेवाकर्तेथे औ
रहैसतमनआपसमें परमेस्वरसंबंधिनीयांक
थांके कहने सुनाने करकें कालसमयको
व्यतीत कर्ते भये १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३.४

उपविष्टः पवित्रोसौ स्नेहाद्देववरासने अथा-
न्तरे महातेजाः लोमशो नाम सद्द्विजः १२
कथयन्तौ कथाश्चित्राः समागम्य ददर्श तौ
अथ तं लोमशं विप्रं विभाव्योत्थाय पीठतः
पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैः पूजयामसतुस्तौ
समीतौ लोमशस्ताभ्यां नारायणपरायणाः
उवास ब्राह्मणश्रेष्ठ आसने कीर्तयन्हरिं आ-
सनस्थं महात्मानं लोमशं तौ कृताञ्जली
पवित्रनामा सुमतिर्भक्त्या प्राहतुर्नतौ १६

304

पह जो मसा पवित्रनामाख्या सो स्नेह पूर्वक सुंदर आसनपर बैठा हुया इतनेमें बडे तेजवाला लोमश नामा ब्राह्मण आयगया १२ सो क्या देखता है की दोनो आपसमें विचित्र कथा करे या करते थे तिनकों देखता भया इतनेमें सो भी लोमशजीकों देखतेही आसनके ऊपरसे उठ खडे होए १४ और पाद्य अर्घ्य आचमन इनसे तिनका पूजन करते भये तद प्रसन्नमनवाले लोमशजी नारायणजीके भजनमें तत्पर का करते भये १५ हे ब्राह्मणश्रेष्ठ तिनों करके दिये होए आसनके ऊपर नारायणजीके नामोंकों उच्चारण करते २ बैठजाते भये तद आसनपर बैठे होए महात्मा लोमशजीकों पवित्रनाम सुमति यह दोनो बडे श्रेष्ठ भक्ति करके हाथ जोड बिनती कर कहते भये १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पवित्रसुमतीऊचतुः भगवन्सर्वधर्मज्ञत्वत्पा
दकमलैर्नृभिः सद्भिर्गृहीतैराश्रमोयंकृतो
भृशंनूनमावयोः १७ कृतानियानिपापानिअ
ज्ञानान्मोहतःपुरा तानिसर्वाणिनष्टानित्व
त्पादयुगदर्शनात् १८ भवान्नारायणःसाक्षा
त्पूजनेयोमरैरपि सम्यक्तेपूजनंकर्तुंकिमा
वांमानवोत्तमौ १९ अतिथेयाकृतातपूजान
वेयंनिजशक्तितः अनयाभवप्रीतःक्षमस्व
दोषमावयोः २० ॥

पवित्रसुमती नामा दोनोंब्राह्मण कहनेलगेहे
भगवन् सभनोंनरोंके धर्मजाननेवाले सत्पुरुषों
करकें ग्रहण करणे योग्य जो यह तुमारे चरण
कमल तिनों करकें यह हमारा दोनोंका आश्रम
पवित्रहोताभया १७ और हमने अज्ञानसें पीछे २
किये जोनसें पायहैं सोसारेही आज तुमारेच-
रणयुगलके दर्शन करकें नष्ट होगयेहैं १८
तैसी देवतयों करकें भी पूजाके योग्य साक्षात्
नारायणका स्वरूपहो अछीतरांसें तुमारापू-
जन करणेकों हम मनुष्यजन्मा कैसेसम
र्थहोवेंगे १९ और अपनीसामर्थके अनुसा
रसें यह तुमारी आतिथेय जोपूजाथीसोक
रीहै इतनी करकेंही आप प्रसन्न होयकें ह
मारे अपराध क्षमा करो २० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सां॰
ग्राम॰
३०५

305

इत्थं क्षान्तौ महात्मानौ तत्र सन्तोषपद्मकौ। नित्यं च तत्र हिंसा श्रेष्ठव्रतयशौ गृहस्थधर्मिणौ २१ तयोर्भक्त्या सुसंप्रीतो लोमशो विदुषां वरः। तौ प्राह मधुरैर्वाक्यैः जैमिने लोकपूजितः २२

लोमश उवाच अनया युवयोर्भक्त्या सुप्रीतोऽस्मि महाशयौ युवाभ्यां वरयुग्माभ्यां विजवंशः प्रतिष्ठितः २३ विनयाल्लभते धर्मं विनयाल्लभते यशः विनयाल्लभते वित्तं विनयात्किं न लभ्यते २४ ॥

इस तरां सो दोनों महात्मा कथन करकें तिसके पादों में नम्र मन वाले होए हुए पड जाते भए कैसे सो दोनों हैं आपस में स्निग्ध प्रीतिवाले मित्र और गृहस्थधर्मी २१ तिनके भक्ति करकें प्रसन्न होए हुए विद्वानों में श्रेष्ठ और लोकों में पूजित लोमशजी हे जैमिनि मधुर वाक्यों करकें तिनकों कहने भये २२ लोमशजी कहने लगे हे महाशयो बडे उदार मन वालेयो तुमारे इतनी ही भक्ति सेवा करकें प्रसन्न हो क्योंकि बडे श्रेष्ठ तुम दो ने अपना वंश प्रतिष्ठा वाला करा है २३ किसतरां जो विनय नम्रता करयुक्त हैं सो विनयासें धर्म कों लभता है और विनय सें यश कों लभता है और विनय सें धन कों लभता है और ऐसी विशेष कौन सी वस्तु है जो विनय नम्रता सें नहिं प्राप्त होता है विनय सें सभी कछु लभता है २४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गुर्वां विनायिनांश्रेष्ठो कुलजो धर्मतत्परो श्रा
ध्यायिनोस्मिन्स्तरां युवाभ्यां विनयोक्तिभिः २५
साक्षात्कुल शिवो विश्वरतिथिः प्रोच्यते बुधैः त
स्मिन्नेतावती भक्तिर्युवयोरस्तु मंगलम् २६
आराधितोस्मिहं समागतिथिर्भूरिभोजनैः
व्यास उवाच इति ब्रुवति वैतस्मिन् लोमशे वि
दुषां वरे २७ कालहस्तात्कृष्टश्चाखुस्तत्रोत
स्थौ निजालयात् तमुत्थितं विलाद्दृष्ट्वा मू
षकं क्रोधविकलः २८ ॥

तुम दोनों विनय की शिक्षा करके गुरु पुरुषों के म
ध्य में श्रेष्ठ हो और अच्छे कुल में जन्म होइ धर्म में तत्प
र हो तुमा ने मेरे कों विनय की उक्तियां करके अ
त्यंत प्रसन्न मन वाला किया है २५ बुद्धिमान् पुरु
षों ने अतिथि जो है सो साक्षात् ब्रह्मा शिवजी का
रूप कहा है फिर तिस अतिथि में तुमारी इतनी
भक्ति है इससें तुमारे कों मंगल होवै २६ मे जो अ
तिथि हां सो तुम ने बहुत सुंदर अनेक तरों के भोज
नों करके सेवित करा हों इतनी कथा सुनाय फिर
व्यासदेव जी बोले इस प्रकार विद्वानों में श्रेष्ठ ति
स लोमश ऋषि के कथन करते होए २७ इतने में
काल ने हाथ करके खैंचा हुया एक अपने घर में
बाहर चूहा निकालना भया तद बिल का छिद्र
के बीच से निकले होए चूहे कों देखकर क्रो-
ध करके आकुल होया होया २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२॰५

पवित्रस्तरसोतस्योवरत्निनिमज्जन्मर्मज्ञः अपपा
पाशयोदृष्टो मूषको निषमाश्रमम् २९ यतो
मदीयं दंतौ चैव गेहस्थं चकंथनि सर्वेषामेव
धर्माणां दया श्रेष्ठा प्रकीर्तिता ३० सा च सर्वेषु
कर्त्तव्या न च दुष्टेषु जंतुषु इत्युक्त्वा स द्विजः
कोन्मूषकं नेहतैनसे ३१ नाराचेनानितीव
रोनग्रामकालं जग्रानह अथ शोणितधा
राभिः स्नावितांगः स मूषकः पपात भूमौ वि
घेषं व्यथया गतचेतनः ३२ ॥

पवित्रनामा ब्राह्मण शीघ्र ऐसे वारंवार कथन करता
हुआ उठ खडा भया क्या कहता है पहपापाशयदृष्ट
हुए हो वारंवार मेरे इस आश्रम को २९ दंतोंके स
महूह करके घरके दृष्योंकों काटता है लिखा है सभ
नों धर्मोंमें दयाधर्म बडा श्रेष्ट है ३० सो दया सभ
तरांके जीवोंमे करणी योग्य है पर दुष्ट जीवोंमें
न हि करणी ऐसा कहकर सो द्विज कराहै अपरा
ध जिसने तिस चूहे को क्रोधसें बडे तीक्ष्ण बाणक
के प्रासहोएआ मरण समय जिसका तिसको
मारदेता भया ३१ इससे उपरंत सो मूषक बाण
करके विद्धा हुया रुधिर धारां करकें युक्त हो गए है
अंग जिसके ऐसा सो व्यथा पीडा कर गत चेत
न क्या हुरहो गई चेतना ना क्या प्राण जिसकें
सो मरके पृथिवीपर डिग पडता भया ३२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आखौ निपतिते तस्मिन्ननादत्सुमतिर्द्विजः हा
हाकारं ततः कृत्वा समुत्तस्थौ जवेन सः ३३ त
तः कर्णात्समानीय तुलसीपत्रमुत्तमम्
तस्याखोर्वदने शीर्षे कर्णयोश्च प्रदत्तवान्
मातस्तुलसि गोविंदहृदयानंदकारिणि
अस्याखोः कृतपापस्य कुरु त्वं गतिमुत्तमां ३५
इत्युक्त्वा स द्विजः श्रेष्ठः सर्वलोकोपकारकः
हरे नारायणानंतेत्युच्चैरकरोद्ध्वनिम्

तिस चूहे के पृथिवी पर गिरे होए सुमति नामा
ब्राह्मण हाहाकार करके शीघ्र बडे वेग सें उठख
ड़ा होता भया ३३ तिस सें अनंतर अपने कान सें
उत्तम तुलसी का पत्र लेकर तिस चूहे के मुख
शिर और कानों में देता भया ३४ इतने स्थानों
में देकर पीछे सें प्रार्थना करणे लगा हे मातः तु
लसि भगवानजी के हृदय कों आनंद करणे
वालि पापों के कटने वाले इस चूहे की तूं उ
त्तम गति कर ३५ इस प्रकार सो सारे लोकों प
र उपकार करणे वाला द्विजों में श्रेष्ठ सुमति
हे हरे हे नारायण हे अनंत ऐसे बडे ऊंचे
स्वर सें शब्द करता भया ३६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
२७१

तुलसीपत्रसंस्पर्शान्मूषकोगतकल्मषः श्रवणा
द्विष्णुनाम्नश्चमुक्तोभूद्भवबंधनात् ३७ ततोहू
तामहाविष्णोः सर्वलक्षणसंयुताः आजग्मुःस
र्वतः शीघ्रंनेतुंतंगतकल्मषम् ३८ ततोरथंस
मारुह्यविष्णुदूतगणैर्वृतः जगामपरमंस्था
नंमूषकोद्विजसत्तम ३९ युगकोटिसहस्राणि
स्थित्वानारायणालये ज्ञानमासाद्यतत्रैवमोक्ष
मार्गंजगाम ४० व्यासउवाच महात्म्यंतुलसी॰
देव्याः कथितंतेद्विजोत्तम इदानींशृणुकिंश्रो
महाभागवमिच्छसि ४१ इतिविष्णुनिर्माल्यतु॰
लसीमहिमासमाप्तम् ॥

तुलसीपत्रकेस्पर्शकरणेसेंदूरहोगयपापजिसकेऐ
सा मूषक औरविष्णुकेनामकेंश्रवणकरणेमें संसा
रके बंधनों सेंमुक्तहोजाताभया ३७ तदसारेलक्ष
णोंकरकेंयुक्तविष्णुकेदूतगतकल्मषक्यानिष्पापी
मूषककेल्याउनेवास्ते शीघ्र आजातेभये ३८ तिससें
उपरंतविष्णुकेदूतगणोंकरकें परिवारियाहुयामू
षारथकेऊपरवैठकर हेद्विजसत्तमपरमस्थान
कों चलाजाताभया ३९ तहांनारायणजीकेचर
युगोंकेहजारांक्रोडोंवर्षस्थितहोकरफिरउसी
लोकमेंज्ञानकोंप्राप्तहोकर मोक्षकोंप्राप्तहोजा
ताभया ४० व्यासदेवजीकथनकरतेहैं हेद्विजोत्त
मतुलसीदेवीकामाहात्म्यकथनकराहै हेम
हाभागअवक्याश्रवणकरणेकीइच्छाकरतेहो ४१
पहविष्णुभगवानजीकेनिर्माल्यतुलसीकामाहात्म्य
कथनकराहै ॥

अथ सच्छूद्रैरपि ब्राह्मणाद्वारा शालग्रामशिलार्चनं कर्त्तव्यं पद्मपुराणे पुराणसंग्रहे च दीक्षायुक्तैस्तथा शूद्रैर्मद्यमांसविवर्जितैः कर्त्तव्यं ब्राह्मणाद्वारा शालग्रामशिलार्चनम् ॥ इत्येवं प्रकारेण ब्राह्मणादिचतुर्वर्णैरन्यब्राह्मणाद्वारा शिलार्चनं कार्यम ॥ ९ ॥

अब श्रेष्ठ शूद्रोंने भी और ब्राह्मणके द्वारा शालग्रामकी शिलाका पूजन करणा योग्य है यह वाक्य पद्मपुराणमे पुराणसंग्रहमें लिखा है क्या कि दीक्षा मंत्र करके युक्त जौनसें सत्शूद्र और जौनसे मद्य मांस नहि खाते हैं तिनोंशूद्रोंने ब्राह्मणके द्वारा शालग्रामशिलाका पूजन करणा योग्य है ॥ इस तरांके प्रकार करकें ब्राह्मणादि चार वर्णों नें ब्राह्मणके द्वारा पूजन करणा योग्य है ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१०८

अथ प्रसंगाद्विष्णुमंदिरे प्रातरुत्थाय संमार्जन
करणमाहात्म्यमाह नारसिंहपुराणे यस्तु सं-
मार्जनं कृत्वा कृष्णवेश्म निलेपयेत् सपापकल
हं देहं स त्यक्त्वा याति परं पदं १ पाद्मे क्रियायोगसा
रे नरो विष्ण्वालये तस्मिन्नुषयमागत्य मार्जनं
कुर्याच्छनैः शनैः प्राज्ञः संमार्जन्या पवित्रया २
यावंतो रेणवस्तस्माद्गच्छंति निलयाद्बहिः
तावन्मन्वंतरस्थानं तिष्ठेद्विष्णुगृहे जनः ३ यस्तु
संमार्जनं कुर्याद्ब्रह्महत्यापि हरेर्गृहे सोपि या
ति परं धाम किमन्यैर्बहुभाषितैः ४ ॥

अव प्रसंगसे विष्णुभगवानजीके मंदिरमें प्रातः
काल उठकर्के जो संमार्जन क्या सोनना है तिसका
माहात्म्य कहते हैं नरसिंहपुराणमें लिखा है जो
पुरुष श्रीकृष्णजीके मंदिरमें सोन दे कर्के पी-
छेसें लेपन कर्ता हैं क्या चौका देता है सो पापोंके
सहित कलह देहवाले देहको त्याग कर परमप
दको जाता है १ पाद्मके क्रियायोगसारमें लिखा है
जिस विष्णुके मंदिरमें धीरे २ स्थित होके पवित्र मा
र्जनी वुहारीके साथ शोधन करे या क्या मंदिर
कों अच्छी तरांसे सोने २ उसका परूफल है जित
ने कभलि के रेणु सोनने कर्के बाहर निकलें हैं उ
तने से केरे मन्वंतर विष्णुलोकमें पुरुष निवास क
रते हैं ३ जो नसा कोई ब्रह्महत्यावाला भी हरिके मं
दिरमें संमार्जन करे न दसो भी हरिके लोक विष्णुमंदि
रमें जाता है गेर इसमें वहुत क्या कहना है ४

308

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संमार्जने विस्नुगृहे जनः कृत्वोपलेपने
लभते परमं धाम पूजायाः फलवत्प्रभोः ५
बृहन्नारदीये देवतायतने राजन्कृत्वा सं
मार्जनं नरः यत्फलं समवाप्नोति तन्मे नि
गदतः शृणु ः ६ यावन्तः पांसुकणिकाः
सम्यक्संमार्जितान्नृप तावद्युगसहस्रा
णि विस्नुलोके महीयते ७ बृहन्नारदीये
सूतशौनकसंवादे हरिमंदिरे नरे संमार्ज
नमाहात्म्ये इतिहासमाह ॥ ~ ॥

पुरुषजो है सो विस्नुके घरमें संमार्जन क्या सो न
करकें और लेपन देकरकें पूजाके फलकी न्याई प्र
भुके परमधामको प्राप्त होता है अर्थात् जिस ग
तिको पूजा करणेवाला प्राप्त होता है उसी गति
को सोहनने और चौका देनेवाला प्राप्त होता है ५
बृहन्नारदीय पुराणमें लिखा है हे राजन पुरुष जो है
सो देवताके मंदिरमें संमार्जन करकें क्या सो नक
के जिस फलको प्राप्त होता है सो फल कथन क
रै हौए मेरेसें श्रवण कर ६ हे राजन पुरुषने सों
ननेकरकें जितनीयां कस्मलिकियां कणीकां
सोत्तियो है उतनेही हजार युग विस्नुलोकमें महि
माको प्राप्त होता है ७ बृहन्नारदीय पुराणमें सूत
शौनकजीके संवाद करकें हरिकी मंदिरमें संमार्ज
न करणेके क्या सोहनने के महात्म्यमें इतिहास क्या
प्राचीन एक कथा कहते हैं ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३.१

309

सूतउवाच भूयः शृणुत विप्रेंद्रा माहात्म्यं परमे
ष्ठिनः सर्वपापहरं पुण्यं नारदेन प्रभाषितम् १
अहो हरिकथा लोके पापघ्नी पुण्यदायिनी
हरिभक्तिरसास्वादमुदितायेनरोत्तमा २ अहो
भाग्यमहो भाग्यं विष्णुभक्तिरतात्मनां तेषां
मुक्तिकरस्थैव योगिनामपि दुर्लभा ३ अत्रै
वोदाहरंतीममितिहासं पुरातनं शृण्वतां व-
दतां चैव सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ॥

सूतजी कथन कर्तेभये हे विप्रेंद्राः अब परमेष्ठिके
माहात्म्य फिर मेरेसे सुनो कैसा है पापोंके नाश
करणेवाला और नारदजीने कथन कराहुया १
ऋषयः इस संसारमें नारायणजी की ऐसी कथा है
पापोंके नाश करणेवाली पुण्योंके देनेवाली है
जो नरोंमें श्रेष्ठ पुरुष हरिकी भक्तिरूपी रसके स्वाद
करके प्रसन्न हैं २ और विष्णुभगवानजी की भक्ति
में रत क्या मुक्त आत्मावालियों के बड़े भाग्य हैं
उनकी क्या बात है और योगिजनों की भी दुर्लभ जो
ऐसी मुक्ति है सो जिनके हाथपर स्थित है ३
इस बातमें प्राचीन इतिहास क्या कथा उदाहरण
देता हूं क्या कहता हूं जो कथा सुनने कहने
वालोंके सारे पाप नष्ट करणे वाली है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आसीत्पुरा महीपालः सोमवंशसमुद्भवः यज्ञ
ध्वज इति ख्यातो नारायणपरायणः १२ विष्णो
र्देवालये नित्यं संमार्जनपरायणः स कदा
चिन्महीपालो रेवातीरे मनोहरे १३ विचित्रक
लशोपेतं कृतवान्हरिमंदिरं स तत्र नृपशा
र्दूलः सदा संमार्जने रतः १४ कर्माण्यन्यानि
संत्यज्य विष्णोः प्रियतराणि वै हरिनामप
रो नित्यं हरिसंसक्तमानसः १५ ॥ ॥

सर्व एक समय चंद्रवंश में उत्पन्न हो एक यज्ञध्वज
नामक कर्के नारायणजी में युक्त एक राजा
होता भया १२ सो विष्णुदेवता के मंदिर में मार्ज
न कर्ता था क्या सो तत्पर था फिर एक किसी समय
सो राजा यज्ञध्वज मनोहर रेवा नदी के किनारे
१३ पर बड़े विचित्र कलशेयों कर युक्त हरी
का मंदिर बनावता भया तिस मंद्दिर में आ
प सो राजा सर्वदा काल समार्जन कर्ता था क्या
आप तिस मंदिर कों चारो ओर से सो तत्पर था
१४ और विष्णु के अत्यंत प्यारे जौन से कर्म
हैं तिन कों त्याग कर हरी में लग गया है
मन जिसका एसा सो नारायणजी का ना
म जपने में तत्पर होता भया १५ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिप्रणाममनिरतो हरिभक्तजनप्रियः वीतिहो-
त्र इति ख्यातस्त्वासीत्तस्य पुरोहितः १६ यज्ञध्वज
स्य चरितं दृष्ट्वा विस्मयमागतः कदाचिदुपवि
ष्टं तं राजानं विष्णुतत्परं अपृच्छद्वीतिहोत्र-
सो वेदवेदांगपारगः १७ वीतिहोत्र उवाच
राजन्परमधर्मज्ञ हरिभक्तिपरायणा वि-
ष्णुभक्तिमतां पुंसां श्रेष्ठोसि भरतर्षभ १८

310

और हरिकों प्रणाम करणीं हरिके भक्ति
लोक जिसकों प्यारे ऐसा वीतिहोत्र नामक ति
सका पुरोहित होताभया १६ सो यज्ञध्वज
नामक राजे अपने यजमानका चरित्र क्या
वर्णन देखकर बडे विस्मयकों प्राप्त होए एका
एक समय विष्णुभगवानकी पूजामें त-
त्पर होए हूए राजाको वेद वेदांगशास्त्रके
पार प्राप्ति कोंजाणने वाला वीतिहोत्र पू-
छताभया १७ वीतिहोत्र राजाकों कहने ल
गा हे राजन परमधर्मके जाणनेवाले औ
र भगवानजीकी भक्तिमें तत्पर मैने जाना
है कि विष्णुकी भक्तिकरणे वाले पुरुषोंमें
हे भरतर्षभ तूं बडा श्रेष्ठ है १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संमार्जनपरो नित्यं दीपदानपरः सदा त्वमेव
हे महाभाग तया किं विदितं फलं १९ संपाद
ने च वर्तीनां तैलसंपादने तथा उद्युक्तोसि
महाभाग सदा संमार्जने रतः २० कर्माण्यमा
पि वीराणि विष्णोः प्रियतराणि वै तथापि
त्वं महाभाग स्वेन योषित्तयोद्यतः २१ सर्वास
नाम हन्मुख्यं जनेष्वाविदितं त्वया तद्ब्रूहि
मे गुह्यमपि प्रीतिर्मयि न वास्ति चेत् पुरोधसे
वमुक्तस्तु महसन्पद्मजात्मज विनयावन
तो भूत्वा प्रोवाचेदं कृताञ्जलिः २२ ॥

हे महाभाग त्वं जो सर्वदा काल मंदिर कों सोजता है
और दीपदान कर्ता हैं नित्यप्रति मेरे कों कथन क
रते है इसमें क्या फल जानेया हुया है १९ और तू
जो वर्तियां वनावता रहता हैं तेल संपादान क
र्ता है क्या इ पर उदर से इकट्ठा कर्ता है और सदा व
हारी फिरता हैं इसमें क्या फल है मेरे को भी क
हो २० कर्मों की विष्णु के प्यारे और बहुत तरें के का
म तैने करे हैं तद भी तूं हे महाभाग इनों का र
मों मे सदा उद्यत रहता है यह क्या कारण है २१
हे जनेश लोकों के स्वामी सर्वात्मना क्या सभ नो
तरों से इनों कामों मे बहुत पुण्य जाने आ है तद जे
कर इसमें गुह्य भी है जे कर तेरा मेरे मे प्रीति है तद मे
रे कों कहो २२ हे पद्मजात्मज ब्रह्मा के पुत्र हे ना
रद सो राजा पुरोहित ने ऐसे पूछा हुया हसता २
हाथ जोड विनती कर शिर झुकाय के कहता भया २ ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यज्ञध्वज उवाच शृणुष्व विप्रशार्दूल यन्मया चरितं पुरा जातिस्मरत्वाच्छीर्णं किं न ते विस्मयप्रदं २४ आसीत्पुराकृतयुगे ब्राह्मणो विधेतरः रैवतो नाम विप्रेन्द्रो वेदवेदांगपारगः २५ अयाज्ययाजकश्चैव सदैवग्रामयाजकः पिशुनो निष्ठुरश्चैव अपण्यानां च विक्रयी २६ निषिद्धकर्माचरणात् परित्यक्तः स्वबांधवैः दरिद्रो दुःखितश्चैव जीर्णांगो व्याधितोऽभवत् २७

यज्ञध्वज कथन करता भया हे विप्रशार्दूल जो कुछ मैंने पूर्व में करा था है सो श्रवण कर मेरे को पूर्व जन्म स्मरण है इससे मैं कहता हूं श्रवण करणेवाले को आश्चर्य देनेवाला जो सुनना है सो अचंभा होता है २४ हे ब्राह्मन् सतयुग में विप्र सत्तर के राज्य में सत्य युग के बीच वेद वेदांगों के जानने वाला रैवत ब्राह्मण होता भया २५ के साथ अयाज्य याजक और ग्रामयाजक बड़ा दुष्ट कठोर कहने वाला नहि वेचने वाली यों वस्तुयों को वेचता था २६ निषिद्ध कर्मों के करणे वाला था इससे बांधवों ने त्याग दिया था और बड़ा दरिद्री अत्यंत दुःखित जीर्ण अंगो वाला बड़ा हद्द रोगों कर के बहुत पीड़ित होता भया २७ ॥ ८ ॥

स कदाचिद्धनार्थं तु पृथिवीं पर्यटन्द्विजः म
मार नर्मदातीरे कासश्वासप्रपीडितः २८ त
स्मिन्मृतेन तस्य भार्या नाम्ना वंधुमती तदा
कामाचारपराभूत्वा परित्यक्ता स्वबंधुभिः २ ६
न स्यां जातोस्मि चांडालाद्दंडकेतुरिति श्रुतः
महापापरतो नित्यं ब्रह्मद्वेषरतस्तथा ३
परदारपरद्रव्यलोलुपो जंतुहिंसकः गाव
श्च विप्रा बहवो निहता मृगपत्रिणः ३१

सो ब्राह्मण एक समय धन के निमित्त पृथिवी में
फिरता २ हुया कासश्वासरोगकर पीडित होया
हुया नर्मदा नदी के किनारे पर मृत हो जाता भ
या २८ तिसके मरण पपीछे उसकी जो वंधुमा-
ती नाम करके स्त्री थी सो कामाचार मे व्य
भिचार करणेमें तत्पर होती भई तद वांधव जो
उसके थे उनोंने तिसको घरसें निकाल दिया
तो निश्शंक होके व्यभिचार कर्त्ती भई २९ उस ब्रा
ह्मण की स्त्री मैं चांडाल के गर्भसें दंडकेतु नाम
करके प्रसिद्ध मे जन्मता भया सो कैसा होता भया
महापाप करणेमें नित्य तत्पर रहना ब्राह्मणों
के साथ द्वेष करणा ३० और पराई स्त्रीयां वाला-
त्कारसें भोगनीयां पराया धन हर लेना इतने का
मोंमें तत्पर और वन के जीव मरणे ब्राह्मण गो
वां मृग पंखि अनेक मैनें मार दिये ३१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेरुतुल्यसुवर्णानिवहून्यपहृतानिच मद्य
पानरतोनित्यंनिंदकः पिशुनस्तथा ३२ एवं
पापकृतोनित्यंवहुशोमार्गरोधकृत् पशुप
क्षिमृगादीनांजन्तूनामंतकोपमः ३३ सक
दाचित्कामतप्तोरत्नकामः परस्त्रियै स्रग्वं
स्त्रादिभिर्विभ्रमैर्मंदिरंग्रामवाह्निशि ३४
तत्रारामोपभोगार्थंशायितंतेनकामिना
स्ववस्त्रप्रांततोवस्त्रंक्रियदेशःसमार्जितः ३५

और मैनेसुमेरुपर्वतकेतुल्यसुवर्णचुराए औरव
हुत द्रव्यचुराए जिनकीऊछगिनतीनहिंहैनि
त्यप्रतिमद्यपानकरणा लोकोंकीनिंदाकरणी
चुगलीयांकरणीयां ३२ इसप्रकारकेनित्यं
प्रतिवहुतपापकरे औरमार्गोंकोरोक २ क
रलोकोंकेधन लूटेऔर पशुपक्षिमृगादि
जीवोंकोंतोमैंमृत्युकेतुल्यथा ३३ सोएकस
मय कामदेवकरकेपीडितहोएथा द्रुया य
रई स्त्रीकेसाथक्रीडाकरणेकीइच्छावालास्था
नदेखताफिरताथा तद एनकेसमयएकग्रा
मामंदिर विसुकाथा जिसमेंकोईपूजानहि
कर्ताथा नदीपजगाताथा सोमिलगया उस
मेंचलेगए ३४ तहांस्त्रीकेभोगकरणेकेलिये उ
सकामिनेअपने वस्त्रकेसाथथोडीजगासोत
करशयनकेनिमित्त विछावने करे ३५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यावन्त्यः पांसुकणिकास्तेन संमार्जिता गृह ।
तावज्जन्मकृतं पापं तदेव क्षयमागतम् ॥ २९ ॥
प्रदीपः स्थापितस्तत्र हरनार्थं द्विजोत्तम ते
नापि मम तद्दुष्कर्म निःशेषं क्षयमागतम् ॥ ३० ॥
एवं स्थितो विष्णुगृहे रमाभोगेच्छया द्विज त
द्दीपकं दृष्ट्वा आयाताः पुरपालकाः ॥ ३१ ॥
चौरोयं परस्त्रीयमिच्छ कामाम पादयन् ख
ड्गेन शतधारेण शिरः छित्वा ते गताः ॥ ३२ ॥

जितने धूलि के किणके उसने उहां से मार्जित करे
थ्यासो ते उतने ही जन्मों के करे होए उनके पाप
उसी समय नष्ट होजाते भये २९ हे द्विजोत्तम
क्रोणों के निमित्त तिसने उस मंदिर में दीप भी
जगाया तदनि सदीपदान के प्रभाव करके वा
की के पाप भी सारे नाश कों प्राप्त होजाते भये ३०
हे द्विज इस प्रकार परस्त्री के साथ भोग करने
की इच्छा वाला विष्णु के मंदिर में स्थित होता भ
या तब उस दीपक कों जगते होए देख कर उ
स घर के रखवाले उहां आए जाते भये ३१
सो आन कर कहने लगे यह चोर है यह और कि
सीका हरता है ऐसे कथन करती ता धारा वाले
खड्ग के साथ मेरा शिर काट आछी तरां
मार करके सो चले गए ३२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भक्त्याकृतनवर्त्तां पुंसां किं भवेदिति वेद्मि न तस्मात् संमार्जने नित्यं दीपदाने च सत्तम ६७ यतिश्चेप रयाभक्त्या स्वजेज्जातिस्मरो यतः यः स्वजयेज्ज गन्नाथमेकाकी विगतस्पृहः ६८ सर्वपापवि निर्मुक्तः प्रयांति परमं पदम् अवशेनापि यत् कर्म कृतं मे मां शयमागतः ६९ भक्तिमद्भिः प्र शांतैश्च किं पुनः सम्यगर्चनात् इति भूपवचः श्रुत्वा वीतिहोत्रो द्विजोत्तमः असंततविमापन्नो हरिस्वजापरो भवत् ७० ॥

सो मार कर मेरे कों च ले गये पीछे से विस के गणस मस्त सुख भोगों कर के युक्त विमानस्थ आए उस के ऊप र मेरे कों च ढाय कर तिस स्त्री के साथ ही विस लोक में चले आए ७० हे द्विजोत्तम तिस लोक में अग्र के सहित ऊंचे क सो वर्ष संअधिक ब्रह्मा के कल्पन का स्थित हो कर फिर उतना ही चिर ब्रह्मा के साथ ब्रह्मलोक में निवास कर्त्ता भया ७१ फिर क्रम से स्वर्ग में देवतेयों के भोग २ कर भूमिभाग में आय प्राप्त भया हां और तिस पुण्य के प्रभाव क कै यादवों के वंश में उत्पन्न भया हां ७२ और तिस पुण्य के प्रभाव कर कै सारियां संपदां और निष्कं टक राज्य भोग्य प्राप्त कर्त्ता हूं हे ब्रह्मन् विना पुण्य के प्रभाव जाने मार्जन का और दीप का पद इतना फल पाया है अब जान कर सेवा कर्त्ता हूं न जाने किस फल कों प्राप्त होअंगा ७३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिव्यं विमानमारुह्य सर्वभोगसमन्वितं स्वय
म्पवत्तया सार्धं विष्णुलोकमुपागतः ५१ त
त्र स्थित्वा ब्रह्मकल्पशतं साग्रं द्विजोत्तम त
तश्च ब्राह्मणा सार्धं तावत्कालं च संस्थितः
ततश्च भूमिभागेषु देवभोगेषु वै क्रमात्
तेनैव पुण्यप्रभावेन यदूनां वंशसंभवः ५२
ते नैव भुज्यते सम्पत्तया राज्यमकंटकं भ्रम
कृत्वा तदा गार्ग्यमेव श्रेयः समाप्तवान् ५३

और जो कोई भक्ति करकें नारायणजीके मंदिरमें रो
लके २ चौका देते है और दीप जगाते है उनको खबर
नहि क्या फल होता होवेगा इस बात कों जान क
र हे सत्तम रोज मंदिरकों सोत्तताहूं और दीप ज
गाताहूं ५४ और परम भक्ति करकें यतन कर्ताहूं
जिसके प्रभावसें मैं जातिस्मर हूं क्या मेरेको पूर्व
जन्म याद है जो पुरुष विगतस्पृह होकर कामा
मनाकों त्यागकर एकाग्रचित्त लगायकर जग
न्नाथजीको पूजता है ५५ सो सारे पापों से निर्मुक्त
होकर परमपदकों जाता है अवश्य क्या विना जा
ने बूझे अपने कामभोग के निमित्त जिस कामकों
करें इतनी संपदाकों प्राप्त भया हूं जौन से कोई
भक्तिवाले शांतचित्त वेदविधिसें पूजन करते हैं उ
नकों खबर नहि क्या फल होता है ५६ यह वाक्य
राजाका श्रवण कर वीतिहोत्र ब्राह्मण प्रसंन
परमप्रसन्नताकों प्राप्त होकर नारायणजीकी भ
क्ति पूजा में तत्पर होजाता भया ५७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२१८

सूतउवाच तस्माच्छृणुत विप्रेंद्रा देवो नाराय·
णोऽव्ययः ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि पूजकानां वि
मुक्तिदः ४८ अनित्यानि शरीराणि विभवो नै·
व शाश्वतः नित्यं संनिहितो मृत्युः कर्तव्यो ध
र्मसंग्रहः ४९ अनित्या बांधवाः सर्वे संपदश्च न
चंचला शरीराणि ध्रुवो मृत्युस्तस्माद्भजत के
शवं ५० जन्मकोटिसहस्रेषु पुण्यं यैः समुपा·
र्जितं तेषां भक्तिर्भवेच्छुद्धा देवदेवे जनार्दने ५
दुर्लभं जाह्नवीस्नानं तथा चातिथिपूजनं अ
र्चयध्वं जगन्नाथं भूयो भूयो वदामि वः ५२

सूतजी कथन करते भये इस कारणसें हे शौनकादिक ऋषयो
तुमी श्रवण करो अविनाशी जो देव नारायणजी है
सो ज्ञान करकें विना जाने भी पूजे होय पूजा करणे वा
लेयों कों मुक्ति के देते है ४८ यह शरीर अनित्य है का न
हि रहने वाला और धन भी सर्वदा काल नहि है और
मृत्यु सभनों के पास रहता है इस बात कों जानकर ध
र्म को इकट्ठा करणा चाहिये ४९ और भाईबांधव भी
सदा नहि रहते किसी की संपदा जो है सो तो अत्यंत क
के चंचल है सो क्या और किसी के सदा रहती नही है
और शरीर का मरजाना निश्चय कर रक्खा है इस वा
स्ते केशवजी का भजन करी उस्से भला होवेगा ५०
जिनों ने हजारों क्रोडो जन्मोंमें पुण्य इकट्ठे करे होवें
तिन की भक्ति देवदेव जनार्दनजी में होती है ५१
संसार में गंगाजी का स्नान दुर्लभ है और अभ्याग
तों की पूजा उससें भी दुर्लभ है और वारंवार में
यही कहता हूं की जगन्नाथजी की पूजा करो ५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भगवतो मंदिरसंमार्जनमहिमानमाह भक्तमालायां वल्लभाचार्यपुत्रस्य विट्ठलः स्वामिनः सुताः सप्तसर्वे दिनास्तत्र सप्तस्थाननिवासिनः १ श्रीमद्गोकुलनाथस्य कथां वस्मि भक्तिदां महाभागवतः सोभूत्प्रसिद्धोऽद्यापि भूतले २ नाथद्वारेति विख्याता पुरी परमपावनी तत्र श्रीनाथनामानं पूजयामास सत्तमाः ३ तत्र श्रीनाथमूर्तिं तु मंदिराद्बाह्यतो जनाः ददृशुर्नच तत्रासीत्किमपि व्यवधानकं ४ ॥

अब भगवानजी के मंदिर में झाडू देने की महिमा कही है भक्तमाला में लिखा है वल्लभाचार्य का पुत्र जो विट्ठलस्वामि तिस के सात पुत्र पीछे कहे आप है सातों स्थानों में निवास कर्ते थे १ अब उन से श्रीमद्गोकुलनाथ की मनोहर कथा कथन कर्ता हूं जिस के सुनने से परमेश्वर में भक्ति होती है सो श्रीमद्गोकुलनाथ वडा परम भक्त होता भया सो आज तक भी प्रसिद्ध है २ नाथद्वारा नाम कर के परम पावनी नामा एक पुरी है तहां मे श्रेष्ठ भक्तजन पूजा में श्रीनाथ नामा ठाकुरजी की मूर्ति कों पूजते थे ३ तहां मंदिर के अंदर श्रीनाथजी की मूर्ति कों बाहर से लोक देखते थे उन के आगे कोई हटि रोकने वाला पडदा नही था ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३१५

315

अथैकस्तत्रचांडालः कांथाख्योमलशोधकः वा
स्याद्दर्शनोमूर्तिंप्रातश्शारात्रिकक्षणे ५ दृष्ट्वा
विमोहितोमूर्तिंप्रातरारात्रिकक्षणे नववा
लस्वयंकेनाप्याहूतोनिर्ययौनततः ६ परंतत्सं
स्मरन्मूर्तिंगृहकर्मचकारसः एवंप्रमहम्
न्यायप्रातरारात्रिकक्षणे ७ गत्वातत्रततोना
थमूर्तिंपश्यन्स्थितोभवत् एवंबहुदिनेयाते
दृष्टकेनापिसाधुना श्रीमज्झौउलनाथाख्य
स्वामिनेकथितंतततत् ८ ॥

उसनगरीमेंमलमूत्रशोधनेवाला कांथानामकपा
कहूडानिवासकर्त्ताथा सोसोतनेकेनिमित्तगया
हुयाप्रातःकालआर्तिकेसमयबाहरमें खडाहो
करमूर्तिकों देखताथा ५ तिसकोंदेखकरआ
र्तिकेसमयप्रातःकालउहांखडाहोजाताभया
फिरउहांसेताआपचलताभया किसीकाबुला
याहुया उहांसेजाताभया ६ औरजेकरउसने
घरमेंजानाभी तदभीउसमूर्तिकास्मरणकर्नें २
घरकाकामकरणाइसप्रकाररोजकेरोजउठ
करकेंप्रातःकालआर्तिकेसमयउहांजाकर
मूर्तिकेसामनेस्थितहोजाताभया ७ इसतरां
कर्नेंहोए तिसकोंवहुतदिनबीतगए तरएक
साधुनेतिसकोंदेखातद उसने श्रीमज्झोकल
नाथस्वामिकेतांई कहदिया हेगुरो मंदिरकें
बाहरसें खडा दर्शन कर्ताहै ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भित्तिर्दैयांतराणोचेद्वाञ्छस्येपितिरीततो दृष्टुः
क्रः सोपितं प्राह्कारयाशैवमाविरम् ६ ततो
भ्रष्टानुपाहूयनिर्ममेभित्तिमुन्नमां अथप्रा
तः समागत्यः चांडालोनैवदृष्टवान् ७ महा
शोकार्णवेमग्नो दुःखीभूमौनिविष्टवान् द
दर्शोत्थनरूत्थायनापश्यत्संस्थितंस्तनरा ॥
एवंसदुःखितोभूत्वा सत्काकर्माणिजंतुनः
कामीप्रियवियोगेन कृपणास्त्वधनक्षये ९

सोसातुन्नाकरकहनेलगा हेगुरोठाकुरजीकेसा
मनेकुछपडादाकरनाचाहिए नहितोचांडालसा
मनेसें देखनाहै इसप्रकारकथनकराहुया
गोकुलनाथउसकोंकहताभया आजहीएक
कंपकछाय देउ मनचिरलगाउ ६ इतनी
आज्ञाउसकीपानेहीभ्रत्यकोबुलायकरउन
मविनीआगेचछायदी इससेंदूसरेदिनउसें
नरंप्रातःकालआके देखनेलगा ताठाकु
रजीदृष्टिमेंनहिआये ७ तदवडीशोकरूपी
समुद्रमेडूबकरदुःखितमनवालाहोकेभूमि
परवैठजाताभया फिरउठकर ऊंचाहोकेदे
खनेलगा तदभीनहिदेखे फिरउसीतरांवैठग
या ॥ ऐसेसोदुःखितहोताभया जैसेप्रियस्त्री
केवियोगककें कामीपुरुषदुःखितहोताहै
औरधनकेनष्टहोपडेप कृपणदुःखितहोताहै
उसीतरांकाहोकेअपनाकर्मभीत्यागदेताभया

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकपुत्रः स्वतयागेनयथादुःखमवाप्तवान्आ
गत्यस्वगृहं सोथशिष्योरोगार्तवत्स्थितः १२
नभुक्तवान्दिवारात्रौ मूर्तिविश्लेषदुःखितः त
तः सभगवान्देवः स्वप्नेप्राहदयान्वितः १४
श्रीमज्झोऊलनाथातांमिर्तिंहरेऊरुद्रुत
योसौकौभाख्यचौरः सोऽपनीवममप्रिय:
मदर्शनंविनासोऽपिमरणोत्कननिश्चयः त
स्मात्यथासपश्यैम्मोनयथाऊरुमदाज्ञया
१६

और एकपुत्रवाला पुरुष पुत्रका त्यागकर जैसे दुः
खित होता है ऐसे सो दुःखित होता भया इससे
उपरंत अपने घर मे आयकर कहो एकांत
मे रोगार्तकी न्याई सोई रहता भया १२ और
मूर्तिके वियोगकर दुःखित होए आहया उ
स दिनमें ना रातमें भोजन करता भया तद द
याके समुद्र भगवान् श्रीमज्झोऊलनाथ कों
स्वप्नमे कहने भये १४ जौनस्तापहु कां थाना
म चांडाल है सो मेरा बहुत प्यारा है इसवास्ते
ऐसा काम करो जिसतरां से मेरेकों आगेकी
न्याई देखे अर्थात् पहुकंथ जौनसी फरा
ईहै सो हरकर देओ १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वांतर्दधे कांथं प्राह वै सत्वरूपधृक् अ
हो भिन्न स्तुपतितानागत्वा पश्यपारि मृदा ८ इ
ति दृष्ट्वान दो ध्याय कांथ स्त्वागतो निशि सं
मुखे संस्थितैस्तस्थौ सृजनकः स्वामपि स्वयमू ९
उत्थाय भितिं तत्कालेहरेच्चक्रे निवेशितः
अथ प्रातरभूद् द्वारः कपाटाद्युद्यादनेकृते
कांथः संमुखतो दृष्टः किं करोष्यत्र मां वदः
इति पृष्टवान ततो कांथः सर्वं स्वाचरितं जगौ १०

इस प्रकार का वचन गोकुलनाथ कों समझे कां
थ न कर फिर इसी प्रकार वैसव का रूप धार कर
स्वप्न में उस कांथे चांडाल कों भी जाकर भगवा
न जी कहने भये हे कांथे सो तो दिवाल डिगप
डी है जौन जी ठाकुर जी के अगे पड़दा करी थी
अव ही जाकर हर्षयुक्त नारायण का दर्शन
कर ८ इस तरां का स्वप्न देखकर उसी समय
उठ खड़ा होकर रात के समें ही उहां चला तो
उस समय उहां का ठार वंदथा सामने वैठ रहा
इतने में सृजक और साधु उठ कर आप ही उस
कंदा कों हर कर देने भये क्या दिखाय देने भये
विस्मययुक्त होम रूप अब इससे उपरंत प्रात
काल भी हो गया तद उनोंने किवाट खोले तो
क्या देखते हैं की कांथा सन्मुख खड़ा है ९ उस
कों पूछने लगे तूं क्या इहां करता है हमारे कों
कहो इतना वचन सुनकर कांथा चांडाल सा
रा अपना चरित्र कह देता भया १० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ ३१७

स्कृत्वा स्वत्वा खमहूतं तस्योपरितोषमः श्र
हूतं स्वजनस्यांहूतिं भोजनं नैव दास्यहं ॥२१॥ द्वा
रसंमार्जनं नेवकं कुर्वन्नत्र स्वविभव इत्युक्तः
सोपि काथा स्वेलन प्रणाम्य मह्रुमुहुः ॥२२॥ स
त्यागृहादिकं सर्वं स्थितो भक्ततरो भवत्
एवं भक्तिवशीभूत्वा संमार्जन परायणाः
गोविंदनाम प्रजपं स्तो नेहरिपुरं ययौ ॥२३॥
इति ॥

इसका वर्तन श्रवण करकें और स्वमका हत्तांत स
रण करकें श्रीमद्गोकुलनाथ तिसपर वड़ा प्रसन्न हो
ता भया और तिसको कहने लगा इस अपने हूति
कों छोड़ दे हम तेरे कों भोजन दीया करेंगे ॥१॥ और
एक भगवानजी के मंदिर का द्वार तैने सोतना
और कछु काम नहि करना इस जगा में सुखपूर्व
क निवास कर इस प्रकार तिसने कथन करा
हूया कांथा वारंवार तिसकों प्रणाम करता भ
या ॥२२॥ और गृहस्थ का त्याग कर उहां ठाकुर
द्वारे के वाहर कुटिया वनाय कर सुखपूर्वक नि
वास कर्ता श्रेष्ट भक्त होजाता भया इस प्रका
र सो चांडाल भक्ति के वशीभूत होकर भगवान
जीका मंदिर सोतने कर्म में तत्पर होई आ हूया
गोविंदजी के नाम जपता ॥ अंत में नारायण
जी के लोक वैकुंठ में जाय प्राप्त होता भया ॥२३॥
एह भक्तमाला ग्रंथ में भगवानजी के मंदिर
सोतने की महिमा कहीहै ॥

अथप्रसंगाद्विष्णुप्रासादे यः प्रातरुत्थायगोम
येनोपलेपनंकरोतितस्यफलमाह विष्णुध
र्मोत्तरे अभ्युक्षणंचयःकुर्याज्जलेनापिहरेर्गृ
हे सशांतपापोभवतिनात्रकार्याविचारणा
गोमयेनगृहेवैभूमिंमद्वेश्मोपलेपयेत्
यावतःपदांस्तत्रसमंतादुपलेपयेत् २
तावद्वर्षसहस्राणिमद्भक्तोजायतेभुवि
स्कंदेकार्तिकमाहात्म्ये गृहीत्वागोमयंचाद्भि
र्मंडलंकेशवाग्रतः कर्तुःश्रियोधनप्राप्तिः
संततेस्वजनस्यच इति ३॥

अबप्रसंगसे विष्णुजीके मंदिरमेंजोकोई प्रातः
कालगोहे आदिलेपनकर्ताहै तिसकाफल
कहतेहैंः विष्णुधर्मोत्तरमेंलिखाहै जोकोईपु
रुष जलकेसाथभी हरिकेघरमें अभ्युक्षण
कर्ताहै क्याछिड़कताहै उसकेजितने कोई
पापहैं सोशांतहोजातेहैं इसमें कुछविचा
रनहिंहै १ औरजोकोई पुरुषगोमयलेके
मेरेघरमें जितनेपादोंकोसंख्याकेलेवे चौड़ा
चारोंओरसेचौका देताहै सोउतनेही हजा
रवर्ष पृथिवीलोकमें मेराभक्तहोताहै २
स्कंदके कार्तिकमें लिखाहै जोकोईगोमयले
कर जलकेसाथ केशवजीके आगेमंडल
कीन्याईं चौकादेताहै तिसकोंश्रीशोभासंता
नधनकीप्राप्ति और आगेसंतानकी प्राप्ति
होतीहै ३॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्मे क्रियायोगसारे संमार्जनं विस्नगृहे ज
नः कृत्वोपलेपनं लभते परमं धाम पूजा
याफलवत्प्रभो ४ यथोपलेपनं कुर्यान्मा
वकैर्गोमयैर्जलैः तस्मिन्विस्नगृहे प्राज्ञः स्म
रन्नारायणं प्रभुम् ५ यस्तूपलेपनं विष्णु
र्योः केशवमंदिरे तस्य पुण्यफलं वाग्मि सं
तेपाच्छृणु जैमिने ६ रजांसि तत्र यावंति
विनष्टानि द्विजोत्तम तावत्कल्पसहस्रा
णि तिष्ठेद्विस्नगृहे हरेः ७ यस्तु देवालये भ
क्त्या राजन्गोष्पदमात्रके जलेन सेचनं कु
र्यात्तन्न फलं वदनः श्रुणु ८

पद्मके क्रियायोगसार में लिखा है कि जो विस्नके
मंदिर में पहले सोनकर पीछे से चौका देवे सो प्र
भु की पूजा करणे के तुल्य परम धाम को लभता
है ४ जो पुरुष प्रथम सोतकर्के पीछे से पवित्र
गोहे गैरजल के साथ जिस विस्नु के मंदिर में
प्रभु नारायणजी का स्मरण करता २ लेपन
करे ५ जो पुरुष केशवजी के मंदिर में हे वि
प्र लेपन लगाता है तिसके पुण्य का फल सं
तेप से तेरे प्रति कथन कर्ता हूं तूं श्रवण कर
६ हे द्विजोत्तम चौका देने २ जितनी क भूलि
उंसे नष्ट होती है उतने हजार वर्ष विस्नु के
घर मे निवास कर्ता है २ हे राजन जो कोई भा
क्ति प्रेम कर्के देवता के मंदिर मे गोष्पद मात्र भी
जल के साथ सेचन करे तिसका फल कथन क
र्ता हूं मेरे से श्रवण कर ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यावन्तः पांसुकाणिकाद्रवीभूता जनेश्वरं
तावज्जन्मार्जितैः पापैः सद्य एव प्रमुच्यते ९
गंधोदकेन यो मर्त्यो देवतायतने नृप भक्ति
तः सेचनं कुर्यात्तस्य पुण्यफलं शृणु । १० द्र
वीभूतानि यावंति रजांसि मधुसूदनः ता
वत्कल्पसहस्राणि हरिसारूप्यमश्नुते ११
इहनारदीये मृदा धातुविकारैर्वा वर्णकै
र्गोमयेन वा उपलेपनकृद्यस्तु नरो वैमानि
केभवेत् १२ ॥

हेजनेश्वर जितनीयां कपांसुधूलि कीयांकणि
कांद्रवीभूत हुईआंहैं उतनेही जन्मोंके करे हो
यपापों करकें शीघ्र मुक्तहोताहै ९ हेनृपदेव
ताकेमंदिरमें जोनरता कोई पुरुष सुगंधिवाले
जल करकें सेचनकर्ताहै तिसके पुण्यका फ
लश्रवणकर १० हेमधुसूदन जितनीक र
जकणाधूलि उहांसे दूरहुईहै उतने हजारां क
ल्प हरिकी सारूप्यता भोगताहै ११ इहना
रदीयमेंकहाहै जोकोई पुरुष मृत्तिकाकरकें
औधातुयोंके विकारों करकें क्वा गेरिकादि
यों करकें औररंगो करकें गोमयके साथ उप
लेपनकरे सो विमानों पर चढताहै १२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बृहन्नारदीये सूतशौनकसंवादे हरिमंदिरां
तेरलेपनकरणस्येतिहाससंवर्णयामि अथैवे
दाहरंतीममितिहासंपुरातनं पठतांशृण्व
तांचैवसर्वपापप्रणाशनं १२ सूतउवाच वि
प्राःशृणुध्वंचरितंयज्ञमालिसुमालिनोः
यस्यश्रवणमात्रेणवाजपेयफलंलभेत् १४
कश्चिदासीत्पुराविप्राब्राह्मणोरैवतेंतरे वे
दमालिरितिख्यातोवेदवेदांगपारगः १५
सर्वभूतदयायुक्तोहरिपूजापरायणः पुत्र
मित्रकलत्रार्थंधनार्जनरतोभवत् १६ ॥

बृहन्नारदीयेपुराणमें सूतशौनकजीदेसंवादकर्के
हरिकेमंदिरमेंचौकादेनेकीमहिमामेंइतिहास
वर्णनकर्तेहैं इसलेपनकीमहिमामें पुरातन इ
तिहासकाउदाहरणदेतेहैं जोपढने सुननेवा
लेयोंकेसारे पापनष्टकरणेवालाहै १३ सूत
जीकथनकर्तेभये हेशौनकादिब्राह्मणो इस
में यज्ञमालिसुमालिकाचरित्रश्रवणकरो
जिसकेसुननेमात्रकर्के वाजिपेययज्ञकाफ
लहोताहै १४ हेविप्राः रैवतमनुकेराज्यकर्तें
होए वेदवेदांगशास्त्रकेजाननेवाला वेदमा
लिनामब्राह्मणहोताभया १५ कैसासोब्राह्म
णथा सभनोजीवोंमें दयाकरणी हरिकीपूजा
मेंतत्पररहना और पुत्रमित्रस्त्रीयां इनकेनिमि
त धन इकट्ठा करणे मे तत्पररहता भया १६ ८

अपण्यविक्रयंचकेव्रतानांविक्रयंतथा परा
र्थं तीर्थगमनेकलत्रार्थमकारयत् १७ का
लेनगच्छतातस्य विप्राजातौतस्य सुताउभौ यज्ञ
मालिः सुमालीच यमलावतिशोभनौ १८
ततः पिताकुमारौतावतिस्नेहसमन्वितः पो
षयामासवात्सल्याद्बहुभिःसाधनैस्तथा १९
वेदमालीसुतौप्रोतौयावुभौद्विजसत्तमाः
यज्ञमालिः सुमालीचतयोकर्माधुनोच्यते २०

तोक्याकरणेलगा जोनसेवेचनकेअयोग्यव
स्तुहै तिसकों औरअन्नादिकधर्मोंको वेचताभ
या और पराए निमित तीर्थयात्राकरणी इत्यादि
दुष्कर्म स्त्रीपुत्रादियोंकेलियेकर्ताभया १७ हेवि
प्राइसप्रकार समयके वीतते २ तिसके यज्ञ
मालिसुमालिनाम वालेवडे सुंदर दोपुत्र प
कट्ठेही जन्मतेभये १८ तिससें उपरंत पिता
तिनका उनोंकुमारोंमे अत्यंतस्नेहप्रीतिक
र युक्त होयप्याराहुया अत्यंत तीजिसें वहुत
तरोंके साधनका उपायों कर्के तिनकों पाल
नकर्ताभया १९ हेद्विजसत्तमा वेदमालि के
जोनसें दोपुत्र यज्ञमालि सुमालिकथनके
रेहै तिनकाकर्म अवकथन कर्ताहूं २० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सां. ग्राम. २२

तयोर्ज्येष्ठो यज्ञमालिर्विभज्य पित्रसंचितं धनं
द्विधा कनिष्ठस्य भागमेकं ददौ तदा २१ सुमा
लिस्तद्धनं सर्वं नाभिरतस्तथा असच्छास्त्रादि
भिश्चैव नाशयामास भो द्विजाः २२ गीतवा
द्यरतो नित्यं मद्यपानरतोऽभवत् वेश्याविभ्र
मलुब्धोऽसौ परदाररतोऽभवत् २३ सर्वस्मि
न्नाशमायाते हिरण्ये पित्रसंचिते अपहा
रपरद्रव्यं वा स्त्रीनिरतोऽभवत् २४ ॥

तिनोंमे ज्यायज्या वडा यज्ञमालि था सो पिता के
मरे होए पीछे से उस पिता के इकट्ठे करे होए ध
न कों दो भाग कर्त्ता भया उसका एक भाग
छोटे भ्राता सुमालि कों देता भया २१ सुमालि
दुष्टबुद्धिवाला तिस धन कों प्राप्त होकर व्यसनों
में तत्पर होए झूठया असत् क्या खोटे जो है
शास्त्र तिनों करके सारा धन नष्ट कर देता भ
या २२ क्या काम करणे लगा कि गायन सुन
ना बाजे बजाने मद्यमांस खाना पीना वेश्या
के नृत्यादियों का लोभी पराई स्त्रीयां भोग
ने में तत्पर होता भया २३ जद सारा सो धन पि
ता का इकट्ठा करा हूया नष्ट होगया तद प
राए द्रव्य अनेक तरों के उपाय कर करस्या के
वेश्यागमन करने में प्रीतिवाला होता भया २४

320

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दृष्ट्वा सुमालिनः शीलं यज्ञमालिर्महामतिः
बभूव दुःखितो बाढमनुजं चेदमब्रवीत् २५
अलमत्यन्तकष्टेन वृत्तेनानुज सत्कुले त्वमे
कएव दुष्टात्मा महापापरतोभवः २६ एवं नि
वार्यमाणेन तेन बहुशो भ्रातरं ततः हनिष्यामी
ति निश्चित्य खड्गहस्तः कचे गृहीत् २७ ता
तो हाहारवो जज्ञे नगरे मुनिसत्तमाः बबंधु
र्नागराश्चैनं कुपिताश्च सुमालिनम् २८

बड़ा बुद्धिमान् यज्ञमालि सुमालि का शील देख
कर क्या वर्त्तन देखकर बड़ा दुःखित होके छोटे
भ्राता को ऐसें कहने लगा २५ हे अनुज छोटे भ्रा
तः ऐसें श्रेष्ठ कुल में इस नरां के कष्टदायक खो
टे वर्त्तन करके पूर्ण ता हूं क्या जो कुछ किया सो
करा अब आगे कों जान देतुं एक दुष्ट आत्मा
वाला महापाप करणे में तत्पर होय आ है २६
इस प्रकार बहुत बार निवारण करते होए भ्रा
ता को तिस सें उपरंगउ उसनें मन मे एसा चिं
तन करा कि इस कों मार देउंगा ऐसा निश्चय क
र एक दिन हाथ मे खड्ग लेकर केशों से पक
ड़ता भया २७ तद हे मुनिसत्तमाः उस नगर
मे हाहाकार शब्द होने लगा और नगर के
लोक क्रोधी होय कुम सुमालि कों बांध लेते २८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३२१

यत्तमालिरमेयात्मपौरसंप्रार्थ्यतुः खिन्नः
वंधनान्मोचयामासभ्रातृस्नेहविमोहितः २ ९
यत्तमालिः पुनश्चापि भेदद्व्यपनेद्विधा स्वाद
देस्यमर्धं चदत्त्वावंध्यपवीयसे ३ यत्तमालि
स्त्वतिमूढात्मानस्तनेचापिसत्तमाः मूर्खैः
पाषंडचांडालैः र्भुजेवमदोद्धतेः ४ अस
नाम्नप्रकारायप्रभुर्जनानांविभूतयः विषम
हः फलान्यपिकाकैरेवहिभुज्यते २२ ॥

तदअमेयमनवालायत्तमालिवडाडुःखिन
होपआद्मयानके लोकोंकी प्रार्थनाकर्के भ्राता
केस्नेह करव्याकुलहो आद्मया वंधनसेंछुडाय
देताभया २९ फिरयत्तमालिअपनेधनकोंदो॰
भागकर्के अर्धभागआपलेताभया आधा उ
सकोदेताभया ३ हेसत्तमाः अत्यंतमूढहू॰
बुद्धिवाला यत्तमालि उसधनकोंभीमूर्खपाषं
डीचांडालोंकेसाथ मिलकरभोगलेताभ॰
या ३१ यहवातप्रसिद्धहै उत्तमपुरुषोंकीयों॰
विभूतियांखोटे पुरुषोंकेही उपकारकेवा
स्तेहोतियांहै जिसतरांफलोकेसाथभरा॰
हुया निंवका वृत्त काकों कर्केंही भोज
न करीदाहै ३२ ॥

आज्ञादत्ते धनं प्राप्य सुमालिर्मत्ततां गतः श
र्करासहितं दुग्धं पीत्वेव पवनाशनः ३३ सुमा
लीत्वतिमूढात्मा चांडालत्वमुपागतः मद्य
पानप्रमत्तश्च गोमांसादीनभक्षयत् ३४ त्य
क्तोवंधुजनैः सर्वैः श्चांडालस्त्रीसमन्वितः रा
ज्ञापिवाधितस्त्वापि प्रययौ निर्जनं वनम् ३५
यज्ञमालिः सुधीर्विप्रः सदा धर्मरतो भवत्
आवारिते ददावन्नं सत्संगगतकल्मषः ३६

फिर आज्ञा करके दिये होए धनकों प्राप्त होकर सु
मालि मत्तभावकों ऐसे प्राप्त हुया जैसे शर्करा सहि
त दुग्धपान करके पवनाशन सर्प मत्त होता है ३३
उससें उपरंत अत्यंत मूढ बुद्धिवाला सुमालि चां
डालभावकों प्राप्त हुया २ मद्यपान कररोकर्के
मत्त गोमांसादियोंकों भी भक्षकर्ना भया ३४ तद
वांधव लोकोने तिस चांडालके स्त्रीके सहित
त्याग दिया और राजाने भी तिसकों दंड करा उ
ससें उपरंत निर्जन वनकों चला जाता भया
३५ जौनसा यज्ञमालि बुद्धिमान धर्मात्मा ब्राह्म
ण था सो सदा धर्ममें तत्पर होता भया और प्र
तिदिन अन्नदान कर्ना भया कैसा था यज्ञ
मालि सत्संग करकें हर होगये हैं पाप जिस
के ३६ ॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३२२

पित्राकृतानि सर्वाणि तडागादीनि सत्तमाः
अपालयद्यज्ञमालिः सदा धर्मपरायणः २७
विप्राणां तं धनं सर्वं यज्ञमाले महात्मनः स
त्पात्रदानविशिष्टस्य धर्ममार्गप्रवर्तिनः २८ अ
हो सदुपभोगाय सज्जनानां विभूतयः कल्प
वृक्षफलं सर्वं ममैरेव भुज्यते २९ धनेवि
श्राण्य धर्मार्थं यज्ञमालिर्महामतिः नित्यं
विष्णुगृहे सम्यक् परिचर्यापरोभवत् ५॰ ॥

हे सत्तमाः और तिसमे क्या काम करे कि पितृपि-
तामहादियों के बनाए हुए जो बाग बगीचे खूहे
तला मंदिरादिक तिनके निमित्त लगाए हुए जो
धर्मार्थ धनादि तिनको पालन कर्ता भया धर्म-
मे तत्पर होए आश्रया २७ और सत्पात्रों को दान
देने में निष्ठावाले और धर्म मे वर्तने वाले तिस
यज्ञमालि महात्मा का सारा धन का खजाना-
खाली होजाता भया २८ हे ऋषियो सत्पुरुषों-
के धनादि ऐश्वर्यों के भोगने वाले हि होते हैं जि
स प्रकार कल्पवृक्ष के सारे फल देवते ही भक्ष
ण करते हैं २९ सो जौन सा यज्ञमालि बडा बुद्धि
मान् धर्म कर्म के निमित्त धनकों खर्च करके फि
र नित्य ही विष्णु के घर में नारायण जी की सेवा
में तत्पर होजाता भया ५॰ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कालेनगच्छतातौतुवृद्धभावमुपागतौ य
ज्ञमाली सुमालीचएककालीमृतौद्विजाः ४।
हरिपूजारतस्यास्ययज्ञमालेर्महात्मनः हरे
रिः संप्रेषयामासविमानशतमुत्तमम् ५२
दिव्यंविमानमारूढ्ययज्ञमालिर्महामतिः
पूज्यमानःसुरगणैःस्तूयमानोमुनीश्वरैः
गंधर्वैर्गीयमानश्चअप्सरोभिश्चसेवितः
कामधेन्वापोष्यमाणश्चित्राभरणभूषितः

आयुकेव्यतीतहोने २ दोनोंवृद्धभावोंकोप्राप्तहो
गयेफिर हेद्विजाः दोनोंएककहीसमयमरगए ४।
तदहरिकीपूजामेंरतजो यज्ञमालितिसमहात्मा
केलिये नारायणजीं उनमसौविमानभेजतेभ
ये ५२ उनमेंसेंदिव्यजोविमानथाउसपरमहा
मतिवालायज्ञमालि आरूढहोगया तोदेवत
योंकेसमूह उसकेपूजाकरणेलगे मुनीश्वर
लोकस्तुतिकरणेलगे ५३ गंधर्वउसकेआ
गेगायनकर्ते चले अप्सरां नृत्यकर्तीयां
आगेचलिया और कामधेनु उसकी पालना
कर्ती भई और वडे २ विचित्र वस्त्रभूषणों क
रकेशोभायमान होताभया ५४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१२३

कोमलैस्तूलसीमालैर्भूषितैस्तेजसांनिधि
गच्छतिस्मपदंदिव्यंसचतंपथिदृष्टवान् प ५
ताड्यमानंयमभटैः तृष्णापरिपीडितं
प्रेतोभूतं विवसं च हृष्टवा म्पाशंवेपितं ५६
इतस्ततः प्रधावंतं विलपंतं स्वकर्मणा
क्रोशंतं वहुशोधीनं वमंतं रुधिरं मुखात्
यत्तमालीदयायुक्तोहरिभक्तासमीपगान्
कोयंभटैस्ताड्यमानाइत्यपृच्छत्कृतांजलिः

और कोमलतुलसीकींमालांकर्के भूषित तेजों
कानिधिप्रकाशमानदिव्य विस्नुकेलोकसेंजा
ताहुया रस्तेमेंछोटेभ्राताकोंभीदेखताभया ५५
केसाहै यमकेदूतोंकर्के ताड्यमान औरतृपा
तृषाकर्के पीडितप्रेतोंकारूपवनाहुया नं
ग्रफांसियोसेंवांधकर दूतलेजायाकर्नेहै ५६
उनसे इधरउधर दौडताहै औरअपनेकरेहोए क
र्मोंकोस्मरणकर्के विलाप करेया कर्ता और
वहुतदीनहोकर करलाया कर्ता रुधिरमु
खसेंवलाकर्ताहै ५७ ऐसे तिसकी दशादेख
करदयाकर्के सुजनपासमेवैठेहोए हरिकेदू
तोंकोहाथजोडकर यत्तमालिवूलताभया है
विस्नुकेगणोंपह यमकेदूतकिसकों मारेया
कर्नेहै कोनहै पह ५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथ ते हरिहर नाम्नं यज्ञमालिं महौजसं अग्नौ
सुमालिभ्राताने पापात्मा उमगोपयत् ४९ म
नस्तापुः खमायनस्तकर्म सुविमृष्य वै य
ज्ञमालिः समाकर्ण्य आत्मनो विस्नु किंकरैः ५०
ईदृशी हि गतिर्लोके नराणां दुष्टचेतसां क
र्मज्ञानं न पि ध्यानं पुनः प्रपच्छ वेगतः ५१
यज्ञमालिरुवाच सर्वे सत्पदीने स्वादित्या
द्यधर्मकोविदाः न स्मान्मैत्रीं च वा सूर्य यड
पायं वदन्तु वैः ५२ ॥

उसके सुननेसें उपरंत हरिके रत्न तिसव उज
वाले यज्ञमालिकों ऐसे कथन कर्ने भये यह नेरा
छोटा भ्राता पापात्मा सुमालि ४९ तद विस्नुके
किंकरोने कथन करे हुए ऐसा सुन कर मन में
बहुत दुःखकों प्राप्त होए आइया जिसके कर्मों
कोविचारकर अपने आपमें कहने लगा ५०
दुष्टमन वाले पुरुषोंकी यही संसार में गति होती है
ऐसें भ्राता के कर्मोंको जानना भी हुया परंतिन
कों शान्ता वी फिर सुछना भया ५१ यज्ञमालिक
हने लगा है विस्नु भगवान्‌जीके हत्तो धर्मके
जानने वाले ऐसें कहते हैं क्या जिसके साथ सात
पैर इकट्ठे चलिये सो मित्र हो जाता है और मैं तो
तुमारे साथ बहुत दूर आया हां इस वास्ते मित्रभा
व जान करकें पूछता हूं तुम मेरे मित्र हो ऊकटे र
समें उपाय कहो जिससें यह भ्राता यम दंडसें मु
क्त होजावे ५२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ ३२८

यज्ञमालेर्वचःश्रुत्वा हरिर्हृत्वा दयापराः पुनः
स्मितमुखोभ्राता यज्ञमालेर्विचेष्टितम् ५२
प्राग्जन्मकर्म हृदयोः विचार्य च मुहुर्मुहुः
कृत्वाः संमुखतोभूत्वा यज्ञमालिं हरिःप्रियम् ५८
विस्मृहनाऊचुः यज्ञमाले महाभाग नारा-
यणपरायणः उपायं तव वक्ष्यामः श्रृणु
ष्वागदितं वचः ५५ कृतं त्वया महत्कर्म त
याप्राक्तनजन्मनि प्रवक्ष्यामः समासेन शृ-
णुष्व सुसमाहितः ५६ ॥

इसतरेंकादीनवाक्ययज्ञमालिकासुनकर्के ह
रिके हृतदयामें तत्पर होईहुई फिर मंदहास्य
कर युक्तमुखवाले यज्ञमालिकों भ्राताका पूर्व
जन्मका चरित्र सुनावतेभये ५३ तिसके पूर्व
के जन्मोंकाकर्म अपनेमनमें विचारकर २
सावधानहोके हरिकेप्यारे यज्ञमालिकों
कहतेभये ५४ विस्मितकहने लगे हेबडे
भाग्योंवाले यज्ञमालि नारायणजीकी भ
क्तिमें तत्परतेरेकों उपाय कहतेहैं तेंहमारे
कहेकों श्रवण कर ५५ हेयज्ञमालि पि
छलेजन्मोंमें तेनेवडे २ अच्छे कर्मकरे होए
हैं सो तेरेकों संक्षेपसे कहतेहैं तूंसाव-
धान होके श्रवणकर ५६ ॥

324

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुरा त्वं वैश्यजातीयो नाम्ना विश्वंभरः स्मृतः त्व
या कृतानि पापानि महान्त्यगणितानि वै ५७
स्वकर्मवासनाहीनो मात्रापित्रा तथोज्झितः एका
हावं भूमिस्त्यक्तः शोकसंतापपीडितः ५८ तथा
पिपासासंतप्तः श्रामवान्हरिमंदिरं तत्रवृष्टि
समुद्भूतकर्दमे स्थानमिच्छया ५९ निवारि
तस्त्वया सोपि तत्र लेपनतां गतः त्वयोषितं त
न द्वारे तस्मिन्देवालये द्विज ६० ॥

पूर्वजन्ममें तूं वैश्यजातीका था विश्वंभरनामक
कें प्रसिद्ध तैनें अगणित बडे २ घोर पाप करे ५७
तद अपने जातिके योग्य कर्मोंकी वासनासें हीन
न तेरे कों देखकर्के माता पिताने भी त्याग दिया
तो बांधवोंसें मिलकर रहने लगा तो एक समय
तिनोंने भी तेरेकों निकाल दिया उस समय शो-
कसंताप करयुक्त और तिनके क्लेश करपीडि-
त घरसें तूं निकल जाता भाया ५८ तद चला-
गया तेरे कों तृषा न्त्रषा वढन लगी तिसकर्के सां
तप्त क्याडः खिन्न होए आइया मार्ग में एक हरि
का मंदिर था तिसमें जाकर तूं श्राम भया उहां तेरे
गए वृष्टि जो हुई मंदिर सो चिक्कड होगया और तै
ने उहां वेठनी की इच्छा करी ५९ उहांसे चिक्कड सारा
हाथोंसें हटाय दिया स्वच्छ निर्मल स्थान बनाय क
र तैनें उहां देवताके मंदिर में रात को निवास करा
जो तसा कर्दम हटाया सो चौका देने के फलकों प्राप्त हु-
या क्या इसने मेरे आगे चौका दिया उससें विष्णुजी प्रस
न्न होई ६० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्पेणादंशितस्तत्र प्रातः पंचत्वमागतः तेन
पुण्यप्रभावेण स्वुपलेपनजेनते ९१ विप्र-
जन्म च तत्रापि हरिभक्तिरचंचला कल्पको-
टिसहस्राण्यं निविश्य हरिसंनिधौ ९२ तत्रा-
वत्तानमासाद्य परं मोक्षं गमिष्यसि स्वानुजं
पानकिंस्त्रेह मद्वर्त्मानिहचेत्कसि ९३ उपायं
ते प्रवक्ष्यामस्तच्छृणुष्व महामते गोचर्ममा-
त्रभूमेस्तत्वुपलेपनजं फलं दत्वोद्धरमहा-
भागन स्याच्छ्रेयो भविष्यति ९४ ॥

रात्रिके समय तेरे कों सर्पने दर्शन करा प्रातःकाल
के समय मरणपात दसोजो चिकउ हलायकर उ
पलेपनकरा तिसपुण्यके प्रभावकर्के ९१ तेरे-
कों ब्राह्मणके घरजन्म हुया और अचंचलभ
क्ति परमेश्वर मे हुई अब तूं कल्पोंके हजारां
कोटं वर्ष हरिके सामने निवासकर ९२ परम
मोक्ष कों प्राप्त होजावेगा जो रत्तान कों प्राप्त हो
कर हे महामते जेकर अब अपने छोटे भ्रा
ता कों उद्धार करणे की इच्छा करता है तदतेरे कों
एक उपाय कहते हैं तूं सावधान होकर श्रव
ण कर ९३ क्या गोचर्ममात्र भूमिमें उपलेप
न जो चौका तिसके लगाने का उसकों फल दे
कर उसका भी उद्धार कर इस कारणसें उस
की कल्याण होवेगी ९४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सूत उवाच एवमुक्ते तु तेनैव स्वयं तु मालिर्म
हामतिः देवदूतोक्तमार्गेण ददौ तस्मै फलं त
दा ९५ विनष्टमभवत्तस्य पापजालं मुनीश्वराः
यमाज्ञाकारिणः सर्वे तं प्रमुच्य प्रदुद्रुवुः ९६
विमानसागरं सद्यः सर्वभोगसमन्वितं स
मारुह्य सुमाली च समं देवैर्ववंदता ९७
तावुभौ भ्रातरौ विप्राः स्वरहृदनमस्कृतौ
अवापतुर्महाप्रीतिं समालिंग्य परस्परं ९८

सूतजी कथन करणे लगे हे शौनकादि ऋषि-
यों इस प्रकार देवदूतोंने कथन करा तदही य
सुमालि ऐसे कहकर फल तिसको देताभया
क्या जो मैंने पूर्वजन्ममें नारायणजी के मंदिर
लेपन करा हुया है उसमेंसे गोचर्ममात्र पृथि-
वीमें लेपन देनेका फल इसको होवे ९५ इतना
वचन जद उसने कहा तद उसी समय हे मुनी-
श्वराः पापोंके समूह उसके नष्ट होजाते भये औ
र जिनों यमके दूतोंने तिसको पकडा हुया था
सो सारे ही तिसको त्यागकर भागके चले जाते
भये ९६ तद सभ तरांके भोगोंकर युक्त विमान
रूपी सागरमें आरूढ होकर सुमाली भी देवतों
की न्याई हर्ष आनंदको प्राप्त होता भया ९७
सूतजी कथन करते हैं हे शौनकादिक विप्राः
विमानोंके ऊपर चढे होए दोनो भ्राता को देवतो
के समूह नमस्कार करते भये और आपसमें दोनों
भ्राता गल्ल मिलकर बडी प्रीतिको प्राप्त होता भये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यज्ञमालिः सुमाली च स्तूयमानौ महर्षिभिः
गीयमानौ च गंधर्वैः विष्णुलोकमुपागतः ९९
अवाप हरिसालोक्यं सुमाली द्विजसत्तमाः
यज्ञमाली च धर्मात्मा हरिसारूप्यमाप्तवान् १०
भुक्त्वा भोगांश्चिरं तत्र यज्ञमालिर्महामतिः
तत्रैव ज्ञान संपन्नः परमोक्षमुपागतः ११
सुमाली च महाभागो विष्णुलोके युगायुतं
स्थित्वा भूमिं पुनः प्राप्य भूयो विप्रत्वमागतः १२

और यज्ञमालि सुमाली कौं महर्षिलोक स्तुति करते भये गंधर्व उनके आगे २ गायन करते है इस विधिसे विष्णुके लोकमें आय प्राप्त भये ९९ हे द्विजा सत्तमाः सुमाली जौन सा था सो तो हरिकी सालोक्य मुक्तिकों प्राप्त भया यज्ञमालि हरिकी सारूप्य मुक्ति कों प्राप्त भया १० और सो धर्मात्मा यज्ञमालि चिरकाल तिस लोकमें सुख भोग भोगकर महामतिवाला उहांही ज्ञान कर युक्त होय अरु हुया परम मोक्ष कों प्राप्त हो जाता भया ११ और जौन सा वडे भाग्यों वाला सुमाली विष्णुके लोकमें दश हजार युग निवास करकें फिर पृथिवीलोकमें प्राप्त होकर ब्राह्मणोंके घर जन्म लेता भया १२ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अतिश्रेष्ठकुलेजातोगुणवान्वेदपारगः स
र्वसंपत्समायुक्तोहरिपूजापरायणः ७३
यज्ञान्नियाजसुवहून्मोक्षार्थेविस्नुतत्परः
समस्तव्रतदानानिधर्मांश्चकृतवांस्तथा
हरिपूजापरोनित्यंहरिनामपरायणः व्या
हरन्हरिनामानिप्रपद्येजाह्नवीतटम् ७५
तत्रस्नात्वाचगंगायांदृष्ट्वाविश्वेश्वरंप्रभुं
अवापपरमंस्थानंयोगिनामपिदुर्लभं ७६

अछेश्रेष्ठकुलमेंजन्मताभया वडा गुणवान् वे
दोंकेजाननावालाहोताभया सारियांसंपदां
करकेयुक्तहरिकीपूजाकरणेसें तत्पर ७३ वड़
ततरोंके यज्ञ विस्नुभक्तिमें तत्परमोक्षकेनि
मितकरताभया और सारेहीव्रत दानधर्मकार्य
करताभया ७४ औरनित्यहरिकीपूजामें तत्पर
रहताथा हरिकानामजपनेमें तत्परहरिकेना
मोंकोउच्चारणकरताभया २ गंगाजीकेकिना
रेमेप्राप्तहोताभया ७५ तहांश्रीगंगाजीमें
स्नानकरके विस्वेस्वर जीकादर्शनकरा उहांही
देहकात्यागकर योगिजनोंको दुर्लभजोपर
म स्थान तिसमें जायप्राप्त होताभया ७६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३२०

उपलेपनमाहात्म्यं कथितं ते वो महीश्वराः न
स्मात्सर्वप्रयत्नेन से सेव्यध्वं जनार्दनं ११ न
तेषां नरकं विप्रा ये प्रपन्ना जनार्दनं तस्मा
त्सर्वप्रयत्नेन संसेव्यो जगतीपतिः १८ अ
कामाश्चापि ये विष्णोः सकृत्सुजां प्रकुर्वते
न तेषां भव बंधस्तु कदाचिदपि जायते १९
हरिभक्तिरता ये स्तु हरिरूपात्प्रपूजयेत्
तस्य तुष्यंति विप्रेंद्र ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः ८

हे महीश्वरा उपलेपन क्या जो हरि के आगे चौंका
लगाना तिसका माहात्म्य हम कों कथन करा
है इसकारणसें सारे ही नरों के यत्नों करकें ज
नार्दन जी का पूजन करो ११ हे विप्रा जो नसे
कोई हरि की शरण कों प्राप्त है तिन कों नर
कों की यातना नही है इसकारणसें जगत के
पति पूजने योग्य हैं १८ और जोनसें निष्काम
पुरुष हैं और विष्णु की एकवार भी पूजा क
र्ते हैं तिन कों कदाचित भी संसार का बंधन ना
हि है १९ जो पुरुष विष्णु के भक्तों का विष्णु का
रूप ही जानकर कें पूजन कर्ते है तिन के ऊ
पर हे विप्रेंद्रा ब्रह्मा विष्णु शिव यह तीनों ही
देवता प्रसन्न होते है ८ ॥

327

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिभक्तपराणांतु संगिनां संगमात्रतः
मुच्यते सर्वपापेभ्यो महापातकवानपि ८१
हरिपूजापराणां च हरिनामरतात्मनां
शुश्रूषानिरता यान्ति पापिनोपि परां गतिं
८२ इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे उपलेप
नामाहात्म्यं समाप्तम् ॥

जो पुरुष हरिके भक्तिमें तत्पर हैं उनके साथ
जौनसे संगति करणेवाले हैं उनके साथ व्या
वहार मात्रसें महापातकोंवालाभी पुरुष स
भनों पापोंसे मुक्त होजाता है ८१ जो पुरुष हरि
की पूजा करणेवाले हैं और हरिका नाम जपने
वाले हैं उनकी सेवा करनेमें युक्त मनवाले
पापीभी परमगतिकों प्राप्त होते हैं ८२ यह बृह
हन्नारदीय पुराणमें विसके आगे दीवा देने
का महात्म्य समाप्त हुया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अग्निपुराणे ध्यायंनियेसदाप्रीत्याकरिष्या
म्यहंरेर्गृहं तेषांविलीयतेपापंपूर्वजन्मश
तोद्भवं । विष्णुधर्मोत्तरे सप्तजन्मकृतंपापं
स्वल्पंवावहुलंतथा विष्णोरालयविन्या
सस्थापनादेवनश्यति २ स्कंधे आरंभेकृ
स्नविस्नस्य सप्तजन्मस्य यत्कृतं पापंवि
लयमायातिनरकाद्धरेत्पितृन् २ आसा
दयादेकृस्नस्यावतिष्ठंतिरेणुकाः तावद्व
र्षसहस्राणिसवसेद्विष्णुमंदिरे ४॥

अग्निपुराणमेकहाहै जोनरपुरुषसर्वदाका
लप्रीतिकरकेंऐसेंध्यानकरतें रहतेहैंकि हमभी
नारायणजीकामंदिरवनावें उनकेपीछेकेसे
कडे जन्मोंकेपापउत्पन्नहोईहुए लीनहोजाते
हैं । विष्णुधर्मोत्तरमेंकहाहै पीछेकेसातज
न्मोंमेकियेहोए थोडेजांवहुतपापसोसारेही
विष्णुकाघरवनानेकेनिमित्त धनस्थापनकर
नेसेंनष्टहोतेहैं २ स्कंदपुराणमेलिखाहै हे
कृष्णजीकिनिमित्तस्थानवनानेकेआरंभके
करेहोए सातजन्मोंमें करेहोए जोपापसोसा
रेहीनष्टहोजातेहैं औरनरकोंसेपितरोंकाउ
द्धारकर्तीहै २ श्रीकृष्णजीकेएकहिस्सामंदि
रवने होए जितने रेणुपलिके होतेहैं उत
नेही हजारवर्ष विष्णुकेमंदिरमेंनिवासकर्ता
है ४॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विश्वरहस्ये बाले प्रक्रीडमानाये पांसुभिर्भव-
नं हरेः वासुदेवस्य कुर्वंति तेऽपि तल्लोकगा-
मिनः ५ पद्मे जीर्णं कुर्वंति ये वै रुपनस्फलं द्वि-
गुणं भवेत् तद्विदार्थंपृथक्कार्यो नसगच्छेत्
परमंपदं ६ वामनपुराणे यः कारयेत् मंदि-
रं माधवस्य पुण्यान्लोकान्स गच्छेत् शाश्वता-
न्वै कृत्वारामान्फलपुष्पादिरम्यान्भोगा-
न्भुंक्ते कामतः स्वर्गसंस्थः ७ पितामहस्य पु-
रतः कुलान्यष्टौत्तयानित तारयेदात्मनासा-
र्धं विष्णोर्मंदिरकारकः ८ ॥

विश्वरहस्य ग्रंथमें लिखा है जो कोई बालावस्थामें
क्रीडा करता हुया धूलियों के साथ हरिका मंदिर बना-
ता है सो भी तिस लोकमें जाने वाला होता है ५ पद्म
में लि॰ है वैश्य जो कोई पुराणे मंदिर को नवीन बना-
ता है तिसको नवीनसें दूना फल होता है और जो को-
ई पुरुष उस पुरातन को विदाकरण करकें क्या गिरा-
यकर और नवीन ही बनाता है सो अनंत श्रेष्ठ पर-
मपद को जाता है ६ वामनपुराणमें लिखा है जो
पुरुष माधव विष्णुजी का मंदिर बनाता है सो सर्व-
दा काल रहने वाले लोकोंमें जाता है और जो को-
ई पुष्प फलों वाले बाग लगाता है सो स्वर्गमें स्थित
होकर कामनासें भोग भोगता है ७ जो विष्णुका
मंदिर बनाने वाला है सो पितामहसें लेकर अपने
समेत जो आठ कुल हैं तिनका उद्धार करता है
८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नरसिंहपुराणे यः कुर्याच्छोभनं वेश्म नर-
सिंहस्य भक्तिमान् स सर्वपापनिर्मुक्तो विष्णु-
लोकमवाप्तवान् २ आदित्यपुराणे प्रति-
ष्ठाकांडे च लेपनाच्छादनाद्वैव यः करोति
पुनर्नवं देवस्यायतनं तस्य न भवेत्कालजं
भयम् १ जीर्णं देवस्य प्रासादं यैः कृतः सं-
स्कृतो द्विजैः आसौच्चालेन महात्मानो धूत-
पापा महामते १ मूलाच्छतगुणं पुण्यं मा-
नुषां जीर्णकारकः तस्मात्सर्वप्रयत्नेन जी-
र्णोद्धारमाचरेत् १२ ॥

नरसिंहपुराणमैं लिखाहै जौनसा कोई भक्तिमान्
पुरुष शोभावाला नरसिंहजीका मंदिर बनाताहै
सो सभनों पापोंसे निर्मुक्त होए आइया विष्णुके
लोकमैं जाताहै १ आदित्यपुराणके प्रतिष्ठाकांड
मै लिखाहै जो कोई पुरुष पुराणे देवताके मं-
दिर कौं लेपन छादन कर्ताहै क्या छनपाताहै
और कच्चे जो पक्के कौं चूना जो मिट्टी फिराणेसें
नवीन जैसा कर्ताहै तिसकौं कालका भय नहिं
होताहै १ प्राचीन देवताका मंदिर जिन द्विज
जातियोंने संस्कृत कराहै क्या लेपनादियोंसें अ-
च्छा साफ कराहै हे महात्मने सो पुरुष नहिं शोक
करणेयोग्यहै और पाप भी नहिं धारण करातिनोंने
जो कोई जीर्णक्या पुराणे मंदिरकौं बनावताहै औ-
ह मूल क्या नवीन पहले जिसने बनायाथा
उससें भी सौगुणां अधिक पुण्यकौं प्राप्त होताहै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जीर्णं देहं यथा देही त्यक्त्वान्यं समाश्रयेत्
प्रासादं देवता जीर्णं त्यक्त्वान्यं व्रजेत्तथा ।१३
पुनस्तत्रैव कुरुते वैशिष्ट्येन चित्रकर्म
णि मंदिरे विचित्रं यानमारुह्य चैत्रभानुगृ
हे व्रजेत् ।१४ यावद्देवस्वरूपाणि हरेरूपा
णि लेखयेत् तावद्युगसहस्राणि सूर्यलो
के वसेन्नरः ।१५ बृहन्नारदीये मृद्धातुवि
कारैर्वा देवतायतनेनेय करोति चित्ररूपा
णि विष्णुलोके वसेत् ।१६ ॥

किस वास्ते कि जैसे पुराणे देह कों त्याग कर देह
धारी और दूसरे देह में आश्रय करता है इसी प्र
कार पुराणे मंदिर कों देवता भी त्याग कर और
स्थान में चला जाता है ।१३ फिर उहां और विशेष
वचन लिखा है जो पुरुष चित्रकारी करणे
वालेयों से देवता के मंदिर में विचित्र २ चित्र
वेलां बूटे मूर्तियां लिखाता है सो अंत में विचि
त्र नरों के बने होय विमान पर बैठ के चित्रभानु
के घर में जाता है ।१४ उस मंदिर में जितने रूप
देवतयों के और हरि के रूप लिखा है उतने हजा
र युग सूर्य लोक में निवास करता है ।१५ बृहन्नार
दीय में लिखा है मृत्तिका जो गेरिकादि और धातु
यों के विकारों करके हे राजन् देवता के मंदिर में
चित्ररूप लिखा है सो विष्णु के लोक में निवास क
रता है ।१६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३३॰

शालिहर्त्तोनृपयोमर्त्योदेवतायतनेनृप करो
तिस्वस्तिकादीनितस्यपुण्यंनिशामय १८ या
वन्तःकणिकाभूमौतिष्ठ रविकुलोद्भव ता
वद्युगसहस्राणिहरेःसालोक्यमश्नुते १८
मंदिरनिर्माणेचेतिहाससमाहात्म्यभक्तमा
लायांश्रपरंप्रवक्ष्यामिभक्तेर्माहात्म्यमु
त्तमं श्राश्चर्यकारकविष्णोर्दृढभक्तिप्रदाय
कं। दक्षिणेद्रविडेदेशेग्रामःश्रीरंगपत्तनः
तत्रश्रीरंगनामास्तिविष्णुभक्तवरद्रुमः २

हेनृपशालिकेहर्त्ताककें क्याचावलोंकेश्राटेक
कें जोमनुष्यदेवताकेमंदिरमेंस्वस्तिकादिक
क्या सर्व जोभद्रश्रष्टदललिखेताहे तिसकेपु
ण्यकाफलश्रवणकर १८ हेसूर्यवंशोद्भवरा
जन शालिकेहर्त्ताकीयांजितनीयांक णी
काएथिवीमेस्तेपनकरीयाहे उतनेहेहजारा
युगहरिकीसालोक्यमुक्तिकोंभोगताहे १८ श्र
वदेवताकेमंदिरवनानेमें इतिहासलिखेहे भ
क्तमालामे श्रवश्रौरएकउत्तमभक्तिकामाहा
त्म्यकथनकर्ताहूं कैसा उहमाहात्म्यहे श्राश्च
र्य केकरणेवाला श्रौरविष्णुभगवानजीमें
दृढभक्तिमेंदेनेवाला। दक्षिणमेंद्रविडदेशके
बीचश्रीरंगनामकएकशहरहे तहां श्रीरंगना
मा विष्णुभक्तोंकाकल्पहक्ष हे २॥ ~॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तत्र देवेश्च शास्त्रैश्च ब्राह्मणाः संयजंति हि
अन्येपि ये वसंति स्म तेपि मोक्षं लभंति हि ३
तत्रास्तां स्वर्णकारौ द्वौ मातुलो भागिनेयकः
केनापि वैष्णवेनाथ तावुभावुपदेशितौ ४
ततस्तौ स्वर्णकारौ तौ महावैष्णवौ बभूवतुः
अथैकदा तयोश्चित्ते बभूवाकस्मिकं त्विदं ५
श्रीरंगमठनिर्माणमावाभ्यां वियत्नतः
परं तु न धनं चास्ति कथमेतद्भविष्यति ६

तिस नगर में वेदशास्त्रों कर के तिस श्रीरंगजी कों
पूजन करते हैं और भी जो नर सें उहां निवास करते हैं
सो भी मोक्ष कों प्राप्त होते हैं ३ तिस नगर में मामा
भनेजा दो सुनार और निवास करते थे तिन कों कि
सी वैष्णव ने उपदेश करा कि भगवान् जी की भ
क्ति करो ४ तद तिस के उपदेश सें दोनो और हू०
मामा भनेजा सुनार और परमेश्वर के वडे भक्त
होते भये तद एक दिन अकस्मात् तिन के म
न में उत्पन्न भया ५ कि हम भी एक श्रीरंग भग०
वान जी का मंदिर बनावें पर हमारे पास धन
नहि है किस तरां सें मनोरथ हमारा सिद्ध
होवेगा ६ ॥ ०० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

33

इति चिन्तापरौ तौ द्वौ परस्परमभाषताम् । अहो
ये नास्तिको ग्रामे महाधनसमृद्धिमान् ७
तत्र तद्भृत्यव्याजेन स्थावां तद्गृहगौ पुनः
चौरयित्वा ततद्द्रव्यं करिष्येनेन नूतनं मठं ८
इति निश्चित्य मनसा गतौ तौ नास्तिकालये
न भृत्यावां भवत्सर्वं कृत्वा तत्र तनेन च ९
जीविकावै करिष्यावो यदि तेभिमतं विभो
इत्युक्तवान्तयोर्वाक्यं निशंतमितिसोब्रवीत

इस प्रकार मंदिर बनाने की चिंता मै तत्पर होय परस्
पर दोनों आपस मैं कहने लगे यह जो इस शहर
मे नास्तिक है सो बहुत धन समृद्धि करकै युक्त है
७ तहां तिसके जाय करके नौकरी करणे के ब
हाने करकै असी उसके घर मे प्राप्त होवेंगे क्या
अंदर मै जाना आना किया करेंगे इस तरां वि
श्वास देकर उसके घर का द्रव्य चुराय कर उस
धन से मंदिर बनावेंगे ८ ऐसा मन मे निश्चय
करकें दोनों उस नास्तिक के घर मे चले गये तहां
जायकर उसकों कहने लगे हम तेरी नौकरी कर
णे कों आये है ९ हे विभो जीविका के लिये तेरे
पास आये है जेकर तेरे इच्छा होवे तद तिसतनलव
कर्के तेरे घर के सारे काम करेंगे यह तिनका वा
क्य श्रवण करकै ओह कहने लगा अच्छा तुमारी
मर्जी रहो नौकरी करो १० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततस्तौ स्वर्णकारौ तौ नदगृहे भृत्यवत्स्थितौ
परस्परं चिंतयंतौ चौर्यावोपनं कथम् ॥१
नायस्यतां तव श्रुत्वा पनं तद्देवतामृते दे
वतां तन्तदीयासीत्स्वर्णप्रतिमामयी ॥२
महार्घरत्नखचिता बहुमौल्याति सुंदरी
दृष्ट्वा तां प्रतिमां तौ तु समस्तलोके ततस्ततौ
प्रतिमामठमारुह्य गवाक्षं ददृशो महत ॥४

१चक्राते हरणे मतः ॥३ अथैकदा निशायां तु २
२

नद ओह दोनो मामा भनेया सुने और तिसके घरमे
नौकरों की न्याई स्थित होते भये और आपस में ऐसें
चिंतन कर्ते थे कि इसके घरसे क्या धन चुरावें
कुछ मालूम नहि होता है ॥१ और उस नास्तिक के दे
वता की स्वर्णमयी प्रतिमा थी जिससें बिना और
नहि कुछ धन तिनकों लभता भया ॥२ कैसी
ओह मूर्ति थी बडे मोल के रत्नों कर जडाऊ बनी
होई बडे मोल की अति सुंदर तिसकों देखकर उ
सकों चुराणे की इच्छा कर्ते भये मूर्ति चोरीसें मि
ले नद अच्छा मंदिर बन जाता है ॥३ ऐसें मन मे वि
तन कर्ते २ एक दिन लोकों के सो रहे होए पीछे
आधी रात के समें दोनो मामा भनेया उठ करके प्र
तिमा चुराणे के लिये मांग देखते भये कि सरस्ते
अंदर मंदिर के जावें ऐसें देखते २ ऊपर एक ब
डा झरोखा देखा जिसमे मनुष्य निकल जावे उ
स मार्ग करके जाने वाले उस बडे मंदिर के ऊप
र चढते भये ॥४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

332

द्वारिकापाटसंरोधात्तेन मार्गेण मातलः का
ष्ठाकृष्टस्तरसा शय्यये मंदिरमध्यतः १५ अथा
यप्रतिमां तोत्रभागिनीयाय चार्पयेत् ततः
स्वयं तते नैव मार्गेणागमनमुद्यतः १६ नश
शाकबहिर्गंतुं द्वारात्स्वल्पत्ववशादसौ ततो
ब्रवीद्भगिनीयं मातलो मठमध्यगः १७ स्व
तः परे यद्वस्यामि तत्कुरुष्वापि चारितं उ
पायो स्ति न चान्योत्र कुरु शीघ्रं मदीरितम् १८

द्वारमे किवाड लगे होए थे इससे मातल तिस
गवाक्ष के मार्ग कर्के वडे परम क्लेश कर्के प्रसंत
हीड: खपायकर मंदिर के अंदर चला जाता भ
या १५ उहांसे उनके देवता की प्रतिमा उठाय
कर भैनेवें को देता भया तिस मूर्ति को देदेने से
उपरंत आप तिस मार्ग कर्के आवने की उद्यत
हुया १६ तद छोटे द्वार के वशथ उस रस्ते आव
नेको समर्थ नहि होता भया तद उस रस्ते नहि
आया तद उस मंदिर के अंदर से मामा भैने
वे को कहने लगा १७ मेरे से अब बाहर नहि
आने होता है पर जो मैं तेरे कों कहता हूं सो
तूं विना विचारे काम कर उसके विना और
कछु उपाय नहि है इससे मेरा कहना शता
वीकर १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छित्वा मे मस्तकं याहि गृहीत्वा प्रतिमामिमां
नो चेदित्प्रतिमां प्रातरुभयोर्मरणं ध्रुवं १९
इत्थं मयि मृते त्वं च गृहीत्वा मां विनायन
श्रीरंगमठनिर्माणं कुरुष्व मम शासनात्
एतावदेव कर्तव्यमासीद्बहुदिनावधि मा
तुलस्य निवचनं श्रुत्वा तत्र भागिनेयकः २१
छित्वा शिरो मातुलस्य नीत्वा तां प्रतिमां द्रु
तं ययौ स्वभवनं रात्रौ संस्थाप्य प्रतिमां ततः २२

मेरा सिर काटकर इस प्रतिमाकों लेके चला जा
ता नहि तो प्रातःकाल आयकर देखेगा तद हम
मारे दोणोका मरण होवेगा निश्चय करके १९
इस प्रकार मेरे मरे होए पीछे कोई मारेको ना
हि जानेगा और तू मेरे विना इस प्रतिमाकों ले
जा और मेरे कहनसें श्रीरंगजीका मंदिर तैनें ब
नाना २० यह काम करनेकी इच्छा हमारे बहु
त दिनोंसें बनी होई थी सो नो काम आज सिद्ध होग
या पर मंदिर आज तैनें बनाना रहा ऐसा वचन
मामेका सुनकर ओहं भनेवां क्या कर्ता भया २१
कि मामेका सिर काटकर और उह प्रतिमा उठा
यले शीघ्रतासें रातकेही समय अपने घरमें
जायकर तिस प्रतिमांकों स्थापन करकेदौड
आवता भया २२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२२५

333

आययौ स तु नक्तं नास्तिकस्य निवेशने सु
ष्वाप सर्ववत्तस्यां कारः शय्यातले निजे २३
आयातस्य मातुलस्यापि शिरः छेदं यदाकरो
त् तदैव पुनरेवास्याः शिरः प्रादुर्बभूव ह २४
उद्घाटितः कपाटोपि स्वयं श्रीरंगभक्तितः
मातुलोपि मठद्वारमार्गेणागतस्तद्बहिः
भगिनीयस्य निकटे सुष्वापाजिमुदान्वितः
ततः प्रातः समुत्थाय निरैक्षेतां परस्परम्
२६

मूर्तिकों अपने घरकों छोड़कर फिरपरन्तु ना
स्तिकके घरमें आयकर सर्वकी न्याई अपनी श
य्याके ऊपर प्रसन्नतासे सोयरहता भया २३ अब
उसका वृत्तांत लिखते हैं जद उस अपने मामे
का शिरकाटता भया उसी समयही भगवान्
जीकी रक्षासें उनकों शिर लगजाता भया उ
सकों प्रतीत भी नहि हुया की शिर मेरा काट
दियाजां नहि काटदीया ऐसा होता भया २४
और श्रीरंगजीमें जौनसी उसकी भक्तिथी उसी
सें अपने आप कपाट क्या द्वार भी खुलजाता
भया तब ओह द्वारके मार्ग करकैं मंदिरसें बाह
र आवता भया तब ओह मंदिर उसविधीसें
फिर लगजाता भया २५ मामा भनेवें के पास आ
कर प्रसन्नतायुक्त सोयरहा तो प्रातःकाल ज
द हुया तद आपसमें अचंभा होयपड़ये देखने
लगे २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

किमिदंचेतिपप्रच्छ भागिनेयः स मातुल मा
तुलोपिततः प्राह श्रीरंगकृपयाप्यहं २७ भू
त्वावै सर्ववृत्तान्त समायातोस्मि नैतिकं इत्येव
मुक्त्वा वचनं प्रातरारभ्य ततो पुनः २८ स्वकार्य
निरतो भूत्वा चक्राते श्रमनातुभौ अथोस्या
यततोजैनो दृष्ट्वा देवस्य मंदिरे २९ उद्घाटि
तं कपाटं च महाशंकामुपागतः द्रुतं गत्वा
महेनैव ददर्श प्रतिमांचताम ३० ॥

तदभनेआ मामेकों पूछनेलगा यह क्या कैसे
जीवित होई आया मैं तेरेकों मारकर आयाथा
तदमातुल बोलामै श्रीरंगजीकी कृपा क
र्कै जीवित हुया हूं और द्वार मार्ग करकें आया
हूं २७ और आगेकी न्याई राजी प्रसन्न होकरने
रे पास आकर सोय रहा हूं ऐसावाक्य कथन
करसो दोनो प्रातःकालसे लेकर क्या करतैभ
ये २८ कि अपना जो काम रोजके रोज करतें थे
उसमैं तत्पर होकर उसकी नौकरी सेवा करतें
भये इससें उपरंत उह चर वाला नास्तिक भी
उदक कैं देवता के मंदिरमें चला गया २९ उह
अप्रसन्नता देखकर बडी शंकाकों प्राप्त भया
तदशीघ्र दौडकर मंदिर के अंदर जाके देखता
भया कि सिंहासन पर मूर्ति नहिहै कि यह क्या
हुया और कौन खोलगेया ३० ॥

समोहशोकाक्रांतेनः सचिंतामापद्गुरस्तयो हृदि
तावद्दुःखार्तस्तौ भृत्यावाह कोपतः २१ अ
होभवद्भ्यां गेनत्यमिदानीमेवमेगृहात् स्थि
तयोर्युवयोरेव गृहे चौर्यमभून्मम २२ ततो
नेवास्ति मे किंचित्फलं संरक्ष्य वै युवां २ इति
तैनेन तावुक्तौ जनहर्षस्वर्णकारकौ २२ महा
प्रसादस्तु कान्तस्य तन्मौन ततो गृहात् स्वग
स्व स्वगृहं तौ तत्र कंचित्कालं व्यनीनमच २५ ॥

335

जदनिसनेस्वर्णमयी मूर्त्तिनहिंदेखी तदमोह
करकें आकुलमनवाला होआ हुया वहुत रोद
नकरताभया फिरदुःखकरकें आतुरहोय आहुया
तिनोदोनों नौकरोंको कोपसें कहनेलगा २१
तसीदोनोंमेरेघरसें अवही चलेजावो क्योंकि
तमारे रहतेहोय मेरे घरमे चोरीहोगई है
२२ इसवास्ते तमारे कों रखकरकें मेरा प्र
योजनहीं कछनहिं अवही चलेजावो ऐसे
तिसजैन करकें कथन करे होई स्वर्णकार
क वे प्रसन्नहोतेभये २२ उनोंने कहाहे अ
च्छातमारी कृपाहमारा कछु जोरनाहिंहै
ऐसाकहकरकें अपने घरमें चलेआये कि
तनाककाल व्यतीत करकें २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रतिमाभूषणै रत्नैश्चकार मंदिरमुत्तमम प
वं भक्तेश्च माहात्म्यं शिरःछेदेपि यत्पुनः २५
शिरो बभूव लग्नन्तत्कपाटः स्फुटितः स्वयं
श्रीरंगे यापि जल्पंति ब्रतमेतत्पुरातनम २६
तस्मान्नाश्चर्यभूतं हि किंचिद्भक्तेर्हि विद्यते २७
इति भक्तमालायां मदननिर्माणमहिम्नि
स्वर्णकारचरितम ॥

फिर प्रतिमा कों तोड कर्के उस के भूषण रत्नों
को वेच २ कर उत्तम बडा सुंदर मंदिर श्री
रंगजी का बनावते भये ऐसा भक्ति का मा
हात्म्य है २५ जिस प्रभाव कर्के कट्या हुया
शिर फिर लग जाता भया और अपने आप द्वा
र खुल जाता भया श्रीरंगजी का यह पुरात
न ब्रत अब भी कथन कर्ते हैं २६ इस कारण
सें भक्ति के प्रभाव में आश्चर्य वाली वात नहि
है क्या भक्ति में कुछ असाध्य नहि है २७
यह भक्तमाल ग्रंथ में मंदिर बनाने की महि
मा में सुनयारे यों का चरित समाप्त हुया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३३५

335

अथ वैष्णवानां नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मसा
धनार्थं वैष्णवमंत्रा व्यन्ते पद्मपुराणे वि
ष्णवे शंभुना सकलं जगदेतद् द्विजोत्तम त
स्माद्विष्णुमयं धीराः पश्यंति परमार्थतः १
ब्रह्मशंकरसूर्याद्या विष्णुभक्ताः किलामराः
तस्मात्समस्तदेवार्चा विष्णुमेकं प्रपद्यते २
स्मरंतं विष्णुनामानि सर्वपापहराणि वै ये
न केनापि पापेन विद्यते नाशुभं क्वचित् ३
शारदातिलके अथ वक्ष्ये महामंत्रं सर्वकामफलं
प्रदं यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे मोक्षभाजो भवंति हि ४

अब वैष्णवलोकों के नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मों के सा
धन निमित्त वैष्णवमंत्रों को कथन करते हैं पद्मपुराण में
लिखा है हे द्विजोत्तम यह सारा जगत विष्णु के अंश
से उत्पन्न हो प्रगट्या है इस कारण से परमार्थ ने धी
र पुरुष सारे जगत को विष्णुमय क्या विष्णु का रूप
देखते हैं १ निश्चय करके ब्रह्मा शिव सूर्यादि सारे देव
ता विष्णु के ही रूप हैं ऐसी से सारे देवतयों का क
रणेया पूजन विष्णु भगवान जी को पहुंचता है २
येन केन क्या जिस तरां से हो सके उसी तरां से पापों
के हरणे वाले विष्णु के नाम जपने वालेयों को क
हां से भी अशुभ नहिं होता है ३ शारदातिलक में
लिखा है अब सभ नरों की यां कामना के फल
देने वाले विष्णु के महामंत्र कथन करते हैं जि
न को जान कर के पुरुष और मुनि लोक मो
क्षभागी हो जाते ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अनंतोरेफगः सेंदुः बीजं रामायहृन्मनुः षडु-
क्षरोयमादिष्टोभजतां कामदोमणीः ५ ब्र
ह्माप्रोक्तोस्यमुनिश्छंदोगायत्रीदेवतामनोः
कौशलेंद्रः समाख्यातः रामोरात्तसमर्दनः ६
दीर्घभाजास्वबीजेनकुर्यादंगानिषट्क्रमात्
मंत्रोद्धारोयथाअंतः आकारोरेफगः रेफः
सेन्दुः बिंदुसंयुक्तकः रांइतिभवतिरामा
यस्वरूपं हृतनमः रांरामायनमः इतिषड्
क्षरस्तारकाख्योमंत्रहृतः ॥

अथतारकराममंत्रबनानेकीरीतिलि॰ अनं
तकर्कें आकारग्रहणकरणा रेफकर्कें बं
जन॰ रकारसेंडु क्या इंदुबीजकर युक्तक्या
अनुस्वारकर युक्तकरणा रामाय चतुर्थ्यं
त पद स्वरूप इसमें जोडना और हृत कर्कें
नमः जद अंतमें देना तद रांरामायनमः
ऐसा षडक्षर मंत्रबनताहै ५ इस मंत्रका
ब्रह्माऋषि गायत्रीछंद कौशलेंद्र श्रीराम
चंद्र परमात्मा देवताहै धर्म अर्थ काम मो
क्ष इनचार पदार्थोंकीप्राप्तिकेनिमित्त इन
का विनियोगहै औरदीर्घ भागीजोस्वबी
ज है आकारादि तिनों कर्कें क्रमसें षडंग
न्यासकरे क्याछे अंगोमे न्यास करे ऐसेमं
त्रकाउद्धारहै ६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ अस्य श्री ब्रह्मतारकषडक्षररामचंद्रस्य ब्र
ह्माऋषिर्गायत्रीछंदः कौशलेंद्र श्रीरामचं
द्रो देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनि-
योगः अथ करन्यासः रां अंगुष्ठाभ्यां नमः
रीं तर्जनीभ्यां नमः रूं मध्यमाभ्यां नमः रैं
अनामिकाभ्यां नमः रौं कनिष्ठिकाभ्यां न
मः रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति
करन्यासः एवं हृदयादिन्यासः रां हृद
याय नमः रीं शिरसे स्वाहा रूं शिखायै व
षट् रैं कवचाय हुं रौं नेत्रत्रयाय वौषट्
रः अस्त्राय फट् इति हृदयादिन्यासः अ
थ मंत्रन्यासमाह ब्रह्मरंध्रे भ्रुवोर्मध्ये हृ
न्नाभ्यां युग्मपादयोः षडक्षराणि विन्यसे
न्मंत्रस्य मनुवित्तमः ब्रह्मरंध्रे रां नमः भ्रुवो
र्मध्ये रां नमः हृदये मां नमः नाभौ यं न-
मः दक्षिणपादे नं नमः वामपादे मां नमः
इति वर्णन्यासः ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं दशांशं कमलैः शुभैः ज
हुयाद दर्पिनेवक्तोब्राह्मणान्सजपेत्ततः ६
पूजयेद्धेमवेपीठे मूर्त्तिं मूलेन कल्पयेत्
श्रीसीतायैस्वाहेति मंत्रेण सीतां पार्श्वगतां यजे
त्‌ ९ अग्रे पार्श्वद्वये शार्ङ्गं शरान्‌ंगानि त
दुहिः हनुमंतं ससुग्रीवं भरतं सविभीष
णम् ॥ ॥

छे लाख मंत्र का जप करे तिसका दशांश ९—
हजार सुजित अग्नि में सुंदर कमलों करके मंत्र
पढ २ के हवन करे तिसका दशांश २ तर्पण
मार्जन करे इनों सभनों का दशांश संख्या को।
ब्राह्मणों को भोजन देवे (और विस का पाठ बना
पकर क्या यंत्र बनाय कर मूल मंत्र कों पडके
रामचंद्रजी की मूर्त्ति की कल्पना करके पूजन
करे और श्रीसीतायैस्वाहा इस मंत्र कों पडकर
उठके वामे पासे शार्ङ्गःधनुष और बाणों का
पूजन करे त्रिकोणमें और तिसके छे अंगों।
का पूजन करे और तिनके बाहर आठ दल के
कमलमें हनूमान सुग्रीव भरत और विभी
षन का पूजन करे ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा:
ग्राम:
३२

अथध्यानं कालांभोधरकांतिकांतमनि
शंवीरासनाध्यासितं मुद्रांज्ञानमयींद
धानमपरंहस्तांबुजंजानुनि सीतां
पार्श्वगतांसरोरुहकरांविद्युन्निभांरा
घवं पश्यंतंमुकुटांगदादिविविधाक
ल्पोज्ज्वलांगंभजे इतिध्यानम् ॥

प्रलयकालकेमेघोंकीकांतिक्याहैश्यामम
तातिसकीन्याईहै सांद्रश्याममनोहररूपजि
नकाऔरवीरासन करके बैठेहोइ औरदक्षिण
हाथकरके ज्ञानमयी मुद्राधारणकरी होइ
वामाहाथजानुकागोडेउपर रखयाहुयाहै
जिनोने और वामे पासेबिजलीकीन्याई प्र
काशवाली बैठीहुई जोसीता तिसकोदेख
रहे और मुकुट अंगद कंकणादि अनेक
नरोंके भूषणोंकीशोभायुक्तक्या अतिहंद
रहे सारे अंगप्रत्यंग जिनकेऐसे रामचंद्र
जीकोंवारंवारभजतेहै इस पूर्वोक्त मंत्रोंकों
जापणेकेसमय ऐसा ध्यान करे ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लक्ष्मणांगदशत्रुघ्नजांववंतं दलेष्विमान्
वाचयंतं हनूमंतमग्रतोस्तपुस्तकं ।२
यजेद्भरतशत्रुघ्नौ पार्श्वयोः स्तनचामरौ भ
तातपत्रं हस्ताभ्यां लक्ष्मणं पश्चिमे यजेत्
।२ सृष्टिं सुजं तं विजयं सुराष्ट्रं राष्ट्रवर्धनं
अकोपं धर्मपालाख्यं सुमंतं च दलाग्रतः
।५ ।।

लक्ष्मण अंगद शत्रुघ्न जांववंत इनों आठों
का कमल के दलें में ऐसा ध्यान करे कि रामचं
द्रजी के सामने हाथ जोड कर खडे है पूजन क
रे और उस ने वाहर सामने दल में क्या आगे
में पुस्तक की धारणा कर होए पाठ करते ह
नुमानजी का ध्यान कर पूजन करे ।२ और
दोनो दहने वामे पासे चामर पकड कर रामच
न्द्रजी को फोलिया करते ऐसे ध्यान कर भ
रत शत्रुघ्न दोनों को पूजन करे और रामचंद्र
जी के पीछे आतपत्र स्वेत छत्र हाथ में लिये
होए छाया करके खडा है ऐसा ध्यान कर ल
क्ष्मणजी का पूजन करे ।२ और उससें वाहर के
अष्टदल के आगे सृष्टि सुज विजय सुराष्ट्र
राष्ट्रवर्धन अकोप धर्मपाल सुमंत्र इनों आठों
का पूजन करे ।५ ९ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्वाभरणसंपन्नां होलोकेशानर्चयेत्ततः
नदस्त्वाणि ततो वास्ये वज्रादीनि प्रसृजये
त् एवं सृजादिभिः सिद्धो मतः कर्माणि
साधयेत् ५ जातिप्रसूनैर्जुहुयाच्चंदना
भःसमुक्षितैः राजवश्याय कमलैर्धनधा
न्यादिसिद्धये ६ नीलोत्पलानां होमेन
वशयेदखिलं जगत् विल्वप्रसूनैर्जुहु
यादिंदिरावाप्तये नरः ७ ॥

338

तिनसे आगे सर्वाभूषणों कर युक्त दश दिक्पा
लों का ध्यान करके सृजन करे तिससे बाहर के दलों
मे वज्रादि तिनके जो शस्त्र उनका सृजन करे इ
सप्रकार की सृजादियों करके सिद्ध पुरुष कार्य
साधक मनोभिलषित कामनों का साधन करे
५ सर्वोत्कृष्ट तिसे मंत्र का जप करणे से उपरं
त कामना के भेदों करके हवन विशेष सामग्री
यों लिखा है राजा कों वश करणा होवे तद चं
दन के जल साथ सिंचन करके चंवेली के पु
ष्पों का हवन करके पुष्पों का हवन करे ६
और सारे जगत के वश करणे के वास्ते नी
ले कमलों का हवन करे और इंदिरा लक्ष्मी
के प्राप्ति के लिये पुरुष विल्व वृक्ष के पुष्पों
का हवन करे ७ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दूर्वाहोमेन दीर्घायुर्भवेन्मंत्री निरामयः रक्तोत्पलानां होमेन धनमाप्नोति निश्चितम् १८ मेधाकामेन होतव्यं पलाशकुसुमैर्नवैः तज्जमसंभः प्रपिबेत्कविर्भवति वत्सरात् १९ तन्मंत्रितान्नं भुंजीत महद्रोगप्रशाम्यात् गादितं राममंत्रस्य प्रभावं परमं जितम् २० ॥

और मंत्रों को जपनेवाला दूर्वा के साथ हवन करणे कर्के बड़ी आयुवाला होता है और नीरोग रहता है और लाल कमलों के होम कर्के निश्चय कर धन को प्राप्त होता है १८ और जिसको श्रेष्ठ बुद्धि की कामना होवे सो नवीन क्या हरे पलाश के पुष्पों का हवन करे और इस मंत्र कर्के जल को मंत्रित कर्के पीवे तब एक वर्ष कर्के कवि हो जाता है और भोजन मंत्रित कर्के खावेगा तो बड़ी नीरोगता को प्राप्त होता है इसलिये यों एह रामचंद्रजी के मंत्र का प्रभाव कथन करा है १९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पद्मपुराणोक्रियायोगसारे व्यासउवाच रा
मनाम्नःप्रभावंहिशृनवेत्मिद्विजोत्तमाः
यच्छ्रुत्वासर्वपापेभ्योमुक्तोभवतिमानवः
१ विष्णुवंशभूतंसकलंजगदेतच्चराचरं
तस्माद्विष्णुमयंधीराःपश्यंतिपरमार्थतः
ब्रह्मशंकरसूर्याद्याविष्णुभृत्याःकिलामराः
तस्मात्समस्तदेवार्चाविष्णुमेवप्रपद्यते २
स्मरतांविष्णुनामानिसर्वपापहराणिवै
येनकेनाप्युपायेननाशुभंविद्यतेक्वचित्

पद्मपुराणकेक्रियायोगसारमेलिखाहै व्यासदेव
देवजीकथनकरतेहै हे द्विजोतमाः अबफेर राम
नामकाप्रभाव तुमारेतांईकथनकरताहूं जिसको
श्रवणकरके पुरुष सारेपापोंसें मुक्तहोताहै १
यह जोनसा चराचर साराजगतहै सो विष्णुके अं
शोंसें उत्पन्नहोयआहुआहै इसीकारणसे परमा
र्थसेंक्यावास्तवमासें धीर पुरुष विष्णुरूपही
जगतकों देखतेहैं २ ब्रह्मा शिव सूर्य इंद्रादिक
सारे देवता निश्चयकर विष्णुके भृत्यहैं क्योंकि वि
ष्णुने अधिकारोंपर छोडेहोयेहै इसीकारण
सें सारे देवतयोकीकरीहोई पूजा विष्णुजीको
पहुचतीहैं २ येनकेनउपायकरकें सारेपापों
केनाश करणेवाले विष्णुकेनामोंकोस्मरणक
रणेवालेकोकहींसेभीअशुभ नहि होताहै ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्वपन्भुंजन्वदंस्तिष्ठन्नुत्तिष्ठन्नजल्पस्तथा स्मरे
द्विरनंतविस्मृतमस्तवैस्सवोजनः ५ न ह्यत्र मु
निभिः सर्वैः स्मरणे कमलापतेः न कालनि
यमः प्रोक्तः सर्वदुःखविनाशने ६ नामप्रभा
वं विप्रर्षे केशवस्य महात्मनः ब्रवीम्यहं समा
सेन सेतिहासं निशामय ७ आसीत्सत्यवत
नाम ब्राह्मन्कृतयुगे सुधीः वैश्यो वैश्यकुलश्रे
ष्ठः समस्तगुणपारगः ८ ॥

जोपुरुष सोता होया वैठा खडाहूया २ कहता २
खाता पीता चलता २ फिरता निरंतर मोक्ष
की चाहना वाला पुरुषविस्नकास्मरणकरे
५ औरसारे दुःखोंके नाशकरणेवालेकम
लापतिकेस्मरणमें वैस्नव मुनियोंने काल
कानियमभीनही कहा हेविप्रर्षे ६ केशव
भगवानजीकेनामोंकाप्रभाव इतिहासके
सहित संक्षेप करके कथन करताहूं तूं श्र
वणकर ७ पूर्वसमयएक सत्ययुगमे वडे
श्रेष्ठकुलमै जन्मा हूया वडा श्रेष्ठ सारे गु
णोंकापारगामीवैस्य सत्यवतनाम करके
होता भया ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्का॰
ग्राम॰
३५॰

सवैश्योदैवयोगेनप्रथमेवयसिद्विज जगा
मवशतांमृत्योःकासश्वासगदार्दितः ९ जी
वंतीनामतस्यस्त्रीसमभ्यागतयौवना मृते
भर्तरितातस्यजगामनिलयंप्रति १० साजी
वंतीद्विजश्रेष्ठनवयौवनगर्विता मतिंचा
कारजारेषुवोध्यमानापिबांधवैः ११ व्रतस्य
नियमंवापिगृहव्यापारमेवसा जारासक्त
चितातत्याजनवयौवना १२ ॥

340

हे द्विजसो वैश्य दैवयोग करके पहली ही अव
स्था में कास श्वास रोग करके पीडित होय ग्या अ
या मृत्यु की वशता कों प्राप्त होजाता भया क्या
मरजाता भया ९ तद जीवंती नामक करके तिसकी
जौनसी विवाही होई स्त्री सुंदर मध्यभाग वा
ली और आयाही है यौवन भाव क्या नवीन
युवावस्था जिसकों भर्ता के मरे होय पीछे पिता
के घर में चली जाती भई १० हे द्विजश्रेष्ठ उहां ग
ई होई नवीन युवावस्था के मद मोह करके गर्व
वाली होई हुई कैसी थीं जिसकों बांधव अ
पने माता पिता अनेक तरों की याशिक्षा भी करते
रहते थे तद भी जारों में प्रीतिवाली होती भई
११ और व्रतों के नियम जौनसे धारे होयथे जौन
से घर के काम कर्ती थी और सारे ही कर्मजा
रों में अधिक प्रीतिवाली होई हुई नवीन यु
वावस्था कर त्याग देती भई १२ ॥ ११

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रंथीकृतनासाकामेन सुश्रोणी पीवरस्तनी
धर्ममार्गं द्विजश्रेष्ठ न कदाचिद्ददर्श सा १२
तां दुःशीलां ततो दृष्ट्वा तत्पिता धर्मतत्परः अ
पकीर्तिभयाद्भीतः इत्याहात्यंतकोपवान् १४
दुष्टे पापिनि मद्वंशे सर्वदोषविवर्जिते आस
प्य जन्म किमिति क्रियते पातकं त्वया १५ या
दि ते पातकं किंचिद्धर्मिके फलमेव हि तदा
भिष्टं कुरु नाभाग्ये जहीहि तिमममंदिरम् १६ ॥

हे द्विजश्रेष्ठ सुंदर हैं श्रोणी कटिभाग जिसका और
कठोर स्तनों वाली कामदेव के वेग कर ग्रंथी होई
हुई धर्म के मार्ग कौं न देखती भई १३ तदनिसको
अत्यंत मर्यादा छोड़कर वर्तती को देखकर तिस
का पिता धर्ममार्ग में तत्पर बुद्धिवाला लोकों के
अपयश से भय कर्त्ता हुआ अत्यंत क्रोधयुक्त
होकर ऐसे तिसकों कहता भया १४ क्या हे दुष्टे
पापबुद्धिवाली समस्तदोषोंकर्के वर्जित क्या
ऐसे वंशपरंपरा से शुद्धकुल में मेरे घर जन्म को
प्राप्त होकर तूं क्यों पाप करती है क्या जिस मेरे कु
ल में आज तक कोई दोष नहि लगा था अब तूं उ
स कुल प्रधान वंश में जन्म कर व्यभिचार करणे
लगी हैं १५ हे दुष्टे खोटे काम करणे वालि तेरे
जन्म का मेरे कों इहा वस्था में ही यही होय आहे
कि लोकों में अपयश होने लगा है इस कारण से तें
रा पापनी का निवास घर में अच्छा नहि है तूं मेरा
घर छोड कर शताबी कहीं चली जा १६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
२५१

तातेनेति निष्ठुरक्रूरभाषा क्रोधात्प्रदीनवत्सषी
पितृगृहमपित्यक्त्वा साजगाम यशस्तवम्
अथ सा स्वेच्छया नारी भ्रमंती जारकांतया
वेश्यावृत्तिं समासाद्य नष्टा लज्जाविवर्जिता १८
पुलिंदः शबरो व्याधश्चांडालो वापियो गृहं
आयाति तस्याश्चेतापि प्रेम्णा भजतिस्मासतं १९
परलोकभयं विप्र स्वप्नेपि कापि देवसा नैव
संचिंतयामास वारनारी तथा क्रिपाम् २०

34)

पिता ने इस प्रकार दुर्वचनों कर कथन करी होई औ
पसे लाल होगए हैं नेत्र जिसके एसे गोहपापमतिवा
ली पिता के घर कों त्याग करय था सुख का प्रस
न ता सर्व कर चली जाती भई १७ अब घर सें निका
स जाने में पीछे से जीवंती नाम कस्त्री सुंदर युवाव
स्था वाले पना था कि सी जार की इच्छा वाली फिर
ती होई तिस कों कोई एसा नहि मिला तद वेश्या
की वृत्ति को आश्रित होकर लज्जा का त्याग क
के किसी नगर के बजार में बैठ जाती भई १८ तद
तिस ने एसी वृत्ति धारी कि पुलिंद नीच जाति के म्ले
च्छ जाति के भील लोक और नीचों सें भी नीच जो
कोई तिस के घर में आजावे तिस के साथ तिस मे
प्रेम करके सुख संभोग क्रीडा करणी एसी सो वेश्या
सें भी अधिक निर्लज्ज होकर रहती भई १९ और
हे विप्र इस वृत्ति कों आश्रित होई हुई सो कदी
परलोक का भय स्वप्न मे भी नहि चिंतन करती
भई कि मे धर्म राज को क्या करेंगी २०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकदा ब्राह्मणश्रेष्ठ कश्चिद्व्याधस्तदालयं
कृशशावकमादाय विक्रयार्थं समाययौ
सापि वारांगणा तं च शुकशावकमुत्तमं
जगृहे परमप्रीत्यार्थैः संमूल्यकं २२
तद्योग्याहारदानेन वारस्त्री नित्यमेव सा
शुकस्य पोषणं चक्रे तस्य जातकुतूहला २३
वारांगना नपत्यासा तमेव शुकशावकं
मत्वा पुत्रमिवानन्द चक्रे तत्परिपालनम् २४

हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ एक दिन तिसके घर कोई बा
धक ब्याधा फांसियों लगाय कर पंछियों को पकडने
वाला तोतेयों के बच्चे लिए होई तिन कों बेच
ने निमित्त कहीं जाता २ रस्ते मे उसके घर आ
य प्राप्त भया २१ तिसकों देख कर पास बिठाय
लिया पुछने लगी यह तोते के बच्चे का क्या ले
वेगा तद उसने कुछ मोल बनाया तो धन उस
के जोई दे करके परम प्रीति सें तोता ले लेती भ
ई २२ तो नित्य प्रति सो वेश्या तिसके योग्य आ
हार क्या उसके खाने वालि चोगसे तिसका
पालन करती भई कैसी गृह वेश्या है उत्पन्न होई है
प्रीति जिसमें और कुतूहल क्या मन की प्रसन्नता
जिसकों २३ और सो वारांगना वेश्या अनपत्य
थी क्या उसके संतान कुछ भी न हि थी तद सो ति
स तोते के बच्चे कों पुत्र की न्याई जान कर वारंवार
बडी प्रीति सें पालन करती भई २४ ॥ ९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततोसौलब्धतारुण्यःशुकोगणिकयान्वयः
रामेतिनामसततंपाठ्यतेसुंदराक्षरम् २५
रामनामपरंब्रह्मसर्ववेदाधिकंमहत् सा-
मस्तपातकध्वंसेसशुकस्तेनदापठन् २६
रामोच्चारणमात्रेणतयोश्शुकवेश्ययोः
विनष्टमभवत्पापंसर्वमेवसुदारुणम्
कदाचिद्दारमुख्योसाशुकोपिद्विजसत्तम
तावुभावपिपंचत्वमेककालिगतोततः २७

342

तिससैंउपरंत यहु तोता तारुण्यपकों प्रा-
म होएश्राक्या श्रच्छीतरां जद्वउ समर्थ
हुया तद उहु गणीका उसकों सुंदर श्रक्ष-
रों कर शुक रामनाम पढावती भई २५
यहु रामनामजोहै सोपरंब्रह्मकारूपहै
सारेवेदोंसेश्रधिकहै और सभमोंसें वडा-
है औरसारेपापोंकेध्वंसनक्यानाशकरणे
वाले रामनामकोंशुकजों तोताथ्या सोप-
ढलेताभया २६ तद रामनामके उच्चारण
करणे करके तिनोंदोनों तोते श्रोर वेश्-
श्याक्या पाप हर होजाते भये सारेहीजो
नसेदारुणभीथ्येसोभी २७ हेद्विजसत्तम
एकदिन औहुवेश्या औरऔहु तोता दोनोंही
इकठे एकसमय ही मृत होगए २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

समानेनंतनस्तोचविहितागविलपातकौ
किंकरान्प्रेषयामास चंडयान्धर्मराट्प्रभुः
ततस्ते किंकराः सर्वे चंडायास्तिवेगिनः
यमाज्ञयासमायाताः पाशमुद्गरपाणयः १
आनेतुंतोसमायाताः सर्वे विष्णुपराक्रमाः
पाशवद्धोतदाद्दृष्टापप्यितोविष्णुकिंकराः
ऊचुर्वाक्यमिदंक्रुद्धायमदूतान्दुराशयाः २

रकहै करेहेसारेपाप जिनोंने ऐसें तिनपापि
योंके निमित्त धर्मराजा चंडादियोंसे आदलेकर
दूतोंको भेजदेताभया २६ तिसधर्मराजा कीआ
ज्ञाकेहोनेसें उपरंतफासियां और मुद्गर हाथों
मे लिये होए वडे वेग करयुक्त दौडते २ तिनके
लेजानेकेनिमित्त चले आवते भये १· इतनेमें
वैकुंठसें भी विष्णुके रूपवलपराक्रमके तुल्य
देवगणों विमानों पर चढेहोए आवते भये
तो ऊपरके रस्ते मेंही सें क्या देखते भये
कि यमदूतोंनेतिनकों फासियोंसें बांधकर मुद्ग
रों सें ताडन कररहेहैं इसतरांके तिनकों
देखकर विष्णुके गण क्रुद्ध हूए २ ऐसें कह
ने भये २। ~ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विस्नुदूताऊचुः केयूयंविकृताकाराज्वलत्पा
वकलोचनाः अनंतदीर्घरोमाणोदंष्ट्रिणाश्च
र्मवाससः २२ कथमेतौमहात्मानौविनष्टा
खिलपातकौ वध्नथयथपाशेनभवंतःक
स्यकिंकराः २३ यमदूताऊचुः वैवस्वतस्यदे
वस्यसदाज्ञाकारिणोवय मयामोभीमक
र्माणोयमालयमिमौजनौ २४ यमदूतवचः
श्रुत्वाः तेसर्वेविस्नुकिंकराः जघ्नुस्तत्रप्रको
पेनवालसूर्यनिभाननः २५ ॥

विस्नुकेदूतकथनकर्तेहैं वलतीहोईअग्निकेसमा
ननेत्रोंवालेओरवडेविकरालक्याभयानकरूपों
वाले वडीयांहैं दाढां ओर अनंतलंवेहैं केशजि
नकेऐसीतसीचर्मकेवस्त्रोंवालेकौनहों कहां
सेआएहो २२ ओरनष्टहोगएहैं पापजिनकेऐ
से इनों महात्माओंदोनोंकोफांसियोंकेसाथवांध
करक्योंलेजातेहो एसेतसींकिसकेनोकर हो
हमारेप्रतिकहो २३ यतनावचनसुनकरयम
दूतकहनेलगे हमसूर्यपुत्रधर्मराजदेवताके
सर्वदाकालआज्ञापालनकरणेवालेहैं ओर
यहभयंकरकामकरणेवालेयहदोनोंजनहैं
इनकोंयमपुरीमेंलेजातेहैं २४ इतनावचन
सुनकर यमदूतोंकाहरिहीविस्नुकेकिंकर
वालसूर्यकेसमान आभाकरयुक्तमुखों
वालेक्रोधकर्केतिनकोंमारते भये २५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विस्मयमानाऊचुः अहोचित्रमिदंवाक्यंयमदूत
हस्ताच्युतं भक्तोवयिहरेरेनोदंडयोभास्क
रस्तनना १९ अहोचरित्रदुष्टानांकदाविद
यिनोतमम् यत्नादप्ययनोहिंसाऊवंतिस
ततंसताम् २० दुष्टानांकृतपापानांचरित्र
मिदमद्भुतं निष्पापावपिपीडंत्तेस्वानुमाने
नपापिवत् २१ निष्पापवत्पश्यंतिपुण्यात्मा
नोखिलंजगत् पापात्मानस्तुपश्यंतकृत
पापमिवाखिलम् २२॥

औरऐसेकथनकर्नेभयेक्याबडे आश्चर्ययुक्त
यम दूतोंकेमुखसें वचनसुनाहै क्याकीधर्म
राजाहरिकेभक्तोंकोभीदंडदेताहै १९ देखोंदु
ष्टपुरुषोंकेचरित्रजोनसें कदीभीअच्छेनहि
होतेहैं जोकोईजन्मसेंभी सर्वदाकालसत्पु
रुषोंकीहिंसाहिकर्तेहै २० करेहै पापजिनों
नेऐसेदुष्टोंकायहबडाअद्भुतचरित्रहै की
अपनेहीअनुमान कर्कें विनाविचारेनिष्पापी
योंकोभी पापीयोंकीन्याईदंडदेतेहै २१ और
जोनसे निष्पापीपुण्यात्मा पुरुषहैसो सारे
ही जगत्तकों अपनीन्याई पुण्यवानोंकीन्याई
देखतेहैं और जोनसें पापीहै सोसभनोंकों
अपनेकीन्याई कृत पापोंकोदेखतेहै २२

मा॰
ग्राम॰
३५५

355

श्रुत्वा पापात्मनां पुण्यमपि तुष्यन्ति धार्मिकाः न तु-
ष्यन्ति पातकं श्रुत्वा पापिनां पापिनो जनाः ५०
पापचर्यासमाकर्ण्य यान्तुष्यन्ति पापिनः न तु-
ष्यन्ति न तथा प्राप्य स्वर्णभारशतान्यपि ५१ अ-
हो बलवती माया महाविष्णोर्महात्मनः आत्म-
पीडाकरमपि पापं कुर्वन्ति दुर्धियः ५२ व्यास उ-
वाच इत्युक्त्वा विष्णुदूतास्ते विष्णुभक्तिपरायणाः
छित्त्वा तं तस्य योर्बन्धं बन्धनं चक्रधारया ५३

धर्म करणेवाले धर्मात्मा जो लोक हैं सो पाप करणे
वाले पुरुषों के भी पुण्य कों श्रवण करके प्रसन्न हो
ते हैं क्यों इतने पापों के करते इसने पुण्य किया
है इसका भी कछु बल होवेगा और जो पापी
लोक हैं सो पापियों के पापकर्म ही सुन कर तृप्त
होते हैं ५० पापि लोक पापवालों की पापचर्चा का
पापों का कारण सुन कर जितने क प्रसन्न होते
हैं इतनी प्रसन्नता उन कों सो भार सोने के मिल
ने कर्के भी न हि होता है ५१ देखो महात्मा महावि
ष्णु की माया कितनी क बलवान् है जिसके व
शीभूत होए दुष्टबुद्धि वाले अपने कों क्लेश देने
वाले भी पाप हैं तद भी तिन कों करते ही चलते
हैं ५२ व्यासदेव जी कथन करें हे द्विजाः विष्णु की
भक्ति में परायण विष्णु के गण ऐसें कह कर ति
न के जो न सें बंधन थे तिन कों धारा कर्कें
काट देते भये ५३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततस्ते शमनप्रेष्याः क्रुद्धाअंगारसन्निभाः
ववृषुः सहसा तत्र ज्वलदंगारसंचयं ४४ वि
ष्णुदूतवचः श्रुत्वा चंडः कोपसमन्वितः उ
वाच ततस्ततो विप्र विष्णुदूतान्महाबलान् ४ ५
चंड उवाच विहितेन त्वमध्येमं श्रुकं वेश्यां च
पापिनीम् नेतुं स्वयं समायातास्त्वत्यद्भुतमि
वाभवत् ४६ नूनमेतौ यदा नेतुं स्वयमिच्छथ
सत्तमाः तदा कुरुत संग्राममस्माभिः सह
संप्रति ४७ ॥

तिसके उपरंत धर्मराज के दूत क्रोधकों प्राप्त हो
कर अंगारों की न्याई होई हुए शीघ्रही जलते २
अंगारों के समूहों को वर्षते भये ४४ और विष्
णु के दूत का वचन श्रवण कर चंड क्रोध कर संयु
क्त होए याहोया हे विप्र महाबल पराक्रमवा
ले विष्णु के दूतों प्रति कहता भया ४५ चंड क
हने लगा जे कर तुम पापी तोते और पापि
ने वेश्या के ले जाने कों आप हो तद ए भी बडे आ
श्चर्य की बात होई है क्योंकि एसी भी पापी तुम
में ले जाने हूए तद तुम आपकौं किसीने करणा
है ४६ हे सत्तमाः निश्चय कर्कै तुम इन के
ले जाने कों आपहो तद हमारे साथ युद्ध
करे उससें उपरंत फिर ले जाना ४७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा यमदूतास्ते बलिनो विविधायुधाः
सिंहनादैर्दिशः सर्वाः पूरयामासुरुद्धताः
विष्णुदूता महात्मानः सुप्रकाशादयस्तथा
शंखनादैः सुललितैः शब्दपूर्णामयं जग
त् ५६ ततो याम्यैर्धनुर्मुक्तैर्महाद्रूतैः शिलायु
धैः छादिता विष्णुदूतास्ते संग्रामे भृशदारुणैः
५७ मुशलानि विविधानि केचित्केचिन्महार
वे केचिन्मुद्गरशस्त्राणि केचित्कार्मुकाणि वै तथा ५८

इस प्रकार कथन करकैं यमके बडे बलवान् अ
नेक नरोंके शस्त्रोंवाले उन्मत्त नद सिंहकी न्याई
गर्जना करकैं सारी यांही दिशां पूर्ण कर देते भये ५५
और विष्णुके जो दूत हैं महात्मा सुप्रकाशादिसेव
बहुत सुंदर आनंद देनेवाले शंखोंके शब्द क
रकैं सारे जगत् कोही शब्दमय कर देते भये ५६
तद तिससें उपरंत यम राजके महादूतोंने ध
नुषों करकैं त्यागे हुए अत्यंत कठोर देहको भे
दन करनेवाले बाणों करकैं संग्राममैं विष्णुके
दूत आच्छादन कर दिये ५७ और कोई तो त्रिशू
लोंको त्यागते भये गैर कोई उस महायुद्धमे
बर्छियोंका प्रहार करते भये और कोई २ क्रो
ध करके मुद्गरोंसें चक्रोंसें प्रहार करते भये
५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेऽनेकानि महास्त्राणि विसृजन्तो महाभटाः स
र्वाणि चूर्णयामासुर्गदा प्रहरणादिभिः ५२ त
तो भोगवतेर्नैर्याम्यानां चक्रधारया केषांचि
च्चरणाशिछन्ना केषांचिद्बाहवस्तथा ५३ केचि
च्छिन्नशिरसः केचिन्निर्भिन्नवक्षसः स्रवद्र
क्तात्तिनाः केचिद्याम्याः पेतुर्गजासवः ५४
छिन्नैकचरणाः केचित्केचिच्छिन्नैकपाणयः
संत्यक्तसाहसा याम्याः संग्रामाच्च प्रदद्रुवुः ५ ५

तिन यमदूतों करकैं त्यागे होए जो वडे २ अस्त्र तिन
कौं वडे वलवान् विष्णु के अपने गदादि शस्त्रों करकैं
चूर्ण करदैते भये ५२ और भगवान् के दूतों ने कि
तनेक यमदूतों के चक्रधार करकें चरण काटदिये
और कितनों कियां वाहवां हाथ काटदिये ५३
कितनेक काटे होए शिरों वाले कितनेक भेदे हो
ए वक्षस्थलों वाले कितनेक यमके दूत जिन
सें रुधिर चलाकरता ऐसे प्राणों को त्यागकर
पृथिवी ऊपर दिगपडते भये ५४ और कोई
क ऐसे है जिनका एक हाथ कटागया कोईक
ऐसे जिनका एक पाद काटागया और अनेक
प्रकारों के छिन्न भिन्न अंगो वाले युद्धका हठ
त्यागकर संग्रामसें यम दूत भागकर चले
जाते भये ५५ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३५९

नानालोकान्ततो दूतान्पलायनपरायणान्
प्रविवेश रुषा चंडः संग्रामे धृतमुद्गरः ५९ य-
मदूतगणाः श्रेष्ठश्चंडोऽत्यंतप्रतापवान् ताड-
यामास सहसा तन्मुद्गरैर्विष्णुकिंकरान् ५० अ-
थ ते भगवद्दूताः शिताशुगनिवर्षणैः ववृषु-
स्तरसा क्रुद्धाः सचंडं चंडविक्रमान् ५८ मुद्गरे-
णानतः श्रेष्ठो विष्णुदूतान्पृथक्पृथक् ताडया-
मास विगलद्रक्तसंसिक्तविग्रहः ५६ ॥

भागनमें तत्पर होए हुए यमके दूतोंको देख-
कर चंडनामा दूतोंका स्वामी बडा क्रोध करकें
मुद्गरको उठायके संग्राममें आय प्रवेश क-
र्ता भया ५९ यमके दूतोंमें श्रेष्ठ जो अत्यंत प्र-
तापी चंड सो अकीन रांसे मुद्गरोंके साथ वि-
ष्णुके किंकरनौकरोंकों ताडन कर्ता भया ५०
इससे उपरंत सो भगवानके दूतगण अप-
ने तीक्ष्णधारा वाले शस्त्रोंकी वर्षा करकें क्रुद्ध
होए हुए चंडक्या अत्यंत नहि महारसो योग्य
पराक्रमवाले चंडनामे दूतोंके स्वामिकों ताड-
न कर्ते भये ५८ नर ओह चंड विष्णुके दूत-
गणोंको मुद्गरके साथ देहसें चले या कर्ता है
ओह धिर तिसकरकें संसिक्त क्या भीगा हुआ है
देह जिसका एसा सो तिनकों भिन्न २ व्यापक-
कों ताडन कर्ता भया ५६ ॥

346

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चंडेन निहतास्तेन हता भागवता युधि त्व
कसूनाए पृष्ठभागं स्वप्रकाशस्तवै ययाः ९०
स्वप्रकाशस्ततः क्रुद्धो जपापुष्पनिभेक्षणाः
प्रविवेश रणे योद्धुं गदापाणिर्महाबलः ९१
गदया मुद्गरं तस्य स्वप्रकाशो महाबलः ता
डयामास संक्रुद्धो विस्मृत्य पराक्रमः ९२
मुद्गराच्चंड हस्तस्थात्लोकानभयप्रदात्
समुत्पन्नोनलो वह्निः ससमः प्रतिगंधिमान् ९३

युद्ध के विषे भगवान के हत तिस चंडने नी
उन करे होय धैर्य की छोड कर स्वप्रकाश
की पीट पीछे जाय कर स्थित होजाते भये ९०
तद और स्वप्रकाश क्रोधकों प्राप्त होकर ज
पाके पुष्पों की न्याई लाल नेत्र कर्के गदाकों
हाथ लेकर महाबलि युद्ध करणे कों रणा
के मध्य में प्रवेश कर्ता भया ९१ सो महाब
ल पराक्रम वाला स्वप्रकाश अपने गदा के
साथ तिसके मुद्गर कों विस्मके बराबर प
राक्रमी ताडन कर्त्ता भया ९२ देखते लो
कों की भय देनेवाला चंडके हाथमें स्थित
जो मुद्गर जिससे दुर्गंधि और भ्रमकर युक्त
अग्नि उत्पन्न होता भया ९३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुमुद्गरेण चंडेन ताडितास्य चैव गदा स्फुलिंग
वर्षणं सयो मुमोचात्यंत भीतिदं ततः कोपे-
न चंडो सौ तेनैव मुद्गरेण वली ताडयामास
विप्रर्षे सुप्रकाशं महावलं ९५ सुप्रकाशस्त
तो विप्रव्यथां विस्मृत्य कोपवान् गदया ताड
यामास चंडं शमन किंकरम् ९६ तया प्रता
डितश्चंडस्तत्र रक्तः परिस्रुतः पपात मूर्छि-
तो भूमौ वालार्क इव जैमिने ९७ ॥

347

अपने मुद्गर के साथ जिस समय इस चंडने सुप्र
काश को गदा कों ताडन करा तद अत्यंत भयं-
कर अग्नि के किणकयों की वर्षा कों त्यागता
भया क्या उनके आपसमें ताडन होने करकें अ
ग्नि के किणके निकलते भये ९४ फिर क्रोध के
साथ पहु चंड उसी अपने मुद्गर के साथ हे विप्र
र्षे महावली सुप्रकाश को ताडना करता भया
९५ हे विप्र जद उसकों मुद्गर के साथ मारा तद
सुप्रकाशने क्या करा अपनी पीडा कों विसार दि
या क्या ऐसा जानता कि मेरे कों कछु लगी भी नहिं
क्या शमन क्या धर्मराज के किंकर कों गदा के-
साथ मारता भया ९६ तद उस समय तिस गदा के-
साथ ताडना करा हुया चंड रुधिर के साथ शुकड़-
या २ वाल सूर्य की न्याईं ऐसा राती लाल रंग के देह
वाला मूर्छा कों प्राप्त होकर पृथिवी पर गिरप
डता भया ९७ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

याम्यदूतास्ततः सर्वे चंडमादाय मूर्छितं हा
हाकारमकुर्वतो मुहुर्भ्रष्टाः सत्वरद्रुताः ६८ विष्णु
दूतास्ततो विष्णुविष्णुतुल्यपराक्रमाः जयश
ब्दान्समादध्युर्जैमिने द्विजसत्तम ६९ ततोर
थेसमारोप्यारांजहंसप्रभ्रुतेवनौ जग्मुर्विष्णुपु
रं सर्वे सहसाकारवर्त्मना ७० विष्णुभक्तौ म
हात्मानौ विनष्टाखिलपातकौ प्रापतुर्वै म
हाविष्णोः सारूप्यं द्विजसत्तम ७१ ॥

तद उस समय यम के दूत सारे ही मूर्छित हो
गए चंडको उठाय करके युद्ध से भ्रष्ट हो पराई
दौड़कर चले जाते भये ६८ हे विप्र तिनके ता
ले जाने से पीछे विष्णु के तुल्य पराक्रम वाले
विष्णु के गण हे जैमिने द्विज विजय होन की
प्रसन्नता करके शब्द बजाते भये ६९ उससे उप
रंत राजहंसों कर युक्त जो अति सुंदर विमान
तिसपर बिठाय के तिन दोनो को शीघ्र आका
श मार्ग करके विष्णु के पुर को चले जाते
भये ७० हे द्विजसत्तम नाश हो गए हैं सारे
पाप जिनके ऐसे जो दूर विष्णु के भक्त दोनों
महाविष्णु की सारूप्य मुक्ति प्राप्त हो जा
ते भये ७१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३५८

यामदूतास्ततस्तेन शोणितौघपरिप्लुताः यम
स्य सन्निधिं जग्मुः क्रंदंतो व्यथयाकुलाः १२ ता
न्गतान्यमप्रेक्ष्यामुक्तकेशान्हतप्रभाः सूर्या
पुत्रं समदिष्यपयहत्वुलक्षणाद्द्विज १३ यम
दूताऊचुः सूर्यपुत्र महाबाहो नदास्ताकारि
णोवयं तथापिस्मद्दैनेष्वकृता दुर्गतिरीदृशी
महापातकिनौ श्रेष्ठौ प्रभोयद्यपिनौखलौ
रामनामप्रभावेण गतौनारायणालयं १५

348

तिससे उपरांत ओह सारे ही यमके दूत रुधिर
के साथ भरे होए पीड़ा करकें रोते पिटते यमके
पास चले जाते भये १२ तहां जाके यमके दूता
खुले होए केशों जिनके दूर होगई प्रभा जि
नकी ऐसे ओह सूर्यके पुत्रको सुनायकर हे
द्विज जो ऊछ कहते भये सो श्रवण कर १३
यमदूत कहने लगे हे सूर्यके पुत्र महाबाहो
हम तो मारी आज्ञाको मानने वाले हैं तद भी
विस्मके दूतोंने एसी दुर्गति करी है १४ हे प्र
भो निश्चय करकें ओह महापातकियोंमे श्रे
ष्ठ दोनो रामनामके प्रभाव करकें नाराय
णके मंदिरको चले गई है १५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भवताद्दंडनीयायेदुरात्मानः कृतेनसः तेपि
विस्मृत्य यांति प्रभवंतव किंनदा १५ नास्माकं
विस्मृते तैः कृतापरिभवाऽस्मे नवैव केवलं
नाथ यतस्ते किंकरावयं १६ यम उवाच स्फु
तेयद्यपि हिनावैरामनामत्तरद्वयम् दंडनी
यौतदानोमेतयोर्नारायणः प्रभुः १७ संसा
रिनास्तितत्पापंयन्नामस्मरणैरपि नयाति
संत्तयं सद्यो हठं मृगाउत किंकराः १८ ॥

हे राजन करे हैं पाप जिनोंने ऐसे दुरात्मा लोक जि
नकों तुमने दंड देणा योग्य है औ हमभी रामनाम
के प्रभाव करके विस्मृत करकों चले हैं तो तुमा
री प्रभुता क्या रही १५ औरजौन से हम तुमारे
किंकर है हमारा जो उनोंने तिरस्कार करा सो
हे नाथ तिरस्कार तुमारा हुया है हमारा तो न
हि है १६ इतना वचन दूतों का सुनकर्के धर्म
राज कहने लगा हे दूतो जिन पुरुषोंने रामना
मके दो अक्षर श्रवण भी करे है औ हमेरे सें ना
हि दंड करे जाते है उनोंनेतो कितना काल रा
मनाम जपा उनके स्वामी नारायण जी है १७
हे दूतों मेरे सें श्रवण करो ऐसा संसार मे कोई पा
प नहि देखा है जो राम नाम के स्मरण करके
क्षीण नाहि होता है अर्थात् जितने क पाप है सो
सारे ही रामनाम के जपणे सें नष्ट हो जाते
है १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३५९

येमानवाः प्रतिदिनं मधुसूदनस्य नामानि घोर दुरितौघविनाशकानि भक्त्या स्मरंति विबुधप्रकराचितस्य ते पापिनोपि च भटा मम नैव दंड्याः ७६ गोविंद केशव हरे जगदेक विष्णो नारायणाश्रितजनवत्सलमाधवेति भक्त्यावदंति पुरुषाः सततं त्रिलोके दंड्या न ते मम भटाश्च पापिनोपि ८० लक्ष्मीपते सकलपापविनाशकारिन् श्रीकृष्ण केशिमथनाच्युत देहि दास्यं एतद् वदंति भुवि ये सततं मनुष्यास्ते पापिनोऽपि न भटा मम दंडनीयाः ८१

जौनसे पुरुष पृथिवी लोक में घोर पापों की समूहों को विनाश करणे वाले जो देवतेयों के समूहों करके पूजित मधुसूदन भगवान् तिन के नामों को जो स्मरण करते हैं हे भटा ओह पापी भी पुरुष मेरे कों दंड करणे योग्य नहि ७६ सो कोन से नाम हैं लि॰ हे गोविंद केशव हरे हे जगदीश विष्णो हे नारायण शरणागत जो भक्त पुरुष सो हैं प्यारे जिन कों हे माधव निरंतर पृथिवी लोक में जो पुरुष इन नामों कों दंड करणे योग्य नहि है ८० हे लक्ष्मी के पति सारे पापों के नाश करणे वाले हे श्री कृष्ण को श्री दैत्य के मारणे वाले हे अच्युत मेरे कों अपनी भक्ति देओ पृथिवी लोक में जो इन में नामों को कहते हैं सो पापी भी मेरे कों नहि दंड करणे योग्य है ८१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दामोदरेश्वरसरोजमवृंदवंद्य श्रीवासुदेवपु
रुषोत्तममाधवेति येषांवसंतिवदनेषुसदै
वश्रेष्ठान्हुनानमाम्यहमपिप्रतिवासरंतान् ८२
नारायणस्यजगदेकपतेर्मुरारे र्यत्रांसवित
मतिरार्द्दिनरागांचयेषां तेषामहंसततमे॰
वभटाग्रधीनः येविस्नुपूजनपराहरिभक्त
भक्ताः ८३ एकादशीव्रतपराकथयैर्विही॰
नायेविस्नुपादसलिलंशिरसावहंति हूनाग्र॰
धीनमखिलंजगदेवतेषांयेभुंजतोभगवतोम
धुसूदनस्य ८४ ॥

और हेदामोदरईश्वर सरोजमोंके समूहों करकें
वंदनाकरणोयोग्यहे श्रीवासुदेव हेपुरुषोंमे
श्रेष्टमाया लक्ष्मीके धनस्वामिन् एह नामजि
नके मुखमेंसदा वर्तमान रहतेहै हेहतोर
जिनों श्रेष्टभक्तपुरुषों रैतकेरोज नमस्कार
कर्ताहूं ८२ औरजोकोईपुरुषजगतके एक
पतिमुरकेशत्रु नारायणकी पूजामें प्रीतिवा
ला मनजिनका औरजोविस्नुकेपूजनकरणे
वाले भक्तोंके भक्त जौनसेहै हेभद्रा हूनाति
नके अधीन सर्वदाकालमें रहताहूं ८३ और
जौनसें विस्नुकेचरणाम्रुतकों शिरकरकें धार॰
णकर्तेहै हेहूनातिनके अधीनसारा जगत
है और जौनसें भक्षणकर्ते मधुसूदनजी
का सारे पापोंके विनाश करणेवाला जोने
वेद्यतिसकों खातेहै ॥

सा॰
ग्राम॰
३५॰

350

नैवेद्यशेषमखिलाघविनाशकारि येऽकर्णों-
योश्च शिरसि च्छदनं तुलस्याः निर्म्यं वहंति विभ-
टा प्रणामाम्यहं तान् ८५ ये मातृतातचरणा-
र्चनतत्परश्च ये ब्राह्मणार्चनरता गुरुसेव-
काश्च ये दीनलोकहृदयानि थिपूरिताशाः
तेषामहं सततमेव भटा अधीनः ८६ ये स-
त्यवाक्यकथनेषु सदानुरक्ताः सज्जनदा
श्शरणागतपालकाश्च पश्यंति ये च विष-
वत्सततं परान्नं तेमानवा मम भटा न हि दंडनी-
याः ८७ ॥

सारे पापोंके विनाश करणेवाला जो नैवेद्य ति-
सकों खाते हैं और निर्माल्य शेषकी तुलसीं-
को शिरमें जो कानोंमें धारण करते हैं हे भटाः
तिनकों मैं नमस्कार करताहूं ८५ और जोनसे
माता पिताके चरणोंकी पूजा करणेमे तत्प-
र हैं और ब्राह्मणोंकी पूजामें तत्पर है और गु-
रुकी सेवा करणेवाले जो है और दीन अना-
थोंके देखनेमें दयावाला मन जिनका और
अभ्यागतोंकीयां आशापूर्ण करणेवाले है
भटा तिनके अधीनमें सर्वदाकाल हूं ८६
और जोनसें कोई सर्वदाकाल सत्य कहनेमें
प्रीतिवाले है और साधुयोंको मत देते हैं श-
रणागतोंकी रक्षा करणेवाले और पराये
अन्नकों विषकी न्याई देखके त्यागते हैं हे भ-
टा ओह मेरे दंडके योग्य नहि है ८७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

येचान्नदाननिरताः सलिलप्रदाश्चभूमि
प्रदानिखिललोकहितैषिणश्च येवृत्ति
हीनजनवृत्तिकराः प्रशांताः हतानतेऽ
पि च कदाममदंडनीयाः ८८ ॥

और जौनसे कोई अन्नदान करणेमें तत्पर हैं
क्या जिनके सदाव्रत अन्नके लगे होए हैं
और जौनसे कोई जल दान करणे वाले हैं
क्या जिनोंने निर्जलस्थानोंमें खूहे नला वा
उलीआं धर्मशाला अथवा खूहे ऊपर जला
के निकालने वास्ते साधन बना रखे हैं रास्ति
जांउंल और भूमिके देनेवाले हैं और जौन
से कोई सारे लोकोंका हित प्यार करणे वाले
है और वृत्ति क्या है उपजीविका तिस करकें
हीन पुरुषों को उपजीविका लगाय देने वा
ले क्रोध लोभादियोंसें रहित जो है ओह मे
रे कों कदापि काल दंड करणे के योग्य नहि
है ८८ ॥ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३५१

येत्तानिपोषरणापरप्रियवादिनश्च येदंभको
पमदमत्सरहीनचित्ताः येपापदृष्टिरहिता
विजितेंद्रियाश्च येमानवापरहितेषुसदानु
रक्ता स्तेषामहंनविदधामिकदापिचर्चाम् ८९
व्यासउवाच एवंप्रबोधितास्तेहियमेनय
मकिंकराः ज्ञातवंतोजगद्भर्तुः प्रभावम
तुलंहरेः ९०

औरजोनसेकोई अपनेजातिवालेलोकोंकी पा
लनामें रहतेहै औरसभकों हितप्यारके वचन
कहने वाले और दंभक्रोधलोभमदमत्सरनाक
कें हीनमनवाले और पाप दृष्टिकरके रहित॰
और जिनोनेदुर्व्यसनों से इंद्रियोंको जीतिया
हुयाहै और जोनसेंपुरुषपरायेहितप्यार
करणेमें तत्पर सर्वदाकाल रहने वाले ति
नकीमें हेदूतो चर्चा भी नहिकर्ताहुं देउकर
णतो वडी वातहै ८९ इतनीकथाश्रवण
करायकर पीछेसें फिरसें फिर व्यासदेवजी
कथनकर्तेभये हेद्विजसत्तमइसप्रकारके
वचनों कर ज्ञान वान कराए होए यमकेकिं
करजगतकेभर्ता पालनकरणेवाले हरि वि
स्नुके अतुलप्रभावकों जानते भये ९० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विस्नोर्नामानि विप्रेंद्र सर्वदेवाधिकानि वै ते
षां मध्ये तु तत्त्वज्ञै राम नाम परं स्मृतं ।१ रामे
त्यक्षरयुग्मं तु सर्वमंत्राधिकं द्विज यदुच्चा
रणमात्रेण यांति पापाः परां गतिं ।२ राम
नाम प्रभावं हि सर्वदेवैः प्रपूजितं महेश्व
रश्च जानाति नान्यो जानाति जैमिने ।३ वि
स्नोर्नाम सहस्राणां पठनाल्लभते फलं त
त्फलं लभते सम्यग्रामनाम परो नरः ।४

हे विप्रो मैं श्रेष्ठ विस्नु के नाम सारे वेदों के मंत्रो
सें अधिक हैं क्या श्रेष्ठ हैं परंतु तिन के मध्य में भी
तत्व के जानने वालेयों ने राम नाम बड़ा श्रेष्ठ क
हा है ।१ हे द्विज राम यह जो न सें दो अक्षर
हैं सो सारे मंत्रों से अधिक श्रेष्ठ हैं किस तरां।
कि जिन के उच्चारण मात्र करके पीडायुक्त पा।
भी परम उत्कृष्ट गति कों प्राप्त होते हैं ।२ और
हे जैमिनि राम नाम का प्रभाव सारे इंद्रादिक
देवतयों करके पूजा कराइया है और इसकें।
प्रभाव कों महादेव जी जानते हैं और किसी।
कौं खबर नहिं है की क्या इसके जपने सें होता
है और क्या यह फल है ।३ हे द्विज सत्तम वि
स्नुजी के हजार नामों के पढने से जो फल है सो
फल राम नाम के स्मरण से होता है ।४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३५२

352

अहोविचित्रंमनुष्याणांविचित्रमिदमुच्यते रा
मेतिमुक्तिदंनामनस्मरंतिदुराशयाः १५
वक्तुंनास्तिश्रमोऽल्पोपिश्रोतुमत्यंतसुंदरं
तथापिरामनामेतिनस्मरंतिदुराशयाः १६
अत्यंतदुष्करलभ्यापिमुक्तिर्जगतिमानवैः
लभ्यतेरामनाम्नैवकर्माणिकिमतःपरं १७
तावत्तिष्ठंतिपापानिदेहेषुदेहिनांद्विज रा
मेतिनामवैयावन्नस्मरंतिसुखप्रदम् १८

हे द्विज मनुष्यों का कैसा आश्चर्य करणे वाला
कर्म है उनके वास्ते विचित्र यह वात कहते हैं क्या
राम यह जो मुक्ति के देने वाले दो अक्षर है उन
कों दुष्टमन वाले नहि स्मरण कर्ते है १५ जिन
के वोलने में थोडा भी श्रम थकेमा नहि होता
है और श्रवण करणे में अति सुंदर है तद भी दु
ष्टमन वाले रामनाम कों नहि स्मरण कर्ते है
१६ देखो मानवों ने अत्यंत कष्ट वाले तपों क
र के भी दुःख कर प्राप्त होने योग्य यह जगत में
मुक्ति प्राप्त होती है सो मुक्ति राम नाम के जपने
में सहज होती है तो इस से परे और कौन श्रे
ष्ठ कर्म है पर इस कों भी नहि उच्चारण कर्ते है
१७ और हे द्विज देह धारियों के देह मे इतना ही
चिर पाप वने रहते है जितना काल सुख के
देने वाले रामनाम कों नहि स्मरण करा १८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्राद्धे च तर्पणे चैव बलिदाने तथोत्सवे यज्ञे दाने व्रते चैव देवताराधनेषु च ११ अन्येष्वपि च कार्येषु वैदिकेषु विचक्षणाः स्मरेत्सकलश्रेयः रामेति नाम भक्तितः १० नमो नारायणायेति मंत्रमोंकारपूर्वकं पठत्येकेन मंत्रेण हरिपूजनकृन्नरः सर्वान्कामानवाप्नोति प्रसादाच्चक्रपाणिनः १ मृत्युकाले द्विजश्रेष्ठ रामेति नाम यः स्मरेत् स पापात्मापि परमं मोक्षमाप्नोति जैमिने २ ॥

श्राद्धकर्म में पितृतर्पण में बलिवैश्व दान में और जौनसें कोई उत्सव है यज्ञ दान व्रतानुष्ठान और देवता का आराधन इन सभनों कर्मों में ११ इनसे भिन्न जौनसें कोई वाकी के कार्य हैं वेद विहित तिनों सभनों में विचक्षण सभ तरों की कार्य सिद्धि चाहने वाला भक्ति प्रीति से रामनाम कों आद सभ के स्मरण करे १० और ओं रामाय नमः इस षडक्षर मंत्र कर के एक वार हरि की पूजा करणे वाला सभनों कामों को प्राप्त होता है १ हे द्विजश्रेष्ठ जो कोई मरणे के समय राम नाम कों स्मरण कर्ता है सो हे जैमिने पापात्मा भी मोक्ष कों प्राप्त होता है १० २ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रामेतिनाममात्रायांयेस्मरंतिमनीषिणाःस
र्वसिद्धिर्भवेत्तेषांयात्रायांनात्रसंशयः ३ अर
ण्येप्रांतरेवापिश्मशानेपिभयानके राम
नामप्रभावेणविपत्तेनतापदोद्विज ४ राज
द्वारेतथायुद्धेविदेशेदस्युसम्मुखे दुःस्व
मदर्शनेचैवग्रहपीडासुजेमिते ५ औत्पा
तिकेभयेचैववह्निरोगभयेतथा रामना
मस्मरन्मर्त्योनाशुभंप्राप्नुयात्कवित् ६ ॥

राम इसनामकों यात्राकेसमयजोमनीषी बुद्धि
मान् स्मरणकरतेहै तिनकों उसयात्रामें सभ
तरांकीयां सिद्धियां होतीयांहै इसमें संशयन
हिंहै ३ औरगहनवनमें औरबडी हरस्थून्य
जगोमे भयानक श्मशान भूमिमें हेद्विज
रामनामकेस्मरणकरणेकेप्रभावसे किसी॰
स्थानमेभीआपदादुःखक्लेशनहिंहोतेहै ४
औरराजाकेद्वारमे युद्धभूमिमेविदेशमेंजाके
चोरोंकेसन्मुखखोटेस्वमकेदर्शनमें ग्रहांके
अष्टम चतुर्थ द्वादशस्थानादियोंमे स्थितिके
वशसें जोपीडाहै तिसमे ५ हेजैमिते और उ
त्पातोंकेभयोंमे अग्निकेभयमेमहामर्य्यादि
रोगकेभयोंमे रामनामकोंस्मरणकर्ताहुया
मर्त्यकदापिकालकहींभी अशुभकोंप्राप्त
नहिंहोताहै इसमे संशय नहिंहै ६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रामनामद्विजःश्रेष्ठसर्वाशुभयनाशनं का
मदंमोक्षदंचैवस्मर्तव्यंसततंबुधैः ७ रा
मेतिनामविप्रर्षेस्मर्यतेचक्षणोक्षणो सफ
लःसैवकालःस्यात्सत्यमेवमयोच्यते ८
रामनाममृदुस्वादुभेदज्ञारसनाबुधा
तन्नामरसनेस्याद्धिमुनयस्तत्वदर्शिनः ९
सत्यंसत्यंद्विजश्रेष्ठसत्यमेतन्मयोच्यते
स्मरन्तोहरिनामानिनावसीदंतिमानवाः १०

हे द्विजश्रेष्ठ रामनामजो है सो सारे अशुभपा
पोंके विनाश करणेवाला है और कामनाके देने
वाला मोक्षकों देनेवाला बुद्धिमानों नेसर्व
दा काल स्मरण करणे योग्य है ७ हे विप्रर्षे
राम यह नाम जिस २ क्षण में स्मरण क
रीदा है सोई काल सफल होता है यह वा
न सत्य मैने कही है ।।८ राम राम नाम
जो मधुरस्वाद वाला रस इसका भेद जानणे
वाले जो रसना है जिह्वा जिसकों तत्वदर्शी
मुनि लोक रसना कहते है की यह जिह्वा है
।।९ हे द्विजश्रेष्ठ मैने तुमारे तांई सत्य २ क
थन करा है क्या हरिके नाम स्मरण करणे
वाले पुरुष कदी देख नहीं पाते है ।।१०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जन्मकोटिदुरितक्षयमिच्छुः संपदं च महतीं भुवि मर्त्यः। विष्णुनाम सततं द्विज भक्त्या मोक्षदायि मधुरं स्मरति स्म ॥१॥ इति श्री राम नाम माहात्म्यम् ॥

जो कोई पुरुष इस पृथिवी लोक पर पिछले क्रोड जन्मों के पाप हरकरणे की इच्छा करे और वहुत संपदा की इच्छा करे हे द्विज सो पुरुष सर्वदा काल मोक्ष के देणे वाले मधुर जो विष्णु के नाम हैं तिन का स्मरण करे ॥१॥ यह राम नाम का माहात्म्य समाप्त हुआ ॥ ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भक्तमालायां राममंत्रमाहात्म्ये तन्नायकराज्ञः
कुलशेखरस्येतिहासमाह अथात्र संप्रव-
क्ष्यामि भक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं नीलाचले महा
त्माभूद्राजा वै कुलशेखरः १ सीतारामजपा
सक्तः सीतारामप्रपूजकः सीतारामपदद्वंद्वे
षट्पदीकृतमानसः २ दयाधर्मरतो नित्यं
सदा व्रतपरायणः आमध्याह्ने राजकर्म कृ
त्वा रामं हृदि व्रजन् ३ ततोपराह्णे शुश्राव रा
मायणमनन्यधीः तस्य पौराणिकस्तत्र रामा
यणकृज्जीवितम् ४ ॥

अब भक्तमाला ग्रंथमें राम नाम मंत्र के माहात्म्य
प्रकट करणेवास्ते राजा कुलशेखर का इतिहास
कहते हैं अब तो और उत्तम भक्ति के माहात्म्य की
कथा कथन कर्ता हूं जगन्नाथपुरी के पास नीला
चल में महात्मा एक कुलशेखर नामक कर्के रा
जा होता भया १ सीतारामजी के मंत्र जपने में
तत्पर मन वाला और सीतारामजी की पूजा क
रणे वाला और सीतारामजी के दोनों चरणक
मलों में षट्पद भ्रमरे की न्याई किया है क्याल
गाया है मन जिसने २ दयाधर्म में नित्यं प्रति रत
रहता था और सर्वदा काल व्रत नियमों में तत्प
र मन वाला रहता और दिन में मध्याह्न तक हृदय
मे सीतारामजी को भजते २ राज्य के काम करणे इति
ससे उपरंत तीसरे पहर में एकाग्र मन वाला होके
रामायण की कथा श्रवण कर्ता भया तो रामचंद्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सीतारामस्य दुःखोदिसीतापहरणादिकं जा-
तं न श्रावयामास जानन्नैराजनिश्चयम् ५
पौराणिकस्त्वेकदा तु क्लिष्टो भूज्ज्वररोगतः
तत्पुत्रः श्रावयामास राज्ञो रामायणं तथा
रावणेन कृतं सर्वं श्रावयामास पुत्रकः
श्रुत्वा तु दुःखदं वाक्यं सीतायाहरणाथि-
कम् ७ ॥

नीके निमित्त जीवितकों त्याग देनेवाले तिस
कों जानकर पौराणिक कथा कहनेवाला ४
ओह पंडित राजाका निश्चय जानताहुया क-
थामें यह वात नहि श्रवण करावता भया कि
रामचंद्रकों वनवास हुया ओर उनकी सी-
ताकों रावण छल करकें हर लेगया क्योंकि
जिस समय राजा ने यह वात सुननी हैतो वि-
ना विचारे उठदौडेगा कि मैं उस सीताकों ल्याव-
ताहां इसवास्ते ५ ओह पौराणीक पंडित ए-
क समय ज्वर रोग करकें पीडित थ्या होयआ
हूया कथा कहनेकों राजाके पास नहि जास-
कता भया तद उसका पुत्र राजाकों जाक-
र कथा श्रवण करावता भया ६ तो पंडितका
पुत्र इस कथामैं वन वास जानेकी सारी क-
था सुनाय देताभया तो तद उसने यह का-
था कही रामचंद्रजी वनमैं गए उहांसें रा-
वण सीताको हर लेगया ऐसा दुःखदा-
ई वचन सुन कर ७ ॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गृहीत्वा खड्गमुत्थाय शीघ्रमश्वं ममानय आ॰
याहं रावणं हत्वानयिष्यामि च जानकीम् ८
मयि जीवति मे माता सीता रक्षोहृता भवेन्न
ग्रहो धिग् गत्वा मामथ्येन्नु क्रोश्वं सत्समाहृहत्न
धावयित्वाथ मुख्येनं पयोनिधिसमीपगः
पुनरश्वं कशाघातेनैस्मुद्रे ऽपातयद्रुषा ९

खड्गहाथमेंलेकर उठ खडा हुआ और क्रोधसें
कहनेलगा शीघ्रमेरा घोडा ल्याओ आजही इक
ला रावणकोंमार कर जानकीकों ल्याउंगा प
र इतना विचार नहिकिया कीपहवात बहुत
चिरकालकीहैं और रावणकों मारकर रामचं
द्रजी सीताकोंलेकरगए हुएहैंन और मैंकि
सतरां समुद्रके पारजाउंगा इतनी रामचंद्र
जीमेउसकी भक्तिथी किउनका दुःखसहनके
नहिसहारसकताभया ८ उठकर्के उद्योगयु
क्त हुआतद पासकेलोकोंनेसमझाया भी॰
पर तिनकों क्याकहताभया मेरेजैसे पुत्रकेजि
देमेरीमातासीताकोंराक्षसहरकेलेजावे व
डाआश्चर्यहै मेरेकों धिक्कारहै ऐसेवाक्य क्रोध
सें अनेक कहकर झट पट घोडेपर असवा
र होकर्के समुद्रके किनारेपर जाय खडा हु
याफिर घोडेकों कमचियोंसें ताडनकरक्रोध
वाला हुया पृथ्वीपर क्या आगा पीछा कुछभी न
हिविचारा और घोडेकों समुद्रमे सटदिया ९

सा॰
ग्राम॰
३५९

अश्वेनैवचपाथोधतीर्त्वाहत्वाहिरावणं: सी
तामयानयिष्यामीत्येवानेश्चितमानसः ॥
अथैवंनिश्चयेतस्यज्ञात्वाश्रीरघुनंदनः ल
क्ष्मणेनसहभ्रात्रासीतयासहनौस्थितः १२
आविर्बभूवसहसाकर्णधारेणसेतुनः
आविर्भूयसमुद्रेतंकर्णधारोभवेन्नृपम्
१३ किमर्थंयासित्वंकोमं हत्वारावणमाहवे
सीतांनीतासहभ्रात्रायास्यसेयोध्यापुरींन्नृपम्
१४

घोडे पर चढे आ होए आ समुद्र कों उलंघ
न करकें युद्धमें रावणकोमारकर आजही सी
ताकोंल्यावोंगा इसप्रकार दृढ निश्चय जाना
कर श्रीरघुनंदनरामचंद्रजी भ्राता लक्ष्मण
के सहित औरपत्नी सीताके सहित नौ
कामे बैठेहोए १२ कर्णधारके सहितस
मुद्रके बीचप्रगटहोते भये तद हनुमान
कर्णधारकारूप धारे होए तिसराजाको
कहताभया १३ हेराजन किसवास्ते अवे
लंकामेजाताहैं रावणकोंमारकर युद्धमें
रामचंद्रजीसीताकों साथ लेकर्के भ्राताके
साथ अयोध्याकों चले जातेहै १४ ॥

351

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निवर्त्तस्वपुरींगच्छमद्वाक्यात्कुलशेखर न
नो विमानमायांतं समारूढान्ददर्श ह १५
एवंनिरीक्षितान्सर्वान्दृष्ट्वा तस्य च भाषितं
निवर्त्तयामासनृपः पयोधेरन्तरात्स्वयम् १६
जलाद्बहिस्समागत्य ददर्श निजवाहिनीम्
नयानमस्कृतोराजा स्वंभुवनमाययौ १७
पौराणिकं समभ्येत्य निदृष्टं चित्रमवेदयत् १८
श्रुत्वा चित्रं द्विजः सोपि राजानमभ्यनंदयत्

हे कुलशेखर मेरे कहने सें अपनी पुरी कों पर
न कर चला जा इन ने में क्या देखना हैं विमा
नों पर चढे होए तिनकों देखता भया १५ इस
प्रकार के तिनकों देखकर और तिनका कह
ना सुनके सो राजा समुद्र के अंदर सें आपसु
उठकर चला आउता भया १६ तद जलसें बा
हर आकर अपनी सेना कों देखता भया जिस से
ना अपनी ने वंदित कराइया चुपचाप अपने
घर कों चला आया १७ और पुराण कहने
वाले पंडित के पास जा कर देखे होए चित्र कों
निवेदन कर्ता भया क्या एह मैंने देखा है एह
बात सुनकर पंडित राजा की स्तुति कर्ता भया
हे राजन् तूं धन्य हैं जेने रामचंद्रजीका द॰
र्शन पाया है १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३५८

तवभक्तोमहाराजसत्यंसत्यंनसंशयः स
मुद्रेप्रविशंतंत्वांज्ञात्वासभक्तवत्सलः ।६
स्वयंनिवारयामासदर्शयित्वात्मविग्रहं । य
मोसित्वंमहाभागधन्योयंनिश्चयस्तव त्व
द्भक्त्यायोगदृश्योसौरामस्त्वद्दृक्पथंगतः
१० इतिश्रुत्वाथवचनंपौराणिकसमीरितं
तदावुवौधन्यपतिश्शौर्यावेशाच्चनिर्गतः
२८ ॥

357

हेमहाराज मै सत्य २ कहता हूं इसतेरीभक्ति
में संशयनहिंहै क्यौंकिसमुद्रमेप्रवेश क
र्तेहोय तेरेकौंजानकर भक्तवत्सलभगवा
न ६ तेरेकौंअपना देह दिखायकर आ
प तेरेकौं जलकेवीचसें निवारणकर्तेहै
हेमहाभाग तूंधन्यहैं और धन्यतेरा निश्च
यहै जिसकर्केयोगिजनोंकोदेखने योग्य
जो रामचंद्रजी सोतेरी मनुष्यकी दृष्टिमें
प्राप्तहोयहैं १० यहपौराणिककाकथन
कराहुया सुनकर्के राजाशूरवीरताके
आवेशसें निकला हुया ज्ञान क्या चेत
न्यताकौंप्राप्त होता भया
२१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पश्चात्तापं चकारोच्चैस्तदा ज्ञातो न मे प्रभुः शौ
र्यो दुर्मद दुष्टेन चित्तेनानोपि गतस्तमाम् २२
इति चिंतापरो राजा तद्रूपं हृदि चिंतयन् नि
यमे पूर्ववदास्थाय स्थितो वेश्मनि भक्तितः २३
एवं स राजा धर्मात्मा भक्तिमान्कुलशेखरः
कलावपि हरिं साक्षाद्दयश्यद्भक्तियोगतः २४
इति कुलशेखरचरितम् ॥

और वडे ऊचे २ स्वरकर्कें पश्चात्तापके वचन
कहता भया फिर कहने लगा की मेरे कों उस
मय खबर नहि हुई कि यह रामचंद्रजी हैं मैं
उनका अच्छी तरां दर्शन कर्ता पर शूर वीरता
कर दुर्मद वाला दुष्ट चित उसकर्केंही कुच्छ
ज्ञान न हि रहा इस कारणासें शीघ्रताकों प्राप्त
रहे २२ इस प्रकार की चिंता कर्ता हुया हि अ
ह जौनसा रूप जिसने देखा था उसकों ही
हृदय में चिंतन कर्ता भया और पूर्वके निय
ममें स्थित होकर भक्तिसें घरमे निवास क
र्ता हुया राज्यकों पालन कर्ता भया २३ इस प्र
कार सो धर्मात्मा कुलशेखर राजा भक्तिकर युक्त
कलियुगमें भी साक्षात् रामचंद्रजीकों भक्ति
योगके प्रभावसे देखता भया २४ यह कुल
शेखर राजाका चरित्र समाप्त हुया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथप्रसंगादष्टाक्षरनारायणमंत्रमाहात्म्यव
र्णनम् बृहन्नारदीये अष्टाक्षरंमहामंत्रंसर्वपा
पप्रणाशनं वक्ष्यामिनवराजेंद्रपुरुषार्थैक
साधकम् १ विष्णुप्रीतिकरंसद्यः सर्वसिद्धि
प्रदायकं नमोनारायणायेतिजपेत्प्रणव
पूर्वकम् २ वाच्योनारायणः प्रोक्तोमंत्रस्त
द्वाचकः स्मृतः वाच्यवाचकसंबंधोनित्य
एवमहात्मनः ३ ॥

अब प्रसंग से अष्टाक्षर नारायण के मंत्रका
माहात्म्य वर्णन करते हैं बृहन्नारदीयमेलि-
खा है हे राजेंद्र तेरे कौं आठ अक्षरोंका महामं-
त्र सारे पापोंके नाश करणेवाला और सारे
पुरुषार्थोंका एक सिद्ध करणेवाला कथ-
न करता हूं १ कैसा और यह मंत्र है शीघ्र विष्णु-
भगवान् जीकी प्रीति करणेवाला और सारे
यों सिद्धियों के देने वाला है ओं नमोनाराय
णाय इसका आद ओंकार रखकर जपक
रे २ इस मंत्र के बीच वाच्य नारायण जी है
और मंत्र यह नारायणजी का वाचक है तो वा
च्यकसंबंध महात्मा नारायणजी का नित्य
ही बना रहता है ३ ॥ ~ ॥

नरसिंहपुराणे शुकउवाच किंजपन्मुच्यते।
तातसततंविष्णुतत्परः संसारदुःखात्सर्वेषां
हितायवदमेपितः ४ व्यासउवाच अष्टाक्ष
रंप्रवक्ष्यामिमंत्राणांमंत्रमुत्तमम् यंजपन्मु
च्यतेमर्त्योजन्मसंसारबंधनात् ५ हृत्पुंडरी
कमध्यस्थंशंखचक्रगदाधरं एकाग्रमनसा
ध्यात्वाविष्णुंकुर्याज्जपंततः ६ एकांतेनिर्जा
नेस्थानेविष्णवग्रेवाजलांतिके जपेदष्टाक्षरंमं
त्रंचित्तेविष्णुंनिधायवै ७ ॥

नरसिंहपुराणमेंलिखाहै शुकदेवजीकथन
करतेभये हेतातसर्वदाकालविष्णुभगवान।
जीमे तत्पर रहनेवाला किसमंत्रकोंजपता
हुया संसारदुःखोकेबंधनासें मुक्तहोताहै
हेपितः सभनोंकेहितवास्तेमेरेकोंकथन
करो ४ व्यासदेवजीकथनकरणेलगेहे व
त्स मंत्रोमें उत्तम अष्टाक्षर मंत्रकथनकरताहूं
जिसकोंजपताहुया वैसब जन्मसंसारबंधन
सें मुक्तहोतेहै ५ हृदयरूपीकमलकेमध्यमे
बैठेहोए शंखचक्रगदापद्म धारणकरेहोए वि
ष्णुका एककाग्रमनकरकेध्यानकरपीछेसें जप
करे ६ जपकेस्थानलिखेहे एकांतनिर्जनस्थान
मेंजोविष्णुके आगेहीअथवा जलकेसमीपवि
तमेविष्णुकाध्यानकरअष्टाक्षरमंत्रकाजपकरे ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

359

अष्टाक्षरस्य मंत्रस्य ऋषिर्नारायणः स्वयं छंद
श्च देवी गायत्री परमात्मा च देवता ० अक्ष
वर्णं च ॐकारं नकारं रक्तमुच्यते मोकारं
वर्णतः कृष्णं नाकारं रक्तमुच्यते २ राकारं
कुंकुमाभं च यकारं पीतमुच्यते णाकारमं
जनाभं तु यकारं बहुवर्णकं ९ ॐ नमो ना
रायणायेति मंत्रः सर्वार्थसाधकः भक्ता
नां जपतां नित्यं स्वर्गमोक्षफलप्रदः ॥५॥

अष्टाक्षर नारायण मंत्र के आप नारायणजी
ऋषि हैं उसका छंद देवी गायत्री है परमात्मा
उसका देवता है चार पुरुषार्थों के साधन में
इसका विनियोग है ० अब अक्षरों का वर्ण
लिखा है ॐकार का शुक्ल वर्ण है नकार ला
ल रंग का है मोकार काले वर्ण का है नाका
र फिर लाल रंग का है २ राकार केसर के व
र्ण का है यकार पीले वर्ण का है और णाकार
अंजन सुर्मे के रंग का है और यकार फिर बहु
त रंगों का है ९ ॐ नमो नारायणाय यह अ
ष्टाक्षर मंत्र सारे अर्थों को सिद्ध करणे वा
ला है और नित्य जपने वाले भक्तों को स्वर्ग
मोक्ष फल देता है ॥ ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेदमै पुराणयोः सिद्ध एष मंत्रः सनातनः सर्व
पापहरः श्रीमान्सर्वमंत्रेषु चोत्तमः ।२ एत
मष्टाक्षरं मंत्रं जपन्नारायणांस्मरेत् एष एव
परो मोक्षा एष स्वर्ग उदाहृतः ।३ सर्ववेदर
हस्यं च पठनीयः समाहितः संध्यावसाने
सततं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।४ एष एव परो
मंत्र एष एव परं जपः सर्ववेदरहस्येभ्यः सा
र एष समुद्धृतः ।५ ८ ॥

चारों वेदों में और सभनों पुराणों मे सना
तन यह सिद्ध मंत्र है सारे पापों के हरणेवाला
श्रीमान् है और सारे मंत्रो में उत्तम मंत्र है ।२
इस अष्टाक्षर मंत्र को जपता हुया नाराय
णजी का स्मरण करे यही परम मोक्ष का
साधन है और स्वर्ग का साधन भी यही है ।३
सारे वेदों मे रहस्य क्या गुप्त इस मंत्र को सा
वधान होके सायंकाल के समय जो पढ
ता है सो सारे पापों से मुक्त होता है ।४ यही
सभनो मे परम श्रेष्ठ मंत्र है ऐसे परम जप है
और सारे वेदों के रहस्यों से सार रूप निक
ला हुया है ।५ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विस्नुनावैस्नवानां हि हितायमनुजोद्धृता १६
एवंज्ञात्वाततोविप्र अष्टाक्षरमिमंस्मरन्
स्नात्वाशुचिः शुचौदेशेजपेत्पापविशुद्धये १७
जपेदानेचहोमेचगमनेध्यानपर्वसु जपे
नारायणंमंत्रंकर्मपूर्वापरेतथा १८ जपन्स
हस्रंनियतंशुचिर्भूत्वासमाहितः मासिमा
सिद्वादश्यांविस्नुभक्तोद्विजोत्तम १९ स्ना
त्वाशुचिर्जपेद्यस्तुनमोनारायणायतम् सा
गच्छेत्परमंदेवंनारायणमनामयं २० ॥

विस्नुभगवानजीनेसर्वएकसमय वैस्नवलोकों
के हितकेलियेवेदोंसेसारनिकालयाहै इसा
वातकोंजानकर्के हेविप्रअष्टाक्षरकोस्मरण
करो १६ प्रातःकालस्नानकर्केपवित्रहोकर
शुद्धभूमिमेंआसनलगायकरपापोंकेशोध
नवास्ते इसअष्टाक्षरकोंजपे १७ जपकेविषें
दानकेसमयहोमकेआरंभमेऔर यात्राके
समयपर्व दिनोंमे औरशुभकामोंकेआदअं
तेमे इस अष्टाक्षरकोंजपे १८ नियमकर्कें
सावधानमनवालापवित्रहोकर एकहजार
इसमंत्रकाजप करे हेद्विजोत्तम नित्यनहिंहो
सके तदमहीने २ पीछेद्वादशीकोंजपे १९ जो
पुरुषस्नानकरपवित्रहोकेएकांतवैठके
ॐनमोनारायणाय इसमंत्रकोंजोकोईजप
ताहै सोनिर्विकार नारायणकीपदवीकोंप्र
म होत्ता है २० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गंधपुष्पादिभिर्विस्रमनेनाराध्ययोजपे
त्. सर्वपापविशुद्धात्मा सगच्छेत्परमांग
तिम्. २१ तृतीयेनतुलक्षेणस्वर्गलोक
मवाप्नुयात्. २२ पंचमेनतुलक्षेणनिः
र्मलंज्ञानमाप्नुयात्. तथाषष्ठेनलक्षेण
भवेद्विसौस्थिरामतिः २३

जोकोई पुरुष इस नारायणके अष्टाक्षर मंत्रकर्के
गंधपुष्पादियोंकेसाथ पूजन कर पीछे जो ज
पकर्ताहैसो सारेपापोंसे विशुद्धआत्मा वाला
होएकआ ज्या परम गतिकोंप्राप्तहोताहै २१ प्र
थमलक्षके जपकर्के आत्माकीशुद्धि होतीहै
और दूसरे लक्षके मंत्र जप कर्के मंत्र कीसिद्धि
कोंप्राप्तहोताहै तीसरे लक्षके जप कर्के स्वर्ग
लोकमे प्राप्तहोताहै चौथेलक्षके जपकर्के
हरिकीसमीपताकों प्राप्त होताहै २२ और
पांच लाख जप कर्के निर्मलज्ञान कों प्रा
प्त होताहै ऐसेही छेवें लाखके जप कर्के
विस्रमे स्थिर बुद्धिहोतीहै २३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ २६१

सप्तमेनतुलक्षेणस्वरूपंप्रतिपद्यते अ-
ष्टमेनतुलक्षेणनिर्वाणमधिगच्छति २४
स्वस्वधर्मसमायुक्तैर्जपंकार्यंद्विजातिभिः
एतत्सिद्धिकरंमंत्रमष्टाक्षरमतंद्रितः २५
दुःस्वप्नासुरपैशाचउरगब्रह्मराक्षसाः
जपतांनोपसर्पंतिचौरक्षुद्राधयस्तथा २६
एकाग्रमतिरव्यग्रोविष्णुभक्तोदृढव्रतः
जपन्नारायणंमंत्रमेतन्मृत्युभयापहम् २७

361

और सातलाखजपकर्केविष्णुके स्वरूपकों प्रा
प्तहोताहै और आठलाख जपकर्के निर्वाणप
दकोंप्राप्तहोजाताहै २४ इस मंत्र काजपअप
ने २ वर्णआश्रमके अनुसार द्विजातियोंने
करणाचाहिए यह अष्टाक्षर मंत्रसिद्धिके क
रणेवालाहै २५ इसकोंजो कोई आलस्यसें र
हितहोकर जपतेहै तिनकों खोटे स्वप्न दै
त्यसर्प पिशाच और ब्रह्मराक्षस चोर क्षुधा
व्याधियां यह नहि प्राप्तहोताहै २६
औरयहजोनारायणका अष्टाक्षर मंत्रमृत्यु
भयकेहर करणेवाला इसकों एकाग्र मन
वालाहोके औरअव्यग्रक्या सावधान होके
दृढ निश्चित व्रत कों धार कर्के जप करे
२७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मंत्राणांपरमोमंत्रोदेवतानांचदैवतम् गु
ह्यानांपरमंगुह्यंओंकाराद्यक्षराष्टकम्
आयुष्यंधनविद्यांचपुत्रांश्चलभतेयशः ध
र्मार्थकाममोक्षांश्चलभतेवैजपेन्नरः २६
एतत्सत्यंचधर्मंचवेदश्रुतिनिदर्शनात्
अंतकालेजपन्नेतितद्विष्णोःपरमंपदम् २·
नारायणायनमइत्ययमेवसत्यंसंसारस
र्पविषसंहरणायमंत्रःशृण्वंतुभव्यमत
योमुदितास्त्वरागादुच्चैस्तरामुपदिशाम्य
हमूर्ध्ववाहुः २८ ॥

यह मंत्र औरनोमंत्रोंमें श्रेष्ठहै देवतोंयोंमे देव
ताहै गुह्य मंत्रोमें गुह्यमंत्रहै ओंकारहै आद जि
सके ऐसा अष्टाक्षरहै २८ इसकेजपसें दीर्घआ
यु होतीहै वहुतधनहोताहै विद्याप्राप्तिहोती
है वहुतपुत्रहोतेहैं यशलभताहै धर्म अर्थका
ममोक्षचार पदार्थलभतेहै २६ यहवातस
त्यहै धर्मरूपहै वेदकी श्रुतिके वचनसेंजो
कोई अंतसमय मरता २ इसकास्मरणकर्ता
है सोतिसमंत्रके स्वामी विष्णुभगवानजीके
लोकमेंप्राप्तहोताहै ३· ओंनमोनारायणाय य
हजोमंत्रहैसोसत्यकर्के संसाररूपी सर्पकीविष
दूरकरणेवास्तेहै इसकोंमंगल रूपवुद्धिवाले
प्रसन्न होयकर प्रीतिसेंश्रवणकरे यहवात में
वडी ऊंची स्वर कर्के ऊचेवाहु कर सभकों
उपदेश कर्ताहूं २८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
१९२

भुजाद्विबाहुरुद्धाय सत्यपूर्वं ब्रवीम्यहं हे पुत्र
शिष्याः शृणुत न मंत्रोष्टाक्षरात्परः ३२ सत्यं
सत्यं पुनः सत्यं वाहुमुत्क्षिप्य वोच्यते वेद
शास्त्रं परं नास्ति न देवः केशवात्परः ३३ आ
लोच्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः
इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः परः ३४
तदुक्तं शारदातिलके अथ वक्ष्ये महामंत्रो
विष्णोः सर्वार्थसाधकम् यस्य स्मरणमात्रे
ण भवाब्धेः परमाप्नुयात् ३५ ॥

362

हे पुत्र हे शिष्याः मेरा वचन तुम श्रवण करो
आज मैं दोनो बाहु ऊंचे करकें सत्य पूर्वक कह
ता हुं क्या अष्टाक्षरसें श्रेष्ठ मंत्र और कोई न
हि है मैं भुजा उठाय के सत्य ३२ कहा करता
हुं क्या वेदसें परे शास्त्र कोई नहि है और
केशव विष्णुजीसें परे देवता श्रेष्ठ नहि है ३३
सारे शास्त्रोंका देख करकें वारंवार विचार
करकें यहि एक बात निकली है की सबसें
परे जो नारायणजी है सोई ध्यान देयो गये है
३४ सोई बात कही है शारदा तिलकमें अब
सारे अर्थ प्रयोजन सिद्ध करणें वाला विष्णु
का महामंत्र कथन करता हुं जिसके स्मरण
मात्र करकें पुरुष संसार समुद्रसें पार हो
जाता है ३५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तारंनमःपदंब्रूयान्नरोदीर्घसमन्वितौ नारा
यणाय मंत्रोयमष्टाक्षोवसुवत्त्राविनः २९ सा
ध्योनारायणः प्रोक्तोमुनिःछंद उदीरितः मं
त्रस्यदेवीगायत्रीदेवताविष्णुरव्ययः ३० उ
ल्कायहृदाख्यातं महोल्कायशिरस्तथा
वीरोल्कायशिखाप्रोक्ता द्युल्कायकवचंस्मृतं २८
सहस्रोल्कायास्त्रमंत्रोस्त्रंगतक्रमिरियमता
भूयोवर्णैर्मनोःषड्भिःषडंगानिसमाचरेत्
अवशिष्टैःपुनर्वर्णैर्विन्यसेत्कतिपृष्ठयोः
नेत्रादिक्रमकंमंत्रेणमंत्रवर्णास्ततोन्यसेत् ५।

प्रथम ओंकार कहै पीछेसें नमः कहै उसकेपीछे
नारायणा दोनो दीर्घ कहै उसके पीछे य कहै उस
के पीछे णा कहै उसके पीछे फिर य कहै तद अ
ष्टाक्षर बनताहै २९ इसमंत्रमें साध्य नारायणजी
है छंद इसका देवी गायत्री अविनाशी विष्णु
देवताहै ३० उल्कायनमः हृदि महोल्का
यनमः शिरसि वीरोल्कायनमः शिखायां द्यु
ल्कायनमः कवचाय हुं ३१ सहस्रोल्कायनमः
अस्त्रायफट् एक २ पढ पढके अंगोमें हाथल
गाना फिर मंत्रके छे वर्णोकर्के षडंगन्यास क
रे ३२ बाकीजो नसें छे अक्षर रहै तिनोंकर्के कति
पृष्ठमें न्यास करे फिर तिनकी न्याई दिकच
क्र मंत्रकर्के मंत्रके वर्णोका न्यास करे ५।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अष्टाक्षरमंत्रमाहात्म्यकथनप्रसंगादितिहास
माह नरसिंहपुराणे सहस्रानीक उवाच स
म्यक्प्रोक्तं त्वया ब्रह्मन्वैदिकः परमो विधिः विष्णो
र्देवादिदेवस्य पूजनं प्रति हि मे पुना। अनेन वि
धिना ब्रह्मन्पूज्यते मधुसूदनः वेदैर्वा पुराणै
र्वा मंत्रैः सर्वहितं वद २ मार्कंडेय उवाच अष्टा
क्षरेण देवेशं नरसिंहमनामयम् गंधपुष्पादि
भिर्नित्यमर्चयेदच्युतं नरः ३ राजन्नष्टाक्षरो मंत्रः
सर्वपापहरः परः समस्तयज्ञफलदः सर्वशां
तिकरः शुभः ४ ॥

अष्टाक्षरमंत्रके माहात्म्य कहनेके प्रसंगसें इतिहास
भी एक इसमैं कहते हैं नरसिंहपुराणमें लिखा है
सहस्रानीक राजा कथन करणे लगा हे ब्रह्मन् वि
ष्णुदेवता का परमश्रेष्ठ मंत्र आठ अक्षरों का कहा
है वैदिक यह मंत्र है यह बात सत्य है अब विष्णुदे
वता का पूजन वेद की विधिसें मेरे प्रति कथन करो
हे ब्रह्मन् यह बात कहो कि इस विधि करकें मधु
सूदन जी पूजन करणे योग्य है सो वेदके मंत्रो
करकें वा पुराणोक्त मंत्रो करकें होए सो सभनों के
हित के लिये कहो २ इतना वचन सुनते ही मार्कं
डेय जी कथन करते भये हे राजन् पुरुष जो है सो नि
र्विकार देवतयों के स्वामी नरसिंह जी का नित्यप्र
ति अष्टाक्षर मंत्र करकें गंधपुष्पादियों के साथ पूज
न करे ३ हे राजन् अष्टाक्षर मंत्र सारे पापों की
हरणे वाला बडा श्रेष्ठ है और सारे यज्ञों के फल
देने वाला और शांतियों के करणे वाला शुभ
रूप मंगलरूप है ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐनमोनारायणाय गंधपुष्पादिकंसर्वमने
नैवनिवेदयेत् अनेनाभ्यर्चितोदेवःप्रीतोभ
वतितत्क्षणात् ५ किंतस्यबहुभिर्मंत्रैःकिंत
स्यबहुभिर्व्रतैः नमोनारायणायेतिमंत्रःस
र्वार्थसाधकः ६ इमंमंत्रंजपेद्यस्तुशुचिर्भूत्वा
समाहितः सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुसायु
ज्यमाप्नुयात् ७ सर्वतीर्थफलंतस्यतेनसर्वदा
नफलंनृप एवंकृतेनरश्रेष्ठनरसिंहप्रसा
दतः प्राप्नोतिवैष्णवंतेजोयत्कांक्षंतेमुमुक्षवः

ॐनमोनारायणाय इसमंत्रकेसाथसारेहीगं
धपुष्पादिकभगवान्जीकोंनिवेदनकरे
क्योंकिइसमंत्रकेसाथपूजनकरेहोयदेव
तानरसिंहजीतत्क्षणप्रसन्नहोतेहैं ५ जिसक
पुरुषनेंसारेहि अर्थप्रयोजनसिद्धकरणेवा
लामंत्रजपलियाहै तिसकों औरबहुत मंत्रोंके
जपकरणेकरकेक्याप्रयोजनहै और बहुत
व्रतकरणेकरकेंक्याप्रयोजनहै ६ इसमंत्रकों
जोकोईपवित्रहोकरसावधानमनवालाहो
केजपकरेसोसारेपापोंमेनिर्मुक्तहोयश्री
हुयाविष्णुजीकीसायुज्यमुक्तिकोंप्राप्तहो
वेगा ७ हेनृपश्रेष्ठइसप्रकारमंत्रकेजपकरे
होयनरसिंहजीकीकृपासेंसारेतीर्थोंमेस्नान
करणेकाफलहोताहै औरवैष्णवतेजकोंप्रा
प्तहोताहै और जिस२कोंरक्षामोक्षकीचाह
नावालाकर्त्ताहै उसकोंभीप्राप्तहोताहै ८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰
ग्राम॰
३९४

पुरा पुरंदरो राजन्स्त्रीत्वं प्राप्तोप्यधर्मतः तृण
विंदुमुनेः शापान्मुक्तो लक्षात्तराजपात् १
सहस्रानीक उवाच यत्त्वं कथय भूदेव देवेंद्र
स्याघमोचनं कोथ धर्मः कथं स्त्रीत्वं प्राप्त
मेवदकारणम् १ मार्कंडेय उवाच राजेंद्र
महदाख्यानं श्रृणु कौतूहलान्वितं विष्णु
भक्तिप्रजननं पठतां श्रृण्वतामिदम् ॥
पुरा पुरंदरस्यैव देवराज्यं प्रकुर्वतः वैरा
ग्यसापिजनने संभूते बाह्यवस्तुषु ।२

364

हे राजन् पूर्व एक समय अधर्म से क्या पाप से पु
रंदर जो देवराज इंद्र सो तृणविंदु नामक मु
नि के शाप से स्त्री भाव को प्राप्त होय प्रयाग
अष्टाक्षर मंत्र के जप करणे से मुक्त होता भया
इह वचन सुन के सहस्रानीक कथन करणे
लगा हे भूदेव यह देवतेयों के इंद्र की कथा
कहो की कैसे उस का पाप मुक्त हुया कौनसा
उसने पाप करा था और कैसे स्त्री स्वभाव कों
प्राप्त होया इस का कारण मेरे प्रति कथन क
करो १ तद मार्कंडेय ऋषि जी कहने लगे
हे राजेंद्र इह बडा पह आख्यान है कौतूहल क
के संयुक्त और पढने सुनने वालेयों को वि
ष्णु की भक्ति उत्पन्न करणे वाला ॥ हे राजन्
पूर्व एक समय देवतेयों का राज्य करते होए
पुरंदर इंद्र कों वाह्य वस्तुयों में वैराग्य उ
त्पन्न होता भया ।२॥ ~ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इंद्रस्तदाभूद्विषमस्वभावो राज्येषु भोगेषु वि-
शेष्यचिंतयत् ध्रुवं विरागी कृतमानसेन स्व
र्गस्य राज्यं न च किंचिदेव ॥ राज्यस्य सारं विष
येषु भोगः भोगस्य चांते न च किंचिदस्ति विम
श्यचैतन्मुनयो मुमुक्षवो मोक्षाधिकारं परिचिं
तयंति ॥४ सदैव भोगाय तपः प्रवृत्ति भोगा
वसाने हि तपो विनष्टं मेघादि संयोगमवाप्नु
वानां निर्मुक्तिभाजां न तपो न भोगः ॥५

तद क्या चिंतन कर्ता भया कि सो इंद्र राजा राज्य
के सब भोगों मे विषम स्वभाव वाला हो गया
तद निश्चय कर विराग युक्त मन वाला हो इ स्वाउ
या स्वर्ग के राज्य कों भी कुछ नहि चिंतन कर्ता
भया ॥३ क्या विचार कर्के नहि इच्छा मानता भ
या कि राज्य का सार है विषयों मे भोग होना
और भोगों के अंत मे कुछ नहि रहता है
इसी बात की विचार कर वारंवार मनिलोक
मोक्ष के अधिकार कों ही चिंतन कर्ते है ॥४
जो पुरुष भोगों के अधिकार कों ही चिंतन क-
र्ते है) ॥४ के निमित तप कर्ते है तिन के सब भो
ग प्राप्त होते हैं जद ओह भोग भोगने लगते है
तद सब भोगों के अंत मे ना भोग रहते हैं ना
ओह तप रहता है जिस तरां मेघादि संयोग से र-
हित मुक्ति ही इच्छा वाले यों कों न तप न तो भो
गरहता है ॥५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विम्रश्यैनेन त्रसुराधिपायो विमानमारू
ह्यस किंकिणीकं नतंहराराधनकारणेन
कैलासमभ्येति विमुक्तिकामः १६ स एकदा
मानसमागतस्तं सं वीक्ष्यतां यक्षपतेश्च कां
तां समर्चयंतीं गिरिजां त्रिशुगं विह्वलदा
नेन महाशरेण १७ प्रभातजांबूनदमुरु
वर्णां कर्णांतसंलग्नपयोजनेत्रां सूक्ष्म
वस्त्रांतरदृश्यगात्रीं नीहारमध्यादिवचंद्रले
खाम् १८

इस बात को विचार करकें सो देवतेयों का स्वामी इं
द्र किंकिणियों के समूह करकें युक्त जो विमान
तिसके उपर चढाकर मोक्ष की कामना वाला
निश्चय करकें शिवजी के आराधन करणे कों
कैलास पर्वत के ऊपर चला जाता भया १६ सो दे
वतों का राजा इंद्र कैलास पर गया हुया मान
सरोवर के ऊपर स्नान करणे कों आया तो उहां
यक्षराज की स्त्री कों देखता भया कैसी ओह स्त्री
है गिरिजा पार्वती का पूजन करया कर्ती
जिसकों देखकर कामदेव के महाशरों करकें वे
भया जाता भया १७ फिर कैसी ओह स्त्री है प्रभा
त जो जांबूनद स्वर्ण तिस की न्याई है शुद्ध वर्ण
जिसका और कर्णों के अंत पर्यंत हैं कमल रूपी
नेत्र जिसके और सूक्ष्म वस्त्र के अंतर क्या बीच
सें देखे जाते हैं अंग जिसके किस की न्याई जैसे
नीहार के मध्य में चंद्रमा की लेखा देखी जाती है १८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सोवीक्ष्य वीणां सहस्रमेणाक्षीणां कामंगतो ह
नमतिनैर्ययोनदानीम् हसाधगारेंत्वगृहमे
त्य सुचिंतितार्थस्तस्थौ तदा सस्पृति विषया
भिलाषी १९ पूर्वं वरं स्यात्स्वकुले पिजन्मततो
हि सर्वांगशरीररूपं धर्मं ततो दुर्लभमेवपश्चा
द्धनाधिपत्यं सुकृतेन लब्धं २० स्वर्गाधिपत्यं च
मया प्रलब्धं तथापि भोगायन वा किं भाग्य
मल्पं परित्यज्य विशुद्धिकाम स्त्रीणां मितं दुर्मति
रस्मि चिंते २१

सो राजा इंद्र तिस पत्तकी कांता स्त्रीको हजार स्त्री
नेत्रों करके देखकर तिस समय काम के वशकों
प्राप्त होता भया पर धैर्यकी बुद्धिको नहि प्राप्त
होता भया तो हर २ तिसके पीछे आउता २३
इ कुवेर के घरकों देखकर अर्थको चिंतनक
र विषय भोगने की इच्छा कर उहां बैठगया १९
क्या चिंतन कर्ता है उहां बैठकर्के कीपकतो मेरे
सें कुवेर श्रेष्ट है क्योंकि अच्छे कुलमें उसका फिर
सर्वांग सुंदर शरीरका रूप जिसका फिर और दुर्ल
भ धर्म कर्ता है और उसको अपने पुण्यों के प्रभाव
सें धनाधिपत्य अधिकार मिला हुया है २० एक
मेरे कों स्वर्गका अधिपत्य राज्य मिला पर उसके भी
सुख भोग भोगने मेरी प्रारब्ध में नहि हैं क्योंकि जो
मै खोटी बुद्धिवाला अपने राज्यकों छोडकर मोत
की कामना धारण कर चला आया हां राज्य सुख
मैं मोत की क्या इच्छा है ऐसी यों स्त्रियोंके साथ
सुख भोगने राज्यका सुख है २१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३९९

मुख्योस्य मूनामिह कामिनीनां मोक्षस्य किं वा
रणमस्ति राज्ये क्षेत्रं सुपक्वं परिहृत्य हूरे कोः
नाम चारेण कृषिं करोति २२ संसारदुःखोप
हता न रा ये कर्तुं समर्था न च किंचिदेव अ
कामिनो भाग्यविवर्जितास्त्र वांछंति ते मोक्ष
पदं विमूढाः २२ पतद्धि मृष्यपवकृथामति
मान्प्रवीरोरूपे रामोहित मनाय नदांगना
याः सर्वाभिचारकुशलः परिमुक्तधैर्यः स
स्मारकाममसराषिपचक्रवर्तीम् २४ ॥

इनों स्त्रीयों का मुख्य राजा कामदेव है तद राज्य
हे खेमे मोक्ष का क्या प्रयोजन है कि सतरां जैसे
पके होए क्षेत्र को छोडकर नवीन क्षेत्र बीज
ने मे कौन सा बुद्धिमान् हि है जो यत्न करेगा क्या
मुडकर हल वाहन करेगा २२ जो कोई पुरु
ष संसार के दुःखों करकें हत मन वाले है
और कुछ काम करणे कों असमर्थ और भाग्य
हीन ऐसे निष्कामी पुरुष मूर्ख मोक्ष की इच्छा
कर्ते है और कामों के करणे कों समर्थ भाग्य
वान पुरुषो तो नहि मोक्ष की इच्छा कर्ते है २३
इस प्रकार करकें मतिमानों में श्रेष्ठ जो इंद्र सो व
हुत तरों के विचार कर करकें परकुवेर की स्त्री
के रूप करकें मोहित होए आ हुया देवतेयों का
चक्रवर्ती इंद्र और सभ तरों के अभिचार करणे
मै चतुर भी था तद भी धैर्य को त्याग कर काम
देव का स्मरण कर्ता भया २४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

समागतेसोपरिमंदमंदंकामेतिकामाकु
लचित्तवृत्तिः पुरामहेशेनकृतांगनाशोधैर्या
लयंगाच्छतिकोविवेकी २५ आदिश्यतांना
थयदस्तिकार्यंकोनामतेसंप्रतिशत्रुभूतः
शीघ्रंममादेशयमाविलंबंतस्यापदंसंप्रा
पिवोदिशामि २६ श्रुत्वानदातस्यवचोभि
रामंमनोगतंतंस्मरमंतनोषनिघ्नमर्थ्यं
सहसेवमत्वाजगादवाक्यंसविहस्यवीरः

सोकामदेववडीधैर्यसें धीरे २ आवताभयाका
मकरकें आकुलचित्त वृत्तिवाला इंद्रमनमे फिर
विचारकर्ताहै किसर्वएकसमय महादेवजीने
कामदेवकोंभस्मभीकराथा तदभीएसाकोई
नहिजो विचारवान् कामकेप्राप्त होए रूपधै
र्यकरे २५ हेनाथजोतुमारेकों कार्यहै सोमे
रेप्रतिकहो जोकोई तुमारा इसमें शत्रुहु
आहै सोशीघ्रमेरेकों आज्ञाकरो उसकी दुर्द
शामेकर्ताहूं २६ तिसकायहवचनसुनक
र मनकों आनंद देने वाला मन करकें इंद्र
काम देवके ऊपर वडा प्रसन्नहोता भया
और अर्थ कों सिद्धहोए रूप कों जानक
र शीघ्रता सेही वाक्य कों कहता भया २७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हृद्येयेनार्द्धशरीरमात्रमस्त्रकेप्यनंगजेन सो
ऽक्षसमर्थोप्यपरोपि लोकेकोनाम नेयं वश
गाभियानम् २८ एकाग्रविनागिरिजार्चने
या संमोहयात्येव ममात्र चित्तं एनामनंगा
यतलोचनाख्यामदंगसंगैकरसां विधेहि
२९ स एवमुक्तः स्मरवल्लभेन स्वकार्यभा
वादतिगौरवेण संधायवाणं कुसुमास्त्र
मोपितस्मारजामास्त्रविमोहयेः स्तपीः ३०

इन नाव वचन सुनकर इंद्र देवराजा कामदेव की
स्तुति करकें कहने लगा हे अनंग योगीजनों के स्वा
मी महादेव जितेंद्री सो जिनें अपने बाणों करकें जा
उनकरे हाय अर्धनारीश्वर वनादिये हैं और एसा
कौन है देवता जो मनुष्यादिक जो तो बाणों के प्र
हारकों सहार सकेगा २८ हे अनंग तूं सभ का
मों के करणे कों समर्थ है आज मैंने एकाग्रमन
होकर पार्वती का पूजन करती होई जो मेरे मन
कों मोहित करती होई विशाल नेत्रों वाली उसकें
मेरे अंगों के साथ मिलाप करणे वाली कों क
र क्या उसकों मोहित करकें मेरे पास ल्या २९ इस
प्रकार अपने कार्य की गौरव बनावटी आई
करकें जद कथन कराइया देवतेयों के स्वामी
राजा इंद्र ने जद कामदेव बुद्धि करकें अपराध
नषमें पुष्पों के वाण कडाया और कहा कि तें
शीघ्र उसका मोहन कर तूं वडी बुद्धिवाला है ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संमोहिताशुष्करेणवाला कामेनकामंमदवि
क्लीगीं विहायसज्जां हसते सुरेशः काम
कोदंडरवं सहेत २१ विलोलनेत्रैरपिकामि
वाले संमोहयंतीवमनांसि वेशा सुराधिपोवा २२
क्यमिदं जगाद कस्येहकांतावरयुप्रभाव:
३ काणिवाला मदविक्लांगीरोमांचसंवे
दसकंपगात्रा कृतांजलीकामशिलीमु
खेन सा गद्गदं वाक्यमुवाच मंदम् २२ ॥

नदसो वाला यत्त राजकी स्त्री प्रथ्यों के हैन वाण
जिसके ऐसे कामदेव ने मोहित करी होई मदक
र्कें व्याकुल अंगोवाली पार्वती की लज्जाकों त्या
गकर हास्यकर्ती २ कामना किया वाता इंद्रसे
करने लगी कि देखो कौनसा कामी है जो का
मदेवके वाणों का शबद सहारे २१ ऐसे चिंत
न कर्कें सुराधिप इंद्र कहना भया है चंचल सुंद
र नेत्रोंवाली वालेतूं पुरुषोंके मनकों मोहती
है और कौन है और किस वडे प्रताप वाले भार
थ्यीकी स्त्री है यह मेरे कों कथन कर २२ यह
वात इंद्रने जद तिसकों पृछीतदसो मदकर्के
व्याकुल अंगोवाली कामदेवकर्कें रोमरोम उ
सके देहमें खडा होगया और पसीना चलने
लगा जिससे ऐसी औह वाणांके प्रहार करी हो
ई मंद २ ऐसे गद्गदवर्णोंसें वाक्य कहती भई २३

सा॰
ग्राम॰
३९८

कांताधनेशस्य च यक्षकन्या सा मा च गौरीव
रणार्चनाय अद्य हि कार्यं च नवास्ति नाथ कस्त्वं
हि वद त्विष्टसि कामरूपः ३४ इंद्र उवाच सा त्वं
मागत्य भजस्व मा चिरात्मदंगसंगोत्सुकतां अ
नाशु त्वया विना जीवितमप्यनल्पं स्वर्गस्य
राज्यं मम निष्फलं स्यात् ३५ प्रोक्ता च सैवं
सुरेश्वरेण कंदर्पसंतापितसारदेहा विमा
नमारुह्य कुबेरकांता सुरेशकंठग्रहणं च
कार ३६

क्या कहने लगी कि मैं धनेश कुवेर के नौ कांता स्त्री
हूं और यक्ष की कन्या हूं इहां गौरी पार्वती के पू
जन करणे कों आई हो रही हूं हे नाथ जे कर तुमा
रे कों कोई काम है सो मेरे कों कहो और यह आ
प भी अपना नाम ग्राम कहो कौन हो कामदेव
की न्याईं अति सुंदर रूहो इछित होय रूप हो ३४
इतना वचन सुनकर इंद्र देवता कहने लगा
हे सुभ्रु सो तूं मेरे पास आकर मेरे कों भज क्या
अंगीकार कर इस में चिर लगा और मेरे अं
गों के संग करणे की उत्कंठा वाली शीघ्र हो क्यों
कि तेरे विना जीवन कों भी तुछ मानता हूं
और स्वर्ग का राज्य भी मेरा निष्फल हो गया है ३५
सो यक्षराज की स्त्री जिस इंद्र ने इस प्रकार क
थन करी होई कामदेव कर कें तप्त हो गया है देह जि
स का ऐसा जो हूं सुंदर देह वाली कुवेर की स्त्री वि
मान के ऊपर चढ़ कर सुरेश इंद्र का कंठ ग्रहण
कर लेती भई क्या आलिंगन करती भई ३६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संमोहिनाप्पुष्पकरेण बालाकामेन कामं
नगाम शचीं स सह देवनाथः स कांतया मंद
कंदरासु अटट् देवासुरसंचरासु विचिर
लांझरभासुरासु १७ रेमे नया साकमुदार
वीर्यास्त्रैवस्वैश्वर्यगतादरोपि स चैव य
स्या लघुपुष्पाप्यां स्त्रिवस्वैश्वर्यगताद
रोपि स चकार न यां निनदां सकामः १८
नातः कृतार्थो मरहंदनाथः सकामभोगेषु
सदा विदग्धः मोक्षाधिके स्नेहरसातिमिष्टं
परांगनालिंगनसंगसौख्यम् १९ ॥

तदसो देवनाइंद्र तिस कुवेर की स्त्री कों साथ लेकर
मंदराचल की गुफा में चला गया जिसमें देवता
और दैत्यों का आनजाना न हि देखा और रत्नियों के
प्रकाश कर युक्त तिनमें तिस स्त्री कों लेजाता भया १७
तो सो उदार पराक्रमवाला तिसके साथ क्रीडा क
रतो भया कैसा इंद्र है स्वर्ग के ऐश्वर्य कर प्राप्त होए
आउआदर जिसको जिसके निमित्त कामदेव अ
पने हाथों में सुंदर अतिविचित्र पुष्पों कों शय्या
तिन कंदरा में रचता भया और बाजे बजावता भ
या १८ और देवतायों के समूह का स्वामी इंद्र काम
भोगों में सर्वदा काल बडा चतुर सो अपने आप
कों कृतार्थ मानता हुया पराई स्त्री के साथ आ
लिंगन कर सुखभोग करके स्नेह प्रीति का जो अति
मिठास तिसकों मोक्ष से भी अधिक मानता भया १९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३९९

अथागतानयपतेस्समीपंनीयोंनिवार्यैवा
विचित्रसेनोसंभ्रमात्संभ्रमविनगात्रास्स
गद्गदंप्रोचुरसाहसंत्रस्ताः ५० नूनंसमाकर्णा
यपतनाथविमानमारोप्यजगामकश्चित
संवीतमार्गः कऊभोपिकांतोविगरत्सव
र्गादिहसोपिनस्करः ५१ वचोनिशम्याथिय
नाथिनाथोविपीव्यमंजातमपीनिमाननः
जगाद्भयोनचकिंचिदंवबभूववैहूतरवा
नरगयः ५२ ॥

369

उसकों कहीले गए होएपीछे उसके संगकीयां स्त्रि
यां क्या विचित्रसेना कियांदासीयां तिसकों ननिवार
करकें कुवेरके समीप आवतीयां भयां और आश्चर्य
युक्तमनवालीयां और भयकरकें खिन्नहै अंग जिन
के और साहसकों नजानने वालियां ये स्त्रियां सो ग
द्गदवाणी करकें कहतीयां भईयां ५० क्या कहती
यां भईयां हे नाथयक्षों के स्वामि निश्चय करहमा
रावाक्य सुन क्यों कि कोई अज्ञात कुल नामवाला
तिसकों विमानपर चढायके कहीं वेगसें लेगया
है और दिशां भी देखता गया है वो चोरथा ५१ ये
सा वचन तिनका सुनकर यक्षाधिनाथ कुवेर
विषके तुल्य श्रवणकरकें मषीसाईके तुल्य
तिसका उससमय मुख होजाता भया और
तिनको कुछ उतरभी नहि देता भया औ
र अंदरसें तो अग्नि करकें दग्ध होए कुए
हक्षकी न्याई होजाता भया ५२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विज्ञापितार्थीवरकन्यकाभिर्यश्चित्रसेनास
हचारणीभिः मोहापनोदायमतिं दधानः स
कंठकूबजोपि समाजगाम ५३ स्फुटागतेवी
क्षमाणनराज उन्मीलितातोवचनंजगाद
विनिःश्वसन्गाढसकंपगात्रः सस्ममनोष्ण
मुविधायदीनम् ५४ न यौवनंयस्यवनीवि
नोदाय नंनतनयःस्वजनोपयोगि न जीवितं
यत्क्रियतेहधर्मस्तदापिपर्यंयन्नष्टविग्रहः ५५

जद चित्रसेना की दासियों ने क्या साथ रहने वा
लियें वरक्या श्रेष्टकन्यों ने प्रयोजन सुनाया दि
या तद शोकमोह के हरकर रोवा से बुद्धि
कों धारणा कर्ता हुया कंठकूबज नामा प
क मंत्री था सो चल्ले आवता भया ५३ तद जो
का राजा कूबेर आये होए तिसकों सुनकर के
लज्जा से नेत्रों को मीटकर खावपकहता भया
वडे उंचे स्वास लेता २ सकछातरां से कंपयुक्त है
अंग जिसके और मन की दीनता कर युक्त है
के ५४ और ऐसी कहन लगा है कंठकूबज
पुरुष की युवावस्था होही है जिसमें अच्छी
तरां युवा स्त्रीयों का सुख भोग भोगया जावे
और यतन होही है जो न सा अपने सजनों के प्रयो
जन में आवे और जीवित होरहे है जिसमे श्रेष्टक
र्म होवे और राजि होही है जिसमे देह प्रसन रहे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३२॰

धिङ्मेधनंजीवितमप्यनल्पंराज्यंहृहत्संप्र
तिशल्यकानां विशामिचाग्निंनचवेदकश्चित
ड्भवोस्तीतिचकोमृतानाम् ५९ पार्श्वेस्थि
तास्मापिचजीवतोमेगतानतुगांगिरिजार्च
नाय हृताचकेनापिवयंनविद्मोध्रुवंनन
स्यास्तिभयंहिमृत्योः जगादवाक्यंस॰
चकंटकवजोमोहापमोदायविभोःप्रमं
त्री श्राकर्णतांनाद्यनचास्तियोगपःकांता
वियोगेनहिदेहत्यागः ५०

370

कवेरअपनेमंत्रीकेप्रतिकथनकर्ताहैं हेमंत्रि
सत्तम मेरे धनकोंभी धिक्कारहै औरबहुत मेरे
जीवितकोंभी धिक्कारहै औरअनंत बहुत
जोशल्यकोंकाराज्यहै तिसकोंभी धिक्कारहै
औरमैं आज अग्निमेंप्रवेशकर मृतहोजाताहों
क्योंकीमेरेहोयपीछे कोई पराभवक्या निंदा
अपयशकों कोनजानताहै ५९ देखोकैसा
आश्चर्यहै मेरेजीवितरहतेमेरे पासवैठा होय
मेरीस्त्रीगिरिजा पार्वतीकेपूजनकरणेकोंतट
ऊगापर गईहै उहांसेकोई दुष्टपुरुषहरके
लेगयाहै परहमउसकोंनहिंजानतेहैं औरभी
उसमैंविचारकर्तेहैं ऐसाकोनपुरुषार्थ्यहैकीजि
सकोंमृत्युकाभय नहिंहै ५० इसप्रकारवचन
सुनकरराजाकेमुखसें कंटकवज्रनामामंत्री
अपनेस्वामीकेमोहकोंदूरकरणेवास्तेकहता
भयाहेनाथजोउक्षमेंकथनकर्ताहुं तिसकों
सुनोक्यास्त्रीकेनिमित्तदेहकात्यागकरणायो
ग्यनहिंहै इसमैंबडा अपयश होताहै ५१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकापुराराम वधूर्हृताच निशाचरेणापि
म्लनस्थसोपि अनेकशः संतितवाचनार्य्यःको
नामचितेज्ञरुते विषादम् ५६ विशुक्तशोकः
कुरु विक्रमे मति धैर्यं समालंव्य च यत्न राज
भृशं नजस्य निरुपांतिसायवः पराभवंवा
ल्यकृतं सहंते ५७ कृतं हितं कार्यमहो दिश
नि सहायवाविनयकान रोसि किं सहायः
कार्यंकुरुते हि संप्रति सर्व्यं हि यस्यावरजो विभी
षणः ५८

हे राजन सर्वप्रकसमय इक निशाचरने राम
चंद्रजीकी वधूसीताहरीथी परसोभी मरगया
और इसलोकमें उससेंभी अधिकसुंदर २
नारियांहैं ऐसा कौनहै जोस्त्रीके निमित म
नमें खेदकर्ताहै ५६ आपतुसीशोककोंमा
गो सत्पुरुषवहुत वार्तानहिकर्तेहैं औररो
षनहिकर्तेहैं और वास्तुकृतजो पराभवहै
तिसकोंभी सहारनेहैं ५७ हेविनयधनके
स्वामिनेरेजैसे राजाहोयुके होए कार्यकों
हिनकर्केकहतेहैं तुंसहायतावाला क्यों
कानरहोएभ्राहै तेरेसहाइकामसभनरों
से करणेवाला तेराछोटा भ्राता विभीष
णा वडा वलवानहै तेरेकोंक्याकिकरहै
५८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धनदउवाच विभीषणोमेप्रतिपक्षभूतोऽ
हंपादभावंनविमुंचतीति युवंप्रसन्नानभवं
तिदुर्जनाःकृतोपकाराहीवंनेतिखुराः ५२
नचोपकारैर्नगुणैर्नसौहृदैःप्रसादमायाति
मनोहियेषाम् उवाचवाक्यंसचकंदकु
ओयुक्तंतयोक्तंहिधनाधिनाथ ५३ परस
रस्त्रेतिचतोवरुद्धास्तथापिलोकेनपरा
भवोस्ति पराभवंनान्यकृतंसहंतेनोसं
जलेज्वालयनेतृणानि ५४

इतनावचनकंदकुवज मंत्रीकासुनकर धनाधि
नाथ कुवेरजीकहनेलगे हेमंत्रिसत्तम विभीष
णजोहै सोमेरेप्रतिपक्षभावकोप्राप्तहोयकरा
ज्यका दायादभावकोंत्यागिपिताकेधनकाहि
स्साआजतकमेरेसें मांगताहै उससे शत्रुभाव
कोंनहित्यागताहै यहप्रसिद्धवातहै दुर्जनजो
पुरुषहैतिनकेऊपरकितनेभीउपकारकरोत
दभीओह प्रसन्ननहिहोतेहै औरइंद्रकेवज्रके
तुल्यकठोरहोतेहै ५२ औरसुहृदभावकर्के
संवंधियोंकामनउपकारोंकर्के औरगुणोंकर्के
प्रसन्ननहिहोताहै इतनावचनसुननेहीकं
दकुञ्जवोला हेधनाधिनाथ यहवातआपने
सत्यकहीहै ५३ परंतुएकवातओहहैजोवंशके
हैसोविरोधीहोयकरय आपसमैलडाईझगडेक
रतेहैं परउनका अपवादकुछनहिहोताहै औ
रदूसरेकाइतनाअपराधनहिकदीसहारतेहै
जिसतरांगर्मजलसेंतृणनहिदग्धहोतेहै इसी
तरांसेएकगोत्रवालेकाशरीकोंकेवचनोंसेंपुरु
षनहिदग्धहोतेहै ५४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तस्मात्त्वमागच्छ धनाधिनाथपार्श्वे च वेगेन
विभीषणस्य स्वबाहुवीर्यार्जितवित्तभो
गिनां स्वबंधुवर्गे ब्रूहि को विरोधः ५५ इत्थ
मुक्तः स तदा तेन कंटकध्वजेन मंत्रिणा विभी
षणस्य समीपं जगाम च विचारयन् ५६
ततो लंकाधिपः श्रुत्वा बांधवं पूर्वजं तदा
आमे प्रत्याजगाम स्तुतिनयेन समन्वितः
५७ ॥

हे कुवेर इस बातको विचार कर वेगके साथ
विभीषणके पास चला जा क्योंकि अपने बा
हुयोंके जीत कर धनादियोंको भोगनेवाले जो
अपने बांधवोंका समूह तिसमें क्या विरोध है
५५ इस प्रकार तिस समय कंटकध्वज मंत्रिने
कथन करा हुया यह राज कुवेर विचार क
र्ता विभीषणके पास चला जाता भया ५६
तद तिसके गए होए पीछे लंकाके वीर वि
भीषणको खबर हुई कि मेरा बडा भ्राता
कुवेर मेरे पास आया है इतनी बात सुनकर
विनती करयुक्त आदर सन्मान पूर्वक उ
सके लेनेके वास्ते आगे आवता भया
५७ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३०२

ततो विभीषणो दृष्ट्वा नदा दीनं च बांधवं सं
तप्यमानमसौ भूपजगादेदं वचो महत् ५८
विभीषण उवाच कथं दीनो सि यक्षेश किं क
ष्टं न वचे न सि निवेदयाधुनास्माकं निश्च
यान्मार्जयामि नतत् ५९ न दे कांतं समासा
य कथयामास वेदनां गृहीता किंस्विद्यया
ता निहता केन विद्विषा ६० भ्रातः कांतां न
पश्यामि चित्रसेनां मनोरमां पतत्त्वं यो महा॰
कष्टं मम नारी समुद्भवं प्राणान्वै त्यजेत पि
ष्यामि भ्रातासाय च वल्लभा मम ६१ ॥

इतने में विभीषण तिस कुबेर के पास आय पहुंचा
और तिस को दीन होए हुए बांधव को देखकर हे भू
प बहुत संताप युक्त मन वाला होइ आइया इस
प्रकार वचन को कहता भया ५८ विभीषण कहने
लगा हे भ्रातः यक्षों के स्वामि किस कर के दीन होई
हुई हो और क्या तुमारे मन में दुःख है अब मेरे प्र
ति कहो तदमैं उसका उपाय कर के दूर करूंगा ५९
इतना वचन आश्वासन कर युक्त तिस का श्रव
ण कर के कुबेर एकांत में कहीं ले जाकर मन
की पीड़ा तिस के प्रति कहने लगा हे भ्रातः मन
को आनंद देने वाली चित्रसेना नामक अपनी स्त्री
को कहीं मैं नहि देखता हूं तब रन हि कोई पकड़
कर ले गया है वा आप चली गई है कहीं अथवा
किसी ने द्वेष कर के बड़ा कष्ट उत्पन्न होए आइया
है इसका कुछ उपाय करो नहि तो तिस के प्रा
प्त होने बिना अपने प्राणों को त्याग कर देऊंगा ६०

3725

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विभीषणउवाच अन्विच्छामि तेकांतांयत्र
तत्रस्थितांविभु कःसमर्थोधुनास्माकंहर्त्तुं
नाथत्वणस्यच ९२ ततोविभीषणस्तत्रनाडी
जंघांनिशाचरीं भृशंसंजल्पयामासनाना
मायागरीयसीम् ९३ धनपस्यवयाकांता
चित्रसेनाभिधानतः साचकेनहृतालोकेऽस्मि
न्सेसमरसिस्थिता ९४ तांचजानीहिसंवीत्स्य
देवराजादिवेश्मसु ततोनिशाचरीभूपकृत्ता
मायामयंवपुः ९५

इतनावाक्यहानिकेकारणेवालाश्रवनकरविभीषण
कहनेलगा हेविभोमेजहांकहींलोकांतरमेभी
तमारीभार्यास्थितहोवेगीउहांसेहील्यायकरदे
नाऊं क्योंहेनाथइससमयपसा कौनपुरुषहैजो
कोई हमाराहमारा त्रणभी उठाय करलेजावे
गा ऐहतोकर्त्ताहै ९२ इतनावाक्य तिसकीक
थनकरविभीषणनाडीजंघा नामा एक राक्ष
सीथी तिसकोबुलायकर अच्छीतरींदकर्केक
हनाभया ९३ कीमानसरोवरकेउपरगिरिजा
देवीकापूजनकर्त्तीहोई कुवेरकीस्त्री चित्रसेना
नामवालिजोहैसोकिसीनेहरीहै इसीस्थानमें ९ ४
तिसकोंजाकरकेतूदेवतादैत्यराजालोकइनके
घरोंमेंदेख औरहमारेकोंआनकरकेखबरदे
इतनावचनश्रवनकरहेभूप सोनिशाचरीमायाके ९५
रूप अनेकतरोंकोमायाअपनावनायलेनीभयी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जगाम त्रिदिवं शीघ्रं देवराजा दिवे स्मह मां॰
सहस्रनेत्रगोहह्स्तामोत्तंयास्यामिसत्वरम् ९६ य
स्मासमंभुवंरूपंविधेनेनचराचरे पतास्मिन्ने
वकालेतुदेवराज्ञोपिपुत्रक ९७ संप्राप्तोमे
दराच्छीघ्रंप्रेरितश्चित्रसेनया गृहीतंदिव्यपु
ष्पाणिनंदनप्रभवाणिच ९८ तत्रापश्यत्तता
नर्वींनिजस्थानेसमागतां अनीवरूपसंपन्नां
गीतनृत्यपरायणाम् ९९ ॥

373

शीघ्रही देवराज इंद्र करके चर स्वर्गमे चलीजा॰
तीभई मनमे ऐसा विचार करतीभयी कि मेरेको
देखकर इंद्र शीघ्रहि मोहको प्राप्त होवेगा ९६
किसवास्ते कि जिनके समान अनि सुंदर रूप
चराचरमे नहि किसी औरका है ऐसा रूप
जिसने बनाया ९७ इतनेमें हे पुत्र देवराजभी
उहांहि चित्रसेनाने भेजाहुया नंदन नामा
स्वर्गके बागमे उत्पन्न होनेवाले दिव्य पुष्प
लेनेके वास्ते आय प्राप्तहुया ९८ तो तहांका
देखताहै की अपने स्थानका स्वर्गमे आई
हुई तिस कोमल अंगोवाली अत्यंतरूपक
रससंयुक्त नृत्यगायनमे तत्पर होई हुई
कों देखताभया ९९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तांवीक्ष्य देवराजोपि स कामवशगोभवत् त
तः संप्रेरयामास देववैद्यौ सुराधिपः १० तस्याः
पार्श्वं समानेतुं युवं चेतः प्रेरेत तदा देववैद्यौ त
दागत्य तस्यास्तस्याग्रतः स्थितौ ११ आगच्छ भ
वतीं त्वं गिदेवराजसमीपगा इत्युक्ता सा तदा
ताभ्यां जगाद मधुराक्षरम् १२ ताडीजंघोवा
च देवराजः स्वयं यत्मे पार्श्वे चागमिष्यति
तस्य वाक्यं च कर्तव्यं मान्यथा सर्वथा मया १३
तौ जग्मतुः सवेगमाकर्ण्य तद्वचः शुभं

तद तिस कों देखकरकें इंद्र भी कामदेव के वशी
भूत होजाताभया परअपने अंदर जायकर स्या
पिप मोहित होय आइया तिस के रूपकरकें देव
तेयों के जो वैद्य हैं तिन को तिस के पास ल्याउने
के वास्ते भेजताभया कि तुम जाके उस को अं
दरमे ल्याओ तद देववैद्य उसकी आज्ञा पायक
र उसके पास आयके स्थित होकर कहने ल
गे ११ हे तन्वंगि तूं हमारे साथ आयके देवरा
जके पास चलो हमने तेरे कों बुलावना है इतना
वाक्य तिन का सुनतेही ताडीजंघा राक्षसनी
कहने लगी देवराज जेकर मेरे पास आप च
लकरके आवे और अपने मुखसे कहने दे मे
उसका कहना मानती हूं ऐसे तुमारे कहने
मैं नहिं जाताउं यह बात तुम जाकर कहदेओ ३२
उसका इतना वचन सुनतेही सो दोनों स्वर्ग नि
वासियों के वैद्य परतकर इंद्र कों जाके उस
का कहना सुनाय देते भये कि हे महाराज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३०४

वासवउवाच सम्मादेशयतन्वांगेकिंकर्त्तव्यंम

याधुना १४ सर्वदादासभूतस्तेयाचसेतन्वदा

म्यहम् १५ तन्वंग्युवाच याचितयदिमेनाथ

दासोसित्वंनसंशयः ततोहंवश्गादेव भ॰

विष्यामिनसंशयः १६ अयत्वंदर्शयास्मा॰

कंसर्वकांतापरिग्रहं ममरूपसमाकांचि॰

त्कांतानेचिस्तिवानवा १७ ॥

375

ओह इसप्रकारकहतेहै इंद्रआयमेरेपासआ

वेजोकछमेकहनाहोसो करेउसकेघरवल॰

नीहां इतनावचनउनकेमुखसें निकलतेही

इंद्रदेवतोंकाराजा कहनलगा तुमदोनोंपर

तकराफिर उसकेपासजाकेकहो हेतन्वंगि

कोमलदेहवालिहमारेकोंआज्ञाकरजोक

छहमनेकामतेरासिद्धकरणाहै १४ हमते

रे दासरूपीहजोकछहमकोंकहतीहैं सोई

कछहमतेरेकोदेतेहै इसमे मत संशयकर १५

इतनीवानइंद्रकेमुखसंसुनकर दोनोओह

उसकेपास परतकरआये विनतीसें ओहवा

तसुनाए तदसोतन्वंगीकहतीभई हेनाथ

जेकरमेरी मांगीहोईवस्तुकों देओगे इसमें

संशयकछनहिहै परमैंभीतदहीतुमारेवशहो

वांगी इसमेकछसंशयनहिहै १६ तदउनोंने

कहाकीहमकोंआज्ञाकरजोतेनेमांगनाहै फि

र ओहबोलीप्रथमतोमेरेकोंअपनेअंतःपुरकी

यांस्त्रियांतुमारीयांविवाहियांहुईयांदिखाओउन

मे मेदेखूंगी क्यामेरीसुंदरताकेसमानभीको

ई तुमारीस्त्रीहै वा नहि १७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तयाचोक्तेच वचने सभूयोवासवोवदत् दर्श
यिष्यामि सर्वं ते देवि कांतापरिग्रहम् ७८ स
सर्वं दर्शयामास वासवो तःपुरं तथा ततोज
गाद भूयस्स किंचिद्रूढं मम ास्तने ७९ विशुचे
कांतनग्रुवर्तीं सर्वं ते दर्शितं मया सा च मे मंदि
रे चास्ति प्रविसाता ह्रासैः ८० तां च ते दर्श
यिष्यामि नाख्येयं कस्यचिद्वया ततः सदेवरा
जोपितयासार्धं चपत्रक ८१ ॥

तिसने ऐसे कथन करे होए पीछे फिर वासव ईश्वरके
हत्ता भया हे देवि सारे अंतःपुर की स्त्रियों मे तेरे कों
दिखावता हूं ७८ ऐसे कहकर इंद्र तिसकों अप
ने अंतःपुर में लेजायकर सारियां स्त्रियां दिखा
यके फिर तिसकों कहन लगा और सभी कुछ
मैने तेरेकों दिखाय दिया एक वात गुप्त मेरे
घरमे और है ७९ एक तिस स्त्री कों त्याग करसा
रा कुछ मैने तेरे कों दिखाय दिया है सो किना
रे मे मेरे घर में है उस की खबर किसी देवता
दैत्य कों नहि है ८० ओह भी मै तेरे कों दिखाय
देता हूं पर तैने किसी कों नहि कहना की ओह
स्त्री मैने देखी है ऐसे कह कर उससें प्रतिज्ञा
करायकर पीछेसें देवराज तिसकों साथ ले
कर हे पुत्र उहां आउता भया जहां यक्षराजकी
स्त्री मनोरमा रहती थी ८१ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा· ग्राम· ३७५

गच्छते चांबरे भूपमंदरं प्रतिभूधरं तस्यैवेगम्यमानस्य विमानेनार्कवर्चसा ८२ दर्शनं नारदस्यापि तस्य जातं नदांबरे तं वीक्ष्य नारदं वीरो लज्जमानोपि वासवः ८३ नमस्य जगदोच्चैः कुयातोसि महामुने: ततः कृताशीः सम्मुनिरवदत्रिदशेश्वरम् ८४ गच्छामि मानसे स्नातं देवराज सखीभव नाडीजंघेलिकुशलं रात्तसानां महात्मनाम् ८५

हे भूप आकाश मार्ग करके मंदराचल पर्वतकों सूर्य के तेज की न्याई प्रकाश वाले विमान पर बैठकर जाते होए तिस इंद्र देवता कों ८२ तिस समय आकाश के ऊपर ही नारद जी का दर्शन होता भया तद तिस कों देखकर वीर जो इंद्र है सो लज्जावाला होए आइया ८३ नारद जी कों नमस्कार करके ऊचें स्वर के साथ पूछने लगा हे महामुने आप कहां चले हो तद तिस इंद्र का वचन सुनकर आशीर्वाद दिया फिर त्रिदशेश्वर कों कहने लगा ८४ हे देवराज मैं स्नान करणे वास्ते मानसरोवर कों चलाऊं तेरे कों सुख होवे इतना उस कों कहकर फिर कहने लगा है नाडीजंघे महात्मा रात्तसों कों तों कुशल हैं ८५ ॥

375

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विभीषणोपितेभ्रातास्वर्वीजिहतिसर्वदा
एवमुक्ताचमुनिनासाहृस्यवदनाभवत् ८६
देवराजोपितज्ज्ञात्वा छद्मतोऽदृष्टयानया ना
रदोपिगतः स्नातुंकैलासेमानसंसरः ८७
क्षणं विश्रम्यतत्रैव पृष्टाकेशेषुराक्षसी हं
तमिछतिदेवेशोनाडीजंघांनिशाचरीम् ।
मावतत्रसमायातस्तृणाविंदुर्निजाश्रमे पृ
ष्टाक्रंदतिसाराजन्निडेणापिनिशाचरी ८८

और विभीषण तेरा भ्राता सर्वदा काल राजी
प्रसन्न रहता है ऐसा इस प्रकार मुनि ने जब क ८६
हा तब ही सो भय सें श्याम मुख वाली होती भई
देवराज ने भी यह बात जानि की इसने छल
किया करके मेरा भेद लिया है और नारद जी भी
कैलास पर्वत के ऊपर मानसरोवर में स्नान
करने कौं चले गए ८७ तब तहां एक क्षणमा
त्र विश्राम करके पीछे से राक्षसी कौं केशों सें
पकड कर मारने की इच्छा वाला होय भया क्या
जब नाडीजंघा कौं मारणे लगा ८८ तो इतने में
अपने आश्रम कौं जाता तृणाविंदु नामा ऋ
षि आय गया तो उहां केशों सें पकडी होई ना
डीजंघा राक्षसनी इस तरां क्रंदन करती भई
क्या कर लावती भई क्या मेरी कोई समय
रक्षा करे ८९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰ ग्राम॰ १०९

नमां रक्षति त्राणपान्माहन्यमानां न सांप्रतं
नदागतम् मुनिश्रेष्ठस्तृणाविंदुर्महातपाः १०
जगाद पुरतः स्थित्वा शक्रं चेमां मद्धितां च मे ज
ल्पिते च मुनेस्तस्मिन्महेंद्रेण निशाचरी सा
त्रकोपमुनिश्रेष्ठो वेपमानो मुहुर्मुहुः वज्रे
ण निहता वत्सः कोपयुक्तेन चेतसा यद्वे
षाद्भवतोदुष्ट निहता मे तपोवने ततस्त्वम
मच्छापेन निश्चयात्स्त्रीभविष्यसि १३ ॥

इससमय मरजाती होई मेरेकों कोई नहि रखा
करता है क्या करों मेरे कोई दयावान् नहि मि
लता है ऐसा करलाने का शब्द तिसका
श्रवण करके बडा तपस्वी तृण विंदु नामा
ऋषि उहाँ आय करकें १० जिसके आगे स्थित
होकर इंद्र कों कहन लगा मेरी हितवाली
इसकों छोड दे मत मार इसतरां कथनक
रे होए भी जिस मुनि के इंद्र ने सो निशाचरी
११ हे वत्स क्रोधयुक्त होए ऋप मन वाले ने
वज्र के साथ मार होदई तद सो वारंवार
कांपता हुआ बडा क्रोध वाला होता भया १२
और ऐसे कहता भया हे दुष्ट मेरे तपोवन में
जिस द्वेष सें तेने यह स्त्री मारी है इस कार
ण से तूं मेरे शाप सें स्त्री रूप निश्चय करकें
होवेगा १३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इंद्रउवाच एषानाथमहादुष्टाराक्षसीनिहता
मया अहंस्वामीहरीणांचशापंमादेहिमेः
पुना १४ मुनिरुवाच नूनंतपोवनेस्माकंउ
षास्तिष्ठतिसाधवः ममत्रतपसोभावतोवि
द्वेतिपरस्परम् १५ इत्युक्तोहितदाचेंद्रोपातः
स्त्रीत्वंनसंशयः जगामत्रिदिवंभूपहतशक्ति
पराक्रमः १६ नासीत्तोहिभवन्येवसर्वदादे
वसंसदि देवदुःखंसमापन्ने दृष्ट्वास्त्रीत्वंगतंह
रिम् १७ ततोदेवगणाःसर्वेवासवेनसमन्वि १८
ताः जग्मुर्ब्रह्मसदनंनत्वादीनाशचीतदा

इंद्रकथनकरनेलगाहेनाथ यह वडीदुष्टराक्ष
सीछलमायाकरणेवालीमैंनेमारीहै ओरमैदेव
तेयोंकास्वामीहोंमेरेकोंमत इस समयशापदे
ओ १४ मुनिकहनेलगा निश्चयकर्केमेरे इस
तपोवनमें दुष्टभी साधुभी निवासकर्ते है पर
मेरेतपकेप्रभावकर्के कोईकिसीकेसाथविरो
धनहिकर्ताहै १५ इसप्रकारकथनकराजया
उसीसमय स्त्रीभावकोंप्राप्तहोगया तोहेराज
न हतहोगई सामर्थ्यजिसकी ओरपराक्रमजि
सकाऐसा इंद्रपरतके स्वर्गकोंचलाजाताभया
१६ परदेवतयोंकोंवडादुःखहोताभया इंद्र
कोंस्त्रीवनेहोए देखकर १७ सारेदेवतेयोंके
समूह मिलकरइंद्रकेसाथ ब्रह्मलोकमे च
ले जाते भये ओर दीन होई हुई इंद्राणी भी
चली जाती भई १८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
२०१

ब्रह्मभग्नसमाधिस्थ्नावत्तत्रैव संस्थितः दे
वाश्चतुर्मुखं ते सर्वे वासवेन समन्विताः ९९ त
स्य विंडुर्मनेश्शापाद्यातः स्त्रीत्वं सुराधिपः स
म्मतिः कोपवान्ब्रह्मन्नुग्रं छन्न तनुग्रहम् १००
पितामह उवाच नमुनेरपराधः स्यान्नारविं
डुर्महात्मनः स्वकर्मणा पपाताऽसौ स्त्रीत्वं
स्त्रीवधकारणात् १ वकारडुर्नयं देवा दे
वराजोपि डुर्मदः जहार चित्रसेनां च स्त्रीं तुम्बो
धनपागतान् २॥

जिस समय देवता ब्रह्म लोक में जाय वैठे तद ब्र
ह्मा भी भग्न समाधी वाला होगया और सारे
देवता इंद्र के समेत ब्रह्मा कों कहने भये ९९
हे ब्रह्मण तिस तृण विंडु के शाप सें सुराधि
प इंद्र स्त्री भाव कों प्राप्त होय आ है और होर
कोई भी जो मुनि है सो अवन कक्रपा करणो में
नहि आवता है १०० इतना वचन सुन कर
ब्रह्मा जी कहने लगे जिस महात्मा तृण
विंडु का कुछ अपराध नहि है कों की आप
ने कर्म के प्रभाव करके और स्त्री के मारणे सें
स्त्री भाव कों प्राप्त होय आ है १०१ हे देवाः दुष्ट
मद वाला इन्द्र देव राज भी दुष्ट कामकर्त्ता
भया देखो पकनो चित्र सेना धनद कुवेर
की स्त्री रस्ता करी होई तिस कों हर के ला
वता भया १०२॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तथाजघानयुवतींतृणाविंदोस्तपोवने तेन
कर्मविपाकेनस्त्रीभावंवासवोगतः १·२ देवा
ऊचुः मदयंकृतवान्शंभोर्दुर्नयंनामदुर्म
तिः तत्सर्वंसाधयिष्यामोवयंशच्यासमन्वि
ताः १·४ कांतायनाधिनाथस्यगृह्णतिष्ठति
याविभो तांचतस्यप्रदास्यामः सर्वेकृत्वापा
रामतिम् १·५ त्रयोदश्यांचतुर्दश्यांदेवराज्ञी
शचीपुनः नंदिनेघार्चनंचक्रेसर्वदायक्षरक्ष
साम् १·६ ॥

औरतृणविंदुऋषिकेमहावनमेंक्यातपोवन
में युवतीस्त्रीकोंमारदेताभया तिसकर्मके
प्रभावकर्केयह इंद्रस्त्रीभावकोंप्राप्तहोयग्या
हे १·२ इनकावचनसुनकरसारेदेवताक
हनेलगे हेब्रह्मन् यह दुर्मति इंद्रजो कुछ
शंभु महादेवजीका दुर्नयकर्ता भया क्या
अपराध कर्ता भया तिसके निमित हम
सारेहीशचीकेसमेतसाधनकर्तेहै क्याउपाय
कर्तेहै १·४ औरहे विभो जोनसी इसने कुबेर
की कांता ल्याकेगुजराखीहोईहै ओहभीहम
सारेही सलाहकर्कैतिसधनाधिनाथकोंदे
तेहै १·५ ऐसे कहाजद तिससें उपरंत त्रयो
दशी चतुर्दशीकेदिन इंद्राणी नंदन वनमेंजा
कर सर्वदा काल यक्ष राक्षसोंका पूजन
कर्तीभयी १·६ ॥

ततः शचीनसा गृह्य चित्रसेनां विग्रहस्य च सुमो
चयत्तभवने श्रिय कुशानुवर्तिनी ॥०१ पुनस्मि
न्नंतरे कश्चिद्दूतो लंकां समागतः धनेशं क
थयामास सा वै चित्रसेना समागमम् ॥०२ शच्या
साकं समायातां नवकां तां धनाधिप सा चित्र
मत्यलं प्राप्य चरितार्था बभूव सा ॥०३ धनेशस्त
कृतार्थोभूज्जगाम निजमंदिरं देवा ऊचुः सर्व
मेतत्कृतं त्वत्प्रसादान्न संशयः ॥१०॥

तिससें उपरंत शची इंद्राणी गुप्त होइ हुई चित्रसे
नाकों ग्रहणकर अपने स्वामिके अष्टके अनुसा
र कष्टवाली होई हुई यक्षराज कुवेर के घरमे छो
ड आवती भई ॥०१ तद तिसकों देखके उसी सम
य एक दूत लंकाकोचलागया तिसने जाके
धनेशकों कहदियाकी चित्रसेना आगईहोई
है सो तिसके साथ अतुल प्रीतिवाले सखिभा
वकों प्राप्तहोकर चरितार्थहोतीभई ॥०२ इत
नीवात सुनके धनेश कुवेर जो कृतार्थहोजा
ताभया और अपने घरमेचलाआवताभया
देवता कथनकरतेभये हे ब्रह्मन् यह सभी
कुछ तुमारी कृपासें हमने कराहै इसमें
कुछ संशय नहीहै ॥१०॥ ८ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पतिहीना यथा नारी नाथहीनं यथा बलं
गोकुलं कृष्णहीनं च तथैवेन्द्रेणामरावती ॥ ज
पक्रियातपोदानं स्नानं तीर्थं च वै प्रभो वासवस्य
समारब्धा ततः स्त्रीत्वं प्रमुच्यताम् ॥२ ब्रह्मो
वाच नाहं हंत मुने शापे समर्थो हि न शंकरः
तीर्थं चान्यत्र पश्यामि मुक्त्वैकं विष्णुपूजनम् १३
अष्टाक्षरेण मंत्रेण पूजनं च तथा जपम् क
रोतु विधिवच्छक्रः स्त्रीत्वाद्येन प्रमुच्यताम् ॥४

हे ब्रह्मन् पतिकर्के रहित जैसे स्त्री होती है औ
र स्वामि के विना जैसे होती है और श्रीकृष्णजी
सें विना गोकुल नगरी जिस तरां शोभावाली
नहि है ॥ इसवास्ते कोई जप पाठ पूजा
ध्यान दान स्नान इतनेसे कोई हे प्रभो इंद्र
कों उपदेश करो जिसके कारणेसें इंद्र स्त्री
भावकों त्यागे ॥२ इतना वचन तिनका
सुनकर ब्रह्मा कहने लगा मुनि कर्के दिया
हूया शाप दूर करणेकों मैंभी समर्थ न
हिहां और न महादेवजी दूर करसकते हैं
न कोई तीर्थ स्नान ही समर्थ है विना एक वि
ष्णुजी की पूजासें एक विस्नुहै जेकर उहकर
सकेतद करेगा ॥२ अष्टाक्षर मंत्रके साथ वि
ष्णुजी का पूजन करे और उसी मंत्र का जप
करे विधिकर संयुक्त नदर इंद्रका स्त्रीभाव दूर होवे
गा ॥४॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰
ग्राम॰
३२९

एकाग्रमनसाशक्रस्नात्वाश्रद्धासमन्वितः
ॐनमोनारायणायेतिजपत्वमात्मशुद्धये १५
लक्षद्वयकृतेजाप्ये स्त्रीभावान्मुच्यसेहरेर
तिश्रुत्वानथाकार्षीदुब्रह्मोक्तंवचनंहरिः १६
स्त्रीभावाद्विनिर्मुक्तस्तदाविष्णुप्रसादतः
मार्कंडेयउवाच इतितेकथितंसर्वंविष्णो
र्माहात्म्यमनुत्तमम् मयाद्यशंनियुक्तस्त्वंकु
रुसर्वमतंद्रितः ॥१७

एकाग्रमनवालाहोकर हेइंद्रतूं श्रद्धाभक्तिकर
संयुक्तस्नानकरके ॐनमोनारायणाय इस मंत्र
का अपनीशुद्धिकेवास्तेजपकर १५ हेहरेइंद्र
जपदोलाखजपइस मंत्रकाकरेगा तदही
स्त्रीभावसें मुक्तहोवेगा इसतरांका ब्रह्माका
वचनसुनकर इंद्रदेवतायथाविधि इसी प्र
कार कर्ताभया १६ तद विष्णुभगवानजीकी
प्रसन्नतासेंस्त्रीभावसे मुक्तहोताभया इतनी
बात सुनकर फिरमार्कंडेयऋषिजी कथ
नकरनेलगे हेराजन यहमैने तेरेप्रति उत
म विष्णुजीके अष्टाक्षरमंत्रकामाहात्म्य
कथनकराहै अबीतरां नियुक्तहोके करा
इयाहै अबतूं इसकोंकर आलस्यकात्याग
करके ॥१७॥ ८॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सूत उवाच इतिहासं वोधितस्तेन मार्कण्डेयेन
पार्थिवः नरसिंहं समाराध्य प्राप्तवान्वैष्णवं पदं ९
सहस्रानीक उवाच एतन्ने कथितं सर्वं भरद्वा
ज मुने मया १९ चरितं विष्णुभक्तस्य किमन्य
त्कथयामि ते यो मानवः वतिदिनं शृणुते क
थां हरेः पुरातनीं सर्वविमुक्तिदां च स प्राप्य
ज्ञानं कलिजीह निर्मलं तेनैव विष्णुं प्रतिपद्य
ते हि २० इति श्री रणवीरभक्तिरत्नाकरे नारा
यणाष्टाक्षरमंत्रमाहात्म्यं समाप्तम् ॥

सूतजी कथन करे है शौनकादि ऋषियों से इस प्रका
र तिस मार्कण्डेय ऋषिजी ने संवोधित करा हुआ
क्या समझया हुया सहस्रानीक राजा सो नर
सिंहजी का आराधन कर परमपद कों प्राप्त
हो जाता भया १८ और सहस्रानीक कहता भ
या हे भरद्वाज मुने यह सारे भक्त चरित्र मैंने
तेरे प्रति कथन करा है अब और क्या तेरे प्र
ति कथन करां १९ इस विष्णुसंवंधिनी सब
कों विमुक्ति के देने वाली पुरातन कथा कों
मानव सुन २ के अत्यंत निर्मल ज्ञान कों प्रा
प्त होकर उसी ज्ञान कर के विष्णु कों प्राप्त हो
ता है २० इति श्री रणवीरभक्तिरत्नाकर मे
अष्टाक्षरमंत्र का माहात्म्य समाप्त हुया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मा॰ ग्राम॰ १८०

अथ नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मप्रसंगाद्द्वाद
शाक्षरमहामंत्रस्य महिमानं वर्णयितुमशा
क्यत्वानस्यापि किंचिदाह पाद्मे सदीक्षाविधि
सध्यानं मंत्रं च द्वादशाक्षरं येजपंति नरो भक्त्या
न ते यांति यमालयम् नृसिंहपुराणे इक्ष्वाकु
प्रति वशिष्ठवाक्यम् तापसं वेषमास्थाया
शाकमूलफलाशनः ध्यायन्नारायणं देव
मिमं मंत्रं सदा जप २ ॥

अब नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मोंके प्रसंगसें द्वा
दशाक्षरमहामंत्रकी महिमा वर्णन करनेकी
नहि सामर्थ्य होनेसें तद भी कछु थोडा कमा
हात्म्य पद्मपुराणमें कहा है दीक्षा और विधि
और ध्यान सहित जो कोई पुरुष भक्ति प्रीति
करकें द्वादशाक्षर मंत्रको जपते हैं सो यमकी
पुरीमें नहि जाते हैं १ नृसिंहपुराणमें इक्ष्वा
कु राजाके प्रति वशिष्ठजीका कथन है तप
स्वियोंका वेश धारणकर शाकमूल फल
भोजनकर्ता हुआ नारायणदेवताको ध्या
नकर्ता हुआ तूं इस मंत्रको सर्वदाकाल
जप २ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय एष सिद्धिकरो मंत्रो
द्वादशाक्षरसंज्ञितः जप्त्वैनं मनसा सिद्धिं परां
प्राप्ताः पुरातनाः ३ गत्वा निवर्तयंत्येते चंद्र-
सूर्यादयो ग्रहाः अद्यापि न निवर्तंते द्वादशा
क्षरचिंतकाः ४ द्वादशाक्षरमंत्रेण वासुदेवा
त्मकेन च ध्यायंश्चतुर्भुजं विष्णुं जप्त्वा सिद्धि
न को गतः ५ प्रणवो हृद्भगवते वासुदेवाय
कीर्तितः प्रधानो वै सर्वतंत्रेषु मंत्रोयं द्वादशा
क्षरः ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यह बारां अक्षरौंका
मंत्र सिद्धिके देनेवाला है इसकों मनके साथ ज
पकर्के पीछे २ परम सिद्धिकों प्राप्त होनेभये ३
चंद्रमा सूर्यसे आदलेकर सारेही उहां जायके
परत कर चले आवते है और जोनसें द्वादश
अक्षरके चिंतन करने वाले परम पद कों गय
होए आजतक परत कर नहि आए है ४ वा
सुदेवात्मके जो द्वादश अक्षर मंत्र तिस कर्के च
तर्भुज विष्णुका ध्यान कर्ता भया जपकर्के
कौनपुरुष है जो सिद्धिकौं नहि प्राप्त भया
न सारेही सिद्धिको प्राप्त होते भये ५ इसमं
त्रका प्रणव ॐकार हृदय है क्या मुख है ॐ
नमो भगवते वासुदेवाय यह द्वादश अक्षर
मंत्र वै सब तंत्रमे प्रधान कहा है ६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा० ग्राम० २८१

381

ऋषिः प्रजापतिः छंदो गायत्री परिकीर्त्तिता
देवतास्य मनोप्रोक्तो वासुदेवो मनीषिभिः ७
नारेण हृदयं प्रोक्तं नमसा शिर ईरितं चतुर्थ्यौः शिखा प्रोक्ता पंचार्णैः कवचं मतम् ८
समस्तेन भवेदस्त्रं भंगकल्पनमीरितं मूर्ध्नि भाले दृशो रास्ये गले दोर्हृदयांबुजे ९

शारदातिलकमें कहाहै इसमंत्रका प्रजापति ऋषिहै गायत्रीछंदहै वासुदेव देवदेवताहै धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चार पदार्थोंके लिये पूर्व मैंनीषियोंने विनियोग कहाहै अब इसमंत्रके हृदयादि षडंगन्यास लिखाहै ॐ हृदयाय नमः इसकर्के हृदयको हाथ लगावे नमः शिरसे स्वाहा इसको पढकर्के शिरमें हाथ लगावे भगवते शिखायै वषट् इसको पढकर्के शिखामें हाथ लगावे वासुदेवाय कवचाय हुं इसको पढकर्के दोनो वाहोंका संकोच कर्के वामे हाथकर्के दहनीको स्पर्श करे दहने हाथसें वामी भुजाको स्पर्श करे ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यह सारा मंत्र पढकर्के अस्त्राय फट् ऐसे कहके क्या करे की वामे हाथकी तली के ऊपर दहने हाथकी अंगुलियां के साथ तीनवार जोरसे उठाय २ कर शब्द करे यह अंगन्यासों की कल्पना कही है अब इस मंत्रके अक्षरों कर्के भिन्न २ सारे देहके न्यास करणे की विधि लिखीहै ॐ मूर्ध्नि न मस्तके मः दृशो भ मुखे गा कंठदेशे व भुजयोने हृदये

६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ तौ नाभौ भुजे जानुद्वये पादद्वये तथा अथ
ध्याने विष्णुं शारदचंद्रकोटिसदृशं शंखं रथ
थांगं गदां अंभोजं दधतं सिताब्जनिलयं कां
त्यां जगन्मोहनं आबद्धांगदहारकुंडलम
हामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदार
कौस्तुभधरं वंदे मुनींद्रैः स्तुतम् १० ॥

वा ऊरु स्तनाभौ देलिंगे वा जानुयुग्मेय पा
दयोः ऐसे पूर्वोक्त अक्षर यथाक्रम उच्चारण
करकें यथोक्त अंगमे हाथ लगावना चाले इस
में विशेषता एही है की नाभी के नीचे वाम हा
थसें न्यास करे अब ध्यान का अर्थ भी भाषामें
लिखते है प्राचीन मुनींद्रों करकें स्तुत करे हो
ए जो विष्णु भगवानजी तिनका ध्यान कर्ताहु
आ और वंदना कर्ताहुं कैसे ओह विष्णुजी है
शरदऋतु के कोउ चंद्रमों की न्याई शोभावाले
है और चारों भुजों मे चार आयुध जो है शंख च
क्र गदा पद्म पहरे हैं और श्वेत कमल के
मध्य मे बैठ होए है और जो भगवान अपनी का
न्ति करके सारे जगत को मोहित करणेवाले है
और धारण करे होए है बाजूबंद और अमोल्य
रत्नों का हार कानों में कुंडल शिर मे रत्न जडि
त मुकुट और प्रकाशमान कंकण श्रीवत्स का
चिह्न और उदार कौस्तुभ मणि पहर धारण १०
करी होई ऐसे भगवानजी का चिंतन कर्ते है

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं दीक्षितो विजितेंद्रियः तद्द
शांशं प्रजुहुयात्तिलैराज्यपरिप्लुतैः ॥ पीठे
प्रागीरितां मूर्तिं मूलमंत्रेण कल्पयेत् पूज
येद्विधिना तेन वासुदेवविधानवत् १२ प्रथ
मावृत्तिरंगैः स्याद्वासुदेवादिभिः परा शांत्या
दिशक्तिसहितैः परा द्वादशमूर्तिभिः १३

382

श्रद्धा भक्ति करके युक्त पुरुष श्रष्ठे श्रेष्ठ गुणायु
क्त गुरु सें इस द्वादशाक्षर मंत्र की शिक्षा ग्रह
ण करकें पीछे सें यथोक्त विधि करसहित इं
द्रियों को जीत कर बारां लक्ष इस मंत्र का ज
प करे फिर तिसका दशांश तिलों को घृत
मे लिप्य करकें हवन करे तिसका दशांश तर्पण
दुग्ध के साथ करे उसका दशांश कलशो के
जल करके मार्जन करे उसका दशांश फिर
ब्राह्मणों कों सुंदर पायसादिक पदार्थ बना
कर भोजन करावे ॥ और जो अष्टाक्षर मंत्रा
में पीठ पूजा कही ओही पूजा करे मूलमंत्र
सें मूर्ति की कल्पना करकें पीछे सें विधान के
जाणन वाला इन विधि सें वासुदेव जी का पूजा
न करे १२ तिसके पहले आवरण में अंगो की
पूजा करे और वासुदेवादियों करकें दूसरे आ
वरण की पूजा करे और शांति आदिकों सें आदले
कर जो न सियां वारांश क्तियां हैन तिनका
तीसरे आवरण मे पूजन करे १३ ॥ ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चतुर्थी सुरनाथाद्यैर्वज्राद्यैः पंचमी मताः प
वं संपूजितो विष्णुः प्रदद्यादिष्टमात्मनः १४
पायसेन घृताक्तेन मंत्रवर्णसहस्रकम् ज
हुयान्मानवः सिद्ध्यै समिद्भिः क्षीरभूरुहाम् १५
तत्संख्यामायपयोक्ताभिः सर्वपापविशुद्धये
१६ इति शारदातिलके विष्णोर्द्वादशाक्षर
मंत्रविधानम् ॥

ओर इंद्रादिक दिकपालोंका चौथे आवरण मैं
पूजन करे ओर ऐसेहि पांचमें आवरणमें वज्रा
दिआयुधोंका पूजन करे इसविधि करकें पूजि
त करे होए विष्णुजी अपनेकों इष्ट कामना देते
है १४ ओर घृतकर्कें युक्तपायसकी वारांहजा
र आहुतिका दान करे तद इसकी सिद्धि होती
है और इसमें क्षीर युक्त जोनसे वृक्ष हैं तिना
की पांसमिधां चहिए १५ ओर इहन क्षीराकि
यों वारां हजार आहुतियां देवे पापोंसे शुद्धि
होती है १६ यह विष्णुभगवान् जीके द्वादशा
क्षर मंत्र का विधान शारदातिलकमे कहाहु
आ समाप्त हुआ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ ग्रम॰ ३८३

383

इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीर
तिब्बताद्यनेकदेशाधिपति श्रीप्रभवरश्री
महाराजरणवीरसिंहकारिते श्रीरणवी
रभक्तिरत्नाकरे द्वादशान्तरमंत्रमाहात्म्यं
समाप्तम् समाप्तोयं श्रीरणवीरभक्तिरत्ना
करः शोधितोऽयं निधिपतिना ॥ ॥

श्रीमन्महाराजयोंके अधिराज जंबू और
काश्मीर तिब्बत आदि अनेक देशोंके स्वा
मी और प्रभवर जो श्री महाराज रणवी
रसिंहजी उनोने बनवाया श्रीरणवीरभ
क्तिरत्नाकरग्रंथ उसमे द्वादशान्तर मंत्र
का माहात्म्य समाप्त हूया यह श्रीरणवीर
भक्तिरत्नाकर ग्रंथ समाप्त हूया ॥ ॥

जम्बूविद्याविलासनामक मुद्रायंत्रालयमें
शिबामल के अधिकारसे मुद्रित भ
या संवत् १९३८ ॥ राम ॥ राम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri